Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ

लघुदर्पणपद्धतिः

प्रारभ्यते

षष्ठं संस्करणम्] [मूल्यम् [illegible] ८)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माध्यन्दिनशाखीया रुद्रपद्धतिः

(भाषाटीकासमन्विता)

टीकाकार—महामहोपाध्याय पं० प्रभुदत्तशास्त्रिपौत्र म० म० पं० विद्याधरशास्त्रिपुत्र पं० दौलतरामशर्मा गौड़ः ।

यह यजुर्वेद का पहिला ग्रन्थ है, क्योंकि यजुर्वेद का प्रारम्भ रुद्रपद्धति से ही होता है। परन्तु जबसे यह बनारस, जयपुर, बिहार, मद्रास, लखनऊ आदि की परीक्षाओं में निर्धारित हो गया, तब से इसकी कठिनता के कारण परीक्षार्थी बालकों को इसके अभ्यास करने में बहुत कष्ट होता था। बालकों की इस कठिनाई को दूर करने के लिये अपेक्षित विषयों से अलंकृत "रुद्रपद्धति" नाम का यह सुन्दर सरल सस्ता संस्करण प्रकाशित किया है। इसके प्रत्येक मन्त्रों का अर्थ विद्वानों के समान करने लग जायगा और इसके प्रत्येक मन्त्रों का क्रमपाठ भी साथ-साथ लगा दिया है। पुरुषसूक्त का पद घन जटा सभी लगा रक्खा है। नमस्ते का स्वाहाकार, स्वरादि की व्यवस्था, रुद्रभेद, स्नपन द्रव्य, गणेशपूजन, शिवपूजन, महारुद्र-न्यास गणानान्त्वा की अष्टविकृति, पुष्पसमर्पण, कामनाभेद से लिङ्ग के लक्षण, अत्याज्य शिवपूजन, नमस्ते आदि के श्लोक, वाजश्च के श्लोक आदि बहुत से विषयों को देकर पण्डित जी ने इसको कल्पवृक्ष बना दिया है। इसमें जो टिप्पणी दी है वह आपके सभी प्रश्नों का उत्तर देने वाली है। ऐसा कोई विषय नहीं छोड़ा है जिसका उत्तर इसमें न होवे। पृष्ठ ५००, लागतमात्र मूल्य ४) है।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस। (ब्रान्च—कचौड़ीगली, बनारस।)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री १०८ महाराज काशीनरेश

श्री १०८ काशीनरेश बहादुर ने कृपा कर इस पुस्तक
(**लघुदर्पण**) पर अपने 'चित्र' के लगाने
की आज्ञा दी है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

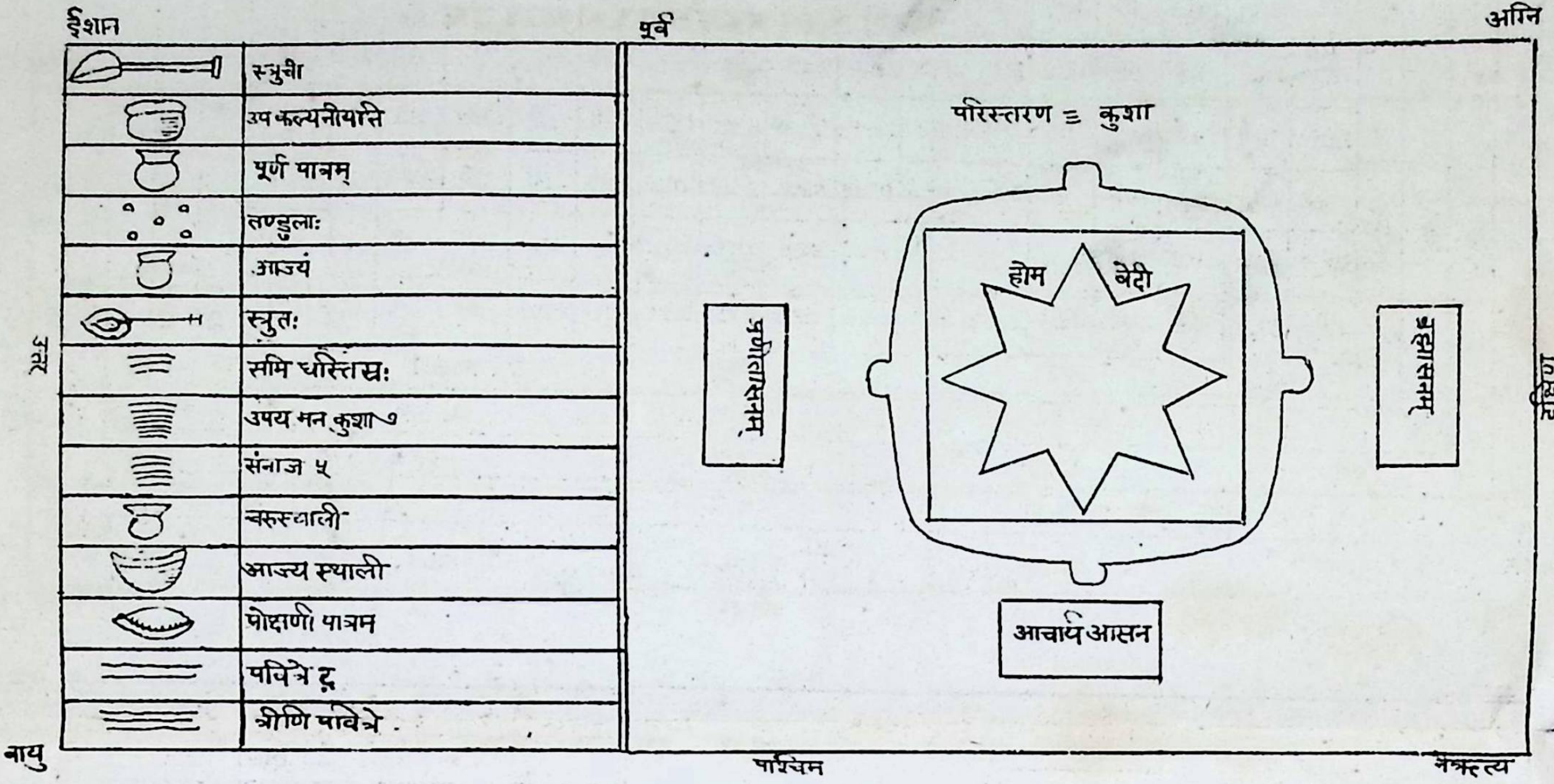

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लिंगतोभद्र चक्रम् रेखा १८ कोष्ठ १७

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्व

ईशान — अग्नि

२५ — १५ — २६

काला — ५० — काला

लाल — ४४ — लाल

सफ़ेद — ३६ — सफ़ेद

सफ़ेद ३	सफ़ेद	हरा	लाल	लाल	लाल १२	काला	काला	काला ४	काला	काला	लाल	लाल १३	लाल	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद
सफ़ेद	काला	हरा	हरा	लाल	पीला	सफ़ेद	काला	काला	काला	सफ़ेद	पीला	लाल	हरा	हरा	काला	सफ़ेद
हरा	हरा	काला २२	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला २४	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला २५	हरा	हरा
लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	काला	काला २३	काला	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल
लाल ११	लाल	हरा	हरा	पीला	काला	काला	काला	काला	काला	काला	पीला	पीला	हरा	हरा	लाल	लाल १४
लाल	पीला	सफ़ेद	हरा	पीला	लाल	लाल	लाल	काला	लाल	लाल	लाल	पीला	हरा	सफ़ेद	पीला	लाल
काला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला	लाल	पीला	पीला	पीला	पीला	पीला	लाल	काला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला
काला २	काला	सफ़ेद	काला	काला	लाल	पीला				पीला	लाल	काला	काला	सफ़ेद	काला	काला
काला	काला २१	काला २०	काला १९	काला १८	काला	पीला				पीला	काला	काला	काला २६	काला	काला	काला ६
काला	काला	सफ़ेद	काला	काला	लाल	पीला				पीला	लाल	काला	काला	सफ़ेद	काला	काला
काला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला	लाल	पीला	पीला ३२	पीला ३१	पीला ३०	पीला	लाल	काला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला
लाल	पीला	सफ़ेद	हरा	पीला	लाल	लाल	लाल	काला	लाल	लाल	लाल	पीला	हरा	सफ़ेद	पीला	लाल
लाल १०	लाल	हरा	हरा	पीला	पीला	काला	काला	काला	काला	काला	पीला	पीला	हरा	हरा	लाल	लाल १५
लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	काला	काला	काला	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल
हरा	हरा	काला २८	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	काला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला २७	हरा	हरा
सफ़ेद	काला	हरा	हरा	लाल	पीला	सफ़ेद	काला	काला	काला	सफ़ेद	पीला	लाल	हरा	हरा	काला	सफ़ेद
सफ़ेद ९	सफ़ेद	हरा	लाल	लाल १७	लाल	काला	काला	काला ८	काला	काला	लाल	लाल १६	लाल	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद ७

सफ़ेद — ४० — सफ़ेद

लाल — ४८ — लाल

काला — ५४ — काला

दक्षिण — ३८ — ४६ — ५२

३५ — ४२ — ५६

वायु — पश्चिम — नैरृत्य

सर्वतोभद्र गहरामें द्रष्टव्यम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथकुया! मण्डपपद्धम्

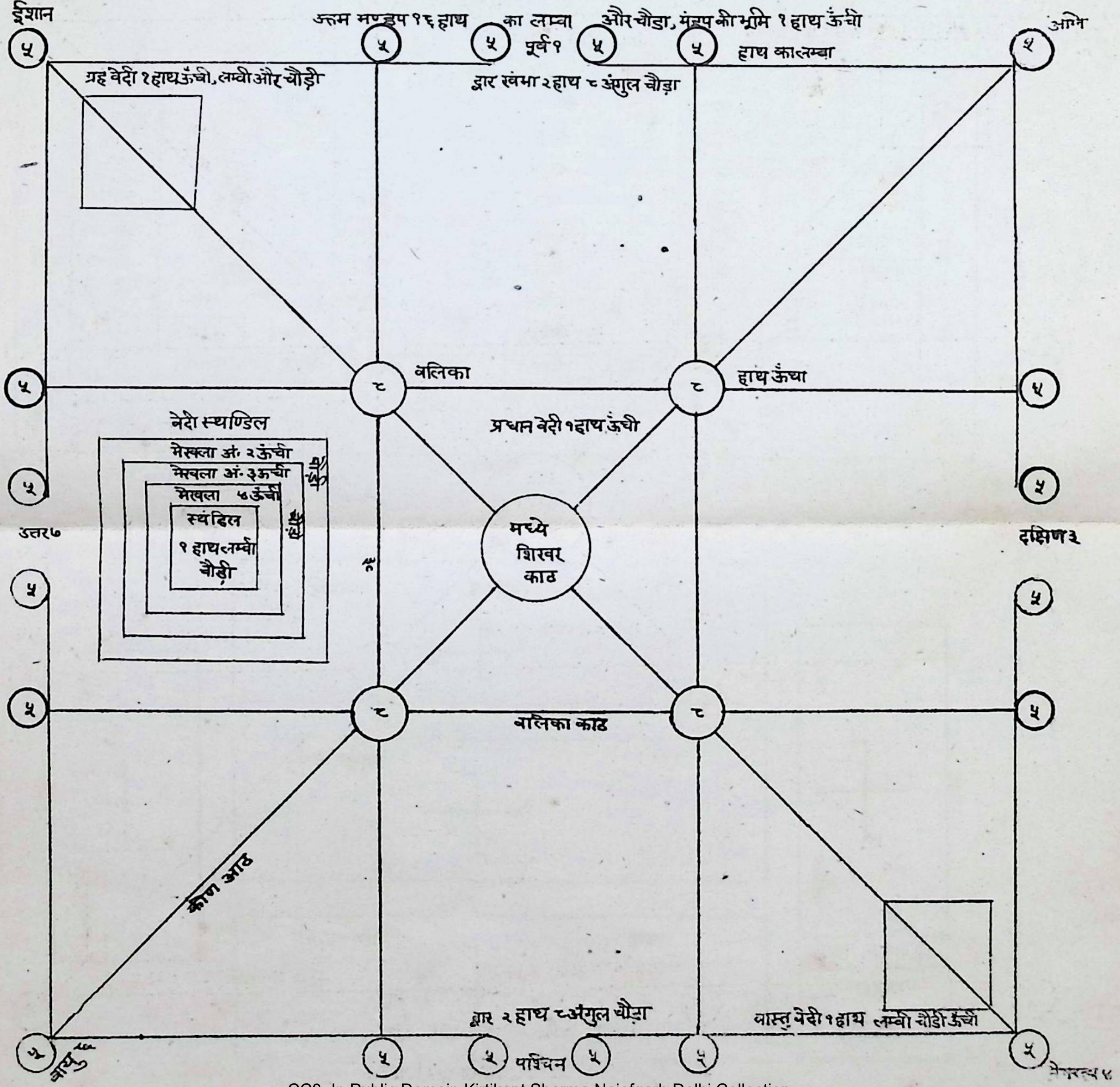

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सर्वतो भद्र चक्रम् रेखा १९ कोष्ठ १८

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईशान — पूर्व — अग्नि

४७ काला — ५० — काला ५१

४३ लाल — ४५ — लाल ४४

३५ सफ़ेद — ३६ — सफ़ेद ३७

(left: काला, लाल, सफ़ेद — ५६, ५२, ३४; right: सफ़ेद, लाल, काला — ३९, ४०, ५४, दक्षिण)

सफ़ेद ३	सफ़ेद	हरा	लाल	लाल	लाल २	लाल	लाल	सफ़ेद ४	सफ़ेद	लाल	लाल	लाल १३	लाल	लाल	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद ५
सफ़ेद	काला	हरा	हरा	लाल	लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	लाल	लाल	हरा	हरा	काला	सफ़ेद
हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद २४	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा
लाल	हरा	हरा	काला २२	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद २३	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला २५	हरा	हरा	लाल
लाल	हरा	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	लाल	लाल	लाल
लाल ११	लाल	लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल	लाल	लाल १४
लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	पीला	पीला	पीला	पीला	पीला	पीला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	लाल
लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	पीला		स			पीला	[illegible]	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल
सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	पीला	३२	सफ़ेद	१	स	पीला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद
सफ़ेद २	सफ़ेद	सफ़ेद २१	सफ़ेद २०	सफ़ेद १९	सफ़ेद १८	पीला	स	पीला		स	पीला	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद २६	सफ़ेद	सफ़ेद ६
लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	पीला	स	स		स	पीला	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल
लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	पीला	पीला	पीला ३२	पीला ३१	पीला ३०	पीला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	लाल
लाल १०	लाल	लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल	लाल	लाल १५
लाल	लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल	लाल
लाल	हरा	हरा	काला २८	हरा	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	हरा	काला २७	हरा	हरा	लाल
हरा	हरा	काला	हरा	हरा	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद ३०	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	हरा	हरा	काला	हरा	हरा
सफ़ेद	काला	हरा	हरा	लाल	लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	सफ़ेद	लाल	लाल	लाल	हरा	हरा	काला	सफ़ेद
सफ़ेद	सफ़ेद	हरा	लाल	लाल	लाल १७	लाल	लाल	सफ़ेद	सफ़ेद ८	लाल	लाल	लाल १६	लाल	लाल	हरा	सफ़ेद	सफ़ेद

६१ सफ़ेद — ४९ — सफ़ेद ३८

६० लाल — ४८ — लाल ५७

५५ काला — ५३ — काला ५२

वायव्य — पश्चिम — नैऋत्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वारुण मंडल चक्रम् रेखा ६ कोष्ठ २५ पृष्ठ २०

ईशान — पूर्व — अग्नि

३ लाल	१२ लाल	४ पीला	१३ पीला	५ लाल
११ सफ़ेद	१९ सफ़ेद	२० काला	२१ पीला	१४ लाल
२ हरित	१८ लाल	१ लाल	२२ काला	६ काला
१० सफ़ेद	२५ काला	२४ पीला	२३ लाल	१५ पीला
९ धूसर	१७ सफ़ेद	८ सफ़ेद	१६ लाल	७ नीला

उत्तर (left) — दक्षिण (right)

वायु — पश्चिम — नैऋत्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

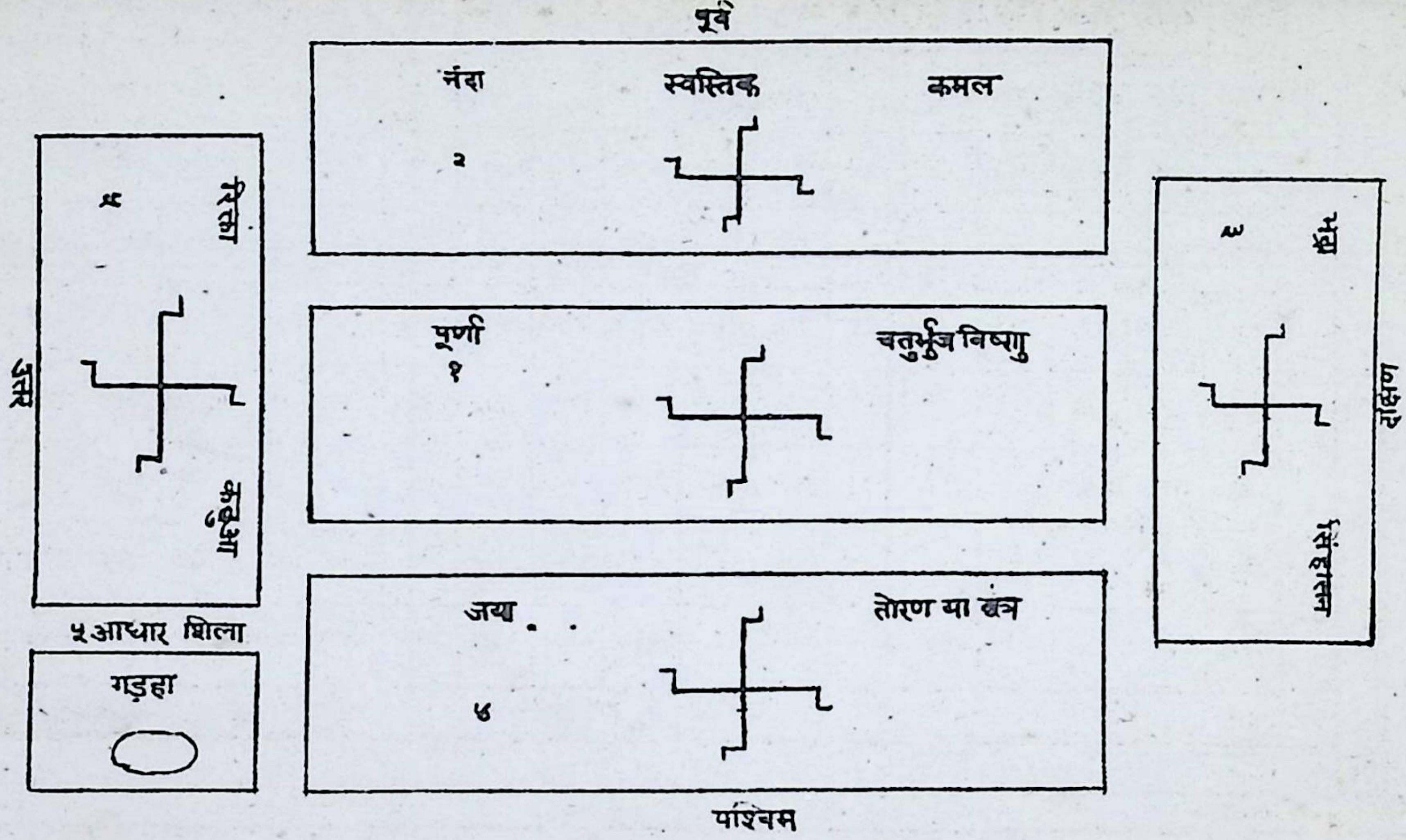

शिला न्यास चक्रम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शत् पद वास्तु चक्रम रेखा ११ कोष्ठ १००

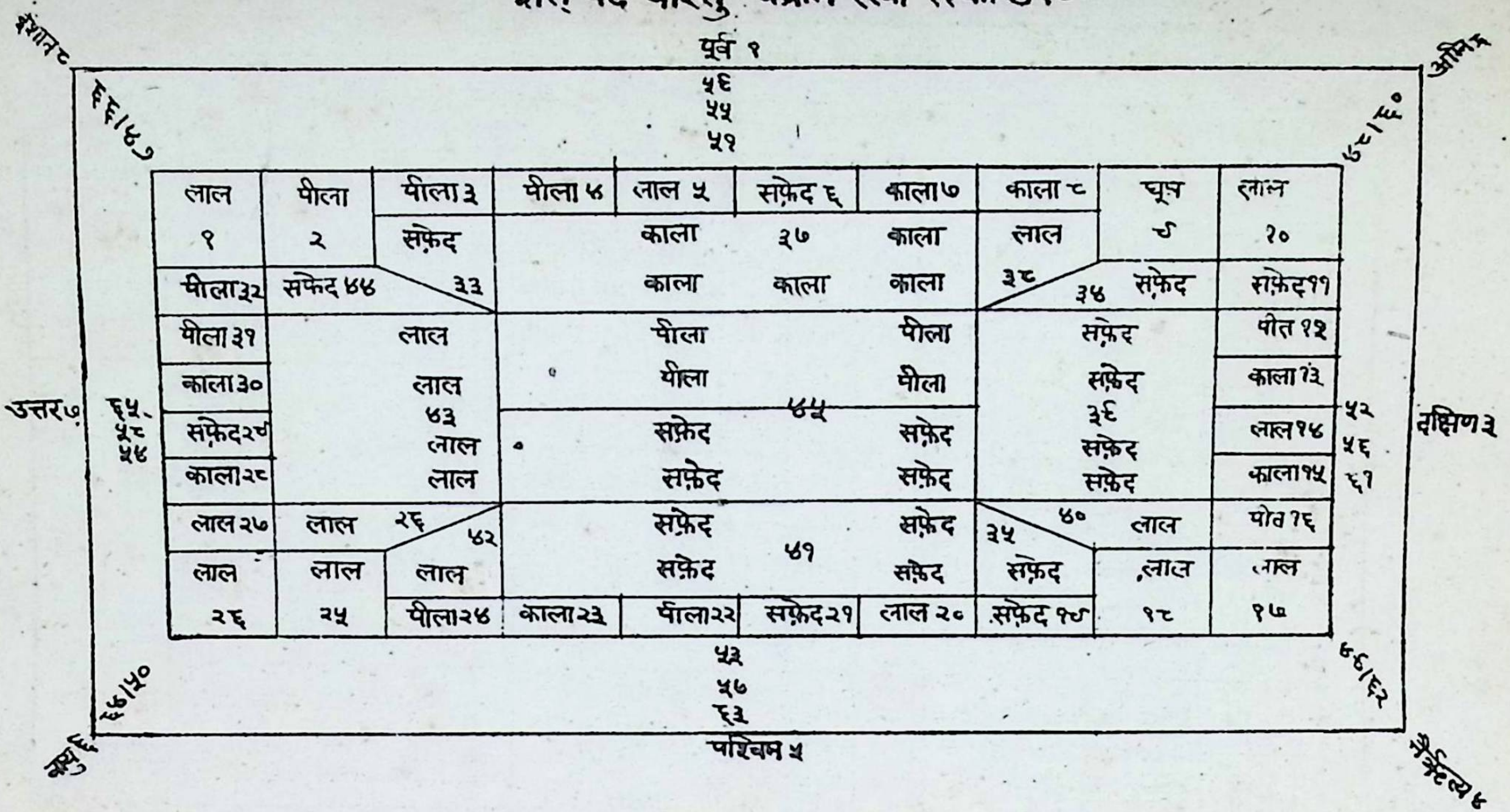

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

प्रासाद स्नान रेखा १० कोष्ट ८१

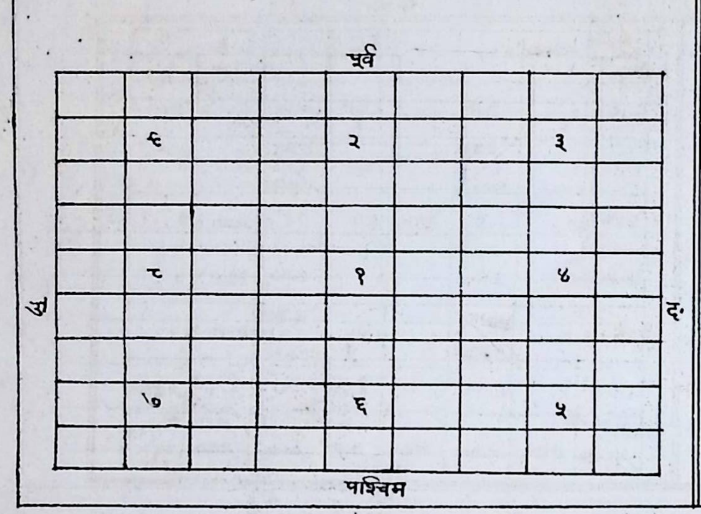

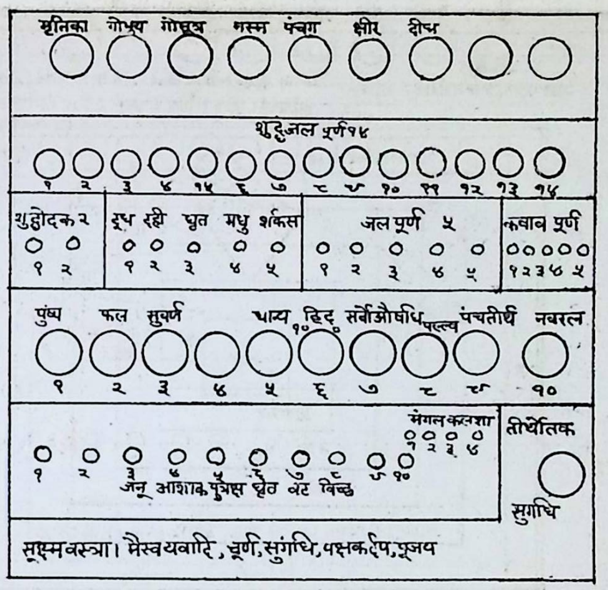

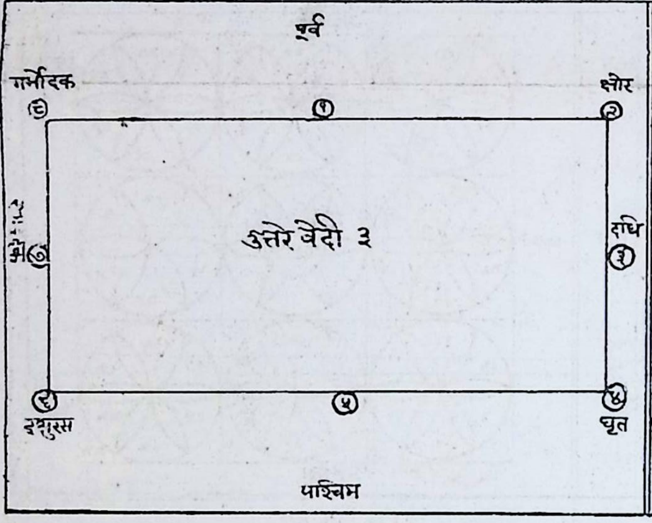

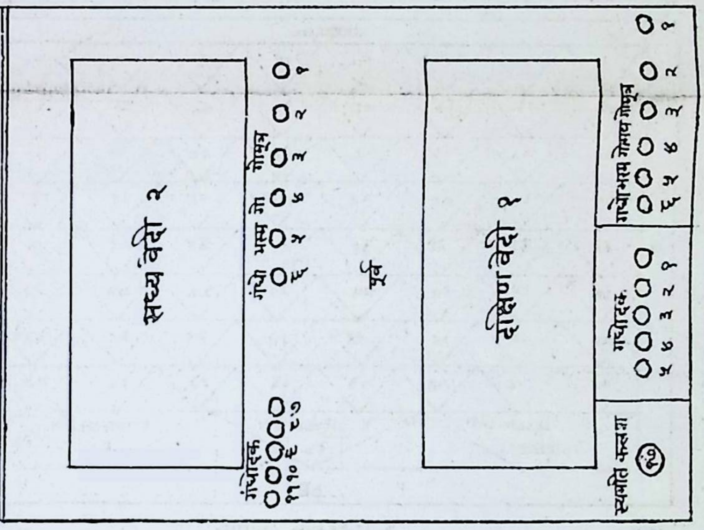

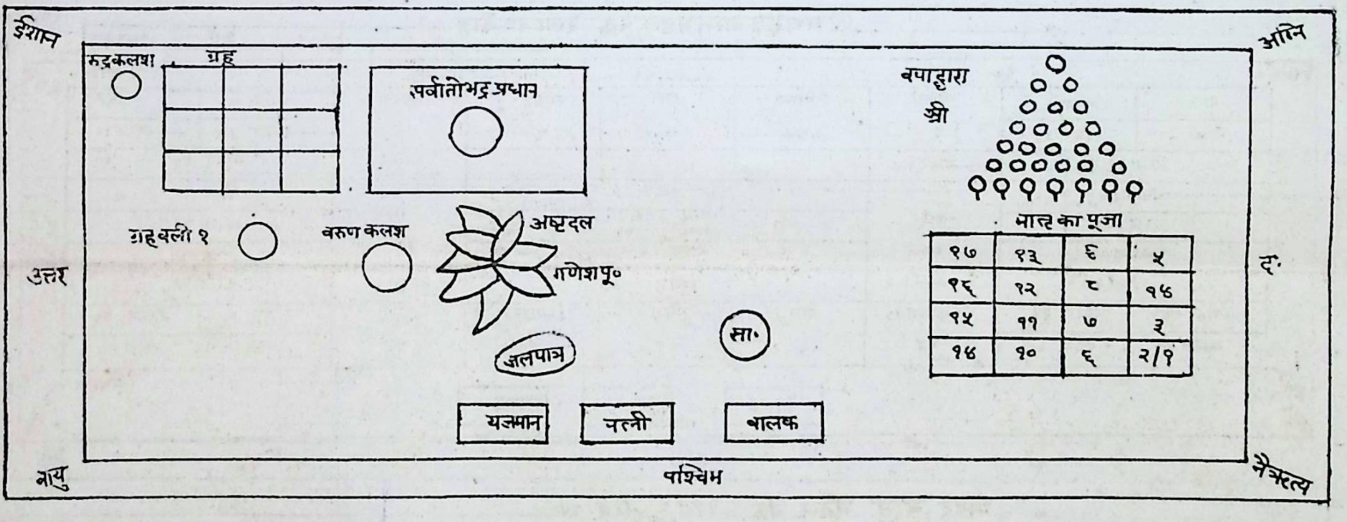

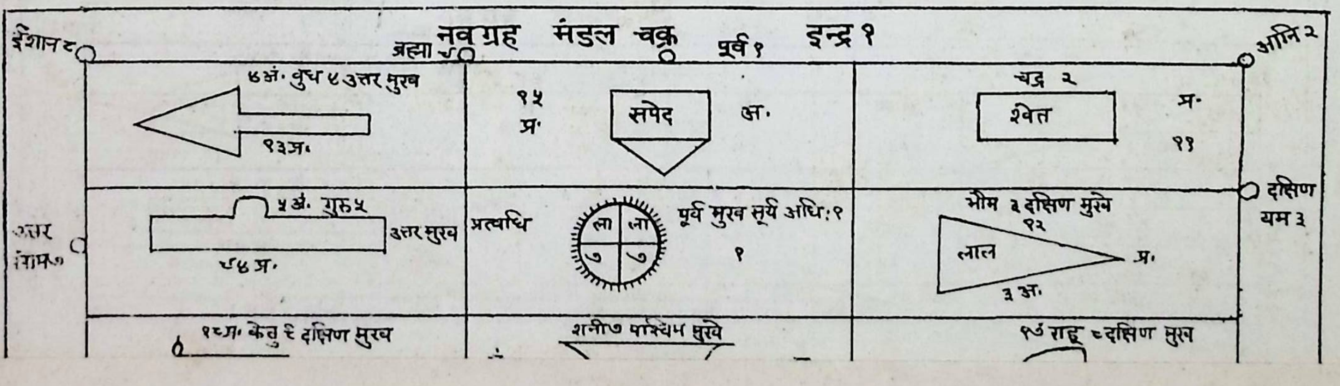

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

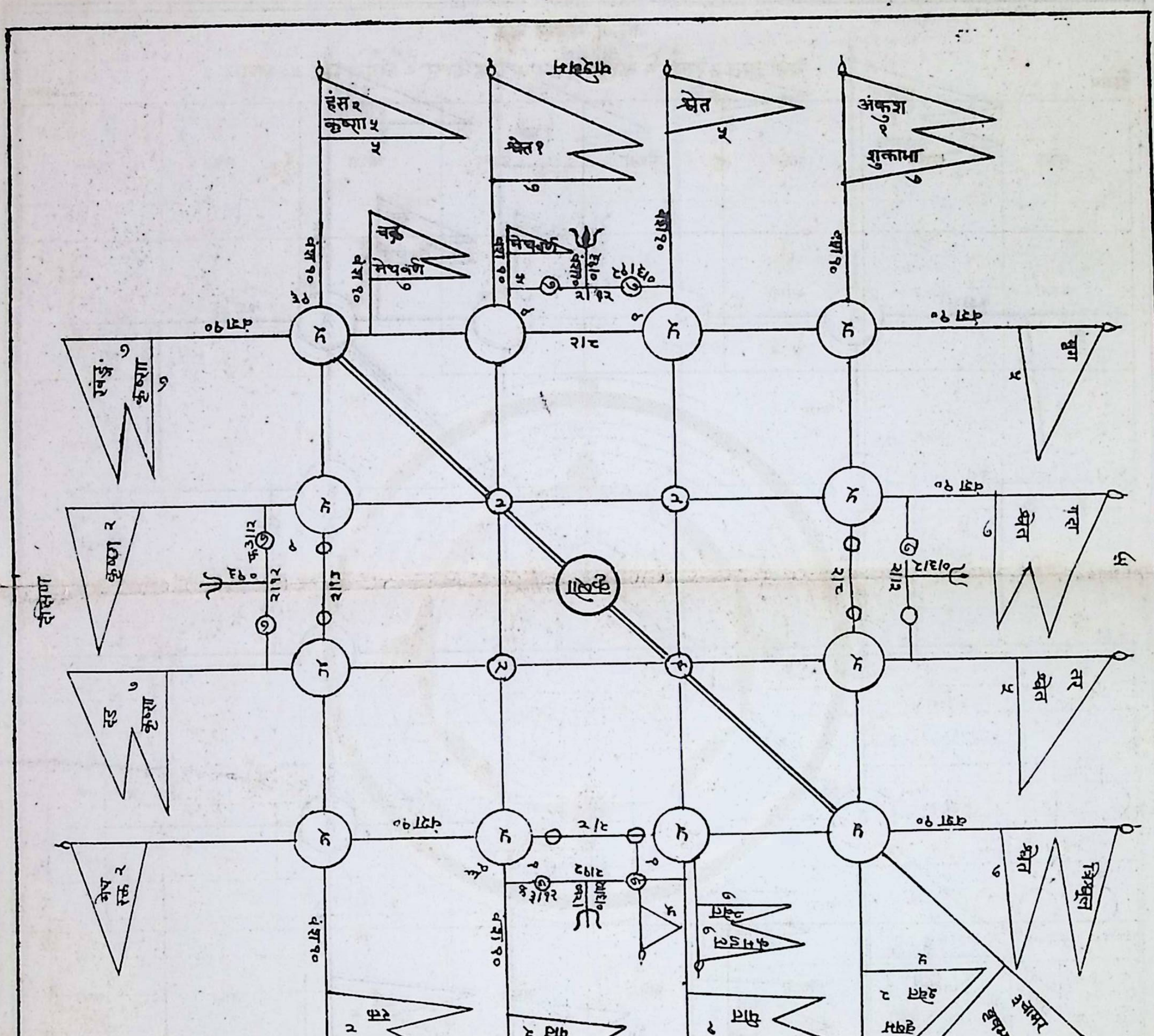

प्रासाद स्नान रेखा १० कोष्ठ ८१

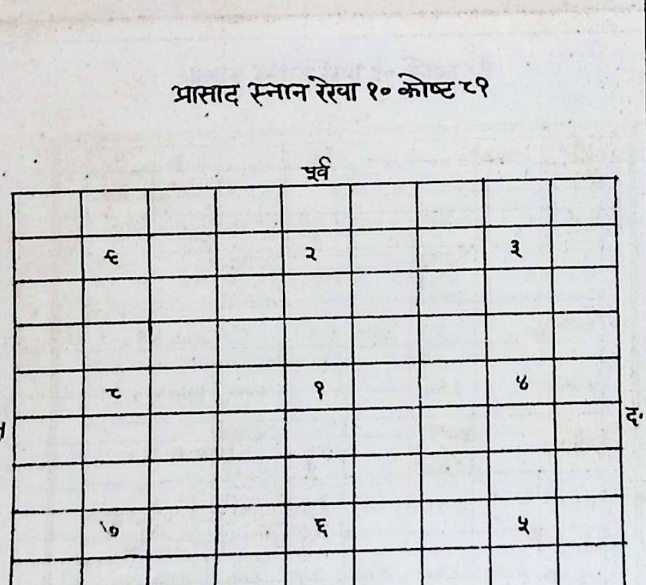

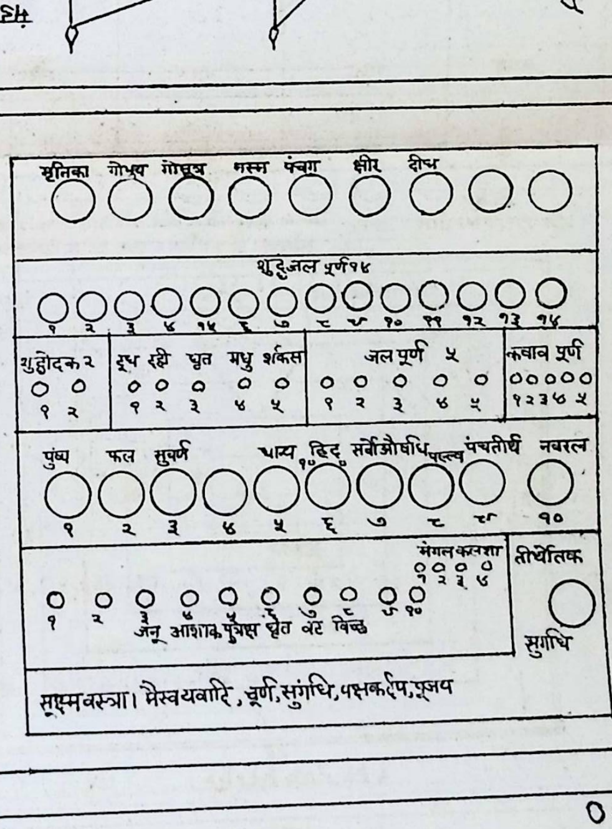

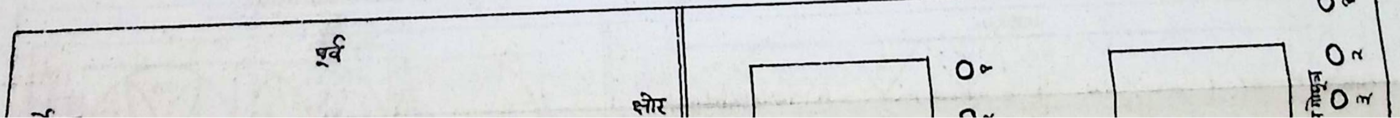

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

वारुण मंडल चक्र

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदी हस्त ३ रेखा ९ कोष्ट ६४ एक एक कोष्ट ९ अंगुल सब ७२ अंगुल

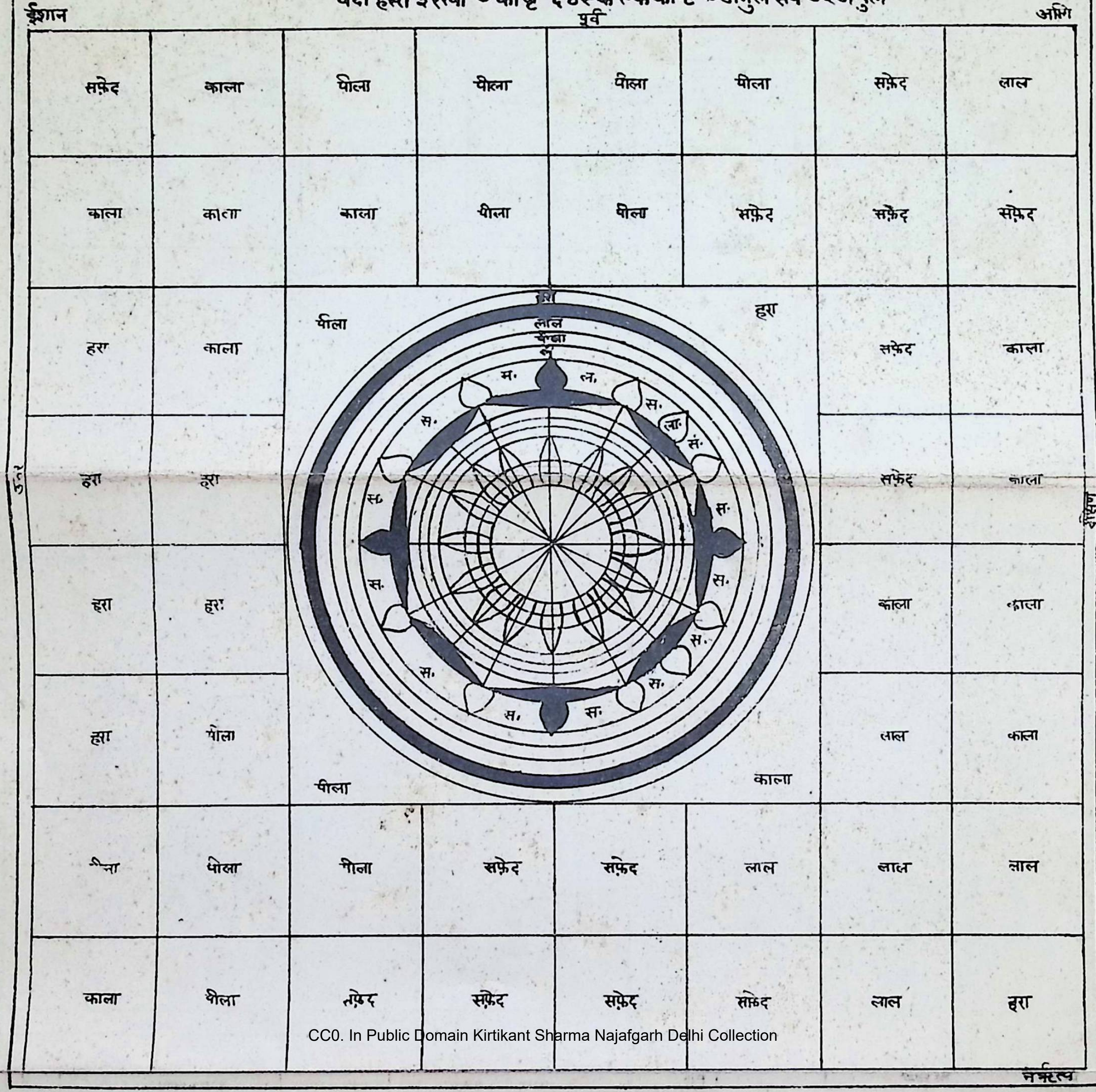

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षेत्र पाल पीठ ३

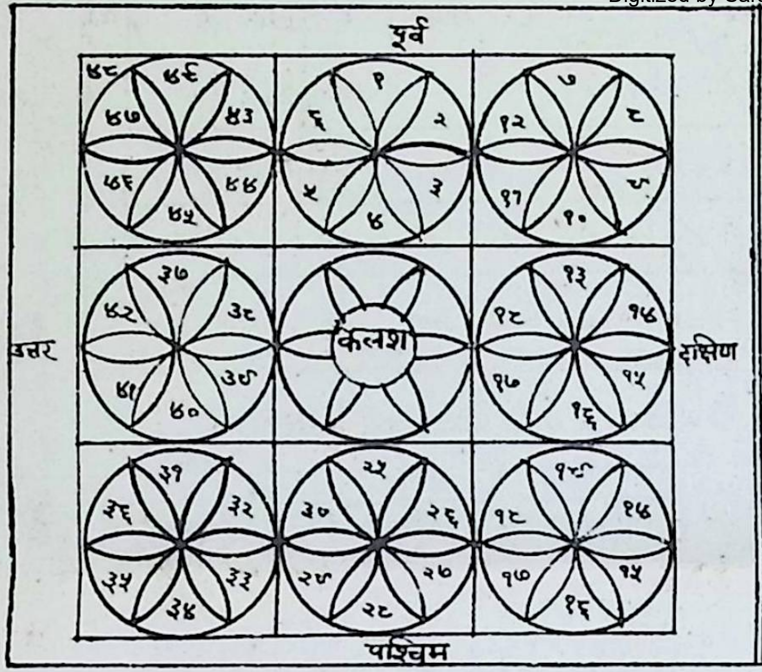

योगिनी पीठ रेखा ९

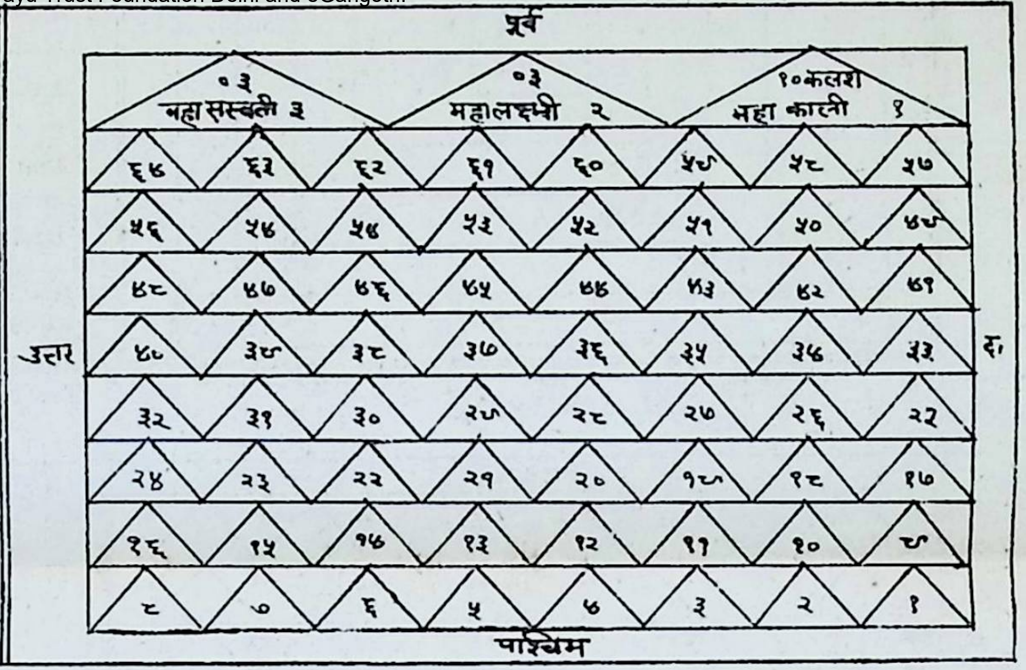

मंडप वास्तु चक्र-रेखा ९ कोष्ट ८

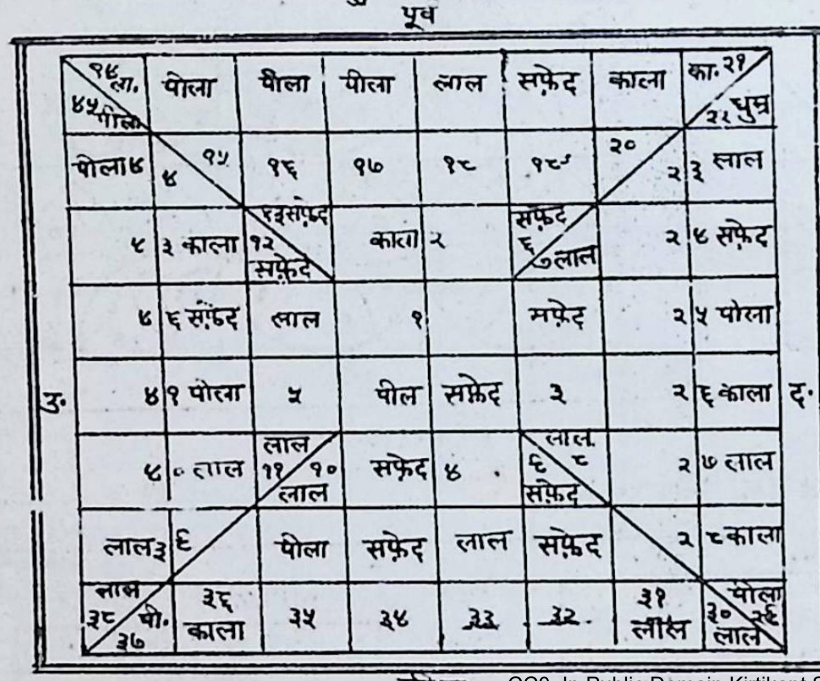

चतुरस्त्र कुण्ड पंद १

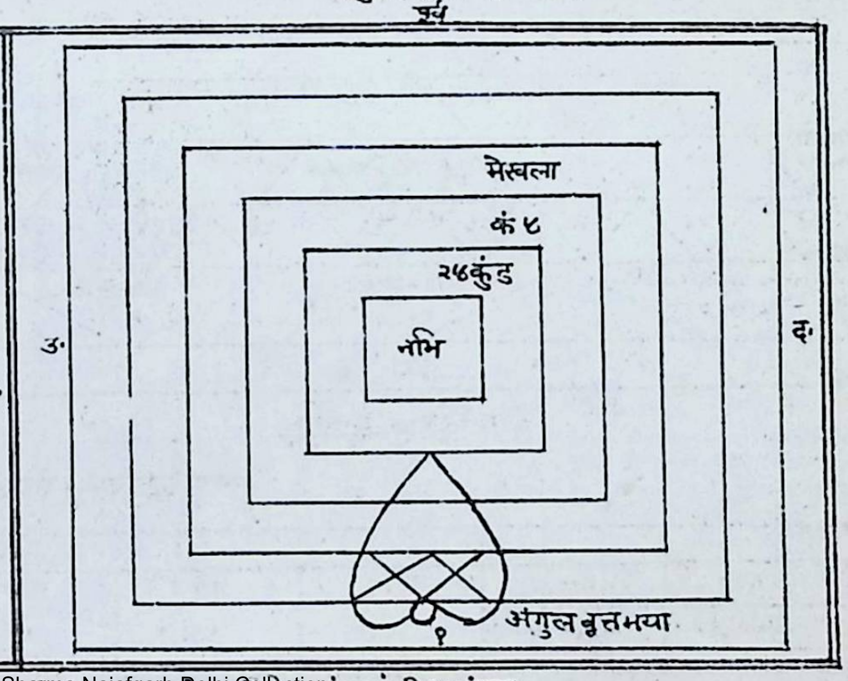

योनिलंबा १२ अंगुल चौड़ी ८ अंगुल ऊंची १३ अंगुल
एक अंगुल मेखला के ऊपर एक अंगुल योनी के ऊपर

ऊपर १ अंगुल संकोचनी चक्र अपेक्षा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

अथपरमशाई वास्तुमंडल चक्र रेखा १० कोष्ठ ८१

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

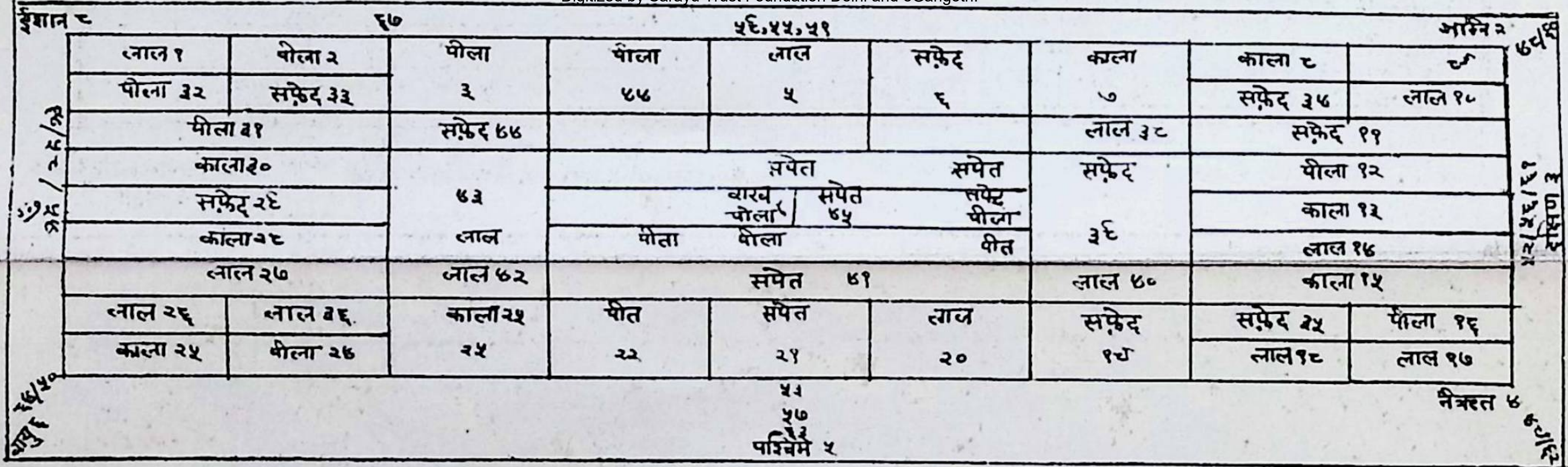

प्रसाद वास्तु मंडल चक्र रेखा ९ कोष्ठ ६४

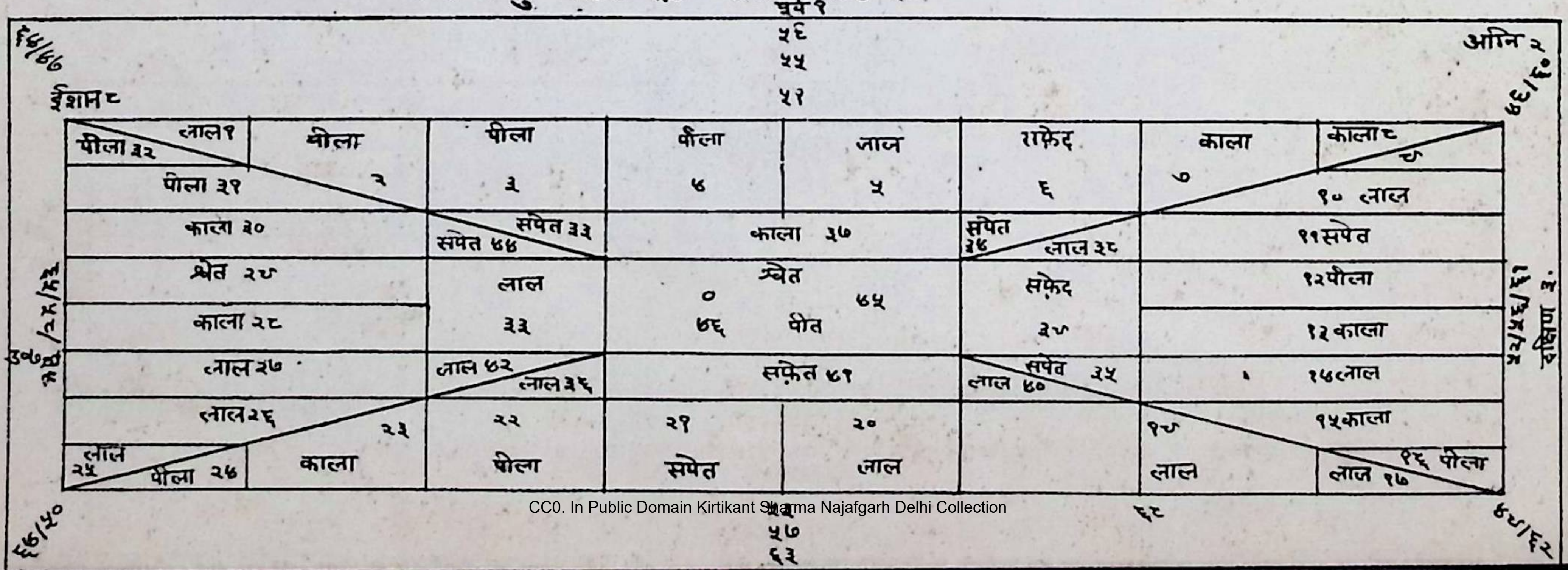

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लघुदर्पणपद्धतिः प्रारभ्यते ।

(षष्ठसंस्करण)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वासिष्ठीहवनपद्धतिः

टिप्पणी तथा भाषाटीका सहित

टीकाकार--महामहोपाध्याय पं० प्रभुदत्तशास्त्रिपौत्र

म० म० पं० विद्याधरशास्त्रिपुत्र पण्डित श्रीदौलतरामशर्मा गौड़ः।

काशी के समस्त पण्डितों का आदरणीय परम्परागत प्राचीन प्रथा के अनुसार यह कर्मकाण्ड का परिचित अपूर्व ग्रन्थ है। टीकाकार ने इसके कठिन विषय को बड़ी सुन्दरता के साथ समझाकर लिखा है और टिप्पणी में जो शास्त्रार्थ का विषय भर दिया है वह बड़े २ पण्डितों को निरुत्तर कर देने वाला विषय है। इसमें यज्ञों में होने वाले वैदिक तान्त्रिक सभी विषय हैं जिसके द्वारा निर्भीकता से समस्त यज्ञों को कराया जा सकता है। मन्त्र पूरे पूरे सस्वर दिये गये हैं। गणेशपूजन से लेकर ३९ कर्मों की समन्त्रक विधि का संग्रह ग्रन्थ है। यह अन्य सर्व साधारण के उपयोगी व शुद्ध छपी है। इसके अनुसार कर्म करने से किसी प्रकार कर्म में त्रुटि होने की सम्भावना नहीं है। टाइप छपाई सफाई सभी अच्छा हुआ है।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट बनारस। (ब्राँच—कचौड़ीगली, बनारस) मूल्य २)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका ।

यद्यपि बहवः कर्मकाण्डग्रन्थाः प्रामाणिकास्सन्ति, तथापि तेषाम्मध्ये कस्मिंश्चिदप्येकस्मिन्निदानीं प्रचलितानि सर्वाणि कर्माणि न प्रतिपादितानि, अतस्तैः ग्रन्थैस्साधारणबुद्ध्योऽल्पपरिश्रमेणाल्पकालेन च सर्वाणि प्रचलितकर्माणि कारयितुं न शक्नुवन्तीति पर्यालोच्य काशीस्थस्वर्गवासिसुप्रसिद्धकर्मकाण्डिप्रवर-बालमुकुन्दभ्रातृजन्मना कर्मलोपभीरुणा जगन्नाथशर्ममालवीयेन महता परिश्रमेण नानाप्रमाणग्रन्थान् प्रयोग-ग्रन्थाँश्चावलोक्य ततः सारांशमुद्धृत्य सर्वलोकोपकाराय प्रचलितश्रौतस्मार्तकर्मप्रमाणप्रयोगाणामादर्शभूत एकः सुप्रबन्धो लघुदर्पणनामको ग्रन्थो विनिर्मितः। प्रायशोऽत्र ग्रन्थे ग्रन्थकर्त्रा सर्वे प्रकाराः सामान्यरूपेण सन्निवेशिताः सन्ति येनैकस्यैवास्य ग्रन्थस्य सहायतामधिगत्य विद्वांसः प्रचलितानि सर्वाणि कर्माणि श्रौत-स्मार्तविधिना कारयितुं शक्नुवन्तीति नात्र कश्चिदपि सन्देहः। सर्वेषां प्रतिपादितविषयाणामनुक्रमणिका तु निम्नपत्रे सन्निवेशिता। ग्रन्थस्यास्योपयोगित्वविषये किमधिकं यतो हि कर्मभूमावस्मिन् भारतवर्षे धर्मप्राणजनतायाः सर्वं कर्मकाण्डमेव। एतस्माद्दृते कश्चिदपि भारतीयः स्वमार्य्यं इति वक्तुं न प्रभवतीति सर्वेषां सदुपकारकत्वेनाऽऽवश्यकता ग्रन्थस्यास्येति।

महामहोपाध्याय–पं० श्रीजयदेवशर्ममिश्रः, काशीस्थविश्वविद्यालयप्रधानाध्यापकः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल० विषया०
द०
॥२॥

❀ ॐ ❀

समर्पण-पत्रम् ।

श्रीकाशीविश्वेश्वरो विजयतेतराम् ।

स्वस्तिश्रीमद्विविधविरुदावलीविराजमानानां महामानोन्नतमस्तकानां महोग्रप्रतापपरिपूर्णदिगन्तानां सकलसद्विद्याविशारदानां गोब्राह्मणधर्मकर्मप्रतिपालकानां सकलमहीमण्डनायमानचारुचरित्राणां शौर्य्यौदार्यसुवर्यतोर्मितबलानां सन्मङ्गलानां सकलकलानिधानानां जी. सी. एस. आई. इति पुनीत (पूत) तमपदवीजुषां श्रीमन्महाराजाऽधिराजद्विजराजकाशीराजप्रभुनारायणसिंहशर्मदेवानां कमनीयकरकमलेष्वेतं "लघुदर्पण" नामधेयं कर्मकाण्डकलापग्रन्थं तदीयश्रीमत्करकल्पपादपच्छायाश्रितः श्रीजगन्नाथशर्ममालवीयो बहुमानपुरस्सरं सानुनयञ्च समर्पितवान् ॥

श्रीमन्महाराजाधिराजद्विजराजकाशीराज श्री १०८ मत्प्रभुनारायणसिंहशर्मणां G.C.S.I.G.C.I.E.L.L.D.

इत्यादिपदभाजां प्रशंसापत्रम् ।

यद्यपि कर्मकाण्डग्रन्थाश्शतशस्सन्ति, परञ्चैकस्मिन्नेव ग्रन्थे कर्मकाण्डीयसकलविषयजिज्ञासामसकृत् कुर्वन्तो विद्वांसोऽपि कर्मकाण्डीयनिखिलपदार्थं ज्ञातुं न पारयन्तीति मनसि कृत्य (कृत्वा) पण्डितश्रीजगन्नाथमालवीयेन कर्मकाण्डसिन्धोरमृतमिव सारांशमेकीकृत्य लघुदर्पणस्सङ्गृहीतः । अयं ग्रन्थः सर्वेषाञ्जनानामत्युपकारक इति प्रमाणीकरोति ॥ ॥२॥

वैशाखकृष्ण १३ गुरुवासरे श्रीसंवत् १९८१ वैक्रमे । प्रभुनारायणः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुगृहीतनामधेयस्य कर्मकाण्डिनो जगन्नाथमालवीयस्य कृतार्थतापादनाय विनिवेदनपत्रम् ।

सुविदितमेव तत्रभवतां यदस्मिन् संसारे ऐहिकपारलौकिकसुखसाधनभूतं कर्मकाण्डमेव वेदमूलतया अस्माकम्भारतीयानां शिरोरत्नतामारोहति । ते च कर्मकाण्डविषया बहुषु पुस्तकेषु बहुभिराचार्य्यवर्यैर्निबद्धाः। सर्वत्र सम्पूर्णमन्त्राणामनुल्लेखात् अनधीतवेदानां दुर्लभत्वात् इदं सर्वमालोच्य सर्वजनोपकाराय विवाहादिसकलसंस्कारप्रदर्शनाय दर्पणभूतोऽयं लघुदर्पणनामकः संग्रहविशेषः कर्मकाण्डप्रकाण्डमालवीयोपाख्यस्वर्गीय पं० बालमुकुन्दशर्मणो भ्रातुष्पुत्रेण मालवीयजगन्नाथशर्मणा निबद्धः। अत्र च सर्वे विषयाः सम्पूर्णमन्त्रादिनिर्देशपूर्वकं साङ्गोपाङ्गविधिसहितः निबद्धाः । अस्य चोपयोगिता ग्रन्थावलोकनेनैव भविष्यतीति न किञ्चिद्वक्तव्यमस्मिन् विषये । अयं ग्रन्थः सर्वैः काशीस्थपण्डितप्रवरैः सम्मानित इति सम्मतिप्रदर्शकहस्ताक्षरैरेव ज्ञानं भविष्यति । अत्र च यथावसरं सम्मतिप्रदानेन मूलभूतपुस्तकादिसंशोधनेन च काशीस्थविश्वविद्यालये व्याकरणशास्त्राध्यापकैर्व्याकरणाचार्यैरम्बिकाप्रसादशर्मभिर्बहूपकृतमिति ते धन्यवादार्हाः । मुद्रणादिव्ययश्च सर्व एव संस्कृतरसिकैः काशीस्थभार्गवभूषणयन्त्रालयाध्यक्षैः बाबू-कैलासनाथ-भार्गव 'अमर' महोदयैः कृत इति धन्यवादपुरःसरं पुनर्मुद्रणाद्यधिकारस्तेषामेव प्रदीयते । मनुष्यमात्रसुलभप्रमादादिदोषैर्यद्विषयाशुद्धिः स्यात्तत्–"गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥" इति न्यायेन समाधातव्यम् ।

यद्यप्यस्य ग्रन्थस्य प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थसंस्करणे अनवधानतावशादनेका अशुद्धय आसन्, परन्तु साम्प्रतं मदीयसंशोधने न स्यात्तासामवकाश इत्याशास्ते–

भवतां—

विनयावनतो निवेदकः ।

काशीस्थकाशीनाथ सं० पाठशालाप्रधानाध्यापक व्या० आ० "विद्यारत्न" पं० माधवप्रसादव्यासः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल० विपया०
द०

प्रशंसापत्रम् ।

सत्स्वपि विशेषनिबन्धेष्वनेकरूपेण सर्वेषामपि कर्मणां संग्रहेषु तत्र च बहुग्रन्थानामालोकनप्रयासमन्तरा सर्वेषां कर्मणा विधिरनायासेन कर्मकाण्डिनामपि सम्यग् ज्ञातो न भवति। कर्मकाण्डिनश्च कर्मणामेकत्ररूपप्रबन्धं च साधारणजनेभ्यः प्रच्छन्नं निगूढतत्त्वमेव परिपालयन्ति। अतश्च सर्वेषामेवोपकारायाऽऽवश्यकानां सर्वेषामेव कर्मणां संग्रहरूपोऽयं लघुदर्पणनामा निबन्धो महता परिश्रमेण बहून् ग्रन्थानवलोक्य संगृहीतः। अस्मिंश्च ग्रन्थे सर्वे मन्त्राः सङ्कल्पादयश्च संशोध्य यथास्थानमभिनिवेशिताः; येन प्रेक्षावतां मन्त्रप्रतीकमात्रदर्शनेन तत्सकलमन्त्राभ्यासश्रमं विनैव तत्तत्कर्मप्रयोगसौकर्यं सुखेन सम्पद्येत। अस्य निबन्धस्य विलोकनमात्रेणाल्पसंस्कृतबोधवन्तोऽपि सुखेन शुद्धतया चाखिलावश्यककर्मसंपादनं कर्तुं पारयेयुः। एतदवलोकनेन विद्वांसः कर्मकाण्डिनश्च यद्यल्पामप्युपकृतिमासादयेयुस्तदाहमात्मनः परिश्रमं सफलं मन्ये इति सनातनधर्म्मावलम्बिबुधेषु सानुनयं भृशं निवेदयते। एतद्ग्रन्थावलोकने कृतानुमतिकानां काशीस्थपण्डितानां नामानि च विनिवेशितानि।

तद्यथा-दत्तानुमतिकानां पण्डितप्रवराणां नामानि ।

१ कर्मकाण्डिनामुपकारकोऽयं संग्रह इति मदनमोहनमालवीयः।

२ महामहोपाध्यायजयदेवमिश्रः सम्मनुते हिन्दूविश्वविद्यालयप्रधानाध्यापकः।

३ महामहोपाध्यायद्राविड़-श्रीलक्ष्मणशास्त्रिणः,भूतपूर्वकलिकातागवर्नमेण्टसंस्कृतपाठशालाप्रधानाध्यापकाः।

४ सर्वोपयोगिवेदोक्तकर्मणां लघुदर्पणे पुस्तके सन्निवशोऽस्ति तदिदं मम सम्मतमिति महामहोपाध्यायज्योतिर्विद्योध्यानाथशर्मणः।

५म० म० कविकुलचक्रवर्ती पं० देवीप्रसादशुक्लाः,

६ महामहोपाध्यायाः पं० प्रभुदत्ताग्निहोत्रिणः,

७ सम्मनुते महामहोपाध्यायः लक्ष्मणशास्त्री तैलङ्गः।

८ सम्मनुते महामहोपाध्यायवामाचरणभट्टाचार्यः

॥३॥ ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काशीस्थराजकीयसंस्कृतपाठशालायां न्यायशास्त्रा-
ध्यापकः ।
९ पं० महादेवशास्त्रिणः प्रो. ग. सं. का, काशी
१० वैयाकरणकेशरिदेवनारायणत्रिवेदिनः ,,
११ सम्मतिरत्र पं० बालबोधमिश्रस्य ,, ,,
१२ पं० गणपतिदेवशास्त्रिणः ,, ,,
१३ पं० खिस्तेनारायणशास्त्रिसाहित्याचार्यः ,, ,,
१४ पं० गणपतिशास्त्री मोकाटे ,, ,,
१५ पं० हृषीकेश उपाध्यायः ,, ,,
१६ काशीस्थराजकीय संस्कृतपाठशालायां प्रधान-
व्याकरणशास्त्राध्यापक पं० श्री रामभवनोपाध्या-
योऽपि सम्मनुतेऽस्योपयोगिताम् ।
१७ सम्मनुते महामहोपाध्यायझोपनामकपण्डित-
मुरलीधरशर्मा गवर्नमेण्टसंस्कृतपाठशालायां ज्यो-
तिश्शास्त्राध्यापकः ।
१८ पं०भालचन्द्रशास्त्रिणः, गवर्नमेण्टसंस्कृतपाठशा-
लायां साहित्यशास्त्राध्यापकाः ।
१९ पं० रामयत्न ओझाजी
काशीविश्वविद्यालये ज्यौतिषशास्त्रप्रधानाध्यापकः ।
२० पं० बलदेवमिश्रजी ज्योतिर्विद् काशीविश्व-
विद्यालये ज्योतिश्शास्त्राध्यापकः ।

२१ म० म० पं० विद्याधरशर्मा गौडः, विश्व-
विद्यालये वेदाद्यध्यापकः ।
२२ पं० रामावतारपाण्डेयः; प्रिन्सिपलः, काशी-
विश्वविद्यालये संस्कृतविभागस्य ।
२३ पं० अम्बिकाप्रसादउपाध्यायः काशीविश्व-
विद्यालये व्याकरणाध्यापकः ।
२४ पं० नित्यानन्दमीमांसकः ।
२५ पं० अनन्तरामसारस्वतः प्रिन्सिपल रणवीरसं.पा०
२६ न्यायरत्न-पं० श्रीकरणशास्त्रिणः
२७ त्रिपाठ्युपनामक-पं० अच्युतानन्दशर्मा
२८ न्यायवेदान्ताचार्य-पं० पद्मनाभशास्त्रिणः
२९ झोपनामक—पं० हरिकान्तशर्मा काशीराजा-
श्रितोऽध्यक्षपदभूषितः ।
३० पं० कुबेरपतिशर्मा भूतपूर्वकाशीराजधर्मसभा-
ध्यक्षः ।
३१ पाण्डेयोपनामक-पं० विष्णुदत्तशर्मा
३२ पं० द्वारकादत्तव्याससूनुः पं० गयादत्तव्यासः ।
३३ पं० रामावधिशर्मा विद्वत्परिषत् काशी ।
३४ आशुकवि पं० सुनाकिशर्मा ।
३५ पं० देविदत्तशर्मा भूतपूर्वबड़हराधीश्वर्य्या दा-
नाध्यक्षः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३६ पं० गङ्गाधरज्योतिषी लालघाट काशी ।
३७ पं० शिवपूजकशर्मा दुर्गात्रि०पा० अध्यापकः ।
३८ पं० रामकृपालुचतुर्वेदी ईश्वरगङ्गी काशी ।
३९ पं० सभापति उपाध्यायः, विरलासंस्कृतपाठशालायां प्रधानाध्यक्षः ।
४० ज्यौतिषरत्न पं० गणेशदत्ताजी भदैनी काशी ।
४१ पं० गणेशदत्ता आपाजी म्हस्करः ।
४२ पं० विश्वनाथमिश्र ज्योतिषी लालघाट काशी ।
४३ पं० जगन्नाथव्याससूनु - माधवप्रसादव्यासः काशीनाथ सं० पाठशालाध्यापकः ।
४४ ज्यौ० आ० पं० रिशालदत्तज्योतिषी बलिया ।
४५ पं० देवकीनन्दनशास्त्रिणः, टीकमणिसंस्कृतकालेजाध्यक्षः दर्शनालङ्कारः ।
४६ पं० रामकृष्णज्योतिषी बुन्दीमहाराजाश्रिताध्यक्षपदभूषितः ।
४७ पं० बद्रीनाथज्योतिर्विदः ।
४८ ज्यौ० आ० पं० रघुनाथजी [बम्बईजी] ।
४९ पं० पुरुषोत्तमजी वैदिकः ।
५० पं० रघुनन्दनमालवीयः ।
५१ पं० बलभद्ररामशर्मा मालवीयः ।
५२ पं० सरयूदत्तदीक्षितः ।
५३ पं० काशीनाथपाण्डेयाः कर्मकाण्डिनः ।
५४ श्रीरामस्वार्थमिश्रतनुजनुषः सा०आ०ऽया०आ० श्रीहरगोविन्दमिश्रस्यापि सम्मतिः ।
५५ पं० त्र्यम्बकशास्त्री प्रधानराजवैद्यः ।
५६ सर्वोपयोगी विशेषतः कर्मकाण्डिनामतीवोपकारकोऽत्युत्तमोऽयं ग्रन्थो लघुदर्पणनामक इति पं० रामफलपाण्डेयज्योतिर्विदस्सम्मतिरत्र ।
५७ पं० गणेशभट्टगोड़शे ।
५८ पं० व्रजविहारीझा ।

एतदतिरिक्तानां पण्डितप्रवराणां सम्मतिरप्यस्ति किन्त्वत्र स्थानाभावात्तस्याः समावेशो नास्ति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रहयज्ञस्थविषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
चक्राणि		गृहवास्तुमण्डलम्	४
सर्वतोभद्रमण्डलम्	१	प्रासादवास्तुमण्डलम्	५
चतुर्लिङ्गतोभद्रम्	२	शतपदवास्तुमण्डलम्	६
नवग्रहमण्डलम्	३	वारुणमण्डलम्	७

अथ ग्रहयज्ञप्रकरणम् ।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मङ्गलाचरणम्	१	नान्दीश्राद्धम्	१३
परिभाषा	१	आचार्यादिवरणम्	१५
शान्तिपाठमन्त्राः	३	सर्षपविकिरणम्	१५
प्रधानसंकल्पः	४	पञ्चगव्यकरणम्	१५
गणपतिपूजनम्	५	सर्वतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम्	१६
कलशस्थापनं पूजनं च	७	प्रतिमाप्राणप्रतिष्ठा	१७
पुण्याहवाचनम्	९	प्रधानदेवतापूजनम्	१७
तोरणमातृकापूजनम्	१२	पञ्चभूसंस्करणम्	१७
मातृकापूजनम्	१२	अग्निस्थापनम्	१८
वसोर्धारापूजनम्	१३	ग्रहमण्डलप्रकारः	१८
आयुष्यमन्त्रजपः	१३	सूर्याद्यावाहनम्	१८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल०
द०
॥५॥

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
ग्रहपूजा	१९
अधिदेवतास्थापनम्	२०
प्रत्यधिदेवतास्थापनम्	२०
पञ्चलोकपालस्थापनम्	२०
दशदिक्पालस्थापनम्	२१
रुद्रकलशस्थापनम्	२२
कुशकण्डिकाकरणम्	२२
द्रव्यत्यागः	२२
अग्निपूजनम्	२२
ग्रहहोमः	२३
प्रधानहोमः	२४
मण्डलदेवताहोमः	२४
अग्नेरुत्तरपूजनम्	२५—२८
भूराद्या नवाहुतयः	,,
दिक्पालानां बलिदानम्	,,
ग्रहाणां बलिदानम्	,,
क्षेत्रपालाय बलिदानम्	,,

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पूर्णाहुतिहोमः	,,
वसोर्द्धारा	,,
त्र्यायुषकरणम्	,,
पूर्णपात्रदानम्	,,
आचार्यादिपूजनम्	२५—२८
गोदानम्	,,
आचार्यादीनां दक्षिणादानम्	,,
ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः	,,
अभिषेकः	,,
उत्तरपूजनम्	,,
विसर्जनम्	,,
पीठदानम्	,,
भूयसीदक्षिणादानम्	,,
अग्निविसर्जनम्	,,
कर्मेश्वरार्पणम्	,,
चतुर्वेदोक्तपुण्याहवाचनम्	२८
मण्डपस्थापनम्	२९

विषया०
॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लघुदर्पणस्थविषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मंगलाचरणम्	३०	भद्राशान्तिप्रयोगः	५६
तिलकविधिः	३०	वर्द्धापनविधिः	५७
तैलहरिद्रारोपणम्	३०	दत्तकपुत्रप्रतिग्रहविधिः	५८
पञ्चाङ्गकृत्यसङ्कल्पः	३१	चूड़ाकरणप्रयोगः	५९
द्वारपूजा	३१	कर्णवेधः	६१
कन्यावरणम्	३२	आवाहनप्रकारः	६१
विवाहप्रयोगः	३२	अतिक्रान्तिसंस्कारः	६२
कन्यापितृसम्बन्धिपद्यानि	४१	उपनयनकालातिपातप्रायश्चित्तम्	६२
वरपितृसम्बन्धिपद्यानि	४१	उपनयनप्रयोगः	६३
विवाहे अशौचनिर्णयः	४४	वेदारम्भः	६७
रजोदोषे निर्णयः	४५	समावर्तनम्	६८
देवकोत्थापनम्	४५	यज्ञोपवीतधारणम्	७१
वधूप्रवेशः	४५	नित्यस्नानविधिः	७२
जलपूजादिकर्म	४५	प्रातःसन्ध्योपासनप्रयोगः	७४
द्विरागमनम्	४६	तर्पणप्रयोगः	७५
मूलशान्तिप्रयोगः	४७	आमान्नदानम्	७८
गोमुखप्रसवशान्तिप्रयोगः	५१	धर्मघटदानम्	७९
मूलविधानपद्धतिः	५१	जगन्नाथयात्राहवनम्	७९

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सुवृष्टिप्रयोगः	८०
वामनदानम्	८०
वामनद्वादश्यां शिक्यदानम्	८०
नवरात्रपूजाविधिः	८०
दुर्गापाठविधिः	८०
वरणम्	८१
शतचण्डीविधिः	८१
दुर्गाष्टमीपूजाविधिः	८२
श्रीरामपूजनम्	८२
होमदिनकृत्यम्	८२
नवरात्रहोमविधिः	८२
तर्पणम्	८३
मार्जनम्	८३
विजयादशम्यां पूजाविधिः	८४
दीपावलीपूजाप्रयोगः	८५
तुलापूजनम्	८७
धर्मराजपूजनम्	८७
हरितालिकाव्रतोद्यापनम्	८७
ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनम्	९०
महालक्ष्मीव्रतोद्यापनम्	९०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अनन्तचतुर्दशी व्रतोद्यापनम्	९०
धात्रीपूजनविधिः	९१
कूष्माण्डदानम्	९२
देवप्रबोधोत्सवः	९५
कार्तिकादिमासव्रतोद्यापनम्	९३
पञ्चक्रोशीयात्रासङ्कल्पः	९३
भैरवाष्टमीव्रतोद्यापनप्रयोगः	९४
एकादशीव्रतोद्यापनविधिः	९४
प्रधानहोमः	९६
प्रदोष व्रतोद्यापनम्	९९
रविवारव्रतोद्यापनम्	९९
तूलवस्त्रदानम्	१००
कृसरान्नदानम्	१००
तिलमोदकदानम्	१०१
रुद्राभिषेकविधिः	१०१
शिवरात्रिव्रतोद्यापनम्	१०२
अपूपदानम्	१०३
बगलामुखीमन्त्रजपविधिः	१०३
बगलामुखीस्तोत्रम्	१०४
कार्तवीर्यादिमन्त्रविधिः	१०५

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
हनुमदस्त्रस्तोत्रम्	१०६
उल्कादिशान्तिः	१०७
राज्याभिषेकः	१०७
ग्रामदानम्	१११
भूमिदानम्	११२
वस्त्रदानम्	११२
गजदानम्	११२
अश्वदानम्	११२
सुवर्णदानम्	११३
गोदानम्	११३
छागदानम्	११३
गृहदानम्	११३
छत्र-चामर-पताका-पूजा	११३
खड्ग-छुरिका-कटार-धनुष-कुन्त-चर्म-शक्ति-पूजा	११४
बन्दूक-शतघ्नी-पाश-परशु-कनकदण्ड-दुन्दुभि-घटिका-शङ्ख-सिंहासनपूजा	११४
शिबिका-रथ-द्विचक्ररथ-अश्व-गज-रत्न-पूजा	११५
मुद्रा-भाण्डारगृह-धान्यपूजा	११६

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मल्लशाला-पैशाचालपिकापूजा	११७
वस्त्र-परिमल-सरस्वतीपूजा	११८
राजच्छत्रपूजा	११९
लघुरुद्रहोमः	११९
विष्णुयागः	१२४
शिलान्यासविधिः	१२९
शिलान्यासप्रयोगः	१३०
देहलीन्यासविधिः	१३२
वास्तुशान्तिप्रयोगः	१३३
प्रासादवास्तुरेखादेवताः	१३४
शतपदवास्तुरेखादेवताः	१३४
ध्वजोच्छ्रयणम्	१३८
कूपोत्सर्गप्रयोगः	१३९
वरुणमण्डलदेवतास्थापनम्	१४०
कुद्दालपूजनम्	१४२
तडागोत्सर्गपद्धतिः	१४२
तडागोत्सर्गप्रयोगः	१४४
वारुणमण्डलदेवतास्थापनक्रमः	१६५
वृक्षारोपणविधिः	१६५
आरामप्रतिष्ठाप्रयोगः	१६६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
घट्टगोपुरमठधर्मशालाद्युद्यापनप्रयोगः	१६७
प्रतिष्ठोद्यापनाधिकारिनिर्णयः	१६९
भूम्यादिपूजनविधिः	१६९
कुण्डमण्डपनिर्माणप्रकारः	१७०
सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः	१७२
सपत्नीकप्रायश्चित्ते सङ्कल्पादौ विशेषः	१७६
लिङ्गप्रतिष्ठाविधिः	१७६
विष्ण्वादिप्रतिष्ठाविधिः	१८५
सर्वदेवप्रतिष्ठाविधिः	१९३
विधवास्त्रीकर्तृकारामादिप्रतिष्ठाविधिः	२१६
पुनःप्रतिष्ठा	२१७
जीर्णोद्धारविधिः	२१८
ग्रहजपसङ्कल्पविधिः	२१९
नवग्रहस्तोत्रम्	२१९
नवग्रहदानानि	२१९
तुलादानप्रयोगः	२१९
मोदकदानविधिः	२२१
गोदानविधिः	२२१
पापधेनुदानम्	२२३
ऋणधेनुदानम्	२२३

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प्रायश्चित्तधेनुदानम्	२२३
वैतरणीधेनुदानम्	२२३
उत्क्रान्तधेनुदानम्	२२३
पञ्चधेनुदानम्	२२३
अष्टमहादानानि	२२३
तिलपात्रदानम्	२२३
घृतपात्रदानम्	२२४
शुद्धिनिर्णयः	२२४
जननमरणाशौचयोर्नियमः	२२४
अशौचसङ्करः	२२४
विदेशस्थाशौचम्	२२४
बालाद्याशौचम्	२२४
स्त्र्यशौचम्	२२५
गर्भस्रावाशौचम्	२२५
मृत्युविशेषाशौचम्	२२५
असपिण्डाद्याशौचम्	२२५
निर्हाराद्याशौचम्	२२६
अधिकारिणः	२२६
अन्त्येष्टिः	२२६
दाहविधिः	,,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पञ्चकमरणविधिः	२२६
सूतिका-मरण-विधिः	२२८
रजस्वला-मरण-विधिः	२२८
दुर्मरणनिमित्तप्रायश्चित्तानि	२२८
कुष्ठिमरणदाहविधिः	२२९
पालाशपुत्तल-दाहविधिः	२२९
अश्वत्थे घटबन्धनम्	२३०
दशगात्रविधिः	२३०
पञ्चकशान्तिप्रयोगः	२३१
एकादशाहविधिः	२२९
मासिकश्राद्धम्	२३१
वृषोत्सर्गविधिः	२३२
वैतरणीदानम्	२३५
महिषीदानम्	२३५
शिबिकादानम्	२३५
सपिण्डीकरणश्राद्धविधिः	२३६
मोक्षधेनुदानम्	२३९
त्रयोदशाहे शय्यादानविधिः	२३९
पददानम्	२४०
घटदानम्	२४१
उष्णीषबन्धनम्	२४१
पिण्डविचारः	२४१
एकोद्दिष्टश्राद्धविधिः	२४१
साङ्कल्पिकैकोद्दिष्टश्राद्धविधिः	२४३
मातृश्राद्धसङ्कल्पः	२४४
स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोगः	२४५
श्राद्धोपयोगिविभक्तिः	२४५
पार्वणश्राद्धसङ्कल्पः	२४६
दर्शश्राद्धविधिः	२४६
त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोगः	२४९
तीर्थश्राद्धविधिः	२५४
कपिलधारातीर्थे षोडशीविधिः	२५६
गयाश्राद्धविधिः	२५७
संक्षिप्तगयाश्राद्धप्रयोगः	२६९
पुराणोक्तसपिण्डीकरणश्राद्धश्लोकाः	२७०
एकोद्दिष्टश्राद्धश्लोकाः	२७०
पार्वणश्राद्धश्लोकाः	२७०
गयाहवनविधिः	२७१
विधवाकर्तृकगयाहवनविधिः	२७१
पुराणोक्तहनुमत्प्रतिष्ठाविधिः	२७३

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल० द०

॥८॥

विषय०

श्री शिवपूजन प्रयोग

नित्यकर्म सहित

आज यह अपूर्व ग्रन्थ आपके सामने आरहा है। इसको एकवार दृष्टि देकर अवश्य देखिये। प्रस्तुत पुस्तक में शिवपूजन का वैदिक क्रम बहुत ही सुन्दर है और नित्य के सभी कार्यों के प्रयोग सरल रीति से दिये गये हैं। तथा यह ग्रन्थ प्रातःस्मरण, गृहस्नानविधि, पुरुषसूक्त, भस्म, रुद्राक्षधारण, शिखावन्धन, प्रातः-सन्ध्या, शिवपूजन, रुद्राष्टाध्यायी, महिम्नस्तोत्र, गणेश अथर्वशीर्ष, मध्याह्नसन्ध्या, सूर्यनमस्कार, ब्रह्मयज्ञ, तर्पण, वलि वैश्वदेव, नित्यहोम, भोजनविधि, सायंसन्ध्या, यज्ञोपवीतधारणविधि, मृत्युञ्जय जपविधि, नवग्रह जपविधि, ईशावास्योपनिषद् और रात्रिस्मरण आदि विषयों से विभूषित है।

इस ग्रथ के संकलनकर्ता आप लोगों के सुपरिचित "दुर्गापूजनप्रयोग" के विख्यात लेखक श्रीमान् पं० तुलारामजी शर्मा चौकियाल और संग्रहकर्त्ता श्रीयुत् सेठ मुरलीधरजी जाजू निम्बिजोधान निवासी हैं। आप इसको देखते ही मोहित हो जायँगे। इसके द्वारा शिवपूजन तथा नित्यकर्म करने में बड़ी सहायता मिलेगी।

मूल्य १॥)

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस। (ब्राँच—कचौड़ीगली बनारस)

॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ लघुदर्पणेग्रहयज्ञप्रकरणम्

श्रीगणेशाय नमः ।। मालवीयवालमुकुन्दगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।। गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।। १ ।। अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराऽचरम् ।। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।। २ ।। नत्वा विनायकं देवं शङ्करं गिरिजां तथा ।। मालवीयोपाह्वयेन कालीचरणसूनुना ।। ३ ।। जगन्नाथेन रचिता ग्रहयज्ञस्य पद्धतिः ।। तेन तुष्टः कर्मफलप्रदाता शङ्करोऽस्तु मे ।। ४ ।।

तत्र परिभाषाः—उपर्याच्छादनं यत्र नास्ति तत्राऽन्तरिक्षता ।। अनाच्छादितभूर्यत्र त्वन्तरिक्षं तदिष्यते ।। १ ।। सूर्योदयं विना नैव स्नानदानादिकक्रमः ।। स्नानं सन्ध्या तर्पणादिजपहोमसुरार्चनम् ।। उपवासवता कार्यं सायं सन्ध्याहुतीर्विना ।। २ ।। इक्षुरापः पयो मूलं ताम्बूलं फलमौषधम् ।। भक्षयित्वाऽपि कर्त्तव्याः स्नानदानादिकाः क्रिया ।। ३ ।। अधोवायुसमुत्सर्गे प्रहासेऽनृतभाषणे ।। मार्जारमूषकस्पर्शे आक्रुष्टे क्रोधसम्भवे ।। निमित्तेष्वेषु सर्वेषु कर्म कुर्वन्नपः स्पृशेत् ।। ४ ।। अशिरस्कं भवेत्स्नानं स्नानाशक्तौ तु कर्मिणाम् ।। आर्द्रेण वाससा वाऽपि मार्जनं दैहिकं विदुः ।। ५ ।। कम्बले पट्टवस्त्रे च नीलीरागो न दुष्यति ।। दग्धं-जीर्णञ्च मलिनं मूषकापहृतं तथा।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

खादितं गोमहिष्याद्यै स्तत्त्याज्यं सर्वथा द्विजैः ॥ ६ ॥ गोसकृन्मृन्मयं भिन्नं पैप्पलं निम्बजं तथा ॥ खण्डितं लोहबद्धञ्च वर्जयेदासनं बुधः ॥ ७ ॥ अनन्तगर्भितं साग्रं कौशं द्विदलमेव च ॥ प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥ ८ ॥ दध्यलाभे पयः कार्यं मध्वलाभे तथा गुड़ः ॥ घृतं प्रतिनिधिं कुर्यात्पयो वा दधि वा नृप ॥ ९ ॥ जीवत्पितृकस्तु पितामहादिभ्यो वृद्धौ दद्यात् ॥ जीवन्मातृकः मातामह्यादिभ्यो वृद्धौ दद्यात् ॥ मातामहे जीवति तत्पित्रादिभ्यो दद्यात् ॥ वृद्धौ तीर्थे च संन्यस्ते तथा च पतिते सति ॥ येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात् स्वयं सुतः ॥ बाहुमात्रा सदा वेदी कार्या शुद्धमृदा बुधैः ॥ तद्वेद्यां सर्वतोभद्रं मण्डलं विलिखेत्ततः ॥ १० ॥ [1]पलमात्रसुवर्णस्य प्रतिमां कारयेच्छुभाम् ॥ तदर्धं वा प्रकुर्वीत वित्तशाठ्यन्न कारयेत् ॥ ११ ॥ द्वौ विप्रौ ब्राह्मणाग्नी वा दम्पती गोद्विजोत्तमौ ॥ अन्तरेण यदा गच्छेत् कृच्छ्रसान्तपनञ्चरेत् ॥ १२ ॥ प्रधानवेद्योरग्नेश्च मध्येन गत्वाऽग्नेर्दक्षिणित उपवेशनम् ॥ कर्तुर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमाङ्गुलिपर्वणः ॥ तन्मध्ये दैर्घ्यमानेन मात्राङ्गुलमुदाहृतम् ॥ १३ ॥ मात्राङ्गुलेन हस्तस्य कुण्डमाने शिवेरतम् ॥ न कुर्यादग्निधमनं कदाचिद्व्यजनादिना ॥ १४ ॥ आज्यस्थाली तैजसी वा मृन्मयी वा प्रकीर्तिता ॥ द्वादशाङ्गुल-विस्तीर्णा प्रादेशोच्चा शुभा स्मृता ॥ आज्यस्थाली समानैव चरुस्थाली प्रशस्यते ॥ १५ ॥ प्रणी-तालक्षणम् ॥ प्रणीता वारणा ग्राह्या द्वादशाङ्गुलसम्मिता ॥ खातेन हस्ततलवदाकृत्या पद्मपत्रवत् ॥ १६ ॥ प्रोक्षणीलक्षणम् ॥ वारणं द्वादशाङ्गुलदीर्घं करतलमितखातं पद्मपत्राकृतिकमलमुकुला-

१ दशार्धगुञ्जं प्रवदन्ति माषं माषाह्वयैः षोडशभिश्च कर्षम् । कर्षैश्चतुर्भिश्च पलं तुलाज्ञाः कर्षं सुवर्णस्यसुवर्णसंज्ञम् ॥ इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृति वा ॥ १७ ॥ स्रुवलक्षणम् ॥ खादिरो हस्तमात्रः अङ्गुष्ठपर्वमात्रखातपरिणाहवर्तुलपुष्कलः॥१८॥

स्रुचीलक्षणम्—षट्त्रिंशाङ्गुलां स्रुचं कारयेत् खादिरादिभिः ॥ कर्दमे गोपदाकारं पुष्करं तद्वदेव हि ॥ १९ ॥ पुष्कराग्रं षडंशं तु खातं द्व्यङ्गुलविस्तृतम् ॥ अङ्गुष्ठैकं स्थूलतरे दण्डे यस्य च कङ्कणम् ॥२०॥ पूर्णपात्रलक्षणम् ॥ अष्टमुष्टि भवेत्किञ्चित्किञ्चिदष्टौ तु पुष्कलम् ॥ पुष्कलानि च चत्वारि पूर्णपात्रं तदुच्यते ॥२१॥ उत्तानेन तु हस्तेन ह्यङ्गुष्ठाग्रेण पीडितम्॥संहताङ्गुलिपाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धविः ॥ २२ ॥ अग्रमध्याच्च यन्मध्यं मूलमध्याच्च मध्यतः ॥ स्रुवं धारयते विद्वान् ज्ञातव्यं च सदा बुधैः ॥ २३ ॥ तर्जनीञ्च बहिःकृत्वा कनिष्ठां च बहिस्तथा ॥ मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैः स्रुवं धारयते द्विजः ॥ २४ ॥ योऽनर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गारिणि च मानवः ॥ मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चैव जायते ॥ २५ ॥ तस्मात्समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कथञ्चन ॥ अन्धोऽबुधः सधूमे तु जुहुयाद्यो हुताशने ॥ यजमानो भवेदन्धः सपुत्र इति च श्रुतिः ॥ २६ ॥

अथ व्रते हविष्याणि—हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु व्रीहयः स्मृताः ॥ माषकोद्रवगौरादीन् सर्वाभावेऽपि वर्जयेत् ॥ २७ ॥ व्रीहिषष्टिकमुद्गाश्च मठरः सलिलं पयः ॥ श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥ २८ ॥ कन्दः सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दधिसर्पिषी ॥ पयोऽनुद्धतसारं च पनसाम्रे हरीतकी ॥ २९ ॥ पिप्पली जीरकं चैव नागरङ्गकतिन्तिणी ॥ कदलीलवलीधात्री फलान्यगुडमैक्षवम् ॥ अतैलपक्वं मुनयो हविष्याणि प्रचक्षते ॥ ३० ॥ प्रवृत्तमन्यथा कुर्याद्यदि मोहात्कथञ्चन ॥ यतस्तदन्यथाभूतं तत एव समापयेत्॥ ३१ ॥ समाप्ते यदि जानीयान्मयैतदयथा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृतम् ॥ तावदेव पुनः कुर्यान्नावृत्तिः सर्वकर्मणः ॥ ३२ ॥ मुखेनैव धमेदग्निं धमन्या वेणु जातया ॥ आज्यहोमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद्घृतम् ॥ तदलाभे महिष्यास्तु आज्यमाविकमेव च ॥ ३३ ॥ यवार्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तदर्धश्च तिलाः स्मृताः ॥ तदर्धं तु घृतं चैव तदर्धं शर्करा स्मृता ॥ ३४ ॥ एतच्छाकल्यमित्याहुः पूर्वाऽऽचार्या महर्षयः ॥ इति ॥ प्रकारान्तरेण—'तिलार्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्द्धं यवं स्मृतम् ॥ यवार्धं शर्करा प्रोक्ता शर्करार्द्धं घृतं स्मृतम् ॥ ३५ ॥ मिलितानामिकाङ्गुष्ठमध्यमाङ्गुलि योजयेत् ॥ शेषाङ्गुलिरुच्छ्रितेति मृगी मुद्रेयमीरिता ॥ ३६ ॥ प्रणवादि चतुर्थ्यन्तः स्वाहाशब्दसमन्वितः ग्रहपीठादिदेवानां होममन्त्रः प्रकीर्तितः॥३७॥ ऋत्विजां जुह्वतां वह्नौ बहिः पतति यद्धविः स ज्ञेयो वारुणो भागः प्रक्षेप्यो विमले जले ॥ ३८ ॥ उत्तानेनैव हस्तेन अङ्गुष्ठाग्रेण पीडितम् ॥ संहताङ्गुलिपाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धविः ॥ ३९ ॥

अथ प्रयोगः—गृहादौ मध्ये होमार्थं स्थण्डिलं विधाय तदीशान्यां ग्रहपीठं पूर्वे प्रधानवेदीं आग्नेय्यां मातृकापीठञ्च विधायाऽऽरम्भदिने तिलामलकादिना शरीरमुद्वर्त्य मंगलस्नानम्। तत्र कर्ता पूर्वाह्णे कृतनित्यक्रियाः शुचौ देशे गोमयोपलिप्तकर्मभूमौ तण्डुलपिष्टादिना स्वस्तिकं कुर्यात्। पत्नीयजमानासनयोस्तत्र पीठादौ विस्तारणम् ॥ स्थण्डिलस्य पश्चिमतो दारुमयपीठोपरि न्यस्तकम्बलाद्यासने प्राङ्मुखोपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीश्चोपवेश्य—'यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये ॥ विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥' इति नमस्कारं कुर्यात् ॥ स्त्रीरहितैः विप्रक्षत्रियविट्शूद्रैः क्रमात् ॥ १ ॥ कुशहेमरौप्यरचिता ताम्री च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भार्या धर्माय धार्या । यतस्तया विना गृहस्थस्य धर्मसाधनं न स्यात् । ततो नूतनयज्ञोपवीतधारणम्—'(यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि)' मांगल्यकरणम् । 'अंगुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तो मध्यमा पुष्टिकारिणी' कण्ठे पुष्पमालाधारणम् ॥ गन्धपुष्पादीनां दक्षिणतः स्थापनम् ॥ हस्तप्रक्षालनार्थं वामतः पात्रस्थापनम् ॥ घृतदीपप्रज्वालनम् ॥ अन्तर्जानुकरः आचम्य ॥ 'संहतांगुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः ॥ मुक्तांगुष्ठकनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत् ॥' कांश्येनस्यसपात्रेण त्रपुशीसकपित्तलैः ॥ आचान्तः शतकृत्वोऽपि न कदाचन शुद्धयति ॥ प्राणानायम्य वक्ष्यमाणविधिना पंचगव्यं सम्पाद्य प्राशयेत् । तत्र मन्त्रः—यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ इति ॥

अथ गोदानम्—धर्मकार्यं महत्कर्तुं य इच्छेद्बहुभिर्दिनैः ॥ प्रायश्चित्तं यथावित्तं प्राकार्यं तेन शुद्धये ॥ देशकालौ० अमुकगोत्रस्याऽमुकशर्मणः सपत्नीकस्य मम समस्तपापक्षयपूर्वकं शरीरशुद्धिद्वारा करिष्यमाणग्रहयज्ञकर्मणि अधिकारसिद्धयर्थं इमानि अष्टौ त्रीणि वा गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥१॥ दम्पत्योरुत्तरीयवस्त्रस्यान्ते सफलाक्षतग्रन्थिबन्धनम् ॥ यदा[1] बंध्नन्निति मन्त्रेण ॥ ॐकेशवाय नमः ॥ १ ॥ ॐनारायणाय

१ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः ॥२॥ ॐमाधवायनमः ॥३॥ इति त्रिराचम्य ॥ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पु
नाम्यच्छिद्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्कामःपुनेतच्छकेयम्॥
इति मन्त्रेण पवित्रधारणम् ॥ [1]प्राणायामः ॥ ततः स्वदक्षिणहस्तेऽक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा 'आनो
भद्रादीन्मंगलमन्त्रान्' पठेत् ॥ हरिः ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तुव्विश्वतो दब्धासो
ऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो
दिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानाम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ँ रातिरभिनोनिव-
र्तताम् ॥ देवाना ँ सख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे
॥ २ ॥ तान्पूर्व्वयानि विदा हूमहे व्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्य्य
मणं व्वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो
मयो भुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः ॥ तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो
भुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥ ४ ॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धि-
यञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषानो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः
स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः ॥

१ पीडयेद्दक्षिणां नाडीमङ्गुष्ठेन तथोत्तरान् ॥ कनिष्ठिकानामिकाभ्यां मध्यमां तर्जनीं त्यजेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो व्बृहस्पतिर्द्दधातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावा नो व्विदथेषु जग्मयः ॥ अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ᳭ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रा सो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ६ ॥ अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः ॥ व्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ᳭० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ᳭० शान्तिःशान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥ इति पठित्वा ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो० । कुलदेवताभ्यो० । ग्रामदेवताभ्यो० । स्थान-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवताभ्यो० । वास्तुदेवताभ्यो० । सर्वेभ्यो देवेभ्यो० । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । इति नमस्कृत्य । विश्वेशं माधवं ढुंढिं दण्डपाणिश्च भैरवम् ॥ वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ १ ॥ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ॥ निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ २ ॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ३ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ४ ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ५ ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ६ ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ७ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥ ९ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ॥ विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ १० ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ११ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १२ ॥ अनन्याश्चिन्तयन्तोमां ये जनाः पर्युपासते ॥ तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ १३ ॥ स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ॥ पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ १४ ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १५ ॥ इति ॥ ततो दक्षिणहस्ते कुशपुष्प

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यवाक्षतजलद्रव्यञ्चादाय सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो-राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्त वाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने महाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे विक्रमसंवत्सरे शालिवाहन शके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुक-ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा १ वर्मा २ गुप्तः ३ दासः ४ (शर्मा ब्राह्मणस्य वर्मा क्षत्रियस्य गुप्ता वैश्यस्य दास इति शूद्रस्य) सपत्नीकोऽहं (काश्यपगोत्रः अमुकदासः अमुकनामाहं वा) मम जन्मराशेः सका-शाद्वा ये केचिद्विरुद्धस्थानस्थितसूर्यादिनवग्रहास्तैः सूचितं सूचिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा शुभफलप्राप्त्यर्थं आदित्यादिनवग्रहदेवताप्रीत्यर्थं ग्रहयज्ञाख्यं कर्माऽहं करिष्ये ॥ ममामुक-राशिस्थितामुकग्रहसूचितारिष्टनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यफलवाप्तिकामो ब्राह्मणद्वारा नवग्रहयाग-महङ्कारयिष्ये इति वा सङ्कल्प्य साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । पुनर्जलादिकमादाय तदङ्गत्वेन स्वस्ति-पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणञ्चाहं करिष्ये ॥ पुनरपि जलादीन्यादाय तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनमहङ्करिष्ये ॥ इति सङ्कल्पः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा तण्डुलपूरितमृत्पात्रे रक्तवर्णाक्षतैरष्टदलं विरच्य अष्टदलोपरि अक्षतपुंजे पूगीफले गणपतिं गोमयपिण्डे गौरीश्चावाहयेत्। तत्र मन्त्रः—हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ॥ सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥ १ ॥ नागस्य नागहारस्त्वं गणराजश्चतुर्भुजः ॥ भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांऽकुशपरश्वधैः ॥ २ ॥ आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ॥ इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यज्ञञ्च रक्ष मे ॥ ३ ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति ᳪ० हवामहे। प्रियाणान्त्वा प्रियपति ᳪ० हवामहे। निधीनान्त्वा निधिपति ᳪ० हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ॥ १ ॥ भूर्भुवः स्वः श्रीमन्महागणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अम्बिकायै नमः अम्बिकामावाहयामि० ॥ २ ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोंप्रतिष्ठ ॥१॥ गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेतम्, इति प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। आसनार्थे अक्षताम् समर्प० ॥ ॐ गणेशां० एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत् सरित् ॥ पञ्चामृतं मयाऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ॥ शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ गणे० पञ्चामृतस्नानं सम० ॥ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः ॥ श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ ॐ गणे० शुद्धोदकस्नानं स० ॥ ॐ युवा [1]सुवासा० ॥ ॐ गणे० वस्त्रं स० । गणे० आचमनं स० । शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ॥ देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गणे० उपवस्त्रं स० । गणे० आच० । गणे० वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं स० । गणे० अलङ्कारार्थे सर्वाभरणार्थे अक्षतान् सम० ॥ ॐ त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ॥ त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० गन्धं स० ॥ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत ॥ अस्तोषतस्वभानवोव्विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ गणे० अ० स० ।- ओषधीःप्रतिमोदध्वंपुष्पवतीःप्रसूवरीः। अश्वाऽइवसजित्वरीर्व्वीरुधःपारयिष्णवः ॥

---

[1] युवासुवासापरिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयार्पितानि पुष्पाणि पूजार्थ प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० पुष्पमालां [1]पुष्पाणि वा स० । ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥ गणे० दूर्वाङ्कुरान् स० ॥ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्द्धनम्। सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० सिन्दूरं स० ॥ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वाव्वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमा ꣳ सम्परिपातु व्विश्वतः ॥ अबीरश्च गुलालश्च चोवा चन्दनमेव च। एभिस्समर्चितो देव अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ गणेशायनमः नानासुरभिद्रव्याणि समर्पयामि ॥ ॐ धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्वतं य्योऽस्मान्धूर्व्वातितं धूर्व्वयं व्वयन्धूर्व्वामः ॥ देवानामसिव्वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० धूपं स० । अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः

१ पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलन्नेष्टमधोमुखम् ॥ यथोत्पन्नं तथा देयं विल्वपत्रमधोमुखम् ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा ॥ साज्यश्च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ गणे० दीपं स० । हस्तप्रक्षालनम् ॥ [1]नाभ्याऽआसी० ॥ नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥ ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥ शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ॥ आहारं भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा ॥ अपानाय स्वाहा ॥ समानाय स्वाहा ॥ उदानाय स्वाहा ॥ व्यानाय स्वाहा ॥ गणे० नैवेद्यं स० ॥ गणे० आचमनीयं स० । मध्ये पानीयं स० ॥ उत्तरापोशनं स० ॥ चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ॥ करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥ गणे० चन्दनेन करोद्वर्त्तनं स० ॥ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्व ᳪ हसः ॥ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ लवङ्गैलादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० मुखशुद्ध्यर्थे ताम्बूलं पूगीफलं च स० ॥ [इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥ गणे० नारिकेलफलं स०] हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ गणे० कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणां स० ॥ (चन्द्रादित्यौ

---

१ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षᳪ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्यामभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ ऽअकल्पयन् ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् । गणे० कर्पूरार्तिक्यं स०) **गणानान्त्वा० १ । अम्बेऽअम्बिके०** २। इति मन्त्राभ्यां गणे० मन्त्रपुष्पाञ्जलिं स० ॥ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ॥ तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ इति [1]प्रदक्षिणा ॥ ततो विशेषार्घ्यं दद्यात् ॥ जलगन्धाक्षतफलपुष्पदूर्वादक्षिणास्ताम्रपात्रे मृण्मये वा प्रक्षिप्य पाणिभ्यां पात्रमादाय ॥ अवनीकृतजानुमण्डलः ॥ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ॥ भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ १ ॥ द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो ॥ वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥ २ ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम ॥ गणे० विशेषार्घ्यं स० ॥ अथ नमस्कारः ॥ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥ १ ॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥ २ ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥ ३ ॥ विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ॥ भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥ ४ ॥ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ५ ॥ इति नमस्कारः ॥ अथ प्रार्थना ॥ त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ॥

१ एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके । हरश्चतस्रः कर्त्तव्या शिवस्यार्धं प्रदक्षिणा ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥ अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतान्न मम ॥ इति गणेशपूजनम् ॥

अथ कलशस्थापनम्— तत्रादौ कलशलक्षणम् ॥ सौवर्णं राजतं वापि ताम्रम्मृण्मयजं तु वा ॥ अकालमव्रणं चैव सर्वलक्षणसंयुतम् ॥ **सप्तमृदः**——अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥ **सर्वौषधयः**——मुरा मांसि वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् ॥ शुण्ठीचम्पकमुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः ॥ **पञ्चपल्लवानि**——अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ॥ पञ्चपल्लवमित्युक्तं सर्वकर्मणि शोभनम् ॥ **पञ्चरत्नानि**——सुवर्णं रजतं मुक्ता लाजावर्तंप्रवालकम् ॥ रत्नपञ्चकमाख्यातं नारदेन महर्षिणा ॥ प्रकारान्तरेण ॥ कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ॥ एतानि पञ्चरत्नानि रत्नशास्त्रविदो विदुः ॥ इति ॥ अथ स्वदक्षिणत उदङ्मुखान् ब्राह्मणान् युग्मानुपवेशयेत् ॥ स्वाग्रतः शुद्धायां भूमावष्टदलं विरच्य ॥ तत्र—मही द्यौः पृथिवीचनऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ॥ पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ इति भूमिं स्पृष्ट्वा ॥ १ ॥ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ॥ यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन्पारयामसि ॥ २ ॥ इति धान्यं विकिरेत् ॥ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्वसानः ॥ सहस्रं धुक्ष्वो रुधा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रापयस्वतीः पुनर्म्मा व्विशताद्द्रयिः ॥ इति धान्योपरि कलशं संस्थाप्य ॥ ३ ॥ व्वरुण
स्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुण
स्यऽऋत सदनमसि व्वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ॥ इति कलशे जलम् ॥ ४ ॥
[1]त्वां गन्धर्व्वा० ॥ इति गन्धम् ॥ ५ ॥ ॐ याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं
पुरा ॥ मनै नु बभ्रुणा मह ँ शतन्धामानि सप्त च ॥ इति सर्वौषधीः ॥ ६ ॥
[2]काण्डात्काण्डात्प्र० ॥ इति दूर्वाः ॥ ७ ॥ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो व्वसतिष्कृता ॥
गोभाजऽइत्किला सथ यत्सनवथपूरुषम् ॥ इति पञ्चपल्लवान् ॥ ८ ॥ स्योना पृथिवि
नोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छा नः शर्मस प्रथाः इति सप्तमृदः ॥ ९ ॥ याःफलिनीर्या०
इति पूगीफलम् ॥ १० ॥ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥
इति पञ्चरत्नानि ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भः स० इति हिरण्यं ताम्रखण्डं वा प्रक्षिपेत् ॥ १२ ॥
सुजातो ज्योतिषा सहशर्मव्वरूथमा सदत्स्वः ॥ व्वासोऽअग्नेव्विश्वरूप ँ संव्य
यस्व व्विभावसो ॥ इति रक्तसूत्रेण कलशं वेष्टयेत् ॥ १३ ॥ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुन

---

१ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ १ ॥
२ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रापत ॥ व्वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्ज ँ शतक्रतोरिति धान्येन पूर्णपात्रमुपरि न्यसेत् ॥ १४ ॥ याः फलिनीर्या० ॥ इति कलशोपरि यजमानसम्मुखं नारिकेलफलं संस्थाप्य ॥ १५ ॥ तत्त्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानोव्वरुणेहवोध्युरुश ँ समान ऽआयुः प्रमोषीः ॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि ॥ ततः दक्षिणहस्तेन कलशाभिमन्त्रणम् ॥ कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः ॥ संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते ॥ १ ॥ कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः ॥ मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ २ ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदनी ॥ अर्जुनी गौमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३ ॥ कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी ॥ तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥ ४ ॥ नदीश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥ ५ ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ६ ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥ ७ ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ८ ॥ इत्यावाह्य [1]मनोजूति०ष्ठ ॥ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ इति

१ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ ँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिष्ठाप्य ॥ कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । इत्यादिना गन्धादिभिः षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः प्रार्थना ॥ देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ १ ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ ३ ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥ त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्त्तुमीहे जलोद्भव ॥४॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ इति कलशप्रार्थना ॥ अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् ॥

अथ पुण्याहवाचनम्—ततो यजमानः अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुल-सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना कलशं अञ्जलौ धारयित्वा ॥ आशिषः प्रार्थयेत् ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ त्रीणि पदाव्विचक्रमे व्विष्णुर्गोपा-ऽअदाभ्यः ॥ अतो धर्म्माणि धारयन् ॥ तेनायुष्प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥ इति भवन्तो ब्रुवन्त्विति वारत्रयं यजमानो ब्रूयात् ॥ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति त्रिवारं विप्रा ब्रूयुः ॥ [एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निनयेत्] यजमानो ब्राह्मणानां हस्तेषु सुप्रोक्षितमस्तु । ब्रा० अस्तु सुप्रोक्षितम् । यजमानः—[1]शिवा आपः सन्तु ॥ ३ ॥ विप्राः—सन्तु शिवा आपः ॥ ४ ॥

१ अपाम्मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु ते ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यजमानः–सौमनस्यमस्तु ।। विप्राः–अस्तु सौमनस्यम् ।। यजमानः–अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।। विप्राः–अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।। यजमानः–गन्धाः पान्तु ।। विप्राः–सुमङ्गल्यं चास्तु ।। यजमानः–अक्षताः पान्तु ।। विप्राः–आयुष्यमस्तु ।। यजमानः–२पुष्पाणि पान्तु ।। विप्राः–सौश्रियमस्तु ।। यजमानः–सफलताम्बूलानि पान्तु ।। विप्राः–ऐश्वर्यमस्तु ।।यजमानः–दक्षिणाः पान्तु ।। विप्राः–बहुदेयं चास्तु ।। ततो यजमान आचार्यादीन् प्रणम्य प्रार्थयेत् ।। दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु ।। विप्राः–तथाऽस्तु ।। यजमानः–यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।। इति विप्रान्प्रति प्रश्नः ।। विप्राः वाच्यतामिति ब्रूयुः ।। ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ।। १ ।। सवितात्वा सवाना ँ सुवतामग्निर्गृहपतीनां ँ सोमोव्वनस्पतीनाम् ।। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्मपतीनाम् ।। २ ।। न तद्रक्षा ँ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ँ ह्येतत् ।। यो बिभर्ति दाक्षायणा ँ हिरण्य ँ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ।। ३ ।। उच्चाते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे ।। उग्र ँ शर्म्म

२ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे । सा मे वसतु वैं नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ।। १ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महिश्रवः ॥४॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँऽइयक्षते ॥५॥
ततो यजमानः—व्रतजपनियमतपः-स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्, इति ब्रूयात् ॥ विप्राः—समाहितमनसस्स्मः ॥ यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्तः ॥ प्रसन्ना स्मः, इति ब्राह्मणा ब्रूयुः ॥ ततः कलशोपर्य्यक्षतान् प्रददेत् ॥ [1]यजमानः ॐकानिचित्पदानि वदेत् ॥ [2]तानि यथा—ॐ शान्तिरस्तु ॥ ॐ पुष्टिरस्तु ॥ ॐ तुष्टिरस्तु ॥ ॐ वृद्धिरस्तु ॥ ॐअविघ्नमस्तु ॥ ॐ आयुष्यमस्तु ॥ ॐ आरोग्यमस्तु ॥ ॐ शिवमस्तु ॥ ॐ शिवङ्कर्मास्तु ॥ ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ वेदसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु ॥ ॐ इष्टसम्पदस्तु ॥ पात्राद्बहिर्द्वितीयपात्रे पातयेत् ॥ अरिष्टनिरसनमस्तु ॥ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ॥ पुनः पूर्वपात्रे ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु ॥ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु ॥ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् ॥ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु ॥ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् ॥ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् ॥ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् ॥ वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् ॥ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम् ॥ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॥ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् ॥ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् ॥ ब्रह्म च

१ कुम्भाज्जलं पातयन्प्रार्थयन् वा । २ जलधारां का पातयेत् । ३ अस्त्वित्प्रादिप्रतिवचनं ब्राह्मणा सर्वत्र ब्रूयुः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् ।। श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् ।। श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ।। भगवती कात्यायनी प्रीयताम् ।। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् ।। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् ।। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् ।। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् ।। भगवती तुष्टकरी प्रीयताम् ।। भवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् ।। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् ।। सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् ।। सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् [1]पुनः द्वितीयपात्रे पातयेत् ।। ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः ।। ॐ हताश्च परिपन्थिनः ।। ॐ हताश्च कर्मणो विघ्नकर्तारः ।। शत्रवः पराभवं यान्तु ।। ॐ शाम्यन्तु घोराणि ।। ॐ शाम्यन्तु पापानि ।। ॐ शाम्यन्त्वीतयः ।। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ।। पुनः प्रथमपात्रे पातयेत् ।। ॐ शुभानि वर्धन्ताम् ।। ॐ शिवा आपः सन्तु ।। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु ।। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु ।। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु ।। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु ।। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु ।। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु ।। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् ।। **निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्** ।। यजमानः—शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् ।। १ ।। भगवान्नारायणः प्रीयताम् ।। २ ।। भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् ।। ३ ।। भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् ।। ४ ।। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु ।।५।। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु ।। ६ ।। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु ।। ७ ।। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं

---

१ प्रयोगचूडामणौ हताश्चेत्यादि शाम्यन्त्वित्यन्तानां पूर्वपात्रे जलप्रक्षेप उक्तः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदस्तु ॥ ८ ॥ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ॥ इति ब्राह्मणान्प्रति ब्रूयात् ॥ वाच्यतामिति ब्राह्मणा ब्रूयुः ॥ ततो यजमानः—ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥ इति श्लोकमुक्त्वा, भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अद्य करिष्यमाणग्रहयज्ञकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ इत्येवं क्रमान्मन्दमध्योच्चस्वरेण त्रिर्ब्रूयात् ॥ पुण्याहं ३ इति ब्राह्मणास्तथैव त्रिर्ब्रूयुः ॥ अस्य कर्मणः पुण्याहं० ॥ भो ब्राह्मणाः ! मम श्वः करिष्यमाणयोः सग्रहमखवास्तुशान्तिकूपप्रतिष्ठाकर्मणोः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ पुण्याहं ३ ॥१॥ अनयोः कर्मणोः पुण्याहं भ० २ ॥ पुंण्याहं ३ ॥ भो ब्राह्म० श्वः करिष्यमाणानां सग्रहमखआरामप्रतिष्ठाकूपोत्सर्गसवृषशिवलिङ्गप्रतिष्ठादिकर्मणां पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥१॥ एषां कर्मणां पुण्याहं भ० २ ॥ पुण्याहं ३ ॥ २ ॥

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ॥ पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम् ॥ यजमानः—पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् ॥॥ ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः ! मम० कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ इति पूर्ववत् त्रिवारम् ॥ विप्राः—ओं कल्याणम् ३ ॥ ३ ॥ **यथेमां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्या ᳪ शूद्रायचार्याय च स्वायचारणाय च ॥** प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे कामः समृध्यतामुपमादोनमतु ॥ ततो यजमानः—सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ संपूर्णा सुप्रभावा च ऋद्धिं तां च ब्रुवन्तु नः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भो ब्राह्मणाः ! मम० ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ इत्येवं पूर्ववत् त्रिवारम् । विप्राः–ॐऋद्ध्यताम् ३ ॥ सत्रस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवम्पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम देवान् स्वर्ज्योतिः ॥ ततो यजमानः—स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः मम० अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ इति पूर्ववत् त्रिर्वदेत् ॥ विप्राः—आयुष्मते स्वस्ति इति त्रिर्वारम् । अस्मै कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ आयु० ॥३॥ भो ब्राह्म० वास्तुशान्तिकूपप्रतिष्ठा कर्मभ्यां स्वस्ति भ० ॥ १ ॥ आयुष्म० ॥ १ ॥ आभ्यां कर्मभ्यां स्वस्ति भ० ॥ आयु० ॥ २ ॥ भो ब्राह्म० आरामप्रतिष्ठाकूपोत्सर्गसवृषशिवलिङ्गप्रतिष्ठाकर्मणां स्वस्ति भ० ॥ आयु० ॥ १ ॥ एभ्यः कर्मभ्यः स्वस्ति० ॥ २ ॥ आयु० ॥ १२ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो० ॥ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ॥ हरिप्रिया च माङ्गल्या श्रियं तां च ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः ! मम० श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु इति पूर्ववत् त्रिर्वारम् ३॥ विप्राः—अस्तु श्रीः ॥ श्रीश्चते० ॥ यजमानः—मृकण्डसूनोर्यच्चायुर्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥ विप्राः—जीवन्तु भवन्तः ॥ ३ ॥ शतमिन्नु० ॥ यजमानः—शिवगौरी-विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ॥ धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि ॥ विप्राः—अस्तु श्रीः ॥ ३ ॥ मनसः काममाकूतिं व्वाचः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यमसीय ॥ पशूनाटँ रूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥ प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ॥ भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः ॥ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योव्विश्वारूपाणि परिता बभूव॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पिता सावस्य पिताव्वयटँ स्यामपतयो रयीणाँ स्वाहा आयुष्मते स्वस्तिमते यजमाना यदाशुषे॥ श्रियै दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः विप्राः-आयुष्मते स्वस्ति ॥३॥ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्॥ येन व्विश्वा परिद्विषोव्वृणक्तिव्विन्दते व्वसु ॥ ततो यजमानः—स्वस्तिवाचनकर्मसमृद्धिरस्तु ॥ विप्राः—अस्तु समृद्धिः ३ ॥ ततो विप्रेभ्यो दक्षिणादानम् ॥ यजमानः—कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः संपूर्णतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥ ततो यजमानस्य वामभागे पत्न्या उपवेशनम् ॥ ततो ब्राह्मणाः एकस्मिन्पात्रे कलशोदकं गृहीत्वा दूर्वापञ्चपल्लवसहितेन तेनोदकेनोदङ्मुखास्तिष्ठन्तः सकुटुम्बं यजमानं वक्ष्यमाणमन्त्रैरभिषिञ्चेयुः॥ आपोहिष्ठादिमन्त्रैः ॥ ३ ॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥

ततस्तोरणमातृकापूजनम्—नन्दा नन्दिनिवाशिष्ठचौ वासुदेवी च भार्गवी ॥१२॥
॥ जया च विजया चैव सप्तैता मातरः स्मृताः ॥ नन्दायै १, नन्दिन्यै २, वासिष्ठ्यै ३, वासुदेव्यै ४,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भार्गव्यै ५, जयायै ६, विजयायै नमः इति प्रत्येकं आवाह्य स्थापयेत् ।। तोरणमातृभ्यो नमः ।।
इति यथामिलितोपचारैः पूर्ववत्पूजयेत् ।। अथ तोरणमातरः पूजिताः स्थ क्षमध्वम्, इति विसर्जयेत् ।।

अथ मातृकापूजनम्— ततो मातृपीठस्य पश्चादुपविश्य रक्तवस्त्रास्तृतपीठे
अक्षतपुञ्जे पूगीफलेषु प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा मातॄणां स्थापनं च ।। तद्यथा—अक्षतैरावाहनम् ।।
गणपतये नमः ।। गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।। १ ।। गौर्य्यै० गौरीम्० २। पद्मायै० पद्माम्
३। शच्यै० शचीम् ४। मेधायै० मेधाम्० ५। सावित्र्यै० सावित्रीम्० ६। विजयायै० विजयाम्०
७। जयायै० जयाम्० ८। देवसेनायै० देवसेनाम्० ९। स्वधायै० स्वधाम्० १०। स्वाहायै०स्वाहाम्
११। मातृभ्यो० मातॄः० १२। लोकमातृभ्यो० लोकमातॄः० १३। धृत्यै० धृतिम्० १४। पुष्ट्यै०
पुष्टिम्० १५। तुष्ट्यै० तुष्टिम् १६। आत्मनः कुलदेवतायै० आत्मनः कुलदेवताम्० ।। १७ ।। इत्या-
वाह्य ।। आवाहितगणपत्यादिकुलदेवतान्तमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।। इति प्रतिष्ठाप्य ।।
गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातृभ्यो नम इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य ।। ॐ समख्ये देव्या
धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा ।। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तवव्वीरंविदेयत-

---

१ षोडशमातरः—गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।। १ ।।
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ।। २ ।। इति ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वदेविसन्दृशि ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ अनया पूजया गणपतिसहितगौर्यादिकुलदेवतान्तमातरः प्रीयन्ताम् ॥ इति मातृकापूजनम् ॥

अथ वसोर्द्धारापूजनम्— आवाहितमातॄणामुपरि भित्तौ पीठे पर्णे वा अष्टाविंशतिबिन्दुरूपं लिखित्वा ॥ ॐवसोः पवित्रमसि शतधारं ॐवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासविता पुनातु ॐवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा इति कस्मिंश्चित् पात्रस्थेन विलीनेन नागवल्लीदलयुक्तेन घृतेन मातॄणां सन्निहितकुडचलग्नाः दक्षिणाद्युत्तरापवर्गा पश्चिमादि प्रागपवर्गा वा नातिनीचोच्छ्रिताः सप्तवसोर्द्धाराः कर्तव्याः ॥ ॐ कामधुक्षः, इत्यनेन मिष्टान्नेन शर्करादृव्येण वा मेलयेत् ॥ ततोऽक्षतैरावाहनं कीर्त्यादिघृतमातृभ्यो नमः ॥ कीर्त्यादिघृतमातॄः आवा० मि । इत्यावाह्य ॥ मनोजूति० इति मन्त्रेण वसोर्द्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥ वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥ अनया पूजया वसोर्द्धारा देवताः प्रीयन्ताम् ॥ इति वसोर्द्धारापूजनम् ॥

अथायुष्यमन्त्रजपः—ॐ आयुष्यं वर्च्चस्य ँ रायस्पोषमौद्भिदम् ॥ इद ँ हिरण्य ँ वर्च्चस्वज्जैत्रायाविशतादुमाम् ॥१॥ नतद्रक्षा ँ सि—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ २ ॥ यदाबन्धं दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽ आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ इत्यायुष्यमन्त्रजपः ॥

अथ नान्दीश्राद्धम्— अत्र सर्वं सव्येन प्रदक्षिणमुपचारः ॥ देवतीर्थेनैव दैवे दित्र्ये च कर्मणि[1] ॥ तिलार्थे जवाः ॥ ऋजवो दर्भाः वैश्वदैविके द्वौ चटौ प्राङ्मुखौ उदक्-संस्थौ ॥ पैतृकाः षड् उदङ्मुखाः प्रत्यक्संस्थाः ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ १ ॥ अमुकगोत्राः (यजमानस्य यज-मान्याः ३ अस्य संस्कार्यस्य मातृ० अस्याः संस्कार्यकन्यायाः मातृ०) पितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यम्० ॥ २ ॥ अमुकगोत्राः पितृपितामह-प्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यम्० ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्म्माणः सपत्नीका नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यम्० ॥ ४ ॥ अथासनदानम् ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमोनमः ॥ २ ॥ नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेताम् ॥ तथा प्राप्नु-वतां भवन्तौ प्राप्नुवावः ॥ १ ॥ अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुक्यमुकीदेव्यो नान्दी-

१ तत्र कालः—मातृश्राद्धन्तु पूर्वाह्णे मध्याह्ने पैतृकन्तथा । ततो मातामहानाञ्च वृद्धौ श्राद्धं त्रयं स्मृतमिति हेमाद्रौ । अलाभे भिन्नकालानां नान्दीश्राद्धत्रयं बुधः ॥ पूर्वेद्युर्वै प्रकुर्वीत पूर्वाह्णे-मातृपूर्वकमिति वृद्धमनुः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुख्यः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमोनमः ॥ २ ॥ अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः अमु-
कामुकशर्माणः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमोनमः ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः
मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने
वो नमोनमः ॥ ४ ॥ विश्वेदेवादिभ्यः गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलपूगीफलवस्त्रयज्ञोपवीतानि दद्यात् ॥
अत्रापः पान्तु ॥ गन्धाः पान्तु ॥ अक्षताः पान्तु ॥ पुष्पाणि पान्तु ॥ धूपाः पान्तु ॥ दीपाः पान्तु ॥
ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः
॥ १ ॥ अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुक्यमुकीदेव्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं
गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ २ ॥ अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकश-
र्माणो नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः
मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा
सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ततः आमान्नसङ्कल्पः ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः
इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां
वृद्धिः ॥ १ ॥ अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यः अमुक्यमुकीदेव्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः
इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥२॥
अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं दास्यमानं
युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ३ ॥ द्विती-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ४ ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ ततः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत ॥ **गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोभिवर्द्धन्ताम् वेदाः सन्ततिरेव च श्रद्धा च नो माऽव्यगमद्बहुदेयं च नोस्तु ॥ अन्नञ्च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥** एताः सत्याः आशिषः सन्तु ॥ विप्राः—तथास्तु ॥ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाःभूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ १ ॥ अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ २ ॥ अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा अमुकामुकशर्माणः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकय-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वमूलनिष्क्रयणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ४ ॥ ॐ उपास्मै गायतानरः पवमानायेन्दवे ॥ अभिदेवाँ २ इयक्षते ॥ १ ॥ इडामग्ने पुरुद २ँस २ँ सनिङ्गो शश्वत्तम २ँ हवमानाय साध ॥ स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २ ॥ यजमानः—अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् ॥ विप्राः—सुसम्पन्नम् ॥ ॐ व्वाजेव्वाजेवतव्वाजिनोनोधनेषु विप्राऽअमृताः ऋतज्ञाः ॥ अस्य मध्वः पिबतमादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ इति विसृज्य ॥ ॐआमाव्वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे-द्यावापृथिवी विश्वरूपे ॥ आमागन्ताम्पितरामातरा चामा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात् ॥ इति नान्दीश्राद्धम् ॥ अथाचार्यादिवरणम् ॥ उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ अस्मिन्ग्रहयज्ञाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ॥ आचार्यहस्ते—व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ इति मन्त्रेण रक्षाबन्धनम् ॥ अथ प्रार्थना ॥ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनाम्बृहस्पतिः ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ॥ १ ॥ अस्मिन् ग्रहयज्ञ० ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥ तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥२॥अस्मिन् ग्रहयज्ञ० सदस्यत्वेनत्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ त्वन्नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वम्परायणम् ॥ आपद्विमोक्षणार्थाय सदस्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भव मे मखे ॥ ३ ॥ अस्मिन् ग्रहयज्ञकर्मणि० ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मि ॥ भगवान् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर ॥ वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक्त्वम्मे मखे भव ॥ ४ ॥ अस्मिन् ग्रहयज्ञकर्मणि एभिर्वरणनिष्क्रयद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रौ अमुकामुकशर्माणौ ब्राह्मणौ युवाम् वृणे ॥ १ ॥ अस्मिन् ग्रहयज्ञकर्मणि एभिर्वरणनिष्क्रयद्रव्यैर्नानागोत्रान् नानाशर्मणो ब्राह्मणान् आचार्यादीन् युष्मानहं वृणे ॥ २ ॥ वृतोऽस्मि ॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ॥ सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥ तत आचार्यः अग्न्यायतनात्पश्चिमतः स्वासने उपविश्याचम्य च प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ अस्मिन् ग्रहयज्ञकर्मणि यजमानेनावृतोऽहं आचार्यकर्म करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य पीतसर्षपान् हस्ते गृहीत्वा । अथ पूर्वे—यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥ स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ १ ॥ अथ दक्षिणस्याम्—अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ २ ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभेत् ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ॥ स्थानादस्मात्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवन्त्विमाम् ॥ ४ ॥ इति सर्षपान् विकीर्य्य ॥ अथ एकस्मिन् पात्रे [1]पञ्चगव्यकरणम् ॥ ततो गायत्र्या गोमूत्रम् ॥ ॐ गन्धद्वारां

---

[1]तथा च स्मृतिदर्पणे—गायत्र्यादाय गोमयम् । आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णोति वै दधि तेजोसिशुक्रमित्याज्यं देवस्यत्वा कुशोदकम् । एभिस्तु पञ्चभिर्युक्तं पञ्चगव्यमिति स्मृतम् । तत्र ताम्रपात्रे पलाशपत्रपुटे वा ताम्रया गोमूत्रमष्टमाषप्रमाणम् । श्वेतगोशकृत्षोड़शमाषम् । पीतगोक्षीरन्द्वादशमाषम् । कृष्णगोघृतमष्टमाषम् । कुशोदकञ्चतुर्माषम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऌ० दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

द० इति गोमयम् ॥ ॐ आप्यास्व समेतु ते विश्वतः सोमऽवृष्ण्यम् ॥ भवा व्वाजस्य

॥१६॥ सङ्गथे ॥ ३ ॥ इति पयः ॥ दधिक्राव्णो० ॥ इति दधि ॥ ४ ॥ ॐ तेजोसि शुक्र-
मस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥ इत्याज्यम् ॥५॥
देवस्यत्वासवितुरिति [1] कुशोदकम् ॥ ६ ॥ प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य ॥ ॐ आलोडयामि.
इति प्रणवेनैव यज्ञीयकाष्ठेन प्रदक्षिणं निर्मथ्य । ॐ इत्यभिमन्त्र्य । ॐ अपोहिष्ठेति तृचेन पञ्च-
गव्येन कुशैः यागकर्मभूमिं संप्रोक्ष्य ॥ ततः कृताञ्जलिः—स्वस्तिनऽइन्द्र० इति मन्त्रद्वयं
पठेत् ॥ कुण्डे स्थण्डिले वा मध्यभूमौ प्रादेशं कृत्वा ॥ देवा आयान्तु । यातुधाना अपयान्तु ॥
विष्णोर्देवयजनं रक्षस्व । इति स्थण्डिलोपरि फलपुष्पाक्षतानि निक्षिपेत् ॥

अथ सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम् ॥ यजमानान्वित आचार्य्यः सर्वतोभद्रमण्डलसमीपे उपविश्य ॥
वेद्यां श्वेतवस्त्रं प्रसार्य्य [illegible] सर्वतोभद्रं विरच्य ॥ मध्यादिस्थानस्थितेषु अक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु
ब्रह्मादिदेवताः स्थापयेत् ॥ तद्यथा—ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि ॥ १ ॥ सोमाय० सोमम्०
॥ २ ॥ ईशानाय० ईशानम्० ॥ ३ ॥ इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥ ४ ॥ अग्नये० अग्निम्० ॥ ५ ॥
यमाय० यमम्० ॥ ६ ॥ नर्ऋतये० निर्ऋतिम्० ॥ ७ ॥ वरुणाय० वरुणम्० ॥ ८ ॥ वायवे० ॥१६॥

१ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वायुम्० ॥ ६ ॥ अष्टवसुभ्यो० अष्टवसून्० ॥ १० ॥ एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्रान्० ॥ ११ ॥ द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्यान्० ॥ १२ ॥ अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ १३ ॥ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान् देवान्० ॥ १४ ॥ सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षान्० ॥ १५ ॥ भूतनागेभ्यो० भूतनागान्० ॥ १६ ॥ गन्धर्वाप्सरोभ्यां० गन्धर्व्वाप्सरसः० ॥ १७ ॥ स्कन्दाय०स्कन्दम् ॥१७॥ ऋषभाय० ऋषभम्० ॥ १६ ॥ शूलाय० शूलम्० ॥ २० ॥ महाकालाय० महाकालम्० ॥२१॥ दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणान्० ॥२२॥ दुर्गायै० दुर्गाम्० ॥२३॥ विष्णवे० विष्णुम्०॥२४॥ स्वधायै० स्वधाम्० ॥२५॥ मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगान्० ॥२६॥ गणपतये० गणपतिम्० ॥ २७ ॥ अद्भ्यो० अपः० ॥ २८ ॥ मरुद्भ्यो० मरुतः० ॥ २६ ॥ भूम्यै० भूमिम्० ॥ ३० ॥ गङ्गादिनदीभ्यो० गङ्गादिनदीः० ॥ ३१ ॥ सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागरान्० ॥ ३२ ॥ मेरवे० मेरुम्० ॥३३॥ गदायै० गदाम्० ॥ ३४ ॥ त्रिशूलाय० त्रिशूलम्० ॥ ३५ ॥ वज्राय० वज्रम्० ॥ ३६ ॥ शक्तये० शक्तिम्० ॥ ३७ ॥ दण्डकाय० दण्डम्० ॥ ३८ ॥ खड्गाय० खड्गम्० ॥ ३६ ॥ पाशाय० पाशम्० ॥ ४० ॥ अङ्कुशाय० अङ्कुशम्० ॥ ४१ ॥ गौतमाय० गौतमम्० ॥ ४२ ॥ भरद्वाजाय० भरद्वाजम्० ॥ ४३ ॥ विश्वामित्राय० विश्वामित्रम् ॥ ४४ ॥ कश्यपाय० कश्यपम्० ॥ ४५ ॥ जमदग्नये० जमदग्निम्० ॥ ४६ ॥ वसिष्ठाय० वसिष्ठम्० ॥ ४७ ॥ अत्रये० अत्रिम्० ॥ ४८ ॥ अरुन्धत्यै० अरुन्धतीम्० ॥ ४६ ॥ ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीम्० ॥ ५० ॥ कौमार्य्यै० कौमारीम्० ॥ ५१ ॥ ब्राह्म्यै० ब्राह्मीम्० ॥ ५२ ॥ वाराह्यै० वाराहीम्० ॥ ५३ ॥ चामुण्डायै० चामुण्डाम्०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

॥ ५४ ॥ वैष्णव्यै० वैष्णवीम्० ॥ ५५ ॥ माहेश्वर्यै० माहेश्वरीम्० ॥ ५६ ॥ वैनायक्यै० वैनायकीम्० ॥ ५७ ॥ इत्यावाह्य ॥ ब्रह्मादिमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य ॥ ब्रह्माद्यावाहितमण्डलदेवताभ्यो नमः ॥ इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ अनया पूजया ब्रह्मादिमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ ततः सर्वतोभद्रमण्डलमध्ये कलशस्थापनविधिना कृष्णचिह्नरहिताच्छिद्रकलशसंस्थापनम् ॥ हेमनिर्मितप्रतिमाया अग्न्युत्तारणं कुर्यात् ॥ स्वपुरतः पात्रान्तरे प्रधानप्रतिमां निधाय घृतेनाभ्यज्य ॥ ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोदाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ १ ॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः ॥ सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ँ षितारिषत् ॥२॥ ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितो घृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभव्वक्षि हव्यम् ॥ ३ ॥ ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ॥ माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः ॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥२॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः ॥ माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ३ ॥ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम् ॥ अपा ँ रसस्य य्योरसस्तम्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टं ॥१७॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ ५ ॥ इति पञ्चभिः पञ्चामृतेन स्नापयित्वा उपरि दक्षिणहस्तेन गृहीतेन कलशेन जलेन संततं जलधारान् दद्यात् ॥ तत्र मन्त्राः—
समुद्रस्यत्वामकयाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव ॥ १ ॥
हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव ॥२॥
उपज्ज्मन्नुपवेत सेवतर नदीष्वा ॥ अग्नेपित्तमपामसि ॥ मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नायज्ञम्पावकवर्ण ँ शिवङ्कृधि ॥ ३ ॥ अपामिदन्नयन ँ समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव ॥ ४ ॥
अग्नेपावकरोचिषामन्द्रया देवजिह्वया ॥ आदेवान्न्वक्षियक्षिच ॥ ५ ॥ सनः पावक दीदिवोग्नेदेवाँ २ ऽइहावह ॥ उपयज्ञ ँ हविश्चनः ॥ ६ ॥ पावकया यश्चितयन्त्याकृपाक्षामन्नु रुचऽउषसो न भानुना ॥ तूर्व्वन्नयायन्नेतशस्य नूरणऽआयो घृणेन ततृषाणोऽअजरः ॥ ७ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवो भव ॥ ८ ॥
नृषदेवव्वेडप्सुषदेव्वेड्ड्बर्हिषदेव्वेड्ड्वनसदेव्वेट्स्वर्व्विदेव्वेट् ॥९॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ँ संवत्सरीणमुपभागमासते ॥ अहुता दोहविषो यज्ञेऽअ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्मिन्त्स्वयम्पिबन्तुमधुनोघृतस्य ॥ १० ॥ ये देवादेवेष्वधिदेवत्वमान्न्येब्ब्रह्मणः
पुरऽएतारोऽअस्य ॥ येब्भ्योनऽऋतेपवतेधामकिञ्चन न ते दिवो न पृथिव्व्याऽ
अधिस्नुषु ॥ ११ ॥ प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदा व्वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्याँ-
स्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ँ शिवोभव ॥ १२ ॥ अग्निर्वैश्वानरो
वह्निर्वीतहोत्रो धनञ्जयः ॥ अग्न्युत्तारणार्थाय मूर्तीनां शुद्धिहेतवे ॥ इति जलधारां कृत्वा प्राण-
प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ प्रतिमां पुष्पेण संस्पृश्य प्रतिष्ठामन्त्रं जपेत् ॥ ॐ ह्रीं क्लीं क्रौं अं यं रं लं वं
शं षं सं हं क्षं अः क्रौं ह्रीं आं अस्या प्रतिमायाः १ अनयोः प्रतिमयोः २ आसाम् प्रतिमानां ३
प्राण इह प्राणाः । पुनः आं ह्रीं० जीव इह स्थितः । पुनः आं ह्रीं० सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः
श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै
प्राणा क्षरन्तु च ॥ अस्यै देवत्वमुर्चायै प्राणादीन्यत्र तिष्ठतु ॥ ततो गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कार-
सिद्ध्यर्थं पञ्चदशप्रणवावृत्ति करिष्ये । ततः स्थापितकलशोपरि प्रधानप्रतिमां तन्मन्त्रेण संस्थाप्य
पूजयेत् । तदुपरि पञ्चवर्णवितानं बध्नीयात् । हस्तमात्रं समचतुरस्रं चतुरङ्गुलोत्सेधं सन्मृदा स्थ-
ण्डिलं विधाय । **ततोऽग्निस्थापनम्** । अस्मिन् ग्रहयज्ञकर्मणि पञ्चभूतसंस्कारपूर्वकं अग्नि
स्थापनं करिष्ये ॥ दर्भैः परिसमुह्य । गोमयोदकेनोपलिप्य । स्रुवेण तिस्रो रेखाः प्रागग्रा उदकसंस्था ॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उल्लिख्य । अनामिकाङ्गुष्ठेनोद्धृत्य । उदकेनाभ्युक्ष्य । कांस्यपात्रेण सुवासिन्यानीतलौकिकाग्नि मादाय । आचार्यस्तमग्निं स्थण्डिलस्याग्नेय्यां दिशि निधाय हुम्फट् इति मन्त्रेण क्रव्यादांश्च नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य [1]अग्निं दूतमिति मन्त्रेण [2]अग्निमुपसमाधाय स्वाभिमुखं निदध्यात् । इत्यग्निं प्रतिष्ठाप्य ततः सर्वपूजासंभारान् गृहीत्वा ग्रहवेद्याः समीपे आगत्य पश्चादुपविशेत् । स्थण्डिलादीशानकोणे वेद्यां पीठे वस्त्रे वा नवग्रहमण्डलं विलिखेत् । तद्यथा ।

ततः सूर्यादिग्रहाणां स्थापनक्रमः । वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्रं निशाकरम् ।। त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधं वै बाणसन्निभम् ।। गुरवे पट्टिशाकारं पञ्चकोणं भृगुस्तथा ।। मन्दे च धनुषाकारं सूर्पाकारन्तु राहवे ।। केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु ।। शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यवुदङ्मुखौ ।। प्रत्यङ्मुखौ शनीसोमौ शेषाः दक्षिणतो मुखाः ।। अथ स्वरूपः।। अरुणौ सूर्यभौमौ च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।। हरिद्वर्णो बुधश्चैव पीतवर्णो गुरुस्तथा ।। कृष्णवर्णौ शनीराहू केतवस्तु तथैव च ।। ततः तण्डुलपुञ्जेषु पूगीफलेषु सूर्यादिदेवान् तत्तन्मन्त्रैर्नाममन्त्रैर्वा आवाहयेत् ।। ॐ आकृष्णेनरजसाव्वर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च ।। हिरण्ययेनस

१ अग्निन्दुतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे । देवां २ ऽआसादयादिह । अग्न्यानीतपात्रमक्षतोदकेन निषिच्याग्निं षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । अग्निम्प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ।

२ अस्मिन्ग्रहशान्तिकर्मणि आदित्यादिग्रहाणामधिदेवताप्रत्यधिदेवताण्चलोकपालाग्निदशदिक्पालसहितानां स्थापनं च करिष्ये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल० द० ॥१६॥ ग्र० य०

वितारथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपस
गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥
ॐ इमन्देवाऽअसपत्न ँ सुबध्वम्महते क्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्यायेन्द्र-
स्येन्द्रियाय ॥ इममसुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै व्विशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं
ब्राह्मणाना ँ राजा ॥ ॐ भू० यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छे-
हतिष्ठ सोमाय० सोमम्० ॥ २ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥
अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति ॥ ॐ भू० अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम !
इहा० भौमाय० भौमम् ॥ ३ ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेस ँ सृजेथा
मयञ्च ॥ अस्मिन्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥ ॐ
भू० मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध ! इहागच्छ० बुधाय० बुधमा० ॥ ४ ॥ ॐ
बृहस्पतेऽअति यदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋत
प्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥ ॐ भू० सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो
बृहस्पते ! इहा० बृहस्पतये० बृहस्पति० ॥ ५ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिब
त्क्षत्रंपयः सोमम्प्रजापतिः ॥ ऋतेनसत्यमिन्द्रियंव्विपान ँ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्ये- ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु ॥ ॐ भू० भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहा० शुक्राय० शुक्रम्० ॥ ६ ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ भू० सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहा० शनैश्चराय० शनैश्चरम्० ॥ ७ ॥ ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ॐ भू० राठीनपुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहा० राहवे न० राहुम् ॥ ८ ॥ ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजा यथाः ॥ ॐ भू० अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो! इहा० केतवे० केतुम्० ॥ ९ ॥

अथ अधिदेवतास्थापनं ग्रहदक्षिणपार्श्वे ॥ ॐत्र्यम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ॐ भू० ईश्वराय० ईश्वरम्० ॥ १० ॥ [1]श्रीश्चते० ॐ भू० उमायै० उमाम् ॥ ११ ॥ ॐ यदक्रन्दःप्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रादुतवा पुरीषात्॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यम्महिजातन्तेऽअर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्दाय० स्कन्दम्० ॥ १२ ॥ ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोःश्नप्त्रेस्थोविष्णोःस्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ॐभू० विष्णवे० विष्णुम्०॥१३॥

---

१ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणोब्ब्रह्मवर्चसीजायतामाराष्ट्रेराजन्न्यः शूरऽइषव्व्योतिव्व्याधो महारथीजायतान्दोग्ध्रीधेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्ययजमानस्यव्वीरोजायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्योव्वर्षतुफलवत्यो नऽओषधयःपच्यन्तांयोगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० ॥ १४ ॥ ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणोमरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहा शूरव्विद्वान् ॥ जहिशत्रूँ २ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥ १५ ॥ ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्मायस्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय० यमम्० ॥ १६ ॥ ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० कालायनमः० कालम्० ॥ १७ ॥ ॐ चित्रावसोस्वस्तितेपारमशीय ॥ ॐ भू० चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तम्० ॥ १८ ॥

अथ प्रत्यधिदेवतास्थापनम् ॥ ग्रहवामपार्श्वे—ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रवे। देवाँ २ ऽआसादयादिह ॥ ॐ भू० अग्नये० अग्निम्० ॥ १९ ॥ ॐ [1]आपोहिष्ठा० ॥२०॥

---

१ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसे ॥ योवःशिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥ तस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भू० अद्भ्यो न० अपः आ०॥२०॥ ॐ [1]स्योनापृथिवी० ॐ भू० धरायै० धराम्० ॥२१॥ इदंव्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपाँ सुरे॥ ॐविष्णवे० विष्णुं०॥२२॥ ॐइन्द्रऽआसान्नेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीना म्मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥ २३ ॥ ॐअदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः पूषासिधर्मायदीष्व ॥ ॐ भू० इन्द्राण्यै० इन्द्राणीम् ॥ २४ ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्न्यन्न्योव्विश्वारूपाणिपरिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव य ँ स्यामपतयोरयीणाम् ॥ ॐ भू० प्रजापतये० प्रजापतिम्० ॥ २५ ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० सर्पेभ्यो० सर्पान्० ॥२६॥ ॐब्रह्मयज्ञानम्प्रथमंपुरस्ताद्विशीमतःसुरुचोव्वेनऽआवः। सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॐभू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणं ॥२७॥

अथ पञ्चलोकपालस्थानपनम् ।

विनायकादयः सूर्यादुत्तरतः प्राक्संस्थापनीयाः । ॐ गणनान्त्वा० । ॐ गणपतये० गणपतिम्० ॥ २८ ॥ अम्बेऽअम्बिके० ।

---

[1] ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशिनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ दुर्गायै० दुर्गाम्० ॥ २९ ॥ ॐ व्वायोज्जेतेसहस्रिणो रथासस्तेभि रागहि ॥
नियुत्वान्सोमपीतये । ॐ वायवे० वायुम्० ॥ ३० ॥ ॐ घृतंघृतपावानः पिबत
व्वसां पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशःप्रदिशऽआदिशोव्वि-
दिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ आकाशाय० आकाशम्० ॥ ३१ ॥ ॐ यावाङ्कशा
मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षताम् ॥ ॐ अश्विभ्याम्० अश्विनौ०
॥ ३२ ॥ ॐवास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहे
प्प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥ ॐ वास्तोष्पतये० वास्तोष्प-
तिम्० ॥ ३३ ॥ नहिस्पशमविदन्न न्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनम-
वृधन्नमृताऽअमर्त्यंव्वैश्वानरंक्षैत्रजित्यायदेवाः ॥ ॐ क्षेत्रपाला० । क्षेत्रपालम्० ॥३४॥

अथ दशदिक्पालस्थापनम् । त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूर-
मिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ इन्द्रा-
य० इन्द्रम्० ॥ ३५ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेव पायुभिर्मघोनोरक्षतन्व-
श्चवन्द्य ॥ त्रातातोकस्यतनये गवामस्य निमेष ँ रक्षमाणस्तवव्व्रते ॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्नये० अग्निम्० ॥ ३६ ॥ ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते० । ॐ यमाय० यमम्० ॥ ३७ ॥
ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छसा-
तऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ निर्ऋतये० । निर्ऋतिम्० ॥ ३८ ॥ ॐ तत्त्वा-
यामि० । ॐ वरुणाय० वरुणम्० ॥ ३९ ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳬं
सहस्रिणीभिरूपयाहियज्ञम् ॥ व्वायोऽअस्मिन्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिः
सदानः ॥ ॐ वायवे० वायुम्० ॥४०॥ ॐ व्वयᳬं सोमव्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः ॥
प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमाय० सोमम्० ॥ ४१ ॥ ॐ तमीशानं ज० । ॐ ईशा-
नाय० ईशानम्० ॥ ४२ ॥ ॐ अस्मेरुद्रा मेहनापर्व्वतासोव्वृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः ॥
यः शᳬं सतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्रज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः । पूर्वेशानयोर्मध्ये—
ॐ ब्रह्म० ब्रह्माणम्० ॥ ४३ ॥ ॐ स्योनापृथिवी० । निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये—ॐ अन-
न्ताय० अनन्तम्० ॥ ४४ ॥ इत्यावाह्य । ॐ मनोजूति० ॥ आदित्यादिग्रहमण्डलदेवताः
सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य । आदित्यादिनवग्रहमण्डलदेवताभ्यो नमः ॥ इति
आसनाद्युपचारैः संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्व्यन्तोव्विप्रायमतिम् ॥
तेषांव्विशिप्रियाणांव्वोहमिषमूर्ज्जᳬं समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् ॥ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥ अनया पूजया आदित्यादिनवग्रहमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ इति नवग्रहपूजनम् ॥ इदं वितानं फलपुष्पोपशोभितं सूर्यादिदेवताभ्यो नमः, इति दातव्यम् । ततः ग्रहस्येशानदिग्भागे भूमौ कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं वहिर्दध्यक्षतविभूषितं च संस्थाप्य । तस्मिन् कलशे वरुणरुद्रमावाह्य संपूजयेत् ॥

ततः कुशकण्डिकाकरणम् । अथ पात्राणि औदुम्बरकाष्ठेन प्रणीताप्रोक्षणीस्रुक्स्रुवादीनि अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयं निधाय । ब्रह्मासने त्रिकुशमयं ब्रह्मस्थापनम् । प्रणीताप्रणयनम् । ईशानादि पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम् । आग्नेयादीशानान्तम् । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् । नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् । अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् । द्वितीयमेखलायां परिस्तरणं तच्च प्रागुदगग्रैः । उत्तरतः प्रागग्रैः । अथ पात्रासादनम् । पश्चादुत्तरतो वा स्यात् । पवित्रछेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि । पवित्रे साग्रेऽनन्तगर्भे पवित्रछेदनार्थं दर्भास्त्रयः । द्वे प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । संमार्जनकुशाः पञ्च । उपयमनकुशाः सप्त । समिधस्तिस्रः पालाश्यः । स्रुवः खादिरः । गव्यमाज्यम् । तण्डुलाः । षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयपरिमित तण्डुलसहितम् पूर्णपात्रम् । एतानि वस्तून्युपकल्पनीयानि । पवित्रछेदनानि द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्विमूलेन द्वौ कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य सर्वान् युगपद्धृत्वा अनामिकांगुष्ठाभ्यां छित्वा तानुत्तरतः क्षिपेत् । त्रिस्त्याज्यः । द्वौ ग्राह्यौ । प्रोक्षण्याः जलेन प्रणीतोदकमासिच्य त्रिः पूरणम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दक्षिणसव्यहस्ताभ्यां पवित्राभ्यामुत्पवनम् । पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोद्दिङ्गनम् । सपवित्रहस्तेनोत्तानेन प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीनां प्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । चरुस्थाल्याः प्रो० । संमार्गकुशानां प्रो० । उपयमनकुशानां प्रो० । स्रुवस्य प्रो० । आज्यस्य प्रो० । तण्डुलानां प्रो० । पूर्णपात्रस्य प्रो० । उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रो० । असञ्चरे निधानम् । (प्रणीताग्न्योर्मध्ये असञ्चरस्थानम्) आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । सपवित्रायां चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकमासिच्य । त्रिःप्रक्षालिततण्डुलप्रक्षेपः । ब्रह्मा दक्षिणतः आज्य-मधिश्रयति । उत्तरतश्चरुम् आचार्य अधिश्रयति । ज्वलदुल्मुकेनोभयोः ईशानमारभ्येशानपर्य्यन्तप्रद-क्षिणम् । पर्य्यग्निकरणम् । उल्मुकस्य तत्रैव निधानम् । हस्तस्येतरथावृत्तिः । प्रणीतोदकस्पर्शः । अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम् । उद० संमार्गकुशाग्रैः स्रुवस्य मूलादारभ्याग्रपर्यन्तम् संमृज्य । मूलैरग्रादारभ्य मूलपर्यन्तम् प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । पुनः प्रतपनम् । उदकस्पर्शः । दक्षिणदेशे निधानम् । आज्यमुद्वास्य चरोः पूर्वेणानीय उत्तरतो निधाय अग्नेः पश्चिमतो निदध्यात् (आज्योद्वासनम् । श्रितानान्तु पूर्वेण) चरुमभिघार्य्य । चरुमुदगुद्वास्य । आज्यमपरेणानीय आ-ज्यस्योत्तरतो निधाय । उद्वासितानान्तु पृष्ठतः । पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूय । आज्योत्पवनम् । आज्या-वेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । प्रोक्षण्युत्पवनम् । उपयमनकुशानादाय । उत्तिष्ठन्समिधोभ्याधाय । प्रोक्षणीशेषोदकेन सपवित्रहस्तेन अग्नेरीशानमारभ्येशानपर्यन्तं प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । सोपग्रहं सव्यं हस्तमुत्तानं हृदि निधाय । दक्षिणं जान्वाच्य ॥ ब्रह्मणा कुशैर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्वारब्धः स्रुवेणाज्यहोमः। हस्तस्य शङ्खमुद्रया स्रुवेण वा जुहुयात्। अग्नेरुत्तरभागे—प्रजापतये स्वाहा। प्रोक्षणीपात्रे संस्रवधारणं सर्वत्र। यजमानः–प्रजापतये स्वाहा, इदम्प्रजापतये न मम इति त्यजेत्। एवमग्रेऽपि। अग्नेर्दक्षिणभागे—इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। समिद्धत्तमे अग्नौ-अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम। ततो यजमानोऽग्नेर्दक्षिणत उपविश्योद्दिश्य द्रव्यत्यागं कुर्यात्। साक्षतपुष्पजलं गृहीत्वा अस्मिन्ग्रहयज्ञकर्मणि इमान्युपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणा देवतास्ताभ्यस्ताभ्यः मया परित्यक्तं न मम। यथासंख्यं यथादैवतमस्तु। इति वदन् साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्। ततश्चन्दनपुष्पाक्षतैर्वायव्यकोणे बहिरग्निं सम्पूज्य। ततः सऋत्विगाचार्य्यो ग्रहहोमपुरःसरं प्रधानहोमं कुर्युः। तत्रादौ गणपतये महतीमाहुतिं जुहुयात्। **गणनांत्वा०** स्वाहा। तत्र द्रव्याणि तत्संख्याश्चोच्यन्ते। तत्र नवग्रहेभ्यः क्रमेणार्कपलाशखदिरापामार्गाश्वत्थादुम्बरशमीदुर्वाकुशाख्याः समिधः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टौ वा प्रादेशमात्राः घृताक्ताः समिधो जुहुयात्॥ अत्र तिसृभिर्दूर्वाहुतिभिरेकाहुतिः। कुशेषु त्रिपत्रेणैकेति विशेषः। एवमाज्यचरुतिलद्रव्यैश्च तत्तत्संख्याया तत्तन्मन्त्रैर्जुहुयात्। केचित्तु आज्यचर्वाहुतीरेकैकामाहुः। ततोऽधिदेवताः प्रत्यधिदेवताश्च तन्न्यूनसंख्याया तत्तत्ग्रहसमिधः पालाश्यो वा जुहुयात्। एवमाज्यादिष्वपि ज्ञेयम्। ततोऽधिदेवतादिभ्यः। पञ्चलोकपालवास्तोष्पतिक्षेत्रपालदशदिक्पालान् पलाशसमिधं यवमिष्टान्नमिश्रिततिलचर्वाज्याहुतिभिः प्रत्येकम्प्रतिद्रव्यं ग्रहाणां न्यूनसंख्याहुतिभिर्जुहुयात्। स्रुवेण मात्रावदाज्यम्॥ हस्तेनैव चर्वाहुतिमात्रा। मृगीमुद्रया तिलाहुतिः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्र ग्रहाणामष्टपक्षे चतस्र इति शिष्टाः । तिलाः कृष्णा एव । पयो गोरेव । केचित्तिलेषु यवमिश्रणं चाहुः । मूले यवैः कृष्णतिलैरित्युक्तत्वात् । युक्तश्चैतत् ॥

अथ ग्रहादीनां होममन्त्राः—ॐ गणानान्त्वा...धम् । स्वाहा ॥१॥ अम्बेऽअ...नीम् । स्वाहा ॥२॥आकृष्णे...पश्यन् । स्वाहा ॥१॥ इमन्देवाऽअ...राना । स्वाहा ॥ २ ॥ अग्निर्मूर्धा...न्वति । स्वाहा ॥ ३ ॥ उद्बुध्य...सीदत । स्वाहा ॥ ४ ॥ बृहस्प...चित्रम् । स्वाहा ॥५॥ अन्नात्परि...मधु । स्वाहा ॥६॥ शन्नोदे...तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥ कयान...वृतःसखा । स्वाहा ॥ ८ ॥ केतुङ्कृ...यथा । स्वाहा ॥ ९ ॥ त्र्यम्बकं...मृतात् । स्वाहा ॥ १० ॥ श्रीश्चते...इषाण । स्वाहा ॥ ११ ॥ यदक्रन्दः...अर्व्वन् । स्वाहा ॥ १२ ॥ विष्णोररा...वेत्वा । स्वाहा ॥ १३ ॥ आब्रह्म...ताम् । स्वाहा ॥ १४ ॥ सजोषा...तोनः । स्वाहा ॥ १५ ॥ यमायत्वा...स्पाहि स्वाहा ॥ १६ ॥ कार्षीर...षधी स्वाहा ॥ १७ ॥ चित्राव...शीय । स्वाहा ॥१८॥ अग्निन्दू...दिह । स्वाहा ॥१९॥ आपोहि...यचक्षसे । स्वाहा ॥ २० ॥ स्योनापृ...प्रथाः । स्वाहा ॥२१॥ इदंवि...सुरे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा ॥ २२ ॥ इन्द्रऽआ...ग्राम् । स्वाहा ॥ २३ ॥ अदित्यै...दीष्व । स्वाहा ॥२४॥ प्रजापते...णाम् । स्वाहा ॥२५॥ नमोऽस्तुस...नमः । स्वाहा ॥२६॥ ब्रह्मय...शिवः । स्वाहा ॥ २७ ॥ गणानां...धम् । स्वाहा ॥ २८ ॥ अम्बेऽ... नीम् । स्वाहा ॥ २९ ॥ व्वायोजेते...तये । स्वाहा ॥३०॥ घृतं घृतं...दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ३१ ॥ यवाङ्क...तम् । स्वाहा ॥ ३२ ॥ वास्तोष्पते...ष्पदे स्वाहा ॥ ३३ ॥ नहिस्पश...देवा स्वाहा ॥ ३४ ॥ त्रातारमिन्द्रः...त्विन्द्रः । स्वाहा ॥३५॥ त्वन्नोऽअग्ने...वते । स्वाहा ॥३६॥ यमायत्वा...पित्रे । स्वाहा ॥३७॥ असुन्वत...मस्तु । स्वाहा ॥३८॥ तत्त्वाया...मोषीः स्वाहा ॥३९॥ अनोनि... दानः । स्वाहा ॥४०॥ वषट्...सो महि । स्वाहा ॥ ४१ ॥ तमीशान...स्तये । स्वाहा ॥४२॥ अस्मे रुद्रा...देवाः । स्वाहा ॥ ४३ ॥ स्योनापृ...प्रथाः । स्वाहा ॥ ४४ ॥ ततः प्रधानहोमः ॥ १०८ ॥ प्रधानहोमानन्तरं ब्रह्मादिमण्डलदेवतानामेकैकया आज्याहुत्या होमः । ततो मेखलोपरि अग्निपूजनम् ॥ आयतनाद्बहिर्वायव्यां दिशि—स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः ॥ (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि) गन्धं स० । पुष्पं स० । धूपमाघ्रापयामि । दीपं संदर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि । पूगीफलं ताम्बूलं० । दक्षिणां० । इति ॥२४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चोपचारैः संपूज्य । अनया पूजया स्वाहास्वधायुतोऽग्निः प्रीयताम् ।। ततो स्विष्टकृतं समिधां परित्यज्य हवनद्रव्याणि जुहुयात् ।। ब्रह्मणान्वारब्धः । अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा चर्वादिद्रव्ये तदा पात्रान्तरम् । इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।। तत आज्येन नवाहुतयः ।। ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ।।१।। ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ।।२।। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ।।३।।

ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्—स्वाहा ।। इदमग्नीव्वरुणाभ्यां न मम ।।४।। ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमोभवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्व्युष्टौ ।। अवयक्ष्व नो व्वरुणᳬरराणो व्वीहि मृडीकᳬसुहवोनऽएधि—स्वाहा ।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।५।। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि ।। अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहि भेषजᳬस्वाहा ।। इदमग्नये न मम ।।६।। ॐ ये ते शतं व्वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः । तेभिर्न्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः—स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न० ।।७।। ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमᳬश्रथाय।। अथाव्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितयेस्याम—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये नमम॥६॥ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न० ॥६॥नवाहुतीनां प्रोक्षणीपात्रे संस्रवप्रक्षेपः। अग्नेरुत्तरतः प्रागग्रं वासु वं निधाय। तथैव उपयमनकुशांश्च निधाय। ततो यजमानः सपत्नीकः अग्नेः पश्चात् प्राङ्मुख उपविश्य। ततोऽग्नेः परितो दशसुदिक्षु दध्यक्तं चतुःप्रक्षालितमाषतण्डुलं पात्रेषु कृत्वा संस्थाप्य तत्समीपे एकैकं दीपञ्च संस्थाप्य॥ इन्द्रादिदश-दिक्पालेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दध्यक्षतमाषबलीन् समर्पयामि॥ इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्॥ भो भो इन्द्रादिक्पालाः! दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःक-र्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत॥ इति प्रार्थयेत्। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादि-दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्। अथ ग्रहपीठसन्निधौ बलिं निधाय आदित्यादिग्रहार्थं बलिद्रव्याय नमः सर्वो०मि। सूर्य्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्य-धिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहितेभ्यः एतं सदीपमाषतण्डुलबलिं समर्पयामि इति जलमुत्सृजेत्। भो भो सूर्यादिनवग्रहाः! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिका अधिदेवता-प्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत॥ अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्॥ ततः पत्रावलीपात्रस्थक्षेत्रपालबलिदानम्। अथ ध्यानम्॥ करकलितक-पालः कुण्डलीदण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती॥ क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥ १॥ बलौ निहितपूगीफले भो क्षेत्रपाल! इहागच्छ इह तिष्ठ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥ क्षेत्रपालाय नमः वस्त्रं समर्पयामि । क्षेत्र० गन्धम्० क्षेत्र० अक्षतान् । क्षेत्र० पुष्पाणि० । क्षेत्र० धूपम्० । क्षेत्र० दीपम् । क्षेत्र० नैवेद्यम्० । क्षेत्र०फलं० ताम्बूलम्० । क्षेत्र० दक्षिणाम्० ॥ प्रार्थना ॥ नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह ॥ पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा । आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा । अनया पूजया क्षेत्रपालः प्रीयताम् । हस्ते साक्षतजलमादाय मन्त्रं पठेत् । क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगणभैरवराक्षसकूष्माण्डवेतालभूतप्रेतपिशाचडाकिनीशाकिनीपिशाचिनीगणसहिताय एतं सचतुर्मुखदीपं माषतण्डुलबलिं समर्पयामि, इति जलमुत्सृज्य वदेत् ॥ प्रार्थना— भो क्षेत्रपाल ! स्वं क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष यज्ञं परिरक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ॥ ततो नापितेन शूद्रेण वा बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा पृष्ठतोऽनवलोकयन् चतुष्पथे निक्षिपेत् । ततो यजमानस्तस्य पृष्ठे तण्डुलान् प्रक्षिपेत् ॥ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा अवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहाऽउपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा सर्ठं हानाय स्वाहा उत्थिताय स्वाहा अयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा । इति मन्त्रान् पठेत् । हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य च । तत आचार्यः स्रुचं द्वाविंशपट्चतुः स्रुवेण घृतं गृहीत्वा तस्यां नागवल्लीदलानि रक्तवस्त्रवेष्टितं नारिकेलम् पूगीफलं वा निधाय पूर्णाहुत्यै नमः । इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य । अनया पूजया पूर्णाहुतिः प्रीयताम् । अधोमुखं स्रुवमाच्छाद्य स्रुचं गृहीत्वा यजमानान्वारब्धस्तिष्ठन् जुहुयात् । तत्र मन्त्रः ॥ मूर्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् । कविर्ठं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥ १ ॥ पूर्णादर्वि० स्वाहा ॥ २ ॥ इत्यग्नौ प्रक्षिपेत् ॥ ततो यजमानः । इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम ॥ इति त्यागः शेषसंपातः संस्रवपात्रे ॥ त्यागः शेषसंपातः संस्रवपात्रे ॥ ततः स्रुचं गृहीत्वोत्थाय घृतेनाविच्छन्नधारयाग्नौ पातयेत् । ठवसोः पवित्रमसि० स्वाहा ॥ ततो यजमान इदं वाजिदिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय न मम ॥ इति त्यागः कार्यः । ततः कुण्डात् स्रुवबिलपृष्ठेन विभूतिं गृहीत्वा दक्षिणानामिकया तिलकधारणम् ॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः, इति ललाटे । कश्यपस्य त्र्यायुषम्, इति ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषम्, इति दक्षिणांशे । तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्, इति हृदि । परकर्तृके तत्ते इति विशेषः । ततः अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पात्रान्तरस्थसंस्रवप्राशनम् । आचमनम् । पवित्राभ्यां नाभित आरभ्य प्रदक्षिणं मुखपर्यन्तं मुखमारभ्य नाभिपर्यन्तं मार्जनम् ॥ अग्ना पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणे पूर्णपात्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दानम् । कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । इति ब्रह्मणो हस्ते जलं दद्यात् । ब्रह्मा—ओं द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वीत्वा प्रतिगृह्णातु, इति गृह्णीयात् ॥ प्रणीतामग्नेः पश्चादानीय प्रणीताविमोकः । ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् । इति प्रणीतापः उपयमनकुशैः यजमानमूर्द्धनि मार्जयेत् । उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । ततः श्रेयो मया भवन्नियोगेन एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतो होमः तदुत्पन्नं श्रेयः तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ इति यजमानाय फलं दद्यात् । ततो यजमानः आचार्यादीन् गन्धाक्षतादिभिः पूजयेत् । ततः आचार्याय गां तन्मौल्यं वा दद्यात् । कुशजलान्यादाय—कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं ततः तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम । आचार्यहस्ते कुशजलयुतं गोनिष्क्रयञ्च दद्यात् । आचार्यः [1]स्वस्ति इति वदेत् । वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणादानम् । कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दास्यमानां वा मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे । कृतयोः वास्तुशान्तिकूपप्रतिष्ठाकर्मणोः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दास्यमानं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकामुकगोत्राभ्यां अमुकामुकशर्मभ्यां ब्राह्मणाभ्यां युवाभ्यामहं सम्प्रददे ॥ २ ॥ कृतानाम् आरामप्रतिष्ठाकूपोत्सर्गसवृषशिवलिङ्गप्रतिष्ठाकर्मणां साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयणीं दक्षिणाममुका-

१—अत्र प्रतिग्रहे ब्राह्मणे यजमाने सप्रणवं स्वस्तीति शब्दमुच्चैः पठेयुः । क्षत्रिये निरोंकारमन्त्रः । वैश्ये उपांशु । शूद्रे मनसा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुकगोत्रेभ्यः अमुकाऽमुकशर्मभ्यः ब्राह्मणेभ्यः युष्मभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ३ ॥ कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां हवनकर्त्रे ऋत्विजे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ १ ॥ ऋत्विग्भ्यां दातुमहमुत्सृजे ॥ २ ॥ यथासंख्यं ऋत्विग्भ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥ ३ ॥ ततो ब्राह्मणभोजनसंकल्पः ॥ कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये दक्षिणाश्च दास्ये । ततोऽग्नेः पश्चिमभागे सकुटुम्बं यजमानं प्राङ्मुखं पीठादावुपवेश्य । एकस्मिन् पात्रे उद्धृत्य ग्रहकलशप्रधानकलशोदकेन च साचार्यऋत्विज उदङ्मुखास्तिष्ठन्तोऽभिषिञ्चेयुः । यजमानस्य वामाङ्गे पत्नी उपविशति ॥ तत्र मन्त्राः—देवस्य त्वा० ।

सरस्वत्यै व्वाचोय्यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥१॥ देवस्यत्वा० । सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि। देवस्य त्वा०। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि ॥ सरस्वत्यै भैषज्येनवीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलायश्रियैयशसेऽभिषिञ्चामि ॥ ३ ॥

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणो विभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहितास्सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥ ३ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः । बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः । देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च । देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च । औषधानि च रत्नानि कालस्यावायवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलस्तीर्थानि जलदा नदाः । एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वे कामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु । इति प्रतिमन्त्रेणाभिषेकं कुर्यात् । ततः स्थापितदेवतानां उत्तरपूजनम् ॥ स्थापितदेवताभ्यो नमः । इति गन्धादिभिः पूजनं कृत्वा । ॐ **उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे । उपप्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥** यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ इति पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण पीठदेवताः विसृज्य । ग्रहपीठमाचार्य्याय दद्यात् । कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं ग्रहपीठं सोपस्करदक्षिणासहितं काष्ठनिर्मितपीठसहितं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । इत्याचार्याय दद्यात् । स्वस्तीति प्रतिब्रूयात् ॥ ततः पीठदानम् । दक्षिणहस्ते कुशाक्षतजलान्यादाय सव्यहस्तेन पीठं स्पृष्ट्वा कृतस्य ग्रह० इदम्प्रधानपीठं सोपस्करं सदक्षिणाकं० ॥१॥ इमे ग्रहवास्तुपीठे सोपस्करे दक्षिणासहिते० ॥ २ ॥ इमानि वास्तुपीठसर्वतोभद्रग्रहपीठानि कलशवस्त्रप्रतिमासहितानि सदक्षिणाकानि अमु० ददे ॥ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ पीठदानसाङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । स्वस्तीति विप्रः ॥ अथाग्निं संपूज्य अग्निविस-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्जनम् ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ भूयसीसङ्कल्पः ॥ कृतस्य ग्रहयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥१॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥२॥ विष्णवे नमः । इति त्रिः स्मृत्वा ॥ ततो यजमानाय तिलककरणम् । दीर्घायुस्तऽओषधेखनितायस्मै च त्वा खनाम्यहम् ॥ अथोत्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवलशाविरोहतात् । इति तिलकः ॥ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ इति यजमानदक्षिणकरे रक्तसूत्रबन्धनम् ॥ पत्न्याश्च वामहस्ते । ततो विप्राः । स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोहस्तिवाजिधनधान्यसमृद्धिरस्तु । ऐश्वर्यमस्तु कुशलोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु ॥ १ ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ २ ॥ इत्यक्षतफलसहिताभिराशीर्भिराशीर्वादः ॥ इति श्री गोवर्द्धननिवासिमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे सर्वकर्मसाधारणाङ्गानां ग्रहयज्ञपद्धतिः समाप्ता ॥

अथ चतुर्वेदोक्तपुण्याहवाचनमन्त्राः

—द्रविणोदा द्रवि० १ सवितापश्चा० नवोनवो भवति० ३ उच्चादिविद० ४ इति ऋग्वेदिनः पठेयुः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रविणोदाः पि० १ सबितात्वा० २ नतद्रचा र्ट सि० ३ उच्चाते० ४ उपास्मेयु० ५ इति यजुर्वेदिनः । देवो ३ द्रविणोदाः पू० । १ अद्य नौ देवसवितः १ ओहौवा०२ चन्द्रमाआउवा० ३ उच्चाताइद्धजातमन्धसा० ४ उपास्मैऽ० ५ इति सामवेदिनः ॥ धातारातिः स०१ येन देवसवितारनवोभवसि० ३ उच्चै-र्घोर्वादु० ४ इत्यथर्ववेदिनः ॥ शन्नः कनिक्रन्द० इति ऋग्वेदिनः निकामे-निका० इति यजुर्वेदिनः । त्वष्टानोदेविपंचा० इति सामवेदिनः । गणास्त्वोप-गायन्त० इत्यथर्ववेदिनः । उद्गातेवशकुने० इति ऋग्वेदिनः ॥ पुनन्तु मा देव० १ इति यजुर्वेदिनः ॥ पुनानः सोमाधारा०२ या इति सामवेदिनः ॥ पुनन्तु मा देव० इति अथर्ववेदिनः ॥ अपाः सोममस्त० २ इति ऋग्वेदिनः । यथेमाँव्वाचं० इति यजुर्वेदिनः । कया नश्चया ३ आभूवदूति० इति सामवे-दिनः । विश्वजित्कल्याण्यै० इति अथर्ववेदिनः ॥ ऋध्यामस्तोमं० इति ऋग्वे-दिनः ॥ सत्रस्यऋद्धि० इति यजुर्वेदिनः ॥ औहोवा ३ अज्योः इति सामवे-दिनः ॥ ऋधङ्मन्त्रोयोनि० इत्यथर्ववेदिनः ॥ स्वस्ति ऋद्धिप्रथ० इति ऋग्वे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिनः ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो० इति यजुर्वेदिनः ॥ त्रातारमिन्द्र० इति सामवेदिनः ॥ स्वस्ति मात्र उतपित्रे० इत्यथर्ववेदिनः ॥ शतञ्जीवशर० इति ऋग्वेदिनः ॥ शतमिन्नु० इति यजुर्वेदिनः ॥ आयुर्विश्वायुर्विश्व० इति सामवेदिनः ॥ आयुरस्मै धेहि० इत्यथर्ववेदिनः ॥ श्रिये जातः श्रिय० इति ऋग्वेदिनः ॥ मनसः काम० इति यजुर्वेदिनः ॥ आयन्त इव सूर्यंरापां० इति सामवेदिनः ॥ एहमातुर्वरू० इत्यथर्ववेदिनः ॥ प्रजापतेनत्व० इति ऋग्वेदिनः ॥ प्रजापतेनत्वदेता०इति यजुर्वेदिनः ॥ हाऊहाहाउ इमाः ३ प्रजा इति सामगाः ॥ प्रजापतेरावृतो० इत्यथर्ववेदिनः ॥ स्वस्तयेवाजिभिश्च० इति ऋग्वेदिनः ॥ प्रतिपन्था० इति यजुर्वेदिनः ॥ त्यमूषुब्वाजिनामिति सामगाः ॥ वेदः स्वस्तिद्रु० इत्यथर्ववेदिनः ॥ इति पुण्याहवाचनमन्त्राः ॥

अथ[1] मण्डपस्थापनम्—

तत्र उक्तकोणे सूर्येङ्गना ६ सिंह ५ घटेषु ७ शैवे

१ तत्र मण्डपप्रमाणम् । षोड़शारत्निकं कुर्याच्चतुर्द्वारोपशोभितम् । मण्डपं तोरणैर्युक्तं तत्र वेदीं प्रकल्पयेत् । मङ्गलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमागतः । कार्यः षोडशहस्तो वा द्विषट्हस्तो दशावधि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तम्भोलि ८ कोदण्ड ९ मृगे १० षु वायौ ।। मोना १२ ज १ कुम्भे ११ निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृष २ युग्म ३ कर्के ।। ४ ।। शमी दूर्वा पञ्च पल्लवयुतं मदनफलवद्धं स्थापयेत् । तत्र क्रमः ।। (मृतपिण्डं धृत्वा) देवस्य त्वा० इत्यभ्रिमादत्ते ।। १ ।। इदमह ँ रक्षसां ग्रीवा अपकृन्तामि ।। इत्यवटं परिलिखति ।। २ ।। मावोरिषत् खनितायस्मै चाहं खनामि वः द्विपाच्चतुष्पादस्माक ँ सर्वमस्त्वनातुरम् ।। इति खनति ।।३।। सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च ।। सुरायैबभ्र्वैमदे किन्त्व वदति किन्त्वः । इति तस्मिन्नवटे आप आसिञ्चति ।। ४ ।। यवोसीति यवानावपति ।। ५ ।। दर्भसिद्धार्थकांस्तूष्णीमावपति ।। ६ ।। काण्डात् काण्डादिति दूर्वा ।। ७ ।। दधिक्राव्णो० इदि दधि ।। ८ ।। याः फलिनीरिति पूगीफलम् ।। ९ ।। हिरण्यगर्भेति हिरण्यञ्चावपति ।। १० ।। उच्छ्रयस्व व्वनस्पतऽऊर्द्ध्वोमापाह्यर्ँ हसऽआस्ययज्ञस्योद्दचः ।। इति मन्त्रेण शमीरक्तसूत्रवद्धमदनफलसमन्वितस्तम्भोत्थापनम् ।।११।। ऊर्ध्वऽऊषुणऽऊतये तिष्ठा देवो ना सविता । ऊर्ध्वोव्वाजस्य सविता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विहयामहे ।। इत्यवटे रोपणम् ।।१२।। स्थिरो भव बीड्वङ्गऽआशुर्भवाज्यार्वन । पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः । इति समन्ततो मृत्पूरणेन स्थिरकरणम् ।। तस्मिन् स्तम्भे मनोजूति० अमुककर्ममण्डपदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाभ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वन्तु इति प्रतिष्ठाप्य'मण्डपदेवताभ्यो नमः'इति पञ्चोपचारैः पूजनम्। मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। पूजितासि मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे। कृतस्य मण्डपदेवतापूजनकर्मणः समृद्ध्यर्थं यथासंपन्नेनान्नेन तृप्तिपर्यन्तेन ब्राह्मणमेकं यथाकाले अहं तर्पयिष्ये। आग्नेयादिकोणचतुष्टये स्तम्भेषु मण्डपमध्योपरिभागे काष्ठे च क्रमेण नन्दिन्यै नमः १ नलिन्यै नमः२ मैत्रायै नमः ३ उमायै नमः ४ पशुवर्द्धिन्यै नमः ५ इत्यक्षतपुष्पं क्षिपेत्। ऊर्द्ध्ववितानाय नमः इति पूजनम्॥ इति लघुदर्पणे मण्डपदेवतापूजाविधिः॥

* श्रीगणेशाय नमः। मालवीयबालमुकुन्दगुरुभ्योनमः *

* अथ श्रीलघुदर्पणे विवाह-प्रकरणम् *

श्रीगणेशं नमस्कृत्य गुरुञ्चैव विशेषतः। सरस्वतीं तथा शम्भुं विष्णुं कमलसम्भवम्॥ १॥ कालीचरणपुत्रेण जगन्नाथद्विवेदिना। मालवीयान्ववायेन श्रीकाशीक्षेत्रवासिना॥ २॥ ग्रन्थेभ्यः सारमुद्धृत्य विचार्य सदसच्च यत्। विलोक्य बहुशो ग्रन्थान् संशोध्य च मुहुर्मुहुः॥ ३॥ बालानां सुखबोधाय विबुधानां मनोरमम्। क्रियते कर्मकाण्डेऽत्र लघुदर्पणमद्भुतम्॥ ४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ तिलकविधिः—कन्यापिता कन्याभ्राता द्विजो वा वरगृहे गत्वा प्रत्यङ्मुख उपविश्य वरं प्राङ्मुखमुपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य सुमुखश्चैक० इत्यादि मङ्गलमन्त्रान्पठित्वा देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रायाः अमुकानाम्न्याः मम कन्यायाः करिष्यमाणविवाहाङ्गभूतं वरणद्रव्यैः वरवरणमहं करिष्ये। वरस्तु देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा करिष्यमाणमद्विवाहाङ्गभूतं फलादिग्रहणमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणेशगौरीपृथ्वीवरुणदेवतानां यथामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये। पूगीफलाक्षतोपवीतहरिद्राखण्डवस्त्ररजतमुद्रादिद्रव्यैः गणपत्यादीन्सपूज्य पश्चाद्वरस्य पादप्रक्षालनम्। [1]विराजो दोहो०। पाणीं प्रक्षाल्य चतुरो ब्राह्मणान्गन्धैरभ्यर्च्य। कस्तूरी तिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्। सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥ १॥ इति गन्धम्। अक्षतपुष्पमाल्यैः वरं संपूज्य वरवृतिद्रव्याण्यादाय अस्मिन्वरवरणकर्मण्युपवीतादिद्रव्यैः (पूगीफलाक्षतोपवीतहरिद्राखडवस्त्ररजतमुद्रादिद्रव्यैः) अमुकगोत्रममुकशर्माणं वरं कन्यादानार्थं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति वरो ब्रूयात्। ततो विसर्जनम्—यान्तु देव०। भूयसीसंकल्पः। प्रमादात्कु०। इति तिलकविधिः॥

अथ तैलहरिद्रारोपणम्—आचम्य प्राणानायम्य सुमुखश्चैक०इत्यादि पठित्वा

---

१ विराजो दोहोऽसि विराजो दोह मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम विवाहाङ्गभूततैलहरिद्रारोपणकर्मणो निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ततो मण्डपस्थापनं पूजनं च। षोडशद्वादशाष्टहस्तमण्डपं चतुर्द्वारं कारयित्वा मध्ये कलशस्थापनविधिना अविघ्नकलशं संस्थाप्य तस्मिन्कलशे अक्षतपुञ्जेषु अविघ्नमातॄणां पूजनं कार्यम्। तच्चैवम्—मोदाय० मोदम् १ प्रमोदाय० प्रमोदम्० २ सुमुखाय० सुमुखम्० ३ दुर्मुखाय० दुर्मुखम् ४ अविघ्नाय अविघ्नम्० ५ विघ्नहर्त्रे० विघ्नहर्तारम्० ६ **मनोजूति०** प्रमोदादिषड्विनायकाः वरदा भवन्तु। 'मोदादिषड्विनायकेभ्यो नमः' इति पूजयेत् ४ अनया पूजया मोदादिषड्विनायकाः प्रीयन्ताम्। कलशोपरि दीपं प्रज्वाल्य वरस्य तैलहरिद्रारोपणम्—**काण्डात्काण्डा०** इति मन्त्रेण। वरदक्षिणहस्ते पीतवस्त्रराजिकाकपर्दिकालोहमुद्रिकासमन्वितं कङ्कणं '**यदा बध्नं०** इति मन्त्रेण बध्नीयात्। कन्यायास्तु वामहस्ते कङ्कणं बध्नीयात्। ततः कन्यापिता विवाहात्पूर्वदिने वा तस्मिन्नेव दिने पूर्वाह्णे सपत्नीको मण्डपमध्ये शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणे पत्नीं तद्दक्षिणे कन्यां चोपवेशयेत्। आचम्य प्राणानायम्य। **स्वस्तिनऽइन्द्रो०** इति स्वस्त्ययनं कृत्वा देशकालौ० अस्या मम कन्याया अमुकनाम्न्याः श्वोऽद्य वा करिष्यमाणविवाहाङ्गभूतं स्वस्तिपुण्याहवाचनपूर्वकमविघ्नपूजनं मण्डपदेवतापूजनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च आदित्यादिनवग्रहानुकूल्यतासिद्ध्यर्थं ग्रहशान्तिश्चाहं करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्ने० इति पठेत्। भ्रातृपितृव्यादेस्तु भगिन्या इति भ्रातुः कन्याया इति वा,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम भगिन्याः कन्यायाा इति वा ऊहेन संकल्पः। एवं वरपिताऽपि—अस्य मम पुत्रस्य अमुकशर्मणः श्वोऽद्य वा विवाहं करिष्ये। ममास्य भ्रातुरिति, भ्रातुः सुतस्येति, भगिन्याः सुतस्येति ऊहः। ततो वरः माङ्गल्यस्नानोत्तरं वस्त्राभरणादि परिधाय शुभासने उपविश्य देशकालौ० गोत्रः शर्मा विवाहाङ्गभूतं कन्यागृहगमने निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। वरपिता वरस्य तिलकं विधाय नारिकेलफलरजतमुद्राश्च दद्यात्। भूयसीदक्षिणादानम्। विसर्जनं च। ततो वरोऽश्वादियानेन वादित्रघोषपुरःसरं वधूगृहमागच्छेत्।

अथ द्वारपूजा—वरं पीठे उपवेश्य देशकालौ० मम० विवाहाङ्गभूतं गणपतिगौरीवरुणपूजनं च करिष्ये। कन्यापिता आचम्य। प्राणा०। देशकालौ० गोत्रः शर्मा करिष्यमाणकन्याविवाहाङ्गभूतं द्वारे सीमान्ते वा वरपूजनं करिष्ये। तत्रादौ गणेशाम्बिकयोः पूजनपूर्वकं वरुण पूजनं च करिष्ये। ततो वरस्य पादौ प्रक्षालयेत्—**विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजोदोहः।** चतुरो ब्राह्मणान्संपूज्य वरं पूजयेत्। कृतस्य वरार्चनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमानि वासांसि बार्हस्पत्यानि फलदक्षिणासहितानि इदं रजतं चन्द्रदैवतं वा अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय वराय तुभ्यमहं संप्रददे। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो भूयसीसंकल्पः। विसर्जनम्-यान्तु देव०। प्रमादा०। विष्णवे०। इति द्वारपूजा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कन्यावरणम्—ततोवरपित्रादिः [1]मङ्गलवाद्यघोषैः सह कन्यागृहमेत्य शुभे पीठासने प्राङ्मुखां कन्यामुपवेश्य आचम्य । अपवित्रः प० सुमुखश्चैक० देशकालौ० अमुकगोत्रायाः अमुकदेव्या विवाहाङ्गभूतवस्त्राभरणादिधारणकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये। अनन्तरं पञ्चोपचारैरावाहितदेवान्सम्पूज्य वरभ्राता कन्यायै तण्डुलाञ्जलिं सफलदक्षिणां दद्यात् ।। ततः कन्या कौतुकागारे आगच्छेत् ततो वरस्याश्वारोहेण शिविकया वा कन्यागृहे गमनम् ।।

आचम्य । प्राणा० । देशकालौ० कन्यायाः विवाहकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपतिप्रीत्यर्थं एकाक्षरगणपतिमन्त्रस्य सपादलक्षसंख्याकजपं अद्यारभ्य यथाकालपर्यन्तं ब्राह्मणद्वारा करिष्ये । सपादलक्षसंख्याकगणेशमन्त्रजपार्थमेभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । देशकालौ० अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो यजमानस्य कृतसंकल्पसिद्ध्यर्थं गणेशमन्त्रस्य सपादलक्षसंख्याकस्य संख्यापूरणार्थं सहस्रद्वयसंख्याकजपमहं करिष्यामि ॥

अथ विवाहः—*कन्यापिता उदङ्मुखस्तत्पत्नी तद्दक्षिणतश्चोपविशति । ग्रन्थीबन्ध-

१ पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा । कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः ॥ पिता दद्यात्स्वयं कन्यां भ्राता वानुमते पितुः । मातामहो मातुलश्च सकुल्यो बान्धवास्तथा । बान्धवा मातृवंशजाः ।

* दीर्घकाष्ठे शिलापृष्ठे नौकायां गजमस्तके । विवाहे बहुसम्पर्के स्पर्शदोषो न विद्यते ॥ १ ॥ तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे । नगरे ग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टिर्न दुष्यति ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नम् । पवित्र धारणं कृत्वा । आचम्य । प्राणानायम्य । स्वस्तिन० इत्यादिमन्त्रान् पठित्वा देश-कालौ संकीर्त्य गोत्रः शर्मा अस्याः मम कन्यायाः अमुकनाम्न्या भर्त्रा सह धर्मप्रजोत्पादनगृहपरि-ग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमद्य विवाहं करिष्ये। तत्र गृहागताय स्नात-काय वराय करिष्यमाणकन्यादानाङ्गभूतं मधुपर्कं करिष्ये। तत्रादौ गणेशाम्बिका० करिष्ये।
अथ—वाराह्याऽउपानहाऽउपमुञ्चते अग्नौ हवै देवा घृत कुम्भं प्रवेशयाञ्चक्रुस्ततो व्वराहः संबभूव तस्माद्वाराहोमेदुरोघृताद्धिसभूतस्तस्मांद्वराहो गावः संजानते स्वमेवैतद्रसमभिसंजानते तत्पशूनामेवैतद्रसे प्रतितिष्ठति तस्माद्वाराह्यऽउपान-हाऽउपमुञ्चते ॥ १ ॥ वरः आसनस्य पश्चात्तिष्ठति। कन्यापित्रादिः तिष्ठति। षडर्घ्या भवन्त्या-चार्या ऋत्विग्वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति प्रति संवत्सरानर्हेयुर्यक्ष्यमाणास्त्वृत्विज आसनमाहा-र्याह—'साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्। वरः—ॐअर्चय इति ब्रूयात्। अन्यः कश्चिद्ब्राह्म-णः—विष्टरो विष्टरो विष्टरः ब्रू०। दाता—विष्टरः प्रतिगृह्यतामिति। वरः—विष्टरं प्रतिगृह्णामि उभाभ्यां हस्ताभ्यां प्रतिगृह्य। आसने उदगग्रं निधाय—वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति। इत्येनमभ्युपविशति। तत उपविश्य यजमानः। अन्यः—पाद्यम् ३। दाता—पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ३। वरः—पाद्यं प्रतिगृह्णामि। सव्यं पादं प्रक्षाल्य दक्षिणं प्रक्षालयति ब्राह्मणश्चेद्दक्षिणम् प्रथमम्। विराजो०। अन्यः—विष्टरो० ३। दाता—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्टरः प्र० । वरः—विष्टरं प्रति० । आसनाधस्तादुदग्रभूमौ निधाय वर्ष्मोऽस्मि० इति मन्त्रेण विष्टरोपरि पादौ निदधाति । अन्यः—अर्घोऽर्घोऽर्घः । दाता—अर्घः प्रतिगृह्यताम् । वरः—आपस्थयुष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नुवानि । अर्घं प्रतिगृह्णामि । तं मूर्ध्नाभिवन्द्य प्रागुदग्वा भूमौ निनयन्नभिमन्त्रयते । समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत । अरिष्टाऽस्माकं वीरा मापरासेचिमत्पयः । अन्यः—आचमनीयं० ३ । दाता—आचमनीयं प्रतिगृह्यताम् । वरः—आचमनीयं प्रतिगृह्णामि । 'आमागन्यशसास ँ सृज, वर्चसा । तम्माकुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टन्तनूनाम् । इति सकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णीमाचामति । अन्यः—मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः । दाता—मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम् इति निवेदितदातृहस्तस्थं किञ्चिदुद्घाटितं मधुपर्कं 'मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' इति प्रतीक्षते । देवस्य त्वा० स्ताभ्याम् । मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि । सव्ये पाणौ कृत्वा दक्षिणहस्तस्यानामिकया त्रिः आलोडयति । नमः श्यावास्यायान्नशनेयत्तऽआविद्धन्तत्ते निष्क्रन्तामि । इति प्रदक्षिणं अनामिकाङ्गुष्ठेन च । त्रिर्निरीक्षयति प्रागुदग्वा ततो मधुपर्कपात्रं भूमौ निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामेव तस्य प्रागुदग्वा—यन्मधुनो मधव्यं परम ँ रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोऽसानि । इति मन्त्रावृत्त्या त्रिः प्राश्नाति, प्राक् असञ्चरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मधुपर्कशेषं प्रक्षिपेत् । द्विराचम्य प्राणान्संस्पृशति । वाङ्म आस्येऽस्तु, इति मुखं कराग्रेण स्पृशेत् । नसोर्मे प्राणोऽस्तु, इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां नासिकाद्वयम् । अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु, अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां० इत्यक्षिद्वयम् । कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु, इति मध्यमाङ्गुष्ठाभ्यां कर्णद्वयम् । बाह्वोर्मे बलमस्तु, इति कराग्रेण बाहुद्वयम् । ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु; इति युगपद्धस्ते ऊरुद्वयम् । अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु, इति शिरः प्रभृतिपादान्तानि सर्वाङ्गानि ऊभाभ्यां हस्ताभ्यामालभते । आचम्य यजमानः—गौर्गौर्गौः, इति पठेत् । वरः तं प्रत्याह—मातारुद्राणान्दुहिता वसूना ँ् स्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः । प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट । मम चामुकशर्मणो वर्मणो गुप्तस्य वा यजमानस्य उभयोः पाप्मा हतः । ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु इति तृणं छिन्द्यात् । ततः कन्यापिता इमे वाससी बृहस्पतिदैवते अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे । स्वस्तीति प्रतिवचनम् । वरः वस्त्रपरिधानं करोति—परिधास्यै० । द्विराचम्य कन्यापितृदत्तं 'यज्ञोपवीतं परमं पवि०' इति मन्त्रेण धारयति । आचमनी० । अथोत्तरीयं० यशसामा० इति मन्त्रेण धारयति। द्विराचमनम् । चन्दनं—सुचक्षा० । पुष्पमालां० आहरज्जम० । यद्यशोऽप्सरसो० २ । अथालङ्करणम् । अलङ्करण० इति मन्त्रान्ते धारयति । यद्यशोऽप्सरसो० इति मधुपर्कः । ततो वरः—आचम्य प्राणानायम्य अस्मिन् विवाहकर्मणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चभूतसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये । ततो कौतुकागारात् मातुलादिः कन्यामानीय मण्डपे प्रत्यङ्मुखीमुपवेशयेत् । ततो वरः देशकालौ० गोत्रः शर्मा अस्मिन्पुण्याहे धर्मार्थकामप्रजासिद्ध्यर्थं दारापरिग्रहणमहं करिष्ये। अथैनां वासः परिधापयति–जराङ्गच्छपरिधत्स्व वासो भवाकृष्टी-नामभिशस्तिपावा । शतञ्च जीव शरदः सुवर्च्चारयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्म-तीदम्परिधत्स्व वासः । अथोत्तरीयं–याऽअकृन्तन्नवयं या ऽअतन्वत । याश्च देवीस्तन्तूनभितस्ततन्थ तास्त्वादेवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदम्परिधत्स्ववासः । अथैनौ समञ्जयति । कन्यापिता–परस्परं समञ्जेयाथाम् । इत्यध्येषयति । वरः–समञ्जन्तु विश्वे-देवाः समापो हृदयानि नौ । सम्मातरिश्वा सन्धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ । अथ कन्यापिता–आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ०मम (अमुकशर्मणः कन्यापितुः) मद्भर्तुः समस्त-पितृणां निरतिशयसानन्दब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्याकल्पोक्तफलावाप्तये अनेन वरेण अस्यां कन्या-यामुत्पादयिष्यमाणसन्तत्या द्वादशावरान् द्वादशपरान्पुरुषाँश्च पवित्रीकर्तुमात्मनश्च कन्यापितुश्च मद्भर्तुश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीयते [1]ब्राह्मविवाहविधिना कन्यादानमहं करिष्ये। इति संकल्प्य कन्यां संपूज्य प्रार्थयेत् । कन्यां कनकसम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम् । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोक-जिगीषया ॥ १ ॥ विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः । इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां

१ अलंकृत्य कन्यामुदकपूर्वां दद्यादेष ब्राह्मो विवाहः । तस्यां जातो द्वादशावरान् पुनात्युभयतः । इत्याश्वलायनः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तारणाय च ॥ २ ॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥ श्रीमत्पङ्कजविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलश्चन्द्रो-
भास्करवित्तपालवरुणः भौमादिसर्वे ग्रहाः । प्रद्युम्नो नलकूबरः सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्वामी
शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥ गङ्गा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्दगोवर्धनो
गीतागोमयगोरजोगिरिसुता गङ्गाधरो गौतमः । गायत्री गरुडो गदाधरगयागम्भीरगोदावरीगन्धर्वा
ग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ २ ॥ लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा
गावः कामदुघासुरेश्वरगजा रम्भादिदेवांगना । अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुःशङ्खोऽमृतं चाम्बुधेः
रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ३ ॥ अथगोत्रोचारः । प्रथमवरपक्षः—स्वस्ति
श्रीमन्नन्दनन्दनचरणकमलभक्तिविद्याविनीतनिजकुलकमलकलिकाप्रकाशनैकभास्करसदाचारसच्चरित्र-
सत्कुलसत्प्रतिष्ठागरिष्ठस्य अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनिशाखाध्या-
यिनः अमुकशर्मणः प्रपौत्रः अमुकगोत्रस्य० अमुकशर्मणः पौत्रः अमुकशर्मणः पुत्रः प्रयतपाणिः शरणंप्रपद्ये
भूयास्ताम् मंगलमास्ताम् वरश्चिरञ्जीवी कन्या च सावित्री भूयात् । प्रथमशाखोचारः ॥ १ ॥
अथ कन्यापक्षे । मङ्गलाचरणम् ॥ गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी सरयू
महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका । क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी पूर्णाः पूर्ण-
जलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥ घण्टानादमृदङ्गदुन्दुभिरवैर्ढकाणशब्दादयो नाना
मङ्गलगीतनृत्यनिवहैर्निक्वाणवेणुध्वनिः । विप्राशीर्वचनानि वेदनिनदः संपूर्णशास्त्राध्ययश्चैते पान्तु
सदासुलग्नसुमुखाः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥२॥ स्वति श्रीशकवत्सरोऽयन ऋतुर्मासश्च पक्षस्तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नक्षत्रं तिथिवारयोगकरणं यामं निशार्धादिकम् । आदित्यादिनवग्रहाः शुभफलं लग्नं च वेलांशकैर्द-वज्ञः सुहृदस्तथाब्धितनया कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ ३ ॥ स्वति श्री०अमुकगोत्रस्य० श० प्रपौत्रीं अमु-कशर्मणः पौत्रीं अमुकशर्मणः पुत्रीं प्रय० व । प्रथ० ॥ १ ॥ उभयोस्त्रिस्त्रिः शाखोच्चारणम् । दाता शंखस्थतुलसीपत्रपुष्पचन्दनजलान्यादाय कन्याया दक्षिणहस्तं च गृहीत्वा मुख्यसंकल्पं कुर्यात् । देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम समस्त० ये । अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकशर्मणः प्रपौत्राय अमुकगोत्रस्य पौत्राय 'अमुकगोत्रस्य पुत्राय' । कन्यापक्षे–प्रपौत्रीं पौत्रीं पुत्रीं, (एवं पुनर्वारद्वयम्) अमुकगोत्राय यथोक्तप्रवराय 'अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय वराय कन्यार्थिने अमुकगोत्रां यथोक्तप्रवराम् अमुकनाम्नीमिमां कन्यां यथाशक्त्यलङ्कृतां प्रजापतिदैवतां शतगुणीकृतज्योतिष्टोमातिरात्रशत सम-स्तविष्णुलोकफलप्राप्तिकामः भार्यात्वेन तुभ्यमहं संप्रददे न [1]मम । इत्युक्त्वा भ्रात्रा पातिताविच्छिन्न जलधारया सकुशाक्षततुलसीपत्रं कन्यादक्षिणहस्तं च वरदक्षिणहस्ते दद्यात् । वरस्तु स्वस्तीति ब्रूयात् । कन्यादक्षांशं स्पृशन् द्यौस्त्वा ददा०इति मन्त्रेण गृह्णीयात् । ततः कन्यापिता–गौरीं कन्यां सुशीलां च यथाशक्तिविभूषिताम् । कन्यार्थिने वरायाथ तुभ्यं दत्तां समाश्रय ॥ गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां

---

१ कन्यादाने न मम इति न वाच्यम् उत्तरकालेऽपि ममैयं कन्येति व्यवहारादिति केचित् । न ममेति स्वस्वत्वस्य निवृत्तमपि कीर्तयेत् इति हेमाद्रिवचनात् । आवयोरिति सम्प्रतिपत्तेरसत्वेन दाने साधारणस्वत्वनिवृत्तौ साधारणस्वत्वोत्पत्तेर-योगात् । स्वत्वाभावप्रकाशनार्थमन्यत्रेवात्रापि न मम इति वाच्यमेव ॥ मयेयं कन्येति व्यवहारस्तु जन्यजनकभावसम्बन्ध-मूलकः । न तु स्वस्वत्वनिवृत्तिमूलकः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विप्र (वर) समाश्रय ॥१॥ कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः । कन्ये मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥२॥ मम वंशकुले जाता यावद्वर्षाणि पोषिता । तुभ्यं विप्र मया दत्ता पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी ॥३॥ यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह । धर्मेचार्थे च कामे च त्वयेयं नातिचरितव्या । इति वरं प्रार्थयेत् । वरः—नातिचरामि । कोऽदात्कस्माऽअदात्कामायादात् । कामोदाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते । कन्यापितृनामैव षष्ठ्यन्तं वदेत् ॥१॥ एवमेव वारद्वयं यस्त्वयेत्यादिकामस्तुत्यन्तं कर्तव्यम् इति पठेत् । दाता कृतैतत्कन्यादानकर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णं गोमिथुनं च तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यंवा अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं संप्रददे न मम। स्वस्तीति वरः । यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी । विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा । आचार्यदक्षिणासंकल्पः। ब्राह्मणभोजनसंकल्पः । कृतस्य कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये । भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । देशकालौ गोत्रः शर्मा कन्यादानकल्पोक्तफलावा० इदं रजतं चन्द्रदैवतं इदं हेमाभरणं वा अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय वराय तुभ्यमहं संप्रददे । इति कन्यादानम् । ततो वरः पित्रा दत्तां वधूं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणभागे उपवेशयति । यदैषि मनसा दूरं दिशोनु पवमानो वा । हिरण्यवर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु । वधूनामग्रहणम् । अमुकि नाम्नि देवि । वरस्य गोदानम् । मम कन्योपलब्धजनितप्रमोदविवृद्ध्यर्थं अस्मिन् विवाहकर्मणि अहरहः शुभफलप्राप्त्यर्थमिमानि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथाशक्तिगोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं विभज्य दातुमहमुत्सृजे कश्चिद्ब्राह्मणः प्रशस्ताम्रादिपल्लवदूर्वाङ्कुरैर्युक्तं उदकुम्भं हस्ते गृहीत्वा दक्षिणतोऽग्नेर्वाग्यतःस्थितो भवति,उत्तरत एकेषाम् । अथैनौ समीक्षयन् कन्यापिता वधूवरौ प्रति परस्परं समीक्षेथाम् इत्यध्येपयति ।

वरः—अघोरचक्षुरपतिघ्न्नीशिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्च्चाः । वीरसूर्द्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥ १ ॥ सोमम्प्रथमो व्विविदेगन्धर्व्वो विविद ऽउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टेपतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ २ ॥ सोमोददद्ग-न्धर्व्वायगन्धर्व्वोऽददग्नये रयिञ्च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथोऽइमाम् ॥ ३ ॥ सा नः पूषा शिवतमा मैरय सा न ऊरू उशतो विव्वहर । यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामुकामा बहवो निविष्ट्यै ॥ ४ ॥ यावद्भा भास्करस्य प्रभवति गगने यावदाका-शगङ्गा यावद् भोगो नगाढ्या गगनखगपतिर्गोपतिर्वा गणेशः । यावद् ब्रह्मापिनाकी हरिमनु-कमला वेदसिद्धान्तवाणी तावत्त्वं पुत्रपौत्रस्वजनपरिवृतो भुज्यतां राजलक्ष्मीः ॥ १ ॥ लक्ष्मीस्ते पङ्कजाक्षी निवसतु भवने भारती कण्ठदेशे वर्धन्तां बन्धुवर्गाः प्रबलरिपुगणाः यान्तु पाताल-मूले । देशे देशे सुकीर्तिः प्रभवतु भवतां पूर्णकुन्देन्दुशुभ्रा वर्द्धन्तां पुत्रपौत्रैः सकलगुणयुतैः स्वस्ति ते नित्यमास्ताम् ॥ २ ॥ प्रदक्षिणमग्निं पर्याणीय प्रश्चादग्नेस्तेजनीं नाम तृणपूलीं दक्षिणपादेन प्रहृत्यैकस्मिन्कुशास्तृते आसने उपविशति वरस्तस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दक्षिणतो वधूः । वरः—अद्य० तिथौ मम प्रतिगृहीतायामस्यां भार्यायाम्भार्यात्वसिद्धये विवाहाङ्गभूतं होमं करिष्ये । ब्रह्मवरणम् । अस्मिन् विवाहहोमकर्मणि एभिर्वरणनिष्क्रयद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । ततो ब्रह्मोपवेशनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्रुवेणाज्यहोमः—प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये ।। १ ।। इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय ।। २ ।। अग्नये स्वाहा । इदमग्नये ।। ३ ।। ॐ सोमाय स्वाहा । इद ँ सोमाय ।। ४ ।। ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये ।। ५ ।। ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे ।। ६ ।। ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय ।। ७ ।। ॐ त्वन्नो अग्ने० स्वाहा । इदमग्नी व० ।। ८ ।। ॐ सत्वन्नो० स्वाहा । इद० ।। ९ ।। ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा । इदम० ।।१०।। ॐ येते शतं० स्वाहा ० इदं वा० ।।११।। ॐ उदुत्तमं०स्वाहा । इदं व० ।। १२ ।। अनन्वारब्धः । अथ राष्ट्रभृद्धोमः ।। ऋताषाडृतधामाऽग्निर्गन्धर्वः सन ऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय न मम ।। १ ।। ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्योषधयोऽप्सरसोमुदोनाम ताभ्यः स्वाहा । इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो न मम ।। २ ।। सटँ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः सन० वाट् । इदं सटँ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम ।। ३ ।। सटँ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऽआयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम ॥ ४ ॥ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न० वाट् । इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम ॥ ५ ॥ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राणामप्सरसो-भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ॥ ६ ॥ इषिरो व्विश्वव्यचो वातो गन्धर्वः स न० वाट् । इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम ॥ ७ ॥ इषिरो व्विश्वव्व्यचो वातो गन्धर्वस्तस्यापो अप्सरसऽऊर्ज्जो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो न मम ॥ ८ ॥ भुज्युः सुपर्णो यतो गन्धर्वः सन० वाट् । इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम ॥ ९ ॥ भुज्युः सुपुर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरो-भ्यस्तावाभ्यो न मम ॥ १० ॥ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न० वाट् । इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम ॥ ११ ॥ प्रजाप्रतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्व-स्तस्य ऋक्सामान्यप्सरसऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम ॥ १२ ॥ अथ जयाहोमः ॥ चित्तश्च स्वाहा । इदं चित्ताय न मम ॥ १ ॥ चितिश्च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा । इदं चित्यै न मम ॥ २ ॥ आकूतञ्च स्वाहा । इदमाकूताय न० ॥ ३ ॥ आकूतिश्च स्वाहा। इदमाकूत्यै न० ॥ ४ ॥ विज्ञातं च स्वाहा । इदं विज्ञाताय न० ॥ ५ ॥ विज्ञातिश्च स्वाहा । इदं विज्ञात्यै न मम ॥ ६ ॥ मनश्च स्वाहा । इदं मनसे न० ॥ ७ ॥ शक्वरीश्च स्वाहा । इदं शक्वरीभ्यो न० ॥ ८ ॥ दर्शश्च स्वाहा । इदं दर्शाय न० ॥ ९ ॥ पौर्णमासं च स्वाहा । इदं पौर्णमासाय न० ॥ १० ॥ बृहच्च स्वाहा । इदं बृहते न० ॥ ११ ॥ रथन्तरं च स्वाहा । इदं रथन्तराय न० ॥१२॥ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु । तस्मै व्विशः समनमन्तः सर्वाः सऽउग्रः सऽइहव्यो ब्बभूव स्वाहा । इदं प्रजापतये न० ॥ १३ ॥ अथाभ्यातानहोमः—अग्निर्भूतानामधिपतिः समावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यान्देवहूत्या ँ स्वाहा । इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम ॥ १ ॥ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स० स्वाहा । इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न० ॥ २ ॥ यमः पृथिव्याऽअधिपतिः स मा० स्वाहा । धूर्जटेस्त्यागसीशान्ये यमाय पितृदक्षिणे ॥ आचार्यवरयोर्मध्ये मृत्युत्यागो विधीयते । इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न० ॥ प्रणीतोदकस्पर्शः ॥ यथा बाणप्रहाराणां कवचं भवति वारणम् । तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारणम् । वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम ॥ ४ ॥ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न ॥५॥
चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न०
॥ ६ ॥ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोधिपतये न०
॥ ७ ॥ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न०
॥ ८ ॥ वरुणोऽपामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं वरुणायापामधिपतये न० ॥ १० ॥
समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मा० स्वाहा। इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न० ॥११॥
अन्नꣳ साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन्० स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानामधि-
पतये न० ॥ १२ ॥ सोमोऽओषधीनामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं सोमायौषधीना-
मधिपतये० ॥ १३ ॥ सविता प्रसवानामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं सवित्रे प्रसवा-
नामधिपतये न० ॥ १४ ॥ रुद्रः पशूनामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं रुद्राय पशूनाम-
धिपतये न० ॥ १५ ॥ उदकोपस्पर्शः । त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं
त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न० ॥ १६ ॥ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मा० स्वाहा । इदं
विष्णवे पर्वतानामधिपतये न० ॥ १७ ॥ मरुतो गणानामधिपतयस्तेमावन्त्वस्मिन्०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा । इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न० ॥ १८ ॥ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहाः । इद मावन्त्वस्मिन्० स्वाहा । इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्चन० ॥ १९ ॥ उदकोपस्पर्शः ॥ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाटं सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात् । तदय टं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेय टं स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ १ ॥ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्यापस्था जीवतामस्तु मातापौत्रमानन्दमभिविबुध्यतामिय टं स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ २ ॥ स्वस्तिनोऽअग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथायजत्र । यदस्यां मयि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्र टं स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ ३ ॥ सुगन्नु पन्थाम्प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः । अपैतु मृत्युरमृतन्नऽआगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा । इदं वैवस्वताय न० ॥ ४ ॥ अथान्तरपटकरणम् ॥ अवेक्षणं च कन्याया हुत्वाहुतीर्यथाविधि । अन्तर्पटं विधातव्यं कन्यायाश्च क्रमेण तु । परं मृत्योऽअनु परेहि पन्थां यस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा टं रीरिषो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मात वीरान् स्वाहा । इदं मृत्यवे न० । अन्तःपटस्यापसारणम् । उदकोपस्पर्शः । ततोऽग्र वधूः पश्चाद्वरमवस्थाप्य । कुमार्या भ्राता भ्रातृस्थाने पितृव्यस्य मातुलस्य च यः सुतः ॥ मातृष्वसुः सुतस्तद्वत्सुतस्तद्वत्पितृष्वसुः ॥ शमीपलाशमिश्रान् सूर्पस्थितांल्लाजानञ्जलिनाञ्जलावावपतितांल्लाजान् प्राङ्मुखी तिष्ठन्ती कुमारी अञ्जलिनाऽग्नौ जुहोति। सर्टं ह तेन तिष्ठती पत्या गृहीताञ्जलिनेत्यर्थः। तत्तृतीयांशं जुहोति—अर्यमणं देवं कन्याऽअग्निमयक्षत । सनोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतुमा पतेः स्वाहा । इदमर्यम्णे न० ॥ १ ॥ द्वितीयांशम्—इयन्नार्युपब्रूते लाजाना-वपन्तिका । आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ २ ॥ सर्वान् जुहोति—इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियटं स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ ३ ॥ वरः कुमार्याः दक्षिणं हस्तं साङ्गुष्ठं उत्तानं गृह्णाति—गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्मया पत्या जरदष्टिर्य-थाऽऽसः । भगोऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः । अमो-हमस्मि सा त्वटं० सा त्वमस्यमोऽअहम् । सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम् । तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै । प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विन्दावहै बहून् । ते सन्तु जरदष्टयः सम्प्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ ॥ पश्येम शरदः ॥३६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदःशतम् ॥ अथैनामश्मानमारोहयत्युत्त-रतोऽग्नेर्दक्षिणपादेन—आरोहे ममाश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव ॥ अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतन्यतः॥ अथाश्मन्यारूढायां कुमार्यां वरो गाथां गायति॥ सरस्वति प्रेदमव सुभगे व्वाजिनीवति ॥ यान्त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजाया-मस्याग्रतः । यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां व्विश्वमिदं जगत् ॥ तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः । अथ परिक्रामतः । लाजानाज्यं संस्रवं कुम्भमश्मानमेव च ॥ एतांश्च बाह्यतः कृत्वा शेषस्यैव प्रदक्षिणा । तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतु ना सह ॥ पुनः पतिभ्यो जायान्दाऽग्ने प्रजया सह इति ब्रह्माग्न्योरन्तरेण प्रदक्षिणीकृत्य परिक्रामेताम् यथास्थानं गत्वा ॥ एवं द्विरपरं लाजादि । चतुर्थे शूर्पकोणेन सर्वांल्लाजानावपत्यञ्जलौ तान् जुहोति ॥ भगाय स्वाहा । इदं भगाय न० ॥ तूष्णीं अङ्गुष्ठग्रहणादि ॥ ४ ॥ अग्रे वरः पश्चाद्वधूः चतुर्थपरिक्रमणं तूष्णीं कुरुतः ॥ पुनः पश्चादग्नेः प्राग्वदुपविश्य अन्वारब्धः ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजा० ॥ अथैनामुदीचीꣳ सप्तपदानि परिक्रामयति ॥ अथाग्नेरुत्तरतः वरः—सप्तपदानि परिक्र-मस्व ॥ ५ ॥ इति ब्रूयात् । [1]एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु इति वरपठितेन मन्त्रेण वधूः प्रथमं

मन्त्रार्थः । हे सखे त्वां एकं पदं विष्णुर्नयतु किमर्थम् । इषे अन्नाय ॥१॥ हे० द्विपदे वि० कि० । ऊर्जे बलायः ॥ २ ॥ हे० त्रीणि पदानि वि० कि० । रायस्पोषाय धनपुष्ट्यै ॥ ३ ॥ हे० चत्वारि पदानि वि० कि० मायः सुखं तस्य भव उत्पत्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादं उदक् ददाति । एवमुदक्संस्थं द्वितीयादि ॥ १ ॥ द्वे ऊर्ज्जे विष्णु० ॥ २ ॥ त्रीणि रायस्पोषाय वि० ॥ ३ ॥ चत्वारिमायोभवाय वि० ॥ ४ ॥ पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥५॥ षड्ऋतुभ्यो वि० ॥ ६ ॥ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु ॥ ७ ॥ वरो ब्रूयात्—उद्याने मद्यपाने च राजद्वारे पितुर्गृहे । विनाज्ञया न गन्तव्यं तदा पत्नीं करोम्यहम् ॥ १ ॥ क्रीडाशरीरसंस्कारं समाजोत्सवदर्शनम् । हास्यं परगृहे यानं त्यजेत्प्रोषितभर्तृका ॥ २ ॥ अथ वरः कुम्भजलेन वधूमूर्द्धन्यभिषिञ्चति पल्लवादिभिः—आपः शिवाः० । पुनः आपो हिष्ठा० ॥ ३ ॥ अथैनार्ं सूर्यमुदीक्षस्व ॥ ४ ॥ सा च सूर्यमुदीक्षयति तच्चक्षुर्देव० । इति सूर्यमुदीक्षते । अथ वरोऽस्याः दक्षिणांसमधिहृदयमालभते—मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तन्ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् । अथ सिन्दूरदानम् । सा उपविशति—सुमङ्गलीरियं व्वधूरिमार्ं समेतं पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन । इति मन्त्रेण । तां वधूं वर उत्थाप्य वामाङ्गे कुशासने उपवेशयति—इह गावो निषी-

॥ ४ ॥ हे० पञ्चपदानि वि० कि० । पश्वादिभ्यः ॥ ५ ॥ हे० षट्पदानि वि० कि० । ऋतुसमयप्राप्तये तत्सुखाय ॥ ६ ॥ हे० सप्तपदानि वि० कि० । सखे इहामुत्र मित्र सा त्वं सप्तपदा भूरादिसप्तलोकप्रख्याता भव मामनुवर्तिनी च भव ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दन्त्विहाश्वाऽइह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु । कन्यावरयोः ग्रन्थिबन्धनम् । अन्वारब्धः—अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदम० । संस्रवप्राशनम् ! आचम० । पवित्र० । अग्नौ प० । कृतस्य विवाहहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । द्यौस्त्वा० । अग्नेः पश्चात् । आपः शिवा० । तत आचार्याय दक्षिणां दद्यात् । कृतस्य विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे । इदं वृषनिष्क्रयभूतं द्रव्यं आचार्याय तुभ्य० । स्वस्तीति प्रतिवचनम् । दिवा विवाहश्चेदस्तमिते ध्रुवं दर्शयति रात्रौ चेत्तदानीमेव । वरः ध्रुवमुदीक्षस्व इत्यध्येषयति—ध्रुवमसि ध्रुवन्त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि मह्यं त्वादात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम् ॥ २ ॥ इति मन्त्रान्ते ध्रुवमीक्षते । सा यदि न पश्येत्तदा दर्शयामीत्येव ब्रूयात् । कृतस्य विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं शतं पञ्चाशत् पञ्चविंशति दश वा संख्याकान्ब्राह्मणान् यथाकाले भोजयिष्ये ॥ भूयसीसंकल्पः—कृतस्य विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां नानागोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । प्रमादात्कुर्वता० विष्णवे नमः ॥ ३ ॥

अथाभिषेकः—गणाधिपो भानुशशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ॥ राहुश्च-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केतुप्रभृतिर्नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ १ ॥ उपेन्द्र इन्द्रा वरुणो हुताशनो धर्मो यमो वायुहरिश्चतुर्भुजाः ॥ गन्धर्वयक्षोरगसिद्धचारणाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ २ ॥ नलो दधीचिः सगरः पुरूरवाः शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः ॥ रामत्रयं वैन्यबलिर्युधिष्ठिरः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ४ ॥ मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदाः पराशरो व्यासवसिष्ठभार्गवाः ॥ वाल्मीकिकुम्भोद्भवगर्ग-गौतमाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ५ ॥ तुङ्गप्रभासो गुरुचक्रपुष्करं गयाविमुक्तो बदरी वटे-श्वरः ॥ केदारपम्पाशरनैमिषारकं कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ६ ॥ रम्भा शची सत्यवती च देवकी गौरी च लक्ष्मीरदितिश्च रुक्मिणी । कूर्मो गजेन्द्रः सचराचरा धरा कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ ६ ॥ गङ्गा च क्षिप्रा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा । सा चन्द्रभागा वरुणा असी नदी कुर्व० ॥ ७ ॥ शङ्खश्च दूर्वा सितपत्रचामरं मणिः प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम् । सम्पूर्ण-कुम्भैः सहितो हुताशनः कुर्व० ॥ ८ ॥ प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले प्रभातकाले च नृपाभिषेचने । धर्मार्थकामाय नरस्य भाषितं व्यासेन संप्रोक्तमनोरथं सदा ॥ ९ ॥ तिलकाशीर्वादः । कौतुकागारे गमनरूपं लौकिकाचारं वृद्धस्त्रीवचनं कुर्युः । इति श्रीमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे विवाहप्रयोगः ।

अथ विवाहे कन्यापितृसम्बन्धीनि पद्यानि

। लक्ष्मीश्चेन्न सरस्वती तदुभयं यद्यस्ति नोदारता तच्चापि त्रितयं घटेन्न कुहचित्पुण्यैरगण्यैरपि ॥ सौजन्यं न विजृम्भते तदपि चेदास्ते न धर्मे मतिस्तत्सर्वं जगदीश्वरस्य कृपया त्वय्येव संदृश्यते ॥ १ ॥ काष्ठं कल्पतरुः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुमेरुरचलश्चिन्तामणिः प्रस्तरो नूनं कामदुघा चतुष्पदयुता सन्तापकारो रविः ॥ सिन्धुः क्षारमयः शशी च विकलः कामोऽप्यनङ्गस्तथा चित्ते चिन्तयते सदैव भवतां कस्योपमा दीयते ॥ २ ॥ पृथ्वी तावदियं महत्सु महती तद्वेष्टनं वारिधिः पीतोऽसौ कलशोद्भवेन गुणिना सव्योम्नि खद्योतवत् ॥ तद्विष्णोर्दनुजाधिनाथजयिनः पूर्णं पदं नाभवद्देवोऽसौ वसति त्वदीयहृदये त्वत्तो महान्नापरः ॥ ३ ॥ प्रत्येकं मुखकोटयः प्रतिमुखं जिह्वासहस्रं भवेज्जिह्वाग्रेषु सहस्रधा यदि वसेद्देवो स्वयं शारदा ॥ लोकश्चेत्सकलो विरिञ्चिसदृशः स्तोतुं तदा शक्यते युष्माकं कुलकान्तिकीर्तिमहिमा पाण्डित्यशीलादिकम् ॥ ४ ॥

अथ विवाहे वरपितृसम्बन्धीनि पद्यानि ।

महाजनस्य संपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः ॥ पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥ १ ॥ गङ्गा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ॥ पापं तापं च दैन्यं च हन्ति सज्जनसङ्गतिः ॥ २ ॥ कन्या क्वापि कुलं क्वचिद् धनमपि क्वापि प्रियाणि क्वचिन्नह्येकत्र चतुष्टयं क्वचिदिदं प्राप्येत कैश्चिन्नरैः ॥ कन्यारत्नमिदं कुलं सुविमलं भ्रात्रादिभोग्यं धनं तच्छ्रीमद्भवतां सुखादभिमतं प्राप्तं समस्तं फलम् ॥ ३ ॥ धन्यो मेरुगिरिर्यदेकशिरसि ब्रह्मेन्द्ररुद्रादयः स्वच्छन्दं निवसन्ति तत्क्षितितले क्वास्तीति न ज्ञायते ॥ तां धत्ते भुजगाधिपः स च महाशम्भोरभूत्कङ्कणं शम्भुः श्रीपतिपूजकः स हृदये त्वत्तो महान्नापरः ॥ ४ ॥ भोज्यैः षड्रससंयुतैर्द्विजवराः पीयूषतुल्यैर्जलैः सम्बन्धोविभवैर्धनेशसदृशैर्विद्वद्वरः कन्यया । विद्वांसः खलु विद्यया विमलया तर्कैस्तथा तार्किका ये ते मण्डपमागताः सुनितरास्ते के न तृप्तिं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गताः ॥ ५ ॥ नित्यं ब्रह्म यथा स्मरन्ति मुनयो हंसा यथा मानसं सारङ्गा जलदागमं वनयुतीं ध्यायन्ति रेवां गजाः । युष्मद्दर्शनलालसाः प्रतिदिनं युष्मान्स्मरामो वयं धन्यः कोऽपि स वासरोऽत्र भवतां यत्रावयोः सङ्गमः ॥ ६ ॥ इति विनयश्लोकाः ॥

अथ शूद्रस्य विवाहश्लोकाः—साधु भ० । यथासुखं भवानास्तां मद्भाग्या-त्त्वमिहागतः । भवन्तं पूजयिष्यामो वयं श्रद्धासमन्विताः ॥ १ ॥ **वर्ष्मोऽस्मि०** । श्रेष्ठोऽस्मि वै समानानामुद्यतामिव भास्करः । तिष्ठामित्वामधः कृत्वा य इदं मेऽभिदीयते ॥ २ ॥ **विराजो०।** **विराजोदोहं भवसि विराजोदोहमश्नवै । विराजोदोहं पाद्याय मयि त्वं भव भो जल ॥ ३ ॥ आपःस्थ०** । वयं वरुण युष्माभिः सर्वान्कामानशेषतः । अतोऽर्घत्वं गृहाणेमं भो आपःस्थ ममाप्नुयात् ॥ ४ ॥ **समुद्रं वः प्र०** । गमयामि समुद्र स्वां योनिमाप प्रयान्तु वै । वीरा अरिष्टा चास्माकं मापरासेचिमत्पयः ॥ ५ ॥ **आमागन्य०** । प्रियं जनानां यशसा पशूनां स्वामिनं कुरु । शरीरिणामरिष्टानि वरुणाचमयाम्यहम् ॥ ६ ॥ **मित्रस्यत्वा०** । प्रतिक्षामि यथा सर्पान्यहं भूतानि चक्षुषा । तथाहं मधुपर्कं च प्रतीक्षामि खलु प्रभो ॥ ७ ॥ **देवस्यत्वा०** । पूष्णोदेवस्य सवितुर्हस्ताभ्यामाददे किल । मधुपर्कं भर्गरूपमाश्विनं सूर्यदैवतम् ॥ ८ ॥ **नमः श्यावा०** । प्रयौमि मधुपर्कं च नाशनेनादनीयकम् । निष्क्रन्तामि च यत्तद्वै श्यावाश्याय नमोनमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ९ ॥ यन्मधुनो० । परमेण मधव्येन रूपेणान्नाद्यकेन च । मधव्यं परमन्नेन ह्यश्नामि मधुनोऽशनम् ॥ १० ॥ वाचे नमः । प्राणाय नमः । चक्षुर्भ्यां नमः । श्रोत्राभ्यां नमः । बलाय नमः । ओजसे नमः । अङ्गेभ्यो नमः । माता रुद्रा० । वसूनां दुहिता माता रुद्राणां भास्करस्वसा । ब्रवीमि गां मा वधिष्ट जनाय चेतनावृते । अमांसोर्घश्च भवति षडर्घ्यानधिकृत्य वै । गोरुद्देशेन तान्तस्याः निष्क्रयं ह्युत्सृजाम्यहम् ॥ ११ ॥ परिधास्याम्यहं वस्त्रं कौशेयमाहतं दृढम् । सुन्दरं च महादिव्यं पवित्रं परिधानकम् । यशसामा० । उत्तरीयं दृढं वस्त्रं कौशेयं सुमनोहरम् । नूतनं विपुलं वौर्णं कार्पासं धारयाम्यहम् । जरां गच्छ० । जरामुमैह हि मया सहैव रम्यं वसाना वसनद्वयं त्वम् । देवीभिरोतं च चिराय नित्यमायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः । समञ्जन्तु० । विश्वेदेवाः समञ्जन्तु । कोदात्० । कस्माऽअदादियं कन्या कामायेच्छावते ह्यदात् । दाता प्रतिगृहीता च काम एवाभिधीयते । यदैषि मन० । मनसा वायुवेगेन यद्दूरमभिगच्छसि । हिरण्यवर्णो वायुस्त्वां कुर्यान्मन्मनसा सदा । अघोर चक्षु० । अरौद्रचक्षुरपतिघ्नी शिवा च सुमनास्तथा । सुवर्चाः पुत्रसूर्देवृकामा च सुखदा भव । अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न० ॥१॥ वायवे स्वाहा । इदं वायवे० ॥२॥ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय० ॥३॥ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न० । अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां न० ॥ अग्नये अयसे स्वाहा । इदमग्नये अयसे न० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो न० ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न० ॥ ८ ॥ ऋताषाडृतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय स्वाहा। इदं ऋताषाडृतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय न० ॥ १० ॥ ओषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यः स्वाहा। इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो न० ॥ २ ॥ संहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय स्वाहा। इदं संहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न० ॥ ३ ॥ मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यः स्वाहा। इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न० ॥ ४ ॥ सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय स्वाहा। इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न० ॥ ५ ॥ नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः स्वाहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न० ॥ ६ ॥ इषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय स्वाहा। इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न० ॥ ७ ॥ अद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यः स्वाहा। इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो न० ॥ ८ ॥ भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय स्वाहा इदं भुज्यवेसुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न०॥९॥ दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यः स्वाहा। इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न० ॥ १० ॥ प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय स्वाहा। इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न० ॥११॥ ऋक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यः स्वाहा। इदं ऋक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न०॥ १२॥ चित्ताय स्वाहा।इदं चित्ताय न०॥१॥ चित्त्यै स्वाहा। इदं चित्त्यै न० ॥२॥ आकूताय स्वाहा। इदमाकूताय न०॥३॥ आकूत्यै स्वाहा। इदमाकूत्यै न० ॥४॥ विज्ञातं च स्वाहा। इदं विज्ञाताय न० ॥ ५ ॥ विज्ञात्यै स्वाहा। इदं विज्ञात्यै न० ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनसे स्वाहा । इदं मनसे न० ॥ ७ ॥ शक्करीभ्यः स्वाहा । इदं शक्करीभ्यो न० ॥ ८ ॥ दर्शाय स्वाहा । इदं दर्शाय न० ॥९॥ पौर्णमासाय स्वाहा । इदं पौर्णमासाय न० ॥१०॥ बृहते स्वाहा । इदं बृहते न० ॥११॥ रथन्तराय स्वाहा । इदं रथन्तराय न० ॥१२॥ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० ॥१३॥ अग्नये भूतानामधिपतये स्वाहा॥इदमग्नये भूतानामधिपतये न०॥१॥इन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये स्वाहा । इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न० ॥ २ ॥ यमाय पृथिव्या अधिपतये स्वाहा । इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न० ॥ ३ ॥ वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये स्वाहा । इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये न० ॥ ४ ॥ सूर्याय दिवोऽधिपतये स्वाहा । इदं सूर्याय दिवोऽधिपतये न० ॥ ५ ॥ चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये स्वाहा । इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न० ॥ ६ ॥ बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये स्वाहा । इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न० ॥ ७ ॥ मित्राय सत्यानामधिपतये स्वाहा । इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न० ॥ ८ ॥ वरुणायापामधिपतये स्वाहा । इदं वरुणायापामधिपतये न० ॥ ९ ॥ समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये स्वाहा । इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये न० ॥ १० ॥ अन्नाय साम्राज्यानामधिपतये स्वाहा । इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये न० ॥११॥ सोमायौषधीनामधिपतये स्वाहा । इदं सोमायौषधीनामधिपतये न० ॥ १२ ॥ सवित्रे प्रसवानामधिपतये स्वाहा । इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न० ॥ १३ ॥ रुद्राय पशूनामधिपतये स्वाहा । इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न० ॥ १४ ॥ त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये स्वाहा । इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न० ॥ १५ ॥ विष्णवे पर्वतानामधिपतये स्वाहा । इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न० ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यः स्वाहा । इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न० ॥ १७ ॥ पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च स्वाहा । इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्च न० ॥ १८ ॥ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये० ॥ १ ॥ अग्नये स्वाहा । इदमग्न० ॥ २ ॥ अग्नये स्वाहा । इदमग्न० ॥ ३ ॥ वैवस्वताय स्वाहा । इदं वैवस्वताय न० ॥४॥ मृत्यवे स्वाहा । इदं मृत्यवे न मम ॥ ५ ॥ **अर्यमणं देव०** । यं पूर्वा अयजन् कन्या देवमर्यमणं स नः । अग्निरूपोऽर्यमाचैनामितो मुञ्चतु मापतेः स्वाहा ॥ १ ॥ **इयं नार्युप०** । अग्नौ लाजानावपन्ती नारी ब्रूते पतिव्रता । आयुष्मानस्तु मे भर्ता वर्द्धन्तां ज्ञातयो मम ॥ २ ॥ **इमां लाजा०** । अग्नौ लाजानावपामि भर्तुः समृद्धिहेतवे । अन्योन्यमनुरागं नौ स्वाहाग्निरचानुमन्यतां स्वाहा ॥ ३ ॥ **गृभ्णामि ते०** ॥ भगोऽर्यमा त्वां सविता गार्हस्थाय न आददुः । सौभगत्वाय ते पाणिं गृह्णाम्येधि मया सह । **आरोह ममाश्मा०** । इहमश्मानमारोहस्थिराऽश्मेव सदा भव । येचाऽश्मान ववाधन्ते तांस्त्वं भग्नोघमान् कुरु । **सरस्वती०** । सरस्वतीदं रक्ष त्वां विश्वस्य जननीं जगुः । त्वयि प्रतिष्ठितं सर्वं त्वत्तो लीनं समुद्भवेत् । तामद्य गाथा गास्यामि सुभगे वाजिनीवति । सरस्वति नमस्तुभ्यं या स्त्रीणामुत्तमं यशः । **तुभ्यमग्रे०** । अग्रे त्वदर्थं यां सूर्यां सोमाद्याव्यवहन् पुरा । तां त्वमुद्वह जायां च देहि मे प्रजया सह । भगाय स्वाहा । इदं भगाय न० । प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० । इषे नमः । विष्णवे नमः ॥ १ ॥ ऊर्जे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः ॥ २ ॥ रायस्पोषाय नमः ॥ ३ ॥ मायोभवाय नमः ॥ ४ ॥ पशुभ्यो नमः ॥ ५ ॥ ऋतुभ्यो नमः ॥ ६ ॥ सखिभ्यो नमः ॥ ७ ॥ आपः शिवा० । इमा आपः शि० । तच्चक्षुर्देव ० । प्रागुदयं सूर्यं चक्षुर्देवानां हितकारकम् । शतं वर्षाणि पश्येम जीवेम शरदः शतम् । मम व्रते० । मम तव चित्तवाग्भ्यो नमः । सुमङ्गली० । सर्वमङ्गल० । वध्वै नमः । अखण्डपुरुषसौभाग्याय नमः । इह गावो० गोश्वपुरुषेभ्यो नमः । यदाबध्नं० । गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम् । दम्पत्यो रक्षणार्थाय पटग्रन्थि करोम्यहम् । ध्रुवमसि० । ध्रुवाय नमः । इति शूद्रस्य वाहप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ विवाहे अशौचानिर्णयः—दाने विवाहे यज्ञे च सङ्ग्रामे देशविप्लवे । आपद्यपि च कष्टायां सद्यः शौचं विधीयते ॥ १ ॥ दातुर्वरस्य कन्यायाः सद्यः शौचं विधीयते । विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृतसूतके । पूर्वसङ्कल्पितार्थेषु न दोषः परिकीर्तितः ॥ २ ॥ व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जये । प्रारब्धे तु सूतकम् ॥ प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः । नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया ॥ ३ ॥ गृहीतमधुपर्कस्य यजमानाच्च ऋत्विजः । पश्चादशौचे पतिते न भवेदिति निश्चयः ॥ ४ ॥ एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दश वासराः । त्रिषट् चौलोपनयने नान्दीश्राद्धे विधीयते ॥ ५ ॥ सन्निहितलग्नान्तराभावेऽत्र होमादिपूर्वकं विष्णोरनुज्ञामाह—अनारब्धविशुद्ध्यर्थं कूष्माण्डैर्जुहुयाद्घृतम् । गां दद्यात् पञ्चगव्याशी ततः शुद्ध्यति सूतकी ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उपकल्पितबहुसम्भारस्यापि तत्सन्निहितलग्नान्तराभावे सम्भारधारणाशक्तौ वाऽशौचाभावमाह—न देवप्रतिष्ठाविवाहयोः पूर्वसम्भृत्योः, इति ॥

अथ रजोदोषे निर्णयः—विवाहव्रतचूडासु माता यदि रजस्वला। तदा न मङ्गलं कार्यं शुद्धौ कार्यं शुभेप्सुभिः ॥ १ ॥ चौले च व्रतबन्धे च विवाहे यज्ञकर्मणि। भार्या रजस्वला यस्य प्रायस्तस्य न शोभनम् ॥ २ ॥ आभ्युदयिकश्राद्धोत्तरन्तु विशेषः। सूतिकोदक्ययोः शुद्ध्यै गां दद्याद्धोमपूर्वकम्। प्राप्ते कर्मणि शुद्धिः स्यादितरस्मिन्न शुद्ध्यति ॥ ३ ॥ अलाभे सुमुहूर्तस्य रजोदोषे च संगते। श्रियं सम्पूज्य तत् कुर्यात्पाणिग्रहणमङ्गलम् ॥ ४ ॥ हैमीं माषमितां पद्मां श्रीसूक्तविधिनार्चयेत्। प्रत्यृचं पायसं हुत्वाऽभिषिच्य शुभमाचरेत् ॥ ५ ॥ इति रजोदोषनिर्णयः। ततः कन्यापिता देशकालौ संकीर्त्य कन्याविवाहसंपूर्णफलप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वरस्य मातृपितृपक्षीयाणां यथाविभववस्त्रादिभिः पूजनं करिष्ये। तत्रादौ गणपतिपूजनं कृत्वा वरं संपूज्य वस्त्रफलादि दद्यात्। तन्मातृपितृपक्षीयांश्च संपूज्य वस्त्रप्रदानं कुर्यात्। कृतैतद् गणपतिपूजनसाङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः संप्रददे। यस्य स्मृत्या० ॥

अथ देवकोत्थापनम्[1]—पूर्वाह्ने सभार्यो मण्डपे उपविश्य। आचम्य प्राणा०

---

१ समे च दिवसे कुर्याद्देवकोत्थापनं बुधः। षष्ठं च विषमं नेष्टं मुक्त्वा पञ्चमसप्तमौ ॥ १ ॥ नान्दीश्राद्धे कृते पश्चाद् यावन्मातृविसर्जनम्। दर्शश्राद्धं क्षयश्राद्धं नित्यश्राद्धं तथैव च ॥ २ ॥ उपवासव्रतं चैव श्राद्धभोजनमेव च। नैव कुर्युः सपिण्डाश्च मण्डपोद्वासनावधि ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देशकालौ० अस्याः कन्यायाः अस्य वरस्य वा कृतविवाहकर्माङ्गत्वेन स्थापितदेवतानामुत्थापनं मण्डपोद्वासनं च करिष्ये इति सङ्कल्प्य गणेशपूजनं कृत्वा भो ब्राह्मणा! मया क्रियमाणयोः देवकोत्थापनमण्डपोद्वासनाख्यकर्मणोः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ पूण्याहम् ३। एवं कल्याणं ऋद्धिं स्वस्तिं श्रियं इति। स्थापनक्रमेण सर्वा देवताः प्रत्येकं पूजयित्वा हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा- यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। ऋद्धिं च विपुलां दत्त्वा पुनरागमनाय च॥ इति विसृज्य प्राङ्गणस्थं वितानमीशानकोणाद्विमुच्य। ततो ब्राह्मणान्संपूज्य दक्षिणां दत्त्वा तैर्दत्ताशिषो गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। वरपित्रादिभिरपि वधूप्रवेशानन्तरं स्वगृहे एवमेव देवकोत्थापनं कर्तव्यम्। तत्र वरविवाहकर्माङ्गत्वेन स्थापितदेवतानामुत्थापनं मण्डपोद्वासनं च करिष्ये इति विशेषः। अन्यत्सर्वमुक्तरीत्या कुर्यात्। इति लघुदर्पणे देवकोत्थापनम्॥

अथ वधूप्रवेशः—ज्योतिर्विदुक्ते सुमुहूर्ते वरो वधूं गृहीत्वा याने उपवेश्य मङ्गलवाद्यादिघोषैः स्वगृहद्वारि गत्वा स्वगृहान्तः प्रविश्य गृहमध्ये शुभासने उपविश्य। स्वदक्षिणे वधूमुपवेश्य आचम्य। प्राणा०। देशकालौ सं० गोत्रः शर्मा वधूप्रवेशाङ्गभूतं गणपतिपूजनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य गणपतिं पूजयेत्। अन्यदपि द्यूतादिकं कारयितव्यम्। गृहकोशादिदर्शनीयम्॥ ब्राह्मणान्संपूज्य दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। इति वधूप्रवेशः॥

अथ जलपूजादिकर्म—ततो गङ्गादिनदीजलस्थां देवतां संपूज्य (ग्रामाधिष्ठि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्विशेषदेवता इति साधु) गृहमागत्य—कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन । मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण । इति कङ्कणं मोचयेत् ॥ ततो यथाकुलाचारं कुर्यात् । इतिगङ्गापूजनम् ॥

अथ द्विरागमः—वरः शुभासने उपविशेत् तद्वामतः पत्नी च । आचम्य प्राणायामः । सुमुख० देशकालौ० करिष्यमाणवधूद्विरागमनकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशपूजनं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिं संपूज्य । वरपिता कन्याया अङ्के सतण्डुलपूगीफलरजतद्रव्याणि दद्यात् । ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततो वरः वधूं याने आरोप्य सतूर्यघोषैः स्वगृहमागच्छेत् । इति द्विरागमनविधिः । पूषाश्विनौ गुरौ सार्पमघाचित्रेन्द्रमूलभे । एषु ऋक्षेषु जातस्य कुर्याद्गोजननं तथा ॥ अथातो मूलविधिं व्याख्यास्यामो मूलांशे प्रथमे पितुर्नेष्टो द्वितीये मातुस्तृतीये धनधान्यस्य चतुर्थे कुलशोकावहः स्वयं पुण्यभागी स्यान्मूलनक्षत्रे (जातस्य द्वादशाहे तु जन्मर्क्षे वा शुभे दिने । मूलविधानं कुर्यात्) सङ्ग्रहे—नानाप्रधानको होम एकस्मिन्स्थण्डिले भवेत् । एवमेव भवेत्तन्त्रं प्रधानं च पृथक् पृथक् ॥ प्रतिष्ठापद्धतौ । तन्त्रं युगपत् ॥ तन्त्रलक्षणम्—बहूनामुपकारत्वं सकृत्करणतो द्विधा । प्रधानभेदे विषमे प्रसङ्गात्तन्त्रतः समे ॥ इति द्विरागमः ॥

अथ मूलशान्तिप्रयोगः—कर्ता आचम्य । प्राणानायम्य । स्वस्तिन० ॥४६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जनार्दनाः । देशकालौ स्मृत्वा ममास्य कुमारस्य अस्याः कुमार्या वा [1] मूलप्रथमचरणजननसूचित-पित्राद्यरिष्टशान्तिद्वारा दीर्घायुःप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च गोमुखप्रसवपूर्वकसंग्रहमखमूमल—अश्विनी—आश्लेषा—मघा—जेष्ठा—रेवती एतेषां (एतस्य वा) शान्तिमहं करिष्ये । (द्वितीय-चरणादौ यथायथमूहः) ममास्य शिशोराश्लेषामघासन्ध्यात्मकगण्डान्तजननसूचितसर्वारिष्टनिर-सनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नक्षत्रगण्डान्तशांतिं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादिना-न्दीश्राद्धान्तं कृत्वा ॥ १ ॥ ततो वामाङ्गे पत्नीमुपवेश्य मूलविधानं कुर्यात् । तत आचार्यादिवर णानि कुर्यात् । ततः आचार्यो यदत्र संस्थितम्० इत्यादिना सर्षपान् विकीर्य । आपोहि-ष्ठेत्यादिमन्त्रैः पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य । स्थण्डिलात्पूर्वं कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य । तत्र चन्दनागरुकुङ्कुमसर्वगन्धं श्वेतसर्षपान् पुष्पाणि च प्रक्षिप्य । कलशोपरि सुवर्णनिर्मितां निर्ऋतिप्रतिमां संस्थाप्य असुन्वन्तम० निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि । तत्परितः पूगीफलेष्वक्षतपुञ्जेषु वा नक्षत्रदेवता अश्विन्याद्यावाहयेत् । अश्विभ्यां० अश्विनौ० १ । यमाय० यमं० २ । अग्नये० अग्निं० ३ । प्रजापतये० प्रजापतिं० ४ । सोमाय० सोमं० ५ । रुद्राय० रुद्रं० ६ । अदितये० अदितिं० ७ । बृहस्पतये० बृहस्पतिं० ८ । सर्पेभ्यो० सर्पान्० ९ । पितृभ्यो० पितॄन्० १० । भगाय० भगं० ११ ।

---

१ द्वितीयचरणजननसूचितमित्ररिष्टमिति, तृतीयचरणजननसूचितजनन्यरिष्टमिति चतुर्थचरणजनननिमित्तकुलद्वयारिष्ट-मिति बोधनीयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्यम्णे० अर्यमाणम् १२ । सवित्रे० सवितारं० १३ । त्वष्ट्रे० त्वष्टारं० १४ । वायवे० वायुं० १५ । इन्द्राग्निभ्यां इन्द्राग्नी० १६ । मित्राय० मित्रं० १७ । इन्द्राय० इन्द्रं० १८ । निर्ऋतये० निर्ऋतिं० १९ । अद्भ्यो० अपः० २० । विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान्देवान्० २१ । ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० २२ । विष्णवे० विष्णुं० २३ । वसुभ्यो० वसून्० २४ । वरुणाय० वरुणं० २५ । अजैकपदे० अजैकपादं० २६ । अहिर्बुध्न्याय० अहिर्बुध्न्यं० २७ । पूष्णे० पूषाणम्० २८ । इत्यावाह्य । मनोजूति० निर्ऋत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य । अनया पूजया निर्ऋत्याद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् । तं कलशमालभ्य रुद्राध्यायम् ६६, आशुः शिशान इति सप्तदशर्चं १७, कृणुष्वपाज इति पञ्चर्चं ५ सूक्तं च जपेत् । द्वितीयकुम्भं सप्तविंशतिच्छिद्रं तदुत्तरतः पूर्ववत्संस्थाप्य । गन्धादिना विभूषितं च कृत्वा । गोमयोपलिप्तं गृहस्येशानदिग्भागे श्वेताष्टदले व्रीहिस्थशूर्पे रक्तवस्त्रं प्रसार्य । तत्र तिलान् विकीर्य । तदुपरि प्राङ्मुखं पश्चिमपादं बालकं संस्थाप्य । सूत्रेणावेष्ट्य गोमुखे संयोज्य गोमुखात्प्रसवं विचिन्त्य कुशगृहीतेन पञ्चगव्येन शिशुंमार्जयत्— विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु । आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ १ ॥ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ॥ गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ २ ॥ हिरण्मयी अरणीयन्निर्मथतो अश्विना । तं ते गर्भं दधामहे दशमे मासि सूतवे ॥ ३ ॥ नेजमेष परापत सुपुत्रः पुनरापत । एवं तं गर्भमाधेहि दशमे मासि सूतवे ॥ ५ ॥ विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम् । पुमांसं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे ॥ ६ ॥ इत्यभिषेकः ॥ गवामङ्गेषु०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति गां स्पृष्ट्वा अथाचार्यः विष्णोः श्रेष्ठेन इति मन्त्रेण शिशुं गृहीत्वा मात्रे दद्यात् । माता गोमुखप्रदेशाच्छिशुमानीय गोपुच्छदेशे पित्रे दद्यात् पिता च मात्रे दद्यात् । वस्त्रमपसार्य पिता तन्मुखं दृष्ट्वा मिलितेन पञ्चगव्येन कुशाग्रेण बालमभिषिञ्चेत्—आपोहिष्ठा० इति मन्त्रैः ३ । ततः पितैव बालं मूर्ध्नि त्रिरवजिघ्रेत् । अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयादधिजायसे ।। आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् ।। अत्र च प्रत्याघ्राणं मन्त्रावृत्तिः । अस्य गोमुखप्रसवाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । ॐ पुण्याहम् एवं त्रिः । एवं स्वस्तिमृद्धिमपि त्रिवारं ब्राह्मणान् वाचयित्वा पुण्याहवाचकेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा तां गामाचार्याय दद्यात् । अस्य गोमुखप्रसवकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । अस्य गोमुखप्रसवाख्यस्य कर्मणः समृद्ध्यर्थं सूर्यादिनवग्रहाणां प्रीत्यर्थं चेमानि गोवस्त्रसुवर्णधान्यानि सदक्षिणानि तन्निष्क्रयीभूतानि द्रव्याणि वा यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । अग्नेरीशानदेशे ऊर्ध्वं शिक्यं बध्वा । तदुपरि सप्तविंशतिच्छिद्रं कुम्भं निधाय । तस्याधः औदुम्बर पीठं निधाय । श्वेतवस्त्रेणाच्छाद्य । तत्र यजमानं शिशुसहितां पत्नीं चोपवेशयेत् ततः शिक्यस्थकलशं जलेनापूर्य । तदुपरि वंशपात्रं निधाय । एकस्मिन्नवीने वस्त्रे [1]सप्तधान्यं हेममयमूलेन सर्पेण सह विष्णुक्रान्तां सहदेवीं तुलसीं शतावरीं च बन्धयित्वा वंशपात्रे निधायाचार्यः पीठस्थानमुपरि पतन्तीषु धरासु निर्ऋतिसर्पकुम्भमादाय तत्कुम्भोदकेन यजमानं सबालकां पत्नीं च [2]देवस्य त्वेति त्रिभिरभिषिञ्चेत् । योऽसौ

---

१ यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गुश्च मुद्गकाः । श्यामकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतमिति हेमाद्रिः ।
२ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् यजु० सं० अ० १ मं० १० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः । मूल [मघासार्पगण्डजात०] जातशिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ १ ॥ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः ॥ सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूल [मघासार्पगण्ड०] दोषं व्यपोहतु ॥ २ ॥ योऽसौ खड्गधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ॥ मूलजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम ॥ ३ ॥ योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋतीराक्षसाधिपः ॥ [सार्पउरगाधिपः] प्रशामयतु मूलोत्थं [मघोत्थं सार्पोत्थं गण्डोत्थं दुष्टोत्थं वा] दोषं गण्डान्तसम्भवम् ॥ ४ ॥ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ॥ नक्रवाहः प्रचेता वो मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ५ ॥ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः ॥ प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः ॥ ६ ॥ योऽसौ निधिपतिर्देवो खड्गभृद्वाजिवाहनः ॥ मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ७ ॥ योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ॥ आश्लेषामूलगण्डान्तं दोषमाशु व्यपोहतु ॥ ८ ॥ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः ॥ सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः ॥ ९ ॥ आश्लेषाऋक्ष [मघाऋक्षप्र] जातस्य मातापित्रोर्धनस्य च ॥ भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां सर्वदोषं व्यपोहतु ॥ १ ॥ योऽसौ वागीश्वरो नाम अधिदेवो बृहस्पतिः ॥ मातापित्रोः शिशोश्चैव गण्डदोषं व्यपोहतु ॥ २ ॥ पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरं सदा ॥ सार्पनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबान्धवान् ॥ ३ ॥ इति विशेषः । ॐ तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये दैवी स्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे । नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओष-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धीभ्यः । नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि । [1]सुरास्त्वा० इत्यादिमन्त्रैश्चाभिषिञ्चेत् । ततो यजमानः पुत्रकलत्रसहितः शुद्धोदकेन स्नात्वा वस्त्रान्तराणि परिधायाऽऽर्द्रवासांसि नापिताय दद्यात् । तत उपविश्य यजमान एव शिरो मे श्रीर्यश इति यथालिङ्गं स्वाङ्गानि संस्पृशेत् । शिरो मे श्रीर्य्यशो मुखन्त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि । राजा मे प्राणोऽ अमृत ँ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥ १ ॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराडभामः । मोदाः प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ २ ॥ बाहू मे बलमिन्द्रिय ँ हस्तौ मे कर्म वीर्य्यम् । आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥ ३ ॥ पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरम ँ सौ ग्रीवाश्च श्रोणी । ऊरूऽअरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥ ४ ॥ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्म्मेऽपचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावण्डौ मे भगः सौभाग्यं यशः ॥ ५ ॥ जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः । ततोऽग्निस्थापनम् । ततः सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च । ततो ब्रह्मासनाद्याघारावाज्यभागान्तं कुर्यात् । सक्षीरप्रणीताप्रणयनम् । अथाग्नेरीशान्यां ग्रहपीठोत्तरतः

---

१ सुरावन्तम्बर्हिषदं ँ सुवीरं यज्ञ ँ हिन्वन्ति महिषा नमोभीः। दधानाः सोम दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः। यजु०सं०अ० १६ मं० ३२ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[क्षीरिणो वृक्षाः वटोदुम्बराश्वत्थप्लक्षाः] कलशं संस्थाप्य । तत्र पञ्चगव्यं तिलान् व्रीहिक्षीर-द्रुमकषायान् निक्षिप्य पूर्णपात्रोपरि पूगीफलेषु उदक्संस्थान्देवानावाहयेत् । तद्विष्णोः परमंपद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । विष्णवे० विष्णुं० । [1] तत्वा-यामि० वरुणाय० वरुणं० । अक्षीभ्यांते० यक्ष्मणे० यक्ष्माणं इत्यावाह्य । मनो जूति० विष्णवाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत इति प्रतिष्ठाप्य । विष्णवाद्यावाहि-तदेवताभ्यो नम इति संपूज्य । कुम्भं स्पृष्ट्वा वक्ष्माणमन्त्रान् जपेत् । यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि । मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधो जहि ॥१॥ त्वं हि राधसस्पते राधसो महः क्षयस्यांसि विधत्तः । तं त्वावयं मघवन्नि-न्द्रगीर्वाणः सुतावन्तो हवामहे ॥२॥ इन्द्रस्य कुत वृत्रहा परस्यानो वरेण्याः । स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यम स पश्चात्पातु नः पुरः॥३॥ त्वन्नः पश्चादधरादु-त्तरात्पुरः इन्द्रं निपाहि विश्वतः । आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ॥४॥ अद्याद्य श्वः श्व इन्द्र त्रास्व परे च नः । विश्वा च नो जरित्तृन् सत्पते

१ तत्वायामि ब्रह्मणाबन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविभिः । अहेडमानो वरुणेहवोद्ध्युरुश ँ समान आयुः प्रमोषीः ॥ यजुर्वेदसं० अ२१ म०—२० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अहर्दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ ५ ॥ प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्लोवीर्या-यकम् । उभौ ते बाहू वृषणा शतक्रतो निया वज्रं मिमिक्षतुः ॥ ६ ॥

ततो यजमानः द्रव्यत्यागं कुर्यात् । मीलितैर्दधिमध्वाज्यैः स्रुवेण प्रत्यृचमष्टसङ्ख्ययाहुत्याहुती-र्जुहुयात् । प्रजापत्यादीनाज्येन । तत्र मन्त्राः—तद्विष्णोः पर०[1] स्वाहा ॥ १ ॥ इत्यनयाष्टसंख्यया-हुत्या विष्णवे आपो[2]हिष्ठा० स्वाहा ॥ २ ॥ यो वः शिव० स्वाहा ॥ ३ ॥ तस्मा ऽअर-ङ्ग० स्वाहा ॥ ४ ॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजाः । अग्निं च विश्वशं भुवमपश्च विश्वभेषजीः स्वाहा ॥ ५ ॥ अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि । यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का जिह्वाया विवृहामि ते स्वाहा[3] ॥ ६ ॥ ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् । यक्ष्मं दोषण्यंमंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहामि ते स्वाहा ॥ ७ ॥ आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो विवृहामि ते स्वाहा

---

१ ओं तद्विष्णोः परमं पद ँ सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । य० अ० ६ मं० ५ ।

२ आप इत्यत भेषजीरित्यन्तमन्त्रैर्वरुणायाष्टसंख्ययाहुत्या जुहुयात् । एवं सर्वत्र इयमपि वरुणाय बोध्या ।

३ अक्षिभ्यामित्यारभ्याङ्गादित्यन्तं नाममन्त्रैरष्टसंख्ययाहुत्या यक्ष्मघ्ने जुहुयात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ८॥ उरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्यां यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्
भंससो विवृहामि ते स्वाहा ॥ ९ ॥ मेहनाद्धनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामि ते स्वाहा ॥ १० ॥ अङ्गादङ्गाल्लोम्नो-
ल्लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि । यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामि ते स्वाहा
॥ ११ ॥ अत्र आदित्यादिग्रहाणां दधिमध्वाज्येनैव होमं कृत्वा ग्रहादिभ्यः
समित्तिलतण्डुलाज्यद्रव्यैर्यथासंख्यं हुत्वा पायसादिहोमं कुर्यात् । [1]असुन्वन्तमा० स्वाहा
इति चतस्रः स्थालीपाकेन जुहुयात् । ततः पञ्चदशभिश्चतुर्गृहीतैः स्रुवा पञ्चदशाज्याहुतीर्जुहुयात्
वक्ष्यमाणमन्त्रैः प्रतिमन्त्रम् । कृणुष्वपाजः प्रसितिं न पृथ्वीं य्याहि राजे वामवाँ
इभेन । तृष्वीमनुप्रसितिं द्रुणानोस्तासि विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः स्वाहा इति
पञ्च ॥ ५ ॥ मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मानो गोषु मा नो अश्वेषु
रोरिषः । मा नो वीरांन् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदामित्वा
हवामहे । या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तया नस्तन्न्वा

---

१ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेमस्येत्यामन्त्रिहितस्करस्य । अन्यगस्मादच्छासायइत्यानमोंदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ।

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा। इति षट्।।६।।आचार्ययजमानयोरुदकोपस्पर्शः। अग्निरक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः स्वाहा ॥ १ ॥ त्वन्नः सोमविश्वतो रक्षा राजन्नघायतो नरिष्ये त्वावतः सखा स्वाहा ॥ १ ॥ निर्ऋतिसर्पनाममन्त्रेणाष्टोत्तरशताहुतीचतुर्गृहीताज्येनैव हुत्वा। ततो नक्षत्रदेवताभ्यश्च नाममन्त्रैः प्रत्येकमष्टसंख्याकाज्याहुतीर्जुहुयात्। आवाहितदेवतानामग्नेश्चोत्तरपूजनम्। स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा। ततो यजमानः आचार्यादीन्सम्पूज्य। कृतस्य मूलशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं कृष्णगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं कृष्णांश्च तिलान् सप्तधान्यसंयुक्तमिदं हेममयमूल्यममुकनामाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। द्यौस्त्वा ददात्वित्यादि पठेदाचार्यः। कृतस्य मूलशान्तिकर्मणः सा० र्थमिदं कृष्णमनडुन्निष्क्रयभूतं द्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। कृतस्य मूलशान्ति० र्थमिदं वस्त्रनिष्क्रयभूतं द्रव्यं नक्षत्र [1]सूचकाय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात्। ततः आज्यावलोकनं कांस्यपात्रे— रूपेण [2] वे रूपमभ्यागान्तुथोवो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः। आज्येन वर्द्धते

१ तिथ्युत्पत्तिं न जानाति ग्रहाणां नैव साधनम्। परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचकाः ॥ इति ज्योतिर्निबन्धे।
२ य० अ० ७ मं० ४५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयुराज्येन वर्द्धते बलम् । आज्येन वर्द्धते तेजो दर्शनं पापनाशनम् ।
इति मन्त्रेण देशकालौ० मम पत्न्याः पुत्रस्य चैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडाशान्ति-शरीरोत्थार्तिनाशनमनःप्रसादायुरारोग्यादिसर्वसौख्यकामः अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय इदं पत्नीपुत्रस्वदेहच्छायावीक्षिताज्यपूरितकांस्यपात्रं ससुवर्णं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम । मन्त्रस्तु—याऽलक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गसमुपस्थितम् । तत्सर्वं नाशयाज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय । आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम् । आज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् । आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम । ततो दानान्ते पञ्चामृतप्लुतानि सर्वमूलानि पञ्चधा विभज्याचार्यो जुहुयात् । तत्र मन्त्राः । मूलाय स्वाहा ॥ १ ॥ महामूलाय स्वाहा ॥ २ ॥ मूलदेवतायै स्वहा ॥ ३ ॥ मूलकर्मणे स्वाहा ॥ ४ ॥ सर्वमूलाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ततः सप्तविंशति दश वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा शान्तिपाठं कारयेत् । ततो यजमानः स्थापितदेवताः विसृज्य पीठमा-चार्याय दद्यात् । ततोऽग्निं विसृज्य भूयसीसंकल्पं कृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । अथ सार्पदैवते गण्डजात एवं विधिः । नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति पायसहोमः ॥ इति श्रीमालवीयकालीचरणात्मज-जगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे मूलादिशान्तिप्रयोगः ॥

अथ गोमुखप्रसवशान्तिप्रयोगः—यथाकाले सम्भृतसम्भाराः कृताभ्यङ्गो

यजमानः सपत्नीकः सबालः पीठोपविष्टः आचम्य । प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा ममास्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालकस्यामुकनक्षत्रोत्पन्नस्य तन्नक्षत्रजननसूचितसकलारिष्टपरिहारार्थं पित्रादिसर्वारिष्टनिरसनद्वारा दीर्घायुरभिवृद्ध्यर्थं समस्तक्लेशापनोदार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च गोमुखप्रसवाख्यां शान्तिं करिष्ये । इति सङ्कल्पः । गणेशं सम्पूज्य । आचार्यं ब्रह्माणं च वृणुयात् । ततः आचार्यो यदत्र संस्थितमिति सर्षपविकिरणम् । आपोहिष्ठेति मन्त्रेण पञ्चगव्यप्रोक्षणं विधाय । यजमानस्य गृहे ईशानभागे तण्डुलपिष्टेन अष्टदलं पद्मं निर्माय । तत्र यथाशक्ति व्रीहीन्निक्षिप्य । तेषु नवं शूर्पं निधाय । तत्र नवीनरक्तवस्त्रं प्रसार्य । तत्र तिलान्विकीर्य । तदुपरि प्राङ्मुखं पश्चिमपादं शिशुं निधाय । त्रिगुणितेन सूत्रेण रक्तेन वाससा तं शिशुं शूर्पं वेष्टयित्वा शिशुसमीपे गोमुखमानीय संश्लेपं कृत्वा गोः सकाशात् शिशोः प्रसवं संभावयित्वा गामपसार्य विष्णुर्योनिमिति सूक्तेन मिलितेन पञ्चगव्येन शिशुं स्नापयेत् । गवामङ्गेषु० इति मन्त्रेण गवां सर्वाङ्गेषु वा स्पृशेत् । अथाचार्य एव विष्णोः श्रेष्ठेनेतिमन्त्रेण शिशुमादाय मातृहस्ते दद्यात् ॥ अथ माता बालं निरीक्ष्य स्वभर्तृहस्तयोर्दद्यात् । अथाचार्यो बालं पित्रा मात्रे दापयेत् । ततो नूतनवस्त्राच्छादितं मातुरङ्कस्थं बालं कृत्वा पिता बालस्य छायापात्रे मुखमीक्षयित्वा मिलितेन कुशाग्रगृहीतेन पञ्चगव्येन आपोहिष्ठेति मन्त्रैः बालमभिषिञ्चेत् । ततः पितैव बालं मूर्द्धनि त्रिरवजिघ्रेत् । अङ्गादङ्गा० । अत्र च प्रत्याघ्राणं मन्त्रावृत्तिः । ततोऽस्य गोमुखप्रसवाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रिवारं ब्राह्मणान्वाचयित्वा तां गामाचार्याय दत्वा नवग्रहप्रीत्यर्थं प्रत्येकं गोवस्त्रसुवर्णधान्यानि च दत्त्वा अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दद्यात् । अथाचार्योऽग्निं प्रतिष्ठाप्य । ग्रहान् पूजयित्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कुर्यात् । अथाग्नेरीशानभागे कस्मिंश्चित्पीठे कुम्भं संस्थाप्य । तत्र पञ्चगव्यतिलान् व्रीहीन् क्षीरद्रुमकषायान् निक्षिप्य पूर्णपात्रं मुखे स्थापयित्वा तदुपरि तद्विष्णोरिति विष्णोस्तत्वायामीति वरुणस्याक्षीभ्यामिति यक्ष्मघ्नश्च प्रतिमा अभ्यर्च्य कुम्भं स्पृष्ट्वा वक्ष्यमाणमन्त्रान् जपेत् । यत इन्द्र ६ एवं कुम्भमभिमन्त्र्य । मिलितैर्दधिमध्वाज्यैः स्रुवेण प्रत्यृचं अष्टाविंशतिसंख्यया अष्टौ वाहुतीर्जुहुयात् । तत्र मन्त्राः । आपोहिष्ठा० ३ । अप्सुमेसोमो० ४ । इदं अद्भ्यो न ममेति चतुर्षु त्यागः । तद्विष्णोः पर० स्वाहा । इदं विष्णवे न० । तत्वायामि० स्वाहा इदं वरुणाय न० । अक्षीभ्यां ते० ६ इदं यक्ष्मघ्ने न ममेति सर्वत्र त्यागः । अत्र आदित्यादिनवग्रहाणां प्रत्येकमष्टादिसंख्यया दधिमध्वाज्येनैव तल्लिङ्गकैर्मन्त्रैर्होमं कृत्वा स्विष्टकृद्धोमः । नवाहुतिहोमः । संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं समाप्य अग्नेः पश्चिमभागे सकुटुम्बं यजमानमुपवेश्य ग्रहकलशवरुणकलशोदकेनाभिषिञ्चेदापोहिष्ठेत्यादिमन्त्रैः । ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । स्थापितदेवतानामुत्तरपूजाविसर्जनान्ते तत्प्रतिमां आचार्यहस्ते प्रतिपाद्याग्निं संपूज्य गच्छ गच्छेत्यग्निं विसृज्य दश त्रीन्वा ब्राह्मणान् भोजयितुं सङ्कल्पं कृत्वा भूयसीं दत्त्वा यस्य स्मृत्येति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे गोमुखप्रसवशान्तिविधिः ॥

अथ मूलविधानपद्धतिर्लिख्यते । तत्र प्रसवमूलनक्षत्राद्द्वितीयमूलनक्षत्रे सुस्नातः सपत्नीको यजमानो गोमुखप्रसवशान्तिं कृत्वा स्वाचान्तः कृतकुशोपग्रहः प्राणानायम्य गणेशं नमस्कृत्य देशकालादिसंकीर्त्य । मम जातस्य कुमारस्य अस्याः कुमार्या वा मूलप्रथमचरणादिजननसूचितपित्रा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्यरिष्टशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये सनवग्रहमखं मूलविधानमहं करिष्ये। द्वितीयचरणादौ यथायथमूहः। इति सङ्कल्प्य गणेशपूजनादि नान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा मूलविधानं कुर्यात्। तत्र पत्न्या वामाङ्गे उपवेशनम्। ततः अस्मिन् मूलविधानकर्मणि त्वमाचार्यो भवेति। भवामीति उक्तवन्तं आचार्यं कृत्वा एवं ब्रह्माणं सदस्यं ऋत्विजश्चत्वारो वृणुयात्। ततः आचार्यः यदत्रेति सर्षपान्विकीर्य। आपोहिष्ठेत्यादिभिर्मन्त्रैः पञ्चगव्येन भूमिं प्रोक्ष्य। अग्निस्थापनार्थं स्थण्डिलं निर्माय तदुत्तरतः स्वस्तिकं कृत्वा तदुपरि कलशस्थापनं कुर्यात्। तद्यथा—महीद्यौरिति भूमिं स्पृशन्संप्रार्थ्य। ओषधयः समिति तत्र यवान्क्षिप्त्वा आजिघ्रेति कलशं तदुपरि निधाय। वरुणस्योत्तं भनमिति जलेनापूर्य। त्वां गन्धर्वेति मन्त्रेण तत्र चन्दनागरु [1] सर्वगन्धं क्षिपेत्। ततः या ओषधीरिति सर्वौषधीः प्रक्षिपेत्। अश्वत्थेवेति [2] पञ्चपल्लवान्। स्योना पृथिवीति सप्तमृदः। याः फलिनिरिति फलम्। परिवाजपतिः इति [3] पञ्चरत्नानि। हिरण्यगर्भेति हिरण्यं प्रक्षिपेत्। ततः श्वेतसर्षपान् निक्षिप्य तूष्णीं पुष्पाणि च प्रक्षिप्य युवासुवासा इति वस्त्रेण वेष्टयेत्। पूर्णादर्वीति धान्यपूर्णपात्रमुपरि न्यसेत्। तत्र कलशोपरि निर्ऋतिप्रतिमां स्थापयित्वा अग्न्युत्तारणपूर्वकं असुन्वन्त इति मन्त्रेण पूजयेत्। तत्परितः पूगीफलेष्वक्षतपुञ्जेषु वा नक्षत्रदेवताश्विन्याद्यावाह्य

१ अगरुं कुङ्कुमञ्चैव चन्दनं च चतुःसमम्। सर्वगन्धमिति प्राहुः समस्तसुरवल्लभम्॥

२ न्यग्रोधः पिप्पलः प्लक्षजम्बुचूततरूद्भवाः। पल्लवाः पञ्च वै ते स्युस्त्वचस्तेषामपि क्षिपेत्॥

३ तूष्णीं वज्रमौक्तिकवैडूर्यप्रवालं चेन्द्रनीलकम्। उक्तानि पञ्चरत्नानि नारदेन महर्षिणा॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजयेत् । ततो गन्धपुष्पैर्विभूषितं कृत्वा । तं कलशमालभ्य रुद्राध्यायं पठित्वा आशुः शिशान इति सप्तदशर्चं, कृष्णुष्वपाज इति पञ्चर्चं सूक्तं च जपेत् । एवं जपं कृत्वा द्वितीयं कुम्भं चतुश्छिद्रं स्थापितकलशादुत्तरतः पूर्ववत्संस्थाप्य । गन्धादिना विभूषितं च कृत्वा अग्निस्थापनप्रदेशात्पश्चिमप्रदेशे केनचिदुपायेन ऊर्ध्वं शिक्यं बध्वा तत्रैव तं कुम्भं निधाय । तदधो हस्तप्रमाणोच्छ्रितां विस्तृतां च द्विहस्तप्रमाणदीर्घामौदुम्बरीमासंदीमुदग्ग्रां निधाय श्वेतवस्त्रेण तां परिच्छादयेत् । ततस्तत्र यजमानः शिशुसहिता पत्नी चोपविशेत् । ततः शिक्यस्थं कलशं जलेनापूर्य तदुपरि वंशपात्रं निधाय एकस्मिन्नवीने वस्त्रे [1]सप्तधान्यं हेममयमूलेन सह शतमूलानि च बध्वा तस्मिन्वंशपात्रे कुर्यात् । शतमूलाभावे विष्णुक्रान्ता सहदेवी तुलसी च शतावरी । अथ प्रकृतमुच्यते । आचार्यः आसन्दीस्थानमुपरि पतन्तीषु धारासु निर्ऋतिकुम्भमादाय तत्कुम्भोदकेन यजमानं सबालकां पत्नीं च देवस्यत्वेति त्रिभिस्तथा पौराणिकमन्त्रैश्च पल्लवैरभिषिञ्चेत् । देवस्यत्वा० म्यसौ ॥ १ ॥ देवस्यत्वा० चामि ॥ २ ॥ देवस्यत्वा० अश्विनो० मि ॥ ३ ॥ योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ १ ॥ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः । सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूलदोषं व्यपोहतु ॥ २ ॥ योऽसौ दण्डधरो देवो धर्मो महिषवाहनः । मूलजातशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो मम ॥ ३ ॥ योऽसौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः । प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डान्तसम्भवम् ॥ ४ ॥ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ।

१ सप्तधान्यानि—व्रीहयो यवगोधूमा मुद्गा माषाः प्रियङ्गवः । तिलाश्च सप्तमाः प्रोक्ताः सप्तधान्यमुदाहृतमिति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नक्रवाहः प्रचेता वो मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ५ ॥ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः। प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः ॥ ६ ॥ योऽसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृद्वाजिवाहनः। मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ७ ॥ योऽसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः। आश्लेषामूलगण्डान्तं दोषमाशु व्यपोहतु ॥ ८ ॥ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः। सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदाः ॥ ९ ॥ आश्लेषाशान्तौ तु श्लोकेषु विशेषः। योऽसौ वज्र० सार्पजातशिशोर्दोषं०। एवं सर्वत्र सार्पोत्थम्। आश्लेषाऋक्षजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च। भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां सर्वदोषं व्यपोहतु ॥ १ ॥ योऽसौ वागीश्वरो नाम अधिदेवोबृहस्पतिः। मातापित्रोः शिशोश्चैव गण्डदोषं व्यपोहतु ॥ १ ॥ पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरं सदा। सार्पनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबान्धवान् ॥ ३ ॥ ॐ तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये दैवीस्वस्तिरस्तु नः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ऊर्ध्वं जिगातु भेषजं शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे। नमो ब्रह्मणे नमोस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि। सुरास्त्वामभिषिञ्चन्त्वित्यादिमन्त्रै रभिषिञ्चेत्। यजमानः सपुत्रः सकलत्रः शुद्धोदकेन स्नात्वा वस्त्रान्तराणि परिधाय आर्द्रवासांसि नापिताय दत्त्वा आज्यावलोकनं कांस्यपात्रे रूपेण वो-रूपमिति मन्त्रेण स्वयं पत्नी पुत्रश्च सम्यङ्मुखमवलोक्य ससुवर्णं कांस्यपात्रं विप्राय दद्यात्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देशकालौ० मम पत्न्याः पुत्रस्य चैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडाशान्तिशरीरोत्थार्ति-नाशमनः प्रसादायुरारोग्यादिसर्वसौख्यकामो अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय इदं पत्नीपुत्रस्वदेह-च्छायाविक्षिताज्यपूरितकांस्यपात्रं ससुवर्णं विष्णुदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे न ममेति । मन्त्रस्तु—या लक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वेषां समुपस्थितम् । तत्सर्वं नाशयाज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय । आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम् । आज्यं सुराणामाहारं आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः । दिव्यन्तरिक्षं भौमं वा यन्मे किल्विष मागतम् । तत्सर्वमाज्यसंस्पर्शात्प्रणाशमुपगच्छतु । तत उपविश्य यजमान एव **शिरो मे श्रीर्यश** इति यथालिङ्गं स्वाङ्गानि संस्पृशेत् । तद्यथा— शिरो मे श्रीरस्तु इति शिर आलभेत्, इति सर्वत्र ज्ञेयम् । यशो मे मुखमस्तु इति मुखम् । त्विषिर्मे केशाः सन्तु इति मस्तकस्थान् केशान् । त्विषिर्मे श्मश्रूणि सन्तु इति कूर्चमुखजरोमाणि । राजा मे प्राणा अमृतमस्तु इति नासिकायां प्रणान् । संम्राण्मे चक्षुरस्तु इति युगपच्चक्षुषि । विराट् मे श्रोत्रमस्तु इति श्रोत्रम् । मन्त्रावृत्त्या जिह्वा। मे भद्रमस्तु इति जिह्वाम् । वाङ्मे महोस्तु इति जिह्वामेव । मनो मे मन्युरस्तु इति हृदयम्। उदयकोपस्पर्शः। स्वराण्मे भामोस्तु इति भ्रुवोर्मध्यम् । मोदाः प्रमोदा मे अङ्गुल्यः सन्तु इति हस्ताङ्गुली पादाङ्गुलीश्च । मोदाः प्रमोदा मे अङ्गानि सन्तु इति सर्वाङ्गानि । मित्रं मे सहोस्तु इति स्वशरीरगतं वलम् । वाहू मे वलमिन्द्रियं स्तां इति वाहू । हस्तौ मे कर्म वीर्यं स्तां इति हस्तौ । आत्मा मे क्षत्रमस्तु इति हृदयम् । उदकोपस्पर्शनम् । उरो मे क्षत्रमस्तु इति हृदयमेव । पृष्ठं मे राष्ट्रमस्तु पृष्ठवंशम् । ॥५४॥
उदरं मे राष्ट्रमस्तु इति उदरम् । अंसौ मे राष्ट्रंस्तां इत्यंसौ । ग्रीवाश्च मे राष्ट्रं सन्तु इति ग्रीवाः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रोणी मे राष्ट्रं स्तां इति कटिद्वयम् । ऊरू मे राष्ट्रं स्तां इत्यूरू । अरत्नी मे राष्ट्रं स्तां इत्यरत्नी । जानुनी मे राष्ट्रं स्तां इति जानुनी । विशो मेऽङ्गानि सर्वत्र सन्तु इति सर्वाण्यङ्गानि । नाभिर्मे वित्तमस्तु इति नाभिम् । नाभिर्मे विज्ञानमस्तु इति नाभिम् । पायुर्मेऽपचितिरस्तु । इति पायुं (गुदम्) । भसन्मेऽपचितिरस्तु इतिपायुमेव । आनन्दनन्दा वाण्डौमे स्तां इत्यण्डौ । भगो मे यशोऽस्तु इति लिङ्गम् । सौभाग्यं मे यशोऽस्तु इति लिङ्गमेव । जङ्घाभ्यां धर्मोऽस्मि इति जङ्घे । पद्भ्यां धर्मोऽस्मि इति पादौ । विशिराजा प्रतिसर्वदेहम् । ॐ कारं सर्वत्र ज्ञेयम् । ततः आचार्यः स्थण्डिले पञ्चभूसंस्कारान्कृत्वा वरदनामानं अग्निं स्थापयित्वा ग्रहस्थापनादिकं च कृत्वा गृह्योक्तविधिना पायसचरुं कुर्यात् । तत्र विशेषः । सक्षीरप्रणीताप्रणयनम् । कार्ष्मर्यमयस्रुवस्यासादानम् । ततः कार्ष्मर्यमया एव स्रुच आसादनम् । प्रोक्षणकाले प्रोक्षणं च । उपादानक्रमेण स्रुवानन्तरं विनियोगक्रमे तण्डुलानन्तरं दानार्थमुपकल्पनीयानि । कृष्णा गौः । कृष्णाश्च तिलाः । कृष्णोऽनड्वान् । वासः सुवर्णश्चेति । चरुस्थाल्यां प्रणीतं दुग्धमासिञ्च्य प्रक्षालितान्तण्डुलान् चरुस्थाल्यां प्रक्षिप्य नैर्ऋतं पायसं श्रपयेत् । स्रुवस्य पुनः प्रतपनानन्तरं स्रुचं प्रतप्य संमृज्य निदध्यात् । अथ आघारावाज्यभागादिदक्षिणादानान्ते विशेषः । आघारावाज्यभागौ हुत्वा । यजमानोऽग्नेर्दक्षिणत उपविश्योद्दिश्य द्रव्यत्यागं कुर्यात् । ततः ग्रहादिभ्यः समिदाज्यादिद्रव्यैर्यथासंख्यं हुत्वा पायसादिहोमं कुर्यात् । **असुन्वन्तममित्यृ** चास्थालीपाकं स्रुवेण चतस्र आहुतीर्जुहुयात् । **असुन्वतन्म० तुभ्यमस्तु स्वाहा** । चतसृष्वप्याहुतीषु अयमेव मन्त्रः । मन्त्रान्तरस्यानभिधानात् । ततः पञ्चदशभिश्चतुर्गृही-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तेन स्रुचा पञ्चदशाज्याहुतीर्जुहुयात् । वक्ष्यमाणमन्त्रैः प्रतिमन्त्रम् । तद्यथा—कृणुष्वपाजः प्र० पिष्टैःस्वा-
हेत्यनेन मन्त्रेण पञ्चाहुतीर्जुहुयात् । मानस्तो के तन० हवामहे स्वाहा । इत्यनेन द्वेआहुतोर्जु-
होति । या ते रुद्रशिवातनू० कशीही स्वाहेत्यनेन मन्त्रेण षट् । आचार्ययजमानयोरुदकोप-
स्पर्शः। अग्निरक्षाᳬसि सेधति शुक्रः शोचिरमर्त्यः । शुचिः पावक ईड्यः स्वाहा । अने-
नैकाम् । त्वन्नः सोमविश्वतोरक्षाराजन्नघायतोवरिष्येत्वावतः सखा स्वाहा । अनेना-
प्येकामाहुतिंजुहुयात् । निर्ऋतये स्वाहेति नाममन्त्रेणाष्टोतरशताहुतीश्चतुर्गृहीताज्येनैव हुत्वा । ततो
नक्षत्रदेवताभ्यश्च नाममन्त्रैः प्रत्येकमष्टाविंशतिरष्टौ वा स्रुवेणाज्याहुतीर्हुत्वा आवाहितदेवतानां अग्नेश्च
यजमान उत्तरपूजां कृत्वा स्थालीपाकात्स्विष्टकृद्धोमं विधाय भूरादिप्राजापत्यान्तांन्नवाहुतीर्जुहुयात् ।
ततो दिक्पालपुरःसरं बलिदानं च कुर्यात् । ततः पूर्णाहुत्यनन्तरं संस्रवप्राशनादिकर्मसमाप्तिः ।
ततः आचार्यायोपकल्पितकृष्णां गां कृष्णांश्च तिलान् सप्तधान्यसंयुक्तं हेममयमूलं दत्त्वा कृष्णमन-
ड्वाहं ब्रह्मणे दद्यात् । तत्र प्रयोगः । एतन्मूलविधानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं इमां कृष्णां गां
कृष्णागोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं वा कृष्णांश्च तिलान् सप्तधान्यसंयुक्तं इदं हेममयमूलं आचार्याय
तुभ्यमहं संप्रददे, इति दत्त्वा । आचार्यस्तु—ॐ द्यौस्त्वा ददा० इति प्रतिगृह्णीयात् ।
एवं ब्रह्मणे । इमं कृष्णमनड्वाहं इदं कृष्णमनुडुहनिष्क्रयभूतं द्रव्यं वा ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे,
इति दत्त्वा तथैव नक्षत्रसूचकेभ्यो वासो दत्त्वा । सदस्यादितत्रागतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सुवर्णं दद्यात् ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अत्र मुख्यदानासम्भवे तन्मूल्यं दद्यात् । तदभावे यथाशक्ति द्रव्यं दद्यात् । दानान्ते पञ्चामृतप्लुतानि शतमूलानि पञ्चधा विभज्याचार्यो जुहुयात् । तत्र मन्त्राः—मूलाय स्वाहा १ । महामूलाय स्वाहा २ । मूलदेवाय स्वाहा ३ । मूलकर्मणे स्वाहा ४ । सर्वमूलाय स्वाहा ५ । ॐ कारवर्जिता आदाविदं शब्दयुक्ता न ममेत्यन्तो यथामन्त्र एव त्यागः । ततः कृशरान्नपायसेन शतं १०० वा ५० वा १० ब्राह्मणदशकं चावश्यं भोजयित्वा शान्तिपाठं कारयेत् । ततो यजमानः आसंधाद्युपस्करमाचार्याय दत्त्वा यस्य मृत्येति कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुहृद्युक्तो भुञ्जीत । इति मूलविधानम् । अथ सार्पदैवते गण्डजाते एष एव विधिरित्युक्त्वा आश्लेषागण्डान्तयोः प्रसवेऽपि इदमेवानुष्ठेयं माध्यन्दिनैः तत्र प्रयोगवरणाभिषेकादौ मूलपदस्थाने तत्तत्पदमूहनीयम् । नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति पायसहोमः । इति श्रीमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथकृतेलघुर्दपणे मूलविधानम् ॥

अथ वैधृतिव्यतीपातसङ्क्रान्तिप्रयोगः । कर्ता गोमुखप्रसवं उक्तविधिना कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य अस्य शिशोः [अस्याः बालिकायाः] वैधृतिव्यतीपातसङ्क्रान्तिजननसूचितसकलारिष्टनिरसनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वैधृतिव्यतीपातसङ्क्रान्तिजननशान्तिं करिष्ये । एवं व्यतीपातसंक्रमणयोः । व्यतीपातसंक्रमणयोर्जननशान्तिमेकतन्त्रेणाहं करिष्ये, इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादिवरणानि कुर्यात् । अथाचार्यः सर्षपान्विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य । स्थण्डिलस्य पूर्वस्यां पीठोपरि श्वेतवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि व्रीहिराशिं [८० सेर] कृत्वा तदुपरि तण्डुलराशिं [४० सेर] कृत्वा तदुपरि तिलराशिं [२० सेर] कृत्वा राशिमस्तकं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समं कृत्वा तत्राष्टदलं विरच्य तत्कर्णिकायां कलशं संस्थाप्य तत्र पञ्चगव्याष्टगन्धपञ्चरत्नानि क्रमेण निक्षिप्य पूर्णपात्रं निधाय । तदुपरि सूक्ष्मवस्त्रे देवताः स्थापयेत् । तत्र वैधृतिशान्तौ मध्ये त्र्यम्बकं यजा० । रुद्राय० रुद्रं० ॥ १ ॥ तद्दक्षिणतः तिलद्रव्येणाष्टाविंशतिसंख्यया जुहुयात् । स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा । कलशोदकैः देवस्य त्वा० तत्सूर्यस्य० । सूर्याय० सूर्यं० ॥२॥ उत्तरतश्च--आप्यायस्व० । सोमाय० सोमम् ॥ ३ ॥ इत्यावाह्य । मनोजूति० । रुद्राद्यावाहितदेवताः सुप्र० । इति प्रतिष्ठाप्य रुद्राद्यावाहितदेवेभ्यो नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य । व्यतीपातसंक्रमणशान्तौ तु मध्ये—तत्सूर्यस्य० । सूर्याय० सूर्यं० ॥१॥ तद्दक्षिणतः— अग्निं दूत० । अग्नये० अग्निं० ॥ २ ॥ उत्तरतश्च—त्र्यम्बकं यजा० । रुद्राय० रुद्रं० ॥ ३ ॥ तत्तत्प्रतिमास्वावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य । ततः शतं मृत्युञ्जयमन्त्रं अष्टाविंशतिसंख्यया यथाशक्ति वा जपेत् । ततः एक ऋत्विक् सूर्यप्रतिमां एक ऋत्विक्रुद्रप्रतिमां स्पृशन् विभ्राट्०इत्यध्यायं जपेत् । ततः सोमप्रतिमां स्पृशन् आप्यायस्व० इति जपेत् । व्यतीपातसङ्क्रान्ति शान्त्योस्तुपूर्वं सूर्यजपस्ततो मृत्युञ्जयजपः । अग्निजपो नास्ति । ततश्चतुर्दिक्षु चत्वार ऋत्विजः कुम्भं स्पृष्ट्वा । आनोभद्रा, पुरुषसूक्तं, त्र्यम्बकमन्त्रं च जपेयुः । ततः आचार्योऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान्संपूज्य । ब्रह्मोपवेशनादिग्रहहोमान्तं पूर्वं कृत्वा । ततः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रधानहोमः। अत्र प्रधानं रुद्रं समिदाज्यचरुद्रव्याणि त्र्यम्बकमन्त्रेण अष्टोतरशतसंख्यया जुहुयात्। सूर्यं सोमं च अष्टाविंशतिसंख्यया समिदाज्यचरुद्रव्येण जुहुयात्। व्यतीपातसङ्क्रमणयोस्तु सूर्यं रुद्रसंख्यया अग्निरुद्रौ चाष्टाविंशतिसंख्यया मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकमन्त्रेण तिलद्रव्येणाष्टाविंशतिसंख्यया जुहुयात्। स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा कलशोदकैः देवस्यत्वा इत्यादि मन्त्रेण आपोहिष्ठेति तृचेन शिरोमे श्री० इत्यादि मन्त्रेण पावमानीभिः प्रधानदेवतामन्त्रैः सुरास्त्वेत्यादि पौराणैश्चाभिषिञ्चेयुः। ततो यजमानो स्त्री बालयुक्तो रूपेण वो० इत्याज्यमवेक्ष्य तत्पात्रं सदक्षिणं ब्राह्मणाय दत्त्वा आचार्याय वस्त्रद्वयं गां हेमाङ्गुलीयकं यथाशक्तिसुवर्णं प्रच्छादनवस्त्रं दद्यात्। व्यतीपातजननदोषशान्त्यर्थं गोवस्त्रस्वर्णानि तुभ्यमहं सम्प्रददे। आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा अन्येभ्यश्च भूरिदक्षिणां दत्त्वा उत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्यहस्ते प्रतिपाद्याग्निं विसृज्य शतं शक्त्या वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा बन्धुभिः सह भुञ्जीत। इति लघुदर्पणे वैधृतिव्यतीपातसंक्रान्तिशान्तिप्रयोगः समाप्तः॥

अथ भद्राशान्तिप्रयोगः—शुभदिने कृतनित्यक्रियो यजमानः स्वासने उपविश्य गोमुखप्रसवमुक्तविधिना कृत्वा आचम्य प्राणानायम्य च देशकालौ स्मृत्वा अस्य शिशोः (अस्या बालिकाया वा) भद्राजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सनवग्रहमखां भद्राजननशान्तिं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। गणपति पूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वाऽऽचार्यादिऋत्विग्वरणं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुर्यात् । ततः आचार्य्यो यदत्रेति दिग्भागे सर्षपान् विकीर्य । आपोहिष्ठेति तृचेन पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य स्थण्डिलात्पूर्वदिग्भागे रङ्गवल्याद्यष्टदलं कृत्वा तत्र कलशस्थापनविधिना कलशत्रयं संस्थाप्य प्रतिमाग्न्युत्तारणं कृत्वा मध्यकलशे—भद्रोनो अग्निराहुती भद्रारातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः। भद्रायै० भद्रां० ॥ १ ॥ तद्दक्षिणकलशे-आकृष्णेन० ३ सूर्याय० सूर्यं० ॥ २ ॥ उत्तरकलशे-आप्यायस्व० । सोमाय० सोमं० ॥ ३ ॥ इत्यावाह्य । भद्राद्यावाहितदेवताभ्यो नम इति षोडशोपचारैः पूजयेत् । मध्यकलशे-भद्रो[1] नो अग्नि० इति जपेत् । दक्षिणकलशे [2]विभ्राड्० इति मन्त्रान् जपेत् । उत्तरकलशे-[3]आप्यायस्व० इति जपेत् । त्र्यम्बकं यजा० १०८ जपः कार्यः । अथ प्रार्थना । भद्रे भद्रपदे नित्यं कृपया पाहि मे शिशुम् । तवा-र्चनेन बालस्य जन्मदोषं व्यपोहतु ॥ १ ॥ रविकन्ये नमस्तुभ्यं नमस्ते योगयोगिनि । शिशुजन्मो-द्भवं दोषं शमयाशु जगन्मये ॥ २ ॥ अज्ञानादथवा ज्ञानाद्यत्कृतं पूजनं तव । तेन पुण्यप्रभावेण

१ य० सं० अ० १५ मं ३८

२ विभ्राड्बृहत् पिबतु सोम्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् । व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मना प्रजाःपुपोष पुरुधाव्विराजति । य० सं० अ० ३३मं०३० ।

३ आप्यायस्व मदन्तिमसोमव्विश्श्वेभिरशुभिः । भवानँ सप्रथमेस्तम सखा वृधे । य० अ० १२ मं० ११४ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जन्मदोषं व्यपोहतु ॥ ३ ॥ ततः स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् संस्थाप्य च सम्पूजयेत् । ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा आदित्यादिग्रहाणां समित्तिलाज्यद्रव्यैरष्टाविंशतिरष्टौ वा होमः । भद्रादिदेवतानां प्रतिद्रव्यं समिच्चरुतिलाज्यद्रव्यरष्टोत्तरशतसंख्यया पूर्वोक्त पूजामन्त्रैर्हुत्वा स्विष्टकृदादि प्रणीताविमोकान्तं कृत्वा ततः स्थापितकलशोदकेन यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य बालकस्य च अभिषेकं कुर्यात् । अभिसेकमन्त्राः । **आपोहिष्ठा० ३, [4]त्र्यम्बकं०, देवस्य त्वा० ३,** सुरास्त्वां इत्यादिमन्त्रै रभिषेकं कुर्यात् । ततः आज्यावलोकनम् । आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम् । ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्याचार्याय पीठं दत्त्वाऽग्निं विसृज्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । ब्राह्मणाः आशीर्वादं कुर्युः । इति श्रीमालवीयोपनामककालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे भद्राशान्तिविधिः समाप्तः ॥

अथ वर्द्धापनविधिः-आचम्य प्राणानायम्य **स्वस्तिन इन्द्र** इत्यादि पठित्वा देशकालौ० अस्य कुमारस्य आयुरभिवृद्धिद्वारा मार्कण्डेयादिप्रीत्यर्थं वर्द्धापनं करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं (मातृकापूजनमादित्यादिनवग्रहस्थापनं पूजनं) च करिष्ये । इति सङ्कल्प्य तत्रादौ० । गणेशाम्बिके पूजयेत् । तदनन्तरं कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं कुर्यात् । ततोऽभिषेकः [ततो गौर्यादिषोडशमातृरावाह्य सम्पूज्याऽऽदित्यादिग्रहाणां पूजनम्] । तदनन्तरं मार्कण्डेयादि-

४ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् य० अ० ३० मं० ६० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजनम् । मार्कण्डेयाय० मार्कण्डेयं० १, अश्वत्थाम्ने० अश्वत्थामानम् २, बलये० बलिं० ३, व्यासाय० व्यासं०४, हनुमते० हनुमन्तं ५, विभीषणाय० विभीषणं० ६, कृपाया० कृपं० ७, परशुरामाय० परशुरामं० ८, स्वनक्षत्राय० स्वनक्षत्रं० ९, जन्मतिथये० जन्मतिथिं० १०, षष्ठीदेव्यै० षष्ठीदेवीं० ११ महामृत्युञ्जयाय० महामृत्युञ्जयं ॥ १२ ॥ इत्यावाह्य । मार्कण्डेयादयः सुप्र० । इति प्रतिष्ठाप्य मार्कण्डेयादिभ्यो नमः इति आसनाद्युपचारैः पूजयेत् । प्रार्थनामन्त्रस्तु–आयुष्प्रद महाभाग सोमवंशसमुद्भव । महातपो मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेय नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे । चिरञ्जीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने ॥ २ ॥ चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवर द्विज । कुरुष्व मुनिशार्दूल चिरञ्जीवतु बालकः [तथा मां चिरञ्जीविनम्] ॥ ३ ॥ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवने । आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं बालाय वरदो भव [मस्माकं वरदो भव] ॥ ४ ॥ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ ५ ॥ भो जन्मप्रद नक्षत्र अस्मिन् जन्मदिने मया । भक्त्या सम्पूजितोऽस्मि दीर्घमायुः प्रयच्छ मे ॥ ६ ॥ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणि । प्रसीद मम कल्याणि षष्ठि देवि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति सम्प्राथ्य ब्राह्मणाय घृतदानम्–घृताय नमः इति घृतं सम्पूज्य जलेन सिक्त्वा । अद्य मदीयजन्मदिने दीर्घायुष्कामः श्रीप्रीप्त्यर्थं इदं घृतं साज्यपात्रं प्रजापतिदैवतं सदक्षिणाकं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ आज्यं तैजसमुद्दिष्टं आज्यं यज्ञैः प्रतिष्ठितम् ॥ आज्यपात्रप्रदानेन दीर्घायुष्यं कुरुष्व मे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सतिलगुडमिश्रमञ्जल्यर्द्धं पयः पिबेत् । तत्र मन्त्रः–सतिलं गुडसम्मिश्रमञ्जल्यर्द्धमितं पयः । मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये । अथ दक्षिणहस्ते पोटलिकाबन्धनम्–गुग्गुलनिम्बसिद्धार्थ दार्वागोरोचनादिकम् । तन्मन्त्रः—यदाबध्नं० इति बध्नीते । ततो वर्षग्रन्थिपूजनम् । ततो ब्राह्मणभोजनम् । कृतस्य वर्द्धापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । भूयसीसङ्कल्पः । विसर्जनं, विष्णवे० ३ । इति श्रीमालवीयोपनामककालीचरणसूरिसूनुजगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे वर्द्धापनविधिः समाप्तः ॥

अथ दत्तकपुत्रप्रतिग्रहविधिः—कृतोपवासः पुण्येऽहनि सपत्नीको यजमानः शुभासने उपविश्याचम्य प्राणानायम्य । देशकालौ० मम अप्रजत्वप्रयुक्तपितृकऋणापाकरणपुन्नामनरकत्राणद्वारा वंशाभिवृद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुत्रप्रतिग्रहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं आचार्यादिवरणं विष्णुपूजनं बन्धुवर्गब्राह्मणेभ्योऽन्नदानञ्च करिष्ये । तत्र निर्विघ्नार्थं गणपतिपूजनं करिष्ये । इति सङ्कल्पपूर्वकं गणपतिं पूजयित्वा पुण्याहं वाचयेत् । भो ब्रा० अद्य करि० पुत्रप्रतिग्रहाख्यस्य कर्मणः पुण्या० । ॐ पुण्याहम् । एवं स्वस्त्यस्त्विवति वाचयित्वा [मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धानि कृत्वा] आचार्यादिवरणं सर्षपविकरणं पञ्चगव्यप्रोक्षणम् । सर्वतोभद्रस्थकलशे लक्ष्मीशं सम्पूज्य ततः देशकालौ संकीर्तनान्ते पुत्रप्रतिग्रहपूर्वाङ्गतया विहितं ब्राह्मणभोजनं करिष्ये । ब्राह्मणान् भोजयित्वा तदन्ते वृताचार्यो देशकालौ० यजमानानुज्ञया पुत्रप्रतिग्रहाङ्गत्वेन विहितं होमं करिष्ये । तदङ्गत्वेनाङ्गभूतं पञ्चभूसंस्कारं पूर्वकं अग्नि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थापनं करिष्ये । ततो ब्राह्मणं वृत्वा सम्पूज्य । ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनादि प्रोक्षण्याः प्रत्युत्पवनान्तं कृत्वा । तत अग्नेः पश्चिमतः शुभासने उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं पत्न्युत्सङ्गे बालं चोपवेश्य ब्राह्मणैः सह दातुः समक्षं गत्वा । पुत्रं मे देहीति स्वयमेव भिक्षेत् । दाता ददामि इति वदेत् । ततो दाता देशकालौ० तव वंशाभिवृद्धये मम च पुत्रकफलप्राप्तिकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुत्रदानमहं करिष्ये । तदङ्गविहितं गणपतिपूजनं करिष्ये । इति कृत्वा । प्रतिगृहीतारं यथाशक्ति चन्दनादिना सम्पूज्य । इमं पुत्रं तव पैतृकऋणापकारणपुन्नामनरकोत्तारणार्थं वंशभिवृद्धचर्थं आत्मनश्च मुक्तये श्रीपरमेश्वरप्रीतये तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम इति प्रतिगृहीतृहस्ते साक्षतं जलं क्षिपेत् । प्रतिगृह्णातु पुत्रं भवान् प्रतिगृहीता धर्माय त्वां परिगृह्णामि । सन्तत्यै त्वां परिगृह्णामि ततो देवस्यत्वेति मन्त्रेण हस्तद्वयेन प्रतिगृह्णामीति प्रतिगृह्य स्वाङ्के उपवेशयेत् । तत अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे । आत्मा वै पुत्रनामासि सञ्जीव शरदः शतम् ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण शिशुमूर्ध्नि समाघ्राय गीतवाद्ययुक्तस्वस्तिमन्त्रैः स्वगृहमानीय पादप्रक्षालनाचमने कृत्वा आचार्यदक्षिणतः स्वयं स्वदक्षिणतो भार्योत्सङ्गे पुत्रमुपवेशयेत् । गृहीता पौराणमन्त्रं पठेत्—कुलस्योद्धरणार्थाय देवाग्निद्विजसन्निधौ । वंशविस्तरणार्थाय प्रतिगृह्णामीमं सुतम् ।

ततश्चरुमभिघार्य होमः । उपयमनकुशानादायेत्यादि आज्यभागान्तं कृत्वा (ग्रहहोमानन्तरं)

यस्त्वा हृदाकीरिणामन्यमानोमर्त्यं मर्त्यो यो हवीमि । जातवेदोयशोऽस्मा-

दानसाङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति हिरण्यं दद्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुधेहिप्रजाभिरग्नेऽअमृतत्वमस्यां स्वाहा ॥ १ ॥ यस्मैत्वं सुकृतेजातवेदऽउलो-कमग्नेकृणवः स्योनम् । अश्विनं सपुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिन्नशतेस्वस्ति स्वाहा ॥ २ ॥ इति मन्त्राभ्यामेकामाहुतिं चरुणा हुत्वा । इदमग्नये न ममेति त्यागं कृत्वा । आज्येन व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिराहुतीर्हुत्वा शेषचरुणा स्विष्टकृतं कृत्वा नवाहुतीर्हुत्वा (बालेदानं पूर्णाहुतिं च हुत्वा) संस्रवप्राशनादि प्रणीताविमोकान्तं समाप्य । आचार्याय गां दत्त्वा दशत्रीन्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । देवताग्नी विसृज्य कर्मणः सम्पूर्णतां वाचयित्वा ईश्वरार्पणं कुर्यात् । बन्धुसुहृद्भिः सह भुञ्जीत । ततः प्रागसंस्कृतस्य मातृपूजाचौलोपनयादीन्संस्कारान्कुर्यात् । इति यजुर्वेदिकर्तृकबौधायनोक्तरीत्या दत्तपुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ चूडाकरणप्रयोगः

--सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत् । पञ्चमाब्दात्प्रागूर्ध्वं तु गर्भिण्यामपि कारयेत् । ज्वरस्योत्पादनं यस्य लग्नं तस्य न कारयेत् । दोषनिर्गमनात्पश्चात् स्वस्थो धर्मं समाचरेत् । प्रेतकर्मण्यनिर्वर्त्य चरेन्नाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थं ततः पुंसि पञ्चमे शुभदं भवेत् । माता कुमारमादाय स्नापयित्वाऽहते वाससी परिधाय पत्युर्दक्षिणत उपविशति । कर्ता आचम्य प्राणानायम्य स्वस्तिन० जनार्दनाः । देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा अस्य कुमारस्य श्वः अद्य वा करिष्यमाणचूड़ाकरणाङ्गभूतं स्वस्तिपुण्याहवाचनपूर्वकमविघ्न-पूजनं मण्डपदेवतापूजनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारपूजनम् आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्यादिवरणानि ग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं ग्रहशान्तिं चाहं करिष्ये । तत्रादौ० गणेशाम्बिक० ष्ये । इति संकल्प्य । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कुर्यात् । ततः अस्य कुमारस्य चूडाकरणपूर्वाङ्गतया विहितान् त्रीन्सख्याकान्ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । ततोऽस्मिन् चूड़ाकरणकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये । ततः देशकालौ० अस्य कुमारस्य बीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणेन बलायुर्वर्चोऽभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चौलाख्यं कर्म करिष्ये । माता कुमारमादाय पश्चादग्नेः पत्युत्तरत उपविशति । ब्रह्मवरणम् । अस्मिन् चूड़ाकरणकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । ततो ब्रह्मोपवेशनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा स्रुवेणाज्यहोमः । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्र० ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्रा० ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा । इदम० ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमा० ॥ ४ ॥ ॐ भूः स्वाहा । इदम० ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वाय० ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा । इदमग्नी० ॥ ४ ॥ ॐ स त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा । इदमग्नी० ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा । इदमग्नये० ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शतं० स्वाहा । इदं वरुणाय स० ॥ ७ ॥ ॐ तदुत्तमं० स्वाहा । इदं वरुणाया० ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजा० ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्न० ॥ १० ॥ संस्रव० । आच० । पवित्राभ्यां० । पवित्रप्र० पूर्णपात्र० । कृतस्य चूडाकरणहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । द्यौस्त्वा० । प्रणीतावि० । आपः शिवा० । एकस्मिन्

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पात्रे शीतास्वप्स्तूष्णा अप आसिञ्चति । उष्णेन त्वाय उदकेनेह्यदिते केशान्वप । इति मन्त्रेण । शीतोदके उष्णोदकासेकः । अथात्र नवनीतपिण्डं घृतपिण्डं दध्नो वा प्राश्यति तूष्णीम् । तत उदकमादाय दक्षिणां गोदानमुन्दति—सवित्रा प्रसूता दैव्याऽआपऽउन्दन्तु । ते नूनं दीर्घा-युत्वायवर्चसे इति मन्त्रेण क्लेदनम् । तुष्णीम् । त्रेण्या शलल्या केशान् विनीय । त्रीणि कुशतरुणान्य-न्तर्दधाति । [1] ओषधे त्रायस्व इति मन्त्रेण । शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मामा हिंसीः । इति मन्त्रेण । ताम्रपरिष्कृतलोहक्षुरमादाय—निवर्तयाम्या युषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषायसुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय । इति [2] संलग्नीकरणम् । येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् । तेन ब्राह्मणो वपतेद-मस्यायुष्यञ्जरदष्टिर्यथाऽसत । इति मन्त्रेण छेदनम् । सकेशानि कुशतरुणानि प्रच्छिद्यानडुहे गोमयपिण्डे उत्तरतो घ्रियमाणे प्रक्षिपति एवं । द्विरपरं तूष्णीमुन्दनं त्रेण्या शलल्या केशविनयनम् । त्रीणि कुशतरुणान्तर्धानम् । क्षुरादानम् । [3] सलग्नीकरणम् । छेदनम् । सकेशस्य गोमयपिण्डे

---

१ ओं ओषधे त्रायस्व (स्वधितेमैन ँ हिं ँ सीः । इति मन्त्रेण सकुशतरुणान् केशान् वामकरे गृहीत्वा वक्ष्यमाण-शिवेति मन्त्रेण दक्षिणकरे क्षुरं गृह्णीयात् । २ केशेषु संयोजनमित्यर्थः ।

२ जुटिकायामिति शेषः ।

३ छिन्नकेशस्पर्शनिमित्तो जलस्पर्शः सर्वत्र बोद्धयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निधानम् । अथ पश्चाद्गोदानम् । 'सवित्राप्रसूत' इति क्लेदनम् । त्रेण्या शलभ्या विनीय । त्रीणि कुशतरुणान्यन्तर्दधाति । ओषधे त्रयास्व । इति मन्त्रेण । शिवोनामेति लोहक्षुरमादाय । निवर्तयामीति प्रवपति । त्र्यायुषमिति मन्त्रेण छेदनम् । सकेशानि प्रच्छिद्यानडुहे गोमयपिण्डे प्रास्यति । एवं द्विरपरं तूष्णीम् । अथोत्तरतः-सवित्राप्रसूतेति क्लेदनम् । त्रेण्या शलल्या विनीय । कुशतरुणान्यन्तर्दधाति—ओषधे त्रायस्व । शिवोनामेति क्षुरादाय । निवर्तयामीति प्रवपति । येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धिसूर्यम् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये इति छेदनम् । सकेशानि प्रच्छिद्यानडुहगोमयपिण्डे प्रासनम् । अत्रापि द्विरपरं तूष्णीम् । ततस्त्रिः क्षुरेण शिरः प्रदक्षिणं परिहरति यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसावप्त्रावावपतिकेशाञ्छिन्धिशिरोमास्यायुःप्रमोषीः । सकृन्मन्त्रेण द्विस्तूष्णीम् । ततस्ताभिरद्भिः शिरः संमुद्य नापिताय क्षुरं प्रयच्छति । अक्षण्वं परिवप । प्राङ्मुखो वा बटुमुपवेश्य । नापितः क्षौरं विधाय । ततः सकश गोमयपिण्डमुदकान्ते निधाय गोष्ठे पल्वले वा । ततः तैलोद्वर्तनेन स्नापयित्वा वस्त्रपरिधानादिकं कृत्वा गणपतिं पूजयेत् । तत आचार्याय गां दद्यात् । कृतस्य चूड़ाकरणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यमाचार्य तुभ्यमहं संप्रददे । स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्राह्मणभोजनसंकल्पः । कृतस्य चूड़ाकरणकर्मणोऽङ्गतया विहितान् दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । भूयसीसङ्कल्पः कृतस्य चूडाकरणकर्मणः साद्गुण्यार्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथानामगोत्रेभ्यो यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां संप्रदास्ये । प्रमादा० विष्णवे ३ । मातृकानां मण्डपदेवतानाञ्च द्वितीये चतुर्थे वा विसर्जनम् । इति श्रीमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसं-गृहीते लघुदर्पणे चूडाकरणप्रयोगः समाप्तः ।

अथ कर्णवेधः—१ वर्षे तृतीये पञ्चमे वा पुष्येन्दुचित्राहरिरेवतीषु पूर्वाह्णे कर्ता आचम्य सुमुख०। देशकालौ० गोत्रः शर्मा अस्यामुकनाम्नः कुमारस्याभरणधारणसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कर्णवेधमहं करिष्ये तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं विष्णुशिवब्रह्मचन्द्रसूर्यदिगीशनासत्यसरस्वती-कुलदेवतागोब्राह्मणपूजनं चाहं करिष्ये । तत्रादौ गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं च कृत्वा अक्षत-पुञ्जेषु विष्ण्वाद्यावाहितदेवेभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥

आवाहनप्रकारः—विष्णवे० विष्णुं० ॥ १ ॥ शिवाय० शिवं० ॥२॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥ ३ ॥ चन्द्राय० चन्द्रं० ॥ ४ ॥ सूर्याय० सूर्यं० ॥ ५ ॥ दिगीशाय० दिगीशं० ॥ ६ ॥ नासत्याय० नासत्यं० ॥ ७ ॥ सरस्वत्यै० सरस्वतीं० ॥ ८ ॥ कुलदेवतायै० कुलदेवतां० ॥ ९ ॥ इत्यावाह्य । **मनोजूति०** विष्ण्वादिदेवताः सुप्रति० । इति प्रतिष्ठाप्य । कुमारस्य

---

१ यद्यपि कर्णवेधः तृतीये पञ्चमान्यतरवर्षे एव प्राप्नोति तथापि "अयुक्संवत्सरे प्राहुः कर्णवेधविधिं बुधाः" इति सं. प्र. राजमार्तण्डवचनात् "अयुग्मवर्षे कार्य्यः । तथापि व्रतबन्धात्पूर्वमेव कार्यः । कृते चूडेऽव्रते बाले कर्णवेधो विधीयते" इति व्यासवचनात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मधुरं दत्त्वा प्राङ्मुखायोपविष्टाय दक्षिणकर्णमभिमन्त्रयते । भद्रं कर्णेभिरिति मन्त्रेण । ततो वामं—ववक्ष्यन्ती वेदागनीगन्ती कर्णम्प्रियर्ठ सखायम्परिषस्वजाना । योषेव शिङ्क्ते व्वितताऽधिधन्वञ्ज्याऽइयर्ठ० समने पारयन्ति । इति मन्त्रेण[1]। कुमारस्य मधुरं दत्त्वा भिन्द्यात् । कुमार्या वाममादौ । ब्राह्मणभोजनम् । अस्य कुमारस्य कर्णवेधाङ्गतयैकं ब्राह्मणं भोजयिष्ये । भूयसीसङ्कल्पः । प्रमादा० इति । कर्णवेधः ॥

अथातिक्रान्तसंस्कारः

—आचम्य । प्राणा० देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम अस्य कुमारस्य [2]गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनचौलकर्मान्तानां संस्काराणां कालातिपत्तिदोषपरिहारेणाधिकारसिद्धिद्वारा श्री परमेश्वरप्रीतये प्रायश्चित्तं बुद्धिपूर्वका, करणे सर्वत्र पूर्णकृच्छ्रं चौले अर्द्धकृच्छ्रं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो

---

१ कर्णावलक्तकरसेनाङ्कयित्वा विन्ध्येत् ।

२ कन्याया घ्राणवेधः स्यात् सद्वारे विषमेऽब्दके । आद्ययामे सिते पक्षे मैत्रक्षिप्रोत्तरा चरे । इति संस्कारगणपतौ ।

१ षोडशसंस्कारेषु—कर्णवेधान्तनवसंस्काराः स्त्रीणाममन्त्रकाः । तदुक्तम्—गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्वो जातकर्म च । नाभक्रियानिष्क्रमोऽन्नप्राशनं वपनक्रिया ॥ १ ॥ कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः । केशान्तस्नानमुद्वाहो विवाहाग्नि परिग्रहः ॥ २ ॥ त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोड़शस्मृताः । नवैताः कर्णवेधान्ता मन्त्रवर्जं क्रियाः स्त्रियाः ॥ ३ ॥ विवाहो मन्त्रतस्तस्याः शूद्रस्यामन्त्रतो दश ॥ एतेन षोडशसंस्कारेष्वेते नव न परिगणिता इति ये केचिदाहुस्ते परास्ताः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दातुमर्हमुत्सृजे । [1]अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेद् गर्भाष्टमेवैकादशवर्षं राजन्यं द्वादशवर्षं वैश्यं यथामङ्गलं वा सर्वेषाम् । इति सूत्रम् ।

अथ उपनयनकालातिपातप्रायश्चित्तम्—[2]नवमे दशमेऽब्दे च व्रतबन्धोऽस्तु मध्यमः । एकादशे द्वादशे च कनीयान् परिकीर्तितः । अष्टमाब्दं लङ्घयित्वा द्वादशाहं चरेद्व्रतम् । प्राजापत्यमित्यर्थः । नवमे तप्तकृच्छ्रं स्याद्दशमे चोभयं स्मृतम् । एकादशद्वादशयोरतिक्रम्यैन्दवं [चान्द्रायणं] चरेत् । त्रयोदशाब्दादरभ्य षोडशाब्दव्यतिक्रमे । न सम्भाष्यो न पाङ्क्तेयः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ ततः परं यदीच्छेत द्विजन्मत्वं पितात्मजे । कृत्वा स्वयं पुनः कर्म्म चरेच्चान्द्रायणत्रयम् । प्राजापत्यत्रयं कृत्वा मौञ्जीबन्धं समाचरेत् । अन्यथा [3]पतितं विद्यान्न कर्म्मार्हो भवेदिह । क्षत्रियवैश्ययोरेवम् । तत्र ब्राह्मणस्य षोडशवर्षातिक्रमे क्षत्रियस्य द्वाविंशतिवत्सरातिक्रमे वैश्यस्य चतुर्विंशतिवत्सरातिक्रमे च एवं प्रायश्चित्तं द्विगुणं कृत्वा उपनयनं चरेत् । अन्यथा त्रयो वर्णा दोषभाप्नुयुः ॥ इति लघुदर्पणे उपनयनकालातिक्रमप्रायश्चित्तम् ॥

---

१ बुद्धिपूर्वकाकरणे सर्वत्र पूर्णकृच्छ्रमेवाचरेत् ।

२ आषोडशाद्वर्षाद्ब्राह्मणस्यानतीतकालो भवत्याद्वाविंशाद्राजन्यस्याचतुर्विंशाद्वैश्यस्यअतऊर्द्ध्वं पतितसावित्रीका भवन्ति न नानुपनयेयुर्नाध्यापयेयुर्नचैभिर्व्यवहरेयुः कालातिक्रमे नियतवत्त्रिपुरुषं पतितसावित्रीकाणामपत्ये संस्कारो नाध्यापनं च तेषां संस्कारेप्सुर्व्रात्यस्तोमेनेष्ट्वा काममधियीरन्व्यवहार्या भवन्तीति वचनात् ।

३ तथा च याज्ञवल्क्यः—आषोडशाद्द्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्च वत्सरात् । अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथोपनयनप्रयोगः—पितैवोपनयेत्पुत्रं तदभावे पितुः पिता । तदभावे पितुर्भ्राता तदभावे सहोदरः ॥ इदं विप्रपरं न क्षत्रियादेः तयोस्तु पुरोहितः एव प्राजापत्ये तु गामेकं चान्द्रायणे तप्तातिकृच्छ्रे तिस्रस्तिस्रस्तु गास्तथा । तत्रोपनयनपूर्वदिने कर्ता पिता शुभासनेप्राङ्मुख उपविश्य प्राणानायम्य स्वदक्षिणतः पत्नीं तद्दक्षिणतः संस्कार्यश्चोपवेश्य आचम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य मम अस्य अमुकनाम्नः कुमारस्य [अनयोः कुमारयोः एषां कुमाराणां] श्वः अद्य वा करिष्यमाणोपनयनवेदारम्भसमावर्तनपूर्वाङ्गतया विहितं स्वस्तिपुण्याहवाचनपूर्वकम् अविघ्नपूजनं मण्डपदेवतापूजनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि आदित्यादिनवग्रहानुकूलतासिद्ध्यर्थं ग्रहशान्तिं चाहं करिष्ये । तत्रादौ गणेशाम्बिकयोः पू० । भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे अस्य कुमारस्य श्वः करिष्यमाणोपनयनवेदारम्भसमावर्तनाख्यानां कर्मणां पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । एषां कर्मणां पुण्याहं० । भो ब्राह्मणाः ! समावर्तनकर्मभ्यः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु । एभ्यः कर्मभ्यः स्वस्ति० । तत उपनयनदिने आचार्यः कुमारसहितो माण्डपे उपविश्य आचम्य । प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा अस्य कुमारस्योपनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्तृकाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इदं कृच्छ्रत्रयं प्रायश्चित्तं [१] गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । एवं बटुरपि । आचम्य । देशकालौ गोत्रः शर्मा मम कामचारकामभक्षादिदोषनिरसनपूर्वकोपनयनवेदारम्भसमावर्त- ॥६३॥

१ केशानां रक्षणार्थं तु द्विगुणं व्रतमाचरेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नेष्वधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये इदं कृच्छ्रत्रयं प्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानाम० जे। ततः आचार्यः आच०। प्राणा० देशकालौ० अस्य कुमारस्य गायत्र्युपदेशाधिकारसिद्धिद्वारा ॥ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं द्वादशोत्तरसहस्रसङ्ख्यकगायत्रीजपं ब्राह्मणद्वारा करिष्ये। अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं द्वादशोत्तरसहस्रगायत्रीजपार्थं एभिर्वरणनिष्क्रयद्रव्यैः त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। ततः आचार्यः आचम्य। प्राणा०। देशकालौ० अस्य कुमारस्योपनयनपूर्वाङ्गभूतं [१] वपनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य तत् कारयेत्। शिरसः मुण्डनं शिखावर्ज्यं कार्यम्। मङ्गलोद्वर्तनेन सुस्नातं बटुमुपवेश्य। देशकालौ० अस्य कुमारस्योपनयनपूर्वाङ्गिया विहितब्राह्मणत्रयं भोजयिष्ये। इति सङ्कल्प्य। नवकृतान्नेन सद्यस्तान् भोजयेत्। तत्पङ्क्तौ बटुं च भोजयेत्। ततः अस्मिन्नुपनयनाख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं करिष्ये। ततः आचम्य प्राणा०। देशकालौ०अस्य कुमारस्य ब्राह्मण्याभिव्यक्तिद्विजत्वसिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकारप्राप्त्यर्थं चोपनयनं करिष्ये। ततः आचार्यपुरुषाः पर्युप्तशिरसमलंकृतं कुमारं गीतवाद्यपुरस्सरं साक्षतफलहस्तमाचार्यसमीपमानयन्ति। आचार्यस्तु स्वदक्षिणतः पश्चादग्नेः प्राङ्मुखमवस्थाप्य। ॐ प्रतिष्ठेति ब्रूयात्। मनोजूति० इति पठेत्। आचमनं कारयित्वोत्थाप्य आचार्यः—ब्रह्मचर्यमागामिति ब्रूहि। माणवकः-ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्। आचार्यः—ॐ ब्रह्मचार्यसानि इति ब्रूहि। माणवकः—ॐ ब्रह्मचार्यसानि। अथ आचार्यः कुमारमुप-

---

१ अस्य कुमारस्य:क्षौराकरणप्रयुक्तप्रत्यवायपरिहारार्थं इमानि गोनिष्क्रयभूतद्रव्याणि ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेश्याचम्योत्थाय च [1]कौपीनवासः परिधापयति। येनेन्द्राम बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम्। तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय वलाय वर्चसे। माणवक उपविश्य। द्विराचामति। उत्थाय [2]मुञ्ज-मयीं त्रिरावृत्तां यथाप्रवरग्रन्थियुतां मेखलां कुमारस्य कटिदेशे बध्नीते। इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनतीमऽआगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्। उपवि-श्याचम्य [3]यज्ञोपवीतदानम्। देशकालौ गोत्रः शर्मा स्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थम् इमान्यष्टौ तण्डुलपूर्णपात्रस्थानि यज्ञोपवीतानि सफलानि दक्षिणासहितानि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे इति जलमुत्सृजेत्। आचार्यः—आपो हिष्ठेति तिसृभिः [3]उपवीतं प्रक्षाल्य। ब्रह्मयज्ञानं १।इदं विष्णु २।नमस्ते रुद्र ३। इति तिसृभिः उपवीते अङ्गुष्ठं

---

१ वाससी ते स्वगुरवे मेघाजननकर्मणि। दद्यात्तावत्प्रभृत्येवकौपीनेन प्रवर्तयेत् ॥ १ ॥ इत्याश्वलायनवचनात् कौपी-कमेवाधोवस्त्रं ब्रह्मचारिणः। तावत्प्रभृतिकौपीनेनैव प्रवर्तयेत् इति तात्पर्यार्थः। अन्यच्चापि कौपीनं कटिसूत्रं च यतः स्या-द्ब्रह्मचारिणः। ग्राह्यं नैव गृहस्थस्य श्रौते स्मार्ते च कर्मणीति स्मृत्यर्थसारवचनम्।

२ मौञ्जी त्रिवृत्समा श्लक्ष्णा कार्य्या विप्रस्य मेखला। राज्ञो धनुर्ज्या मौर्वी वैश्यस्य इति सूत्रोक्ता ग्राह्याः।

३ प्रसङ्गात् यज्ञोपवीतनिर्माणप्रकारश्छन्दोगपरिशिष्टाद्युक्तरीत्या प्रदर्श्यते। तत्र सति सम्भवे ब्राह्मणेन सधवया ब्राह्मण्या वा तदसम्भवे विधवाभिर्ब्राह्मणीभिः कन्याभिश्च निर्मितं सूत्रं संहतचतुरङ्गुलिमूलेषु प्रणवत्या सूत्रमावेष्ट्य तत्त्रिगुणीकृत्य ऊर्ध्ववृतं वलितं कृत्वा पुनरधोवृत्तं त्रिगुणीकृतं तत्सूत्रं नवतन्तुकं सम्पद्यते। तत्त्रिरावेष्ट्य दृढग्रन्थिं कुर्यात् [ग्रन्थिसम्पा-दनमन्त्रः—ओं प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रोमायिशान्तक, तेनान्नेना प्यायस्व] इति नारायणोपनिषदि उक्तः। एवं सिद्ध-यज्ञोपवीतं कलशोपरि ओं भूर्भुवः स्वरोम् इति संस्थाप्य ओं यज्ञोपवीतम्प्रतिष्ठापयामीति वदेत्। ततो नवदेवताविन्यासः। इति॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भ्रामयेत्। पुनस्तथैव नवतन्तुषु देवताः विन्यसेत्। ॐकारं प्रथमतन्तौ न्यसामि॥ १ ॥ अग्निं द्वितीयतन्तौ न्यसामि। २। नागान् तृतीयतं०। ३। सोमं चतुर्थतं०। ४। इन्द्रं पञ्चमतं०। ५। प्रजापतिं षष्ठतं०। ६। वायुं सप्तमतं०। ७। सूर्यमष्टमतं०। ८। विश्वान् देवान्नवमतं०। ९। इति विन्यसेत्। उपयामगृहीतोसि सावित्रोसि च नोधा असि च यो मयि धेहि। जिन्वयज्ञं जिन्वयज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे। इति सूर्याय प्रदर्शयेत्। उपवीतं करसंपुटे निधाय दशगायत्र्याभिमन्त्रयेत्। [1]यज्ञोपवीतपरिधानम्। यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः। त्रिष्टुप् छन्दो लिङ्गोक्ता देवता नित्यनैमित्तिककर्मानुष्ठानफलसिद्ध्यर्थे यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः। माणवकस्य दक्षिणबाहुमुद्धृत्य वामस्कन्धे यज्ञोपवीतं निवेशयति—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। द्विराचामति। अथ माणवकाय दत्तमजिनं माणवकः दक्षिण हस्ते उपवीतवद्धारयेत्। मित्रस्य चक्षुर्व्वरुणं बलीयस्तेजो यशस्विस्थविर ँ समिद्धम्। अनाहनस्य वसनं जरिष्णुः परीदं व्वाज्यजिनन्दधेऽहम्॥ द्विराचामति। उत्थाय [1]पालाशदण्डं यच्छति। पालाशो ब्राह्मणस्य

१ उपवीतं बटोरेकम् द्वे तथेतरयोः स्मृते। इति भृगुवचनादेकस्यैव धारणस्य तत्र काले विधिः। अन्यदा तु यज्ञोपवीतं द्वे धार्ये दैवे पित्र्ये च कर्मणि। तृतीयं चोत्तरीयार्थे वस्त्राभावे चतुष्टयमिति॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दण्डः क्षत्रियस्य वैल्व औदुम्बरो वैश्यस्य । [1]केशसम्मितो ब्राह्मणस्य दण्डो ललाटसम्मितः क्षत्रियस्य घ्राणसम्मितो वैश्यस्य । माणवकस्तं प्रतिगृह्णाति—यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च्चसाय । आचार्यः अथास्याद्भिरञ्जलिनाऽञ्जलिं पूरयति—आपोहिष्ठा ३ । माणवकः तूष्णीमूर्ध्वं प्रक्षिपति । श्रीसूर्याय नमः इदमर्घं दत्तं न मम । अथैनं सूर्यमुदीक्षयति । सूर्यमुदीक्षस्व माण० तच्चक्षुर्देव० [2] । अथास्य दक्षिणांसमधिहृदयमालभते—मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् । अथास्य दक्षिणं हस्तं गृहीत्वाऽऽह—को नामासि। माणवकः—अमुकशर्माऽहं [वर्माहं गुप्तोऽहं] भोः इति प्रत्याह । अथैनमाह–कस्य ब्रह्मचार्यसि । माणवकः—भवतः । आचार्यः—इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यसि अग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तव अमुकशर्मन्! १ [वर्मन् २ गुप्त ३] इति पठति । अथैनं भूतेभ्यः परिददाति—प्रजापतये त्वा परिददामि देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्यद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि द्यावापृथिवीभ्यां

१ ब्राह्मणो वैल्वपालाशौ क्षत्रियो वाटखादिरौ प्लाक्षौदुम्बरौ वैश्यो दण्डानर्हन्ति धर्मतः । इति मनुः ।

२ कियत् प्रमाणन्तदाह । केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्यः प्रमाणतः । ललाटसम्मितो राज्ञां स्यात्तु नासान्तिको विशः । इति च मनुः । ओंतच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वा परिददामि विश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्य परिददामि सर्वेभ्यो भूतेभ्यस्त्वा परिददा-
म्यरिष्ट्यै । हस्तविसर्गः । अथ माणवकः प्रदक्षिणमग्निं परीत्योपविशत्याचार्यस्योत्तरतः । ततो ब्रह्मवरणम् । अस्मिन्नुपनयनहोमकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । ततो ब्रह्मोपवेशनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा । स्रुवेणाज्यहोमः—ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजा० ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय० ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा । इद-मग्नये० ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न० ॥४॥ ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न०॥५॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० ॥ ६ ॥ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न० ॥ ७ ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने० स्वाहा । इमग्नी० ॥ ८ ॥ ॐ सत्वन्नो० स्वाहा । इदमग्नी० ॥ ९ ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा । इदमग्नये अयसे० ॥ १० ॥ ॐ ये ते शतं० स्वाहा । इदं वरुणाय स० ॥ ११ ॥ ॐ उदुत्तमं० स्वाहा । इदं वरुणाय० ॥ १२ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजा० ॥ १३ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते० । इदमग्नये स्विष्ट० ॥ १४ ॥ संस्रवप्राशनमाचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । पवित्रप्रतिपत्तिः । पूर्णपात्रदानम् । कृतस्योपनयनहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । द्यौस्त्वा० प्रीणीताविमोकः । अथैनं स शास्ति–ब्रह्मचार्यसि । माणवकः-असानि ॥ १ ॥ आचार्यः—अपोऽशान । माण० अश्नानि ॥ २ ॥ आचा० कर्म कुरु । माण० करवाणि ॥ ३ ॥ आचा० मा दिवा सुषुप्थाः । माण० न स्वपानि ॥ ४ ॥ आचा० वाचं यच्छ । माण० यच्छानि ॥ ५ ॥ आचा० समिधमाधेहि । माण आदधानि ॥ ६ ॥ आचा० पुनरपोऽ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान । माण० अश्नानि ॥ ७ ॥ अथास्मै सावित्रीमन्वाहोत्तरतोऽग्नेः प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायापसन्नाय समीक्षमाणाय समीक्षिताय ब्रूयात् । आचार्यो वस्त्रेणाच्छादनं कृत्वा दक्षिणकर्णे गायत्रीम्प्रदद्यात् [आचार्यं सम्पूज्य नारिकेलफलं दक्षिणां च दद्यात्] । ॐ भूर्भुवःस्वः ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ । त्रिः गायत्र्युपदेशानन्तरं माणवकः आचार्यं प्रणमेत् । अत्र कण्डेन जुहोति । पाणिनाग्निं परिसमूहति । इतस्ततः पतितानङ्गारान् स्थण्डिलमध्यस्थान् करोतीत्यर्थः । ॐ अग्ने सुश्रवसं मा कुरु ॥१॥ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि ॥ २ ॥ एवं मा ꣳ सुश्रवः शौश्रवसं कुरु ॥ ३ ॥ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ॥ ४ ॥ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ५ ॥ ततः प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य । दक्षिणहस्तगृहीतोदकेन परिषिच्य । उत्थाय घृताक्तपालाशसमिधमग्नावादधाति—अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे । जीव पुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भूयास ꣳ स्वाहा ॥ १ ॥ एवं द्वितीयां २ तथा तृतीयाम् ।३। तत उपविश्य पूर्ववत्परिसमूहनम् । अग्ने सु० ॥ १ ॥ यथात्व० ॥ २ ॥ एवंमा ꣳ सु० ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथात्वम० ॥ ४ ॥ एवमह० ॥ ५ ॥ प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी अग्नौ अधोमुखौ प्रतप्य मुखं विमार्ष्टि । तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ॥ १ ॥ आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्म्मे देहि ॥ २ ॥ वर्च्चोदाऽअग्नेसि वर्च्चो मे देहि ॥ ३ ॥ अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽआपृण ॥ ४ ॥ मेधां मे देवः सविताऽआदधातु ॥ ५ ॥ मे देवी सरस्वतीऽआदधातु ॥ ६ ॥ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ७ ॥ आदौ अङ्गान्यालभ्य पश्चाज्जपति—अङ्गानि च मऽआप्यायन्ताम् इति पाठमात्रम् । वाक्च म आप्यायताम् इति दक्षिणहस्ताग्रेण मुखमालभ्यते ॥ २ ॥ प्राणश्च मऽआप्यायताम् इति दक्षिणोत्तरे नासारन्ध्रे तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां युगपत् । चक्षुश्च म आप्यायताम् इत्यनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां चक्षुषी युगपत् ॥ ४ ॥ श्रोत्रं च म आप्यायताम् इति मन्त्रावृत्त्या दक्षिणोत्तरश्रोत्रे ॥ ५ ॥ यशो बलं च म आप्यायतामिति पाणिभ्यां शिरः प्रभृतिपादपर्यन्तानि सर्वाङ्गान्यालभन्ते ॥ ६ ॥ ततः त्र्यायुषाणि करोति [1]भस्मना । त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे । तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । अथाभिवादनम् । वत्सगोत्रोत्पन्नोऽहं यथोक्तप्रवरोऽहं (वत्सभार्गवच्यावनाप्नवानौर्वजामदग्न्येति

१ श्रुवमूले ईशान्या गृहीतेनेत्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चप्रवरोऽहं वा) शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायी अमुकशर्माऽहं [वर्माऽहं गुप्तोऽहं] भो अग्ने ! त्वामभिवादये ॥ १ ॥ एवं भो सूर्य ! त्वां० ॥ २ ॥ भो वरुण ! त्वां० ॥ ३ ॥ भो आचार्य ! त्वां० ॥ ४ ॥ भो ब्राह्मणाः ! युष्मानभिवादये ॥ ५ ॥ आयुष्मान्भव सौम्य ॥ ३ ॥ अमुकशर्मन् ! वर्मन् ! गुप्त ! । अथ भिक्षां—"मातरं वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम् । भिक्षेत भिक्षां प्रथमां या चैनं नावमानयेत् ॥ इति नियमेन ताम्रादिपात्रं गृहीत्वा मातरं प्रति गत्वा भिक्षेत् । ॐ [1]भवति ! भिक्षां देहि ; इति ब्राह्मणः । अनिन्द्यगृहे इति । क्षत्रियः भिक्षां भवति ! देहि । २ । भिक्षां देहि भवति ! इति वैश्यः । ३ । पुरुषं प्रति । भवन् ! भिक्षां देहि ।१। भिक्षां भवन् ! देहि । २ । भिक्षां देहि भवद् ! । ३ । इति ब्रह्मचारी प्राप्तां भिक्षां ॐ स्वति इत्युक्त्वा स्वीकृत्य । आचार्याय भैक्षं निवेदयेत् । ब्राह्मणभोजनम् । कृतस्योपनयनकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । कृतस्योप० र्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । यस्य स्मृत्या० विष्णवे० ॥ ३ ॥ ततो नियमान् श्रावयेदाचार्यः ॥ अधःशायी स्यात् ॥ अक्षारलवणाशी स्यात् ॥ सदा दण्डधारणम् । गुरुशुश्रूषा । स्वाध्यायाविरोधेन सायं प्रातर्भिक्षाचर्या । अथ मधु मांसं वर्जयेत् । मज्जनं देवतीर्थे ह्रदे वा । उपर्यासनम्, स्त्रीगमनम्, तन्मध्ये अवस्थानम्, अनृतम् अदत्तादानञ्च वर्जयेत् । आवेदसमाप्तेः ब्रह्मचर्यं चरेत् । वस्त्रे च मेखलादाने

१ भवत्पूर्वं चरेद्भैक्षं ब्राह्मणस्तु समाहितः । भवन्मध्यन्तु राजन्यो वैश्यस्तु भवदुत्तरम् । इति मनुः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथैवाञ्जलिपूरणे । हृदयालम्भने प्रश्ने तथा भूतप्रदानके ॥ एतान्मन्त्रानाचार्यः शेषान्माणवकः पठेत् ॥ इत्युपनयनम् ॥

अथ वेदारम्भः—आचार्यो ब्रह्मचारिणा सह आचम्य । प्राणानायम्य देशकालौ० गोत्रः शर्मा अस्य ब्रह्मचारिणः [अनयोरेषां वा] ब्रह्मयज्ञाद्यधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वेदारम्भमहं करिष्ये । अस्मिन्वेदारम्भाख्यकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये । ब्रह्मवरणम्—अस्मिन्वेदारम्भहोमकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि ब्रह्मोपवेशनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा स्रुवेणाज्यहोमः । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय० ॥ २ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये० ॥ ३ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय० ॥ ४ ॥

अनन्वारब्धः—अथ यजुर्वेदाहुतयः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा । इदमन्तरिक्षाय० ॥१॥ ॐवायवे स्वाहा । इदं वायवे न० ॥२॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ॥३॥ ॐछन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न० ॥४॥ अथ ऋग्वेदाहुतयः । ॐपृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यै न०॥५॥ अग्नये स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ ६ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न० ॥ ७ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न० ॥ ८ ॥ अथ सामवेदाहुतयः । ॐ दिवे स्वाहा । इदं दिवे न० ॥ ९ ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय न० ॥ १० ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न० ॥ ११ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न० ॥ १२ ॥ अथर्ववेदाहुतयः । ॐ दिग्भ्यः स्वाहा । इदं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिग्भ्यो न० ॥ १३ ॥ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा । इदं चन्द्रमसे न० ॥ १४ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न० ॥ १५ ॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न० ॥ १६ ॥ अथ सर्वसामान्याहुतयः । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० ॥ १७ ॥ ॐ देवेभ्यः स्वाहा । इदं देवेभ्यो न० १८ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा । इदमृषिभ्यो न० ॥ १९ ॥ ॐ श्रद्धायै स्वाहा । इदं श्रद्धायै न० ॥ २० ॥ ॐ मेधायै स्वाहा । इदं मेधायै न० ॥ २१ ॥ ॐ सदसस्पतये स्वाहा । इदं सदसस्पतये न० ॥ २२ ॥ ॐ अनुमतये स्वाहा । इदमनुमतये न० ॥ २३ ॥

अन्वारब्धः—ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये न० ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न० ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न० ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा । इदमग्नी० ॥ ४ ॥ ॐ स त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा । इदमग्नये ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा । इदम् अयसे न० ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शतं० स्वाहा । इदं वरुणाय० ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्त० स्वाहा । इदं वरुणा० ॥ ८ ॥ ॐप्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते न० ॥ १० ॥ संस्रवप्राशनम् । आच० । पवित्राभ्याम्० । पवित्रप्र० । पूर्णपात्रदानम् । कृतस्य वेदारम्भहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । द्यौस्त्वा० । प्रणीतावि० । आपः शिवा० । उपय० । ततः कुमारः अक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु । गणपतये० गणपतिं० ॥ १ ॥ सरस्वत्यै० सरस्वतीं० ॥ २ ॥ लक्ष्म्यै० लक्ष्मीं० ॥ ३ ॥ नारायणाय० नारायणं० ॥ ४ ॥ स्वविद्यायै० स्वविद्यां० ॥ ५ ॥ इत्यावाह्य । मनोजूति० गणपत्याद्यावाहितदे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । गणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य । अनया पूजया गणपतिसरस्वतीलक्ष्मीनारायणस्त्रविद्याः प्रीयन्ताम् । ततः प्रागग्रदर्भासने उपवेश्य । ब्रह्मचारी आच० प्राणा० । आचार्यं संपूज्य तस्मै रौप्यमुद्रां श्रीफलं च दद्यात् । आचार्येण समीक्षिताय ऊर्ध्वजानुद्वयस्थितसंयताय ॐ कारपूर्विकां सव्याहृतिकां गायत्रीं पाठयित्वा वेदानारभेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवि० । हरिः ॐम् । **समिधाग्निंदुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्याजुहोतन । सुसमिद्धाय शोचिषे ॥१॥ ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ २ ॥ ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ ३ ॥ शन्नोदेवी०** ॥४॥ अन्ते सव्याहृतिकां गायत्रीमुच्चार्य गुरोरादावन्ते च पादोपसङ्ग्रहणं कुर्यात्[१] । अस्य ब्रह्मचारिणो वेदारम्भसाङ्गतासिद्ध्यर्थं दशसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । भूयसीसङ्कल्पः । यस्य स्मृत्या० । विष्णवे० ॥ ३ ॥ इति वेदारम्भः ॥

अथ समावर्तनम्—

भो गुरो ! अहं स्नास्ये । इति पृष्टः स्नाहि इत्यनुज्ञाय गुरुः आचार्य्यो वा प्राङ्मुख ब्रह्मचारिणा सह उपविश्य । आचम्य । प्राणानायम्य । देशकालौ० गोत्रः

१ व्यत्यस्तपाणिना कार्य्यमुपसंग्रहणं गुरोः । सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यः दक्षिणेन तु दक्षिणः ॥ इति मनुः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शर्मा अस्य ब्रह्मचारिणो गृहस्थाद्याश्रमप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये समावर्तनाख्यं कर्म करिष्ये। अस्मिन्समावर्तनाख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये। ब्रह्मवरणम्। अस्मिन् समावर्तनहोमकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। ब्रह्मोपवेशनादिपर्युक्षणान्तं कृत्वा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न०॥ १॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय०॥ २॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्न०॥ ३॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमा०॥ ४॥ अनन्वारब्धः। ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। इदमन्तरिक्षाय न०॥ १॥ ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे०॥ २॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे०॥ ३॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो०॥ ४॥ ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै०॥ ५॥ ॐ अग्नये स्वाहा। इद-मग्नये०॥ ६॥ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे०॥ ७॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो०॥ ८॥ ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे०॥ ९॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय०॥ १०॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे०॥ ११॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो०॥ १२॥ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यो०॥ १३॥ ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे०॥ १४॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे०॥ १५॥ ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न०॥ १६॥ ॐ प्रजा-पतये स्वाहा। इदं प्रजापतये०॥ १७॥ ॐ देवेभ्यः स्वाहा। इदं देवेभ्यो०॥ १८॥ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा। इदमृषिभ्यो०॥ १९॥ ॐ श्रद्धायै स्वाहा। इदं श्रद्धायै०॥ २०॥ ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै०॥ २१॥ ॐ सदसस्पतये स्वाहा। इदं सदसस्पतये०॥ २२॥ ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुमतये स्वाहा । इदमनुमतये० ॥ २३ ॥ ब्रह्मणान्वारब्धः । ॐ भूः स्वाहा । इदमग्नये० ॥ १ ॥ ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे० ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय० ॥ ३ ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने० स्वाहा । इदमग्नी० ॥ ४ ॥ ॐ स त्वन्नो० स्वाहा । इदमग्नो० ॥ ५ ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा । इदमग्न० ॥ ६ ॥ ॐ ये ते शतं० स्वाहा । इदं वरुणा० ॥ ७ ॥ ॐ उदुत्तमं० स्वाहा । इदं वरुणा० ॥ ८ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये० ॥ ९ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्न० ॥ १० ॥ संस्रव० । आच० पवित्राभ्यां० । पवित्रप्र० । पूर्णपात्रदानम् । कृतस्य समावर्तनहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । द्यौस्त्वा० । प्रणीता० । आपः शिवा० । अतः परं ब्रह्मचारी काण्डेन जुहोति । अग्ने सु० ॥ १ ॥ यथा त्व० ॥ २ ॥ एवं मा० ॥ ३ ॥ यथात्वम० ॥ ४ ॥ एवम० ॥ ५ ॥ अग्निं पर्युक्ष्योत्थाय समिधमादधाति । अग्नये समिध० स्वाहा ॥ १ ॥ एवं द्वितीयां तथा तृतीयाम् । पूर्ववत्परिसमूहनम् । अग्ने सुश्र० ॥ ५ ॥ अग्निं पर्युक्ष्य । पाणी प्रतप्य । तनूपा० ॥ १ ॥ आयुर्दा० ॥ २ ॥ वर्चोदा० ॥ ३ ॥ अग्ने यन्मे० ॥ ४ ॥ मेधां मे देवः स० ॥ ५ ॥ मेधां मे देवी० ॥ ६ ॥ मेधामश्वि० ॥ ७ ॥ अङ्गानि च० ॥ १ ॥ वाक्च म० ॥ २ ॥ प्राणश्च० ॥ ३ ॥ चक्षुश्च० ॥ ४ ॥ श्रोत्रं च म० ॥ ५ ॥ यशो बलं० ॥ ६ ॥ त्र्यायुषाणि करोति । त्र्यायुषं० कश्यप० । यद्देवे० । तन्नो० । ततः परिश्रितस्योत्तरतः उदकपूर्णानष्टौ कलशान् आम्रपल्लवफलदक्षिणासहितानुदक्संस्थान्निधाय । तत्पश्चिमतः प्रागग्रेषु कुशेषु आस्तीर्णेषु प्राङ्मुखः स्थित्वा । येऽप्स्वन्तरग्नयः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूखो मनोहाऽस्खलो विरुजस्तनू दूषिरिन्द्रियहा तान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि । इत्येकस्मादपो गृहीत्वा दक्षिणचुलुकेनाभि-षिञ्चते शिरसि । तेन मामभिषिञ्चामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय । इति मन्त्रेण ॥ १ ॥ पुनः येप्स्वन्तरं० ग्रहणम् । येनश्रियमकृणुतां येनावमृशताः ँ सुराम् । येनाद्यावभ्यषिञ्चतां यद्वान्तदश्विना यशः । इत्यभिषिञ्चेत् ॥ २ ॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । आपो हिष्ठा० ॥ ३ ॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । यो वः शि० ॥ ४ ॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । तस्मा आरङ्ग० ॥ ५ ॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । तूष्णीमभिषिञ्चेत् ॥ ६ ॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । तूष्णीम् ॥७॥ पुनः येऽप्स्वन्तर० । तूष्णीम् ॥ ८ ॥ उदुत्तमं० इति शिरोमार्गेण मेखलामुन्मुच्य । तूष्णीं दण्डमजिनं भूमौ निधाय । वासोऽन्यत्परिधाय । आचम्य । उत्थाय आदित्यमुपतिष्ठते । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिम्मा कुर्वाविदन्मागमय । उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद्दिवा यावभिरस्थाच्छ-तसनिरसि शतसनिम्मा कुर्वाविदन्मा गमय । उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिर-स्थात्सायं यावभिरस्थात्सहस्रसनिरसि सहस्रसनिम्मा कुर्वाविदन्मा गमय । इति जपेत् । उपविश्य । दक्षिणहस्तमध्यगतसोमतीर्थेन दधि प्राश्य । आचम्य । जटालोमनखानि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वापयित्वा । शीतोदकेन स्नात्वा । औदुम्बरेण दन्तान् धावेत् । [द्वादशाङ्गुलं ब्राह्मणस्य । दशाङ्गुलं राजन्यस्य । अष्टाङ्गुलं वैश्यस्य] अन्नाद्याय व्यूहध्व ँ सोमो राजायमागमत् । स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च । तत्काष्ठं भङ्क्त्वा प्रक्षाल्य प्राच्यां दिशि क्षिपेत् द्वादशगण्डूषान् कृत्वा । आचम्य । मङ्गलोद्वर्तनेनोद्वर्त्य उष्णोदकेन स्नात्वा चन्दनाद्यनुलेपनं पाणिभ्यां गृहीत्वा नासिकयोर्मुखस्य चोपगृह्णीते । प्राणापानौ मे तर्पय, चक्षुर्मे तर्पय, श्रोत्रम्मेतर्पय । ततोऽपसव्यम् । पाणी प्रक्षाल्य । तदुदकमञ्जलिनादाय । पितरः शुन्धध्वम् । प्राङ्मुखः सन् दक्षिणस्यां दिशि निक्षिपेत् । सव्यमुदकोपस्पर्शः । उत्कृष्टचन्दनादिनात्मानमनुलिप्य तूष्णीम् । पश्चाज्जपेत् । सुचक्षा ऽअहमक्षीभ्यां भूयास ँ सुवर्चा मुखेन । सुश्रुत्कर्णाभ्यां भूयासम् । अथ वस्त्रपरिधानम् । परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये । द्विराचमनम् । अत्र द्वितीययज्ञोपवीतधारणम् ॥ यज्ञोपवीतं पर० । द्विराचमनम् । अथोत्तरीयवस्त्रधारणम् । यशसा माद्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यशो भगश्च माविन्दद्यशोमा प्रतिपद्यताम् । द्विराचमनम् । अथ सुमनसः प्रतिगृह्णाति । अन्यतः । याऽआहरज्जमदग्निः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय। ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।
अथ पुष्पमालापरिधानम्। ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन सङ्ग्रथिताः सुमनसऽआबध्नामि यशो मयि। उष्णीषेण शिरो वेष्टयते। प्रदक्षिणम्।
ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥ अथ अलङ्करणधारणम्। कर्णद्वये मन्त्रावृत्त्या। अलङ्करणमसि भूयोऽलङ्करणं भूयात्। अञ्जनं कज्जलं वा दक्षिणवामयोर्नेत्रयोः अङ्क्ते। वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्म्मे देहि। तत आत्मानं आदर्शे प्रेक्षते। रोचिष्णुरसि। छत्रं प्रतिगृह्णाति। बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्द्धेहि तेजसो यशसो माऽन्तर्द्धेहि। अथ उपानहौ। प्रतिमुञ्चते पादयोर्युगपत्। मन्त्रः—प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम्। ततो वैणवं दण्डमादत्ते। वक्ष्यमाणमन्त्रेण—विश्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः। आचाराद्गणपतिपूजनम्। आचार्यादिपूजनम्। कृतस्य समावर्तनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां यथाविभागमाचार्यब्रह्मभ्यां दातुमहमुत्सृजे। अथवा कृतानामुपनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्मणां च साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो ब्राह्मणभोजनम् । कृतस्य समावर्तन० र्थं० यथासम्पन्नेनान्नेन स्मृत्युक्तान् दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । भूयसीसङ्कल्पः । यस्य स्मृत्या० । विष्णवे० ॥ ३ ॥ इति तिलकाशीर्वादः । स्नातकस्य नियमान् वक्ष्यामः । [1]नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यान्न च गच्छेत् । क्षेमे रात्रौ ग्रामान्तरं न गच्छेत् । न च धावेत् । कूपस्यावेक्षणं न कुर्य्यात् । फलप्रपातनं न० । सन्धिसर्पणं न० । सन्ध्यासमये अध्वगमनं न० । नग्नस्नानं न० । विषमलङ्घनं न० । पर्वतगर्तादेः लङ्घनं न० । [3]शुक्तवदनं न० । सन्ध्यासु आदित्यस्य प्रेक्षणं न० । वर्षति [4]अप्रावृतो न गच्छेत् । अजातलोम्नीं विपुंसीं षण्ढं च नोपहसेत् । गर्भिणीं विजन्येति ब्रूयात् । सकुलमिति नकुलं, भगालमिति कपालं, मणिधनुरितीन्द्रधनुः । विकृतं वासो नाच्छादयीत । परस्मै गां वत्सं पाययन्तीं न कथयेत् । रात्रौ घृतदीपं प्रज्वाल्य भोजनं कुर्यात् । ततः काश्मीरगमनम् । ततः उपनयनाद् द्वितीये चतुर्थे षष्ठवर्जिते समतिथौ पञ्चमे सप्तमे वा शुभदिने मातृणां विसर्जनं यथोक्तं कुर्यात् । इति श्रीमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसङ्गृहीते लघुदर्पणे समावर्तनप्रयोगः ॥

अथ यज्ञोपवीतधारणम्—पतितं त्रुटितं वापि ब्रह्मसूत्रं यदा भवेत् । नूतनं

---

१ न स्वयं कुर्वीत न वान्यैः प्रयुक्तं द्रष्टुं श्रोतुं च गच्छेत् ।

२ राजादिभयराहित्ये सतीत्यर्थः अतो नगरे (वाराणस्यादौ) न दोषः ।

३ लज्जाकरामङ्गलकरदुःखकरेति निष्ठुरं त्रिविधं वाक्यम् ।

४ अनाच्छादितो न गच्छेदित्यर्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धारयेद्विप्रः स्नानसङ्कल्पपूर्वकम् ॥ यज्ञोपवीतमेकैकं प्रतिमन्त्रेण धारयेत् । मेखलामजिनं दण्डमुपवीतं कमण्डलुम् ॥ अप्सु प्रास्येद्विनष्टानि गृहीत्वाऽन्यानि मन्त्रतः । ब्रह्मसूत्रं विना भुङ्क्ते विण्मूत्रं कुरुते यदि ॥ गायत्र्यष्टसहस्रेण प्राणायामेन शुद्ध्यति । यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्ता देवता सकलकर्मानुष्ठानसिद्ध्यर्थमुपवीतधारणे विनियोगः । यज्ञोपवीतं परमं० इति मन्त्रेण दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य वामस्कन्धे यज्ञोपवीतं निवेशयति । निष्कासनसमये पादमार्गेण निष्कासनीयं न तु मस्तकमार्गेण । इति यज्ञोपवीतधारणम् ॥

अथ नित्यस्नानविधिः—

अथ तीर्थप्रार्थना—त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता । याचितं तीर्थं मे देहि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥ उत्तिष्ठन्तु महद्भूता ये केचिद् भूमिपालकाः भूतानामविरोधेन स्नानकर्म समारभेत् ॥ २ ॥ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्तज्वलनोपम । भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ ३ ॥ आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च । पापं नाशय मे देव वाङ्मनःकायकर्मजम् ॥ ४ ॥ तपनात् त्वं समुत्पन्ने तपने पापनाशिनि । सप्तधा सागरं यासि गोदावरि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥ त्र्यम्बकस्य जटोद्भूते गौतमस्याघनाशिनी । धर्मद्रवेति विख्याता पापं मे हर जाह्नवि ॥ ६ ॥ जाह्नवी सर्वतः पुण्या ब्रह्महत्यापहारिणी । वाराणस्यां विशेषेण गङ्गा उत्तरवाहिनी ॥ ७ ॥ इति प्रार्थना । अथार्घ्यम्—ब्रह्मादिशिखरोत्पन्ने त्रिखण्डितविराजिते । गौतमप्रार्थिते गङ्गे गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इत्यर्घ्यम् । अथातो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्यस्नानं नद्यादौ मृद्गोमयकुशतिलसुमनस आहृत्योदकान्तं गत्वा शुचौ देशे संस्थाप्य प्रक्षाल्य पाणिपादं कुशोपग्रहो बद्धशिखो यज्ञोपवीत्याचम्य देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा मम कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषपरिहारार्थममुकतीर्थे अस्यां नद्यां अस्मिन् तडागे वा स्नानमहं करिष्ये। ततः 'उरुर्ं हिराजा०, इति तोयमामन्त्र्य 'ये ते शतम्' इत्यावर्तयेत्। '**सुमित्रियानऽ-ओषधयः सन्तु,** इति मन्त्रेण जलाञ्जलिं गृह्णीयात्। **दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः**। इति स्ववामभागे तीर्थतटे प्रक्षिपेत्। ततः कटी बस्ती उरू जङ्घे चरणौ करौ मृदा त्रिस्त्रिः प्रक्षाल्य। आचम्य। 'उदकाय नमः' इति तीर्थोदकनमस्कारः। दक्षिण-पाणिगृहीतया मृदा ललाटमारभ्य नाभिपर्यन्तानि सव्यहस्तस्थया नाभिमारभ्य पादपर्यन्तानि आलभेत। अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ १ ॥ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेना-भिवन्दिता ॥ त्वया हृतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ इदं विष्णु०। सूर्याभिमुखो निमज्जेत्। **आपो[1] अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीः** इति स्नात्वा—'उदिदाभ्यः शुचिरापूता एमि'। इत्युन्मज्य। पुनर्निम-ज्योन्मज्याचम्य च। दक्षिणकरगृहीतेन गोमयेन मूर्द्धप्रभृतिनाभिपर्यन्तं वामकरगृहीतेन नाभ्या-

---

१ आपोजुषणो_इत्यादिना प्रकृतिभावः पा० सूत्रम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिपादपर्यन्तं शरीरं विलिम्पेत् । अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने । तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ॥ यन्मे रोगांश्च शोकांश्च पापं मे हर गोमय ॥ मानस्तोके० । उदकोपस्पर्शः ततो दक्षिणहस्तचुलुकेन जलमादाय शिरस उपरि प्रतिमन्त्रमभिषिञ्चेत् । तत्र मन्त्रः—इमं मे० ।१। तत्त्वायामि० ।२। त्वन्नो अग्ने० ।३। सत्वन्नो० ।४। मापो मौषधीर्हि ᳪ सीर्धाम्नो धाम्नो राजंस्ततो वरुण नो मुञ्च । यदाहुरघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।५। उदुत्तमं० ।६। मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥ ७ ॥ अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः । अवदेवैर्देवकृतमेनोऽयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतम् । पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि ॥ ८ ॥ त्रिमज्ज्योन्मज्ज्याचम्य सोदकैर्दर्भैः पावयेत् । नाभित आरभ्य प्रदक्षिणक्रमेण पुनः नाभिवामपार्श्वपर्यन्तं मार्जयेत् । ॐ भूः पुनातु । ॐ भुवः पुनातु । ॐ स्वः पुनातु । ॐ तत्सवितुः ० । सर्वं पुनातु । आपो हिष्ठेति तिसृभिः । ३ । इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलञ्च यत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम् । आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥१॥ हविष्मती० ॥ २ ॥ देवीरापो अपान्नपाद्यो वऽउर्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा ॥ ३ ॥ कार्षिरसि ॥ ४ ॥ आपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वतीराजश्चितानाः । याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः ॥ ५ ॥ द्रुपदादिव० ॥ ६ ॥ शन्नो देवी० ॥ ७ ॥ अपाᳪं रस० ॥ ८ ॥ आपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः । तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ॥ ९ ॥ पुनन्तु मा पिता० ॥ १० ॥ पुनन्तु मा पितामहा० ॥ ११ ॥ अग्नऽआयूᳪंषि० ॥१२॥ पुनन्तु मा देव० ॥१३॥ पवित्रेण पुनी० ॥१४॥ उभाभ्यां देव० ॥१५॥ वैश्वदेवी पुनती० ॥१६॥ चित्पतिर्मा पुनात्व० ॥१॥ वाक्पतिर्मा पुनात्व० ॥२॥ देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।३।

ॐ भूः पुनातु । ॐ भुवः पु० । ॐ स्वः पुनातु । ॐ तत्सवितु० । सर्वं पुनातु । ततः पूर्ववत् 'इमं मे' इत्यष्टभिः प्रतिमन्त्रं मूर्द्धानमभिषिञ्चेत् । अथान्तर्जलेऽघमर्षणं त्रिरावर्तयेत् । द्रुपदा० । विष्णुस्मरणं वा । ततः स्नानाङ्गतर्पणम् । ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् ॥१॥ ततो निवीती भूत्वोदङ्मुखः—सनकादय ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ २ ॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः कव्यवाडनलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् ।३। तीरे आगत्योदकाञ्जलिं गृहीत्वा इमं मन्त्रं पठेत् । यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसंभवात् । तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥ इति जलाञ्जलिं तटे निक्षिपेत् । सव्यम् । आचमनम् । ततो जलात् उत्तीर्य धौते वाससी परिधाय मृदोरू करौ त्रिस्त्रिः प्रक्षाल्य । स्वासने उपविश्य तिलकं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे नित्यस्नानविधिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ प्रातः सन्ध्योपासनप्रयोगः—कर्ता प्राङ्मुख उपविश्य [1]भस्मधारणम् । त्र्यायुपं जटा० शिखाबन्धनम् । त्र्यम्बकं यजा० इति रुद्राक्षमालां धारयेत् । अमुकशर्मा (वर्मा गुप्तः) आचम्य ॐ तत्सदद्येह वाराणस्यां मुक्तिभूमौ विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रः ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातःसन्ध्योपासनमहं करिष्ये । इति सङ्कल्पः । तत आत्मनः समन्तात् प्रदक्षिणमुदकं प्रक्षिप्य रक्षां कुर्यात् । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । इति प्राणायामः । ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं मामसृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा । इत्यनेन आचामेत । ॐ आपो हिष्ठा मयो

---

१ पारस्करगृ० सू०—भस्मनो विधिः—प्रातः ससलिलं भस्म मध्याह्ने गन्धमिश्रितम् । सायाह्ने निर्जलं भस्म एवं भस्म विलेपयेत् ।। १ ।। गङ्गातीरसमुद्भूतां मृदं मूर्ध्ना बिभर्ति यः । बिभर्ति सोऽर्कस्य तेजस्तमो नाशाय केवलम् ।।२।। **धारणे फलम्**—श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने । धृतत्रिपुण्ड्रः पूतात्मा मृत्युं जयति मानवः ।।३।। अधारणे दोषमाह—स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यास्वाध्यायकर्मसु । उर्द्ध्वपुण्ड्रविहीनश्चेत्तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।। ४ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुवः । ॐ तान ऊर्जे दधातन । ॐ महेरणाय चक्षसे । ॐ यो वः शिवतमो रसः । ॐ तस्य भाजयतेह नः । ॐ उशतीरिव मातरः । ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः, इत्यन्तं शिरसि । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ, इति भूमौ । ॐ आपो जनयथा-चनः, इति शिरसि मार्जनम् । ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥ इति त्रिः पठित्वा तज्जलं शिरसि प्रक्षिपेत् । ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रोऽअर्णवः । समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ इत्यनेन दक्षिणनासिकायां जलं योजयित्वा तज्जलं वामभागे निक्षिपेत् । ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो-ज्योतीरसोमृतम् । ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् । इत्यनेनाचामेत् । तत उत्थाय-ॐभूर्भुवः स्वरिति गायत्रीं पठित्वा पुष्पमिश्रं जलाञ्जलित्रयं सूर्याभिमुखं प्रक्षिपेत् । ततः कृताञ्जलिः सूर्यं ध्यायन्नुपतिष्ठेत्—ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् । देवं देवत्रासूर्य्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥ ॐ चित्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्ष ँ सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥३॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदःशतंप्रब्रवाम शरदःशतमदीनाःस्याम शरदःशतम्भूयश्च शरदःशतात्॥४॥ ॐ हृदयाय नमः । ॐ भूः शिरसे स्वाहा । ॐ भुवः शिखायै वषट् ॐ स्वः कवचाय हुम् । ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् । इत्यङ्गानि त्रिरावृत्त्य । ततः गायत्रीध्यानम्—श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा । श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥ १ ॥ आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा । अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥ २ ॥ ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि । प्रियन्देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ ३ ॥ इत्यावाह्य—ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदोम् ॥ इत्युपस्थाय । ततः अष्टोत्तरशतसंख्याकां गायत्रीं जपेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ततः प्रणिपत्य विसर्जयेत् । अनेन प्रातः सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् । प्रमादात्कु० ॥ ३ ॥ इति सन्ध्याविधिः ॥

अथ तर्पणप्रयोगः—अपसव्यं कथं स्त्रीणां श्राद्धे कार्यं भवेत्तदा । अञ्चलस्यैव ॥७५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निक्षेपो वामदक्षिणयोर्भवेत् ॥ तर्पणं प्रत्यहं कार्यं भर्तुः कुशतिलोदकैः । तत्पितुस्तत्पितुश्चापि नामगोत्रादिपूर्वकम् ॥ आचम्य पवित्रधारणं कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् । देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं (अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाममुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां तथा समस्तपितॄणामक्षय्यतृप्त्यर्थममुकपर्वनिमित्तं अमुकतीर्थप्राप्तिनिमित्तं) देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणमहं करिष्ये ।

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः । आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः ॥ १ ॥ ततः सव्यं पूर्वाभिमुखः त्रिकुशतण्डुलोदकेन ब्रह्मादिभ्यः प्रत्येकमेकैकाञ्जलिं दद्यात् । तद्यथा—ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् ॥ १ ॥ विष्णुस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ रुद्रस्तृप्यताम् ॥ ३ ॥ प्रजापतिस्तृप्यताम् ॥ ४ ॥ देवास्तृप्यन्ताम् ॥ ५ ॥ छन्दांसि तृप्यन्ताम् ॥ ६ ॥ वेदास्तृप्यन्ताम् ॥ ७ ॥ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ॥ ८ ॥ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ॥ ९ ॥ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् ॥ १० ॥ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ॥ ११ ॥ संवत्सराः सावयवास्तृप्यन्ताम् ॥१२॥ देव्यस्तृप्यन्ताम् ॥१३॥ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् ॥ १४ ॥ देवानुगास्तृप्यन्ताम् ॥ १५ ॥ नागास्तृप्यन्ताम् ॥ १६ ॥ सागरास्तृप्यन्ताम् ॥ १७ ॥ पर्वतास्तृप्यन्ताम् ॥ १८ ॥ सरितस्तृप्यन्ताम् ॥ १९ ॥ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् ॥ २० ॥ यक्षास्तृप्यन्ताम् ॥ २१ ॥ रक्षांसि तृप्यन्ताम् ॥ २२ ॥ पिशाचास्तृप्यन्ताम् ॥ २३ ॥ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् ॥ २४ ॥ भूतानि तृप्यन्ताम् ॥ २५ ॥ पशवस्तृप्यन्ताम् ॥ २६ ॥ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ॥ २७ ॥ ओषधयस्तृप्यन्ताम् ॥ २८ ॥ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् ॥ २९ ॥ मरी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

चिस्तृप्यताम् ॥ ३० ॥ अत्रिस्तृप्यताम् ॥ ३१ ॥ अङ्गिरास्तृप्यताम् ॥ ३२ ॥ पुलस्त्यस्तृप्यताम् ॥ ३३ ॥ पुलहस्तृप्यताम् ॥ ३४ ॥ क्रतुस्तृप्यताम् ॥ ३५ ॥ प्रचेतास्तृप्यताम् ॥ ३६ ॥ वसिष्ठस्तृप्यताम् ॥ ३७ ॥ भृगुस्तृप्यताम् ॥ ३८ ॥ ततो निवीत्यदङ्मुखः यवोदकेन सनकादिभ्यः द्वौ द्वौ अञ्जली दद्यात् । सनकस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ सनन्दनस्तृप्यताम् ॥२॥ सनातनस्तृप्यताम् ॥२॥ कपिलस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ आसुरिस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ वोढुस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ॥ २ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा [अनुपनीतशूद्रादेस्तूत्तरीयेणैव सव्यापसव्ये विज्ञेये । तस्योपवीतस्थानीयत्वात्] दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः मोटकं गृहीत्वा सतिलजलाञ्जलित्रयेण पितृतीर्थेन तर्पयेत् ॥ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं० ॥३॥ सोमस्तृप्यतामिदं० ॥३॥ यमस्तृप्यतामिदं० ॥३॥ अर्यमा तृप्यतामिदं० ॥ ३ ॥ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं० ॥ ३ ॥ सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः ॥ ३ ॥ बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं० ॥ ३ ॥ यमाय नमः ॥ ३ ॥ धर्मराजाय नमः ॥ ३ ॥ मृत्यवे नमः ॥ ३ ॥ अन्तकाय नमः ॥ ३ ॥ वैवस्वताय नमः ॥ कालाय नमः ॥ ३ ॥ सर्वभूतक्षयाय नमः ॥ ३ ॥ औदुम्बराय नमः ॥ ३ ॥ दध्नाय नमः ॥ ३ ॥ नीलाय नमः ॥३॥ परमेष्ठिने नमः ॥ ३ ॥ वृकोदराय नमः ॥ ३ ॥ चित्राय नमः ॥ ३ ॥ चित्रगुप्ताय नमः ॥३॥ [1]जीवित्पितृकोऽप्येतान् । अन्यांश्चेतर आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोञ्जलिम् । इति पितॄनावाह्य

१ अत्र जीवित्पितृकोऽप्येतानिति वदता सूत्रकारेणैतच्छब्देन यमादिचित्रगुप्तान्ताः परिसंख्याताः ॥ यत्तु स्मृत्यन्तरम् 'येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्सुतः स्वयमि'ति ; तत्तु पतितसंन्यासिजीवितपितृकविषयकम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

तर्पयेत् । उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः । असुंय्यऽईयुरवृ-
काऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु ॥ अद्यामुकगोत्रः पिता अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं
सतिलं तस्मै स्वधा नमः ॥ १ ॥ अङ्गिरसोनः पितरो नवग्वाऽअथर्व्वाणो भृगवः
सोम्यासः । तेषां व्वय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ अद्यामु-
कगोत्रः पिता अमुकशर्मा तृ० धा ॥ २ ॥ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वाताः
पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥
अद्यामुकगोत्रः पिता अमुकशर्मा तृप्य०॥३॥ ऊर्जंवहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ।
स्वधास्य तर्पयत मे पितॄन् ॥ अद्यामुकगोत्रः पितामहः अमुकशर्मा तृप्य० । पितृभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अत्तन्न पितरो
मीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः शुन्धध्वम् ॥ अद्यामुकगोत्रः पितामहः अमुकशर्मा तृप्य० ।
ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँऽउ च न प्रविद्म। त्वं वेत्थ यति ते जात-
वेदः स्वधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व ॥ अद्यामुकगोत्रः पितामहः अमुकशर्मा तृप्य० धा ।
मधुव्वाता० अद्यामुकगोत्रः पितामहः अमुकशर्मा तृप्य० धा । मधुनक्त० । अद्यामुकगोत्रः प्रपि-
तामहः अमुकशर्मा तृप्य० धा । मधुमान्नो० । अद्यामुकगोत्रः प्रपितामहः अमुकशर्मा तृप्य धा० ।३।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

॥ ३ ॥ इति पित्रादिभ्योऽञ्जलित्रयं दद्यात् । नमो वः पितरो रसाय, नमो वः पितरः शोषाय, नमो वः पितरो जीवाय, नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे, नमो वः पितरः पितरो,नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः देष्म । एतद्वः पितरो वास आधत्त पितरो इत्येकैकाञ्जलिं दद्यात् ।१। अद्यामुकगोत्रः प्रमातामहः अमुकशर्म्मा तृप्य० । एवमपरमञ्जलिं दद्यात् ।अद्यामुकगोत्रः प्रमातामहः अमुकशर्म्मा तृप्य० धा ॥२॥ अद्यामुकगोत्रः वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा तृप्य० ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रा माता अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं सतिलं तस्यै स्वधा ॥ ४ ॥ अद्यामुकगोत्रा पितामही अमुकी देवी तृप्य० धा ॥ अद्यामुकगोत्रा प्रपितामही अमुकीदेवी तृप्य० धा । अद्यामुकगोत्रा मातामही अमुकी देवी तृप्य० धा ॥ अद्यामुकगोत्रा प्रमातामही अमुकीदेवी तृप्य० धा ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकीदेवी तृप्य० धा ॥३॥ अद्यामुकगोत्रा पत्नी अमुकी देवी तृप्य० धा ॥३ ॥ अद्यामुकगोत्रः पुत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकः ससुतः तृप्य० धा ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रा पुत्री अमुकीदेवी तृप्य० धा ॥३॥ अद्यामुकगोत्रः पितृव्यः अमुकशर्मा सपत्नीकः तृप्य० धा ॥३॥ अद्यामुकगोत्रः मातुलः अमुकशर्मा सपत्नीकः तृप्य० धा ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रः ज्येष्ठकनिष्ठभ्राता अमुकशर्मा सपत्नीकः तृप्य० धा ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रा पितृभगिनी अमुकीदेवी सभर्तृका सापत्यका तृप्य० धा । अद्यामुकगोत्रा मातृभगिनी अमुकी देवी तृप्य० धा ॥३॥ अद्यामुकगोत्रा आत्मभगिनी अमुकीदेवी सभर्तृका सापत्यका तृप्य० धा। अद्यामुकगोत्रः श्वशुरः अमुकशर्मा सपत्नीकः तृप्य० धा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्यामुकगोत्रः गुरुः अमुकशर्मा तृप्य० धा ॥ ४ ॥ अज्ञातनामगोत्राः समस्ताश्रितपितरस्तृप्यन्ताम् ॥ ततोऽञ्जलौ जलं गृहीत्वा तर्पयेत्[1] । [सव्येन] देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः । पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ॥ १ ॥ जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः । प्रीतिमेतैः प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ॥२॥ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ॥ तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ॥ ३ ॥ ये बान्धवाऽबान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥ ४ ॥ (अपसव्येन) ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः । ते तृप्यन्तु मया दत्तं[2] वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ ५ ॥ इति स्नानवस्त्रं वामभागे भूमौ निष्पीड्य यदि गृहे मृततिथौ सांवत्सरिकश्राद्धादिकर्म स्यात्तर्हि वस्त्रनिष्पीडनं न कुर्यात् । स्वयम्, आचम्य

---

१ वस्त्रनिष्पीडनप्रकारः—निष्पीडयति यः पूर्वंस्नानवस्त्रमतर्पिताः । निराशा पितरो यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् । तस्य निषेधमाह-द्वादश्यां पञ्चदश्यां च संक्रान्तौ श्राद्धवासरे । वस्त्रं निष्पीडयेन्नैव न च क्षारेण योजयेत् ।

२ अथ प्रसङ्गात्तिलतर्पणनिषेधस्तदाह मरीचिः—सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिनेऽपि वा । भृत्यपुत्रकलत्रार्थी न कुर्यात्तिलतर्पणम् ॥१॥ नन्दायां भार्गवदिने कृत्तिकासु मघासु च । भरण्याम्भानुवारे च गजच्छायाह्वये तथा । तर्पणं नैव कुर्वीत तिलमिश्रं कदाचन ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

ब्रह्मादीन् देवान् गन्धपुष्पादिभिरर्घ्यं दद्यात् । ब्रह्म यज्ञानं० । ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ अर्घ्यं समर्पयामि । इदं विष्णु० विष्णवे नमः ॥ २ ॥ नमस्ते रुद्र० । रुद्राय नमः ॥३॥ आकृष्णेन । सवित्रे नमः ॥४॥ मित्रस्यचर्षणोधृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥ मित्राय नमः ॥ ५ ॥ इमम्मे व्वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ वरुणाय नमः ॥ ६ ॥ तत उत्तिष्ठन्नूर्ध्वबाहुः अदृश्रमस्यकेतवो विरश्मयो जना २ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥१॥ ह र्ठ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जे गोजाऽऋतजा अद्रिजाऽऋतं बृहत् ॥ इति मन्त्राभ्यां सूर्यमुपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्य । आदित्याय नमः ॥ इत्यादित्यं नमस्कृत्य दिग्भ्यो नमः, । दिग्देवताभ्यो नमः ॥ नमस्कृत्योपविश्य ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ अग्नये नमः ॥ २ ॥ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ ओषधिभ्यो नमः ॥ ४ ॥ वाचे नमः ॥ ५ ॥ वाचस्पतये नमः ॥ ६ ॥ विष्णवे नमः ॥ ७ ॥ महद्भ्यो नमः ॥ ८ ॥ अद्भ्यो नमः ॥ ९ ॥ अपां पतये नमः ॥ १० ॥ वरुणाय नमः ॥ ११ ॥ इति जलमध्ये नमस्कृत्य । [१]सम्वर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सर्ठ शिवेन त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो नुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् ॥ इति जपं सजलकरद्वयेन मुखं विमृष्टे । देवा गातु विदो गातुवित्वा गातु मित मन-

१ य सं- अ ८ मं-१४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सस्पतऽइमं देव यज्ञᳪं स्वाहा वातेधाः ॥ इति विसर्जयेत् । अनेन देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणा-ख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् ॥ ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु । प्रमादात्कुर्वताम्० । विष्णवे नमः ॥ ३ ॥ पवित्रत्यागः । कृतस्य कन्यागतमहालयापरपक्षनिमित्तकदेवर्षिमनुष्यपितृतर्पणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मन्त्रपाठकाय ब्राह्मणायेदमामान्नं सोपस्करं सदक्षिणाकं दातुमहमुत्सृजे ।

इति लघुदर्पणे तर्पणप्रयोगः ।

अथाऽऽमान्नदानम्—आचम्य । प्राणानायम्य प्रोक्षणम् । अपवित्रः० पठेत् । शान्ताकारं० । देयद्रव्येभ्यो नमः । गन्धपुष्पतुलसीदलैः संपूज्य । देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकगोत्रा अमुकीदेवी) मम समस्तपापक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं द्वादशीपर्वनिमित्तम् १ पौर्णमासीप० २ अमावास्याप० ३ व्यतीपातयोगप० ४ वैधृतियोगप० ५ अमुकसंक्रान्तिप० ६ अमुकग्रहणप० ७ इदमामान्नं सोपस्करं दक्षिणासहितं पात्ररहितम्, इदमामान्ननिष्क्रयीभूतं द्रव्यम्, इदं मधुरमिष्टान्नं दक्षिणासहितम्, इदं घृतं सुवर्णं वा दक्षिणासहितम्, यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । इमानि तण्डुलदधिघृतगुडलवणद्रव्याणि तत्तद्दैवतानि दक्षिणासहितानि नाना-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । प्रार्थना—**त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूतदयानिधे । दानेनानेन सन्तुष्टः प्रयच्छ मम वाञ्छितम् ॥ १ ॥ इदं दानं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो । न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ॥ २ ॥ व्यतीपात**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

नमस्तेऽस्तु सोमसूर्यसुत प्रभो । यद्दानादिकृतं किञ्चित्तदनन्तमिहास्तु मे ॥३॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् । करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत ॥ ४ ॥ ॐ तत्सत् श्रीकृष्णार्पणमस्तु। प्रमादात् कु० । विष्णवे० ३ । देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अपसव्यं कृत्वा–अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणामक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थममुकपर्वनिमित्तमिदमामान्नं सोपस्करं दक्षिणासहितं यथा० ब्रा० दा० उत्सृजे । सव्यं विष्णवे० ३ ।

इति आमान्नदानम् ।

अथ धर्मघटदानम्—कर्त्ता प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य उदकुम्भं ब्राह्मणं च सम्पूज्य देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा उदकुम्भदानकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थं मेषसंक्रान्ति––अक्षय्यतृतीया––युगादिमहापर्वनिमित्तमिमं धर्मघटमृतुफलव्यञ्जनसक्तुशर्करादक्षिणासहितं यथानामगोत्राय० उत्सृजे । एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः । अस्य प्रदानात्सफला मम सन्तु मनोरथाः ॥ विष्णवे० ३ । देशकालौ अमुकशर्मा अपसव्यम्–अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणामक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थमिममुदकुम्भं यथोपस्करयुतं सदक्षिणाकं यथा० उत्सृजे । एष धर्म० । अस्य प्रदानात् तृप्यन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितरोऽथ पितामहाः ॥ १ ॥ गन्धोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं फलान्वितम् । पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ सव्यं विष्णवे० ॥ ३ ॥ इति घटदानम् । देशकालौ० मम श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं निर्जलैकादशीपर्वनिमित्तमिमं शर्करायुतमुदकुम्भं सोपस्करं दक्षिणासहितं यथा० उत्सृजे ॥ देवदेव हृषीकेश संसारार्णव तारक । उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम् ॥ देशकालौ० मम एकादशीव्रतकल्पोक्तफलाहारादिना तर्पयिष्ये ॥

अथ जगन्नाथयात्राहवनविधिः—ग्रहशान्तिवत्कुर्यात् । तत्र विशेषः—देशकालौ सं० जगन्नाथयात्रानियमलोपजन्यसकलदोषपरिहारद्वारा शरीरशुद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ देशकालौ० मम सपरिवारश्रीजगन्नाथदेवताप्रीतिद्वारा तत्पुरीययात्राकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं सपरिवारजगन्नाथपूजनहवनादि कर्माहं करिष्ये । सर्वतोभद्रस्थकलशे—जगन्नाथाय नमः । सुभद्रायै नमः । बलभद्राय नमः । इति नाममन्त्रैः संपूज्य प्रार्थयेत् । जगन्नाथ नमस्तुभ्यं संसारभयनाशन । जगदीश्वराय देवाय भूतानां पतये नमः ॥ ततोऽग्निस्थापनादि । ग्रहहोमानन्तरं प्रधानहोमः । अन्यत्समानम् ।

इति हवनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ सुवृष्टिप्रयोगः—देशकालौ० अस्मिन्देशे अनावृष्टिनिवृत्तिद्वारा सद्यः सुवृष्ट्यर्थं पर्जन्यमन्त्रस्य सहस्रसंख्याकजपं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये । तन्मन्त्रः—ॐ महा ँ२ऽइन्द्रोऽ-ओजसापर्ज्जन्योवृष्टिमा ँ२ इव । स्तोमैर्वत्स्यस्य वा वृधे ॥ इति ।

देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतिद्वारा साम्बसदाशिवलिङ्गोपरि बिल्वपत्रसमर्पणकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं अद्यारभ्य श्रावणशुक्लपौर्णिमापर्यन्तं असति प्रतिबन्धे प्रतिदिनं सार्धशतद्वयबिल्वपत्रैः अमुकलिङ्गपूजां ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये । मत्सङ्कल्पितबिल्वपत्रसमर्पणाख्ये कर्मणि एभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि—इति प्रतिवचनम् । प्रमादा० । विष्णवे० ॥ ३ ॥

अथ वायनदानम्—देशकालौ० अमुकगोत्रा अमुकीदेवी मम श्रीउमामहेश्वरप्रीतिद्वारा इह जन्मनि जन्मान्तरे चाचलसौभाग्यपुत्रपौत्रधनधान्यप्राप्त्यर्थं हरितालिकातृतीयाव्रतपरिपूर्णतासिद्ध्यर्थमिदं वायनं सोपस्करं सदक्षिणाकं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।
वायनं फलसंयुक्तं दक्षिणावस्त्रसंयुतम् । सौभाग्यद्रव्यपक्वान्नमर्पये व्रतपूर्तये ॥ १ ॥

अथ वामनद्वादश्यां शिक्यदानम्—देशकालौ० मम श्रीवामनप्रीत्यर्थं वामनद्वादशीमहापर्वनिमित्तमिदं दधितण्डुलादिसहितं शिक्यं सदक्षिणं यथानामगोत्राय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ देवेश्वराय देवाय देवसम्भूतिकारिणे । प्रभवे सर्वदेवानां वामनाय नमो नमः ॥ १ ॥

अथ नवरात्रपूजाविधिः—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य श्रीदुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकदीर्घायुर्धनपुत्रादिवृद्धिशत्रुजयकीर्तिलाभप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं अद्य प्रतिपत्प्रभृति महानवमीपर्यन्तं प्रत्यहं दुर्गापूजां कुमारीपूजनादि च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य दुर्गामावाहयेत् । आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदनि । पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥ दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय । बलिपूजां गृहाण त्वं अष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ इत्यावाह्य दुर्गायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि । यशो देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ अनेन पूजनाख्येन कर्मणा श्रीदुर्गा प्रीयताम् । ब्राह्मणपूजनम् । यथाविहितं दुर्गापाठं कुरु । यथाज्ञानं करवाणि । इति प्रतिपत्कृत्यम् ॥

अथ दुर्गापाठविधिः—आचम्य प्राणानायम्य अपवित्रः प० वा० सुमुखश्चैकदन्तश्च० । देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा आत्मनो मनोऽभिलषितकार्यसिद्ध्यर्थं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं च कवचार्गलाकीलकसहितं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गतं "मार्कण्डेय उवाच । सावर्णिः सूर्यतनय" इत्यारभ्य "सावर्णिर्भविता मनुः" इत्यन्तं "शरणागत" इत्यादिना प्रतिमन्त्रसम्पुटितमादावन्तेऽष्टोत्तरशतनवार्णमन्त्रसम्पुटितं सप्तशतीस्तोत्रपाठमद्यारभ्य नवरात्रपर्यन्तं प्रतिदिनं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये । इति सङ्कल्पः ।

वरणम्—अस्मिन् सम्पुटितसप्तशतीस्तोत्रपाठाख्यकर्मणि एभिः पूगोफलाक्षतद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं पाठकर्तृत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । यथाविहितं पाठं कुरु । यथाज्ञानं करवाणि । अथाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो यजमानस्य कृतसङ्कल्पसिद्ध्यर्थं रात्रिसूक्तादिदेवीसूक्तान्तस्य नवार्णमन्त्रसम्पुटितस्य सप्तशतीस्तोत्रस्य पाठमहं करिष्यामि इति सङ्कल्पः । अथवा दुर्गादिपीठे गत्वा तत्रैवं सम्पूज्य पुस्तकपूजनम्, कवचम्, अर्गला, कीलकम् । नवार्णन्यासः, ध्यानम्, नवार्णजपः, रात्रिसूक्तम्, ऋष्यादिन्यासः, सप्तशतीस्तोत्रपाठः । [1]इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुलविनाशः । अध्यायो हरते प्राणान्मार्कण्डेयादिकं ब्रुवे ॥ अन्ते 'खड्गिनी' इत्यादिन्यासः, देवीसूक्तम्, नवार्णजपः, प्रार्थना—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादात्तव सुन्दरि ॥ इति जपं देव्यै समर्प्य रहस्यत्रयं पठेदिति क्रमो बोध्यः । **यदत्र पाठे जगदम्बिके**

---

१ अध्यायान्ते इति शब्दन्नोच्चारयेदिति निष्कृष्टार्थः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मया विसर्गबिन्द्वक्षरहीनमीरितम् । तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः सङ्कल्पसिद्धि-स्तु सदैव जायताम् ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं स्वरव्यञ्जनवर्जितम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

॥ इति दुर्गापाठविधिः ॥

अथ शतचण्डीविधिः—शुभेऽह्नि प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सं० मम सकुटुम्बस्य श्रीदुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकदीर्घायुर्विपुलधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्ध्यर्थं नवचण्डीं शतचण्डीं वा (पाठान्) दुर्गासन्निधौ ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये इति सङ्कल्प्य । गणपतिं सम्पूज्य आचार्येण सह दश ब्राह्मणान् वृणुयात् ॥ अस्मिन् शतचण्डीपाठकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं शतावृत्त्यन्तर्गतयथाविभागसप्तशतीपाठकर्तृत्वेन त्वामहं वृणे, वृतोऽस्मि । अथाचार्यो वद्यां कलशं स्थापयित्वा तत्र दुर्गामावाह्य सम्पूजयेत् । सर्वे विप्राः कृताङ्गन्यासाः तदग्रे प्रत्येकं दशकृत्वः सप्तशतीमयुतं नवार्णं च जपेयुः । ततो यजमानसङ्कल्पितशतचण्डीपाठान्तर्गतपाठमेकमहं करिष्यामि इति सं० । हविष्यभोज्यभोजनब्रह्मचर्यभूशयनस्पृश्यादिनियमांश्च चरेयुः । यजमानश्च नवकन्याभोजनवस्त्रादिना पूजयेत् । एवमृत्विजः प्रत्येकं प्रथमे दिन एकं, द्वितीये द्वे, तृतीये त्रीणि, चतुर्थे चत्वारि, रूपाशीत्येवं जपं कुर्युः । पञ्चमेऽह्नि होमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ दुर्गाष्टमीपूजाविधिः—आचम्य । प्राणानायम्य । देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य श्रीदुर्गादेवीप्रीतिद्वारा धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं शारदीयनवरात्राष्टमी-महापर्वणि कुलदेविदुर्गाज्योतीरूपदुर्गापूजां च करिष्ये । ज्योतिःप्रज्वालनम्, या माया० । कुलदेविदुर्गायै नमः । ध्यानं स० । नाममन्त्रेण सम्पूज्य । जयन्ती० । सर्वमङ्ग० । शरणागत० । ज्योतीरूपायै दुर्गायै नमः, सर्वस्वरूपे० । अथ पुस्तकपूजनम् । सर्वमन्त्रतन्त्रदेवमयदुर्गायै नमः इति सम्पूज्य । ब्राह्मणं सम्पूज्य । शक्रादयः सुरगणा० इत्यध्यायं । देव्या हते० इत्यध्यायं च श्रावयेत् । ततः कुमारीपूजनम् । ब्राह्मणभोजनसंकल्पः । आचार्याय दक्षिणां दत्त्वा भूयसीञ्च दत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । तिलकाशीर्वादः । अनेन मया कृतेन शारदनवरात्रव्रतदुर्गापूजनाख्येन कर्मणा श्रीदुर्गा प्रीयताम् । इत्यष्टमीकृत्यम् ॥

अथ श्रीरामपूजनम्—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० सकलपाप-क्षयपूर्वकं श्रीरामप्रीतिद्वारा पुत्रपौत्रधनधान्यसमृद्धिक्षेमायुःपुष्ट्यादिफलसिद्धये श्रीरामनवमीव्रताङ्ग-भूतां षोडशोपचारैः श्रीरामपूजां करिष्ये । ध्यानम् । रामाय नमः । सीतायै नमः । पुरतः–दश-रथाय० कौशल्यायै० । दक्षे पृष्ठे–लक्ष्मणाय० । पार्श्वे–भरताय० । वामपार्श्वे–शत्रुघ्नाय० । पुरतो–हनुमते नमः । सम्पूज्य । आचार्याय दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । रात्रौ दुर्गापाठ-होमान्ते देवीं सम्पूज्य विसर्जयेत् । उत्तिष्ठ देवि (चण्डेशि) चामुण्डे शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥ इति नवरात्रविधिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ होमदिनकृत्यम्—शतचण्ड्यां द्विहस्तमितं यथोक्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा विधायैकैको द्विजः सकृत् सप्तशतीप्रतिश्लोकं सहस्रं मूलेन च जुहुयात्। होमे त्वत्रोक्तमन्त्र-विभागं ज्ञात्वा प्रतिश्लोकं होमतर्पणादिकं कुर्यात्। ततः शतं यथाशक्त्या वा ब्राह्मणान् भोजयेत्, मन्त्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्या-मावाहयाम्यहम्॥ इति सम्पूज्य। जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते। देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं शारदीयवासन्तिकायां वा नवरात्राष्टम्यां यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् यथासंख्याकाः कुमारिकाः बटुकांश्च पक्वान्नादिनानाविधसामग्रीभिरहं भोजयिष्यामि। भोजनान्ते दक्षिणां च दास्ये। पाठसमाप्तौ नवम्यां होमः॥

अथ नवरात्रहोमविधिः—तत्रादौ यजमानः शङ्करालये भवान्यालये वा शुभदेशे मण्डपं विधाय मध्यतो होमानुमानात् यथोक्तं स्थण्डिलं विधाय तत्प्राच्यां हस्तोन्मित-हस्तोच्छ्रितां प्रधानवेदीं निर्माय तदुत्तरतस्तावन्मानमितां ग्रहवेदीं च कुर्यात्। कर्ता शुभे पीठासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीमुपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० मया प्रतिपद्दि-नमारभ्य महानवमीदिनपर्यन्तं कृतायाः दुर्गापूजायाः ब्राह्मणद्वारा कृतानां सप्तशतीपाठानां च साङ्गतासिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यात्मकदुर्गाप्रीत्यर्थं सनवग्रहमखसप्तशतीहो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

माख्यं कर्म करिष्ये । श्रीदुर्गाप्रीतिद्वारैतद्ग्रामनगरापणक्षेत्रहट्टवीथीनिवासिसकलप्राणिनामनामयत्व-शान्तिपुष्टयायुरारोग्यसन्मङ्गलाभ्युदयप्राप्त्यर्थं सनवग्रहमखमेकचण्डीपाठहवनं करिष्ये । स्वयं ब्राह्मणद्वारा वा कृतस्य शतचण्डीजपस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशतिलाज्यादिद्रव्येण प्रतिमन्त्रविभागेन ब्राह्मणद्वारा होममहं वा करिष्ये । मम श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं कृतस्य शरणागत इति मन्त्रेण प्रतिमन्त्रसम्पुटितशतचण्डीपाठकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यथ शतचण्डीजपदशांशहवनादिकर्माहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दोश्राद्धं च करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजनादि कृत्वाऽऽचार्यं ब्राह्मणं सदस्यं ऋत्विजं च वृणुयात् ॥ ततो वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य प्रधानपीठेऽष्टदलं निर्माय तन्मध्ये कलशं संस्थाप्य तदुपरि नारिकेलफलं निधाय सुवर्णप्रतिमायां दुर्गां ध्यायेत् । **या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशिनो । शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धलक्ष्मीः परा सा दुर्गा नवकोटिशक्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥** दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि स्थापयामि । इत्यावाह्य । दुर्गायै नमः इति मन्त्रेण यथामिलितोपचारैः सम्पूज्य । जयन्ती मङ्गला० इतिमन्त्रेण प्रार्थयेत् । ततः स्थण्डिले भूसंस्कारपूर्वकमग्निं संस्थाप्य तदैशान्यां कलशं संस्थाप्य तत्र वरुणं सम्पूज्य ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं द्रव्यं त्यक्त्वाऽग्निं सम्पूज्य ग्रहहोमं कृत्वा तिलसर्पिषा मिश्रितपायसद्रव्येण प्रतिश्लोकं सप्तशतीमन्त्रेण जुहुयात् । प्रधानान्ते च प्रत्यध्यायं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्रुचि चतुर्वारमाज्यं क्षिप्त्वा तत्र पूगीफलं निधाय 'जयन्ती मङ्गला काली०' इति मन्त्रेण तिष्ठन् जुहुयात् । 'शूलेन पाहि०' इत्यादिश्लोकचतुष्टयं तदाहुतिचतुष्टयं 'महालक्ष्म्यै स्वाहा' इति मन्त्रेण देयम् ॥ एवं [1]होमं समाप्य स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा तद्दशांशेन नवार्णमन्त्रेण तर्पणमार्जने कार्ये ॥

अथ तर्पणम्—देशकालौ० श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं जपाङ्गहोमदशांशेन तर्पणं करिष्ये । चन्दनाक्षतपुष्पयुतोदकेन तर्पयेत् । मूलमन्त्रं पठित्वाऽन्ते साङ्गां सपरिवारां दुर्गां तर्पयामि । इति तर्पणम् ॥

अथ मार्जनम्—देशकालौ० जपाङ्गतर्पणदशांशभूतं मार्जनं करिष्ये । अथाञ्जलिना शुद्धमुदकमादाय मूलमन्त्रान्ते 'श्रीदुर्गामभिषिञ्चामि' इत्यनेन स्वमूर्द्धन्यभिषिञ्चेत् । इति

---

१ यज्ञियवृक्षाः वायुपुराणे—पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थनिकङ्कताः । उदुम्बरस्तथा बिल्वश्चन्दनो यज्ञियाश्च ये ॥ १ ॥ सरला देवदारुश्च शालश्च खदिरस्तथा । समिदर्थे प्रशस्ता स्युरेते वृक्षा विशेषतः ॥ २ ॥ समिधाविचारः—कात्यायनः—नाङ्गुष्ठादधिका ग्राह्या समित्स्थूलतया क्वचित् । न निर्मुक्तत्वचा चैव न सकीटा न पाटिता॥३॥स०प्रमाणम्—प्रादेशान्नाधिका नोना नच शाखासमा युता । न सपर्णा न निर्वीर्य्या होमेषु तु विजानता ॥ अग्निज्वलनप्रकारः—न कुर्य्यादग्निधमनं कदाचिद्व्यजनादिना । मुखेनैव धमेदग्निं धमन्या वेणुजातया ॥ निषिद्धहोमः—क्षुत्तृट्क्रोधसमायुक्तो हीनमन्त्रं जुहोति यः । अप्रवृद्धे सधूमे वा सोऽन्धः स्याज्जन्मजन्मनि ॥ स्वल्पे रूक्षे सस्फुलिङ्गे वामावर्ते भयानके । ऊर्ध्वकाष्ठैश्च सम्पूर्णे फूत्कारवति पावके ॥ कृष्णार्चिषि सुदुर्गन्धे तथा लिहति मेदिनीम् । आहुतीर्जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवेद् ध्रुवम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

मार्जनम् । ततः आचार्यादिभ्यो दक्षिणां च दद्यात् । ततो ग्रहकलशाद् दुर्गाकलशाच्च जलं गृहीत्वा यजमानमभिषिञ्चेत् । ततो यजमानो ग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य ग्रहपीठमाचार्याय निवेदयेत् । ततो देवीं कुम्भस्थां सम्पूज्य कूष्माण्डं श्रीफलं कदलीफलं वा बलये दद्यात् । तत्र विधिः——देशकालौ संकीर्त्य मम महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यात्मकदुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापन्निरासार्थं कूष्माण्डबलिप्रदानं करिष्ये इति सङ्कल्प्योदङ्मुखो भूत्वा रक्तवस्त्रेणावेष्टितं कूष्माण्डबलिं पूर्वाभिमुखं निधाय निरीक्ष्य कूष्माण्डो बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः । प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपणम् ॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् । चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा । अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ इत्यभिमन्त्र्य ऐं ह्रीं श्रीं इति मन्त्रेण तं बलिं देवतारूपिणं चिन्तयित्वा तन्मूर्ध्नि गन्धपुष्पं निक्षिप्य "रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः । ह्रीं ह्रीं खड्ग इति ध्यात्वा 'खड्गाय नमः' इति गन्धाक्षतपुष्पैः ॐ हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण खड्गमन्यद्वा ह्रीं शस्त्रं हस्ताभ्यां गृहीत्वा "ॐ कालिकालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डायै नमः" इति मन्त्रेण बलिं छेदयेत् । "ॐ ऐं ह्रीं कौशिकि कूष्माण्डरसेनाप्यायताम्" इति मन्त्रेण बलिं समर्पयेत् । अनेन बलिदानेन महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपिण्यो दुर्गाः प्रीयन्ताम् । ततः पाठकर्तारं सम्पूज्य दक्षिणां दद्यात् । देव्या उत्तरपूजां विधाय "रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि । पुत्रान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।। महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि। आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते ।। देवि देवि महादेवि मम पापविनाशिनि । जन्मान्तरकृतां पीडां सद्यो नाशकारी भव ।।" इति सम्प्रार्थ्य कलशविसर्जनं कृत्वा देवीं विसर्जयेत् "उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह ।।" इति विसृज्याऽऽचार्याय दत्त्वा मन्त्रं पठेत् "त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते । दानेनानेन सन्तुष्टा सुप्रीता वरदा भव ।।" ततोऽग्निं विसृज्य यथासंख्याककुमारिकाबटुकब्राह्मणभोजनं संकल्प्य भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ।

।। इति लघुदर्पणे शतचण्ड्यादिहवनविधिः ।।

अथ विजयादशमी-पूजाविधिः—आचम्य प्राणायामः । देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य क्षेमार्थं विजयसिद्ध्यर्थं च अपराजितापूजनं करिष्ये । तदङ्गतया विष्णुपूजां करिष्ये । इति संकल्प्य । गणपतिं सम्पूज्य । [शङ्खं घण्टां विष्णुं धनुषं बाणं हनुमन्तं च सम्पूज्य] भूमौ चन्दनादिना लिखिताष्टदलपद्ममध्ये अपराजितां० ।१। तद्दक्षिणतः । जयायै० जयां० ।२। तद्वामतः । विजयायै० विजयां० इत्यावाह्य उपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

चारुणा मुखपद्मेन विचित्रकनकोज्ज्वला । जया देवी शिवा भक्त्या सर्वकामा-न्ददातु मे ॥ १ ॥ काञ्चनेन विचित्रेण केयूरेण विराजिता । जयप्रदा महामाया शिवा भावितचेतसा ॥ २ ॥ विजया च महाभागा ददातु विजयं मम ॥ ३ ॥ हारेण तु विचित्रेण भास्वत्कनकमेखला । अपराजिता भद्ररता करोतु विजयं मम ॥ ४ ॥ [खड्गं छुरिकां महाकालीं लेखनीं लक्ष्मीं सरस्वतीं तुलां धर्म-राजं रामायणपुस्तकं जीर्णदीपकं च सम्पूज्य] कर्पूरार्तिक्यं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं कृत्वा गणेशादीनां विसर्जनम् । इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति निवेदिताम् । रक्षार्थं तु समादाय व्रजस्व स्थानमुत्तमम् ॥ ब्राह्मणपूजनम् । दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । तिलकम् । आशिषः । अथ जयाबन्धनमन्त्रः । जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते । धारयाम्यघ-कर्णे त्वां जयलाभाभिवृद्धये ॥ बलं मे देहि वलयमपि शत्रौ पराजयम् । धार-णाऽत्र भवेयुर्मे धनधान्यसमृद्धये ॥ इति विजयादशमीपूजाविधिः ॥

अथ पौर्णिमायां सत्यनारायणपूजनं कथाश्रवणं च कुर्यात् । कृतैतत्सत्यनारायणव्रताङ्गभूतं सत्यनारायणपूजनकथाश्रवणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मनसोद्दिष्टां दक्षिणां यथानामगोत्राय ब्राह्म-णाय दातुमहमुत्सृजे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दीपावलिपूजाप्रयोगः—नक्तकाले कृतनित्यक्रियः सम्भृतसम्भारो यजमानः प्राङ्मुख शुद्धासन उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य । सुमुखश्चैक० देशकालौ स० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम सकुटुम्बस्य सर्वापच्छान्तिपूर्वकविपुलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिक्षेमस्थैर्यविजयकीर्तिलाभशत्रुपराजयायुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्धिद्वारा सदभीष्टसिद्ध्यर्थं वर्तमानेऽस्मिन् व्यापारे शुभपूर्वकचतुर्विधलक्ष्मीविवृद्ध्यर्थं आगतानां संरक्षणार्थं चास्यां सुखरात्रौ गणपत्यम्बिकापूजनपूर्वकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यादिदेवतानां पूजनमहं करिष्ये । देशकालौ स० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यादिदेवताप्रीतिद्वारा शुभमुहूर्ते [1]घृतक्रयविक्रयादिविविधव्यापारे विपण्यां निर्विघ्नतापूर्वकमहरहर्लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीलेखनीतुलापुरुषधर्मराजकुबेरपूजनं च करिष्ये । तत्रादौ नि० गणपतिपूजां करिष्ये । इति संकल्प्य गणपतिं सम्पूज्य नवग्रहाणां पूजनं कुर्यात् । अथ मषीपात्रे कालीं ध्यायेत्—"खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् । नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत् स्वपितौ हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥" आवाहयेन्महाकालीं महासुखप्रदायिनीम् । कार्तिकस्यासिते पक्षे पूजनार्थं समाचरेत् 'यथेमां वाचं कल्याणीमि'ति महाकाल्यै नमः, महाकालीमित्यावाह्य "महाकाल्यै नमः"

१ घृत इत्युपलक्षणं तत्तद्व्यापारेषु तत्तन्नामनिर्देशस्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

इति मन्त्रेण सम्पूज्य। प्रार्थयेत्—"जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोऽस्तु ते ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनी। महाकालि नमस्तेऽस्तु सुखरात्रिं कुरुष्व मे ॥" ततो लक्ष्मीपूजनम्, तच्च सुवर्णरजतादिद्रव्येषु; एवं कुर्वन्त्याचारात्। "या श्रीः पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणसहितैः स्नापिता हेमकुम्भैर्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता॥ "इति ध्यात्वा "श्रीश्चते" इति महालक्ष्म्यै नमः इति मन्त्रेण यथामिलितोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। नमस्ते सर्वदेवानां वरदाऽसि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ॥ विश्वरूपस्य भार्याऽसि पद्मे पद्मालये शुभे। महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं सुखरात्रिं कुरुष्व मे ॥ वर्षाकाले महाघोरे यन्मया दुष्कृतं कृतम्। सुखरात्रिप्रभातेऽद्य तन्मे लक्ष्मीर्व्यपोहतु ॥ या रात्रिः सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता। संवत्सरप्रिया या च सा ममास्तु सुमङ्गला ॥ माता त्वं सर्वभूतानां देवानां सृष्टिसम्भवा। आख्याता भूतले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवी सुखरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ अथ सरस्वतीं नवीनपत्रे [कागदे] स्वस्तिकागणपत्यादि-नामानि च लिखित्वा ध्यायेत् । "या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणा वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना । या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥" "पावकानः सरस्वत्यै०" सरस्वतीं "महासरस्वत्यै नमः" इति मन्त्रेण पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत् । "शारदे लोकमातस्त्वमाश्रिताभीष्टदायिनी । पुष्पाञ्जलिं गृहाण त्वं मया भक्त्या समर्पितम् ॥ १ ॥ पाहि पाहि जगद्वन्द्ये नमस्ते भक्तवत्सले । नम-स्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥ २ ॥ पाशाङ्कुशधरा वाणी वीणा-पुस्तकधारिणी । मम वक्त्रे वसेन्नित्यं दुग्धकुन्देन्दुनिर्मला ॥ ३ ॥ महाविद्या महावाणी श्रुतिस्मृतिप्रदायिनी । साक्षात्सरस्वती देवी जिह्वाग्रे मम तिष्ठतु" ॥४॥ एकतन्त्रपक्षे महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो नमः, इति पूजयेत् ॥ ततो लेखनी-पूजनम्—"लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना । लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्य-हम् ॥ चित्रलेखिन्यै नमः" इति मन्त्रेण सम्पूज्य । प्रार्थयेत्—[1]"लेखनि त्वं महादेवि सर्वविद्या-प्रकाशिनि । मद्गृहे धनधान्यादिसमृद्धिं कुरुसर्वदा ॥"

---

१ लेखिन्यै ते नमस्तेऽस्तु लाभकर्त्र्यै नमो नमः । सर्वविद्याप्रकाशिन्यै शुभदायै नमो नमः ॥ पुस्तके चार्चिता देवि सर्वविद्यान्नदा भव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ तुलापूजनम्—"त्वं तुले सर्वदेवानां प्रमाणमिह कीर्तिता । अतस्त्वां पूजयिष्यामि धर्मार्थसुखहेतवे ॥ तुलाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः" इति मन्त्रेण पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—पदार्थमानसिद्ध्यर्थं ब्रह्मणा कल्पिता पुरा । तुला नामेति कथितं संख्यारूपामुपास्महे ॥ उन्मानं धनधान्यानां तोलनाय विनिर्मितम् । लोकानां धर्मरक्षार्थं तस्मात्त्वं पूजयाम्यहम् ॥

अथ धर्मराजपूजनम्—"धर्मराजाय नमः" इति पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—"एहि धर्मवतां श्रेष्ठ धर्माधर्मविचारक । धर्मेण धारयेल्लोकान् धर्मराज नमोऽस्तु ते" ॥ ततो गजपूजनम्—"वसनव्यवहाराणां साक्षाद्देवः शचीपतिः । त्वमेव रचितो राज्ञा लोकानां स्थितिहेतवे ॥ अतस्त्वां पूजयिष्यामि गजराज नमोऽस्तु ते । ददातु वसने वृद्धिं धनैर्युक्तं करोतु माम् ॥ गजाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमो नमः" ॥ इति पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—"गजराज नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक । सुखदः पुत्रपौत्रादेः सर्वदा वृद्धिहेतवे" ॥ ततो देहल्यां विपणिपूजनम्—"विपण्यधिष्ठातृदेवतायै नमो नमः" इति पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—"विपणि त्वं महादेवि धनधान्यप्रवर्द्धिनि । मद्गृहे सुयशो देहि धनधान्यादिकं तथा । आयुः पशून्प्रजां देहि सर्वसम्पत्करी भव ॥" अथ (भाण्डागारे) कुबेरपूजनम् ॥ स्वर्णभासं कुबेरं

CC0: In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च गदापाण्यश्ववाहनम् । चित्रिणीपद्मासहितं निधीश्वरमहं भजे ।। कुबेराय नमः इति मन्त्रेण आवाहनादिपुष्पाञ्जल्यन्तं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—"धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च । भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पदः ।। कुबेराय नमस्तुभ्यं नानाभाण्डारसंस्थिता । यत्र लक्ष्मीर्भवेद्देव धनं चिनु नमोऽस्तु ते ।" "वसनाय नमः" इति सम्पूज्य ततो द्रव्यबन्धनवस्त्रेषु स्वस्तिकानि लिखित्वा तन्मध्ये हरिद्राग्रन्थिपञ्चकं करञ्जपञ्चकमक्षतान् दूर्वाश्च प्रक्षिप्य तत्र लक्ष्मीं संस्थाप्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं प्रसन्ना भव मङ्गले । स्वर्णवित्तादिरूपेण मद्गृहे त्वं चिरं वस ।। मम व्यापारे वृद्धिपूर्वकं लक्ष्मि सुस्थिरा भव "स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्व्वन् । पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहणः ।।" इति मन्त्रेण भाण्डागारस्थाने निदध्यात् । कर्पूरार्तिक्यं कृत्वा ब्राह्मणान् सम्पूज्य गुडधान्यदिकं लोकेभ्यो देयम् । आचार्याय दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दत्त्वा च "यस्य स्मृत्या" इति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । ततस्तिलकाशीर्वादौ कार्यौ । इति लघुदर्पणे दीपावलिपूजनविधिः ।।

अथ हरितालिकाव्रतोद्यापनम्—देशकालौ संकीर्त्य मम भार्यायाः समस्त पापक्षयपूर्वकं अखण्डसौभाग्यादिविविधभोगप्राप्तिपुत्रपौत्रैश्वर्यशिवलोकप्राप्तिद्वारा आचरितस्य आचरिष्यमाणस्य च वा हरितालिकाव्रतस्य सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थञ्च हरितालिकाव्रतोद्यापनं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

यात् । वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य उक्तविधिना लिङ्गतोभद्र ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च पूर्ववत् कुर्यात् । तदुपरि व्रीहिस्थकलशे राजतं शिवं तद्वामभागे हैमीं गौरीं पुरतो राजतं वृषभं च उक्तमन्त्रैः प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । तन्मन्त्राः—**नमः शिवाय साम्बाय पञ्चवक्त्राय शूलिने । नन्दिभृङ्गिमहाकालगणयुक्ताय शम्भवे ॥ १ ॥ शिवायै हरकान्तायै प्रकृत्यै सृष्टिहेतवे । नमस्ते ब्रह्मरूपिण्यै जगद्धात्र्यै नमो नमः ॥२॥ ॥ २ ॥ येन कामेन देवि त्वं पूजितासि महेश्वरि । तं पूर्णं कुरु मे कामं सौभाग्यं च प्रयच्छ मे ॥ ३ ॥** ततः सुवासिनीः सम्पूज्य कथाश्रवणादिना रात्रिं निनयेत् । प्रातःकाले नित्यकर्म समाप्य स्थापितदेवतापूजां कृत्वा कुण्डे वा स्थण्डिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहाणां स्थापनं पूजनं च विधाय ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमः कार्यः । तत्र रुद्र-मन्त्रेण शिवं गौरीमन्त्रेण पार्वतीं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यकाभिः तिलयवाज्याहुतिभिर्हुत्वा वृषभ-मन्त्रेण आज्येन वृषभं च हुत्वा ब्रह्मादिदेवताश्च एकैकयाज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य आचार्याय सोपस्करां शय्यां गां च दत्त्वा ब्रह्मादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततः स्थापितदेव-तानां पूजनं विसर्जनं च विधाय षोडश अष्टौ वा सपत्नीकब्राह्मणान् सम्पूज्य षोडशसंख्याकवा-यनानि दद्यात् । तत्र सङ्कल्पः—कृतस्य हरितालिकाव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमानि षोड-शवंशपात्राणि सौभाग्यद्रव्यवस्त्रसहितानि सदक्षिणानि नानागोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यः सपत्नीकेभ्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले दातुमहमुत्सृजे। तत्र मन्त्रः--सौभाग्यारोग्यकामानां सर्वसम्पत्समृद्धये। गौरीगिरीशतुष्ट्यर्थं वायनं ते ददाम्यहम् ॥ १ ॥ कृतस्य हरितालिकाव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं षोडश सपत्नीकब्राह्मणान् अद्य यथाकाले वा अहं भोजयिष्यामि भूयसीदक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।

इति लघुदर्पणे हरितालिकाव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनम्—देशकालौ सङ्कीर्त्य मम भार्यायाः ज्ञानतोऽज्ञानतो वा रजस्वलावस्थायां कृतसम्पर्कजनितदुर्योनित्वदोषपरिहारद्वारा शुभफलप्राप्त्यर्थं आचरितस्य आचरिष्यमाणस्य च ऋषिपञ्चमीव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अरुन्धतीसहितकश्यपादिसप्तर्षिप्रीत्यर्थं च ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य सर्वतोभद्रे सप्तकलशेषु हैमीः अरुन्धतीसहिताः सप्तर्षिप्रतिमाः संस्थाप्य आवाहयेत्। कश्यपायनमः, कश्यपमावाहयामि ।१। अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि २। भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि ३। विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि ४। गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि ५। जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि ६। वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि ७। अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि ८। इति नाममन्त्रैः पूजयेत्। ततो वायनदानम्। वायनं फलसंयुक्तं सघृतं दक्षि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

णान्वितम् । द्विजवर्याय दास्यामि व्रतसम्पूर्तिहेतवे ॥ १ ॥ इति वायनं दत्त्वा क्षमापनं कुर्यात् । तत्र मन्त्रः--न्यूनातिरिक्तकर्माणि मया यानि कृतानि च । क्षमध्वं तानि सर्वाणि यूयं सर्वे तपोधनाः ॥ १ ॥ ततः कथाश्रवणादिना रात्रिं निनयेत् । इत्यारम्भदिनकृत्यम् । द्वितीयदिने प्रातर्नित्यकर्मसमाप्य । ततः स्थापितदेवताः सम्पूज्य कुण्डे वा स्थण्डिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहाणां स्थापनं पूजनं च विधाय ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमः कार्यः । ततः प्रधानहोमः । तत्र क्रमः—पूजोक्तमन्त्रेण अरुन्धतीसहितकश्यपादिसप्तर्षीन् प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यकाभिः तिलयवाज्याहुतिभिर्हुत्वा ब्रह्मादिदेवताश्च एकैकयाऽऽज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा आचार्याय सोपस्करां शय्यां गां च दत्त्वा ब्रह्मादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततः स्थापितदेवतानां पूजनं विसर्जनं च विधाय सपत्नीकान् सप्तसंख्याकब्राह्मणान् सम्पूज्य तेभ्यः क्रमेण प्रतिमासहितान् सप्तकलशान् दद्यात् । तत्र सङ्कल्पः—कृतस्य ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमान् सप्तकलशान् वस्त्रप्रतिमायुतान् पक्वान्नपूरितान् दक्षिणासहितान् नानागोत्रेभ्यः सपत्नीकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले दातुमहमुत्सृजे । मन्त्रः—गृहाण त्वं द्विजश्रेष्ठ प्रतिमादिसमन्वितम् । कलशमृषिसंप्रीत्यै व्रतसम्पूर्तिहेतवे ॥ ततः सप्तभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सप्त गाः दत्त्वा प्रार्थयेत् । सप्तर्षयः शुभाः श्रेष्ठाः सर्वेषां च शुभप्रदाः । सर्वपापं च मे घ्नन्तु ज्ञानतोऽज्ञानतः कृतम् ॥ १ ॥ एते सप्तर्षयः सर्वे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्त्या सम्पूजिता मया । यथोक्तफलदाः सन्तु व्रतस्य फलदायकाः ॥ २ ॥ कृतस्य ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सप्त ब्राह्मणान् एकां सुवासिनीं च अद्य यथाकाले वा अहं भोजयिष्यामि भूयसीदक्षिणां दत्त्वा आशिषो गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा स्वयं भुञ्जीत ।

॥ इति लघुदर्पणे ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापनविधिः समाप्तः ॥

अथ महालक्ष्मीव्रतोद्यापनम्—तिथ्यादि सङ्कीर्त्य मम सकलदौर्भाग्यदुःखनिबर्हणपूर्वकधनधान्यैश्वर्यपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिद्वारा श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मया आचरितस्य आचरिष्यमाणस्य च महालक्ष्मीव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं महालक्ष्मीव्रतोद्यापनं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात् । वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य उक्तविधिना सर्वतोभद्रे देवतानां स्थापनं पूजनं च पूर्ववत् कुर्यात् । तदुपरि व्रीहिस्थकलशे हैमीं महालक्ष्मीप्रतिमां 'श्रीश्चते—' इति मन्त्रेण संस्थाप्य पूर्ववत् सम्पूज्य चन्द्रायार्घ्यं दत्त्वा देवीं प्रार्थयेत् । प्रार्थनामन्त्रः—क्षीरोदार्णवसम्भूते कमले कमलालये । प्रयच्छ सर्वकामान् मे विष्णुवक्षःस्थलालये ॥१॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सौख्यं सौभाग्यमेव च । कुरु श्रियं महालक्ष्मीरप्रियं त्वाशुनाशाय ॥ २ ॥ ततः कथाश्रवणादिना रात्रिं निनयेत् । प्रातःकाले नित्यकर्म समाप्य स्थापितदेवतापूजां कृत्वा कुण्डे वा स्थ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

ण्डिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहाणां स्थापनं पूजनं च विधाय ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमः कार्यः। श्रीसूक्तोक्तमन्त्रैः महालक्ष्मीं कमलैर्हुत्वा 'श्रीश्चते' इतिमन्त्रेण प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्यैः घृताक्तपायसबिल्वघृतद्रव्यैर्हुत्वा मण्डलदेवताश्च एकैकयाज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य आचार्याय गां प्रधानपीठं च दत्त्वा ब्राह्मणादिभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ततः स्थापितदेवतानां पूजनं विसर्जनं च विधाय षोडश सपत्नीकब्राह्मणान् सम्पूज्य षोडशसूर्पेषु षोडशनानाविधफलभक्ष्याणि चन्दनताडपत्रपूगीफलानि ताम्बूलानि च निक्षिप्य अन्यषोडशसूर्पैः सञ्छाद्य सपत्नीकषोडशब्राह्मणेभ्यो वायनरूपमेकैकं सूर्पसम्पुटितं दद्यात्। तन्मन्त्रः—**क्षीरोदार्णवसम्भूता लक्ष्मीश्चन्द्रसहोदरा। व्रतेनानेन संतुष्टा प्रीयतां विष्णुवल्लभा॥ १ ॥** ततः सदन्नेन ब्राह्मणान् सन्तर्प्य आशिषो गृहीत्वा भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा स्वयं बन्धुभिः सह भुञ्जीत॥ इति लघुदर्पणे श्रीमहालक्ष्मीव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः॥

अथ अनन्तव्रतोद्यापनम्—तिथ्यादि संकीर्त्य ममाखिलपापक्षयपूर्वकपुत्रपौत्रसहितविविधभोगधनधान्यैश्वर्योत्तमलोकप्राप्तिद्वारा श्रीमदनन्तस्य प्रीत्यर्थं मया आचरितस्य आचरिष्यमाणस्य च अनन्तचतुर्दशीव्रतस्य सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं अनन्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। ततो वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य उक्तविधिना सर्वतोभद्रे ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च पूर्ववत् कुर्यात्। तदुपरि व्रीहिस्थकलशे यमुनामावाह्य सम्पूज्य तदुपरि अक्षतपूरितपूर्णपात्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

निधाय तत्राष्टदलं पद्मं विरच्य तत्र स्वर्णनिर्मितं चतुर्दशग्रन्थियुतमनन्तं 'सहस्रशीर्षा–' इति मन्त्रेण स्थापयेत् । तत्र हैमं लक्ष्मीसहितमनन्तदेवं 'इदं विष्णुर्विचक्रमे०' इति मन्त्रेण स्थापयेत् । तदग्रे राजतं गरुडं च स्थापयेत् । अथवा 'श्रीमदनन्ताय नमः' इति नाममन्त्रेण पूजा कार्या । पीठं परितः फलपक्वान्नपूरितान् चतुर्दश कुम्भांश्च संस्थाप्य तत्र चतुर्दशनाममन्त्रैः देवं प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् । तन्मन्त्राः–अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि १ । संकर्षणाय नमः सङ्कर्षणमावाहयामि २ । कमलाय नमः,कमलमावाहयामि ३ । शेषाय नमः,शेषमावाहयामि ४ । वासुदेवाय नमः,वासुदेवमावाहयामि ५ । विश्वनाथाय नमः, विश्वनाथमावाहयामि ६ । विश्वरूपाय नमः, विश्वरूपमावाहयामि ७ । पद्मनाभाय नमः, पद्मनाभमावाहयामि ८ । दामोदराय नमः, दामोदरमावाहयामि ९ । जगन्नाथाय नमः, जगन्नाथमावाहयामि १० । चतुर्भुजाय नमः, चतुर्भुजमावाहयामि ११ । श्रीकण्ठाय नमः, श्रीकण्ठमावाहयामि १२ । केशवाय नमः, केशवमावाहयामि १३ । सर्वात्मने नमः, सर्वात्मानमावाहयामि १४ । श्रीमदनन्ताद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । **नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर । नमस्ते सर्वनागेन्द्र अनन्ताय नमो नमः ॥** इति नमस्कारं विधाय प्रार्थयेत् । **अनन्त कामान् मे देहि सर्वकामफलप्रद । अनन्ताय नमस्तुभ्यं पुत्रपौत्रान् प्रवर्द्धय । व्रतेनानेन संतुष्टो भवत्विह सदा मम ॥** ततः कथाश्रवणादिना रात्रिं निनयेत् । प्रातःकाले नित्यकर्म समाप्य स्थापितदेवतानां पूजनं कृत्वा कुण्डे वा स्थण्डिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहाणां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थापनं पूजनं च विधाय ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमः कार्यः । तत्र श्रीमदनन्तं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याकाभिः अश्वत्थसमित्तिलव्रीहियवघृतपायसद्रव्यैर्हुत्वा पीठदेवताश्चैकैकया-ज्याहुत्या ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्य आचार्याय सोपस्करां शय्यां गां च दत्त्वा ब्रह्मादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततः स्थापितदेवतानां पूजनं विसर्जनं च विधाय आचार्याय पीठं दद्यात् । तन्मन्त्रः—त्वं गृह्णीष्व द्विजश्रेष्ठ समस्तफलदायक । त्वत्प्रसादादहं विप्र विमुच्ये भवबन्धनात् ॥ १ ॥ अनन्तः प्रतिगृह्णाति अनन्तो वै ददाति च । अनन्तस्तारकोऽस्माकमनन्ताय नमो नमः ॥ २ ॥ ततः चतुर्दशब्राह्मणान् सम्पूज्य चतुर्दशकलशान् दद्यात् । तत्र सङ्कल्पः—कृतस्य अनन्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं इमान् चतुर्दशकलशान् पक्वान्नपूरितान् वस्त्रयुतान् दक्षिणासहितान् यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे । इति सङ्कल्प्य क्षमापयेत् । क्रियाहीनं भक्तिहीनं द्रव्य-हीनं तथैव च । मन्त्रहीनं कृतं यच्च परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ततो चतुर्दशब्राह्मणभोजन-पुरस्सरं कुटुम्बैः सह स्वयं भुञ्जीत ॥ इति लघुदर्पणे अनन्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ धात्रीपूजनविधिः—आचम्य । प्राणानायम्य । अपवित्रः प० । देशकालौ संकीर्त्य मम समस्तपापक्षयपूर्वकपुत्रपौत्रादिसन्ततियशोबलप्रज्ञामेधासौभाग्यारोग्यविष्णुभक्तिप्राप्त्यर्थं धात्रीमूले विष्णुपूजां धात्रीपूजां च करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । धात्र्या आलवालं कृत्वा । तन्मूले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदिकां कृत्वा तत्र विष्णुं संस्थाप्य—"शान्ताकारं भुजगशयनमि" ति ध्यात्वा षोडशोपचारैः पूजयेत्। धूपात्प्रागङ्गपूजा। दामोदराय० पादौ पूजयामि। केशवाय० कटिं०। नारायणाय० उदरं०। वामनाय० कण्ठं पू०। श्रीधराय० बाहू०। गोविन्दाय० मुखं०। सहस्राक्षाय० नेत्रे०। सर्वेश्वराय० ललाटं०। विष्णवे० शिरः। त्रिविक्रमाय० सर्वाङ्गं०। पूजान्ते गन्धपुष्पफलसंयुक्तमर्घ्यं दद्यात्। नमः सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय ते नमः। नमस्ते सहस्रपदे पुरुषाय नमोऽस्तु ते॥ सहस्रनाम्ने देवेश प्रसीद त्वं ममाच्युत। अर्घ्यं गृहाण भगवन्सर्वकामप्रदो भव। अक्षया सन्ततिर्मेऽस्तु दामोदर नमोऽस्तु ते॥ "ततो धात्र्यै नमः" इति नाममन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमादिसौभाग्यद्रव्यसमर्पणपूर्वकं उपचारैः सम्पूज्य नाममन्त्रैः पुष्पाणि समर्पयेत्। शान्त्यै० १। कान्त्यै०२। मेधायै०३। प्रकृत्यै०४। विष्णुपत्न्यै०५। महालक्ष्म्यै० ६। रमायै० ७। कमलायै० ८। इन्द्राण्यै० ९। कल्याण्यै० १०। कमनीयायै० ११। सावित्र्यै० १२। जगद्धात्र्यै० १३। गायत्र्यै० १४। धृत्यै० १५। अव्यक्तायै० १६। (गन्धोत्तरमङ्गपूजा) विश्वरूपायै० पादौ पू०। ततः प्रार्थयेत्। भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते। सुरूपायै० कटिं०। अब्धिसम्भवायै० हृदयं०। लोकमात्रे० मुखं० धात्र्यै० शिरः पू०। एवं सम्पूज्य। ततो धात्रीं सूत्रेण वेष्टयेत्। दामोदरनिवासायै धात्र्यै देव्यै नमोऽस्तु ते। सूत्रेणानेन बध्नामि सर्वदेवनिवासिनीम्॥ धात्र्यै नमः, इति अष्टदिक्षु पक्वान्नबलीन् दत्त्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टदिक्षु अष्टौ दीपान् प्रज्वाल्य समर्पयेत् । इमे दीपा मया दत्ताः प्रदीप्ता घृतपूरिताः । धात्रि देवि नमस्तुभ्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ ततो धात्रीं अष्टकृत्वः प्रदक्षिणीकृत्य नमेत् । धात्रि देवि नमस्तुभ्यं सर्वपापक्षयंकरि । पुत्रान् देहि महाप्राज्ञे यशो देहि बलं च मे । प्रज्ञां मेधां च सौभाग्यं विष्णुभक्तिं च शाश्वतीम् ॥ नीरोगं कुरु मां नित्यं निष्पापं कुरु सर्वदा । संवत्सरकृतं पापं दूरीकुरु ममाक्षये ॥ ततो धात्रीमूले सव्येनैव तर्पणं कार्यम् । पिता पितामहश्चान्ये ह्यपुत्रा ये च गोत्रिणः । वृक्षयोनिगता ये च ये च कीटत्वमागताः ॥ रौरवे नरके ये च महारौरवसंज्ञके । तिर्यग्योनिगता ये च ये च ब्रह्माण्डमध्यगाः ॥ पिशाचत्वं गता ये च ये च प्रेतत्वमागताः । ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु धात्रीमूलनिषेचनात् ॥ ततो द्विजान्संभोज्याऽऽशिषो गृहीत्वा स्वयं भुञ्जीत । इति धात्रीपूजनविधिः ॥

अथ कूष्माण्डदानम्—"कूष्माण्डदेवतायै नमः" इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य देशकालौ० अमुकगोत्रः अमुकशर्मा ब्रह्महननादिसमस्तपापक्षयपूर्वकबहुपुत्रश्रीसौभाग्यादिसकलमनोरथावाप्तिकूष्माण्डबीजसमसहस्रसंख्याकाब्दब्रह्मलोकनिवासकामः अक्षय्यनवमीयुगादिमहापर्वनि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

मित्तमिदं कूष्माण्डफलं बहुबीजाढ्यं घृतप्लुतं तिललिप्तं सुवर्णफलताम्बूलवस्त्रादियुक्तं गोधूमराशिस्थितं वनस्पतिदैवतं दक्षिणायुतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । ब्रह्महत्यादिपापघ्नं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा । कूष्माण्डं बहुबीजाढ्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥ विष्णवे नमः ३ । इति कूष्माण्डदानम् ॥

अथ देवप्रबोधोत्सवः—विष्णुं गन्धपुष्पैः सम्पूज्य घण्टादिवाद्यघोषेण देवं प्रबोधयेत् । ब्रह्मेन्द्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वन्दित वन्दनीय । बुध्यस्व देवेश जगन्निवास मन्त्रप्रभावेण सुखेन देव ॥ इयं तु द्वादशी देव प्रबोधार्थं विनिर्मिता । त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते । त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ॥ अनेन मन्त्रेण केशवमुत्थापयेत् । गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः । शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव ॥ कृपां कुरु जगन्नाथ ममोपरि सुरेश्वर । इदं विष्णु० इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । आचम्य । प्राणानायम्य । देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं राधादामोदरप्रीत्यर्थं तुलसीविवाहाङ्गभूतं वृन्दासहितमहाविष्णुपूजनमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । शङ्खं घण्टां च सम्पूज्य । शान्ताकारं० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम् । प्रसन्नां पद्मकल्हारवराभयचतुर्भुजाम् ॥ ध्यायामि । वृन्दासहितमहाविष्णवे नमः । आवाहनाद्युपचारैः सम्पूज्य । ततस्तुलसीसम्मुखां विष्णुप्रतिमां कृत्वा दामोदरहस्ते तुलसीदानं कुर्यात् । तत्सदद्येह मम जन्मोपार्जितसमस्तपापक्षयद्वारा तुलसीदानकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं इमां तुलसीं वस्त्रालङ्कारभूषितां दामोदराय वराय संप्रददे । इति देवपुरतः साक्षतजलं क्षिपेत् । ततो देवहस्तस्पर्शं तुलस्याः कारयित्वा । कोदात्, इति मन्त्रं यजमानो जपेत् । त्वं देवि मेऽग्रतो भूयास्तुलसी देवि पार्श्वतः देवि त्वं पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ तुलसीदानसाङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां दामोदराय वराय संप्रददे । इति देवपुरतो दक्षिणां समर्प्य नीराजनं कृत्वा मन्त्रपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा सपत्नीकः यजमानश्चतस्रः प्रदक्षिणाः कुर्वीत । ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् ॥ इति देवप्रबोधोत्सवविधिः ॥

अथ कार्तिकादिमासव्रतोद्यापनम्—आदौ मध्ये अन्ते वा पूर्णिमायां कार्यम् । तिथ्यादि संकीर्त्य ममात्मनः सकलपापक्षयपूर्वकैहिकामुष्मिकविविधसुखप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रतिवर्षं मासपर्यन्तं आचरितस्य आचरिष्यमाणस्य च प्रातःस्नानश्रीराधादामोदरपूजनकथाश्रवणादिरूपव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं कार्तिकमासव्रतोद्यापनाख्यं कर्म करिष्ये । इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात् । वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य ॥६३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य सर्वतोभद्रे ब्रह्मादिदेवतास्थापनं पूजनं च विधाय तत्र कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशपूर्णपात्रोपरि अष्टदले हैमं राधायुतं दामोदरं (माघमासे तु लक्ष्म्या युतं माधवं वैशाखे मधुसूदनं) 'इदं विष्णु—' इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य पुरतो राजतं गरुडं च संस्थाप्य परितो दिक्पालानावाह्य सम्पूज्य कथाश्रवणादिना रात्रौ जागरणं कुर्यात् । प्रातःकालेनित्यकर्म समाप्य कुण्डे वा स्थण्डिले अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् सम्पूज्य कुशकण्डिकां कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात् । राधायुतं दामोदरं साज्ययवमिश्रिततिलाश्वत्थसमिद्घृतपञ्चखाद्यद्रव्यचतुष्टयेनाष्टोत्तरशताहुतिभिः परिवारदेवताः ब्रह्मादिदेवताश्च दश दशाहुतिभिर्हुत्वा स्विष्टकृदादि प्रणीताविमोकान्तं कृत्वा आचार्याय सोपस्करां शय्यां गां पीठं च दत्त्वा आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । पीठदानमन्त्रः—दामोदर सलक्ष्मीक सुप्रतीक जनार्दन । त्वं मां मोचय पापाद्वै तव मूर्त्तिप्रदानतः ॥१॥

ततः कृतस्य कार्तिकमासव्रतोद्यापनस्य साद्गुण्यार्थं श्रीराधादामोदरदेवताप्रीत्यर्थं इमान् त्रिंशत्संख्याकान् सपक्वान्नान् घटान् दक्षिणासहितान् नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । ततः त्रिंशत्संख्याकान् सपत्नीकान् ब्राह्मणान् पक्वान्नादिना सम्भोज्य स्वयं कुटुम्बैः सह भुञ्जीत । इति लघुदर्पणे कार्तिकादिमासव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः ॥

पञ्चक्रोशीयात्रासंकल्पः—देशकालौ० मम समस्तपापक्षयार्थं श्रीकाशीविश्वेश्वरप्रीत्यर्थं ब्राह्मणद्वारा अद्यादि यथाकालं पञ्चक्रोशात्मककाशीक्षेत्रप्रदक्षिणां कारयिष्ये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ भैरवाष्टमीव्रतोद्यापनप्रयोगः-आचम्य। प्राणा०। देशकालौ० ममाखिलपापक्षय-पूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीकालभैरवप्रीत्यर्थमाचरितस्याचरणीयस्य च भैरवाष्टमीव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं तदुद्यापनमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। वृताचार्यः सर्षपविकिरणं पञ्चगव्यप्रोक्षणञ्च विधाय वेद्यां लिङ्गतोभद्रे ब्रह्मादीनावाह्य। सम्पूज्य तदुपरि कलशे सौवर्णीं वाहनायुधसहितां कालभैरवप्रतिमां **नहिस्पशमविन्दन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात् पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरङ्क्षैत्रजित्यायदेवाः॥** इति मन्त्रेण संस्थाप्य–श्रीकालभैरवाय० श्रीकालभैरवमावा० परितः पूर्वादिक्रमेणाष्टौ कलशान् संस्थाप्य तेषु प्राच्यादिक्रमेण–असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवमावाहयामि १। रुरुभैरवाय० रुरुभैरवं० २। चण्डभैरवाय० चण्डभैरवं० ३। क्रोधभैरवाय० क्रोधभैरवं० ४। उन्मत्तभैरवाय० उन्मत्तभैरवं० ५। कपालभैरवाय० कपालभैरवं ६। भीषणभैरवाय० भीषणभैरवं० ७। संहारभैरवाय० संहारभैरवं० ८। इत्यष्टौ भैरवान् संस्थाप्य सम्पूज्य च प्रार्थयेत्–**शिवभक्तप्रिय श्रीमन् नमः श्रीकालभैरव। शरण्यमूर्ते सर्वात्मन् नमस्ते भक्तवत्सल॥ वाराणस्यां भैरवो देवः संसारभयनाशनः। अनेकजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥** अथार्घ्यं दद्यात्–भैरवार्घ्यं गृहाणेश भीमरूपाव्ययानघ। अनेनार्घ्यप्रदानेन तुष्टो भव शिवप्रिय॥ १॥ सहस्राक्षिशिरोबाहो सहस्रचरणाजर। गृहाणार्घ्यं भैरवेदं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

सपुष्पं परमेश्वर ॥ २ ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहाणेश वरदो भव भैरव । पुनरर्घ्यं गृहाणेदं सपुष्पं यातनापह ॥ ३ ॥ पुराणश्रवणादिना रात्रिं निनयेत् । प्रातः पुनर्देवं सम्पूज्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहानावाह्य सम्पूज्य ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात् । अत्र प्रधानं कालभैरवं पूर्वोक्तमन्त्रेण नाममन्त्रेण वा तिलाज्येनाष्टोत्तरशताहुतिभिस्तैरेव द्रव्यैः परिवारदेवताश्चाष्टाष्टाहुतिभिर्मण्डलदेवताश्चैकैकाज्याहुतिभिर्जुहुयात् । स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वाऽऽचार्यं सम्पूज्य व्रतपूर्तये कपिलां गां सोपस्करां शय्यां च दत्त्वा ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततोऽभिषेकः । स्थापितदेवतानां उत्तरपूजनम् । अष्टौ ब्राह्मणान् पूजयित्वा तेभ्यः पक्वान्नपूरितवस्त्रप्रतिमासहितकलशान् दत्त्वा आचार्य्याय पीठं दद्यात् । द्वादश ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च बटकपोलिकापायसपूरिकादिभिः सम्भोज्य भूयसीं दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा दीनान् अनाथांश्च सम्भोज्येष्टजनैः सह भुञ्जीत । इति लघुदर्पणे भैरवाष्टमीव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः ॥

अथैकादशीव्रतोद्यापनविधिः—दशम्यामष्टमभागे नक्तभोजनं कृत्वोक्तनियमवान् एकादशीदिने प्रातः नित्यक्रियां निर्वर्त्य मध्याह्ने नद्यादौ स्नात्वाहते वाससी परिधाय तिलकादि धृत्वा उक्तविधिना पञ्चगव्यं सम्पाद्य शरीरशुद्ध्यर्थं "यत्वगस्थि" इत्यनेन मन्त्रेण पञ्चगव्यं प्राश्य यथाशक्ति गोनिष्क्रयं कुर्यात् । आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० स्त्री चेदमुकगोत्रामुकदासी वा ममाखिलपापक्षयपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिपूर्वकैकविंशतिपुरुषोद्धारसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं ममाचरितस्याचरणीयस्य च शुक्लकृष्णैकादशीव्रतस्य साङ्गता-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं यथाशक्ति तन्त्रेण शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा (शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनाख्ये कर्मणि) आचार्य्यब्रह्मसदस्यर्त्विग्वरणं कुर्यात्। ततः आचार्यः सर्षपान् विकीर्य। पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य सर्वतोभद्रे ब्रह्मादिदेवता आवाह्य सम्पूज्य च तदुपरि कलशं संस्थाप्य उपरिचतुर्हस्तप्रमाणेन तोरणान्वितपञ्चवर्णवितानबन्धनं कृत्वा परितः पूर्वादिक्रमेण षड्विंशतिकलशान् संस्थाप्य मध्यकलशोपरि अष्टदलपद्मं निर्माय। तत्र कर्णिकायाम्—ॐ भूः लक्ष्मीनारायणमावाहयामि। ॐ भुवः लक्ष्मी०। ॐ स्वः लक्ष्मी०। ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मी०। इति सौवर्णीं लक्ष्मीनारायणप्रतिमां संस्थाप्य 'सहस्रशीर्षा०' लक्ष्मीनारायणं संस्थापयामि पूजयामि न मम। परितोऽष्टदलेषु अग्नये अग्निं० १। इन्द्राय० इन्द्रं० २। प्रजापतये० प्रजापतिं० ३। विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान् देवान् ४। ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ५। वासुदेवाय० वासुदेवं० ६। बलरामाय० बलरामं० ७। श्रियै० श्रियं० ८। पूर्वादिदिक्षु ब्रह्मयज्ञानं ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० १। विष्णोर्नुकं० विष्णवे० विष्णुं० २। प्रद्युम्नाय० प्रद्युम्नं० ३। त्र्यम्बकं यजामहे० त्र्यम्बकाय० त्र्यम्बकं ४। दक्षिणे—अनिरुद्धाय० अनिरुद्धं ५। पुनः पूर्वादिषु—गणपतये० गणपतिं० १। दुर्गायै० दुर्गां २। क्षेत्राधिपतये० क्षेत्राधिपतिं० ३। वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिं० ४। दलाभ्यन्तरेषु पूर्वे—चतुःसहस्रस्त्रीसहितरुक्मिण्यै० चतुःसहस्रस्त्रीसहितरुक्मिणीं० १। एवं दक्षिणे—चतुःसहस्रस्त्रीसहितसत्यभामायै० चतुःस० सत्यभामां० २। पश्चिमे—च० जाम्ब० चतुःस० जाम्बवतीं० ३। उत्तरे—चतुःसहस्रस्त्रीसहितकालिन्द्यै० चतुःस० कालिन्दीं० ४। आग्नेयादिकोणेषु—शङ्खाय० शङ्खं० १।

॥६५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चक्राय० चक्रं० २ । गदायै० गदां० ३ । पद्मायै० पद्मां० ४ । तद्बाह्ये पूर्वादितः—इन्द्राय० १ । अग्नये० २ । यमाय० ३ । निर्ऋतये० ४ । वरुणाय० ५ । वायवे० ६ । सोमाय० ७ । ईशानाय० ८ । पुरतो रजतप्रतिमां संस्थाप्य तत्र सामध्वनिशरीरस्त्वं वाहनं परमेष्ठिनः । विषपापहरो नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गरुडाय नमः, गरुडं आवाहयामि स्थापयामि इति राजतं गरुडं संस्थाप्य दलाग्रेषु पूर्वादितो विमलायै० विमलां० १ । उत्कर्षिण्यै० उत्कर्षिणीं० २ । ज्ञानायै० ज्ञानां० ३ । क्रियायै० क्रियां० ४ । योगायै० योगां० ५ । प्रह्वायै० प्रह्वां० ६ । सत्यायै० सत्यां० ७ । अज्ञानायै० अज्ञानां० ८ । मध्ये—अनुग्रहायै० अनुग्रहां० ९ । मण्डलपरितः कलशेषु नाममन्त्रेण प्रतिमासु पूर्वादितः क्रमेण—केशवाय० केशवं० १ । नारायणाय० नारायणं० २ । माधवाय० माधवं० ३ । गोविन्दाय० गोविन्दं० ४ । विष्णवे० विष्णुं० ५ । मधुसूदनाय० मधुसूदनं० ६ । इति प्राच्याम् । त्रिविक्रमाय० त्रिविक्रमं० ७ । वामनाय० वामनं० ८ । श्रीधराय श्रीधरं० ९ । हृषीकेशाय० हृषीकेशं० १० । पद्मनाभाय० पद्मनाभं ११ । दामोदराय० दामोदरं० १२ । इति दक्षिणस्याम् । संकर्षणाय नमः संकर्षणं० १३ । वासुदेवाय० वासुदेवं० १४ । प्रद्युम्नाय० प्रद्युम्नं० १५ । अनिरुद्धाय० अनिरुद्धं० १६ । पुरुषोत्तमाय० पुरुषोत्तमं० १७ । अधोक्षजाय० अधोक्षजं० १८ । इति प्रतीच्याम् । नारसिंहाय० नारसिंहं० १९ । अच्युताय० अच्युतं० २० । जनार्दनाय० जनार्दनं० २१ । उपेन्द्राय० उपेन्द्रं० २२ । हरये० हरिं० २३ । श्रीकृष्णाय० श्रीकृष्णं २४ । पुरुषोत्तमाय० पुरुषोत्तमं० २५ । सर्वो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्तमाय० सर्वोत्तमं० २६ । इत्युत्तरस्याम् । मनोजूति० । इति प्रतिष्ठाप्य साङ्गः सपरिवारः श्रीलक्ष्मीनारायणः सुप्रतिष्ठितो वरदो भवतु, इति प्रतिष्ठाप्य आसनाद्युपचारैः पूजयेत् । पुरुष-ऽएवेदं० साङ्गाय सपरिवाराय श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः आसनार्थे पुष्पं स० १ । एतावानस्य० । पाद्यं २ । त्रिपादूर्ध्व० अर्घ्यं ० ३ । ततो विरा० । आचमनीयं । तस्माद्यज्ञात्सर्व० । स्नानं० ५ । पञ्चनद्य० । पञ्चामृतस्नानं० ६ । आपोहिष्ठा० शुद्धोदकस्नानं० ७ । तस्माद्यज्ञात्सर्व० ८ । वस्त्रो-पवस्त्रं० । तस्मादश्वा० । यज्ञोपवीतानि० ९ । तं यज्ञं० । गन्धं० १० । यत्पुरुषं० । पुष्पाणि समर्पयामि ११ । ततोऽङ्गपूजा—दामोदराय नमः पादौ पूजयामि । (एवमग्रे) माधवाय० जानुनी० । कामपतये० गुह्यं० । वामनाय० कटिं० । पद्मनाभाय० नाभिं० । विश्वमूर्तये० उदरं । ज्ञानग-म्याय० हृदयं० । श्रीकण्ठाय० कण्ठं० सहस्रबाहवे० बाहुं० । योगिने० चक्षुषी० । उरगाय० ललाटं० । नाकसुरेश्वराय० नासां० । श्रवणेशाय० श्रवणौ० । सर्वकामदाय० शिखां० । सहस्र-शीर्षाय० शिरः० । सर्वरूपिणे० सर्वाङ्गः० ब्राह्मणोऽस्य० धूपं स० १२ । चन्द्रमा मन० दीपं० १३ । नाभ्याऽआसी० । षड्विंशतिपक्वान्नयुतमहानैवेद्यं ० १४ । यत्पुरुषेण० फलानि ताम्बूलं च० १५ । हिरण्यगर्भ० दक्षिणां १६ । इदं हवि० । कर्पूरनीराजनं० । सप्तास्या० । प्रदक्षिणां० यज्ञेन यज्ञ० । मन्त्रपुष्पाञ्जलिं० । तैजसपात्रे जलाक्षतपुष्पचन्दनफलहिरण्यकानि निक्षिप्य जानुभ्यां धरणीं गत्वा । नारायण जगन्नाथ लक्ष्मीकान्त दयानिधे । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं व्रतसम्पूर्णहेतवे ॥ १ ॥ इति मन्त्रेणार्घ्यं दद्यात् । धृतोऽसि भगवन्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्त्या प्रत्यब्दं यावदत्र तु । प्रसीद देवदेवेश सर्वान् कामान् प्रदेहि मे ॥ १ ॥ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि जातं न्यूनाधिकं च यत् । दीनस्य मम नाथस्त्वं क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥ २ ॥ एतत्कालं व्रतं चीर्णं भगवन् यन्मया हरेः । व्रतं तत्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ॥ ३ ॥ इति सम्प्रार्थ्य । अनेन साङ्गः सपरिवारः श्रीलक्ष्मीनारायणः प्रीयताम् । इति साक्षतजलं क्षिपेत् । ततो ब्राह्मणान् सम्पूज्य वेदगीतशास्त्रपुराणकथाश्रवणादिना जागरणं कुर्यात् । प्रातः नित्यकर्म निर्वर्त्य पुनः पीठदेवताः सम्पूज्य देशकालौ० शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनाङ्गभूतविहितहवनं करिष्ये । ततोऽग्निं प्रतिष्ठाप्य । ग्रहानावाह्य सम्पूज्य । कुशकण्डिकाविधिना पायसचरुं श्रपयित्वा । "पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः । अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते श्रिता स इद्वहन्तस्तत्समासत ॥ इति मन्त्रेण चरुस्थाल्यां प्रापणमुद्धरेत् । तत आज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात् ॥

अथ प्रधानहोमः—पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचमाज्येनाष्टोत्तरशतं जुहुयात् । ततो घृताक्तपायसेन प्रतिमन्त्रं चतस्र आहुतीर्जुहुयात्—केशवाय स्वाहा ४ नारायणाय० ४ माधवाय० ४ गोविन्दाय० ४ विष्णवे० ४ मधुसूदनाय० ४ त्रिविक्रमाय० ४ वामनाय० ४ श्रीधराय ४ हृषीकेशाय० ४ पद्मनाभाय० ४ दामोदराय० ४ संकर्षणाय० ४ वासुदेवाय० ४ प्रद्युम्नाय० ४ अनिरुद्धाय० ४ पुरुषोत्तमाय० ४ अधोक्षजाय० ४ नारसिंहाय० ४ अच्युताय० ४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जनार्दनाय० ४ उपेन्द्राय० ४ हरये० ४ श्रीकृष्णाय० ४ पुरुषोत्तमाय० ४ सर्वोत्तमाय० ४ ॥ विष्णोर्न्नुकं व्वीर्य्याणि प्प्रवोचंय्यः पार्थिवानि व्विममेरजाᳬसि । यो ऽअस्कभायदुत्तरᳬ सधस्थं व्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायोविष्णवे त्वा स्वाहा ४ ॥ तदस्य प्रियमभिपाथो अस्यां नरो यत्र देवयो मदन्ति । उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः स्वाहा ४ ॥ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा स्वाहा ४ ॥ परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति । उभे ते विद्मरजसी पृथिव्या विष्णो देवत्वं परमस्य वित्से स्वाहा ४ ॥ विचक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्रा विष्णुर्मनुषे दशस्यन् । ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार स्वाहा ४ ॥ त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमे शतर्चसं महित्वा । प्रविष्णोरस्तु तव मस्तवीर्यां त्वेष ह्यस्य स्थविरस्य नाम स्वाहा ४ ॥ अथाज्येन होमः—अग्नये स्वाहा १ । इन्द्राय० १ । प्रजापतये० १ । विश्वेभ्यो देवेभ्यः० १ । ब्रह्मणे० १ । अथ घृताक्तपायसेन—वासुदेवाय० ४ । बलरामाय० ४ । श्रियै० ४ । विष्णवे ४ । ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा । ॐ स्वः स्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा । अथाज्येन प्रतिमन्त्रमाहुतिद्वयं दद्यात्- चतुःसहस्रस्त्रीसहितजाम्बवत्यै स्वाहा २ । चतुःसहस्रस्त्रीसहितकालिन्द्यै स्वाहा २ । शङ्खाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा २। चक्राय० २। गदायै० २। पद्मायै० २। ब्रह्मणे० २। विष्णवे० २। प्रद्युम्नाय० त्र्यम्बकाय० २। अनिरुद्धाय० २। गणेशाय० २। दुर्गायै० २। क्षेत्राधिपतये० २। वास्तोष्पतये० २। इन्द्राय० २। अग्नये० २। यमाय० २। निर्ऋतये० २। वरुणाय० २। वायवे० २। सोमाय० २। ईशानाय० २। गरुड़ाय० २। विमलायै० २। उत्कर्षिण्यै० २। ज्ञानायै० २। क्रियायै० २। योगिन्यै० २। प्रह्वायै० २। सत्यायै० २। अज्ञानायै० २। अनुग्रहायै० २। ततो ब्रह्मादिसर्वतोभद्रदेवताश्च तत्तन्नाममन्त्रेण जुहुयात्। ततः स्थापितदेवतानां पुनः पूजनं कृत्वा। त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं विश्वसृजं यजामः। त्वयैष भागो विहितो विधेयो गृहाणं हव्यं जगतामधीश ॥ १ ॥ इति यजमानो देवाय सघृतशर्करं नैवेद्यं निवेद्य पूजां समाप्याग्निं देवं च त्रिवारं चतुर्वारं वा प्रदक्षिणीकृत्य—"भिन्धि विश्वा आपद्विषः परिबाधो जहीमृधः। वसुस्पार्हं तदा भर" ॥ इति धरण्यां जानुनी निपात्य आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ इहैवैधि मापच्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठा इह राष्ट्रमुधारय ॥ इममिन्द्रो अदीधरत् ध्रुवं ध्रुवेणेह हविषां। तस्मै सोमो अधिब्रुवत्तस्माउ ब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवाद्यौ ध्रुवा पृथिवो ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयम् ॥ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बृहस्पतिः । ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ ध्रुवं ध्रुवेण हविषाऽभिसोमं मृशा मसि । अथोत इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत् ॥ इति ध्रुवसूक्तं च पठन् चतुरोऽष्टौ वा पादान् प्रतिदिशं गत्वा । कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । शरण्यायाप्रमेयाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ १ ॥ नमः स्थूलाय सूक्ष्माय व्यापकायाऽव्ययाय च । अनन्ताय जगद्धात्रे ब्रह्मणेऽनन्तमूर्तये ॥ २ ॥ अव्यक्तायाखिलेशाय चिद्रूपाय गुणात्मने । नमो मूर्ताय सिद्धाय पराय परमात्मने ॥ ३ ॥ देवदेवाय शान्ताय पराय परमेष्ठिने । कर्त्रे विश्वस्य गोप्त्रे च तत्संहर्त्रे नमो नमः ॥ ४ ॥ इति देवं नमस्कृत्य देवाय निवेदितं नैवेद्यमानीय मूर्ध्नि धृत्वा—के वैष्णवाः के वैष्णवाः इति उच्चैर्वदेत् । ततः समानाः प्रतिवदेयुः । 'वयं वैष्णवाः' २ इति । ततस्तेभ्यः समानेभ्यो हविर्दत्त्वा स्वयम् । "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" इति मन्त्रेणेदममृतमहं प्राश्नामीति प्राश्य, आचम्य प्राणानायम्य यजमानः आचार्यो वा 'सिद्धये स्वाहा' इत्यग्नावाज्यं जुहुयात् । ततः— "यत इन्द्र भयामहे" इत्यादिनात्मानमभिमन्त्रयेत् । तत आचार्यः स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं समापयेत् । यजमानः आचार्यादीन् सम्पूज्याचार्याय शय्यां दद्यात् । शय्यापूजनम्—कृतस्य शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां शय्यां सोपस्कराम्मुत्तानाङ्गिरोदैवतामा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । स्वस्तीति ब्राह्मणः । इमां शय्यां मया दत्तां हेमालङ्करणैर्युताम् । परलोकहितार्थाय श्रीपतिः प्रीयतां मम ॥ १ ॥ ततो गोपूजनं दानं च। कृतस्य शुक्ल० र्थं सकलपापक्षयपूर्वकगोलोमसंख्यात्रपर्यवच्छिन्नलक्ष्मीनारायणलोकनिवासार्थं चेदं गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यममुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । स्वस्तीति विप्रः । ततो ब्रह्मादिभ्योऽपि दक्षिणां दद्यात् । ततः षड् विंशतिसंख्याकान् ब्राह्मणान् केशवादिषड्विंशतिनामभिः सम्पूज्य तत्स्वरूपान् विभाव्य तेभ्यः पक्वान्नपूरितान् वस्त्रताम्बूलदक्षिणाप्रतिमायुतान् षड्विंशतिकलशान् केशवादिनामाङ्कितान् दद्यात् । कृतस्य शुक्ल० र्थमिमान् षड्विंशतिकलशान् पक्वान्नपूरितान् सोपस्करान् दक्षिणासहितान् नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले दास्ये। तत्र मन्त्रः—पक्वान्नपूरितान् कुम्भान् दक्षिणावस्त्रसंयुतान् । ददामि द्विजवर्येभ्यः श्रीकृष्णः प्रीयतामिति ॥ १ ॥ ततः पीठदानम्—इदं पीठं सोपस्करं श्रीलक्ष्मीनारायणप्रतिमायुतं श्रीकृष्णप्रीतये आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । इत्याचार्याय दद्यात् । तत आचार्यः पात्रान्तरे कलशोदकमुद्धृत्य सपत्नीकं यजमानम् "आपोहिष्ठा०" इत्यादिभिर्मन्त्रैरभिषिञ्चेत् । ततो यजमानः "यान्तु देवगणाः०" इति पीठदेवतां विसर्जयेत् । ततोऽग्निं विसृज्य अद्य कृतैतदेकादशीव्रतोद्यापनस्य साङ्गफलावाप्तये इदं तिलपात्रं घृतपात्रं च यथा० गो० ब्राह्मणाय दा० जे० । कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयिष्ये। इति सङ्कल्प्य। भूयसीं दक्षिणां दत्त्वाऽऽशिषो गृहीत्वा जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं व्रतकर्मणि। सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ १ ॥ इति यजमानः प्रार्थयेत् । "अच्छिद्रं भवतु ते व्रतम्" इति ब्राह्मणाः प्रतिवदेयुः । ततस्तान् नमस्कृत्येष्टजनैः सह सोत्सवं भुञ्जीत ।

इति लघुदर्पणे शुक्लकृष्णैकादशीव्रतोद्यापनविधिः ॥

अथ प्रदोषव्रतोद्यापनम्—कार्तिकादिमासेषु त्रयोदश्यां प्रदोषव्रतोद्यापनं कार्यम् । तिथ्यादि संकीर्त्य ममात्मनः सकलपापक्षयशत्रुपराजयपूर्वकमायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिद्वारा श्रीभवानीशङ्करदेवताप्रीत्यर्थं आचरितस्य आचर्यमाणस्य च प्रदोषव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं प्रदोषव्रतोद्यापनं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात् । वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य लिङ्गतोभद्रोपरिस्थताम्रकलशे हैमं साम्बसदाशिवं तत्पुरतो राजतं वृषभं च संस्थाप्य श्रीशङ्कराय नमः, श्रीशङ्करमावाहयामि १ । श्रीभवान्यै नमः, श्रीभवानीमावाहयामि २ । श्रीनन्दीश्वराय नमः, श्रीनन्दीश्वरमावाहयामि ३ । 'श्रीभवानीशङ्कराभ्यां नमः' इति नाममन्त्रेण सम्पूज्य पीठं परितः पूर्वादिक्रमेण द्वादशकलशान् संस्थाप्य तेषु द्वादशसुवर्णप्रतिमासु देवताऽऽवाहनम् । तत्र क्रमः—शिवाय नमः, शिवमावाहयामि १ । रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि २ । पशुपतये नमः, पशुपतिमावाहयामि ३ । नीलकण्ठाय नमः, नीलकण्ठमावाहयामि ४ । महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि ५ । हरिकेशाय नमः, हरिकेशमावाहयामि ६ । विरूपाक्षाय नमः, विरूपाक्षमावाहयामि ७ । पिनाकिने नमः, पिनाकिनमावाहयामि ८ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिपुरान्तकाय नमः, त्रिपुरान्तकमावाहयामि ९। शम्भवे नमः, शम्भुमावाहयामि १०। जटिने नमः, जटिनमावाहयामि ११। शङ्कराय नमः, शङ्करमावाहयामि १२। 'शिवादिद्वादशदेवताभ्यो नमः' इति नाममन्त्रेण पूजयित्वा स्तवं पठेत्। रजतादिपात्रे क्षीरकुशघृतदधितण्डुलसिद्धार्थगन्धपुष्पादि क्षिप्त्वा सजलं कृत्वा **भयरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः। ऋणशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ १॥** इत्यनेन मन्त्रेण वारत्रयमर्घ्यं दत्त्वा प्रार्थयेत्। **प्रसीद देव देवेश प्रसीद परमेश्वर। प्रसीद सोम सर्वज्ञ प्रसीद करुणाकर॥१॥** ततः कथाश्रवणादिना रात्रिं निनयेत्। प्रातःकाले कुण्डे स्थण्डिले वा अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् सम्पूज्य कुशकण्डिकां कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्। उमामहेश्वरौ प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्याकैः पलाशसमिद्बिल्वपत्रपायसाज्यतिलद्रव्यैर्हुत्वा पीठदेवताः वृषभं च नाममन्त्रेण, ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं समाप्य आचार्याय पूजनपूर्वकं सालङ्कारां सवत्सां गां पीठं च दत्त्वा अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ततो द्वादशसंख्याकान् ब्राह्मणान् सम्पूज्य द्वादशकलशान् दत्त्वा सपत्नीकान् त्रयोदशब्राह्मणान् पक्वान्नादिना भोजयेत् ततो ब्राह्मणाज्ञया स्वयं कुटुम्बैः सह भुञ्जीत। इति लघुदर्पणे प्रदोषव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः॥

अथ रविवारव्रतोद्यापनम्—मार्गशीर्षाद्यरविवारे उद्यापनं कर्तव्यम्। तिथ्यादि सङ्कीर्त्य सर्वरोगक्षयपुत्रपौत्रैश्वर्यादिसकलाभीष्टप्राप्तिद्वारा श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं कृतस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्षात्मकस्य रविवारव्रतस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं रविवारव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपति-पूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य सर्वतोभद्रे कलशं संस्थाप्य तदुपरि रक्ताक्षतयुतं ताम्रमयं पूर्णपात्रं निधाय तत्र द्वादशारं कमलं विलिख्य तदुपरि हैमं संज्ञासहितं सहस्रकिरणं सूर्यं 'आकृष्णेन रजसा—' इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य परितः द्वादशकलशेषु द्वादशदलेषु वा पूर्वादिक्रमेण द्वादशदेवान् स्थापयेत्। तद्यथा–मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि १। विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि २। वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि ३। सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि ४। भानवे नमः, भानुमावाहयामि ५। तपनाय नमः, तपनमावाहयामि ६। इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि ७। रवये नमः, रविमावाहयामि ८। गभस्तये नमः, गभस्तिमावाहयामि ९। यमाय नमः, यममावाहयामि १०। हिरण्यरेतसे नमः, हिरण्यरेतसमावाहयामि ११। दिवाकराय नमः, दिवाकरमावाहयामि १२। इति नाममन्त्रेणावाह्य सम्पूज्य रक्ताक्षतपुष्पचन्दनजलनारिकेलफलयुतं ताम्रपात्रेण विशेषार्घ्यमादाय भूमौ जानुनी निपात्य सूर्यायार्घ्यं दद्यात्। तन्मत्रः—**नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधिविनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥ १॥**

ततः सूर्यदैवतं श्राद्धं कुर्यात्। तद्यथा—देशकालौ सङ्कीर्त्य सूर्यश्राद्धं सद्यः करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। सूर्याय नमः, इदमासनम्। पाद्यम्, अर्घ्यम्, वस्त्रम्, उपवीतम्, पुष्पम्, धूपम्, दीपम्, यथादत्तं गन्धाद्यर्चनं सूर्याय नमः। सूर्यश्राद्धस्यार्चनविधेः परिपूर्णतास्तु। द्वादशब्राह्मणान् सम्पूज्य द्वादश-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणभोजनपर्य्याप्तामान्नं तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं वा यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे। इति सङ्कल्प्य दद्यात्। सूर्यश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दक्षिणामक्षयं वः स्वाहा नमः। सूर्यश्राद्धं परिपूर्णमस्तु। रात्रौ कथाश्रवणादिना जागरणं कुर्यात्। द्वितीयदिने प्रातः नित्यकर्म समाप्य आवाहितदेवताः सम्पूज्य अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहानावाह्य सम्पूज्य कुशकण्डिकां कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्। संज्ञासहितं सूर्यं 'आकृष्णेन—' इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिभिः घृताक्तपायसद्रव्यैर्हुत्वा मित्रादिदेवताश्च नाममन्त्रेण ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा आचार्याय पूजनपूर्वकं गां पीठं च दद्यात्। ततो द्वादशब्राह्मणान् एकं सपत्नीकं ब्राह्मणं च पक्वान्नादिना भोजयित्वा तेभ्यः आशिषो गृहीत्वा कुटुम्बैः सह स्वयं भुञ्जीत। इति लघुदर्पणे रविवारव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः॥

अथ तूलवस्त्रदानम्—देशकालौ० मम श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा शीतत्राणाय सतूलगर्भितवस्त्रदानकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं इदं सतूलगर्भितवस्त्रं बृहस्पतिदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। देशकालौ० अपसव्यः अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणां परलोके शीतत्राणार्थमिदं तूलगर्भितवस्त्रं सदक्षिणं यथाना०॥ **शीतवातोपसेव्यं**। विष्णवे ३॥ इति तूलवस्त्रदानम्॥

अथ कृसरान्नदानम्—आचम्य प्राणानायम्य। देयद्रव्यपूजनम्। देशकालौ०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संकीर्त्य गोत्रः शर्मा ममात्मनः श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा सोपस्करकृसरान्नदानकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं मकरसंक्रमणजनितमहापर्वनिमित्तमिदं कृसरान्नं सोपस्करं सदक्षिणाकं यथानाम० जे। कृसरान्नं स्वादुवर्यं देवानां प्रीतिवर्धनम् । घृतव्यञ्जनसंयुक्तं दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते ॥ देशकालौ० गोत्रः शर्मा [अपसव्यम्] कुशतिलान्० अद्यामुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणामक्षय्यतृप्तिहेतवे मकरसंक्रान्तिमहापर्वनिमित्तमिदं कृसरान्नं सोपस्करं सदक्षिणाकं यथा० जे। सव्यम्। विष्णुस्मरणम् । इति कृसरान्नदानम् ॥

अथ तिलमोदकदानम्—देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम तिलमोदकदानकल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं षट्तिलैकादशीपर्वनिमित्तमिमं तिलमोदकं ससुवर्णं सदक्षिणाकं यथा० सम्प्रददे । भर्जितानां तिलानां च सगुडानां कृतं मया । मोदकं च गृहाणेममतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ विष्णवे ३ ॥ इति तिलमोदकदानम् ॥

अथ रुद्राभिषेकविधिः—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम सर्वग्रहस्वरूपी श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतिद्वारा सकलग्रहपीडाशान्तिदीर्घायुरारोग्यबलपुष्टिमनःप्रसादसिद्ध्यर्थं [1]ज्वरहरेश्वरलिङ्गोपरि भङ्गशर्करादुग्धमिश्रितगङ्गोदकधारया रुद्राभिषेकं ब्राह्मणद्वारा कार-

१ अन्यत्राभिषेके तत्तन्महादेवनाम ग्राह्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यिष्ये ॥ मम सर्वपापक्षयपूर्वकं श्रीसाम्बसदाशिवरात्रिमहापर्वणि त्रिलोचनेश्वरशिवोपरि मोदुग्ध-संयुक्तगङ्गोदकधारया षडङ्गसहितया रुद्र्या अभिषेकं (लघुरुद्राभिषेकं वा) ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। तत्रादौ० गणपतिस्मरणम्। ब्राह्मणवरणम्। अस्मिन् रुद्राभिषेककर्मणि एभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं अभिषेककर्तारं त्वामहं वृणे—इति वृणुयात्। विप्रः—वृतोऽस्मि। यथाविहितमभिषेकं कुरु। यथाज्ञानं करवाणि। लघुरुद्राभिषेकार्थमेभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैर्नानानामप्रवरगोत्रान् नानाशाखाध्यायिनो नानाशर्मब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे। वृताः स्मः। कर्म कुरुध्वम्। करवामः। अथ शिवालयं गत्वाऽऽचम्य। प्राणानायम्य। देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो यजमानस्य पूर्वकृतसंकल्पसिद्धये लघुरुद्रान्तर्गतरुद्रैकादशाभिषेकमहं करिष्ये। परप्रेरितश्चेदमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो यजमानस्याज्ञयाऽमुकरुद्रेण श्रीरुद्राभिषेकं करिष्यामीति सङ्कल्पः। ब्राह्मणेन—तदङ्गत्वेन साम्बसदाशिवपूजनं करिष्ये। मनोजूति० इत्यादि षडङ्गन्यासः। अथैतस्य शिवस्य मूर्धनि ताम्रकलशेन गव्येन पयसा केवलोदकेन वा वक्ष्यमाणैर्मन्त्रैरभिषेकः कर्त्तव्यः। यज्जाग्रतः० ६। सहस्रशीर्षा० १६। अद्भ्यः सम्भृतः० ६। आशुः शिशानः० १७। विभ्राड् बृहत्० १७। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र० ६६। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ वय ँ सोम० ८। नतंविदाथ० २। उग्रश्च० ७। वाजश्च० ४। सत्यं च० ४। उर्कच० ४। अश्मा च ३। अग्निश्च म इन्द्र० ३। अ ँ शुश्च० ३। अग्निश्च म० २। राका च० १। चतस्रश्च० १। त्र्यविश्च० २। वाजाय० स्वाहा २। ऋचं वाचम्० २। शान्तिः शान्तिः शान्तिः। पुनः षडङ्ग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्यासः। सद्यो जातम्० ६। उत्तरपूजनम्। इमा रुद्राय० अनेन श्रीरुद्राभिषेकेण कर्मणा भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्। द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्मारोङ्म्मोचनः किञ्चनाममत्॥ प्रणामः। ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणादानम्। कृतस्याभिषेकात्मकलघुरुद्रकर्मणः प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं रुद्राभिषेककर्तृकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥ ब्राह्मणभोजनं सङ्कल्प्य। भूयसीं दत्त्वा। प्रमादात्० विष्णवे०। इति रुद्राभिषेकविधिः॥

अथ शिवरात्रिव्रतोद्यापनम्—तिथ्यादि सङ्कीर्त्य ममात्मनः समस्तपापक्षयपूर्वकक्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्यपुत्रपौत्राभिवृद्धिशिवलोकप्राप्तिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं आचरितस्य आचर्यमाणस्य च शिवरात्रिव्रतस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं शिवरात्रिव्रतोद्यापनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। वृताचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य लिङ्गतोभद्रपीठे ब्रह्मादिदेवताः सम्पूज्य। तत्र चतुर्दशकलशान् संस्थाप्य मध्ये चैकं प्रधानकलशं संस्थाप्य तदुपरि पूर्णपात्राणि निधाय। तत्र हैमीः प्रतिमाः प्रतिष्ठाप्य मध्ये प्रधानकलशोपरि उमायुतं सदाशिवं 'त्र्यम्बकं–' इतिमन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य पुरतो राजतं वृषभं च प्रतिष्ठाप्य नाममन्त्रेण पूजयेत्। तन्मन्त्राः–अजैकपादे नमः, अजैकपादमावाहयामि १। अहिर्बुध्न्याय नमः, अहिर्बुध्न्यमावाहयामि २। भवाय नमः, भवमावाहयामि ३। शर्वाय नमः, शर्वमावाहयामि ४। उमापतये नमः, उमापतिमावाहयामि ५। रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि ६। पशु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पतये नमः, पशुपतिमावाहयामि ७। शम्भवे नमः, शम्भुमावाहयामि ८। वरदाय नमः, वरदमावाहयामि ९। शिवाय नमः, शिवमावाहयामि १०। ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि ११। महादेवाय नमः, महादेवमावाहयामि १२। हराय नमः, हरमावाहयामि १३। भीमाय नमः, भीममावाहयामि १४। इत्यावाह्य। उमामहेश्वराद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इतिमन्त्रेण पूजयेत्। रात्रौ प्रतियामं पूजा कार्या। तथा पुराणश्रवणादिना रात्रिं निनयेत्। द्वितीयदिने प्रातः नित्यकर्म समाप्य कुण्डे स्थण्डिले वा अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहान् सम्पूज्य कुशकण्डिकां कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्। उमामहेश्वरौ 'अम्बेऽअम्बिके—' इति 'त्र्यम्बकं यजामहे—' इति च मन्त्राभ्यां बिल्वपत्रतिलव्रीहियवैरष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिभिर्हुत्वा वृषभं परिवारदेवताः ब्रह्मादिदेवताश्चैकैकयाज्याहुत्या जुहुयात्। ततः स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा आचार्याय पूजनपूर्वकं शय्यां गां च दद्यात्। ततः आचार्यादयः यजमानमभिषिञ्चेयुः। ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनं विधाय आचार्याय प्रधानपीठं दत्त्वा चतुर्दशनामभिः चतुर्दशब्राह्मणान् सम्पूज्य तेभ्यो जलपूर्णपूजितप्रतिमादिसहितान् चतुर्दश कलशान् दद्यात्। ततः प्रार्थना—**शम्भो प्रसीद देवेश सर्वलोकेश्वर प्रभो। तव रूपप्रदानेन मम सन्तु मनोरथाः॥** अग्निं विसृज्य भूयसीदक्षिणां दत्त्वा पक्वान्नादिना चतुर्दशब्राह्मणान् एकं सपत्नीकं ब्राह्मणं च भोजयित्वा तेभ्य आशिषा गृहीत्वा स्वयं कुटुम्बैः सह भुञ्जीत। इति लघुदर्पणे शिवरात्रिव्रतोद्यापनप्रयोगः समाप्तः॥

अथ अपूपदानम्—आच०। प्राणा०। देशकालौ० मम सकलमलविशुद्धिसमस्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापक्षयपूर्वकं स्त्रीपुत्रपौत्रादीनां च आयुरारोग्यधनधान्यादिसर्वसम्पद्वृद्धिपृथ्वीदानसमफलावाप्ति-विष्ण्वादिश्रीपत्यन्ताः त्रयस्त्रिंशद्देवता उद्दिश्य श्रीपुरुषोत्तमप्रीत्यर्थं मलमासमहापर्वनिमित्तं इदं सहिरण्यं कांस्यपात्रनिहितं सोपस्करं त्रयस्त्रिंशदपूपान्नं दक्षिणासहितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

विष्णुरूपी सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः। अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥

विष्णवे० ३। इत्यधिमासे दानम्॥

अथ बगलामुखीमन्त्रजपविधिः—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा काशीस्थफिरङ्गिराजद्वारे काशीस्थगोरण्डसभायां अमुकसाहेबसमीपे अमुकप्रभृति-शत्रूणां सहायकानां अमुकामुकादिसकलसहायकसहितामुकगोत्रस्यामुकशत्रोः वाङ्मुखपदगतिस्तम्भन-जिह्वाकीलनहृदयविद्रावणबुद्धिध्वंसनपरस्परविद्वेषणोच्चाटनपराजयपूर्वकं झटिति सकलफिरङ्गीणां मनो-वशीकरणपूर्वकममुकगोत्रस्य ससहायकस्यामुकशर्मणो मनोभिलषितद्रव्यलाभविजयैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं श्रीबगलामुखीदेवताप्रीतये अद्यारभ्य यथादिवसपर्यन्तं प्रतिदिनं श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य लक्षसंख्याकं जपं श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य दशावृत्तिपाठांश्च ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। वरणम्। श्रीबगलामुखीमन्त्र-जपार्थमेभिर्गन्धाक्षतपूगीफलद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। ब्राह्मणः 'वृतोऽस्मि' इत्युक्त्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा यजमानवृतोऽहं पूर्वसंकल्पसिद्ध्यर्थं लक्षसंख्यान्तर्गतपञ्चसहस्रसंख्याकं जपमहं करिष्ये॥ श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य दशावृत्तिविशिष्टपाठान् अद्यारभ्य सहस्रसंख्याकंजपमहं करिष्ये। अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः बृहतीच्छन्दः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

श्रीबगलामुखी देवता ह्रीं बीजम् स्वाहा शक्तिः ॐ कीलकम्, यजमानस्य शत्रुपराजयार्थं जपे विनियोगः । अथ न्यासः । नारदऋषये नमः शिरसि । बृहतीछन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखीदेवतायै नमः हृदि । ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये । स्वाहाशक्तये नमः पादयोः । ॐकीलकाय नमः सर्वाङ्गे । अथ करन्यासः । ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः । ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः । ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐस्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लीं हृदयाय नमः ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा । ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐबुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । अथ ध्यानम् ।

"सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युताम् । हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये"।। इति ध्यात्वा मूलमन्त्रं जपेत् । ॐह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा १००० जपान्ते पुनः षडङ्गन्यासान् कृत्वा—गुह्यातिगुह्यगोप्त्रि त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ।। इति जपं समर्प्य स्तोत्रपाठं कुर्यात् । इति बगलामुखीमन्त्रजपविधिः ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ बगलामुखीस्तोत्रम्—चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् । गदाहतविपक्षकां कलितलोल-जिह्वां चलां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्तम्भिनीम् ॥ १ ॥ पीयूषो-दधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्या-सिनीम् । स्वर्णाभां करपीडितारिरशनां भ्राम्यद्गदां विभ्रमामित्थं ध्यायति यान्ति तस्य सहसा सद्योऽथ सर्वापदः ॥ २ ॥ देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ यः पीतपुष्पाञ्जलिः भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् । पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तत्क्षणात् ॥ ३ ॥ वादी मूकति, रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति, क्रोधी शाम्यति, दुर्जनः सुजनति, क्षिप्रानुगः खञ्जति । गर्वी खर्वति, सर्वविच्च जडति, त्वन्मन्त्रणायन्त्रितः श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥ ४ ॥ मन्त्रस्तावदलं, विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते, यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं न तत् । मातः श्रीबगलेति नाम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ॥ ५ ॥ दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृत्संशमनं चलन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् । सौभाग्यैकनिकेतनं मम दृशौ कारुण्यपूर्णेक्षणं मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥ ६ ॥ मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय ब्राह्मीं मुद्रय देवदैत्यधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय । शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराङ्गि पीताम्बरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥ ७ ॥ मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे । मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥ ८ ॥ संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् । वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ ९ ॥ त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंहारिणी योषाकर्षणकारिणी जनमनःसंमोहसंदायिनी । स्तम्भोत्सारणकारिणी पशुपतेः सन्दोहसन्दायिनी जिह्वांकीलनभैरवी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥ १० ॥ विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्राः पौत्राः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः। मानं भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्तं तत्तद् भूतलेऽस्मिन्नरेण ॥ ११ ॥ यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि । दुष्टानां निग्रहार्थाय त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ इति लघुदर्पणे बगलामुखीस्तोत्रम् ॥

अथ कार्तवीर्यमन्त्रजपादिविधिः—

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० मम श्रीकार्तवीर्यार्जुनदेवताप्रीतिद्वारा क्षिप्रममुकशर्मणो बुद्धिहरणपूर्वकस्वधनप्राप्तये मनोभिलषितकार्यसिद्ध्यर्थं वा कार्तवीर्यसिद्ध्यर्थं दीपदानपूर्वकं ॐ ह्रीं कार्तवीर्य इति श्लोकरूपमन्त्रस्य पञ्चशतसंख्याकं जपं तदन्ते "कार्तवीर्यः खलद्वेषी" इति द्वादशसंख्याकान् पाठानद्यारभ्य यथाकालपर्यन्तं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। इति संकल्प्य गणेशपूजनं कुर्यात्। कार्तवीर्यार्जुनो नामेति श्लोकरूपमन्त्रजपार्थं कार्तवीर्यार्जुनस्तोत्रपाठार्थं चैभिः पुष्पाक्षतपूगीफलद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। यथाविहितं जपं पाठं च कुरु। यथाज्ञानं करवाणि । ब्राह्मणः आचम्य० प्राणा० देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो यजमानस्य कृतसंकल्पसिद्ध्यर्थं कार्तवीर्यार्जुनदीपदानं मन्त्रजपं पाठं च करिष्ये। गोमयोपलिप्तायां भूमौ ताम्रपात्रे वा रक्तचन्दनैः षट्कोणं कृत्वा तन्मध्ये—ॐ फ्रों बीजं लिखित्वा । तदुपरि ताम्रमयदीपपात्रं निधाय ततो दीपवति पात्रे संस्थाप्य "अनेन शुद्धिगव्येन पूरयामि जगत्पते। कार्तवीर्य महावीर्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कार्यं सिद्ध्यतु मे हितम् ।। इत्यनेन घृतपूर्णं कृत्वा दीपपात्राद्दक्षिणदिग्भागेऽधोग्रां दक्षिणाधारां छुरिकाम् 'ओं नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इति मन्त्रेण निखनेत् । "कार्तवीर्य नृपाधीश योगज्वलितविग्रह । भव सन्निहितो देव ज्वालारूपेण वर्तिषु" ।। इति मन्त्रेण पश्चिमाभिमुखं दीपं प्रज्वाल्य ततो दीपस्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा 'श्रीकार्तवीर्यार्जुनदीपदेवतायै नमः' इति चन्दनपुष्पादिभिः सम्पूज्य । दीपमन्त्रं सङ्कल्प्य–"कार्तवीर्य महाबाहो भक्तानामभयङ्कर । दीपं गृहाण मद्दत्तं कल्याणं कुरु सर्वदा ।।" अनेन दीपदानेन यजमानाभीष्टं प्रयच्छतु । ततो दीपाग्रे सहस्रं जपः कर्तव्यः ।।

अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुनस्तोत्रमन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीकार्तवीर्यार्जुनो देवता, फ्रों बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं यजमानाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । कार्तवीर्यार्जुनाय नमः हृदयाय नमः । कार्त० शिरसे स्वाहा । कार्त० शिखायै वषट् । कार्त० कवचाय हुम् । कार्त० नेत्रत्रयाय वौषट् । कार्त० अस्त्राय फट् । इति षडङ्गन्यासः । अथ ध्यानम्–सहस्रबाहुं सशरं सचापं रक्ताम्बरं रक्तकिरीटकुण्डलम् । चौरादिदुष्टभयनाशनमिष्टदं तं ध्यायेन्महाबलविजृम्भितकार्तवीर्यम् ।। इति ध्यानम् । "ॐ ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान् । तस्य स्मरणमात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते ।।" इति जपः कार्यः । जपान्ते पुनर्न्यासं कृत्वा जपं निवेदयेत् । अथ पाठः–कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली । सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः ।। १ ।। रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजा स्मर्तुरभीष्टदः । द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ।। २ ।। सम्पदस्तस्य जायन्ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जनाः सर्वे वशं गताः । राजानो दासतां यान्ति स्त्रिया वा वश्यतां तथा ॥ ३ ॥ आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियम् । सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं जप्तॄणां सर्वकामदम् ॥ ४ ॥ कार्तवीर्य्य महावीर्य सर्वशत्रु-विनाशन । सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान्नाशय पाहि माम् ॥ ५ ॥ उत्तिष्ठ दुष्टदमन सप्तद्वीपैकपालक। त्वामेव शरणं प्राप्तं सर्वतो रक्ष रक्ष माम् ॥ ६ ॥ दुष्टघ्न किं त्वं स्वपिषि किं तिष्ठसि चिरायसि । पाहि नः सर्वदा सर्वभयेभ्यः स्वसुतानिव ॥ ७ ॥ मतिभङ्गः स्वरो हीनः शत्रूणां मुखभञ्जनम् । रिपूणां च सभामध्ये सर्वत्र विजयं कुरु ॥ ८ ॥ यस्य स्मरणमात्रेण सर्वदुःखक्षयो भवेत् । तं नमामि महावीर्यमर्जुनं कृतवीर्यजम् ॥ ९ ॥ हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्रावृत्तिकं कृतम् । वाञ्छितार्थप्रदं नॄणां शूद्राद्यैर्न श्रुतं यदि ॥ १० ॥ प्रणम्य "क्षमस्व" इति विसर्जयेत् । प्रतिदिनमेवं जपो यावद्दीपसमाप्ति कार्यः । शुभदिने समाप्य ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणां दत्त्वा भोजयित्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे संक्षिप्तकार्तवीर्यदीपदानादिविधिः ॥

अथ हनुमदस्त्रस्तोत्रम्— आच० प्राणा० देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य श्रीहनुमत्प्रीतिद्वारा सर्वदा सर्वतो रक्षादीर्घायुरारोग्यबलपुष्टिमनःप्रसादसिद्धिपूर्वकसन्निहितदूरस्थविरोधि-शत्रुकृतयन्त्रमन्त्रतन्त्राभिचारकृत्यादिझटितिनिवृत्तिकामो हनुमत्पूजनपूर्वकं श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रस्य द्वादशपाठानद्यारभ्य यथाकालपर्यन्तं असति प्रतिबन्धे प्रतिदिनं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये । हनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रपाठार्थमेभिः पूगीफलाक्षतद्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । यथाविहितं जपं कुरु । यथाज्ञानं करवाणि । ब्राह्मणः आच० प्राणा० देशकालौ० अमुकगोत्रस्यामु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कशर्मणो यजमानस्य कृतसङ्कल्पसिद्ध्यर्थं श्रीहनुमच्छत्रुञ्जयस्तोत्रपाठमहं करिष्यामि । अस्य श्रीहनुमदस्त्रस्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीहनुमान् देवता। हं बीजं स्वाहा शक्तिः हा हा हा इति कीलकं यजमानस्य सर्वशत्रुनाशार्थे जपे विनियोगः ॥ भगवन्नञ्जनीसूनो महाबलपराक्रम । लोललाङ्गूलपातेन ममारातीन्निपातय ॥ १ ॥ मर्कटाधिप मार्तण्डमण्डलग्रासकारक । लो० ॥ २ ॥ अक्षक्षपण पिङ्गाक्ष दितिजासुक्षयङ्कर । लो० ॥ ३ ॥ रुद्रावतारसंसारदुःखभारापहारक । लो० ॥ ४ ॥ श्रीरामचरणाम्भोजमधुपायितमानस । लो० ॥ ५ ॥ वालिप्रमथनक्लान्तसुग्रीवोन्मोचन प्रभो । लो० ॥ ६ ॥ सीताविरहवारीश-भग्नसीतेशतारक । लो० ॥ ७ ॥ रक्षोराजप्रतापाग्निदह्यमानजगद्वन । लो० ॥ ८ ॥ ग्रस्ताशेषजगत्स्वास्थ्य-राक्षसाम्भोधिमन्दर । लो० ॥ ९ ॥ पुच्छगुच्छस्फुरद्वीरजगद्दग्धारिपत्तन । लो० ॥ १० ॥ जगन्मनोदुरुल्लङ्घ्यपारावारविलङ्घन । लो० ॥ ११ ॥ स्मृतिमात्रसमस्तेष्टपूरक प्रणतप्रिय । लो० ॥ १२ ॥ रात्रिञ्चरतमोरात्रिकृन्तनैकविकर्तन । लो० ॥ १३ ॥ जानक्या जानकीजानेः प्रेमपात्र परन्तप । लो० ॥ १४ ॥ भीमादिकमहाभीम वीरावेशावतारक । लो० ॥ १५ ॥ वैदेहीविर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृक्कान्तरामरोषैकविग्रह । लो० ॥ १६ ॥ वज्राङ्गनखदंष्ट्रेश वज्रिवज्रावगुण्ठन । लो० ॥ १७ ॥ अखर्वगर्वगन्धर्वपर्वतोद्भेदनेश्वर । लो० ॥ १८ ॥ लक्ष्मणप्राणसंत्राण आर्ततीक्ष्णकरान्वय । लो० ॥ १९ ॥ रामादिविप्रयोगार्तभरताद्यार्तिनाशन । लो० ॥ २० ॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेपसमुत्क्षिप्तारिवैभव । लो० ॥ २१ ॥ सीताशीर्वादसम्पन्न समस्तावयवाक्षत । लो० ॥ २२ ॥ इत्येवमश्वत्थतलोपविष्टः शत्रुञ्जयो नाम पठेत्स्वयं यः । स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रभावात ॥ २३ ॥ इति लघुदर्पणे हनुमदस्त्रस्तोत्रम् ॥

अथ उलूकादिशान्तिः

—गृहोत्पातनिमित्तेषूलूकः कपोतो गृध्रः श्येनो वा गृहं प्रविशेत् स्तम्भप्ररोहे वल्मोकं मधुजालं वा भवेदुदकुम्भप्रज्वलनासनशयनयानभङ्गेषु गृहगोधिकाकृकलासशरीरसर्पणे छत्रध्वजविनाशेऽन्येष्वप्युत्पातेषु भूकम्पोल्कापातकाकसर्पसङ्गमप्रेक्षणादिष्वेतदेव प्रायश्चित्तं ग्रहशान्त्युक्तेन विधिना कृत्वाऽऽचार्याय वरणं दत्त्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वस्तिवाच्याशिषः प्रतिगृह्य शान्तिर्भवति । तत्र विशेषसङ्कल्पः—देशकालौ० मम गृहे उलूकारोहणसूचितसर्वारिष्टशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमुलूकशान्तिं करिष्ये । देशकालौ० मम गृहे कपोतगृध्रादिप्रवेशसूचि० र्थं कपोतशान्तिं वा करिष्ये । देशकालौ० मम गृहे मक्षिकाकृतमधुजालदोषसूचि० मधुजालशान्तिं करिष्ये । देशकालौ मम गृहे प्रज्वलितदीपपतनजनितसकलदुष्टफलपरिहारपूर्वकशुभ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फलप्राप्त्यर्थं श्रीवैश्रवणदेवताप्रीतये दीपपतनशान्तिं करिष्ये। देशकालौ० मम गृहे कनकवियोग-दुष्टसूचि० कनकवियोगशान्तिं करिष्ये। देश० मम काकमैथुनदर्शनजनितमरणादिसर्वारिष्टशान्त्यर्थं काकमैथुनदर्शनशान्तिं करिष्ये। देशकालौ० मम काकस्पर्शजनितमृत्युबाधादिदोषपरिहारार्थं काकस्पर्शशान्तिं करिष्ये। स्त्रीकर्तृत्वे वैधव्यादिदोषपरिहारार्थमिति विशेषः। अथवा देशकालौ० मम शिरसि काकस्थितिजन्यवैधव्यमरणाद्यखिलारिष्टनिवृत्तिपूर्वकाचलसौभाग्यपुत्रपौत्रादिवृद्धिदीर्घायुरारोग्यप्राप्त्यर्थमिति विशेषः। इति लघुदर्पणे उलूकादिशान्तिः॥

अथ राज्याभिषेकविधिः—नत्वा रामं जगन्नाथः देवभद्रीयपद्धतेः। राज्याभिषेकं संक्षिप्य कुरुते शिष्टतुष्टये॥ राज्याभिषेकदिनात्पूर्वदिने षोडशहस्तं मण्डपं विधाय। मध्ये वेदीं कृत्वा। तदुत्तरे हस्तमितं चतुरस्रं त्रिमेखलं कुण्डं कृत्वा। ईशान्यां ग्रहवेदीं नैर्ऋत्यां वास्तुवेदीं च रचयेत्। ततः कृतोपवासः त्र्यब्दादिप्रायश्चित्तं विधाय। अभिषेकदिने कृतनित्यक्रियो दर्भपाणिराचम्य सपत्नीकः प्राङ्मुख आसने उपविश्य। आचम्य। प्राणानायम्य देशकालौ० ममाऽमुकवर्मणः साम्राज्यभौज्यस्वाराज्यवैराज्यपारमेष्ठ्यराज्यमहाराज्याधिपतित्वसार्वभौमप्राप्तिराष्ट्रराज्याभिवृद्धिविपुलधनपुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिसर्वशत्रुनाशतद्राज्यावाप्तिविजयबलारोग्यतेजोराज्यस्थैर्यसदभीष्टसिद्धिद्वारा वसुन्धरायाः समुद्रपर्यन्ताया एकराज्यत्वावाप्तिकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सग्रहमखमैन्द्रीशान्तिपूर्वकं राज्याभिषेकविधिं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। गणेशपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा पुरोहितं वृणुयात्। करिष्यमाणे राज्याभिषेके पौरोहित्यकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राष्ट्रगोपं पौरोहित्येन एभिर्वरणद्रव्यैः त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । तत आचार्यं ब्रह्माणं सदस्यं दैवज्ञं चतुरो ऋत्विजश्च चतुर्वेदविदो द्विजान् वृणुयात् । सर्वेषां मधुपर्कं कुर्यात् । चतुर्वर्णमुख्यानु-प्रवेशयेत् । ततो मण्डपप्रवेशः । तत आचार्यः—यदत्र संस्थितमित्यादिना सर्षपान्विकीर्य आपो-हिष्ठेति पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य । ततः वास्तुपूजनादिमण्डपपूजान्तं पूर्ववत् कृत्वा । ततः कुण्डे स्थण्डिले वा पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं संस्थाप्य । ग्रहवेद्यां ग्रहान्स्थापयेत् । ततो महावेद्यां सर्वतोभद्रे देवान् सम्पूज्य । मध्ये कलशं संस्थाप्य । तदुपरि कृताग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठां सुवर्णनिर्मितप्रतिमात्रयीं संस्थाप्य । त्रातारमिन्द्रेति इन्द्रं० १ । आदित्यै रास्नासी० इन्द्राणीं० २ । श्रीश्चते लक्ष्मी० राज-लक्ष्मीं० ३ ॥ आवाह्य सम्पूज्य । यथाऽवकाशं वेद्यामेव सर्वाण्यायुधानि राजचिह्नानि च सम्पूज्य। तदग्रे राज्ञो मुकुटं हेमपट्टं च मन्त्रवत् पञ्चगव्येन प्रक्षाल्य संस्थाप्य सम्पूज्य तथा दक्षिणावर्त-शङ्खं तत्रैव संस्थाप्य पूजयेत्। राज्ञो वाहनस्य राजमहिष्याश्च वामहस्ते कङ्कणं बध्वा रात्रौ वसन्ति । मण्डपादुत्तरतः तोरणकदलीस्तम्भमण्डितायां स्नानशालायां व्रीहिषु यवेषु वा सौवर्णनवकलशान् यथा-विधि संस्थाप्य । यथासंभवमनेकतीर्थजलेनापूर्य सर्वौषधिसर्वगन्धसर्वरत्नसर्वबीजफलक्षीरिवृक्ष-क्षीरि-लतापल्लवान् क्षिप्त्वा बहुभिः सितवस्त्रैर्मालाभिश्चावेष्टय । तत्समीप एकं पञ्चगव्ययुतं जलपूर्णं मृन्मयं घृतेन पूर्णं हैमं कुम्भं दुग्धेन राजतं दध्ना ताम्रं मधुना मार्तिकं कुशोदकेन च मार्तिकं शतच्छिद्रं च सौवर्णं ताम्रं वा । अन्यांश्च यथालाभं नदीसङ्गमसरःकूपचतुःसमुद्रोदकगङ्गा-यमुनासरस्वतीजलपूर्णान् मृन्मयान्कलशान् स्थापयेत् । एकस्मिन्कलशे पिष्टसर्वौषध्युदकं अन्येषु गन्धोदकं बीजोदकं पुष्पोदकं सर्वरत्नोदकं कुशपल्लवपूर्णोदकानि संस्थाप्य । अथ यथासम्भव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्वताग्रादिमृदः स्थाप्याः । औदुम्बरकाष्ठनिर्मितं च स्थापयेत् । भद्रासनं तु हैमं राजतं ताम्रं क्षीरि-दाहजं वा माण्डलिकस्य हस्तेनोच्चमायतं च । अनन्तरं रञ्जितसमस्तराज्यार्थिनां सपादहस्तेन । महाराजस्य सार्द्धहस्तेन। ततो ब्रह्मोपवेशनादि-आघारावाज्यभागान्तं कृत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात् । ततो नवग्रहहोमं कृत्वा प्रधानहोमः । प्रधानः (इन्द्रः) त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतसङ्ख्यया समिदाज्यपायसतिलाहुतिभिर्हुत्वा शच्यै च आदित्यै रास्नासीति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतसङ्ख्यया समिदाज्यपायसतिलाहुतिभिर्हुत्वा राज्यलक्ष्म्यै श्रीश्चते० इति मन्त्रेण घृताक्ततिलचर्वाज्याहुतिभिः अष्टोत्तरशतसङ्ख्यया जुहुयात् । ततः सर्वतोभद्रदेवतानामाज्याहुतीर्जुहुयात् । अस्मिन्दिने राज्ञः सपत्नीकस्य पुरोहितस्य चोपवासः । 'उपवासो भवेदेवमशक्तौ नक्तमिष्यते ।' तत्रैव तं रात्रिशेषमति-वाहयेयुः । इत्यधिवासनम् । ततः प्रभाते विमले स्नात्वा नित्यकर्म कृत्वा मण्डपमागत्य स्विष्टकृ-दादि नवाहुतीर्हुत्वा दिक्पालादिभ्यः पूर्ववद् बलिं दत्त्वा पूर्णाहुतिं हुत्वा संस्रवप्राशनादिपूर्णपात्रदा-नान्तं कुर्यात् । ततः सपत्नीको राजा सुगन्धतैलादिना स्वेच्छया कृतस्नानः शालायामानीय भद्रा-सनोपरि स्वस्तिकं विरच्य तस्मिन् व्याघ्रसिंहाद्यन्यतमप्राचीनग्रीवं चर्मास्तीर्य । श्वेतवस्त्रेणाच्छाद्य तत्र पीठे वामतः पत्न्या सह प्राङ्मुख उपवेश्य मृद्भिः स्नापयेत् । तत्र सहस्रशीर्षा इति पर्वता-ग्रमृदा शिरो विलिप्य अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां चिबुकादधि । यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामि ते ॥ इन्द्रध्वजस्थानमृदा ग्रीवाम् ॥ आन्त्रो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

भ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठो हृदयादधि। यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो विवृहामि ते॥
इति राजाङ्गणमृदा हृदयम् ॥ त्वमिन्द्र सजोष समर्कं बिभर्षि बाह्वो । वज्रं शिशानऽओ-
जसा॥ यस्य विश्वानि हस्तयोःपञ्चक्षितीनां वसु। स्याशयं स्त्रपो अस्मध्रुग्दिव्ये वा
शनिर्जहि॥ इति गजदन्तोद्धृतमृदा दक्षिणवामभुजौ ॥ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृ-
णोति स मनावगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥
इति सरोवरमृदा पृष्ठम् ॥ नाभा नाभिन्न आददे चक्षुश्चित्सूर्येसचा। कवेरपत्यमादुहे॥
इति नदीसङ्गममृदोदरम् ॥ यः कुक्षिः सोमपा तमः समुद इव पिन्वते । उर्वीरापो
नकाकुदः । इति नदीकूलद्वयमृदोभयपार्श्वौ ॥ सोमान स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।
कुक्षीवन्तं यऽऔशिजः ॥ इति वेश्याद्वारमृदा कटिम् ॥ ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां
पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् । यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो विबृहामि ते ॥
इति गजस्थानमृदोरू० ॥ मेहनाद्धनङ्करणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः । यक्ष्मं सर्वस्मादन्म-
नस्तमिदं विबृहामि ते ॥ इति गोष्ठमृदा जानुनी ॥ तेनैवाश्वस्थानमृदा जङ्घे ॥ एता-
वानस्य० ॥ इति रथचक्रोद्धृतमृदा पादौ ॥ अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विबृहामि ते । इति सर्वमृद्भिः सर्वाङ्गाणि विलेपयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः पूर्वस्थापितेन पञ्चगव्ययुतेन जलकुम्भेन स्नापयेत् । मन्त्रास्तु । गायत्रीं पठित्वा । गन्धद्वारां । आप्यायस्व० । दधिक्राब्णो० । तेजोसि० । आपोहिष्ठा० । ततो विप्रामात्यः तेजोसि० इति पूर्वस्थापितेन घृतपूर्णेन हैमकुम्भेन प्राच्यां स्थित्वाभिषिञ्चेत् ॥ अमात्यः क्षत्रियश्चेत् । आप्यायस्व० इति दुग्धपूर्णेन रौप्यकुम्भेन दक्षिणतः स्थित्वाभिषिञ्चेत् ॥ अमात्यो वैश्यश्चेत् दधिक्राब्णो० इति दधिपूर्णेन ताम्रकुम्भेन पश्चिमतः स्थित्वाभिषिञ्चेत् ॥ शूद्रामात्या मधुव्वात० ३ इति ऋचा मधुपूर्णेन मृत्कुम्भेनोत्तरतः स्थित्वाभिषिञ्चेत् ॥ स एव तत्रैव स्थित्वा देवस्य त्वा० भ्यां अभिषिञ्चामि । इति कुशोदकपूर्णेन मृत्कुम्भेनाभिषिञ्चेत् ॥ ततः पुरोधा राज्ञो दक्षिणत उदङ्मुखः स्थित्वा सम्पातयुतेन हैमेन शतच्छिद्रकुम्भेन राजसूयाभिषेकमन्त्रैरभिषिञ्चेत् । सोमस्यत्वाद्युम्नेनाभिषिञ्चाम्यग्नेर्भ्राजिसासूर्यस्यवर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण । क्षत्राणां क्षत्रपतिरेध्यत्ति दिद्यून्पाहि ॥ इमंदेवा० ॥ देवस्यत्वा० भ्यामग्नेस्तेजसा सूर्यस्यवर्च्चसेन्द्रस्येन्द्रियेणाभिषिञ्चामि बलाय श्रियै यशसेन्नाद्याय ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः । ततो वेदशास्त्राभिज्ञोऽन्यो विप्रो भद्रासनगतमेव राजानं सवाहनं शतच्छिद्रं सौवर्ण (ताम्र) कुम्भेनाभिषिञ्चेत् । ततः या ओषधीः पूर्वा० । इति मन्त्रेण पिष्टसर्वौषध्युदकुम्भेन ॥ रथेतिष्ठन्नयतिव्वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुखारथिः । अभीषूणां महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

रश्मयः ॥ इति गन्धोदककुम्भेन ॥ आब्रह्मन्ब्राह्म० । इत्यष्टादशधान्यबीजोदककुम्भेन। अष्टादशधान्यलक्षणम् । व्रीहिर्यवास्तिलाश्चैव यावनालास्तथैव च । सतनकाः कुलत्थाश्च कङ्गुका कोरदूषकाः ॥ माषा मुद्गा मसूराश्च निष्पावाः श्यामसर्षपाः । गोधूमाश्चणकाश्चैव नीवाराढक्य एव च ॥ एवं क्रमेण जानीयाद्धान्यान्यष्टादशैव तु । याः फलिनी० इति पुष्पोदककुम्भेन॥ अनेनैव फलोदककुम्भेन च आशुः शिशान० इति नवरत्नोदककुम्भेन ॥ नवरत्ननामानि-- मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् । पुष्परागं च गोमेदं नालं गारुत्मकं तथा ॥ प्रवालयुक्तान्युक्तानि महारत्नानि वै नव । ये देवाऽअग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा । ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्यः स्वाहा । ये देवा विश्वदेवनेत्राःपश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा । ये देवा मित्रावरुणनेत्रा वा मरुन्नेत्रा उत्तरासदस्तेभ्यः स्वाहा । ये देवाः सोमनेत्रा उपरि सदोदुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा । इति मन्त्रेण कुशदूर्वापल्लवपूर्णोदककुम्भेन राजानमभिषिञ्चेत् । ततोऽन्यविप्रो गोरोचनया गन्धद्वारां० इति मन्त्रेण राज्ञः शिरसि कण्ठे च लेपयेत् । ततः समीचीना विप्राः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राः अनुलोमाश्च यथालाभगङ्गायमुनाद्यनेकनदीसरःकूपचतुःसमुद्रनिर्झरजलपूर्णैः पूर्वासादितैरनेककलशैः स्वस्वशाखीयैर्मन्त्रैरभिषिञ्चेयुः । शूद्रानु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

लोमादयश्च तूष्णीमेव वा तस्मिन्नेव कालेऽमात्या मुख्याश्च छत्रचामरवेत्रान् धारयेयुः । नृत्यकाः नृत्यं कुर्युः । गायका गानं कुर्युः । वादकाः मृदङ्गडमरुशङ्खभेरीडिण्डिमझर्झरादीनि वादयेयुः । विप्रा मन्त्रपाठं सर्वे जयध्वनिं च पठेयुः । वन्दिनश्च स्तुतिं कुर्युः । ततः पुरुषसूक्तेन दक्षिणावर्तशङ्ख-जलेनाभिषिच्य । ततो ग्रहकलशोदकेन प्रधानकलशोदकेन च कुशदूर्वापल्लवैरुदङ्मुखाचार्यत्विजस्ति-ष्ठन्तश्चतुर्वेदोक्तमन्त्रै राजानमभिषिञ्चेयुः । प्राच्यां त्वामभिषिञ्चन्तु वसवस्तेजसे श्रियै । याम्यायामभिषिञ्चन्तु त्वां रुद्रो विजयाय च ॥ आदित्यास्त्वाभिषिञ्चन्तु प्रतीच्यां दिशि वृद्धये । विश्वेदेवास्तथोदीच्यामभिषिञ्चन्तु तुष्टये ॥ दिगीशास्त्वभिषि-ञ्चन्तु त्वां सदा विजयाय च ॥ ततः सांवत्सरः (ज्योतिर्विद्) सर्वकुम्भमध्ये आसादित-हैमकुम्भोदकं कुशैर्गृहीत्वा वक्ष्यमाणैः सुरास्त्वामभिषिञ्चन्त्वित्यादिभिः श्लोकैरभिषिञ्चेत् । सकल-मन्त्राभिषेचनान्ते अवशिष्टकलशजलं कलशेनैव सर्वं मूर्ध्नि क्षिपेत् । ततस्तिष्ठन्प्रत्यङ्मुखो भूत्वा जय त्वं पृथिवीमिमाम् । धर्मस्ते निखिले राज्ये वर्द्धतां पालय प्रजाः । वर्द्धस्व त्वं श्रियै पुष्टयै जयायाभ्युदयाय च । राजानः सन्तु ते गोत्रे विजयस्ते सदास्तु ते ॥ इति पुरोहितादयो वदेयुः । ततो राजा सुगन्धितैलोद्वर्तनशुद्धोदकैः स्नात्वा । श्वेतोष्णीषादिवस्त्रादि धृत्वा । यज्ञोपवीतद्वयं धृत्वा । रोचनातिलकं कृत्वा । मालादि धृत्वा । ततोऽलंकृततनूपो दर्पणे मुखा-वलोकनं कुर्यात्—रोचिष्णुरिति । सहिरण्याज्यपात्रे । रूपेण वो० इति मन्त्रेण रूपमवलोक्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

तत्पात्रं सदक्षिणं विप्राय दत्त्वा। बृहस्पते० इति छत्रं मस्तकोपरि धारयेत्। चन्दनकुङ्कुमदधिदूर्वादिमङ्गलद्रव्याण्यालभ्य। श्रीविष्णुं सुवर्णादिप्रतिमायामक्षतपुञ्जे वा षोडशोपचारैरभ्यर्च्य। ततः अग्नेर्दक्षिणदिग्भागे व्याघ्रचर्मास्तीर्य तस्मिन् राजानं उपवेशयेत्। ततः पुरोधा मधुपर्केण राजानं पूजयेत्। राजा च तं पुरोधसं दैवज्ञं च सम्पूजयेत्। अथ सुलग्ने दैवज्ञो राज्ञः शिरसि मुकुटं तस्योपरि पट्टं च बध्नीयात्। आयुष्यं वर्च०। राज्ञो मूर्ध्नि किरीट त्वं सुस्थिरः शत्रुसूदन। त्वां दृष्ट्वा रिपवः सर्वे पलायन्ते यतस्ततः॥ नानारत्नैर्विचित्रस्त्वं मणिना सुविराजसे। तथायं राजराजत्वं प्राप्नोति विजयं ध्रुवम्॥ इति मुकुटं बध्वा पट्टं बध्नीत। स्वस्ति नऽइन्द्रो०। राज्ञः किरीट! बध्नामि त्वां हि काञ्चनपट्टक। शक्रमूर्ध्नि यथा बद्धो देवराजत्वसिद्धये॥ यं दृष्ट्वा दैत्यराजानो विद्रवन्ति दिशो दश। एवं ते विजयो नित्यं कुरु राज्यमकण्टकम्॥ ततः शुभलग्ने राजमन्दिरप्राग्भागे सुमनोहरं सिंहासनं रचयित्वा। तस्योपरि वृषचर्म तदुपरि सिंहस्य तदुपरि व्याघ्रस्य चर्माण्यास्तीर्य। क्षौमवस्त्राच्छन्ने सिंहासने आत्वाहार्षमिति ध्रुवसूक्तेन वाद्यघोषेण पुरोहितो राजानं राज्यासने उपवेशयेत्। आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ इहैवैधिमापच्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह- ॥१११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्रुवस्तिष्ठ इहराष्ट्रमुधारय ॥ इममिन्द्रो अदीधरत् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा । तस्मै सोमो अधिब्रुव तस्मा उब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवाद्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासःपर्वता इमे । ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयम् ॥ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः । ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभिसोमं भृशामसि । अथो त इन्द्रः केवलीर्विशोवलिहृतस्करत् ॥ ततो द्वारपालस्तत्रोपविष्टाय राज्ञेऽमात्यान्पौरान् वणिजः प्रकृतीश्च क्रमेण दर्शयेत् । ततो राजा पुरोहितं सम्पूज्य । ग्रामवस्त्रगजाश्वसुवर्णगोछागगृहदानानि पुरोहिताय दद्यात् ॥

अथ ग्रामदानम्—देशकालौ० सर्वपापक्षयपूर्वकदेयग्रामाद्याभरणयोग्यपुरुषसंख्यादशकन्पावच्छिन्नस्वर्गवासप्राप्त्यैहिकधनधान्यप्राप्तिकामो ग्रामदानं करिष्ये । ग्रामं ब्राह्मणं च सम्पूज्य । देशकालौ० सर्वपाप० अमुकनामकग्रामं सस्योत्पत्तिजलाशयस्थानानेकवृक्षलतागुल्मादिमनोहरं विष्णुदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम । स्वस्तीति ब्राह्मणो वदेत् । त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूतकृपानिधे । ग्रामदानेन तुष्टस्त्वं प्रयच्छ मम वाञ्छितम् ॥ कृतस्य ग्रामदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं सुवर्णनिष्क्रयद्रव्यं अमुकगोत्राय० संप्रददे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ भूमिदानम्—निवर्तनमिता भूमिर्देया "दशहस्तेन दण्डेन त्रिंशद्दण्डा निवर्तनम्" देशकालौ० सर्वपापक्षयपूर्वकषट्षष्टिसहस्रवर्षमितस्वर्गवासकामः भूमिदानं करिष्ये। पात्रं वृत्वा सम्पूज्य देशकालौ० सर्वपा० इमां गोचर्ममात्रां शक्त्या अधिकां वा भूमिं विष्णुदैवत्यां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। न ममेति सपुष्पं कुशजलं ब्राह्मणहस्ते क्षिपेत्। ब्राह्मणः समीपस्थां भूमिं प्रदक्षिणीकृत्य प्रतिगृह्णीयात्। 'यथा भूमिप्रदानस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्। दानान्यन्यानि मे शान्तिर्भूमिदानाद्भवन्त्विह ॥' कृतैतद्भूमिदानप्रतिष्ठार्थमिदं निष्कपरिमितं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्रा० ब्राह्मणस्तु स्वस्तीति वदेत् ॥ १ ॥

अथ वस्त्रदानम्—सूक्ष्मवस्त्रद्वयं बहुमूल्यमष्टहस्तमितं दद्यात्। कृतस्य पौरन्दरीशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमे बार्हस्पत्ये वाससी बृहस्पतिदैवते अमुकगोत्रा० सम्प्रददे। **शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रदानाच्छान्तिं प्रयच्छतु ॥**

अथ गजदानम्—देशकालौ० षट्षष्टिवर्षसहस्रावधिकामरपुरभोगोत्तरं महाराजत्वकामाय गजदानं करिष्ये। पात्रं वृत्वा सम्पूज्य। गजं गन्धमाल्यादिभिरभ्यर्च्य। देशकालौ० षट्० समोऽहं इमं गजं कक्षारज्जुबन्धनस्थिरासनसहितकाञ्चनमौक्तिकं जालादिविकीर्णघण्टिकाचामर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

वस्त्रगन्धपुष्पाद्यलंकृतं प्रजापतिदैवत्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति सकुशजलं द्विजहस्ते क्षिपेत् । द्विजेन शुण्डादण्डे प्रतिग्रहः कार्यः । यजमानो गजं प्रार्थयेदेतैर्मन्त्रैः । ऐरावतश्चतुर्दन्तो गजानां नायकस्तु यः । दिग्दन्तिनां पूज्यतम पापं त्त्वयतु नः प्रभुः ॥ सुप्रतीकगजेन्द्रस्त्वं सरस्वत्याभिषेचक । इन्द्रस्य वाहनः श्रेष्ठः सर्वदेवैस्सुपूजित ॥ गजेन्द्रमत्तमातङ्गदैत्यसैन्यविनाशक । तव दानेन मे शान्तिः सर्वदाऽस्तु महत्सुखम् ॥ कृतैतद्गजदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं सुवर्णं सदक्षिणं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ततो द्विजो गजमारुह्य गच्छेत् ॥

अथाश्वदानम्—देशकालौ० हयरोमसंख्यादिवसगान्धर्वलोकवासानन्तरं नानाविधया नानाप्राप्तिकामाय अश्वदानं करिष्ये । द्विजं वृत्वा सम्पूज्य । देशकालौ० हयरोम० प्तिकामः इममश्वं यं चपलप्रमाणनिर्मितं रौप्यशफसहितं शक्त्या सुवर्णाद्यासनालंकृतं वस्त्रसहितं च वरुणदैवत्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति द्विजहस्ते साक्षतकुशजलं प्रक्षिप्य न ममेति वदेत् । विप्रेण कर्णे प्रतिग्रहः कार्यः । उच्चैःश्रवास्त्वमश्वानां राज्ञां विजयकारक । सूर्यवाह नमस्तुभ्यमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ कृतैतदश्वदानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणात्वेन अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । विप्रस्तु स्वस्ति–वदेत् । ततोऽश्वमारुह्य गच्छेत् ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ सुवर्णदानम्—तच्च निष्कत्रयमितं कनिष्ठम्। द्वादशमाषको निष्कः। कृतस्य पौरन्दरीशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं सदक्षिणं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

अथ गोदानम्—द्विजं गां च सम्पूज्य। कृतस्य पौरन्दरीशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां गां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे॥

अथ छागदानम्—तत्र विप्रं छागं च सम्पूज्य। कृतस्य पौरन्दरीशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः सां०र्थमिमं छागं सदक्षिणं त्वाष्ट्रदैवत्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। यस्मात्त्वं सर्वयज्ञानामङ्गत्वेन व्यवस्थितः। यानं विभावसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे[1]॥

अथ गृहदानम्—कृतस्य पौरन्दरीशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं गृहं शयनासनभोजनोपस्करयुतं सर्वधान्यप्रपूरितं सर्वदैवत्यं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय

१ छागस्य वपायामेदतश्चेति श्रुतेः छागस्य यज्ञाङ्गत्वेन दानार्हत्वमस्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुभ्यमहं सम्प्रददे। स्वस्तीति ब्राह्मणो वदेत्। 'इदं गृहं गृहाण त्वं सर्वोपस्करसंयुतम्। तव विप्र प्रसादेन मम सन्तु मनोरथाः ॥' कृतस्य गृहदानप्रतिष्ठार्थं दक्षिणां अमुकगोत्राय० दे। ततो राजा दैवज्ञं सम्पूज्य ग्रामं दद्यात्। तत आचार्यं ब्रह्माणं सदस्यं ऋत्विजः सम्पूज्य। तेभ्यश्च यथाविभवं दक्षिणां दद्यात्। ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनं विसर्जनं च विधाय। प्रतिमादिकं पुरोहिताय दत्त्वा अग्निं विसृजेत्। सुवर्णादि कलशानपि पुरोहिताय दद्यात्। ततो राजा शस्त्राणि राजचिह्नानि च सम्पूजयेत्। तद्यथा–देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य राष्ट्रसहितस्य० इत्यादिमहोत्पातनिवृत्तिपूर्वकक्षेमस्थैर्यायुरारोग्याखण्डितोत्तरात्यन्तविजयकीर्त्यायुर्यशोबलप्राप्त्यर्थं छत्रादिपूजनं करिष्ये॥

अथ छत्रपूजा—छत्राय नमः, इति मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य पठेत्। यथाम्बुदश्छादयति शिवायै मां वसुन्धराम्। तथा छादय राजानं विजयारोग्यवृद्धये॥

अथ चामरपूजा—चामरायनमः। शशाङ्करसङ्काश क्षीरहिण्डीरपाण्डुर। प्रोत्सारयाशु दुरितं चामरामरदुर्लभ॥

अथ ध्वजपूजा—ध्वजाय नमः। शक्रकेतो महावीर्य श्यामवर्णार्चयाम्यहम्। पत्रिराज नमस्तेऽस्तु तथा नारायणध्वज॥ काश्यपेयारुणभ्रातर्ना-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

गारे विष्णुवाहन । अप्रमेय दुराधर्ष रणे देवारिसूदन ॥ गरुत्मान्मारुतगतिस्त्वयि सन्निहितायतिः । सारवन्त्यायुधान्यत्र रक्ष त्वं च रिपून् दह ॥

अथ पताकापूजा—पताकायै नमः। हुतभुग्सवो रुद्रा वायुः सोमो महर्षयः । नागकिन्नरगन्धर्वयक्षभूतगणग्रहाः ॥ प्रमथास्तु सहादित्यभूतेशो मातृभिः सह । शक्रः सेनापतिः स्कन्दो वरुणश्चाश्रितास्त्वयि ॥ प्रदहन्तु रिपून् सर्वान् राजा विजयमृच्छतु । यानि प्रयुक्तान्यरिभिरायुधानि समन्ततः ॥ पतन्तूपरि शत्रूणां हतानि तव तेजसा । हिरण्यकशिपोर्युद्धे युद्धे देवासुरे तथा ॥ कालनेमिवधे यद्वत्तद्वत् त्रिपुरघातने । शोभितासि तथैवाद्य शोभयास्मांश्च संस्मर ॥ नीलान् श्वेतानिमान्दृष्ट्वा नश्यन्त्वाशु नृपारयः । व्याधिभिर्विविधैर्घोरैः शस्त्रैश्च युधि निर्जिताः ॥ पूतना रेवती नाम्ना कालरात्रिश्च या स्मृता । दहत्याशु रिपून्सर्वान्पताके त्वं मयार्चिता ॥

अथ खड्गपूजा—खड्गाय नमः । असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः । श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मधारस्तथैव च ॥ एतानि तव नामानि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वयमुक्तानि वेधसा । नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः ॥ रोहिण्यश्च शरीरं ते दैवतं च जनार्दनः । पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥ नीलजीमूतसङ्काशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः । भावशुद्धो मर्षणश्च अतितेजास्तथैव च ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः ॥ तया विस्तारिता चासि देवानां प्रतिपादिता । सर्वसत्त्वाङ्गभूतासि सर्वाशुभनिबर्हिणी । तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥

अथ छुरिकापूजा—छुरिकायै नमः । सर्वायुधानां प्रथमं निर्मितासि पिनाकिना । शूलायुधाद्विनिष्कृष्य कृत्वा मुष्टिग्रहं शुभम् ॥ चण्डिकायाः प्रदत्तासि सर्वदुष्टनिबर्हिणी । छुरिके रक्ष मां नित्यं शान्तिं यच्छ नमोस्तु ते ॥

अथ कट्टारपूजा—कट्टाराय नमः । रक्षाङ्गानि गजान् रक्ष रक्ष वाजिधनानि च । मम देहं सदा रक्ष कट्टारक नमोस्तु ते ॥

अथ धनुष्पूजा—धनुषे नमः । सर्वायुध महामात्र सर्वदेवारिसूदन ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

चाप मां समरे रक्ष साकं शरवरैरिह । धृतं कृष्णेन रक्षार्थं संहाराय हरेण च ॥
त्रयीमूर्तिगतं देवं धनूरत्नं नमाम्यहम् ॥

अथ कुन्तपूजा—कुन्ताय नमः । प्रास पातय शत्रूंस्त्वमनया नाकमायया । गृहाण जीवितं तेषां मम सैन्यं च रक्षताम् ॥

अथ चर्मपूजा—चर्म्मणे नमः । शर्मप्रदस्त्वं समरे चर्म सैन्ये यशोद्यमे । रक्ष मां रक्षणीयोऽहं तापनेय नमोऽस्तु ते ॥

अथ शक्तिपूजा—शक्तये नमः । शक्तिस्त्वं सर्वदेवानां ग्रहस्य च विशेषतः । शक्तिरूपेण देवि त्वं रक्षां कुरु नमोऽस्तु ते ॥

अथ बन्दूकपूजा—अग्नियन्त्राय नमः । लघुखर्परगुटिकाभिः परप्राणहरं मतम् । योधहस्तस्थितं यन्त्र विजयायास्तु मे सदा ॥

अथ शतघ्नी (तोप) पूजा—महाग्नियन्त्राय नमः । सर्वयन्त्रमयी देवी सर्वयुद्धनिबर्हिणी । शत्रूणां भयदात्री च भक्तानां जयवर्धिनी ॥
बृहद्यन्त्रस्थिता काली रिपुसैन्यभयङ्करी । सबलं रक्षतु सदा युद्धे मां सा जयप्रदा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पाशपूजा—पाशाय नमः । पाश त्वं नागरूपोऽसि विषपूर्णो विषोद्भवः । शत्रवो हि त्वया बद्धा नागपाश नमोऽस्तु ते ॥

अथ परशुपूजा—परशवे नमः । परशो त्वं महातीक्ष्ण सर्वदेवारिसूदन । देव्या हस्तस्थिता नित्यं शत्रुक्षय नमोऽस्तु ते ॥

अथ कनकदण्डपूजा—कनकदण्डाय नमः । प्रोत्सारणाय दुष्टानां साधुसंरक्षणाय च । ब्रह्मणा निर्मितश्चासि व्यवहारप्रसिद्धये ॥ यशो देहि सुखं देहि जयदो भव भूपतेः । ताडयस्व रिपून् सर्वान् हेमदण्ड नमोऽस्तु ते ॥

अथ दुन्दुभिपूजा—दुन्दुभये नमः । दुन्दुभे त्वं सपत्नानां घोरो हृदयकम्पनः । भव भूमिपसैन्यानां तथा विजयवर्द्धनः ॥ यथा जीमूतघोषेण प्रहृष्यन्ति च बर्हिणः । तथास्तु तव शब्देन हर्षोऽस्माकं मुदावहः ॥ यथा जीमूतशब्देन स्त्रीणां त्रासोऽभिजायते । तथात्र तव शब्देन त्रस्यन्त्वस्मद्द्विषो रणे ॥

अथ घटिकापूजा—घटीयन्त्राय नमः । ज्योतिःशास्त्रप्रसिद्धासि पलषष्टिमिते घटिः । स्वयंभुवा निर्मितासि कालज्ञानाय ते नमः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

अथ शङ्खपूजा—शङ्खाय नमः। पुण्यस्त्वं शङ्ख पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम्। विष्णुना विधृतो नित्यमतः शान्तिप्रदो भव॥

अथ सिंहासनपूजा—सिंहासनाय नमः। विजयो जयदो जेता रिपुघाती शुभङ्करः। दुःखहा धर्मदः शान्तः सर्वारिष्टविनाशनः॥ एते वै सन्निधौ यस्मात्तव सिंहा महाबलाः। तेन सिंहासनेति त्वं देवैर्मन्त्रैश्च गीयसे॥ त्वयि स्थितः शिवः शान्तस्त्वयि शक्रः सुरेश्वरः। नमस्ते सर्वतोभद्र भद्रदो भव भूपतेः। त्रैलोक्यजयसर्वस्व सिंहासन नमोऽस्तु ते॥

अथ शिविकापूजा—शिविकायै नमः। महेन्द्रनिर्मिते दिव्ये देवराजादिसेविते। शिविके रक्ष मां नित्यं सदा त्वं सन्निधा भव॥

अथ रथपूजा—रथाय नमः। शस्त्रास्त्रधारणार्थाय निर्मितो विश्वकर्मणा। रथनेमिस्वनैर्घोरै रैरिपोर्हृदयकम्पन॥

अथ द्विचक्ररथ (बग्गी) पूजा—द्विचक्ररथसंयुक्तस्त्वेकाश्वरथतुल्यग। संग्रामे च जयं प्राप्य स्वामिने सुखमावह॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथाश्वपूजा—अश्वाय नमः। सूर्यपुत्र महाबाहो छायाहृदयनन्दन। शान्तिं कुरु तुरङ्गाणां रेवन्ताय नमो नमः॥ गन्धर्वकुलजातस्त्वं मा भूयाः कुलदूषकः। ब्राह्मणः सत्यवाक्येन सोमस्य वरुणस्य च॥ प्रभावाच्च हुताशस्य वर्द्धय त्वं तुरङ्गमान्। तेजसा चैव सूर्यस्य मुनीनां तपसा तथा॥ रुद्रस्य ब्रह्मचर्येण पवनस्य बलेन च। स्मरस्त्वं राजपुत्र त्वं कौस्तुभं च मणिं स्मर॥ यां गतिं ब्रह्महा गच्छेन्मातृहा पितृहा तथा। भ्रूणहाऽनृतवादी च क्षत्रियश्च पराङ्मुखः॥ सूर्याचन्द्रमसौ वायुर्यावत्पश्यन्ति दुष्कृतम्। व्रजाश्व तां गतिं क्षिप्रं तच्च पापं भवेत्तव॥ निष्कृतिं यदि गच्छेथा युद्धाध्वनि तुरङ्गम। रिपून्विजित्य समरे सह भ्रात्रा सुखी भव॥

अथ गजपूजा—गजाय नमः। कुमुदैरावणौ पद्मः पुष्पदन्तोऽथ वामनः। सुप्रतीकोऽञ्जनो नील एतेऽष्टौ देवयोनयः॥ तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च वनान्यष्टौ समाश्रिताः। मन्दो भद्रो मृगश्चैव गजः सङ्कीर्ण एव च॥ वने वने प्रसूतास्ते यूथानि सुमहान्ति च। पान्तु त्वां वसवो रुद्रा आदित्याः समरुद्-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

गणाः ॥ भर्तारं रक्ष नागेन्द्र स्वामिवत्प्रतिपाल्यताम् । अवाप्नुहि जयं युद्धे गमने स्वस्ति नो व्रज ॥

अथ रत्नगृहपूजा—रत्नेभ्यो नमः । विविधानि च रत्नानि कमलायाः प्रियाणि वै । तेषां प्रपूजनाद्विष्णुस्तेषां वृद्धिं करोतु नः ॥

अथ मुद्रायाः—राजमुद्रिकायै नमः । राजाज्ञादार्ढ्यहेतुस्त्वं स्वराष्ट्रपर-राष्ट्रके । राजमुद्रेति विख्याता विश्वासभयदायिनी ॥ नृपस्यातिप्रियकरी स्वर्णरूप्यविनिर्मिता । सा मुद्रा देवता नित्यं मम शान्तिं प्रयच्छतु ॥

अथ भाण्डारगृहस्य—भाण्डाराय नमः । कुबेरस्य यथा कोशो अक्षयोऽस्ति निरन्तरम् । तथा मे स्यादिति धिया पूजयामि च तद्गृहम् ॥ सुवर्णकुप्यं द्रव्याणां स्थानं कोशगृहं हि नः । प्रसादाद्धनदस्यैव नित्यं भवतु वृद्धिमत् ॥

अथ धान्यस्य—व्रीह्यादीनि च धान्यानि प्राणिनां प्रीणनाय वै । ऋषयः पितरो देवा ऋद्धिं कुर्वन्तु तेषु नः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मल्लशालायाः—दुर्बलस्य बलकरी बलिष्ठबलवर्द्धिनी। अत-स्त्वां पूजयिष्यामि युद्धशाले बलं कुरु॥

अथ पैशाचालपिकायाः—आयव्ययौ सुविज्ञातुं प्राकृतीवाङ्गने शुभे। हेमाद्रिणा निर्मितासि मम शान्तिकरी भव॥

अथ वस्त्राणाम्—लज्जासंरक्षणार्थाय वस्त्राणि ब्रह्मणा पुरा। विनिर्मितान्यनेकानि सन्तु भोग्यानि मे सदा॥

अथ परिमलानाम्—वनस्पतिरसोद्भूता नानापरिमलाः शुभाः। देवानां प्रीतये चापि भोगाय सन्तु मे सदा॥

अथ सरस्वत्याः—व्यवहारसरस्वत्यै नमः। सरस्वति शुक्लवर्णे वीणा-पुस्तकधारिणि। त्रैलोक्यवन्दिते देवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥

अथ राजच्छत्रस्य—आतपात्त्रायसे यस्मादातपत्त्राणमेव च। भवसि त्वं सर्वपूज्य छाया मेऽपि सदाऽस्तु ते॥ धन्वनागा धन्वनाजिञ्जयेम धन्वना तीव्राः समदोजयेम। धनुः शत्रोरपकामङ्कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

शा जयेम ॥ इति मन्त्रेण धनुरभिमन्त्र्यादाय—"बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समना-वगत्य । इषुधिः शङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥" इति मन्त्रेण इषुधिमभिमन्त्र्य । यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव । तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु ॥ इति मन्त्रेण शरानादाय राज्ञो हस्ते दद्यात् । ततो राजा कृतस्य पौरन्दराशान्तिपूर्वकराज्याभिषेककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान्यथाकालं भोजयिष्ये । तथा कृतस्य० अर्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः दीनानाथनटनर्तकादिभ्यश्च इमां भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । यस्य स्मृत्या० । कृतेनानेन राज्याभिषेकेण भगवान्परमात्मा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् । ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु । तत आशीर्वादः । आशीर्वादं गृहीत्वा बद्धान् जनान् मुक्त्वा (गृहपक्षिमृगादीनपि मोचयेत्) स्वपुरे जयं घोषयित्वा दधिदूर्वादिमङ्गलवस्तूना-मालम्भनं कृत्वा महाश्वेतं वृषं सवत्सां गां च पृष्ठदेशे स्पृशेत् । ततः पुरोधाः सलक्षणं जात्यश्वं महागजं च तत्रानाय्य तौ सर्वौषधिकलशेन—या ओषधीरिति संस्थाप्य । वस्त्रपर्याणसुवर्णरूप्या-लङ्कारादिभिरलङ्कृत्याश्वं राज्ञः पुरत आनीय दक्षिणकर्णेऽभिमन्त्रयेत् । ते च मन्त्राः—

जयाश्व त्वं मया राज्ञस्तुरङ्गाद्यः प्रतिष्ठितः । स्मराद्यलक्ष्म्याः पुत्रस्त्वं गन्धर्व-स्त्वं तथा स्मर ॥ यथा नृणामयं राजा तथा त्वं भव वाजिनाम् । यथा भवन्तं नृपतिर्नित्यमेवारुरुक्षति ॥ तथा त्वं रक्ष राजानं सर्वावस्थां गतं हय । दर्श-

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

याश्वं तथा स्वप्ने दैवदोषमुपागतम् ॥ तुरगान् सकलान् रक्ष त्वयि भारोऽयमर्पितः। अद्यप्रभृति राजा त्वामग्रेणाभ्येति भक्तितः ॥ अभ्यर्चयिष्यति सदा गन्धमाल्यानुलेपनैः । आशीर्भिश्च द्विजातीनां तथा च स्वस्तिवाचनैः ॥ रक्षतु त्वां महेन्द्रस्तु पूर्वेण त्रिदशाधिपः । दक्षिणेन यमो देवः पश्चिमे च जलाधिपः ॥ उदग्वैश्रवणो देवः सर्वे रक्षन्तु सर्वतः ॥ इति ॥ ततो राजा अश्वं क्षणमारुह्यावतरेत् । ततो गजमपि दक्षिणे कर्णे दैवविदा मन्त्रितं राजाऽऽरोहेत् । तन्मन्त्राः—

श्रीगजस्त्वं कृतो राज्ञा भव तस्य गजाग्रणीः ॥ गन्धमाल्यान्नभक्ष्यैस्त्वां पूजयिष्यति पार्थिवः । लोकः सदा भयं पूजां करिष्यति यथा तव ॥ पालनीयस्त्वया राजा युद्धेऽध्वनि तथा गृहे । तिर्यग्भावं समुत्सृज्य दिव्यभावमनुस्मर ॥ दैवासुरे पुरा युद्धे श्रीगजस्त्रिदशैः कृतः । ऐरावणसुतः श्रीमानरिष्टो नाम वारणः ॥ श्रीगजानां तु यत्तेजः सर्वमेवोपतिष्ठतु । तत्तेजस्तव नागेन्द्र द्वैष्यभावसमन्वितम् । उपतिष्ठतु भद्रं ते रक्ष राजानमाहवे ॥ इति ॥

अथ राजा—गजमारुह्य गजारूढैरेव मुख्यामात्यसामन्तसांवत्सरपुरोहितादिभिः सह वाद्यघोषेण बन्दिनां निःस्वनेन च राजमार्गेण महापथेन स्वपुरं परिभ्रम्य देवतायतनानि गत्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

यथाविभवं देवताः सम्पूज्य । गजारूढो गजारूढैरेव तैः सह गृहमागत्य गजावतीर्णैरमात्यादिभिः सहान्तर्गृहं प्रविश्य तान्सर्वानन्यांश्च लोकान् यथाविभवं दानमानसत्कारप्रियवचोभिः सत्कृत्य यथाशक्ति विप्रान् सम्भोज्य दीनानाथांश्चान्नादिना सन्तोष्य स्वस्तिवाचनं कारयित्वा सर्वान्विसृज्य सुहृदादियुतोऽतिहृष्टमना भुञ्जीत । एवं कृताभिषेको राज्यं कुर्यात् ॥ इति लघुदर्पणे राज्याभिषेकप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ लघुरुद्रहोमविधिः—नत्वा विनायकं देवं शिवं नारायणं गुरुम् । लघुरुद्राहुतिविधिप्रकारं तनुतेऽधुना ॥ १ ॥ पूर्वं दशहस्तपरिमितमण्डपं विधाय तन्मध्ये द्विहस्तमात्रं चतुरस्रं कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय कुण्डादीशान्यां वेदिद्वयकरणम् । तत्र दक्षिणतो ग्रहवेदी । वेदी च द्व्यङ्गुलत्र्यङ्गुलोच्छ्रायद्व्यङ्गुलविस्तारवप्रद्वययुता हस्तोच्चा हस्तविस्तृता च कार्या । तत्रादौ पञ्चदशकृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तं कृत्वा प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा—कर्ता आचम्य । प्राणानायम्य । देशकालौ० अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम कायिकाद्यखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं एकषष्ट्युत्तरशतधामन्त्रविभागपक्षे ६ होमात्मकसनवग्रहमखं लघुरुद्राख्यं कर्म करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादिवरणं कुर्यात् । वृताचार्यः सर्षपान्विकीर्य । पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य । ततोऽग्निस्थापनम् । ग्रहाणां स्थापनं पूजनं च । लिङ्गतोभद्रमण्डले देवतापूजनम् । तन्मध्ये कलशोपरि सौवर्णीं रुद्रप्रतिमां निधाय । 'नमः शम्भवाय०' इति मन्त्रेणावाह्य ७ (देववामभागे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पार्वतीं देवस्याग्रे वृषं चावाह्य) पूजयेत् । ततो ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कर्म कृत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात् । सूर्यादिहोमः । ततः रुद्रहोमः । ऋत्विजः आच० । प्राणा० । देशकालौ० अमुकशर्मणो यजमानस्याज्ञया यजमानसङ्कल्पितलघुरुद्रमध्ये एकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागपक्षेण लघुरुद्रहोमे यथांशेन विहितं हवनं करिष्ये । इति सङ्कल्पपूर्वकं ऋत्विजः कुर्युः । तत्रादौ षडङ्गन्यासान्कृत्वा होममारभेत । सर्वे ऋत्विजः सावधाना रुद्रं ध्यायन्तः मृगीमुद्रया षट्सप्ततिश्चाधिकशतनवकोपेतैकोनविंशतिसहस्रसङ्ख्याकाभिः आज्याक्ततिलाहुतिभिर्जुहुयुः । तद्यथा—ॐ यज्जाग्रत० ६ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० १६ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अद्भ्यः सम्भृत० ६ स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ आशुः शिशान० १२ स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ विभ्राड्बृह० १७ स्वाहा ॥ ५ ॥ एवं पञ्चाहुतीर्जुहुयात् । ततः प्रधानभूतेन रुद्राध्यायेन एकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागपक्षेण जुहुयात् । तद्यथा—ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र० स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ या ते रुद्र० शिवा० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ यामिषुङ्गिरि० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ शिवेनव्वचसा० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अद्ध्यवोच० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ असौयस्ताम्रो० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ असौयोवसर्पति० स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ प्रमुञ्चधन्न्व० स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ विज्यन्धनुः क० स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ यातेहेतिर्म्मीढु० स्वाहा ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ परितेधन्न्वनो० स्वाहा ॥ १२ ॥ अवतत्यधनु० स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ
नमस्तऽआयुधाया० स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ मानो महान्त० स्वाहा ॥ १५ ॥
ॐ मानस्तोके० स्वाहा ॥ १६ ॥ ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च
पतये नमः स्वाहा ॥ १७ ॥ ॐ नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये
नमः स्वाहा ॥ १८ ॥ ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः
स्वाहा ॥ १९ ॥ ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२०॥
ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्वयाधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २१ ॥ ॐ नमो
भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥ २२ ॥ ॐ नमो रुद्रायाततायिने
क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः
स्वाहा ॥ २४ ॥ ॐ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा
॥ २५ ॥ ॐ नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २६ ॥
ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २७ ॥ ॐ नमऽ-
उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २८ ॥ ॐ नमः कृत्स्नायतया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धावते सत्त्वानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २९ ॥ ॐ नमःसहमानाय निव्याधिनऽ-आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३० ॥ ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभायस्ते-नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥ ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥ ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥ ॐ नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥३४॥ ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघां सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३५ ॥ ॐ नमोसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३६ ॥ ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥ ॐ नमऽ-इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥ ॐ नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥ ॐ नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥ ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥ ४१॥ ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥ ॐ नमः शयानेभ्यऽ-आसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥ ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा ॥ ४४ ॥ ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥
ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥ ॐ नमऽआव्याधिनी-
भ्यो व्विविद्धयन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥ ॐ नमऽउगणाब्भ्यस्तृ ꣳ
हतीब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥ ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च वो
नमः स्वाहा ॥४९॥ ॐ नमो व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५०॥
ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५१॥ ॐ नमो विरूपेभ्यो
व्विश्वरूपेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५२॥ ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिब्भ्यश्च वो
नमः स्वाहा ॥५३॥ ॐ नमो रथिब्भ्योऽअरथेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५४ ॥
ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः संग्रहीतृब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५५ ॥ ॐ नमो महद्भ्योऽ-
अर्ब्भकेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५६ ॥ ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च वो
नमः स्वाहा ॥५७॥ ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥
ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५९ ॥ ॐ नमः श्वनिब्भ्यो
मृगयुब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६० ॥ ॐ नमःश्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्च वो नमः
स्वाहा ॥ ६१ ॥ ॐ नमो भवाय च रुद्राय स्वाहा ॥ ६२ ॥ ॐ नमःशर्व्वाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च पशुपतये च स्वाहा ॥ ६३ ॥ ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥ ६४ ॥ ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥ ६५ ॥ ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥ ६६ ॥ ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥ ६७ ॥ ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥ ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ॥ ६९ ॥ ॐ नमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा ॥ ७० ॥ ॐ नमो वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥ ७१ ॥ ॐ नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा ॥ ७२ ॥ ॐ नमऽआशवे चाजिराय च स्वाहा ॥ ७३ ॥ ॐ नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा ॥७४॥ ॐ नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ॥ ७५ ॥ ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा ॥ ७६ ॥ ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥ ७७ ॥ ॐ नमः पूर्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥ ७८ ॥ नमो मध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥ ७९ ॥ ॐ नमो जघन्याय च बुध्न्याय च स्वाहा ॥ ८० ॥ ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च स्वाहा ॥ ८१ ॥ ॐ नमो याम्याय च क्षेम्याय च स्वाहा ॥ ८२ ॥ ॐ नमः श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ॥ ८३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमऽऊर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥ ८४ ॥ ॐ नमो वन्न्याय च
कक्ष्याय च स्वाहा ॥ ८५ ॥ ॐ नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च स्वाहा
॥ ८६ ॥ ॐ नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥ ८७ ॥ ॐ नमः
शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥ ८८ ॥ ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च
स्वाहा ॥ ८९ ॥ ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥ ९० ॥ ॐ
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥ ९१ ॥ ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाह-
न्न्याय च स्वाहा ॥ ९२ ॥ ॐ नमो धृष्ष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ॥ ९३ ॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥ ९४ ॥ ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-
धिने च स्वाहा ॥ ९५ ॥ ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥ ९६ ॥
ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥ ९७ ॥ ॐ नमः काट्याय च नीप्याय
च स्वाहा ॥ ९८ ॥ ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥ ९९ ॥ ॐ
नमो नादेयाय च वैशन्ताय च स्वाहा ॥ १०० ॥ ॐ नमः कूप्याय चावट्याय
च स्वाहा ॥ १०१ ॥ ॐ नमो व्वीद्ध्रयाय चातप्याय च स्वाहा ॥ १०२ ॥
नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्याय च स्वाहा ॥ १०३ ॥ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

च स्वाहा ॥ १०४ ॥ नमो व्वात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥ १०५ ॥ ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥ १०६ ॥ ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ १०७ ॥ ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥ १०९ ॥ ॐ नमः उग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥ ११० ॥ ॐ नमो ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥ १११ ॥ ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥ ११२ ॥ ॐ नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥ ११३ ॥ ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥ ११४ ॥ ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥ ११५ ॥ ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥ ११६ ॥ ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥ ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥ ११८ ॥ ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्काहा ॥ ११९ ॥ ॐ नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च स्वाहा ॥ १२० ॥ ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा ॥ १२१ ॥ ॐ नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥ १२२ ॥ ॐ नमः कि २ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥ १२३ ॥ ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥ १२४ ॥ ॐ नमः इरिण्याय च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥ १२५ ॥ ॐ नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२६ ॥ ॐ नमः स्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥ १२७ ॥ ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥ १२८ ॥ ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ॥ १२९ ॥ ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ॥ १३० ॥ ॐ नमः पाँ सव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥ १३१ ॥ ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा ॥ १३२ ॥ ॐ नमः ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥ १३३ ॥ ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च स्वाहा ॥ १३४ ॥ ॐ नमः उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥ १३५ ॥ ॐ नम आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ॥ १३६ ॥ ॐ नमः इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ १३७ ॥ ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ँ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३८ ॥ ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवाना ँ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३९ ॥ ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यो देवाना ँ० हृदयेभ्यः स्वाहा १४० ॥ ॐ नमऽआनिर्हतेभ्यो देवानार्ँ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १४१ ॥ ॐ द्रापेऽअन्धस० स्वाहा ॥ १४२ ॥ ॐ इमा रुद्राय० स्वाहा ॥ १४३ ॥ ॐ याते रुद्र शिवा तनूः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवा० स्वाहा ॥ १४४ ॥ ॐ परिनो रुद्रस्य० स्वाहा ॥ १४५ ॥ ॐ मीढु-
ष्टम० स्वाहा ॥ १४६ ॥ ॐ विकिरिद्र० स्वाहा ॥ १४७ ॥ ॐ सहस्राणि०
स्वाहा ॥ १४८ ॥ ॐ असङ्ख्याता० स्वाहा ॥ १४९ ॥ ॐ अस्मिन्महत्यर्ण०
स्वाहा ॥ १५० ॥ ॐ नीलग्रीवाः शिति० स्वाहा ॥ १५१ ॥ ॐ नीलग्रीवाः
शितिकण्ठाः शर्वाः स्वाहा ॥ १५२ ॥ ॐ ये वृक्षेषु० स्वाहा ॥ १५३ ॥ ॐ ये
भूताना० स्वाहा ॥ १५४ ॥ ॐ ये पथाम्पथि० स्वाहा ॥ १५५ ॥ ॐ ये
तीर्थानि० स्वाहा ॥ १५६ ॥ ॐ येन्नेषु० स्वाहा ॥ १५७ ॥ ॐ यऽएताव-
न्तश्च० स्वाहा ॥ १५८ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः ।
ॐ तेभ्यो० स्वाहा ॥ १५९ ॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे० स्वाहा ॥ १६० ॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः । ॐ तेभ्यो० स्वाहा ॥ १६१ ॥

इत्येकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागः । अन्ते ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ । एवं दशकृत्वो रौद्रा-ध्यायेन हुत्वा । ॐ यज्जाग्रत इत्यादिभिर्मन्त्रैः पूर्ववत् पञ्चाहुतीर्जुहुयात् । तत एकावृत्त्या रौद्रा-ध्यायेन पूर्ववद् हुत्वा । होमान्ते एकैकेन च मखविभागेन हुत्वा ऋचंवाचमित्यादिभिः शान्त्यध्या-यमन्त्रैः चतुर्विंशतिराहुतीर्जुहुयात् । एष होम उक्तः । एवं क्रमेण लघुरुद्रहोमं कुर्युः । एवं होमं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विधाय सर्वे ऋत्विजः षडङ्गन्यासं कुर्युः। तत आचार्यो लिङ्गतोभद्रदेवता नाममन्त्रेण होमयेत्। ततोऽग्निपूजनम्। स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा। ततो यजमान आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ततोऽभिषेकः। आवाहितदेवतानां उत्तरपूजनम्। अग्निविसर्जनं च ततो ब्राह्मणभोजनं भूयसोसङ्कल्पः कर्मेश्वरार्पणम्। लघुदर्पणे लघुरुद्रहोमप्रयोगः समाप्तः॥

अथ विष्णुयागप्रयोगः—श्रीगुरुं पितरौ नत्वा कुलदेवं तथेष्टदम्। कालीचरणपुत्रेण जगन्नाथेन शर्मणा॥ ग्रन्थेभ्यः सारमुद्धृत्य याज्ञिकानां हिताय च। विष्णुयागविधेः सम्यक् प्रयोगो रच्यते मया॥ तत्र कालः—**कार्तिके मार्गशीर्षे वा माघे वा माधवे तथा। विष्णुयागः प्रकर्तव्यः सर्वपापापनुत्तये॥** (अयुतहोमार्थे लिक्षाद्वययूकाचतुष्टयसप्तयवाधिकत्रयस्त्रिंशदङ्गुलमितम्) यजमानो गृहादीशानदेशे शुचौ देशे वा भूमिं संशोध्य षोडशहस्तं चतुर्द्वारं मण्डपं विधाय तन्मध्ये चतुष्टयस्तम्भमध्यभागे चतुर्हस्तं चतुरस्रं कुण्डं कुर्यात्। कुण्डादीशान्यां ग्रहवेदी तद्दक्षिणतः प्रधानवेदी च हस्तोन्नता हस्तविस्तृता चतुरस्रा वप्रत्रययुता कार्या। आरम्भदिनात्पूर्वदिनेऽधिकारसिद्ध्यर्थं षडब्दाद्यन्यतमं प्रायश्चित्तं कृत्वा निरामिषं सकृद् भुञ्जीत। श्रीकामादिप्रशस्ते स्वानुकूले शुभलग्नादौ यजमानः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य। प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा मम श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिश्रीनारायणप्रीतिकामः पुरुषसूक्तेन होमात्मकं वैष्णवयागसग्रहमखं करिष्ये। श्री अमुकदेवताप्राप्तिकामोऽमुकमन्त्रेण सर्पिरादितिलखाद्यहवनद्रव्येण अयुतं होमं लक्षहोमं वा करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। अस्मिन् विष्णुयागाख्ये कर्मणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादिवरणानि कुर्यात् । तत्रायुतहोमे चत्वारो ऋत्विजो द्वौ वा लक्षहोमे द्वादशाष्टौ चत्वारो द्वारजापकान् वृणुयात् । ऋग्वेदादिद्वारपालानां चतुर्णां वरणम् । आचार्यादीनां मधुपर्कादिभिरर्चनम् । ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः इत्यादिभिरस्य यागस्य निष्पत्त्यै इत्यन्तैर्ब्राह्मणप्रार्थना । पूर्णकलशहस्तस्य सपत्नीकस्य कर्तुः पश्चिमद्वारेण मण्डपप्रवेशनम् । मण्डपभूमावुपविष्टस्याचार्यस्य 'यदत्र संस्थितमिति' रक्षोघ्नमन्त्रैश्च मण्डपान्तः सर्षपविकिरणम् । गायत्र्यादिमन्त्रैः पञ्चगव्यं संस्कृत्य तेन पञ्चगव्येन आपोहिष्ठादिभिर्मण्डपान्तं सर्वतः कुशैः प्रोक्षणम् ॥ वास्तुवेद्यां सङ्कल्पपूर्वकं वास्तुपूजा यथोक्ता कार्या । ततो मण्डपपक्षे तन्नैर्ऋत्ये भागे हस्तमितां वास्तुवेदीं कृत्वा । मण्डलस्येशानादिकोणचतुष्के । विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । मण्डलेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥ इति मन्त्रेण चतुरः शङ्कून् रोपयित्वा । तत आग्नेयादिशङ्कुपार्श्वे माषतण्डुलबलीन् दद्यात् । अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः । तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ १ ॥ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम् ॥ २ ॥ नमो वायुभ्यो रक्षोभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः । बलिं तेभ्यः प्रय० ॥ ३ ॥ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः ॥ ४ ॥ ततो वेद्युपरिवस्त्रे सुवर्णादिशलाकया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्तायै नमः ॥ १ ॥ यशोवत्यै नमः ॥ २ ॥ कान्तायै० ॥ ३ ॥ विशालायै० ॥ ४ ॥ प्राणवाहिन्यै० ॥ ५ ॥ सत्यै० ॥ ६ ॥ सुमनायै० ॥ ७ ॥ नन्दायै० ॥ ८ ॥ सुभद्रायै० ॥ ९ ॥ इति पश्चादारभ्य प्रागन्ताः उदक्संस्था नव रेखाः कृत्वा। पुनः—हिरण्यायै नमः ॥ १ ॥ सुव्रतायै० ॥ २ ॥ लक्ष्म्यै० ॥ ३ ॥ विभूत्यै० ॥ ४ ॥ विमलायै० ॥ ५ ॥ प्रियायै० ॥ ६ ॥ जयायै० ॥ ७ ॥ कालायै० ॥ ८ ॥ विशोकायै० ॥ ९ ॥ इति दक्षिणादारभ्योदगन्ताः प्राक्संस्था नव रेखाः कृत्वा मध्ये कोष्ठचतुष्टयमेकीकृत्य प्रतिकोणं त्रिषु पदेषु सूत्रं दद्यात्। तथा चतुर्विंशतिरर्धपदानि सम्पद्यन्ते। रेखा देवताः सम्पूज्य ततस्तत्र ब्रह्मादीनावाहयेत्। ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि ॥ १ ॥ अर्यम्णे० अर्यमणं० ॥ २ ॥ विवस्वते० विवस्वन्तम्० ॥ ३ ॥ मित्राय० मित्रम् ॥ ४ ॥ पृथिवीधराय० पृथिवीधरम्० ॥ ५ ॥ सावित्राय० सावित्रम् ॥ ६ ॥ सवित्रे०सवितारम्० ॥७॥ विबुधाधिपाय विबुधाधिपम् ॥८॥ जयाय०जयम् ॥९॥ राजयक्ष्मणे०राजयक्ष्माणम्० ॥ १० ॥ रुद्राय० रुद्रम्० ॥ ११ ॥ अद्भ्यो० अपः आ० ॥ १२ ॥ आपवत्साय० आपवत्सम्० ॥ १३ ॥ शिखिने० शिखिनम्० ॥ १४ ॥ पर्जन्याय० पर्जन्यम् ॥ १५ ॥ जयन्ताय० जयन्तम् ॥ १६ ॥ कुलिशायुधाय० कुलिशायुधम् ॥१७॥ सूर्याय० सूर्यम्० ॥ १८ ॥ सत्याय० सत्यम्० ॥ १९ ॥ भृशाय० भृशम्० ॥ २० ॥ आकाशाय० आकाशम्० ॥ २१ ॥ वायवे० वायुम्० ॥ २२ ॥ पूष्णे० पूषाणम् ॥ २३ ॥ वितथाय० वितथम् ॥ २४ ॥ गृहक्षताय० गृहक्षतम्० ॥ २५ ॥ यमाय० यमम् ॥ २६ ॥ गन्धर्वाय० गन्धर्वम्० ॥ २७ ॥ भृङ्गराजाय० भृङ्ग-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राजसम्० ॥ २८ ॥ मृगाय० मृगम्० ॥ २९ ॥ पितृभ्यो० पितृन्० ॥ ३० ॥ दौवारिकाय० दौवारिकम्० ॥ ३१ ॥ सुग्रीवाय० सुग्रीवम् ॥ ३२ ॥ पुष्पदन्ताय० पुष्पदन्तं० ॥ ३३ ॥ वरुणाय० वरुणम्० ॥ ३४ ॥ असुराय० असुरम्० ॥ ३५ ॥ शेषाय० शेषम्० ॥ ३६ ॥ पापाय० पापम्० ॥ ३७ ॥ रोगाय० रोगं० ॥ ३८ ॥ अहये० अहिं० ॥ ३९ ॥ मुख्याय० मुख्यम् ॥ ४० ॥ भल्लाटाय० भल्लाटम्० ॥ ४१ ॥ सोमाय० सोमम्० ॥ ४२ ॥ सर्पेभ्यो० सर्पान्० ॥ ४३ ॥ अदितये० अदितिं० ॥ ४४ ॥ दितये दितिम्० ॥ ४५ ॥ मध्ये—सुवर्णादिनिर्मितवास्तुप्रतिमां प्राणप्रतिष्ठारहिताग्न्युत्तारणपूर्वकं संस्थाप्य सुवर्णमय्यां मूर्तौ वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिं० ॥ १ ॥ ततो मण्डलाद्बहिरीशानादिषु । चरक्यै० चरकीम्० ॥ २ ॥ विदार्यै० विदारीम्० ॥ ३ ॥ पूतनायै० पूतनाम् ॥ ४ ॥ पापराक्षस्यै० पापराक्षसीम्० ॥ ५ ॥ मण्डलपूर्वादिदिक्षु—स्कन्दाय० स्कन्दम्० ॥ ६ ॥ अर्यम्णे० अर्यमणं ॥ ७ ॥ जृम्भकाय० जृम्भकम्० ॥ ८ ॥ पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छम्० ॥ ९ ॥ पुनः पूर्वादिदिक्षु इन्द्राग्नी आवाह्य । मनोजूति० इति ब्रह्माणम्प्रतिष्ठाप्य वास्तुपीठदेवताभ्यो नमः । ब्रह्माद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति सर्वान् सम्पूज्य । ततो मण्डलादीशान्यां कलशं संस्थाप्य तत्र वरुणं तत्त्वायामीत्यावाह्य पूजयेत् । **यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा । तथा ब्रह्मादिदेवानां मम यज्ञे स्थितिर्भवेत् ॥** इति प्रार्थयेत् । ततो मण्डलदेवताभ्यः पायसबलीन् दद्यात् । ब्रह्मणे नमः एष पायसबलिर्न मम ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं सर्वत्र ततः पवमानेन च सूक्तेन त्रिसूत्र्यां मण्डपं वेष्टयित्वा तथैव जलपूर्णाभ्यां स्वर्णकुम्भाभ्यां सततधाराद्वयं पातयेत्। मण्डपपरितो भ्रामयेत् ॥ इति वास्तुपूजा ॥

सङ्कल्पपूर्वकयथोक्तमण्डपपूजाबहिर्बलिदानान्ताः। आचम्य। पूर्वद्वारेण प्रवेशः। ततः वेद्यां सर्वतो भद्रे ब्रह्मादिमण्डलदेवानावाह्य सम्पूज्य। तदुपरि महीद्यौरित्यादिविधिना कलशं संस्थाप्य। कृताग्न्युत्तारणां हैमीं पलतदर्धतदर्धान्यतममानोन्मितां लक्ष्मीसहितनारायणप्रतिमां कलशोपरि आस्तृतोत्तरदशश्वेतवस्त्रे लिखिताष्टदले निधाय देशकालौ स्मृत्वा श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिनारायणप्रीतिकामः यजमानाज्ञया वैष्णवयागान्तर्गतां यथामिलितोपचारैः नारायणपूजां करिष्ये इति सङ्कल्प्य। पुनः स्ववामभागे भूमौ चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा तत्र पूजनीयजलार्थमाजिघ्रेति कलशं निधाय। वरुणस्योत्तम्भनमिति जलेनापूर्य। गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ इति तीर्थान्यावाह्य गन्धपुष्पैः सम्पूज्य पुरतः स्वदक्षिणतस्त्रिपादिकाया उपरि प्रक्षालितां घण्टां निधाय। शङ्खघण्टिकाभ्यां नमः इति सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पतुलसीपत्राणि स०। इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्। शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं मध्ये वरुणदैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गां सरस्वतीम् ॥ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो मथ्यमाने महोदधौ। निर्मितः सर्वदेवानां पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥ इति शङ्खं निनाद्य। आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्। कुरु घण्टारवं तत्र देव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताह्वानसिद्धये ॥ इति घण्टां च० । कलशोदकेन शङ्खमापूर्य गङ्गोदकेन पूजासम्भारान् प्रोक्ष्य स्वात्मानं प्रोक्षयेत् । ततः पूजामारभेत । सहस्रशीर्षा० वामकरे अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां न्यसेत् ॥ १ ॥ एवं सर्वत्र । पुरुष एवे० दक्षिण करे ॥ २ ॥ एतावानस्य० वामपादे ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्व० दक्षिणपादे ॥ ४ ॥ ततोविरा० वामजानौ० ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सं० दक्षिणजानौ ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऋचः सा० वामकट्याम् ॥ ७ ॥ तस्मादश्वा० दक्षिणकट्याम् ॥ ८ ॥ तं यज्ञं० नाभौ ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं० हृदये ॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्य० कण्ठे ॥ ११ ॥ चन्द्रमा मनसो० वामबाहौ ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसी० दक्षिणबाहौ ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण० मुखे ॥ १४ ॥ सप्तास्यास० नेत्रयोः ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञ० मूर्ध्नि ॥ १६ ॥ एवं स्थापितदेवताप्रतिमायां तुलसीदलस्पर्शेन प्रत्यृचं तत्तदङ्गेषु न्यसेत् ॥

अथ ध्यानम् ॥ शङ्खचक्रगदापद्मधारिणं वनमालिनम् ॥ लक्ष्म्याधिष्ठितवामाङ्कस्तनयोर्न्यस्तपाणिनम् ॥ १ ॥ लक्ष्मीमालिङ्ग्य हस्तेन स्थितं मदनसुन्दरम् । पद्मपत्रविशालाक्षं पीतकौशेयवाससम् ॥ २ ॥ केयूरभूषितकरं स्फुरन्मकरकुण्डलम् । किरीटिनं महोरस्कं कौस्तुभोद्भासिवक्षसम् ॥ ३ ॥ देवदेवं प्रसन्नास्यं जगत्कारणमव्ययम् । सर्वान्तर्यामिनं साक्षात् साक्षिणं सर्वदेहिनाम् ॥ ४ ॥ इति ध्यानम् ॥ इदं विष्णुं० लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । लक्ष्मीनारायणौ आवाहयामि । पद्मस्याष्टदलेषु--इन्द्राय० इन्द्रं० ॥ १ ॥ अग्नये० अग्निं० ॥ २ ॥ यमाय० यमम्० ॥ ३ ॥ निर्ऋतये० निर्ऋतिं० ॥ ४ ॥ वरुणाय० वरुणं० ॥ ५ ॥ वायवे० वायुं० ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोमाय० सोमम्० ॥ ७ ॥ ईशानाय० ईशानम्० ॥ ८ ॥ एकैकस्मिन् दले त्रीन् त्रीन् केशवादी-
नावाहयेत् । केशवाय० केशवम्० ॥ १ ॥ नारायणाय० नारायणं० ॥ २ ॥ माधवाय० माधवं०
॥ ३ ॥ मधुसूदनाय० मधुसूदनं ॥ ४ ॥ त्रिविक्रमाय० त्रिविक्रमं० ॥ ५ ॥ वामनाय० वामनं०
॥ ६ ॥ श्रीधराय० श्रीधरं० ॥ ७ ॥ हृषीकेशाय० हृषीकेशं० ॥ ८ ॥ पद्मनाभाय० पद्मनाभं०
॥ ९ ॥ दामोदराय० दामोदरं० ॥ १० ॥ सङ्कर्षणाय० सङ्कर्षणम्० ॥ ११ ॥ वासुदेवाय० वासु-
देवं० ॥ १२ ॥ प्रद्युम्नाय० प्रद्युम्नं ॥ १३ ॥ अनिरुद्धाय० अनिरुद्धं० ॥ १४ ॥ पुरुषोत्तमाय०
पुरुषोत्तमं० ॥ १५ ॥ अधोक्षजाय० अधोक्षजं० ॥ १६ ॥ नारसिंहाय० नारसिंहं० ॥ १७ ॥
अच्युताय० अच्युतम्० ॥ १८ ॥ जनार्दनाय० जनार्दनम्० ॥ १९ ॥ उपेन्द्राय० उपेन्द्रं० ॥ २० ॥
हरये० हरिम्० ॥ २१ ॥ श्रीकृष्णाय० श्रीकृष्णम्० ॥ २२ ॥ दैत्यारये० दैत्यारिं० ॥ २३ ॥
पुण्डरीकाक्षाय० पुण्डरीकाक्षम्० ॥ २४ ॥ सहस्रशीर्षा० । आगच्छतां महासत्त्वौ लक्ष्मी-
नारायणाविह । युवाम् सम्पूजयिष्यामि भक्त्या मयि प्रसीदतम् ॥ पुरुष एवे० ।
हेमपीठात्मके दिव्ये नानारत्नविचित्रिते । लक्ष्मीनारायणौ प्रीत्या तिष्ठतामा-
सने शुभे ॥ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । आसनार्थे तुलसीदलं समर्पयामि ॥ २ ॥ एतावान० ।
गङ्गादिसरितां तोयैः पूरितं रत्नभाजने । लक्ष्मीनारायणौ पाद्यं पादयोः प्रति-
गृह्यताम् । पाद्यं स० ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्व० । नानातीर्थपयःक्षीरफलहेमसमन्वितम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीनारायणावर्घ्यं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ ल० अर्घ्यं स० ॥ ४ ॥ ततो व्विरा० । इदं गाङ्गं जलं दिव्यं स्वान्तध्वान्तविनाशनम् । आचम्यतां जगन्नाथौ लक्ष्मीनारायणौ मुदा ॥ ५ ॥ ल० आचमनीयं स० ॥ ५ ॥ पञ्चनद्यः स० । पञ्चामृतं समानीतं कांस्यपात्रे कृतं मया । लक्ष्मीनारायणावर्थे मधुपर्कः प्रगृह्यताम् ॥ ल० पञ्चामृतस्नानम्० ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं० । हेमकुम्भस्थितं नानातीर्थेभ्यश्चाहृतं मया । लक्ष्मीनारायणौ तोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्० ॥ ल० शुद्धोदकस्नानं स० ॥ ७ ॥ तस्माद्यज्ञात् सर्व । कौस्तुभरञ्जितं चान्यत् पद्मकेसरपिङ्गलम् । लक्ष्मीनारायणावेतत् वस्त्रयुग्मं प्रगृह्यताम् ॥ ल० वस्त्रं स० ॥ ८ ॥ आचमनीयं० स० । तस्मादश्वा० । ब्रह्मसूत्रमिदं दिव्यं तप्तकाञ्चननिर्मितम् । नारायण त्वया धार्यं कण्ठे वैकुण्ठनायक ॥ ल० यज्ञोपवीतं स० ॥ ९ ॥ आच० । सुवर्णमणिरत्नाद्यैः कृतान्याभरणानि वै ॥ स्वीकार्याणि प्रदत्तानि लक्ष्मीनारायणौ मया ॥ ल० आभरणानि स० ॥ १० ॥ तं यज्ञं । कस्तूरीकेसरयुतं हरिचन्दनचन्दनम् । लक्ष्मीनारायणावेतत् मद्दत्तं प्रतिगृह्यताम् ॥ ल० गन्धं स० ॥ ११ ॥ यत्पुरुषं० । यथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋतुसमुत्पन्नं पुष्पाणि विविधानि च । स्वीकार्याणि प्रदत्तानि लक्ष्मीनारायणौ मया ॥ ल० पुष्पाणि स० ॥ १२ ॥ तुलसी हैमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥ ल० तुलसीदलं स० ॥

अथाङ्गपूजा—अनन्ताय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥ सङ्कर्षणाय नमः गुल्फौ पू० ॥ २ ॥ पद्मनाभाय नमः जङ्घे पू० ॥ ३ ॥ विश्वरूपाय० जानुनी पू० ॥ ४ ॥ केशवाय नमः ऊरू पू० ॥ ५ ॥ विश्वबाहवे नमः कटिं पू० ॥ ६ ॥ प्रद्युम्नाय० नाभिं पू० ॥७॥ परमात्मने हृदयं पू० ॥ ८ ॥ वैकुण्ठाय० कण्ठं पू० ॥ ९ ॥ शस्त्रधारिणे० बाहू पू० ॥ १० ॥ वाचस्पतये० मुखं पू० ॥ ११ ॥ सहस्राक्षाय० नेत्रे पू० ॥ १२ ॥ केशवाय० ललाटं पू० ॥ १३ ॥ सर्वात्मने० शिरः पू० ॥ १४ ॥ नारायणाय० सर्वाङ्गं पू० ॥ ब्राह्मणोस्य० । दशाङ्गगुग्गुलोपेतं सर्वलोकमनोहरम् । धूपं गृहाण देवेश लक्ष्मीनारायण प्रभो ॥ १३ ॥ चन्द्रमामन० ॥ साज्यवर्त्तिकया युक्तं कर्पूरादिसमन्वितम् । लक्ष्मीनारायणौ प्रीत्या दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ल० दीपं स० ॥ १४ ॥ हस्तप्रक्षालनम् । नाभ्याऽआसी० । अन्नं सुवर्णपात्रस्थं पायसादिचतुर्विधम् । लक्ष्मीनारायणौ ग्राह्यं नैवेद्यं साज्यशर्करम् ॥ ल० नैवेद्यं स० ॥ १५ ॥ आचमनं । यत्पुरुषेण० । श्रीफलं क्रमुकं चैतत्

॥१२८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताम्बूलं स्वर्णदक्षिणा । गृह्यतां विधिवद्दत्ता लक्ष्मीनारायण प्रभो ॥ ल० फलं ताम्बूलं० ॥ १६ ॥ हिरण्यगर्भः स० । ल० दक्षिणां स० ॥ १७ ॥ इद ँ हविः स० । चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ल० कर्पूरार्तिक्यं स० ॥ १८ ॥ शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि । अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ इति जलं देवोपरि भ्रामयित्वा स्वशिरसि चाभ्युक्षयेत् ॥ सप्तास्या स० । प्रदक्षिणां स० ॥ १९ ॥ यज्ञेन यज्ञ० । ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् । सार्वभौमः सर्वायुषऽ आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाः एकराडिति ॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

अथ प्रार्थना—पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः । त्राहि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मां कृपया देव सर्वपापहरो भव ॥ १ ॥ नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते ह्यमरप्रिय । नमस्ते कमलाकान्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ अनया पूजया लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेतान्न मम । ततः कुण्डेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य तत ऐशान्यां ग्रहवेद्यां ग्रहानावाह्य सम्पूज्य तदैशान्यां कलशं संस्थाप्य रुद्रं पूजयेत् । ततः दक्षिणतो ब्रह्मासनमित्यादिग्रहहोमान्तं पूर्ववत् । ततो ऋत्विजः प्रधानहोमं कुर्युः । प्रधानं श्रीनारायणम् । पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं तिलाज्यशर्करामिश्रैरमुकावृत्तिसंख्याहुतीर्जुहुयात् । अमुकावृत्तिपदेन लक्षायुतसहस्रसंख्या ग्राह्याः । सहस्रशीर्षा० सन्ति देवाः । नारायणाय स्वाहा इति होमसंख्या च सम्यक् सावधानैः कार्या । यावद्धोमपरिसमाप्ति प्रतिदिनं होमाद्यन्तयोश्चन्दनपुष्पादिभिर्देवताः प्रपूजयेत् । यावत्कर्मसमाप्तिं प्रत्यहमाचार्यादिभ्यो भोजनदानम् । दीनान्धकृपणेभ्यश्च शुष्कान्नदानं च ततः शुभेऽह्नि पूर्वाह्णे होमसंख्यां समाप्य सर्वतोभद्रमण्डलदेवानां प्रत्येकं घृतमिश्रतिलद्रव्येणैकैकामाहुतिं जुहुयात् । एवं होमं परिसमाप्य । ततोऽग्निपूजनम् ॥ स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा तदनन्तरं वरणक्रमेण ऋत्विज उदङ्मुखाः प्राङ्मुखयजमानहस्ते श्रेयोदानं कुर्युः । मया भवन्नियोगेन लक्षहोममध्ये यथांशेन यः कृतो होमस्तस्मात् होमजातं श्रेयस्तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे । ततो नारायणकलशोदकेनाभिषेकमन्त्रैर्यजमानस्याभिषेकः । अत्र पत्नी वामे । [कुर्यादवभृथस्नानं पत्न्या च सह बान्धवैः] ततो यजमान आचार्यादीन् सम्पूज्य । तेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततो यजमानः स्थापितदेवतानां उत्तरपूजां कृत्वा । यान्तु देवगणाः, इति विसृज्य सोपस्करप्रतिमां आचार्याय समर्पयेत् । कृतस्य सग्रहमखवैष्णवयागकर्मसाङ्गतासिद्ध्यर्थं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इमां सोपस्करां लक्ष्मीनारायणप्रतिमां आचार्याय तुभ्यमहं प्रतिपादयामि । इति दद्यात् । ततोऽग्निं सम्पूज्य गच्छ गच्छेत्यग्निं विसृज्य । मण्डपदेवताः सम्पूज्य ध्वजादियुतमण्डपमाचार्याय प्रतिपादयेत् । सहस्रमशक्तौ शतं वा यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः । भूयसीदक्षिणोत्सर्गसङ्कल्पः । दीनान्धकृपणेभ्योऽन्नवस्त्रसङ्कल्पः । यस्य स्मृत्येति कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा [अनेन विष्णुयागेन सूर्यमण्डलान्तर्वर्ती लक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्] विप्राशिषो गृहीत्वा तान्नमस्कृत्य सोत्साहः सुहृद्युक्तः भुञ्जीत । ततस्ताम्बुलैलालवङ्गादि भक्षयित्वा सुखासने उपविश्य । शङ्खतूर्यनिनादेन ब्रह्मघोषरवेण च महोत्सवः कार्यः ॥ इति लघुदर्पणे वैष्णवयागप्रयोगः समाप्तः ॥ इति ॥

नाग्निचक्रविचारस्तु कार्यः सर्वत्र धीमता । प्रधानो यत्र होमः स्यात्तत्रैव तु सुनिश्चितः ॥१॥ वास्तुशान्त्यां प्रतिष्ठायां शिलान्यासे तथैव च । प्रायश्चित्ते तुलादौ च वह्निचक्रं न चिन्तयेत् ॥ २ ॥ आधाने च वृषोत्सर्गे व्रतस्योद्यापने तथा नित्ये नैमित्तिके चैव वह्नि० ॥ ३ ॥ व्रतबन्धे विवाहे च यजने मधुसूदने । दुर्गाहोमे तथा नित्ये वह्नि० ॥ ४ ॥ वापीकूपतडागेषु प्रतिष्ठोद्यापने तथा । अरामे च वृषोत्सर्गे वह्निचक्रं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥

अथ नूतनगृहादीनां शिलान्यासविधिः—अथ शिलालक्षणम् ।

शिलाप्रमाणं क्रमशः प्रदिष्टं वर्णानुपूर्व्येण तथाङ्गुलीनाम् । अथैकविंशं २१ घन १७ त्रिस्व १३ नंदा ९ विस्तारके व्यासमिते तदर्द्धम् । तदर्द्धमानं त्वथ पिण्डिका स्यान्नचाधिका न्यूनतरा न कार्या ॥ पाषाणगेहे कर्तव्या शिलापाषाणसम्भवा । शैलजे शैलजापीठश्चैष्टके चैष्टकं स्मृतम् । पक्के-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ष्टकनिर्मिते वै इष्टकानां च कारयेत् । इष्टकानिर्मिते गेहे प्रमाणमिह लक्षयेत् । अपरेषां गृहाणां तु शिलामानं न चिन्तयेत् । नन्दाद्यागृहमानेन अङ्गुलैः परिकल्पितम् ॥ प्रासादमानेन च अङ्गुलैपरिकल्पिता भवन्ति । शिलामध्ये लिखेद्यन्त्रं स्वतिकाख्यं सुशोभनम् नन्दाया पद्ममालिख्य भद्रासिंहासनं तथा १ ॥ जयायां तोरणच्छत्रं रिक्तायां कूर्ममेव च । पूर्णायां च चतुर्बाहुं त्रिष्णुं संश्लेषयेद्बुधः । पञ्चशिलाः स्वकूर्मस्वस्तिकाङ्किताः कार्याः । पुनः शिलासङ्ख्यया तावत एव शिलामयाधारान्कल्पयेत् । तन्मध्ये विधिकुम्भस्थापनार्थं प्रतिशिलां कुम्भपरिमाणेनावटान्निदध्यात् । वापीकूपतडागादौ तु चतुश्शिलापक्ष एव क्रियते । मध्याभाव एव । नाभिमात्रे तथा गर्ते शिलानां स्थापनं शुभम् ॥

अथ शिलान्यासप्रयोगः—

स्तम्भोच्छ्राये शिलान्यासे सूत्रयोजनकीलके । खननावटसंस्कारे प्रारम्भो वह्निगोचरे । इति आग्नेय्यां प्रारम्भ इति आग्नेय्यामेव पञ्चशिलास्थापनं निधिकुम्भगर्भे (स्थाप्याः) । तासामुपघातो यथा न भवति तेन प्रकारेण शिलानां स्थापनम् । कर्ता खातभूमेः पश्चिमतः उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्मा करिष्यमाणस्य अस्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं निर्विघ्नता गृहसिद्ध्यर्थं चायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं वास्तोस्तस्य भूमिपूजनं शिलान्यासं च करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वाऽऽचार्यादिवरणं पूजनं च कुर्यात् । तत आचार्यः "यदत्र संस्थितम्" इत्यादिना सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य वायुकोणपीठे पंचशिलाः स्थापयेत्—आदौ ताः पञ्चशिलाः शुद्धो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दकेन प्रक्षाल्य—आपः शुद्धा ब्रह्मरूपाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। ताभिरद्भिः शिला-स्नाप्य स्थापयामि शुभेस्थले ॥ १ ॥ "अग्निर्मूर्धा" गजाश्वरथ्यावल्मीकसद्भिर्मृद्भिः शिलेष्टकान्। प्रक्षालयामि शुद्ध्यर्थं गृहनिर्माणकर्मणि॥१॥इति सप्तमृत्तिकया प्रक्षाल्य पञ्चत्वग्भिः कषायैस्तावटाश्वत्थजन्तुजैः। पर्कट्यादिक्षीरवृक्षोद्भवैः प्रक्षालया-म्यहम् ॥ २ ॥ "यज्ञा यज्ञावोऽग्नयेगिरा गिरा च दक्षसे प्रप्रवयममृतं जातवे-दसं प्रियं मित्रं न श र्ट-सिषम्।" इति पञ्चयज्ञियवृक्षत्वक्कषायैः प्र०। गायत्र्या गोमूत्रेण प्र०। "मानस्तोके" इति गोमयोदकेन प्र० । जटामास्यौषधीभिरद्भिः सर्वार्थदायिनीः शिलाः। संस्नापयामीह सर्वक्षेमकारिणी। "गन्धद्वाराम्" इति गन्धोदकेन प्र०। "दधिक्राव्ण० इति दध्ना प्रक्षाल्य घृतं मिमिक्षे० इति घृतेत प्रक्षाल्य ॥ ९ ॥ "मधुव्वाता० इति मधुना प्रक्षाल्य ॥१०॥ अपा ँ रस० इति शर्करया प्रक्षाल्य ॥११॥ याः फलिनी र्या०। इति फलोदकेन प्र० ॥१२॥ हविष्मतीरिमा ँऽआपो हविष्माऽआविवासति। हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्मा ँऽअस्तु सूर्यः। इति गोशृङ्गोदकेन प्र० ॥१३॥ हिरण्यगर्भः स० इति हिरण्योदकेन प्र० ॥१४॥ या [1]ओषधीः पू० इति सर्वौषधिजलेन प्र० ॥ १५ ॥ ओषधयः स० इति धान्योदकेन प्र० ॥१६॥ इमं मे वरुणा०। इति तीर्थोदककलशेन प्रक्षाल्य शुभ्रवस्त्रेण संमार्ज्य ताः शिलाः कुंकुमचन्दनाभ्यां

१ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन्पारयामसि। य. अ. १२ मं ९३।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विलिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य नामभिः पूजयेत् । नामानि तु—नन्दाय नमः ॥ १ ॥ भद्रायै नमः ॥ २ ॥ जयायै नमः ॥ ३ ॥ रिक्तायै नमः ॥ ४ ॥ पूर्णायै नमः ॥ ५ ॥ तासां पञ्चानां सन्निधावेते पञ्च कुम्भाः स्थाप्याः—पद्माय नमः ॥ १ ॥ महापद्माय नमः ॥ २ ॥ शङ्खाय नमः ॥ ३ ॥ मकराय नमः ॥ ४ ॥ समुद्राय नमः ॥ ५ ॥ आधारशिलाः स्वभ्रे स्थाप्याः । ततोऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ईशान्यां नवग्रहान् नाममन्त्रेण संस्थाप्य सम्पूज्य ततो ब्रह्मोपवेशनाद्याघारावाज्यभागान्ते आज्येन नवग्रहहोमं पश्चाद् त्र्यम्बकमन्त्रेण चाऽष्टोत्तरशतं १०८ हुत्वा नन्दादीनां प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्यया होमः कार्यः ॥ २८ ॥ पद्मादीनां प्रत्येकमेकैकामाहुतिं दत्त्वा पृथ्वीमष्टाविंशतिसङ्ख्यया हुत्वा ततः पूजा, स्विष्ट० नवाहुत्या० इत्यादिक्रमः । पूर्णाहुत्यन्ते संस्रवप्राशनात्प्रागेव पात्रान्तरे निष्कासितं संस्रवं गृहीत्वा शिलामूलमध्याग्रेषु संस्रवेण सिञ्चेत् । अथाचार्यः खातभूमिमुपलिप्य तत्र ध्यायेत् । कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्लवर्णां चतुर्भुजां पद्मशङ्खचक्रशूलधरां भूमिं ध्यात्वा ततः "स्योनापृथिवी" इति भूमिमावाहयेत । नाममन्त्रैः—कूर्माय० कूर्म०१ । अनन्ताय० अनन्तं २ । वराहाय०वराहं० ३ । इत्यावाह्याऽऽसनाद्युपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दत्वा भूम्यै अर्घ्यं दद्यात् । जानुभ्यां धरणीं गत्वा तोयक्षीरकुशाग्रतिलण्डुलयवसर्षपपुष्पाणि ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि । उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना ॥ गृहं तु (प्रासादं वा) कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूम्यै नमः, इदमर्घ्यं समर्पयामि। इति समर्पयेत्। ततः "स्योनापृथिवी" इति मन्त्रेण भूम्यै इदं सदीपं दधिसक्तुलाजपायसबलिं समर्पयामि इति दत्त्वा प्रार्थयेत्।
"सर्वबीजसमायुक्ते सर्वरत्नौषधीयुते। पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलंकृते॥
इष्टं मे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वामहं शरणं गतः। पुत्रदारधनायुष्यधर्मवृद्धिकरी भव"॥
इति संप्रार्थ्य। ततः शिलास्थानेषु आधारशिलां विन्यसेत्। ततो मध्ये प्रतिष्ठाप्य सूक्ष्मशिलोपरि अक्षतान् दत्त्वा। तत्र मध्वाज्यपारदसुवर्णपञ्चरत्नगर्भगन्धादिभूषितं कुम्भं पिहितमुखं स्थापयेत्। एवं पूर्वादिचतुर्दिक्षु चत्वारः कुम्भाः स्थाप्याः। ततो मध्यकुम्भे पद्मम् १, पूर्वादिषु क्रमेण महापद्मं २, शङ्खं ३, मकरं ४, समुद्रं ५ च सम्पूज्य कुम्भसमां मृत्तिकां दत्त्वा सुलग्ने मध्ये पूर्णां स्थापयेत्। यथा—
"पूर्णे त्वं तु सदा भद्रे सर्वसन्दोहलक्षणे। सर्वं संपूर्णमेवात्र कुरुष्वाङ्गिरसः सुते॥ ततः पूर्वस्याम्— 'नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्। गृहेऽस्मिन् वस (प्रासादे तिष्ठ) संहृष्टा यावच्चन्द्रार्कतारकम्॥' [अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या प्रासादे यत्नतो मम।] ततो दक्षिणस्याम्—भद्रं कर्णे०। भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि॥ आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव॥ ततः पश्चिमायाम्—जातवेदसे०। जये त्वं सर्वदा देवि तिष्ठ त्वं स्थापिता मया। नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनो भव भार्गवि॥ तत उत्तरस्याम्—रिक्ते त्वरिक्ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दोषघ्ने सिद्धिवृद्धिप्रदे शुभे। सर्वदा सर्वदोषघ्ने[1] तिष्ठास्मिन् नाशरूपिणि ॥ इति मन्त्रेण स्थापयित्वा पूर्णादिनाममन्त्रैः गन्धादिना पूजयेत्। ततः परितो दिक्पालान् सम्पूज्य। पूर्णादिभ्यः सदीपदधिसक्तुलाजैर्बलिं दत्वा दिक्पालेभ्यश्च सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं दद्यात्। 'विश्वकर्मणे नमः' इत्यायुधपूजां कृत्वा प्रार्थयेत्– "अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः ॥ नाशय त्वं हि तान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोऽस्तु ते" ॥ ततो खनित्रं संपूज्य प्रार्थयेत्– 'त्वष्टा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया। पूजितोऽसि खानित्र त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम्" ॥ तत्र जलपूर्णं कुम्भं संस्थाप्य रात्रौ संकल्प्य घृतदीपं प्रज्वालयेत्। ततो ब्राह्मणदैवज्ञशिल्पिनः सम्पूज्य यथाशक्ति तेभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ब्राह्मणभोजनं सङ्कल्प्य १२ भूयसीं दत्वा देवताविसर्जनं कृत्वा "यस्य स्मृत्या" इति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। इति श्री लघुदर्पणे शिलान्यासविधिः ॥

अथ देहलीन्यासविधिः–कर्ता शुभेऽह्नि सपत्नीकः स्वाचान्तः शुचिः प्राङ्मुखः शुद्धासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० मम गृहे सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वारिष्टप्रशान्तिपूर्वकायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं एतद्गृहक्षेत्रावच्छिन्नभूम्यधिष्ठितदेवतोपरोधजनितोपसर्गनिवृत्तये गृहाधिष्ठितवास्तुपुरुषप्रीतये (अस्य प्रासादस्य करिष्यमाणद्वारं निर्मातुं निर्विघ्नेन

१ तिष्ठास्मिन्मम मन्दिरे। इति पाठः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परिसमाप्त्यर्थं शुभतासिद्ध्यर्थं च) भूमिपूजनपूर्वकं देहलीन्यासमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च करिष्ये। इति संकल्प्य गणपतिं सम्पूज्य पुण्याहवाचनं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। ततो देहलीशाखयोश्च तीर्थोदकेन आपोहिष्ठेत्यादिमन्त्रैः प्रक्षाल्य। पञ्चामृतेन पृथक्-पृथक् तत्तन्मन्त्रैः (पञ्चामृतम्०) स्नापयेत्। याऽओषधीरिति आपोहिष्ठेति सर्वौषधिना। पुनस्त्वां गन्धर्व्वेति गन्धोदकेन। हिरण्यगर्भेति पुनः हिरण्योदकेन। पुनर्जलेन च। ततः कुङ्कुमादिनाऽनुलिप्य पूजयेत्। तत्रायं क्रमः—पूर्वाभिमुखद्वारदेवतानामानि दक्षिणशाखायाम्—"त्रिधात्रे नमः" १। वामशाखायाम्—"धात्रे नमः" २। द्वारदेहल्याम्—"श्रियै नमः" ३। ऊर्ध्वं "गणेशाय नमः" ४। अधः—"वास्तुपुरुषाय नमः" ५।

अथ दक्षिणाभिमुखद्वारे देवताः—सबलाय नमः १। बलाय० २। श्रियै० ३। गणपतये० ४। वास्तवे० ५।

अथ पश्चिमाभिमुखद्वारे देवताः--विजयायै० १। जयायै० २। श्रियै० ३। गणपतये० ४। वास्तवे० ५।

अथोत्तराभिमुखद्वारे देवताः--प्रचण्डाय० १। चण्डाय० २। श्रियै० ३ गणपतये ४। वास्तवे० ५। इति। तत्र ताभ्यः सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं दत्वा आवाहितदेवताभ्यः एतं सदीपमाषदधितण्डुलबलिं समर्पयामि। वस्त्रेणाच्छाद्य किञ्चित्कालं स्थित्वा वस्त्रोद्वासनं कृत्वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः स्वस्तिवाचनं पठित्वा। ततो देहलीस्थानमध्ये--मावोरिषत्खनिता यस्मै चाहं खनामि वः। द्विपाच्चतुष्पादस्माक ँ सर्वमस्त्वनातुरम्॥ इति किञ्चिद्गर्तं खानयित्वा। गर्तं पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य। तत्र भूमिरसीति मन्त्रेण भूमिपूजनं कुर्यात्। आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना॥ इति भूमिं संप्रार्थ्य देहल्यधः गर्ते पारदं पञ्चरत्नानि च निक्षिप्य। गर्तोपरि देहलीं स्थिरो भवेति न्यसेत्। ततो द्वारशाखां संस्थाप्य। पूर्वादिद्वारदेवता नामभिः सम्पूज्य ताभ्यः सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं दत्वा उपरिशाखायाः मध्यदेशे लौहमुद्रिकाहरिद्राखण्डपीतसर्षपराजिकाकपर्दिकाभिः पीतवस्त्रे पुटलिकां कृत्वा 'येन बद्धो बली राजे'ति बध्नीयात्। "यदाबध्नं" इति बन्धनम्। ततः पुष्पमाल्यादिभिरलङ्कृत्य प्रार्थयेत्—"स्थापितासि मया शाखे सुखदा ऋद्धिदा भव। पूजितासि मया भक्त्या स्थापिता च स्थिरा भव॥ धारय त्वं महाभागे निर्मिता विश्वकर्मणा। स्थापिता शुभदा नित्यं मम गेहे शुभं कुरु"॥ इति सम्प्रार्थ्य ब्राह्मणान् सम्पूज्याऽऽचार्याय दक्षिणां दत्त्वा देवताविसर्जनं यस्य स्मृत्या० इति कर्मेश्वरार्पणं च कुर्यात्। एकं नारिकेलं देहल्यामुपरि त्रोटयित्वा सर्वेभ्यो देयम्। इति लघुदर्पणे देहलीन्यासविधिः॥

'ग्रामे भूपतिमन्दिरे च नगरे पूज्यश्चतुष्षष्टिकैरेकाशीतिपदस्समस्तभवने जीर्णे नवाध्यंशकैः'॥ देवालये तु दीक्षायां ग्रहयज्ञे च पूजने। चतुःषष्टिपदो ज्ञेयः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केचिद्राजगृहे विदुः ।। वापीकूपतडागादौ वनेषूपवनेषु च। उक्तानुक्तेषु सर्वत्र वास्तुः शतपदः शुभः ।। ब्रह्मा कलां (१६) शो वसुतोर्यमाद्याः (४) कोणेषु बाह्येऽपि च सार्धभागाः । विधातृकोणे द्विपदास्तथाऽष्टौ शेषाः सुरा एकपदाः शतांशे ।।

अथ वास्तुशान्तिप्रयोगः--कर्ता कर्मदिनात्पूर्वदिने देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात् । गृहप्रवेशात्पूर्वदिवसे पूर्वाह्णे सस्त्रीको यजमानः शुद्धासने उपविश्य । आचम्य । प्राणानायम्य । देशकालौ० गोत्रः शर्मा सपत्नीकः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहित–श्रीवास्तुपुरुषसुप्रसन्नतापूर्वकैतन्नूतन [जीर्णराजसभाराजमहिषीसचिवसेनानीद्विपदचतुष्पदादि] गृहधर्मशालाश्रितहीनाधिकाङ्गसमवेधादिदुष्टापव्ययादिजन्यसर्वदोषोपशान्तयेऽस्मिन् गृहे (अनयोर्गृहयोः, एषु गृहेषु,) करिष्यमाणनित्यनैमित्तिककाम्यकर्मणां यथोक्तफलावाप्तये दीर्घायुरारोग्यपुष्टितुष्टिपुत्रपौत्रधनधान्यसम्पल्लक्ष्मीस्थैर्यसदभीष्टसिद्धये चास्य वास्तोः (अनयोर्वास्त्वोरेषां वास्तूनां) सर्वदा शुभफलतासिद्धये च सनवग्रहमखां वास्तुशान्तिमहं करिष्ये कूपप्रतिष्ठां चैकतन्त्रेण करिष्ये। इति संकल्प्य गणपतिपूजनदिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वाऽऽचार्यादीन् वृणुयात् । तत आचार्यो 'यदत्र संस्थितं' इत्यादिना सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन कुशैः 'आपो हिष्ठा' इति सर्वं गृहं प्रोक्षयेत्। ततो हस्तमितं स्थण्डिलं कृत्वा स्थण्डिलस्येशानदिग्भागे उदक्संस्थां ग्रहवेदीं वास्तुवेदीं च कुर्यात् । तत्र ग्रहवेदी हस्तमात्रा समचतुरस्रा हस्तोच्छ्रिता त्रिवप्रा । वास्तुवेदी तु द्विवप्राहस्तविस्तृता हस्तोच्चा। प्रथमो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वप्रो द्व्यङ्गुलोच्चो द्व्यङ्गुलविस्तारः, द्वितीयस्त्र्यङ्गुलोच्चो द्व्यङ्गुलविस्तारःकार्यः। वप्रोपरि ऊनत्रिंशत्यङ्गुलोच्चा वप्ररहिता कार्या। ईशानादिकोणेषु शङ्कुरोपणम्। तत्र मन्त्रः– "विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। अस्मिन् गृहे प्रतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥" अस्मिन् नवग्रहमखवास्तुशान्तिकर्मणि प्रतिरोपणं मन्त्रावृत्तिः। प्रासादोपवनतडागकूपवापीवास्तुकर्मणि तत्तन्नामादिशेत्। विशन्तु भू० प्रासादेऽत्रावतिष्ठन्तु आयु०। ततश्चतुश्शङ्कुपार्श्वे–आग्नेयनैर्ऋत्यवायव्येशानकोणेषु सदीपदधिमाषतण्डुलबलीन् दद्यात्। तत्र मन्त्राः–अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ १॥ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम्॥ २॥ नमोऽस्तु वायुरक्षोभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। तेभ्यो बलिं०॥ ३॥ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः॥ ४॥ वेद्युपरि वस्त्रे कुङ्कुमादिना सुवर्णादिशलाकया पत्रफलपुष्पाणामन्यतमेन वा रेखां कुर्यात्। शान्तायै नमः १। यशोवत्यै० २। कान्तायै० ३। विशालायै० ४। प्राणवाहिन्यै० ५। सत्यै० ६। सुमत्यै० ७। नन्दायै० ८। सुभद्रायै० ९। सुरथायै० १०। एतैर्नामभिः पश्चिमादारभ्य प्रागन्ताः उदक्संस्था दश रेखाः कृत्वा पुनः–हिरण्यायै नमः १। सुव्रतायै० २। लक्ष्म्यै० ३। विभूत्यै० ४।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विमलायै० ५ । प्रियायै० ६ । जयायै० ७ । ज्वालायै० ८ । विशोकायै० ९ । ईडायै० १० । एतैर्दक्षिणादारभ्य उदगन्ताः प्राक्संस्थाः दश रेखाः कृत्वा–'मनोजूति०' रेखादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत, इति प्रतिष्ठाप्य । 'रेखादेवताभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः संपूज्यानया पूजया रेखा-देवताः प्रीयन्ताम् ।

अथ प्रासादवास्तुमण्डले रेखादेवताः—लक्ष्म्यै नमः १ । यशोवत्यै० २ । कान्तायै० ३ । सुप्रियायै० ४ । विमलायै० ५ । शिवायै० ६ । सुभगायै० ७ । सुमत्यै० ८ । ईडायै० ९ । इत्येतैर्नवरेखाः प्रागायताः कृत्वा, धन्यायै० १ । प्राणायै० २ । विशालायै० ३ । स्थिरायै० ४ । भद्रायै० ५ । जयायै० ६ । निशायै ७ । विरजायै० ८ । विभवायै० ९ । इति नामभिरुदगग्रा नव रेखाः कृत्वा मध्यमपदचतुष्टयमेकीकृत्य कोणेषु रेखां विदध्यात् ॥

अथ शतपदवास्तुमण्डले रेखादेवताः—शान्तायै० १ । यशोवत्यै० २ । कान्तायै० ३ । विशालायै० ४ । प्राणवाहिन्यै० ५ । सत्यै० ६ । सुमत्यै० ७ । नन्दायै० ८ । सुभद्रायै० ९ । सुरथायै० १० । वसुमत्य० ११ । पुनः–हिरण्यायै० १ । सुव्रतायै० २ । लक्ष्म्यै० ३ । विभूत्यै० ४ । विमलाय० ५ । प्रियायै० ६ । जयायै० ७ । कालायै० ८ । विशोकायै० ९ । ईडायै० १० । ज्वालायै० ११ । ततो गृहमध्यकृते स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य स्थण्डिलात् पूर्वस्यां ग्रहान् संस्थाप्य सम्पूजयेत् । तदैशान्यां कलशं संस्थाप्य वरुणं सम्पूज्य वास्तुमण्डले तण्डुल-पुञ्जेषु पूगीफलेषु वास्तुदेवता आवाहयेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः । शिखिन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मावाहयामि १ । [एवमग्रेऽपि] पर्जन्याय० पर्जन्यम्० २ । जयन्ताय० जयन्तम्० ३ । कुलिशा
युधाय० कुलिशायुधम्० ४ । सूर्याय० सूर्यम्० ५ । सत्याय० सत्यम्० ६ । भृशाय० भृशम्० ७ ।
आकाशाय० आकाशम्० ८ । वायवे० वायुम्० ९ । पूष्णे० पूषणम्० १० । वितथाय० वितथम्०
११ । गृहक्षताय० गृहक्षतम्० १२ । यमाय० यमम्० १३ । गन्धर्वाय० गन्धर्वम्० १४ ।
भृङ्गराजाय० भृङ्गराजम्० १५ । मृगाय० मृगम्० १६ । पितृभ्यो पितॄन्० १७ । दौवारिकाय०
दौवारिकम्० १८ । सुग्रीवाय० सुग्रीवम्० १९ । पुष्पदन्ताय० पुष्पदन्तम् २० । वरुणाय० वरु-
णम्० २१ । असुराय० असुरम्० २२ । शोषाय० शोषम्० २३ । पापाय० पापम्० २४ । रोगाय०
रोगम्० २५ । अहये० अहिम्० २६ । मुख्याय० मुख्यम्० २७ । भल्लाटाय० भल्लाटम्० २८ ।
सोमाय० सोमम्० २९ । सर्पेभ्यो० सर्पान्० ३० । अदितियै० अदितिम्० ३१ । दितये० दितिम्०
३२ । अद्भ्यो० अपः० ३३ । सावित्राय० सावित्रम्० ३४ । जयाय० जयम्० ३५ । रुद्राय०
रुद्रम्० ३६ । अर्यम्णे० अर्यमणम्० ३७ । सवित्रे० सवितारम्० ३८ । विवस्वते० विवस्वन्तम्०
३९ । विबुधाधिपाय० विबुधाधिपम्० ४० । मित्राय० मित्रम्० ४१ । राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्मा-
णम्० ४२ । पृथ्वीधराय० पृथ्वीधरम्० ४३ । आपवत्साय० आपवत्सम्० ४४ । ब्रह्मणे० ब्रह्मा-
णम्० ४५ । वास्तुमण्डलमध्यादुत्तरे कलशस्थापनविधिना कलशस्थापनं कृत्वा तदुपरि अग्न्युत्तारण-
पूर्वकं सुवर्णनिर्मितं प्रतिमाद्वयं स्थापयेत्—"वास्तोष्पते प्रति०" । वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिम्०
वृषवास्तवे० वृषवास्तुम्० ४६ । इति । मण्डलाद् बहिरीशानादिदिक्षु—चरक्यै० चरकीम्० ४७ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विदार्यै० विदारीम्० ४८। पूतनायै० पूतनाम् ४६। पापराक्षस्य० पापराक्षसीम्० ५०। पूर्वादिदिक्षु—स्कन्दाय० स्कन्दम्० ५१। अर्यम्णे० अर्यमणम्० ५२। जृम्भकाय० जृम्भकम्० ५३। पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छम्० ५४। पुनः—उग्रसेनाय० उग्रसेनम्० ५५। डामराय० डामरम्० ५६। महाकालाय० महाकालम्० ५७। एकपदे० एकपदम्० ५८। इन्द्राय० इन्द्रम्० ५६। अग्नये० अग्निम्० ६०। यमाय० यमम्० ६१। निर्ऋतये० निर्ऋतिम्० ६२। वरुणाय० वरुणम्० ६३। वायवे० वायुम्० ६४। सोमाय० सोमम्० ६५। ईशानाय० ईशानम्० ६६। ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० ६७। अनन्ताय० अनन्तम्० ६८। इत्यावाह्य। 'मनोजूति'० आवाहितशिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य आवाहितवास्तुपीठदेवताभ्यो नमः, इत्यासनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत—नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ॥ अनया पूजया वास्तुपीठदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ वास्तुमण्डलादीशान्यां कलशं संस्थाप्य। तत्र यवान् प्रक्षिप्य यवपूर्णपात्रं निधाय तत्र वरुणमावाह्य सम्पूजयेत्। ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनाद्याघारावाज्यभागान्तं कृत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात्। तत आदित्यादिग्रहानर्कादिसमिद्भिस्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमष्टाष्टसंख्यकाहुतिभिः पूर्वोक्तपूजामन्त्रैर्हुत्वा। शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताभ्यो नाममन्त्रैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यमौदुम्बरसमित्तिलपायसाज्यद्रव्यैरष्टाविंशतिभिरष्टभिर्वा होमः कार्यः। शिखिने स्वाहा १। पर्जन्याय० २। जयन्ताय० ३। कुलिशायुधाय० ४। सूर्याय० ५। सत्याय० ६। भृशाय० ७। आकाशाय० ८। वायवे० ६। पूष्णे० १०।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वितथाय० ११ । गृहक्षताय० १२ । यमाय० १३ । गन्धर्वाय० १४ । भृङ्गराजाय० १५ ।
मृगाय० १६ । पितृभ्यः १७ । दौवारिकाय० १८ । सुग्रीवाय० १९ । पुष्पदन्ताय० २० ।
वरुणाय० २१ । असुराय० २२ । शोषाय० २३ । पापाय० २४ । रोगाय० २५ । अहये० २६ ।
मुख्याय० २७ । भल्लाटाय० २८ । सोमाय० २९ । सर्पेभ्यः० ३० । अदितये० ३१ । दितये०
३२ । अद्भ्यः० ३३ । सावित्राय०३४ । जयाय० ३५ । रुद्राय० ३६ । अर्यम्णे० ३७ । सवित्रे०
३८ । विवस्वते० ३९ । विबुधाधिपाय० ४० । मित्राय० ४१ । राजयक्ष्मणे० ४२ । पृथ्वी-
धराय० ४३ । आपवत्साय० ४४ । ब्रह्मणे० ४५ । 'वास्तोष्पते' इति चतसृभिः प्रत्यृचं सप्तविं-
शत्याहुतिभिरौदुम्बरसमित्तिलपायसाज्याहुतीर्जुहुयात् । तत्र मन्त्राः—वास्तोष्पते प्रतिजानीह्य-
स्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव
द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥ १ ॥ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो
गोभिरश्वेभिरिन्दोः । अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति तन्नो जुष-
स्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥ २ ॥ वास्तोष्पते शग्मया सꣳ सदा
ते साक्षीमहिरण्यमया गातुमत्या । पाहि क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात
स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥ ३ ॥ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्वया-
विशन् । सखा सुशेव एधि नः स्वाहा ॥ ४ ॥ ततो घृताक्तबिल्वाहुतिहोमः—"वास्तो-

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ष्पते प्रति" स्वाहा ॥ १ ॥ वास्तोष्पते भूमिपते पाहि त्वं लोकपालक । सुखं कुरु सदास्माकं श्रीवास्तोष्पतये नमः ॥ "वास्तोष्पते प्रत०" ॥ हे वास्तोष्पते प्रतिज्ञां त्वं कुर्वस्मान्रक्षितुं सदा । सुष्ठु प्रवेशोऽस्माकं भवत्येव जगत्पते ॥ "वास्तोष्पते शग्म०" ॥ ३ ॥ वास्तोष्पते त्वमस्माकमापन्निस्तारको भव । गोभिरश्वादिभिः प्राणवर्द्धकश्चैधि वासव ॥ ३ ॥ "अमीवहा०" ॥ ४ ॥ अक्षीणसम्पदाः स्याम तव सख्ये वयं सति । वर्तमानपितेव त्वं पुत्रान्प्रतिजुषस्व वै ॥ ४ ॥ "वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सोम्यानाम् । द्रप्सो भेत्ता पुरां शाश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा" स्वाहा ॥ ५ ॥ नमस्करोमि तं देवं वास्तुदेवं गणैर्युतम् । सर्वार्थदं विरूपाक्षं सुनीलेस्वितमच्युतम् ॥ ५ ॥ इति पञ्चभिः प्रत्येकं पञ्चभिः २ बिल्वैरेकैकं वा बिल्वफलं त्रिधा कृत्वा होमः कार्यः । ततश्चरक्यादिदेवतानां प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं चतुश्चतुःसंख्याकाः समित्तिलपायसाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥

चरक्यै स्वाहा ४६ । विदार्यै० ४७ । पूतनायै० ४८ । पापराक्षस्यै० ४६ । स्कन्दाय० ५० । अर्यम्णे० ५१ । जृम्भकाय० ५२ । पिलिपिच्छाय० ५३ । उग्रसेनाय० ५४ । डामराय० ५५ । महाकालाय० ५६ । एकपदे० ५७ । इन्द्राय० ५८ । अग्नये० ५६ । यमाय० ६० । निर्ऋतये० ६१ । वरुणाय० ६२ । वायवे० ६३ । सोमाय० ६४ । ईशानाय० ६५ । ब्रह्मणे० ६६ । अन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्ताय० ६७। वनवास्तौ तु शिख्यादिहोमोत्तरम्—वनफलाय स्वाहा। शिखिध्वजाय० सोमाय० नागराजाय०। इति विशेषः। ततो वास्तोष्पतिहोमादिस्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा वास्तुपीठपश्चिमदेशे उपविश्य शिख्यादिदेवताभ्यः विडालदक्षिणकर्णसमं पायसादिना मण्डलाग्रे भूमौ उदक्संस्थप्रागपवर्गपङ्क्तिरूपेण बलिं सं० 'शिखिने एष पायसबलिर्न मम' इति प्रत्येकं बलिदानाशक्तौ महान्तमेकं पायसबलिं दद्यात्। शिख्यादिवास्तुपीठदेवताभ्यो नमः अमुं पायसबलिं समर्पयामि, इति शिख्यादिप्रीतये। इदं हिरण्यं शिखिने नमः ४४ इति द्विजेभ्यः काञ्चनं, ब्रह्मप्रीतये धेनुं च 'इदं यत्किञ्चित् पयस्विनीगोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं ब्रह्मणे नमः, इति दद्यात्। ईशानादिक्रमेण चरक्यादिभ्यो बलिं दत्वा हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्याचम्य च ततः स्थापितकलशोदकेन सपत्नीकं यजमानं सकुटुम्बमृत्विगाचार्यादयोऽभिषेकं कुर्युः। तत्र मन्त्राः—देवस्यत्वा० ३। आपो हि ष्ठा० ३। शिरो मे श्रीः ५। सर्वौषधिभिरुद्वर्तनं स्नानोत्तरं वास्तुपीठस्य ब्रह्मणः स्थाने सुरूपां भूपितां स्त्रीरूपां पृथ्वीं ध्यात्वा 'धरायै नमः' इति सम्पूज्य प्रासादपरितः समन्तात् सम्प्रार्थ्य।

"सर्वदेवमयं वास्तुं सर्वदेवमयं परम्। सर्वदेवमयं ब्रह्म तस्मै वास्तोष्पते नमः"

ततो गृहं प्रासादपरितः समन्तात् प्रागादितस्त्रिसूत्र्या पावमानेन सूक्तेन रक्षोघ्नेन च वेष्टयेत्।

"इन्द्रादिदशदिक्पालाः सायुधाश्च सवाहनाः। ब्रह्माविष्णुशिवैः सार्ध रक्षां कुर्वन्तु सर्वतः॥" ततः सूत्रवेष्टनेन सहैव दुग्धपूर्णकुम्भाभ्यां च तथैव सूक्तद्वयेन च धाराद्वयमविच्छिन्नं कुर्यात्। पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः। पुनन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषाव्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १ ॥ अग्नऽआयू ᳪ षि
पवसऽआसुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ २ ॥ पुनन्तु मा देव-
जनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु व्विश्वा भूतानि-जातवेदः पुनीहि माम्
॥ ३ ॥ पवित्रेण पुनीहि माशुक्रेण देव दीद्यत् । अग्ने वक्रत्वाक्रतूँ १ ऽरनु
॥ ४ ॥ यत्तेपवित्रमर्चिष्ष्यग्ने व्विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥ ५ ॥ पव-
मानः सोऽअद्यनः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥ ६ ॥ उभा-
भ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः ॥ ७ ॥ वैश्वदेवी
पुनती देव्व्यागाद्यास्यामि मा बह्वयस्तन्न्वोव्वीतपृष्ठाः । तया मदन्तः सधमादेषु
व्वय ᳪ- स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ८ ॥ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं स्याहि
राजेवामवाँ २ इभेन । तृष्ष्वीमनुप्रसितिन्द्रुणानोस्तासिव्विद्ध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥
तवभ्रमासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृशधृषता शोशुचानः । तपू ᳪ ष्यग्नेजुह्वापतङ्गान-
सन्दितोव्विसृजव्विष्वगुल्कक्काः ॥ प्रतिस्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायु-
र्व्विशोऽअस्याऽअदब्धः । योनोदूरेऽअघश ᳪ सोयोऽअन्त्यग्ने माकिष्टे व्व्यथि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रादधर्षीत् ॥ उदग्ग्ने तिष्ठ प्प्रत्यातनुष्ष्वन्न्यमित्त्राँ २ऽओषतात्तिग्ग्महेते । योनोऽअराति ᳪ समिधानचक्रे नीचातं धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥ ऊर्ध्द्वोभवप्रतिविद्ध्याद्ध्यस्मदाविष्क्कृणुष्ष्वदैव्व्यान्न्यग्ग्ने । अवस्थिरातनुहियातुजूनाञ्जामिमजानि प्रमृणीहि शत्त्रून् ॥ "स्वतोयधारया वास्तुभूमिं सिञ्चन्तु सर्वतः । दुग्धधाराप्रदानेन प्रलयं यान्तु राक्षसाः" ॥

अथ ध्वजोच्छ्रयणम्--पूर्वादिक्रमयोगेन इन्द्रादीनां यथाक्रमम् । पीतं रक्तं कृष्णनीले श्वेतं धूम्रं हरित्तथा । शोणं सितं तथा रक्तं ध्वजवर्णाः प्रकीर्तिताः ॥ अत्र ध्वजेषु इन्द्रादीन्नाममन्त्रेण पूजनम् । गृहमध्यभागे महाध्वजारोपणं 'महाध्वजाय नमः' इति मन्त्रेण पूजनं च ततो यजमानो गृहस्याग्नेयदिग्भागे आकाशपदे जानुप्रमाणावटं खानयित्वा गोमयेनानुलिप्य शुक्लचन्दनपुष्पादिभिरलङ्कृत्य। यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्गूस्तथैव च। श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ इति सप्तधान्यानि दधितण्डुलफलपुष्पाणि प्रक्षिप्य । नवं कुम्भजलपूर्णं शुक्लैकपुष्पयुतं गन्धादिभिरर्चितं हस्तद्वयेनादाय जानुभ्यामवनीं गत्वा—"नमोव्वरुणायाभिष्ठिता व्वरुणस्य पाशाः" । इति तज्जलेन गर्तं पूरयेत । तत्रावर्तें प्रदक्षिणेन पुष्पे चोर्ध्वमुखे शुभं, वपरीत्ये त्वशुभम् । ततो मृन्निर्मितापक्वपेटिकायां सप्तधान्यदधितण्डुलशैवालफलपुष्पाणि च प्रक्षिप्य पूर्वस्थापितां वृषवास्तुप्रतिमां तूर्यमङ्गलघोषेण अवटस्थाने आनीयमानां तस्यां संस्थाप्य वृषवास्तुं गन्धा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्–पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः। प्रसीद पाहि विश्वेश देहि मे गृहजं [देहि प्रासादजं] सुखम् ॥ नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्याभिरतः प्रभो। मद्गृहं (प्रासादं) धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा ॥ ततः शालाधिपतिं प्रार्थयेद्दोषोपशमनाय च ॥ प्रार्थयामीत्यहं देवं शालाया अ (प्रासादस्या) धिपस्तु यः ॥ प्रायश्चित्तप्रसङ्गेन गृहार्थे यन्मया (प्रासादार्थे तु यत्) कृतम्। मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमिकीटनिपातनम्। हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्। अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिद्वृक्षस्य पातनम् ॥ एतत्सर्वं क्षमस्वेदं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। गृहार्थे यत्कृतं (प्रासादार्थे कृतं) पापमज्ञानेनापि चेतसा। तत्सर्वं क्षम्यतां देव गृहशालां शुभां कुरु (प्रासादस्य शुभं कुरु) ॥ ततः पोटिकामाच्छाद्य तस्मिन् गर्ते शनैर्निक्षिपेत्। अनेन मन्त्रेण– सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्धनि। तथा मां वह कल्याणं संपत्सन्ततिभिः सह ॥ (तथेमं वह कल्याणं प्रासादं सह दैवतैः)। इति तथैव मृदा गर्तं पूरयेत्। मृदाधिक्ये उत्तमम्, साम्ये मध्यमम्, न्यूनेऽधमं फलं विजानीयात्। गर्तोपरि भूमिं गोमयेनोपलिप्य शुक्लगन्धपुष्पाक्षतैः पूजयेत्। ततः कलशस्थापनं, तदुपरि दीपप्रज्वालनम्। विश्वकर्मणे नमः इत्यायुधपूजनम्। ततोऽग्नेः पश्चिमतः आचार्यं सम्पूज्य कृतस्य सनवग्रहमखवास्तुशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं वासोयुगं निष्क्रयद्रव्यसहितं च दक्षिणात्वेनाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। आचार्यः स्वस्ति इति वदेत्। ब्रह्मसदस्यर्त्विग्भ्यः यथाशक्ति दक्षिणां दत्त्वा दैवज्ञपूजाऽपि कर्तव्या। ग्रहाणां शिरस्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिवास्तुदेवतानां चोत्तरपूजां कृत्वा क्षमाप्य । 'यान्तु देवगणाः' इति विसृज्याऽऽचार्यहस्ते प्रतिपाद्याग्निं सम्पूज्य । 'गच्छ गच्छ' इति विसृजेत् । ब्राह्मणैः सह शान्तिसूक्तं पठित्वा शिख्यादीनां ग्रहाणां च प्रीत्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनं संकल्पयेत् । शिल्पिनोऽपि वस्त्रादिना सन्तोष्याः । यस्य स्मृत्या० विष्णवे ३ । ए प्रथमेऽह्नि वास्तुशान्तिं विधाय द्वितीयेह्नि गृहप्रवेशं कुर्यात् । स चेत्थं नवकलशं जलपूर्णम्पञ्चपल्लवोपेतं दूर्वायुतं सुगन्धादिलिप्तं वस्त्रवेष्टितं सपूर्णपात्रं सफलमञ्जलिना गृहीत्वा गां देवार्चनादिकं चान्यस्मै दत्त्वा यजमानो ब्राह्मणैरन्वितः देवगोपुरःसरं सदारपुत्रस्तूर्यमङ्गलघोषेण च सह गृहे प्रविशेत् । द्वारपुरतः स्थित्वा देशकालौ० ममास्मिन् पुण्याहे श्रुतिस्मृत्युक्तकर्मानुष्ठानसिद्धिपूर्वकसांसारिकानेकभोगविविधमङ्गलाभ्युदयादिसिद्धये चैतन्नवीनगृहप्रवेशमहं करिष्ये ।

धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धये । त्वामहं प्रविशाम्यद्य भोगमन्दिर ते नमः ॥ १ ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी । तावत्त्वं मम [अस्य] वंशस्य मङ्गलाभ्युदयं कुरु ॥ तत आचार्य इति पठित्वा देहलीमस्पृशन् दक्षिणपादपुरस्सरं प्रविशेत् । मुख्यगृहमध्ये तण्डुलोपरि कलशं स्थापयेत्, भद्रपीठे दम्पती उपवेशयेच्च । देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सुपूर्णकलशस्थापनान्वितं सम्यगपूर्वसंज्ञकवेश्मप्रवेशे नानाविधविघ्नगणविलयपूर्वकं शरीरारोग्यैश्वर्यादिशुभफलप्राप्त्यर्थं श्रीगणेशाम्बिकयोः पूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनान्वितवरुणाधीशकलशार्चनं क० । नूतनगृहेऽस्मद्वीस्थैर्यादिशुभफलसिद्ध्यर्थं धनधान्यपुत्रपौत्राद्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं च गृहप्रवेशाङ्गभूतं पुण्याहवाचनं करिष्ये । सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य मे गृहे स्थिरवासार्थमायुरारोग्यै-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्वर्याभिवृद्ध्यर्थं गणपतिकुलदेवीष्टदेवतापूजनपूर्वकं स्वस्तिपुण्याहवाचनं करिष्ये। भो ब्राह्मणाः! मम गृहे स्थिरवासार्थं पुण्याहवाचनं भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मणान् सम्पूज्य भूरिदक्षिणां दद्यात्। ततः यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयित्वाऽऽशिषो गृहीत्वा सुहृद्युक्तो भुञ्जीत। इति लघुदर्पणे गृहवास्तु-शान्तिप्रयोगः॥

अथ कूपोत्सर्गप्रयोगः[१]–तत्र सुमुहूर्ते भूम्यादिपूजनं कृत्वा कूपं खानयेत्। सिद्धे कूपे शुभेह्नि प्रतिष्ठां कारयेत्। मुहूर्तात्प्राक् कूपात् पूर्वे पश्चिमे उत्तरे वा द्वादश-षोडशान्यतरहस्तं मण्डपं विधायालङ्कृत्य। तस्मिन् कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय। तत्प्राच्यां हस्तमात्रां समचतुरस्रां हस्तोच्छ्रयां मुख्यवेदिं तदुत्तरतो गृहवेदिं नैर्ऋत्ये वास्तुवेदिं च विधाय। तत्र प्रातः कृतनित्यक्रियः

---

१ जलाशयो विविधपुण्यजनकस्तदाह विष्णुधर्मोत्तरे–अग्निष्टोमसमः कूपः सोऽश्वमेधसमो मरौ। **कूपः** प्रवृत्त-पानीयः सर्वं हरति दुष्कृतम्॥ १॥ कूपकृत्स्वर्गमासाद्य सर्वान्भोगानुपाश्नुते। तत्रापि भोगनैपुण्यं स्थानाभ्यासात्प्रकीर्तितम्॥ २॥ **नन्दिपुराणे** यो वापीमथवा कूपं देशे तोयविवर्जिते। खानयेत्स नरो याति स्वर्गं प्रेत्य शतं समाः॥ ३॥ विष्णुपुराणे–कूपारामतडागेषु देवतायतनेषु च। पुनः संस्कारकर्ता च लभते मौलिकं फलम्॥ ४॥ **ततः कूपादिप्र-माणमाह गर्गः**–कुर्यात्पञ्चकरादूर्ध्वं पञ्चविंशतिकरावधि। कूपं वृत्तायतं प्राज्ञः सर्वभूतसुखावहम्॥ ५॥ **देवीपुराणे**–कूपः पञ्चकरादूर्ध्वं यावद्वर्गास्तदुद्भवः। वापी दण्डमयादूर्ध्वं दशवर्गा नृपोत्तमैः॥ ६॥ **कूपस्थानफलान्याह वसिष्ठ-संहितायाम्**–ऐश्वर्यं पुत्रहानिश्च स्त्रीनाशो निधनं भवेत्। सम्पत् शत्रुभयं सौख्यं पुष्टिः प्रागादितः क्रमात्॥ ७॥ पूर्वस्यां पश्चिमायामुत्तरस्यामैशान्यां च कूपकरणं शुभमन्यत्राशुभमित्यर्थः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सपत्नीको यजमानः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानेककल्पाविच्छिन्नस्वर्गलोकवासपरार्धद्वयावच्छिन्नवरुणलोकगमनपूर्वकविष्णुपदप्राप्त्यर्थं वापीकूपोत्सर्गमहं करिष्ये । अथवा श्रीविष्णुप्रीतिकामः कूपप्रतिष्ठां करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वाऽऽचार्यब्रह्मर्त्विग्वरणानि कुर्यात् । तत आचार्यो 'यदत्र संस्थितम्' इत्यादिना सर्षपान् विकीर्य । पञ्चगव्येन कुशैः "आपो हि ष्ठा" इति तृचेन प्रोक्ष्य । वास्तुवेद्यां शङ्कुरोपणमग्न्यादिबलिदानं शान्त्यादिरेखाकरणं पूजनं यथोक्तशतपदवास्तुपूजां च कृत्वा बलिं दद्यात् । ततः कूपस्य चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेणाष्टदलेषु चतुरः कुम्भान् संस्थाप्य विष्णुमावाह्य सम्पूज्य मध्ये वा वारुणमण्डलं निर्मायाग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहवेद्यां ग्रहानावाह्य पूजयेत् ।

अथ वरुणमण्डलदेवतास्थापनम्—षडूर्ध्वगतरेखायास्तिर्य्यग्रेखास्तथैव च । व्रीहिभिः पञ्चरङ्गैस्तु पञ्चविंशतिकोष्ठकाः ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० १ सोमाय० सोमं २ शिवाय० शिवं ३ इन्द्राय० इन्द्रं० ४ अग्नये० अग्निं० ५ यमाय० यमम् ६ निर्ऋतये० निर्ऋतिम्० ७ वरुणाय० वरुणम्० ८ वायवे० वायुम्० ९ अष्टवसुभ्यो० अष्टवसून्० १० एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्रान्० ११ द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्यान्० १२ अश्विभ्यां० अश्विनौ० १३ सप्तमातृभ्यो० सप्तमातॄः १४ विनायकाय० विनायकम्० १५ नागभूतेभ्यो० नागभूतान्० १६ यक्षरक्षोभ्यो० यक्षरक्षांसि० १७ वृषभध्वजाय० वृषभध्वजम्० १८ साध्येभ्यो० साध्यान्० १९ नारायणाय० नारायणं० २० पितृभ्यो० पितॄन्० २१ कृतान्तकालकाय० कृता-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्तकालकम्० २२ मृत्युरोगाभ्यां० मृत्युरोगौ० २३ मरुद्गणेभ्यो० मरुद्गणान्० २४ चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तम्० २५ मेदिन्यै० मेदिनीम्० २६ ऋग्वेदाय० ऋग्वेदम्० २७ यजुर्वेदाय० यजुर्वेदम्० २८ सामवेदाय० सामवेदम्० २९ अथर्ववेदाय० अथर्ववेदम्० ३० सर्वशास्त्रेभ्यो० सर्वशास्त्राणि० ३१ इत्यावाह्य० "मनोजूति०" ब्रह्माद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत, इति प्रतिष्ठाप्य ब्रह्माद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति यथामिलितोपचारैः पूजयेत्। मध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य। ताम्रपात्रे पञ्चरत्नसुवर्णकूर्ममकरौ राजतमत्स्यडुण्डुभौ ताम्रकुलीरमण्डूकौ लोहमयं शिशुमारं चाग्न्युत्तारणपूर्वकं निधाय "इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥" इति कलशाग्रे स्थापयेत्। कूर्माय० कूर्मम्० १ मकराय० मकरम्० २ मत्स्याय० मत्स्यम्० ३ डुण्डुभाय० डुण्डुभम्० ४ कुलीराय० कुलीरम्० ५ मण्डूकाय० मण्डूकम्० ६ शिशुमाराय० शिशुमारम्० ७ इत्यावाह्य। "कूर्मादिजलचरेभ्यो नमः" इति पूजयेत्। कलशोपरि पूर्वादिक्रमेणाष्टप्रतिमास्थापनम्। "इमं मे वरुण०" वरुणाय० वरुणम्० १। "ब्रह्म जज्ञानम्०" ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० २। "नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः०" शिवाय० शिवम्० ३। "इदं विष्णु०" विष्णवे० विष्णुम्० ४। "गणानान्त्वा०" गणपतये० गणपतिम्० ५। "श्रीश्चते०" श्रियै० श्रियं० ६। अम्बे० अम्बिके०" अम्बिकायै० अम्बिकाम्० ७ "तऽआयजन्त द्रविण ँ समस्माऽऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

असूर्ते सूर्ते रजसि निषक्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥" भूतग्रामाय० भूतग्रामम्० ८ इत्यावाह्य । वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य पायसबलिं दद्यात्–वरुणाय एष पायसबलिर्न मम इत्यादि । ततो ब्रह्मोपवेशनादिवारुणं यवमयं चरुं यथाविधि श्रपयित्वाऽऽज्यभागान्तं विधाय द्रव्यत्यागं वारुणमण्डलदेवताहोमं वरुणादिप्रधानदेवताहोमं च हुत्वा आज्येनैव दशाहुतीर्जुहुयात् । ॐ त्वन्नो अग्ने० स्वाहा १ । ॐ सत्वन्नो० स्वाहा २ । ॐ इमं मे वरुण० स्वाहा ३ । ॐ तत्वायामि० स्वाहा ४ । ॐ येते शतम्० स्वाहा ५ ६ । ॐ उदुत्तमम्० स्वाहा०७ । ॐ "उरु ᳪ हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वेतवाऽउ । अपवेपादाप्रतिधातवे करुत्तापवत्क्वा हृदयाविधश्चित् ॥" स्वाहा ८ । ॐ वरुणस्योत्तम्० स्वाहा० ९ । अग्नेरनीकमपऽआविवेशापान्नपात्प्रतिरक्षन्नसूर्यम् । दमे दमे समिधं यक्ष्यग्नेप्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् ॥" स्वाहा० १० । दशर्चं हुत्वा स्थालीपाकं जुहुयात् । ॐ अग्नये स्वाहा १ । ॐ सोमाय० २ । ॐ वरुणाय० ३ । ॐ यज्ञाय ४ । ॐ भीमाय० ५ । ॐ उग्राय० ६ । ॐ शतक्रतवे० ७ । ॐ व्युष्ट्यै० ८ । ॐ स्वर्गाय० ९ । ॐ अग्नयेस्विष्टकृते० १० । भूरादिप्रणीताविमोकान्तं समाप्य ततस्त्रिवृत्सूत्रेण जलाशयं प्रदक्षिणं वेष्टयेत् । ततो यजमानोऽविच्छिन्नदुग्धधारया जलाशये त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य ध्वजारोपणं कुर्यात् । ततो गर्ते पेटिकारोपणं कुर्यात् । ततो यजमानः उष्णीषं बद्ध्वा मकरादियुतां ताम्रपात्रीमादाय जलाशयसमीपं प्राङ्मुखस्तिष्ठन् दक्षिणहस्तेनैव पूर्वं मकरं प्रक्षिप्य ततः सर्वतो मत्स्यादीन् प्रक्षिपेत्–"मत्स्यादयो जल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चरा जलक्रीडापराः सदा। विहरन्तु स्वभावेन जलादौ मम कारिते ॥" इत्यनेन मन्त्रेण ततस्तां पात्रीं महानदीजलोपेतां दध्यक्षतविभूषितां कृत्वोत्तराभिमुखस्तिष्ठन् "आपो हि ष्ठा०" इति तिसृभिर्जलमध्ये न्युब्जां त्यजेत्। तत उष्णीषमाचार्याय दद्यात् ततो यजमानः सुमुहूर्ते कूपोपरि कूपस्य समन्तात् कनकशृङ्गादिविभूषितां गां पुरुषसूक्तं जपन् त्रिर्भ्रामयेत्। "इरावती धेनुमती हि भूत ँ सूयवसिनीमनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्त्थपृथिवीमभितोमयूखैः ॥" इत्यनुमन्त्रयेत्। "इदं सलिलं पवित्रं कुरुष्व शुद्धाः पूता अमृताः सन्तु नित्यम्। मां तारयन्ति कुरु तीर्थाभिषेकं लोकालोकं तरते तीर्यते च ॥ इत्यनेन च गोपुच्छं गृहीत्वा यजमानसम्बन्धिनः सर्वेऽनुगच्छेयुः। ततो जलाशयोदकेन गोपुच्छे यथोक्ततर्पणं कुर्यात्। ततस्तां गां पूजयित्वा तां गां तन्निष्क्रयद्रव्यं वा ब्राह्मणाय दद्यात्। अद्येत्यादि इमां गां सवत्सां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां कृतैतत्कूपजलाशयप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे। विप्रः— ॐ स्वस्ति। ततो यजमानः कुशाक्षतजलान्यादाय देशकालौ सङ्कीर्त्य 'मम श्रीजलाशयाधिष्ठातृपरमेश्वरप्रीतिद्वारा जलाशयोत्सर्गकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थमिमं कूपजलाशयं वरुणदैवतं स्नानपानाद्यर्थमात्मसहितं सर्वभूतेभ्योऽहमुत्सृजे' इति जलमध्ये जलप्रक्षेपेणोत्सर्गं कुर्यात्। सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतज्जलमूर्जितम्। रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥ १ ॥ सामान्यं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वभूतेभ्यो मया दत्तमिदं जलम्। रमन्तां० ॥ २ ॥ इति गङ्गादितीर्थजलानि तत्र निक्षिपेत्। जलाशयं स्पृष्ट्वा पञ्च मन्त्रान् पठेत्—कुरुक्षेत्रं गया गङ्गा प्रभासः पुष्कराणि च। एतानि पञ्च तीर्थानि कूपेऽस्मिन् निवसन्तु मे ॥ १ ॥ वितस्ता कौशिकी सिन्धुः सरयूश्च सरस्वती। एतानि० ॥ ३ ॥ दशार्णा मुरला सिन्धुरथावर्तदृषद्वती। एतानि० ॥ ४ ॥ गोमती वाङ्मती शोणो गण्डकी सागरस्तथा। एतानि० ॥ ५ ॥ ततः सोपानोपरि जलमातृकाणाम् ॥ ह्रियै नमः १। श्रियै० २। शच्यै० ३। मेधायै० ४। विश्वायै० ५। लक्ष्म्यै० ६। जलमातृभ्यो० ७। इत्यनेन स्थापनं पूजनं च कृत्वा ततः एकं ब्राह्मणं यथेष्टं दुग्धं पाययेत्।

अथ कुद्दालपूजनम्—"विश्वकर्मणे नमः" इत्यनेन पूजनं कृत्वा। "कुद्दाल त्वं महाबाहो विधात्रा निर्मितः पुरा। पुत्रपौत्रधनायुष्यं देहि तुभ्यं नमो नमः" ॥ इति प्रार्थयेत्। ततो नवग्रहप्रीतये शक्त्या सुवर्णं ज्योतिर्विदे देयम्। ततो गोपूजनम् च—कृतस्य कूपोत्सर्गकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं वस्त्रयुग्मधेनुदक्षिणानिष्क्रयीभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे न मम। शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम्। सुवेषधारित्वं यस्माद्वासः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ धेनो त्वं पृथिवी सर्वा यस्मात्केशवसन्निभा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वपापहरा नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ २ ॥ तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात्। ग्रामाधिपतिपूजनम् । ततो यथाशक्ति ब्राह्मणभोजनं सङ्कल्पयेत् । ततः सपत्नीकस्य यजमानस्याभिषेकः । ततः स्थापितदेवतानां उत्तरपूजनपूर्वकं विसर्जनम् । आचार्याय प्रधानपीठं मण्डपं च दत्वाऽग्निं विसृज्य भूयसीं दत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । आरामप्रतिष्ठायां तु वृक्षेषु वस्त्रवेष्टनं तदभावे सूत्रवेष्टनं, जलमातृकापूजास्थाने "वनस्पतिभ्यो नमः" इति वृक्षेषु वनस्पतिपूजनं च कुर्यात्। 'देवपितृमनुष्याः प्रीयन्ताम्' इत्युत्सर्गमन्त्रः। मध्ये गोर्भ्रामणं उत्तरतो निष्क्रासनं च जलचरप्रक्षेपाभावश्च । इति लघुदर्पणे कूपोत्सर्गप्रयोगः ॥

अथ तडागोत्सर्गपद्धतिः—प्रणम्य शङ्करं विष्णुं गणेशं च सरस्वतीम् । कालीचरणसञ्ज्ञातजगन्नाथद्विवेदिना ॥ बहून् ग्रन्थान् समालोक्य सारमुद्धृत्य तत्त्वतः । क्रियते शिष्टतुष्ट्यर्थं तडागोत्सर्गपद्धतिः ॥ अथातो वापीकूपतडागारामदेवतायतनपुष्करणीनांप्रतिष्ठापनं व्याख्यास्यामः । इति सूत्रम् ।

अथ मण्डपसम्भाराः—बाह्यस्तम्भकाष्ठानि द्वादश १२ सार्धपञ्चहस्त ५॥ प्रमाणानि । मध्यस्तम्भकाष्ठानि चत्वारि ४ सार्धाष्टहस्त ८॥ काष्ठानि षोडश १६ पादोमषड्हस्तानि ५॥ काष्ठानि शिखरप्रोतकाष्ठान्यष्टौ ८ तत्र कोणकाष्ठानि चत्वारि ४ सार्धचतुर्हस्तानि ४॥ दिग्गतकाष्ठानि चत्वारि ४ चतुर्हस्तप्रमाणानि ४ । मृदङ्गाकारं शिखरमष्टास्रं १ तीक्ष्णाग्रं हस्तप्रमाणा १ छादनार्थं वंशाः अर्धपरिमिता कटाश्च । द्वारकाष्ठान्यष्टौ ८सार्धपञ्चहस्तानि ५॥ देहली-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काष्ठान्यष्टौ ८ सार्धद्विहस्तानि २॥ तोरणकाष्ठानि द्वादश तत्र न्यग्रोधवृक्षोद्भवं काष्ठद्वयं सार्धसप्तहस्तपरिमितम् ७॥ तदर्धमेकं १ हस्त० ३ ॥ औदुम्बरवृक्षोद्भवं काष्ठद्वयं २ सप्तहस्तपरिमितम् ७ एकं तदर्धम् ३॥ प्लक्षवृक्षोद्भवं काष्ठद्वयं २ सप्तहस्तपरिमितम् ७ एकं तदर्धम् ३॥ वैष्णवयागे तोरणद्वाराणामुपरि शङ्खचक्रगदापद्मानि। तत्र न्यग्रोधमयः शङ्खः १ चतुर्दशाङ्गुलमितो दीर्घः विस्तारः सार्धत्र्यङ्गुलपरिमितः ३॥ फलके निवेशश्चतुरङ्गुलपरिमितः। एवमौदुम्बरमयं चक्रम् १ एवं प्लक्षमयमम्बुजम् १ शैवयागे एतज्जातीयानि त्रिशूलानि तानि त्रयोदशांङ्गुलदीर्घाणि १० सपादस्त्र्यङ्गुल एव ॥

अथ मण्डपालङ्कारः—मण्डपच्छादनार्थं वासः। यथाशोभनम्। आग्नेयस्तम्भे। रक्तम्। नैर्ऋतिस्तम्भे कृष्णम् २। वायव्यस्तम्भे पीतम् ३। ईशानस्तम्भे श्वेतम् ४। कदलीस्तम्भाः। तोरणं पल्लवमयतोरणेषु नानाविधफलानि च। प्रतिस्तम्भं दर्पणानि च वेद्युपरि वेदीप्रमाणम्। फलपुष्पशोभितं पञ्चवर्णवितानम्। पूर्वे पीतध्वजः द्विहस्तविस्तृतः २ पञ्चहस्तदीर्घः ५ ऐरावतचिह्नितः पताका सप्तहस्तदीर्घा ७ एकहस्तविस्तृता १ वज्रचिह्निता ॥ १ ॥ आग्नेय्यां रक्तध्वजः महिषचिह्नितः पताका दण्डचिह्निता ॥ २ ॥ नैर्ऋत्यां नीलध्वजः सिंहचिह्नितः पताका खड्गचिह्निता ॥ ४ ॥ पश्चिमे श्वेतध्वजः मत्स्यचिह्निता पताका पाशचिह्नितः ॥ ५ ॥ वायव्यां धूम्रध्वजः एणाचिह्नितः पताका अङ्कुशचिह्निता ॥ ६ ॥ उदीच्यां ध्वजः हरिद्वर्णः अश्वचिह्नितः पताका गदाचिह्निता ॥ ७ ॥ ईशाने श्वेतध्वजः वृषचिह्नितः पताका त्रिशूलचिह्निता ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मध्वजो रक्तः हंसचिह्नितः पताका पद्मचिह्निता ॥ ९ ॥ अनन्तस्य ध्वजः श्वेतः गरुडचिह्नितः पताका चक्रचिह्निता ॥ १० ॥ एतेषां दण्डाः वंशसम्भवा दशहस्तमिताः । महाध्वजः षोडशहस्तो वंशदण्डो दशहस्तदीर्घः त्रिहस्तविस्तृतः पञ्चवर्णः श्वेतचामरक्षुद्रघण्टिकायुतः ॥ इति मण्डपालङ्कारः । अथ चतुरस्रकुण्डे व्यासस्य चतुर्विंशतिरंशाः कल्पनीयाः । व्यासतुल्यं खननं कार्यम् । मेखलोन्नतिं विना । ततः कुण्डस्य समन्तत एकांशमर्द्धांशं वा विहाय मेखलाः कुर्यात् । तत्र त्रिमेखलापक्षस्त्वेवम् । प्रथमा मेखला नवांशोन्नतचतुरंशविस्तृता ॥ १ ॥ द्वितीया तत्संलग्ना षोडशोन्नता अंशविस्तृता ॥ २ ॥ तृतीयापि च तत्संलग्ना त्र्यंशोन्नता द्व्यंशविस्तृता ॥ ३ ॥ कण्ठाद्वहिरेकैव वा मेखला कार्या । सा चैवम् । कण्ठाद्वहिः षडंशविस्तृता षडंशोन्नता ॥ ४ ॥ कुण्डपश्चिमे मेखलासंलग्नैव योनिः कार्या । कुण्डस्य यावान् विस्तारस्तदर्द्धमानदैर्घ्या । मूलभागे कुण्डव्यासतृतीयांशविस्तृता । अग्रे तु संकोचं गता । एकेनांशेनोच्चा मेखलोपरि । एकेनांशेन योनिर्मानान्तर्गतेन घटितमेखलया समन्ताद्वेष्टिता सा च मेखला योन्युपरि एकांशेन विस्तृता एकांशेनोच्चा। एवम्मेखलोपरि द्व्यंशोच्चा भवति । एकेनांशेनैवेपन्नम्रा साग्रेण मेखलाग्रतो निराधारा । मध्ये कूर्मपृष्ठोन्नता । मध्ये वर्तुलबिलवती । अग्रभागे । सच्छिद्रा । मूलभागे कुम्भकारवृत्तार्द्धद्वययुता । एवं च द्व्यंशविस्तृततृतीयमेखलायाः परौ द्वौ भागौ योन्याः कुम्भौ भवतः । तथा सति कुम्भयोरन्तरालं बाह्यमेखलासमं भवति । अश्वत्थपर्णाकारा वा कार्या भूतलमारभ्य यावद्योनिमूलमायतं मध्ये सरंध्रं नालाकारत्वान्नालं योनिमूललग्नाग्रं कुर्यात् । योन्युपरि नालसमीपे मृदगोलद्वयं स्थापयेत् । तत्र च द्वितीयमेखलायां परिधिपरिस्तरणार्थं अन्तरं रक्षेत् । चतुरंशैर्विस्तृता आयता च द्व्यंशेनोन्नता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुरस्रा नामवर्णैरलंकृता नाभिः कुण्डमध्ये निवेश्या। एवं च कुण्डमेखलायोनिनालनाभियुक्तं साङ्गं सम्पन्नम्। गृहवेदी तु ईशान्यां हस्तोन्नता हस्तविस्तृता चतुरस्रा वप्रत्रययुता कार्या। तस्याः प्रथमो वप्रो द्व्यङ्गुलोच्छ्रायः। द्वितीयतृतीयौ अङ्गुलोच्छ्रायौ त्रयोऽपि द्व्यङ्गुलविस्ताराः कार्याः ॥

अथ तडागोत्सर्गप्रयोगः—

जलाशयस्योदगैशान्यप्राक्पश्चिमान्यतमदिक्समीपे एवं प्रागुदक् प्रवणे सुसमे भूभागे शुद्धदेशे षोडशहस्तं मण्डपं विधाय तन्मध्ये प्रधानवेदी हस्तोन्नता आयामविस्तारेण चतुर्हस्तमात्रा समचतुरस्रा कार्या। कुण्डादीशान्यां ग्रहवेदी कार्या। आग्नेय्यां योगिनीपीठम्। वायव्यां क्षेत्रपालपीठम्। तानि पीठानि हस्तमात्राणीति। मध्यवेद्या उत्तरतः पश्चिमतो वा कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय उत्सर्गारम्भदिनात्पूर्वदिने वा यजमानो यथाशक्ति प्रायश्चितं कृत्वा निरामिषं सकृद् भुञ्जीत ॥ इति प्रथमदिनकृत्यम् ॥ ततः द्वितीयदिने कृतस्नानः शुचिः शुक्लवासाः सभार्य्यः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वस्ति न इन्द्रो०। देशकालौ०। गोत्रः शर्म्मा मम यानि ब्रह्महत्याभ्रूणहात्यमहापापोपपापानि तत्सकलपापक्षयार्थं कोटिगुणसर्वयज्ञतपोदानतीर्थवेदपुराणपुण्यफलैकविंशतिमातृपितापत्नीकुलत्रयतारणवर्षकोटिसहस्रावच्छिन्नविष्णुलोकप्राप्तिकामः इष्टकामाभिवाञ्छितस्य जलतडागस्य कूपस्य जलाशयस्य वा करणसमये अन्यथाकरणप्राणिवधादिजन्यदोषपरिहारपूर्वकं आत्मसहितसर्वलोकभोगार्हत्वसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वाप्युत्सर्गकूपोत्सर्गतडागोत्सर्गपुष्करिणीजलाशयोत्सर्गमहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्य्यादिवरणं कुर्यात्। तद्यथा–यजमानः प्राङ्मुख उपविश्य उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य गन्धादिना सम्पूज्य वृणुयात्। अमुकगोत्रं अमुकप्रवरं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि विहितकर्म कर्तुं आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। ततो यजमानः सव्यहस्तेन ब्राह्मणदक्षिणजान्वालभ्य दक्षिणहस्तेन यवाक्षतपूगीफलं ब्राह्मणदक्षिणहस्ते दद्यात्। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। व्रतेन दीक्षा० इति प्रार्थना। आचार्यस्तु० एवं ब्रह्माणं सदस्यं गाणपत्यं उपद्रष्टारं चतुरो यथासम्भवमृत्विजश्च वृत्वा चतुरो द्वारपालान् वृणुयात्। अमुकगोत्रो० ऋग्वेदान्तर्गतशाकलशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि पूर्वद्वारशान्तिसूक्तजपार्थत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मिन्। **ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रो सोमदैवतः। अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखे कुरु॥ १॥** अमुकगोत्रो० शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनं अमुक० दक्षिणद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। **कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः। काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखे कुरु॥२॥** एवं अमुकगोत्रो० सामवेदान्तर्गतकौथुमिशाखाध्यायिनं अमुक० पश्चिमद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। **सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः शक्रदैवतः। भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखे कुरु॥३॥** एवं अमुकगोत्रो० अथर्ववेदान्तर्गतकौशिकशाखाध्यायिनं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुक० उत्तरद्वारे शान्तिसूक्तजपार्थत्वेनत्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः। वैशम्पायन विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखे कुरु॥४॥ अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं अयुतादियथासंख्यं गणेशमन्त्रजपार्थं त्वां वृणे। वृतोऽस्मि॥ तान् मधुपर्कादिना सम्पूजयेत्। अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि सर्वान्वृतान् आचार्य्यादीन् ब्राह्मणान् मधुपर्केणार्चयिष्ये। इति सङ्कल्प्य। प्राग्वोदङ्मुखस्थितान् ऋत्विजः प्रति उदक्प्राङ्मुखो वा तिष्ठन्यजमानः—साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्। ॐ अर्चय इति ऋत्विजो ब्रूयुः। ततोऽन्यः—विष्टरा विष्टरा विष्टराः। ततो यजमानः—विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम्। ऋत्विजः—विष्टरान् प्रतिगृह्णीमः। इति सर्वे प्रतिगृह्य। उपवेशनस्थाने निधाय। वर्ष्मोऽस्मि० इत्युपविशेयुः। पुनरन्यः—पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि। ततो यजमानः—पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम्। ऋत्विजः—पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः। इति दक्षिणं पादं प्रक्षालयेयुः। विराजो दोह० इति मन्त्रेण। एतेनैव दक्षिणहस्तस्थधारया सव्यम्। पुनरन्यः—विष्टराः ३। यजमानः—विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम्। ऋत्विजः—विष्टरान् प्रतिगृह्णीमः इति पूर्ववत् प्रतिग्रहः, तूष्णीं पादनिक्षेपस्थाने निधाय मन्त्रेण युगपत्पादनिक्षेपं कुर्युः। वर्ष्मोऽस्मि०। पुनरन्यः—अर्घाः अर्घाः अर्घाः। यजमानः—अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम्। ऋत्विजः—आपस्थयुष्मा० अर्घान् प्रतिगृह्णीमः। अञ्जलिना प्रतिगृह्य शिरसा प्रत्युद्यम्य समुद्रं वः प्र०। इत्यर्घं स्वाभिमुखं निनयेयुः। ततोऽन्यः—आचमनीयान्याचमनीयान्याचमनीयानि। यजमानः—आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम्। ऋत्विजः—आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः। आमागन्यशसा०। इति सकृदाचम्य पुनः आचमनं कुर्युः॥ २॥ पुनरन्यः—मधुपर्का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मधुपर्का मधुपर्काः। यजमानः—मधुपर्काः प्रतिगृह्यन्ताम्। ततो यथोक्तमधुपर्कं प्रदीयमानमर्घयितुर्हस्तस्थमीक्षयेयुः। मित्रस्य त्वा०। ऋत्विजः—देवस्य त्वा०। मधुपर्कान् प्रतिगृह्णीमः। सव्यहस्ते दक्षिणहस्तानामिकया त्रिरालोडयन्ति। नमः श्यावा०, इति प्रत्यालोडने अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां तूष्णीं भूमौ निरसनम्। पात्रं भूमौ निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां त्रिः प्राश्नन्ति। यन्मधुनो० ॥ ३ ॥ अथ प्राच्यामसञ्चरे निनयेयुः। आचम्य अङ्गस्पर्शनम्। वाङ् मे आस्येऽस्तु। इत्यङ्गुल्यग्रैर्मुखम्। नसोर्मे प्राणोऽस्तु। इति तर्ज्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां नासिकयोर्युगपत्। अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। इत्यनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां नेत्रयोर्युगपत्। कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। इति दक्षिणोत्तरयोः कर्णयोः। बाह्वोर्मे बलमस्तु। इति बाह्वोः। ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। इति युगपदूर्वोर्हस्तेन। अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वामे सह सन्तु। इति हस्तद्वयेन सर्वाङ्गेषु। ततो यजमानो गावो गावो गावः, इत्यर्घ्यान्प्रत्याह। ततोऽर्घ्याः—माता रुद्राणाम्०। अस्माकं चामुकशर्मणो यजमानस्य उभयेषां पाप्माहतः। उत्सृजत तृणान्यत्तु। अस्य ऋत्विग्वरणकर्मणः साङ्गतासिद्धये गोनिष्क्रयभूतं दक्षिणामाचार्यादिभ्यः सर्वेभ्य ऋत्विग्भ्यश्च युष्मभ्यं सम्प्रददे। ततः पूजनम्। एतानि वासांसि अमुकगोत्रेभ्योऽमुकशर्मभ्यो युष्मभ्यमहं सम्प्रददे। परिधास्यै०, इति वाससी। आचम्य। यज्ञोपवीतं परमं० इति यज्ञोपवीतम्। आचम्य यज्ञोपवीतं परमं० इति यज्ञोपवीतम्। आचम्य। यशसा मा०। इति उत्तरीयम्। आचम्य सुचक्षा २, इति चन्दनम्। अक्षन्नमी०, इति अक्षतान्। या आहरज्जम०, इति पुष्पमालाम्। यद्यशोऽप्सरसा०, इति धारणम्। अलङ्करणे०, इति अलङ्करणम्। धूरसि धूर्व०, इति धूपम्। अग्निर्ज्योति०, इति दीपम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नास्याऽआसी०, इति नैवेद्यम्। जलपात्रं च यत्पुरुषेण०, पूगीफलं ताम्बूलञ्च। हिरण्यगर्भ०, इति दक्षिणाम्। इत्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः ॥ देवानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम् ॥ १ ॥ जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः शुभैः। देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥ २ ॥ येषां देहे स्थिता देवाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। ते मां रक्षन्तु सततं जपयज्ञे व्यवस्थिताः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणं जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। येषां वाक्योदकेनैव शुध्यन्ति मलिनो जनाः ॥ ४ ॥ पावनाःसर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः। सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥५॥ श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा। यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नर-द्रुमाः ॥ ६ ॥ अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत् कल्पद्रुमसमाशिषः। यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थस्थिरबुद्धयः ॥ ७ ॥ यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः। मम यज्ञे जपे पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥ ८ ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ ९ ॥ अदुष्टभाषिण-स्सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति सम्प्रार्थ्य तान्ब्रूयाद्यथावत्क्रियतां विधिः । 'ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखे भवान् । यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥' ततः मण्डपपूजाद्युपसंयुक्तसम्भारान् संभृत्य शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनः सपत्नीको यजमानः आचार्यादिसमन्वितो गन्धमाल्यफलादिभिरर्चितकलशहस्तो मङ्गलवाद्यघोषेण सुवासिनीमङ्गलगीतसहितो—भद्रं कर्णेभि० । देवाः स्वस्ति प्रकुर्वन्तु सगणाः सायुधास्तथा । किन्नरा देवगन्धर्वाः साप्सराः सविनायकाः ॥ कल्याणं च प्रकुर्वन्तु पातालस्थसुराः शुभाः । नानेध्मसङ्घसंयुक्तं षोडशस्तम्भसंयुतम् ॥ ननापुष्पफलोपेतं महामण्डपशोभितम् । देवानां जयनार्थाय शुभार्थी प्रविशाम्यहम् ॥ इति मन्त्रेण महामण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण मण्डपान्तः प्रविशेत् । आचार्यादयोऽपि मण्डपं प्रविशेयुः । ततो यजमानो वेदीमध्यत ईशानभागे कुम्भं स्थापयेत् । ततः आचार्योऽग्न्यायतनात् पश्चिमतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य अस्मिन् कर्मणि यजमानेन वृतोऽहं आचार्यकर्म करिष्ये । यदत्र संस्थितमित्यादिना सर्षपान् सर्वतः मण्डपान्तं विकिरेत् । ततः आपो हि ष्ठेतितृचेन पञ्चगव्येन कुशैः मण्डपान्तः सर्वत्र प्रोक्षयेत् । गोशरीरात् समुद्भूतैः पञ्चगव्यैः सुपावनैः । प्रोक्षणं वै करिष्यामि सुरार्थं मण्डपस्य च ॥ मण्डपाभ्यन्तरे देवाः सदेव्यः सगणाधिपाः । तस्मात् संप्रोक्षणार्थेन संतुष्टा वरदाः सदा ॥ २ ॥ इति द्वितीयदिनकृत्यम् ॥

अथ तृतीयदिने—मण्डपान्तर्नैर्ऋत्यां हस्तमितवेद्यां शतपदं वास्तुमण्डलं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विलिख्य चतुरश्शङ्कुरोपणं कृत्वा । देशकालौ सं० तड़ागोत्सर्गाङ्गभूतं वास्तुपीठदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये । ततो वेद्याः चतुष्कोणेषु शङ्कुरोपणम् । विशन्तु भूत० मण्डपेऽत्राव० ॥ ४ ॥ ततः शङ्कुपार्श्वेषु माषभक्तबलीन्दद्यात् । अग्निभ्योऽप्यथ० नैर्ऋत्याधिप० ॥ २ ॥ नमोऽस्तु वायु० ॥ ३ ॥ रुद्रेभ्यश्चैव० ॥ ४ ॥ शान्त्यादिरेखाकरणं पूजनं च । शिख्यादिदेवता आवाह्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमस्ते वासुदेवेश सर्वदेवसमन्वित । शान्तिं कुरु सुखं देहि मण्डपं रक्ष वै मुदा ॥ ततो मण्डलादीशान्यां कलशं संस्थाप्य तत्र वरुणमावाह्य सम्पूज्य । शिख्यादि-मण्डलदेवताभ्यः नाममन्त्रैः पायसेन बलीन्दद्यात् । सर्वेभ्यः काञ्चनं दद्यात् । ब्रह्मणे गां पयस्विनीम् । ततः प्राचीमारभ्य रक्षोघ्नपवमानमन्त्रैः त्रिसूत्र्या मण्डपं वेष्टयेत् । कृणुष्वपाजःशत्रून् पुनन्तु मा० रयीणाम् । पूर्वां रक्षेद्देवराज आग्नेयीमग्निदेवता । दक्षिणे तु यमो रक्षेन्निर्ऋतिं निर्ऋतोऽवतु ॥ पश्चिमां वरुणो रक्षेद्वायवीं वायुदेवता । कुबेर-स्तूत्तरां रक्षेदीशानीमीशदेवता ॥ दिशोऽन्तरालेऽवतु सर्वदेवो नारायणो ब्रह्मशिवाभियुक्तः । त्रितन्तुयुक्तैः रहणैः सुसूत्रैः सुवेष्टयाम्येव महद्धि मण्डपम् ॥ ३ ॥ ततस्तथैव दुग्धपूर्णजलपूर्णकुम्भाभ्यां च तेनैव सूक्तद्वयेन सततं धाराद्वयं मण्डपपरितो भ्रामयेत् । सर्वे समुद्राः सरितो रक्षन्तु राक्षसैर्गणैः । सुराधिष्ठानमेतत्तु धाराभ्यां जलदुग्धयोः ॥ इति वास्तुपूजनम् ।

॥१४७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मण्डपपूजा—पूजासम्भारान् हस्ते धारयित्वा करिष्यमाणतडागोत्सर्गाङ्ग-भूतमण्डपदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये। मध्यवेदिकाया आग्नेयकोणे स्थूणां वसुदायै नमः वसुदामावाहयामि। इत्यालभ्य वसुदायै नमः, इति गन्धादिना पूजयेत्। ततः प्रादक्षिण्येन भद्रायै नमः भद्राम् ॥ २ ॥ आदित्यै नमः अदितिम्० ॥ ३ ॥ नन्दायै नमः नन्दाम्० ॥ ४ ॥ मण्डपाग्नेयकोणे भूत्यै नमः भूतिम्० ॥१॥ ततः प्रदक्षिणक्रमेण सरस्वत्यै० सरस्वतीम्० ॥२॥ पूर्वसन्ध्यायै० पूर्वसन्ध्याम्० ॥ ३ ॥ मध्यसन्ध्यायै० मध्यसन्ध्याम् ० ॥ पश्चिमसन्ध्यायै० पश्चिमसन्ध्याम् ॥५॥ गायत्र्यै० गायत्रीम् ० ॥६॥ सावित्र्यै० सावित्रीम् ॥७॥ बृहत्यै० बृहतीम्० ॥८॥ अदितये० अदितिम्० ॥ ९ ॥ विनतायै० विनताम्० ॥ १० ॥ पौर्णमास्यै० पौर्णमासीम्० ॥ ११ ॥ सिनीवाल्यै० सिनीवालीम्० ॥ १२ ॥ इति षोडशस्थूणां स्पृष्ट्वा पूजयेत्। नागमात्रे नमः नागमातरम्०। इति बलिकाकाष्ठानि पूजयेत्। सर्पेभ्यो नमः सर्पान्०। इति शाखोद्बन्धनानि पूजयेत्। एतावत् कर्म मण्डपान्तः स्थित्वा कर्तव्यम्। ततः पश्चिमद्वारेण बहिर्निर्गत्य पूर्वादिगादिद्वारतोरणपूजामारभेत। तत्र प्राच्यां पूर्वतोरणात् प्राङ्मुख उपविश्य सुदृढतोरणम् आवा०। यज्ञीयवृक्षन्यग्रोधतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वान् विघ्नान्निवारय। सुदृढतोरणाय नमः इति गन्धादिना पूजयेत्। अथ (त्रिशूलशृङ्गेषु) शङ्खादिषु प्रादक्षिण्येन। इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥ धात्रे० धातरं० ॥ भगाय० भगम्० ॥ इति पूजयेत्। वामदक्षिणद्वारशाखयोः। ध्रुवाय० ध्रुवं० ॥ अध्वराय० अध्वरम्० ॥ ध्रुवाध्वराभ्यां नमः इति पूजयेत्। शाखामूलयोर्धान्यराश्युपरि मही द्यौरित्यादिना कलशौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिष्ठाप्य । उदकूसंस्थं० प्रशान्ताय० प्रशान्तं० ॥ शिशिराय० शिशिरं० ॥ प्रशान्तशिशिराभ्यां नमः इति गन्धादिना पूजयेत् ॥ ततो द्वारदेशे कलशं संस्थाप्य सम्पूज्य तत्र इन्द्राय नमः इन्द्रं० । इत्यावाह्य गन्धादिना पूजयेन्नमस्कृत्य । इन्द्रायाहि चित्रभानो सुता इमेत्वापवः । अण्डवीभिस्तना पूता सः ॥ पीतां पताकां पीतं च ध्वजं हाटकसन्निभम् । आलभामि सुरेशाय शचीयुक्ताय वज्रिणे ॥ इति पीतध्वजपताकां चालभ्य । त्रातारमिन्द्र० । इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम् । शचीपतेः प्रीतयेऽहं स्थापयामि सुखासये ॥ इति मण्डपपूर्वदेशे विन्यसेत् । ध्वजारचतुष्कोणाः पताकास्त्रिकोणाः कार्याः । इमं माषबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते । यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं घृतौदनमाषभक्तबलिं समर्पयामि । कलशाग्रे बलिं दद्यात् । अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् । ततः आचम्य 'अग्निमीडे' इति ऋग्वेदीयब्राह्मणं प्रत्येकं गन्धादिना पूजयेत् । कर्मनिष्ठास्तपोयुक्ता ब्राह्मणाः वेदपारगाः । जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजः ॥

अथाग्नेयकोणे गत्वा--तत्र पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य अग्नये० अग्निं० इत्यावाह्य पूजयेत् ॥ अग्निं दूतं०' पताकामग्नये रक्तां ध्वजं चैवाग्निसन्निभम् । स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि ॥१४८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरानन ॥ इति रक्तध्वजपताकालम्भः । ॐ'त्वन्नो अग्ने०' तव, इमां पताकां रक्ताञ्च ध्वजं रक्तं सुशोभनम् । स्वाहापते प्रीतयेऽहं स्थापयामि सुखाप्तये ॥ इति गर्ते रोपयेत् । आज्यौदनं बलिं चेमं गृहाणाग्ने हुताशन । 'यज्ञं सं० । अग्नये साङ्गाय० । एतं घृतौदनबलिं स० ॥ तत आचम्य ततो दक्षिणे गत्वा । सुभद्रतोरणम् । औदुम्बरवृक्षतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय । इति उपरि पूजयेत् ॥ शङ्खादिषु प्रदक्षिणक्रमेण । पूष्णे० पूषणम्० ॥ मित्राय० मित्रम्० ॥ वरुणाय० वरुणम्० ॥ इति पूजयेत् । द्वारशाखयोः—सोमाय० सोमम् ॥ अद्भ्यो० अपः ॥ अप्सोमाभ्यां नमः, इति पूजयेत् । शाखामूलयोः—पर्जन्याय० पर्जन्यम्० ॥ अशोकाय० अशोकम् ॥ पर्जन्यासोकाभ्यां नमः, इति पूजयेत् ततो द्वारदेशे कलशं संस्थाप्य ॥ यमाय० यमम्० ॥ इत्यावाह्य सम्पूज्य नमस्कृत्य

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्यत्वा तपसे देवस्य त्वा तपसे । देवस्यत्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्या सर्ट स्पृशस्या हि । अर्चिरसि शोचिरसि-तपोसि । कृष्णवर्णां पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा । यमाय आलभामीह निहन्त्रे कर्मसाक्षिणे ॥

इति कृष्णध्वजपताकालम्भः । यमाय त्वांगि० । इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम् । यम देव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर ॥ इति गर्ते रोपणम् । इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम । यज्ञ० । यमाय साङ्गाय० एतं माषभक्तबलिं स० । तत आचम्य इषे त्वोर्जेत्वावायवस्थदेवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायदुध्वमघ्न्याऽ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवऽअयक्ष्मामावस्तेनऽईशतमाघशर्ट० सोध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ इति मन्त्रेण यजुर्वेदीयब्राह्मणं सम्पूज्य प्रार्थयेत् । कर्मनिष्ठ० ॥ ३ ॥ अथ नैर्ऋत्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तत्र निर्ऋतये० निर्ऋतिम्० । इत्यावाह्य पूजयेत् । यन्ते देवी निर्ऋतिराबबन्धपाशंगवा स्वविचृतम् । तन्तविष्याम्यायुषो नमध्यादथैतम्पितुद्धिप्रसूतः ॥ पताकां निर्ऋतीशाय नीलां नीलमयध्वजाम् । पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ॥ इति नीलध्वजपताकालम्भनम् । असुन्वन्तसुम० । प्रीत्यर्थं निर्ऋतयेऽहं पताकां नीलसन्निभाम् । नीलवर्णध्वजं चैव स्थापयामि शुभाप्तये ॥ इति ध्वजपताकारोपणम् । कृष्णाव्रीह्युद्भवं चेमं घृताक्तं बलिमुत्तमम् ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय गृहाण त्वं च निर्ऋते निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय एतं कृष्णव्रीह्यन्तसदीपं घृताक्तबलिं स० । तत० आचम्य पश्चिमेगत्वा सुभीमतोरणाय० सुभीमतोरणम्० । अश्वत्थतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय । इति गन्धादिना पूजयेत् । अथ शङ्खादिषु । अर्यम्णे० अर्यमणम्० ॥ अंशवे० अंशुम्० ॥ विवस्वते० ॥ विवस्वन्तम्० ॥ इति पूजयेत् । द्वारशाखयोः– अनिलाय० अनिलम्० ॥ अनलाय० अनलम्० ॥ अनिलानलाभ्यां नमः, इति पूजयेत् । शाखामूलयोर्धान्यपुञ्जयोः कुम्भौ निधाय । भूतसञ्जीवनाय० भूतसञ्जीवनम्० ॥ अमृताय० अमृतम्० ॥ भूतसञ्जीवनामृताभ्यां नमः इति पूजयेत् । तत्र द्वारदेशे कलशं संस्थाप्य वरुणाय० वरुणम्० इत्यावाह्य सम्पूज्य नमस्कृत्य । तत्त्वायामि० । श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं तथा । वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ॥ इति श्वेतध्वजपताकालम्भः । इमं मे० । सितां पताकां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुभदां शुभ्रवर्णध्वजं वरम्। स्थापयामि जलेशाय प्रीत्यर्थमहमक्षयम् ।। इति गर्ते रोपणम् ।। नवनीतौदनं देव गृहाण बलये प्रभो। यज्ञसं०। वरुणाय साङ्गाय एतन्नवनीतौदनं बलिं स०। ततः आचम्य अग्नऽआया०। इति सामवेदीयब्राह्मणं पूजयेत्। कर्मनिष्ठ० ।। अथ वायव्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य वायवे० वायुम्० इत्यावाह्य गन्धादिना पूजयेत्। ॐ वायो येते०। पताकां वायवीं धूम्रां ध्वजं धूम्रमयं तथा। आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय सदैव हि ।। इति धूम्रध्वजपताकालम्भः। वत वायो बृहस्पते त्वष्टुर्जामि तरद्भुत। आवा ṭं स्यावृणीमहे। धूम्रवर्णां पताकां च धूम्रवर्णमयं ध्वजम्। समीरणप्रीतयेऽहं स्थापयामि जवौजस। इति गर्ते रोपणम्। इमं यवौदनं वायो बलिं दत्तं गृहाण भो। यज्ञसं०। वायवे साङ्गाय० एतं यवौदनबलिं स०। ततः आचम्य उत्तरे गत्वा। सुप्रभतोरणाय० सुप्रभतोरणम्०। प्लक्षतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय। इति पूजयेत्। शङ्खादिषु। त्वष्ट्रे० त्वष्टारम्०। सवित्रे० सवितारम्० ।। विष्णवे० विष्णुम्० इति पूजयेत्। द्वारशाखयोः—प्रत्यूषाय० प्रत्यूषम्० ।। प्रभासाय० प्रभासम्० ।। इति पूजयेत्। शाखामूलयोः कुम्भौ निधाय। धनदाय० धनदम् ।। श्रीप्रदाय० श्रीप्रदम् ।। धनदश्रीप्रदाभ्यां नमः इति पूजयेत्। तत्र द्वारदेशे पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य। सोमाय० सोमम्०। इत्यावाह्य सम्पूज्य नमस्कृत्य। सोमो धेनु ṭं सोमऽअर्वन्त मा ṭं सोमोवीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्य ṭ. सभेयं पितृश्रवणां यो ददाशदस्मै ।। हरिद्वर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्। कुबेरायालभाम्येवं धनदाय सदार्थतः। इति हरितध्वजपताकालम्भः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वय टं सोम० । पताकां तु हरिद्वर्णां हरिद्वर्णं ध्वजं शुभम् । स्थापयामि कुबेराय प्रीत्यर्थं वसुदायकम् ॥ इति गर्ते रोपयेत् । प्रैय्यङ्गवं बलिं चेमं गृहाण त्वं धनेश्वर । यज्ञ संर० ॥ सोमाय साङ्गाय० एतं प्रैयंगवौदनबलिं स० । तत आचम्य शन्नो देवीः० । इति अथर्ववेदीयं ब्राह्मणं पूजयेत् । "कर्मनिष्ठ०" ॥ अथैशान्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तत्र ईशानाय० ईशानम्० इत्यावाह्य पूजयेत् । नमः शम्भवाय च० । ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम् । आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ॥ इति श्वेतध्वजपताकालम्भः । तमीशानं० । श्वेतां पताकां सुदृढं ध्वजं शुभविनिर्मितम् । स्थापयामि महेशाय सर्वानन्दकराय च ॥ इति गेंत रोपणम् । गवेधुकं बलिंचेमं गृहाणेशान शङ्कर । यज्ञसं० ॥ ईशानाय साङ्गाय० एतं गवेधुकौदनं बलिं स० । तत० आचम्य नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये गत्वा । पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तत्र अनन्ताय० अनन्तम्० इत्यावाह्य पूजयेत् । नमोऽस्तु सर्पेभ्यः० । मेघवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं तथा । आलभामि ह्यनन्ताय लोकानां सुखदाय च ॥ इति श्वेतध्वजपताकालम्भः । तद्विष्णोः पर० । घनवर्णां पताकां वै ध्वजं सितविभूषितम् । स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ॥ इति गर्ते रोपणम् । इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्त पन्नग ॥ यज्ञसंरक्ष० ॥ अनन्ताय साङ्गाय० एतं पायसबलिं स० । तत आचम्य ईशानपूर्वयोर्मध्ये गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तत्र ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० इत्यावाह्य सम्पूजयेत् । यद्देवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देव हेडनं देवासश्च कृमा व्वयम्। सूर्योमा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ँ हसः।
पञ्चवर्णां पताकां च पञ्चवर्णं ध्वजं तथा। आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्तश-
क्तये ॥ इति रक्तध्वजपताकालम्भः। ब्रह्मयज्ञानं० ॥ इमां पताकां सुदृढां रक्तवर्णमयं
ध्वजम्। स्थापयामि सुरेशाय ब्रह्मणे प्रीयतां नमः ॥ इति गर्ते रोपणम्। इमं पाय-
सान्नबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन। यज्ञस्य परिरक्षायै सन्तुष्टो वरदो भव ॥ ब्रह्मणे साङ्गाय०
एतं पायसबलिं स०। ततः आचम्य प्रधानवेद्याः ईशानकोणस्थितस्तम्भान् अरत्निप्रमितां भूमिं
त्यक्त्वा करद्वयप्रमितं खातं विधाय रोपयेत् (अथवा मण्डपमध्ये) षोडशहस्तवंशदण्डाग्रपोतं
दशहस्तदीर्घं मूलभागे त्रिहस्तविस्तृतं महाध्वजं पञ्चवर्णवस्त्रप्रान्ते चामरक्षुद्रघण्टिकायुतं उच्छ्रयेत्।
इमं विचित्रवर्णन्तु हस्तत्रयसुविस्तृतम् ॥ महाध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥ इन्द्रस्य वृष्णो०।
अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकम्। महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने॥
इति मन्त्रेण रोपयेत्। तत्र महाध्वजाय नमः। इति मन्त्रेण पूजयेत्। ततः मण्डपाद्बहिः प्राच्यां
गत्वा। अक्षतपुञ्जे गणानान्त्वा०। गणेशाय० गणेशम्०। इति सम्पूज्य। गणेशाय साङ्गाय०
एतं सदीपं माषभक्तबलिं स० ॥१॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यः०। इति मण्डपाद्बहिर्दिग्विदिक्षु अक्षतपु-
ञ्जोपरि रुद्रेभ्यो० रुद्रान् ०। इति संस्थाप्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य। रुद्रेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवा-
रेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतं सदीपं घृतौदनबलिं समर्पयामि। भो रुद्र! इमं बलिं गृहाण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मम सँकु० । तत आचम्य मण्डपाद्वहिरीशान्यां पलाशपत्रादौ विपुलं माषभक्तबलिं निधाय कुङ्कुमादिना विचित्रं कृत्वा गन्धादिनाऽभ्यर्च्य प्रार्थयेत् । ये केचिदिह यज्ञेऽस्मिन् आगता बलिकाङ्क्षिणः । तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्वा पुनः पुनः ॥ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः माषभक्तबलिरयमुपतिष्ठताम् । इति बलिं दद्यात् । ततो यजमानः साचार्यः सऋत्विक् प्रक्षालितपादपाणिराचान्तःप्राग् द्वारेण मण्डपान्तः प्रविशेत् । आचार्यादयोऽपि प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविशेयुः।इति मण्डपपूजा॥ ततो यजमानो दक्षिणद्वारे पश्चिमतः उपविश्य सविनयं प्रेषयेत्।भो गुर्वादयो यथाविहितं कर्म कुरुध्वम् । इति यजमानस्य गुर्वादिभ्य कर्मकरणेऽनुज्ञादानम् । अथ गुरुर्महावेद्यां वारुणं मण्डलं लिखेत् । तद्यथा—जलाशयादिपूर्तेषु तुलादानादिकेष्वपि । पद्मगर्भं षोडशारं चक्रं वारुणमण्डलम् ॥ प्रोक्तं तत्पञ्चभिर्वर्णैर्वेद्यारम्भं लिखेत् सुधीः । विलेखने प्रकारस्तु समासेन प्रदर्श्यंते ॥ चतुरस्रं समं क्षेत्रं त्रिहस्तंसाधयेत्ततः । प्रागुदक्सूत्रसम्पातैरष्टधा विभजेत्समम् ॥ एवं तत्र च कोष्ठानि चतुष्षष्टिर्भवन्ति हि ॥ तदेकैकं भवेत्कोष्ठं चतुरस्र नवाङ्गुलम् ॥ मध्ये षोडशकोष्ठानां सूत्रसम्पातमार्जनम् ॥ कार्यं तन्मध्यतो लेख्यं मण्डलानां चतुष्टयम् ॥५॥ चतुरङ्गुलमाद्यं स्यादष्टाङ्गुलमथापरम् । चतुर्विंशाङ्गुलं वृत्तं तृतीयं परिकल्पयेत्॥६॥ षड्विंशत्यङ्गुलं तुर्यं तेषां प्रथममण्डले । कर्णिकापीतवर्णस्य द्वितीये शुभ्रवर्णके ॥ ७ ॥ मण्डपे पीतमूलानि रक्तमध्यानि धीमता । शुभ्राग्राणि विलेख्यानि केसराणि च षोडश ॥ ८ ॥ तृतीये मण्डले पद्म स्याष्टौ पत्राणि चालिखेत् । त्रीन्भागान् मूलतस्तेषां शुभ्रवर्णेन पूरयेत् ॥ ९ ॥ चतु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्थभागमग्रस्थं रक्तवर्णेन पूरयेत् । कृष्णेन रजसा पद्मपत्रसन्धीन् प्रपूरयेत् ॥ १० ॥ रेखामङ्गुलिमात्रां च पद्मस्य परितः स्थिताम् । कुर्यात्तद्बाह्यतःशिष्टे चतुर्थे मण्डले लिखेत् ॥ ११ ॥ षोडशारान् यवाकारान् कृष्णपीतारुणोज्ज्वलैः । तद्वहिश्चक्रधाराख्या लेखाः पञ्च लिखेत् क्रमात् ॥१२॥ श्वेता पीतारुणा कृष्णा हरिता च सुवर्तुलाः । मध्यस्य चतुरस्रस्य क्षेत्रं पदविशिष्टकम् ॥ अराणामन्तरायं च यथाशोभं प्रपूरयेत् । कर्णिकाकेसराणां च मध्यपीठस्य वाह्यतः॥ एकाङ्गुलां सितां रेखां कुर्यादित्यपरे जगुः॥ बाह्यपङ्क्तौ तु पूर्वस्यां मध्यकोष्टे चतुष्टयम् ॥ १५ ॥ तदधः स्थद्वयं चेति षट्कोष्ठं द्वारसंज्ञकम् । दक्षिणादिषु दिक्ष्वेवं कुर्याद्द्वारचयं ततः ॥ १६ ॥ क्रमात् पीतासितश्वेतहरितैश्चैतानि पूरयेत् । कोष्ठकोणेषु चैकैकं कपोलकमितीरितम् ॥ १७ ॥ रक्तनीलसितश्वेतैः पूरयेदग्निभागतः । अवशिष्टानि कोष्ठानि पञ्च पञ्च विदिक्षु च ॥ १८ ॥ पीठपादाश्च ते ज्ञेया आग्नेयादिक्रमेण तान् । सितेन रजसा रक्तपीतकृष्णैः प्रपूरयेत् ॥ लिखेदवधिभूतां च श्वेतां रेखां समन्ततः । तद्वहिर्मण्डलस्यैव समन्तात् पूर्वतः क्रमात् ॥ २० ॥ वज्रं शक्तिं तथा दष्टं खड्गं पाशं ध्वजं गदाम् । शूलं तद्वामतश्चक्रं दक्षिणे पद्ममालिखेत् ॥ २१ ॥ एवं वारुणमण्डलं विलिख्य । तत आचार्यो वेद्यामुपरि फलपुष्पोपशोभितं पञ्चवर्णकं वितानं बध्नीयात् । ततो यजमानोऽग्न्यायतनाद् दक्षिणतः स्वासने उदङ्मुख उपविशेत् । ततो द्वारपालान् पठध्वमिति शान्तिसूक्तजपे नियोजयेत् । ते च कर्मसमाप्तिपर्यन्तं स्वशाखीयसूक्तादिजपं कुर्युः । आचार्यस्तु कुण्डपश्चिमत उपविश्य आचम्य प्राणा० । अस्मिन् तडागोत्सर्गाख्यकर्मणि अग्निप्रतिष्ठा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पनं करिष्ये। तदङ्गतया विहितकुण्डसंमार्जनमेखलायोनिदेवतास्थापनपूजनादि करिष्ये। अग्न्याय-तनं संमार्ज्य कुशोदकेन प्रोक्ष्य। कुण्डस्योपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायाम्—"इदं विष्णु०। विष्णवे० विष्णुम्० ॥ १ ॥ मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम्—'ब्रह्मयज्ञानं०। ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० ॥ २ ॥ अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम्—'नमस्ते रुद्र०। रुद्राय० रुद्रम्० ॥ ३ ॥ योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायाम्—'अम्बेऽअम्बिके०। गौर्य्यै० गौरीम्० ॥ ४ ॥ इत्यावाह्य 'मनोजूति०। आवाहितविष्ण्वादिदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। इति प्रतिष्ठाप्य। आवाहितविष्ण्वादिदेवताभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। विष्ण्वादिदेवताः सर्वाः मेखलादौ स्थिराः सदा। प्रसीदन्तु सुगृह्णन्तु समार्चाः सन्तु वै शुभाः ॥ ततः कुण्डपञ्चभूसंस्करान् विधायाग्नि स्थापयेत्। ब्रह्मक्षत्रियविशां गृहात् लौकिकाग्निं कांस्यादिपात्रेणानीय कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां स्थापयेत्। आचार्यस्तमग्निं गृहीत्वा आग्नेयकोणमार्गेण कुण्डमध्ये नीत्वाअग्निं दूतम्०। इति मन्त्रान्ते बलिवर्धननामानमग्निमुपसमाधे। इत्यग्निं कुण्डे स्वात्माभिमुखं निदध्यात्। चत्वारि शृङ्गाः०। चतुश्शृङ्गस्त्रिपादग्निर्द्विमूर्धः सप्तजिह्वकः ॥ सप्तहस्तस्त्रिधा बद्धो महादेवः प्रतिष्ठितः। इत्यग्निमावाह्य। मनोजूति०। बलिवर्धननामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्। रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्नेत्रं च चतुश्श्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥१॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। स्रुवं स्रुचिं च शक्तिं च अक्षमालां च दक्षिणे ॥ तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके। बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥ ३ ॥ दक्षिणं च चतु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरं मुखम् । द्वादशं कोटिमूर्त्याख्यं पञ्चाशत्कलया युतम् ॥ ४ ॥ स्वाहास्वधावषट्-कारैरङ्कितं मेषवाहनम् । रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तमासनमास्थितम् ॥ ५ ॥ बलिवर्धननामानमग्नि-मावाहयाम्यहम् । त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः ॥ ६ ॥ आगच्छ भगवन्देव यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौ भव ॥ ततो मण्डपेशानभागे वेद्यां ग्रहानधिदेवताप्रत्यधिदेवताविनायकादीन् दशदिक्पा-लांश्चावाह्य सम्पूजयेत् । अस्मिन् तडागोत्सर्गाख्ये कर्मणि आदित्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च करिष्ये, इति सङ्कल्प्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । यत्कृतं पूजनं देव भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् । परिगृह्णन्तु तत् सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः ॥ आदित्यादिग्रहाः सर्वे नानावर्णाः पृथग्विधाः । सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ॥ ततो ग्रहवेदीशानदिग्भागे अव्रणं कलशं बहिर्दध्यक्षतविभूषितं पूर्व-वत्संस्थाप्य तस्मिन् असंख्यातेति रुद्रं सम्पूज्य । ततो मण्डलोपरि पञ्चवर्णवितानं बध्नीयात् । इदं फलपुष्पमालोपशोभितं पञ्चवर्णवितानं बृहस्पतिदैवतं सूर्यादिभ्यो न मम ॥ इति ग्रहयागः ॥ ततः आग्नेय्यां पीठे चतुःषष्टियोगिनीः पूजयेत् । तद्यथा–पीठं रक्तवस्त्रेणाच्छाद्य गन्धादिना पीठे पूर्वभागे त्रीणि त्रीण्यस्राणि विलिख्य तेषु त्र्यस्रेषु त्रीन् कलशान् स्थापयित्वा तिस्रः सुवर्णप्रतिमाः संस्थाप्य । महाकाल्यै नमः महाकालीमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ महालक्ष्म्यै० महालक्ष्मीम्० ॥ २ ॥ महासरस्वत्यै० महासरस्वतीम्० ॥ ३ ॥ तदग्रे **अष्टपंक्तिषु**--अष्ट अष्ट अस्राणि कृत्वा तेषु वक्ष्यमाणनामभिरावाहयेत् । गजाननायै० गजाननाम्० ॥ १ ॥ सिंहमुख्यै सिंहमुखीम्० ॥ २ ॥ गृध्रमुख्यै० गृध्रमुखीम्० ॥ ३ ॥ काकतुण्डिकायै० काकतुण्डिकाम्० ॥ ४ ॥ उष्ट्रग्रीवायै० उष्ट्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रीवाम्० ॥ ५ ॥ हयग्रीवायै० हयग्रीवाम्० ॥ ६ ॥ वाराह्यै० वाराहीम्० ॥ ७ ॥ शरभाननायै० शरभाननाम्० ॥ ८ ॥ **द्वितीयपंक्तौ**--उलूकिकायै० उलूकिकाम्० ॥ ९ ॥ शिवारावायै० शिवारावाम्० ॥ १० ॥ मयूर्यै० मयूरीम् ॥ ११ ॥ विकटाननायै० विकटाननाम्० ॥ १२ ॥ अष्टवक्त्रायै० अष्टवक्त्राम्० ॥ १३ ॥ कोटराक्ष्यै० कोटराक्षीम्० ॥ १४ ॥ कुब्जायै० कुब्जाम्० ॥१५॥ विकटलोचनायै० विकटलोचनाम्० ॥ १६ ॥ **तृतीयपंक्तौ**--शुष्कोदर्यै० शुष्कोदरीम्० ॥१७॥ ललज्जिह्वायै०ललज्जिह्वाम्० ॥ १८ ॥ श्वदंष्ट्रायै० श्वदंष्ट्राम्० ॥ १९ ॥ वानराननायै० वानराननाम्० ॥ २० ॥ अक्षाक्ष्यै० अक्षाक्षीम्० ॥ २१ ॥ केकराक्ष्यै० केकराक्षीम्० ॥ २२ ॥ बृहत्तुण्डायै० बृहत्तुण्डाम् ॥ २३ ॥ सुराप्रियायै० सुराप्रियाम्० ॥ २४ ॥ **चतुर्थपंक्तौ**—कपालहस्तायै० कपालहस्ताम्० ॥ २५ ॥ रक्ताक्ष्यै० रक्ताक्षीम्० ॥ २६ ॥ शुक्यै० शुकीम्० ॥ २७॥ श्येन्यै० श्येनीम्० ॥ २८ ॥ कपोतिकायै० कपोतिकाम्० ॥ २९ ॥ पाशहस्तायै० पाशहस्ताम्० ॥ ३० ॥ दण्डहस्तायै० दण्डहस्ताम्० ॥३१॥ प्रचण्डायै प्रचण्डाम् ॥ ३२ ॥ **पञ्चमपंक्तौ**-चण्डविक्रमायै० चण्डविक्रमाम्० ॥ ३३ ॥ शिशुघ्न्यै० शिशुघ्नीम्० ॥ ३४ ॥ पापहन्त्र्यै० पापहन्त्रीम्० ॥ ३५ ॥ काल्यै० कालीम्० ॥ ३६ ॥ रुधिरपायिन्यै० रुधिरपायिनीम् ॥ ३७ ॥ वसाधयायै० वसाधयाम्० ॥ ३८ ॥ गर्भभक्षायै० गर्भभक्षाम्० ॥ ३९ ॥ शवहस्तायै० शवहस्ताम् ॥ ४० ॥ **षष्ठपंक्तौ**—अन्त्रमालिन्यै० अन्त्रमालिनीम् ॥ ४१ ॥ स्थूलकेश्यै० स्थूलकेशीम्०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥४२॥ बृहत्कुक्ष्यै० बृहत्कुक्षीम् ॥४३॥ सर्पास्यायै० सर्पास्याम्० ॥४४॥ प्रेतवाहनायै० प्रेतवाहनाम् ॥४५॥ दन्दशूकायै० दन्दशूकाम्० ॥४६॥ क्रौञ्च्यै० क्रौञ्चीम् ॥४७॥ मृगशीर्षायै० मृगशीर्षाम् ॥ ४८ ॥ **सप्तमपंक्तौ**—वृषाननायै० वृषाननाम्० ॥ ४९ ॥ व्याघ्रास्यायै० व्याघ्रास्याम्० ॥ ५० ॥ धूमनिश्श्वासायै० धूमनिश्श्वासाम् ॥ ५१ ॥ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे० व्योमैकचरणोर्ध्व-दृशम्० ॥ ५२ ॥ तापिन्यै० तापिनीम्० ॥ ५३ ॥ शोषिणीदृष्ट्यै० शोषिणीदृष्टिम्० ॥ ५४ ॥ कोटरायै० कोटराम् ॥ ५५ ॥ स्थूलनासिकायै० स्थूलनासिकाम्० ॥ ५६ ॥ **अष्टमपंक्तौ**--विद्युत्प्रभायै० विद्युत्प्रभाम् ॥ ५७ ॥ बलाकास्यायै० बलाकास्याम्० ॥ ५८ ॥ मार्जार्य्यै० मार्जारीम्० ॥५९॥ कटपूतनायै० कटपूतनाम्० ॥६०॥ अट्टाट्टहासायै० अट्टाट्टहासाम्० ॥६१॥ कामाक्ष्यै० कामाक्षीम्० ॥ ६२ ॥ मृगाक्ष्यै० मृगाक्षीम्० ॥ ६३ ॥ मृगलोचनायै० मृगलोचनाम्० ॥६४॥ मनोजूति० । महाकाल्याद्याः मृगलोचनान्ताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य--गजाननादिभ्यो मृगलोचनान्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः, इति पदार्थानुसमयेन पूजयेत् । अनया पूजया महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहिताश्चतुष्षष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् । गजाननादिचतुष्षष्टियोगिनीभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं बलिं समर्पयामि । भो गजाननादिचतुष्षष्टि-योगिन्यः दिशं रक्षन्तु बलिं भक्षन्तु मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्ति-कर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन गजाननादिचतुष्षष्टिदेव्यः प्रीयन्तान्न मम । इति योगिनीपूजा ॥ ततो वायव्यां पीठे क्षेत्रपालान् पूजयेत् । पीठं श्वेतवस्त्रेणाच्छाद्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तस्योपरि गन्धादिना नव कोष्ठान् कृत्वा अष्टदलं षडस्रं वा लिखेत् । मध्यकोष्ठे—अष्टदलं पद्मं कर्णिकायां कलशं संस्थाप्य तदुपरि सौवर्णी क्षेत्रपालप्रतिमां स्थापयेत् । (नमोस्तु सर्प्पेभ्यः०) नहिस्पश० । क्षेत्रपालाय० क्षेत्रपालम्० ॥ १ ॥ ततः प्राक्कोष्ठे अक्षतपुञ्जोपरि—अजराय० अजरमावाहयामि स्थापयामि० ॥ १ ॥ व्यापकाय नमः व्यापकम्० ॥ २ ॥ इन्द्रचौराय० इन्द्रचौरम्० ॥ ३ ॥ इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्तिम्० ॥ ४ ॥ उक्षाय उक्षम्० ॥ ५ ॥ कूष्माण्डाय० कूष्माण्डम्० ॥ ६ ॥ आग्नेयकोणे—वरुणाय० वरुणम्० ॥ ७ ॥ बटुकाय० बटुकम्० ॥ ८ ॥ विमुक्ताय० विमुक्तम्० ॥ ९ ॥ लिप्तकाय० लिप्तकम्० ॥ १० ॥ लीलालोकाय० लीलालोकम्० ॥ ११ ॥ एकदंष्ट्राय० एकदंष्ट्रम्० ॥ १२ दक्षिणे कोणे—ऐरावताय० ऐरावतम्० ॥ १३ ॥ औषधिघ्नाय० औषधिघ्नम्० ॥ १४ ॥ बन्धुनाय० बन्धुनम्० ॥ १५ ॥ आचिकाय० आचिकम्० ॥ १६ ॥ कम्बलाय० कम्बलम्० ॥ १७ ॥ भीषणाय० भीषणम्० ॥ १८ ॥ नैर्ऋत्यकोणे-गवयाय० गवयम्० ॥ १९ ॥ घण्टाय० घण्टम्० ॥ २० ॥ व्यालाय० व्यालम्० ॥ २१ ॥ अंशाय० अंशम्० ॥ २२ ॥ चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवारुणम्० ॥ २३ ॥ पटाटोपाय० पटाटोपम् ॥ २४ ॥ पश्चिमकोष्ठे—जटालाय० जटालम्० ॥ २५ ॥ क्रतवे० क्रतुम् ॥ २६ ॥ घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरम्० ॥ २७ ॥ विकटाय० विकटम्० ॥ २८ ॥ मणिमानाय० मणिमानम् ॥ २९ ॥ गणबन्धवे० गणबन्धुम्० ॥ ३० ॥ मुण्डाय० मुण्डम्० ॥ ३१ ॥ बर्बूकराय० बर्बूकरम्० ॥ ३२ ॥ सुधापाय० सुधापम्० ॥ ३३ ॥ वेनाय० वेनम्० ॥ ३४ ॥ पावनाय० पावनम् ॥ ३५ ॥ ढुण्ढकरणाय० ढुण्ढकरणम् ॥ ३६ ॥ उत्तरकोष्ठे—स्थविराय० स्थविरम्० ॥ ३७ ॥ दन्तुराय० दन्तुरम्० ॥३८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धनदाय० धनदम्० ॥ ३९ ॥ नागकर्णाय० नागकर्णम्० ॥ ४० ॥ महाबलाय० महाबलम्० ॥ ४१ ॥ फेत्काराय० फेत्कारम्० ॥ ४२ ॥ बीरकाय० बीरकम् ॥ ४३ ॥ ईशानकोणे—सिंहाय० सिंहम्० ॥ ४४ ॥ मृगाय० मृगम्० ॥ ४५ ॥ यक्षाय० यक्षम्० ॥ ४६ ॥ मेघवाहनाय० मेघवाहनम्० ॥ ४७ ॥ तीक्ष्णाय० तीक्ष्णम्० ॥ ४८ ॥ अमलाय० अमलम् ॥ ४९ ॥ शुक्राय० शुक्रम्० ॥ ५० ॥ इत्यावाह्य । मनोजूति० । क्षेत्रपालादयः शुक्रान्ताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । क्षेत्रपालादिभ्यः शुक्रान्तेभ्यो नमः, इति मन्त्रेण पदार्थानुसमयेन पूजयेत् । अनया पूजया क्षेत्रपालादयः शुक्रान्ताः प्रीयन्ताम् । इति क्षेत्रपालपीठपूजनम् । इति तृतीयदिनकृत्यम् ॥

अथ चतुर्थदिनकृत्यम्—मध्यवेद्यां वारुणमण्डले देवताः नाममन्त्रैरावाहयेत् । अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि महावेद्यां वारुणमण्डलदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये । मध्ये—ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० ॥ १ ॥ पूर्वादि० । इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥ २ ॥ अग्नये० अग्निम्० ॥ ३ ॥ यमाय० यमम्० ॥ ४ ॥ निर्ऋतये० निर्ऋतिम्० ॥ ५ ॥ वरुणाय० वरुणम्० ॥ ६ ॥ वायवे० वायुम्० ॥ ७ ॥ सोमाय० सोमम्० ॥ ८ ॥ ईशानाय० ईशानम्० ॥ ९ ॥ इन्द्रेशानाद्यन्तरालेषु वसुभ्यो० वसून्० ॥ १० ॥ रुद्रेभ्यो० रुद्रान् ॥ ११ ॥ आदित्येभ्यो० आदित्यान् ॥ १२ ॥ अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ १३ ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान्देवान्० ॥ १४ ॥ पितृभ्यो० पितॄन्० ॥ १५ ॥ नागेभ्यो० नागान्० ॥ १६ ॥ स्कन्दाय० स्कन्दम्० ॥ १७ ॥ वृषाय० वृषम्०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ १७ ॥ पद्मे अष्टपत्रेषु-ईशानादि० । दक्षाय० दक्षम्० ॥ १८ ॥ विष्णवे० विष्णुम्० ॥ १९ ॥
दुर्गायै दुर्गाम्० ॥ २० ॥ स्वधायै० स्वधाम्० ॥ २१ ॥ मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगान्० ॥ २२ ॥
समुद्रेभ्यो० समुद्रान्० ॥ २३ ॥ सरिद्भ्यो० सरितः० ॥ २४ ॥ मरुद्भ्यो० मरुतः० ॥ २५ ॥
गणेशाय० गणेशम्० ॥ २६ ॥ कर्णिकायां मध्ये-पृथिव्यै पृथिवीम्० ॥ २७ ॥ कर्णिकान्तरे मेरवे०
मेरुम्० ॥ २८ ॥ मण्डलाद् बाह्ये पूर्वादिषु—वज्राय० वज्रम्० ॥ २९ ॥ शक्तये० शक्तिम्० ॥३०॥
दण्डाय० दण्डम्० ॥ ३१ ॥ खड्गाय० खड्गम्० ॥ ३२ ॥ पाशाय० पाशम्० ॥ ३३ ॥ अङ्कु-
शाय० अङ्कुशम्० ॥ ३४ ॥ गदायै० गदाम्० ॥ ३५ ॥ त्रिशूलाय० त्रिशूलम् ॥ ३६ ॥ तद्बाह्ये
ऐरावताय० ऐरावतम्० ॥ ३७ ॥ मेषाय० मेषम्० ॥ ३८ ॥ महिषाय० महिषम्० ॥ ३९ ॥
प्रेताय० प्रेतम्० ॥ ४० ॥ मकराय० मकरम्० ॥ ४१ ॥ हरिणाय० हरिणम्० ॥ ४२ ॥ नराय०
नरम्० ॥ ४३ ॥ वृषाय० वृषम्० ॥ ४४ ॥ तद्बाह्ये—गौतमाय० गौतमम् ॥ ४५ ॥ भारद्वाजाय०
भारद्वाजम्० ॥ ४६ ॥ विश्वामित्राय० विश्वामित्रम्० ॥ ४७ ॥ कश्यपाय० कश्यपम्० ॥४८॥
जमदग्नये० जमदग्निम् ॥ ४९ ॥ वसिष्ठाय० वसिष्ठम्० ॥ ५० ॥ अत्रये० अत्रिम्० ॥ ५१ ॥
तद्बाह्ये—सूर्याय० सूर्य्यम्० ॥ ५२ ॥ सोमाय० सोमम्० ॥ ५३ ॥ भौमाय० भौमम्० ॥ ५४ ॥
बुधाय० बुधम्० ॥ ५५ ॥ बृहस्पतये० बृहस्पतिम् ॥ ५६ ॥ शुक्राय० शुक्रम्० ॥ ५७ ॥ शनैश्च-
राय० शनैश्चरम्० ॥ ५८ ॥ राहवे० राहुम्० ॥ ५९ ॥ केतवे० केतुम्० ॥ ६० ॥ तद्बाह्ये—
ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीम्० ॥ ६१ ॥ कौमार्य्यै० कौमारीम् ॥ ६२ ॥ ब्राह्म्यै० ब्राह्मीम्० ॥ ६३ ॥
वाराह्यै० वाराहीम्० ॥ ६४ ॥ चामुण्डायै० चामुण्डाम्० ॥ ६५ ॥ वैष्णव्यै० वैष्णवीम्० ॥ ६६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माहेश्वर्य्यै० माहेश्वरीम्० ॥ ६७ ॥ वैनायक्यै० वैनायकीम्० ॥ ६८ इत्यावाह्य । मनोजूति० । ब्रह्मादिमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । सुपूजिता मया देवा कुर्वन्तु मम मङ्गलम् । मम यज्ञस्य संसिद्ध्यै क्षमध्व-मनयार्चया ॥ ततः ब्रह्मादिभ्यः क्रमेण बलिदानं पायसान्नेन । ब्रह्मणे नमः । पायसबलिं समर्पया-मीति सर्वत्र ज्ञेयम् । इति मण्डलदेवतापूजनम् । अथ वारुणमण्डपकर्णिकायां महान्तं ताम्रमयं कलशं संस्थाप्य । प्रसन्नो भव सर्वदा, इत्यन्तं विधाय । तदुपरि पञ्चरत्नं, सौवर्णकूर्ममकरौ, राज-तमत्स्यडुण्डुभौ ताम्रकुलीरमण्डूकौ, लोहमयं शिशुमारं च अग्न्युत्तारणपूर्वकं ताम्रपात्रे निधाय । इमम्मे वरुणेति तत्र स्थापयेत् । मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारेण पूजनम् । कूर्मादिजल-चरेभ्यो नमः, मण्डलात्परितः पूर्वादिक्रमेण दिक्षु विदिक्षु अष्टौ कलशान् स्थापनमन्त्रैः संस्थाप्य । तेषु कलशेषु । इमम्मे वरुण० । वरुणाय० वरुणम्० ॥ १ ॥ ब्रह्मजज्ञानम्० । ब्रह्मणे० ब्रह्मा-णम्० ॥ २ ॥ नमः शम्भवाय० । शिवाय० शिवम्० ॥ ३ ॥ इदंविष्णु० । विष्णवे विष्णुम्० ॥४॥ गणानान्त्वा० । गणपतये० गणपतिम्० ॥ ५ ॥ श्रीश्चते० । श्रियै० श्रियम्० ॥ ६ ॥ अम्बेऽ-अम्बिके० । अम्बिकायै० अम्बिकाम्० ॥ ७ ॥ तऽआयजन्त० । भूतग्रामाय० भूतग्रामम् ॥ ८ ॥ इत्यष्टभिर्मन्त्रैरष्टप्रतिमास्थापनं पूजनं च । तत्तन्मन्त्रैर्नाममन्त्रैर्वा सर्वेषां घृतपायसेन बलीन् दद्यात् । वरुणाय एष पायसबलिर्न मम । इत्यादि० । अथाचार्योऽग्निसमीपमागत्य अग्नेः पश्चादुपविशेत् । यजमानस्तु दक्षिणतोऽग्नेर्ब्रह्मणः पश्चिमत उपविष्ट एवास्ते । आचार्यस्तु—अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मास-नादिपरिस्तरणम् । तत्र द्वितीयमेखलायाम् पश्चिमे च योनिरन्ध्रं कुर्यात् । पात्रासादनादि यथोक्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रधानार्थे यवमयं ग्रहादीनामर्थे च व्रीहिमयं चरुद्वयं श्रपयित्वा आज्यभागान्तं कर्म कृत्वा यजमानो द्रव्यत्यागं कुर्यात् । ततोऽग्नेः पञ्चोपचारैः पूजा । ततो द्वारपालान् सम्पूज्य गन्धादिभिः जापकाः जपध्वम्, होतारो यथाविहितं हवनादिकर्म कुरुध्वम्, इत्युच्चैर्वदेत् । ततस्ते सर्वे यथाविहितं कर्म करिष्यामः, इति प्रतिवदेयुः । तत आचार्यादयः सावधानाः आदित्यादिग्रहाधिदेवताप्रत्यधिदेवता-पञ्चलो पालदशदिक्पालेभ्यः पलाशसमित्तिलचर्वाज्यादिद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात् । शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताः प्रतिदेवतं अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा प्रत्येकं औदुम्बर-समित्तिलपायसाज्यैर्द्रव्यैर्जुहुयात् । वास्तोष्पते०, इति पञ्चभिर्ऋग्भिः प्रत्यृचं पञ्चबिल्वफलैस्तद्वी-जैर्वा होमः । चरक्यादिदेवताः प्रधानन्यूनसंख्यया अष्टाविंशतिमष्टौ वा औदुम्बरसमित्तिलाज्यैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं जुहुयात् । एवमेव योगिनीक्षेत्रपालेभ्यस्तत्तन्मन्त्रैर्जुहुयात् । वरुणमण्डलदेवतानां नाममन्त्रैर्होमः कार्यः । ततः—इमम्मे व्वरुणेत्यष्टभिर्मन्त्रैः यथासंख्यं जुहुयात् । ततः आज्यौदुम्ब-रीयसमिद्भिर्होमः । इमम्मेव्वरुण० स्वाहा ॥ १ ॥ तत्त्वायामि० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐस त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ अयाश्चाग्ने० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ये ते शतं वरु० स्वाहा ॥ ६ ॥ अदित्यास्त्वगस्यदित्यैसदऽआसीद । अस्तभ्नाद्द्यां व्वृषभोऽ-अन्तरिक्षममिमीतव्वरिमाणं पृथिव्याः । आसीदद्विश्वाभुवनानि सम्राड्विश्वे-तानि व्वरुणस्य व्रतानि स्वाहा ॥ ७ ॥ व्वनेषु व्व्यन्तरिक्षंततानव्वाजमर्व्वत्सु दयऽउस्त्रियासु । हृत्सुक्रतुं व्वरुणो व्विक्ष्वग्निं दिविसूर्यमदधात्सोममद्रौ स्वाहा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ८ ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐव्वरुणस्योत्तम्भन० स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ निष-सादधृतव्रतोव्वरुणः पस्त्या स्वाहा । साम्राज्यायसुक्रतुः स्वाहा ॥ ११ ॥ धृतवती-भुवनानामभिश्रियो पृथिवी मधुदुघे सुपेशसा द्यावापृथिवी व्वरुणस्य धर्मण विष्कभितेऽअजरे भूरि रेतसा स्वाहा ॥ १२ ॥ नवधावर्तितेऽष्टोत्तरशताहुतीर्हुत्वा । आज्या-हुतीर्जुहोति । ॐत्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ स त्वन्नो अग्ने० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ इमम्मे० वरुण० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ तत्वायामि० स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ये ते शतं० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ अया-श्चाग्ने० स्वाहा० ॥ ६ ॥ उदुत्तमं वरुण० स्वाहा ॥ ७ ॥ उरुꣳ हिराजा० श्वित्० स्वाहा ॥ ८ ॥ वरुणस्योत्तम्भन० स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ अग्नेरनीकं० स्वाहा ॥१०॥ इति दशर्चं हुत्वा । (पाश-हस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान् । निम्नगामीति विख्यातो वरुणाय नमो नमः ॥) ततो अभिघार्य स्थीलापाकं जुहुयात् । ॐ अग्नये स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥ ३ ॥ यज्ञाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ भीमाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ उग्राय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ शतक्रतवे स्वाहा ॥ ७ ॥ व्युष्ट्यै स्वाहा ॥ ८ ॥ स्वर्गाय स्वाहा ॥ ६ ॥ प्रधानहोमे क्रियमाणे जापका जपेयुः । अथ द्वारपालजप्यानि सूक्तानि उच्यन्ते । पूर्वद्वारे—हिरण्य-वर्णां हरिणीं० ॥ १५ ॥ स्वादिष्ठयामदिष्ठया० ॥ २३ ॥ त्वं सोमप्रचकितो० ॥ ३ ॥ कनिक्र-न्दज्जनुषम्० ॥ ३ ॥ सन्नऽइन्द्राग्नि० ॥ १५ ॥ योजातऽएवप्रथमो० ॥५०॥ कृणुष्वपाजः० ॥१५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दक्षिणद्वारे–ॐ नमस्ते रुद्र० ॥ ६६ ॥ ॐ सहस्रशीर्षा० ॥ १६ ॥ ॐ देवसवितः प्रसव० ॥ २२ ॥ ॐ ऋचं वाचम्० ॥ ॐ यदेतन्मण्डलम्० ॥ २२ ॥ अथ पश्चिमद्वारे–ॐकयानश्चित्र० । ॐ त्वमिद्धिहवामह० । मूर्धानं दिवो० ॥ अभित्वाशूरनो० । सहस्रशीर्षा० । आवोराजान० । देवव्रतानी० । अबोध्यग्नि० । ॐ इमंस्तो य० । अथोत्तरद्वारे––ॐछन्दोगाय बृहद्गाय० । ॐ आङ्गिरसोजन्मनी । ॐ यारुद्रपल्या० । ॐ देवीपरिवर्त्मनी० ॐमधुव्वाता० । ॐअभयं द्यावापृथिवी० । ॐशन्नऽइन्द्राग्नि० । इति द्वारपालजपः । होमावसरे यद्यग्नौ जीवादि पतति तर्हि तद्दोषपरिहारार्थं अनादिष्टप्रायश्चित्तं कार्यम् । होमे क्रियमाणे यद्धविः कुण्डाद् बहिः पतति तन्नद्यादौ जले वा प्रक्षेपणीयम् । तत्राप्युपरिमेखलायां यत्पतति तत्तदग्नौ प्रक्षिपेत् । कुतः परिधिपरिस्तरणान्तर्गतत्वेनाग्नौ प्रक्षेपार्हत्वात् । तद्बहिर्गतस्यान्तःप्रक्षेपनिषेधाच्चेति । एवं होमं परिसमाप्य–ॐअग्नेनयसुप० स्वाहा। स्वधायुतमग्निं आयतनाद् बहिर्वायव्यां पूजयेत्, अग्नये गन्धादि बहिरेव दद्यात् । अथ ब्रह्मणान्वारब्धः । अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्न० । यद्यनेकदिनसाध्यो होमस्तदा पर्युषितदोषपरिहारार्थं हविःशेषं स्विष्टकृदर्थं घृतमध्ये स्थापयेत् । नष्टे दुष्टे वा हविषि आज्येनैव स्विष्टकृद्धोमः । ततो नवाहुतीर्जुहुयात् । ततो यजमानः इन्द्रादिदिक्पालेभ्यः नवग्रहेभ्यो क्षेत्रपालाय च माषभक्तबलीन् दद्यात् । मण्डपवेद्याः पश्चिमतः शुद्धभूमौ वैणवादिपात्रे बलिं निधाय बलौ निहितपूगीफले क्षेत्रपालं सम्पूज्य बलिं दद्यात् । इमं बलिं शूद्रो गृहीत्वा मण्डपप्रदक्षिणेन निर्ऋतिदेशं बलिं हरेत् । ततो यूपलक्षणम् । अरत्निमात्रो यूपः स्यात् क्षीरवृक्षविनिर्मितः । यजमानप्रमाणो वा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्थाप्यो भूतिमिच्छता ॥ कनिष्ठिकाग्रान्तोऽरत्निस्तत्त्रयमित्यर्थः । रत्नित्रयम् । एकविंशाङ्गुलोऽरत्निः । पालाशो ब्राह्मणस्योक्तो न्यग्रोधः क्षत्रियस्य तु । बैल्वो वैश्यस्य यूपः स्यात् शूद्रस्योदुम्बरः स्मृतः ॥ शिरोललाटहृदयनाभिमात्रो यथाक्रमम् । खदिरपलाशयोर्वृक्षयोरन्यतरस्य द्वादशाङ्गुलसमचतुरस्रविस्तृतमरत्नित्रयं दीर्घं स्वतुरीयांशेन मूर्ध्नि अष्टभिस्त्रिवृतं शिखराकारं कृत्वा । यूपो वटाद् बहिः कार्यश्चतुरस्रस्तृतीयके । मध्येऽष्टास्रि ऊर्ध्वभागे वर्तुलः पञ्चमस्त्वधः ॥ ततो यूपस्थापनम् ॥ तडागात्पूर्वतः पदत्रयमात्रां भूमिं त्यक्त्वा यज्ञियवृक्षत्रिरत्निमात्रयूपोच्चता तृतीयांशेन गर्ते निक्षिप्य । अन्ये तु-तडागोत्तरे तदीशान्ये वा यूपं रोपयेत् । यूपगर्ते जलगन्धाक्षतपुष्पदर्भान्निक्षिपेत् । गर्ताद्दक्षिणपार्श्वे पालाशपर्णोपरि यूपं निधाय । यूपे उदकं प्रोक्ष्य । हरिद्रातैलाभ्यामभ्यर्च्य । तीर्थोदकेन स्नापयित्वा । पश्चात् यूपं उत्थाप्य ततो यूपस्य परिधानीयं अधोवस्त्रं परिधाय पश्चाद् गौरसर्षपगोरोचनगुग्गुलुदूर्वानिम्बपत्रगर्भवतीं वस्त्रपोटलिकां कृत्वा 'युवा सुवासा' इति मन्त्रेण यूपस्य कण्ठे बद्ध्वा । यूपं खातसमीपे आनीय पश्चात्--उच्छ्रयस्व वनस्पत० इत्युच्छ्रयेत् । ध्रुवोऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतनेप्रजया पशुभिर्भूयात् । घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्यच्छाया ॥ यूप त्वं पापहर्ता च पुरा देवैर्विनिर्मितः । सर्वं गृहाण मे पापं जलरोधप्रभावतः ॥ कीर्तिचिह्नस्थितो यूपः स्थितो भवति नित्यशः ॥ इति तस्मिन्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गर्तें जलाशयाभिमुखं यूपं रोपयेत्। 'यूपाय नमः' इति गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलताम्बूलदक्षिणाद्युपचारैः सम्पूज्य। ततो यूपस्य मस्तके उष्णीषं बद्ध्वा युग्मवस्त्रेण संवेष्ट्य। ब्रह्मविष्णुरुद्रसहिताष्टौ लोकपालान् यूपस्थापने मूले पूजयेत्। यूपव्रस्काउत्तये यूपवाहाश्चषालं येऽअश्वयूपाय तक्षति। ये चार्व्वते पचन ᳪ᳘० सम्भरन्त्युतो तेषामभिगतिर्नऽइहन्न्वतु॥ इत्यनेन पुष्पाञ्जलिम्॥ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां विश्वारूपाभिश्चष्टे शचीभिः। देवऽइव सवितासत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्॥ यज्ञायज्ञावो० इति च त्रिः प्रदक्षिणोकृत्य माषतण्डुलबलिं यूपे दद्यात्। तत्र मन्त्रः—एह्येहि धर्मध्वज यज्ञनाथ त्रयोमयो देवशरीर यूप। विधाय देवेश्वर यज्ञरत्नां बलिं गृहाणेममहं नमामि॥ यूपायेमं सदीपमाषतण्डुलबलिं समर्पयामि। सोमः पवते सोमः पवतेऽस्मै ब्रह्मणेऽस्मैक्षत्रायास्मै सुन्वते यजेमानाय पवत इषऽऊर्ज्जे पवतेभ्यऽओषधीभ्यः पवते द्यावापृथिवीभ्यां पवते सुभूताय पवते विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएष ते योनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥ इति मन्त्रेण यूपं कुङ्कुमोक्तं सूत्रेण वेष्टयेत्। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्रार्थयेत्। देहि मेऽनुग्रहं यूप प्रसादं कुरु मे प्रभो। मूलच्छेदेन यत्पापं भूमिघातेन पातकम्॥ अदुष्टयूपघातोत्थं यूपः पापं व्यपोहतु। यद्बाल्ये यच्च कौमारे यत्पापं वार्धके कृतम्॥ तत्सर्वं मम देवेशो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यूपः पापं व्यपोहतु। यन्निशायां तथा प्रातर्यन्मध्याह्नापराह्णयोः ॥ सन्ध्ययोश्च कृतं पापं कर्मणा मनसा गिरा। सर्वं तन्मम देवेशो यूपः पापं व्यपोहतु ॥ येन केन निमित्तेन कर्ता पापं तु कारयेत्। तेन पापेन लिप्ताङ्गस्तेनैवास्पृश्य उच्यते ॥ पुत्रपौत्रादियुक्तो नमस्कृत्य आलिङ्ग्य स्नात्वा। अन्यवाससी परिधाय ततः आचार्यः पादौ हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य मण्डपं प्रविश्य कुण्डान्तिकमागत्य यजमानान्वित आचार्यः पूर्णाहुतिं कुर्यात्। कृतस्य तड़ागोत्सर्गहोमस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं पूर्णाहुतिहोमं होष्ये। निरूप्याज्यमधिश्रित्य स्रुवं स्रुचं च कुशैः संमृज्य उद्वास्योत्पूयावेक्ष्य अपद्रव्यं निरस्य औदुम्बर्य्यां स्रुचि द्वादशगृहीतं च चतुर्गृहीतं वा आज्यं गृहीत्वा तस्यां रक्तवस्त्रवेष्टितं नारिकेलफलं चन्दनमाल्यादियुतं निधायाधोमुखं स्रवच्छन्नां स्रुचश्चादाय पूर्णाहुतिं यजमानान्वारब्धस्तिष्ठन् आचार्यो जुहुयात्। तत्र मन्त्राः—समुद्रादूर्मि०॥३॥ इत्यनुवाकः। मूर्धानं दिव०। पुनस्त्वा। पूर्णादर्वि०। सप्ततेऽअग्ने०। धामं ते०। स्वाहा। ततो यजमानः इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम इति त्यागं कुर्यात्। ततो यजमानः कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणोऽधिकफलावाप्तये वसोर्धारां होष्यामीति सङ्कल्पयेत्। तस्यां च घृतधारायां स्रुक्प्रणालिकया संलग्नस्वर्णजिह्वाऽग्नौ पतन्त्यां सूक्तानि श्रावयेत्। व्वाजश्चमे० व्वेट स्वाहा ॥ २६ ॥

संमास्त्वाग्ग्नऽऋतवोवर्द्धयन्तु संव्वत्सराऽऋषयो यानि सत्या। संदिव्व्येन दीदिहि रोचनेन व्विश्श्वाऽआभाहि प्प्रादिशश्चतस्रः ॥ १ ॥ सञ्चेद्ध्यस्वाग्ग्ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रचबोधयैनमुच्चतिष्ठमहते सौभगाय। माचरिषदुपसत्तातेऽअग्ने ब्राह्मणस्तेयशसः
सन्तु मान्न्ये ॥२॥ त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणाऽइमेशिवाऽअग्ने संव्वरणे भवानः ।
सपत्नहानाऽभिमातिजिच्च स्वेगयेजागृह्यप्रयुच्छन् ॥ ३ ॥ इहैवाग्नेऽअधिधारया
रयिम्मत्वानिक्रन्न्पूर्वचितोनिकारिणः । क्षत्रमग्नेसूय ममस्तु तुब्भ्यमुपसत्ता
वर्धतान्तेऽनिष्टृतः ॥ ४ ॥ क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सᳬं रभस्व मित्त्रेणाग्नेमित्रधेये
यतस्व । सजातानाम्मद्ध्यमस्था एधिराज्ञामग्ने व्विहव्योदीदिहीह ॥ ५ ॥
अतिनिहो अतिस्रिधो त्त्यचित्ति मत्यरातिमग्ने । विश्वाह्यग्ने दुरिता सह-
स्वाथा स्मब्भ्य ᳬं सहव्वीरा ँ रयिन्दाः ॥ ६ ॥ अनाधृष्योजातव्वेदाऽअनि-
ष्टृतो व्विराडग्नेक्षत्त्रभृद्दीदिहीह । व्विश्वाऽआशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्ब्भियः शिवे-
भिरद्यपरिपाहिनोव्वृधे ॥ ७ ॥ बृहस्पते सवितर्बोधयैनᳬं सᳬं शिताञ्चित्स-
न्तरा ँ स ᳬं शिशाधि। वर्द्धयैनम्महतेसौभगाय व्विश्श्वष्ट्रनऽएमनुमदन्तुदेवाः
॥ ८ ॥ अमुत्त्रभूयादधयद्यमस्य बृहस्पतेऽअघिशस्तरेमुञ्चः॥ प्रत्यौहतामश्विना
मृत्युमस्माद्देवानामग्नेभिषजाशचीभिः ॥ ९ ॥ विष्णोर्नुकम्० । नमस्ते रुद्रमन्यव०
॥ ६६ ॥ आप्यायस्व० ॥ १ ॥ सन्ते पया ँ सि समयन्तुव्वाजाः संव्वृष्ण्यान्न्यभिमातिषाहः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आप्यायमानोऽअमृताय सोमदिविश्रवा ँ स्युत्तमानिधिष्व ॥ २ ॥ आप्यायस्व मदिन्तमसोम व्विश्वेभिर ँ शुभिः । भव नः सप्रथस्तमः सखावृधे ॥ ३ ॥ महावैश्वानरं साम पाठयेत् । ज्येष्ठसाम च । अथातो वसोर्धारां जुहोतीति ब्राह्मणोऽपि कश्चित् पठेत् । ततो यजमानः इदंवाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे एकरुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम इति त्यजेत् । अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य । अग्नेः पश्चात् प्राङ्मुखो यजमान उपविशेत् । ततस्त्र्यायुषाणि करोति । ततः संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा । आचार्येण कुण्डाग्निर्यावत्कर्मसमाप्ति विशेषतो रक्षणीयः । तत्र कदाचित् तदग्निनाशे तद्भस्म कुण्डाद् बहिः प्रक्षिप्यानुगतमग्निं पुनरुत्पादयिष्यामीति संकल्पोपलेखनादिति । यजमानः आचार्यादीन् दक्षिणाप्रदानेन हविष्यान्नभोजनेन च सन्तोष्य स्वयमुपोषितो हविष्याशी वा आचार्यर्त्विग्भिः सह वेदपाठपुराणगीतादिभिः जागरणेन रात्रिं निनयेत् । इति चतुर्थदिनकृत्यम् ॥

अथ पञ्चमदिनकृत्यम्—प्रातः यजमानान्विता आचार्यादयः सर्वे स्नानादिनित्यकर्म निर्वर्त्य यागमण्डपमागत्य । कालज्ञानार्थं घटिकायन्त्रादि प्रतिष्ठापयेत् । विधिना संस्थाप्य ब्राह्मणैः सह शान्तिपाठं कृत्वा मण्डलदेवतानिर्माल्यमपसार्य्य पूर्वदिनस्थापितदेवताः पूर्ववत् स्नानवर्जितैरर्घाद्युपचारैः पूजनं कुर्यात् । ततो वाद्यादिघोषे जायमाने हरिद्राकुङ्कुमादिरञ्जिते त्रिवृतमङ्गलसूत्रेण जलाशयं ईशानादारभ्य प्रादक्षिण्येन सकृद् वेष्टयेत् । रक्षोघ्नेन पवमानेन च पूर्वोक्तक्रमेण जलदुग्धधारामपि दद्यात् । ततः ध्वजारोपणम् ॥ ततो वास्तुनिक्षेपः । ततो यजमानो नूतनं श्वेतोष्णीषं शिरसि बद्ध्वा आचार्यः वेदीतः पूर्वोक्तां कूर्ममकरादियुतां ताम्रपात्रीमादाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साचार्यः ऋत्विक्सहितो जलाशयं गच्छेत्, स्वयं तत्र प्राङ्मुखः स्थित्वाऽगाधे जले जलचराणां पूर्वादिक्रमेण प्रक्षेपं कुर्यात् । (सौवर्णौ कूर्ममकरौ प्रागाग्नेयभागयोः प्रत्यङ्मुखौ । राजतमत्स्य-डुण्डुभौ दक्षिणनैर्ऋत्यभागयोः उदङ्मुखौ ॥ ताम्रौ कुलीरमण्डूकौ पश्चिमवायव्ययोः प्राङ्मुखौ । आयसं शिशुमारं उत्तरतो दक्षिणाभिमुखं प्रक्षिपेत् ।) मत्स्यादयो जलचराः जलक्रीडापराः सदा । विरहन्तु स्वभावेन कारितेऽस्मिन् जलाशये ॥ इत्यनेन । यतो यतः समीहसेति च नमस्कारः । ततस्ताम्रपात्रीं महानदीजलोपेतां दध्यक्षतविभूषितां कृत्वा उत्तराभिमुखो भूत्वा आपो हि ष्ठेति तिसृभिर्ऋग्भिजर्लमध्ये न्युब्जां कुर्यात् । आपो हि ष्ठा० ॥ ३ ॥ जलाधि-नाथो ऽवरुण त्वं तु देवविनिर्मिते । जलाशयेऽस्मिन्देवेश सन्निधानं सदा कुरु ॥ १ ॥ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु महाभागा वाञ्छिताभीष्टसिद्धये ॥ २ ॥ ततो यजमानः उष्णीषमाचार्याय दद्यात् । ततो ज्योतिर्वित्-प्रोक्ते (गन्धादिना संपूज्य) शुभलग्ने ब्राह्मणैः शान्तिपाठपरैश्च मङ्गलगीतवाद्यध्वनौ क्रियमाणे इरावती धेनुमतीहीत्यनेन च जले गामीशानदिगभिमुखीमवतारयेत् । तरन्तीं तां गामनुमन्त्रयेद् अनेन मन्त्रेण । इदं सलिलं पवित्रं कुरुष्व शुद्धाः पूताअमृताः सन्तु नित्यम् । मां तारयन्त्यः सर्वं कुरु तीर्थाभिषेकं लोकाल्लोकं तरते तीर्यते च । सुरभे त्वं जगद्वन्द्या पवित्रा पापनाशिनी ॥ नीत्वा पारं परं पुण्ये वृद्धिं कुरु सदा मम ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो वापीकूपोत्सर्गे तु गां त्रिरुपरि भ्रामयेत् । ततो यजमानः आचार्यान्वारब्धः गोपुच्छाग्रे लग्नो जले गच्छन् समुद्रादूर्मि०[1] । येवामीरोचन०[2] । इति मन्त्रद्वयं पठेत् । तत ईशान्यां परपारे गत्वा जानुदघ्ने[3] जले उदङ्मुख्याः गोः पुच्छे गुरुणान्वितो यजमानः स्वशाखोक्तविधिना देवर्षिमनुष्यपितॄणां तर्पणं कुर्यात् । ततः पौराणमन्त्रैरपि तर्पणं केचिदाहुः । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहाः ॥ सपत्नीकाः समेतास्ते प्रीयन्तां जलतर्पणात् ॥ १ ॥ अजातदन्ता ये केचित् ये च गर्भे प्रपीडिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थाय तडागोदकतर्पणम् ॥ २ ॥ पितृव्यकाश्च येऽस्माकं भ्रातरश्च सहोदराः । गुरवो मातुलाः पुत्राः आचार्यसखिबान्धवाः ॥ ३ ॥ तेषां पुत्राश्च पत्न्यश्च श्वशुरा ये सपुत्रकाः । एतेषां प्रीणनार्थाय तडागोदकतर्पणम् ॥ ४ ॥ बन्धुवर्गाश्च ये केचिद् गोत्राणामेव वर्जिताः । सगोत्रपरगोत्रा वा तेभ्यश्चेदं तिलोदकम् ॥ ५ ॥ अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे । उद्बन्धनमृता ये च ते पिबन्तु तिलोदकम् ॥ ६ ॥ असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिकास्तथा । दिक्पाला लोकपत्न्यश्च ग्रहदेवाश्च देवताः ॥ ७ ॥ तेषामुद्धरणार्थाय तडागोदकतर्पणम् । रौरवे चान्धतामिस्रे कुम्भीपाके च ये गताः ॥ ८ ॥ अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोकेषु ये गताः ।

---

१ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ २ उदारदुपा ँ ्शुना सममृतत्त्वमानट् । घृतस्यनामगुह्यंयदस्तिजिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः ॥ य० अ० १७ म० ८९ ।

२ येवामीरोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु । येषामप्सु सदस्कृतन्तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । अ० अ० १३ म० ८ ।

३ जानुप्रमाण इत्यर्थः, । प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः, इति पाणिनिसूत्राद्दघ्नच्प्रत्ययः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दृश्यन्ते निरयश्चैव ये नीता यमकिङ्करैः ॥ ९ ॥ असिपत्रवने घोरे ते पिबन्तु तिलोदकम् । ये विश्वेदेवास्तथा साध्या आदित्याश्च मरुद्गणाः ॥ १० ॥ क्षेत्रपीठानि पीठानि नद्यश्चैव ससागराः । पाताले नागपत्न्यश्च नागाश्चैव सपर्वताः ॥ ११ ॥ पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गन्धर्वराक्षसाः । पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाश एव च ॥ १२ ॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तडागोदकतर्पणात् । पितृवंशे मृता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥ १३ ॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । तेभ्यो दत्तं [1]तडागस्य जलमेतत्सुतृप्तये ॥ १४ ॥ आब्रह्मणो ये मम वंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः । वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ १५ ॥ मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकाराः । जन्मान्तरे ये मम संगताश्च तेभ्यस्तडागोदकतर्पणं सदा (तेषां भवेद्वा—प्युदकं ममेदं) ॥ १६ ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ १७ ॥ इति तर्पणम् । ततो यजमानः तत्पुच्छलग्न एव आपो अस्मानिति मन्त्रं पठन् ऐशान्यां उत्तीर्य जलान्निष्कासयेत् । ऐशान्यां दिशि उत्थाप्य ततः पुच्छं त्यक्त्वा धौते वाससी परिधाय द्विराचम्य चन्दनाक्षतादिभिस्तां गां पूजयेत् । गां संपूज्य । ततो गोपुच्छं हस्ते गृहीत्वा कुशयवजलान्यादाय देशकालौ० दशपूर्वदशापरात्मीयपुरुषसहितात्मनो नरकोद्धरणपूर्वकं ऐहिकसकलसमृद्धिशान्तिपूर्वकसवत्सगोरोमसमसंख्यकवर्षस्वर्गप्राप्तिकामः इमां गां सवत्सां काञ्चनशृङ्गीं रौप्यखुरां कांस्यदोहां ताम्रपृष्ठीं रत्नपुच्छां कण्ठे घण्टाविभूषितां रक्तवस्त्रादिवस्त्रान्तां रुद्रदैवत्यां कृतैतत्तडागजलाशयप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्र-

१ वाप्यादेरुपलक्षणमेतत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ददे। इति कुशयवजलेन युतं ब्राह्मणहस्ते दद्यात्। स्वस्ति, इति विप्रः। ततो हिरण्यं दक्षिणां च दद्यात्। कृतैतद्गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णनिष्क्रयदक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति दत्त्वा गां प्रार्थयेत्॥ वसूनां दुहितासि त्वं संसारार्णवतारिणी। तीर्थपुण्योदके स्नात्वा पावयस्व जलाशयम् ॥१॥ अर्चितासि सुगन्धेन चन्दनेन समर्चिते। सत्कीर्तिं सद्गतिं कर्तुं पावयस्व जलाशयम् ॥ २ ॥ सर्वदेवमयी यस्मात् पूजनीयासि रोहिणी। सर्वकामदुघे धेनो सर्वपातकनाशिनी ॥ ३ ॥ सर्वाङ्गे सर्वभावेन पावयस्व जलाशयम्। त्वया कृतं पवित्रं तु त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥४॥ अतोऽस्माकमिमं धेनो पावयस्व जलाशयम् ॥ ५ ॥ ततो यजमानः जलाशयान्तिके प्राङ्मुख उपविश्य मङ्गलवाद्यादिघोषैरुत्सर्गं कुर्यात्। कुशाक्षतजलान्यादाय देशकालौ० सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानेककल्पावच्छिन्नस्वर्गलोकहर्षपरार्द्धद्वयावच्छिन्नमहस्तपःप्रभृतिलोकाङ्गनाग्रणीसहितपरमविष्णुपदप्राप्तिकामः इमं तडागजलाशयं वरुणदैवतं स्नानपानावगाहनाद्यर्थं आत्मसहितसर्वभूतेभ्योऽहं समुत्सृजे [इमं तडागं] इत्यस्य स्थाने वापीकूपपुष्करिण्याद्यपि[1] योजनीयम्। जलाशयं पश्यन् जलं भूमौ क्षिपेत्। यद्वा देवपितृमनुष्याः प्रीयन्ताम्, इत्युत्सर्गमन्त्रः। ततो मन्त्रान् जपेत्। सर्वभूतेभ्यो उत्सृष्टं ययैतज्जलमूर्जितम्। रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगा-

१ वनस्य अमुकमाराम वृक्षं वा देवत्य छायाभिः। मार्गपरिश्रमनिरासार्थं सर्वभूतेभ्योऽहमुत्सृजे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनैः ॥ १ ॥ (आरामोत्सर्गकाले जलं) इत्यस्य स्थाने वनमित्यपि योजनीयम्। सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मया दत्तमिदं जलम्। रमन्तां० ॥२॥ स्नानपानावगाहनैरित्यस्य स्थाने स्थितवृक्षोत्सवादिभिर्योज्यमारामोत्सर्गे। धर्मार्थकाममोक्षेषु साधनं स्यादहर्निशम्। सेव्यन्तां सर्वभूतानि स्नानपानावगाहनैः ॥ ३ ॥ सोपानात्पतनात् खाते जलेनैव निमज्जनात्। मरणे वास्थिभङ्गे च कर्ता दोषैर्न लिप्यते ॥ ४ ॥ जलाशये मृतः कश्चिदस्थिभङ्गो यदा भवेत्। आत्मघाती च यस्तत्र कर्ता दोषैर्न लिप्यते ॥ ५ ॥ ततो नागयष्टीं सम्पूज्य प्रार्थयेत्। चक्रं सुदर्शनाख्यं त्वं नागदण्डीशरोगतम्। अत्र विघ्नस्य कर्तारं जहि दुष्टं हरिप्रिय ॥ (इदं यष्ट्यारोपणं कूपवाप्योर्न कार्यम्) ततो यजमानो जलाशये प्राङ्मुखो वा गङ्गादितीर्थजलानि प्रक्षिप्य जलाशयं स्पृष्ट्वा पञ्चमन्त्रान् पठेत्। कुरुक्षेत्रं गया गङ्गा प्रभासः पुष्कराणि च। एतानि पञ्चतीर्थानि तडागे (कूपे) निवसन्तु मे ॥ १ ॥ वितस्ता कौशिकी सिन्धुः सरयूश्च सरस्वती। एतानि पञ्च० ॥ २ ॥ दशार्णा

आचार्यो भूमौ यवान् क्षिप्त्वा तत्र कलशं संस्थाप्य अभ्यर्च्य आम्रपत्राष्टके अनन्त-वासुकि-तक्षक-कर्कोटक-पद्म-शंख महापद्म-कुलिशेत्यष्टौ नामानि विलिख्य तानि पत्राणि कुम्भे निधाय एकमाकृष्य तन्नामानं नागं जलाशयगेहानुसारेण द्वादश पञ्चदश-विंशत्यन्यतमारत्निमितायां यज्ञियकाष्ठस्थूणायामावाह्य सम्पूज्य च 'अयंनागोऽस्य जलस्य रक्षकोऽस्तु' इत्युक्त्वा 'ओं नागयष्ट्यै नमः' इति सम्पूज्य नागयष्टिशीर्षे लौहं चक्रं निधाय सम्पूज्य प्रार्थयेत्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुरला सिन्धू रथावर्ता दृषद्वती। एतानि पञ्च० ॥ ३ ॥ यमुना नर्मदा रेवा चन्द्रभागा च वेदिका। एतानि पञ्च० ॥ ४ ॥ गोमती वाङ्मती शोणो गण्डकी सागरस्तथा। एतानि पञ्च० ॥ ५ ॥ [1]वाप्युत्सर्गपक्षे प्रवाप्यां निवसन्तु मे, इत्यूहः। निखाते निवसन्तु मे इत्यप्यूहः। आरामे तीर्थावाहनमन्त्रेषु वृक्षेऽस्मिन् वनेऽस्मिन् निवसन्तु मे, इत्यूहः कार्यः। ततो वरुणप्रार्थना—प्रपद्ये वरुणं देवमम्भसाम्पतिमूर्जितम्। याचितं देहि मे पुण्यं सर्वपापापनुत्तये ॥ १ ॥ सान्निध्यमत्र तोयेऽस्तु तवेश मदनुग्रहात्। रुद्रान्प्रपद्ये वरदान् सर्वानप्सुषदस्त्वहम् ॥ २ ॥ शमयन्त्वशुभं पापं रक्षन्तस्तेऽप्सु मां सदा। आपः पुण्याः पवित्राश्च प्राणिनां प्राणदास्तथा ॥ ३ ॥ शमयन्त्वाशु मे पापं तस्माद्रक्षन्तु सर्वदा। ततः सोपानोपरि देवतास्थापनम् ॥ ह्रियै नमः ॥ १ ॥ श्रियै नमः ॥ २ ॥ शच्यै नमः ॥ ३ ॥ मेधायै नमः ॥ ४ ॥ विश्वायै नमः ॥ ५ ॥ लक्ष्म्यै नमः ॥ ६ ॥ इति जलाशयपश्चिमतटे रक्तवस्त्रे तण्डुलपुञ्जेषु संस्थाप्य। तत्तन्नाममन्त्रेण पूजनम्। यद्वा—जलमातृभ्यो नमः, इति मातृकापूजनं कृत्वा कश्चिद् ब्राह्मणं यथेष्टं दुग्धं पाययेत् ॥ तोष्याः कर्मकराः सर्वे कुद्दालानि च पूजयेत् ॥

अथ कुद्दालपूजनम्—विश्वकर्मणे नमः, इत्यनेन। कुद्दाल त्वं महाबाहो विधात्रा निर्मितः पुरा। पुत्रपौत्रधनायुष्यं देहि तुभ्यं नमोः नमः ॥ ततो यागम-

---

१ तडागादेरुपलक्षणम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मण्डपमागत्य आचार्यादयः वरणक्रमेणोदङ्मुखाः प्राङ्मुखयजमानहस्ते श्रेयःसम्पादनं कुर्युः। शिवा आपः सन्तु, इति यजमानहस्ते जलं दद्यात्। सौमनस्यमस्तु, इति पुष्पम्। अक्षतं चारिष्टञ्चास्तु इत्यक्षताः। दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्विति पुनर्जलम्। मया भवन्नियोगेन अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि यत् पूजनहवनप्रभृति आचार्यकर्म कृतं तदुत्पन्नं यच्छ्रेयः तत्तुभ्यमहं संप्रददे। श्रेयसे प्रतिगृह्यतामित्युक्त्वा यजमानहस्ते सपूगीफलाक्षतैर्जलं क्षिपेत्। यजमानः प्रतिगृह्णामीति वदेत्। एवं ब्रह्मसदस्यादयः। ततो ऋत्विजादयः मया भवन्नियोगेन तडागोत्सर्गहोममध्ये यथांशेन यः कृतो होमस्तस्माद्यदुत्पन्नं श्रेयस्तत्तुभ्यमहं संप्रददे। एवं प्रत्येकं दद्युः। ततो यजमान आचार्यं सम्पूज्य वस्त्रयुग्मं धेनुं दक्षिणाञ्चाचार्याय दद्यात्। कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं बार्हस्पत्यं वासोयुग्मं इमां सवत्सां धेनुं रुद्रदैवत्यां सुवर्णदक्षिणां च तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनीशाखाध्यायिनेऽमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति तद्धस्ते सकुशजलं क्षिपेत्। आचार्यः—ॐ स्वस्तीति ब्रूयात्। कोऽदादिति मन्त्रं पठेत्। **शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम्। सुवस्त्रधारिणं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ धेनो त्वं पृथिवी सर्वा यस्मात्केशव सन्निभा। सर्वपापहरा नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥** हिरण्यगर्भ०॥ इति मन्त्रान् पठेत्। ततो ब्रह्मसदस्यगाणपत्योपदेष्टॄणां पूजां विधाय। मुख्याचार्यसमां तदर्द्धमितां वा दक्षिणां दद्यात्। द्वारपालान् जापकं च सम्पूज्य ऋत्विग्भ्यस्तदर्धमाचार्याय तदर्धं जापकद्वारपालेभ्यस्तदर्द्धं गणपतिम-

॥१६३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्त्रजापकेभ्यश्च दक्षिणां दद्यात् । ततो नवग्रहप्रीत्यर्थं ज्योतिर्विदेऽपि हिरण्यं दद्यात् । ततो ग्रहवेदीसमीपस्थकलशोदकेन वरुणवास्तुयोगिनीक्षेत्रपालपीठकलशोदकेन च पात्रान्तरे उद्धृत्य पञ्चपल्लवदूर्वाभिः उदङ्मुखाः आचार्यादयः तिष्ठन्तः प्राङ्मुखोपविष्टं सकुटुम्बं यजमानं अभिषिञ्चेयुः । अभिषेके पत्नी वामभागे तत्र गीतवाद्यादिमङ्गलघोषः कार्यः । तत्र मन्त्राः—आपो हि ष्ठा० ॥ ३ ॥ त्रातारमिन्द्र० ॥ १ ॥ त्ववरुणस्योत्तं० ॥ १ ॥ भगप्रणेतर्भगसत्यरा धीभगे मान्धियं मुदवा ददन्नः । भगप्रनो जनय भगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिः नृवन्तः स्याम ॥ १ ॥ इदमापः प्र० ॥ १ ॥ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा शरीराय त्वा व्वाताय स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा ऽप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा । अवस्यवेत्वा वाताय स्वाहा शिमिदाय त्वा व्वाताय स्वाहा ॥ १ ॥ पुनन्तु मा० ॥ ८ ॥ आप्यायस्व० ॥ १ ॥ पञ्चनद्यः स० ॥ १ ॥ शिरो मे श्रीः० ॥ ५ ॥ देवस्यत्वा० ॥ ३ ॥ सोमस्यत्वा० द्युम्नेनाभिषिञ्चाम्यग्ग्नेर्ब्भ्राजसा सूर्य्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण । क्षत्राणाङ्क्षत्रम्पतिरेध्यति दिद्यून्पाहि ॥ पौराणास्तु--सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु० इत्यादि इत्येतैर्मन्त्रैरभिषिञ्चेत् ॥ ततो यजमानः सर्वौषधीभिः सर्वगन्धैश्च शरीरमुद्वर्त्य सूष्णोदकेन शीतोदकेन वा अवभृथस्नानं कृत्वा शुक्लाम्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः शुक्लमाल्यादिपरिगृहीतः प्रसन्नचित्तो यजमानो वेदीसमीपे गत्वा वास्तुगृहयोगिनीक्षेत्रपालवरुणमण्डलपीठदेवतानां च गन्धाद्युपचारैरुत्तरपूजां वि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धाय पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य साष्टाङ्गं नत्वा--आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ मन्त्र-हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ६ ॥ इति मन्त्रैः पीठपञ्चके क्षमापयेत् । ततः उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० । यान्तु देवगणाः० । इति मन्त्राभ्यां पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण प्रस्थापितसर्वपीठदेवता विसर्जयेत् । कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणः साङ्ग-तासिद्ध्यर्थमिमानि वास्तुपीठग्रहयोगिनीक्षेत्रपालवारुणमण्डलपीठानि सोपस्कराणि दक्षिणासहितानि आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । इति दद्यात् । दानसाङ्गतासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां तुभ्यं० ॥ ततः 'अग्नये नमः' इत्यग्निं गन्धादिभिः सम्पूज्य । व्वयर्ट० हित्वा प्प्रयति यज्ञेऽअस्मिन्नग्ने होतारमव्वृ-णीमहीह । ऋधगया ऋधगु० ॥ १ ॥ अनुवीरैरनुपुष्पास्सगोभिरन्वश्वैरनुसर्वेण पुष्टैः । अनुद्विपदानुचतुष्पदा व्वयन्देवा नो यज्ञमृतु थानयतु ॥ २ ॥ यज्ञ यज्ञं गच्छ० ॥ ३ ॥ इति मन्त्रैः । गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थानं कुण्डमध्यतः । हव्यमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे ॥ गच्छ गच्छ० । इति मन्त्राभ्यामग्निं विसर्जयेत् । ततः यान्तु देवगणाः, इति सर्वा मण्डपदेवता द्वारदेवताश्च विसृज्य कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणः सम्पूर्ण-फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थममुं मण्डपं ध्वजपताकाद्युपस्कारयुतं दक्षिणासहितं आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति तद्धस्ते साक्षतं जलं क्षिपेत् । नमः स्वस्तीति प्रतिवचनं ब्रूयात् । ततो यज्ञपात्राणि पूजोपकरणानि चाचार्य्याय दद्यात् । सत्प्रतिपत्तिरूपत्वान्नात्र संकल्पवाक्यम् । ततः कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणः सम्पूर्णतासिद्धये यथोपपन्नेनान्नेन यथाकालं नानानामगोत्रान्नानाशर्मणोऽमुकसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये । इति संकल्प्य कृतस्य तडागोत्सर्गकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं नानावेदान्तर्गतनानाशाखाध्यायिभ्यो नानागोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे न मम । ॐतत्सत् ब्रह्मार्पणमस्त्विति । ततः—ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥ मया यत्कृतं यथाकालं यथादेशं यथाज्ञानं यथाशक्ति च तडागोत्सर्गाख्यं कर्म तेन श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् । ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । ततः सदस्यादींश्चन्दनाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य । अञ्जलिं बद्ध्वा । मया यत्कृतं तडागोत्सर्गाख्यं कर्म तत्कालहीनं भक्तिहीनं शक्तिहीनं श्रद्धाहीनं च भवतां ब्राह्मणानां वचनाद् सर्वं परिपूर्णमच्छिद्रमस्तु । इति प्रार्थयेत् । एवमेव सर्वे ब्राह्मणाः सम्पूर्णमच्छिद्रं चास्तु । इति वदेयुः । प्रमादात्कु० । विष्णवे नमः ३ इति त्रिः । ततस्तेषां मन्त्राशिषो गृहीत्वा तान् सानुनयं विसृज्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा दीनानाथांश्चान्नादिना सन्तोष्य स्वयं सुहृन्मित्रादियुतः सोत्साहसन्तुष्टो हविष्यं भुञ्जीत ॥

इति लघुदर्पणे तडागोत्सर्गप्रयोगः समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ प्रकारान्तरेण वारुणमण्डलदेवतास्थापनक्रमः ।

अथ वारुणमण्डलदेवतास्थापनम्--अस्मिन् तडागोत्सर्गकर्मणि वारुणमण्डलदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये । पूर्वपत्रे–सूर्याय० सूर्यम्० १ । आग्नेयपत्रे–सोमाय० सोमम्० २ । दक्षिणपत्रे–भौमाय० भौमम्० ३ । नैर्ऋत्यपत्रे–बुधाय० बुधम्० ४ । पश्चिमपत्रे–बृहस्पतये० बृहस्पतिम्० ५ । वायव्यपत्रे–शुक्राय० शुक्रम् ६ । उत्तरपत्रे–शनैश्चराय० शनैश्चरम्० ७ । ईशानपत्रे–राहवे० राहुम् ८ । आरासु-केतुभ्यो० केतून् आ० ९ । पुनः पूर्वादिक्रमेण । इन्द्राय० इन्द्रम्० १० । अग्नये० अग्निम्० ११ । यमाय० यमम्० १२ । निर्ऋतये० निर्ऋतिम्० १३।वरुणाय० वरुणम्० १४।वायवे० वायुम्० १५।सोमाय० सोमम्० १६।ईशानाय० ईशानम्० १७।वायुसोमध्ये आरासु--वसुभ्यो० वसून्० १८।सोमेशान्तराले–रुद्रेभ्यो० रुद्रान्० १९।ईशानेन्द्रान्तराले–आद्वादशादित्येभ्यो० आद्वादशादित्यान्० २०।इन्द्राग्न्यन्तराले--अश्विभ्यां० अश्विनौ० २१। अग्नियमान्तराले--विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान्देवान्० २२। यमनैर्ऋत्यान्तराले--सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षान्० २३ । निर्ऋतिवरुणान्तराले--भूतनागेभ्यो० भूतनागान्० २४। वरुणवाय्वन्तराले--गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आ० २५ । अथ सौम्याद्यष्टपत्रेष्वन्तराले--स्कन्दाय० स्कन्दम्० २६। दक्षादिभ्यो० दक्षादीन्० २७ । दुर्गायै० दुर्गाम्० २८। तत्रैव–विष्णवे० विष्णुम्० २९। स्वधाकाराय० स्वधाकारम्० ३०। मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगान्० ३१। गणपतये० गणपतिम्० ३२। अद्भ्यो अपः आ० ३३। मरुद्भ्यो० मरुतः आ० ३४। अथ कर्णिकामध्ये–वरुणाय० वरुणम्० ३५।द्वितीय-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केसरमूलेषु उत्तरादितः—ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्० ३६।विष्णवे० विष्णुम्० ३७। रुद्राय० रुद्रम्० ३८। लक्ष्म्यै० लक्ष्मीम्० ३९। अम्बिकायै० अम्बिकाम्० ४०। सावित्र्यै० सावित्रीम्० ४१। सरिद्भ्यो० सरितः आ० ४२। समुद्रेभ्यो० समुद्रान्० ४३। ब्रह्मणः पादमूले—भूतग्रामाय० भूतग्रामम्० ४४। ततो नाम्ना कर्णिकोपरि—मेरवे० मेरुम् ४५। बाह्यपरिधौ सोमादिसमीपे—गदायै० गदाम्० ४६। त्रिशूलाय० त्रिशूलम्० ४७। वज्राय० वज्रम्० ४८। शक्तये० शक्तिम्० ४९। दण्डाय० दण्डम्० ५०। खड्गाय० खड्गम्० ५१। पाशाय० पाशम्० ५२। अङ्कुशाय० अङ्कुशम् ५३। तद्बाह्योत्तरादितः—गौतमाय० गौतमम्० ५४। भरद्वाजाय० भरद्वाजम्० ५५।विश्वामित्राय० विश्वामित्रम्० ५६। कश्यपाय० कश्यपम्० ५७। जमदग्नये० जमदग्निम्० ५८। वशिष्ठाय० वशिष्ठम्० ५९। अत्रये० अत्रिम्० ६०। अरुन्धत्यै० अरुन्धतीम् ६१। तद्बाह्ये पूर्वादितः--ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीम्० ६२। कौमार्यै० कौमारीम्० ६३। ब्राह्म्यै० ब्राह्मीम्० ६४। वाराह्यै० वाराहीम्० ६५। चामुण्डायै० चामुण्डाम्० ६६। वैष्णव्यै० वैष्णवीम्० ६७। माहेश्वर्यै० माहेश्वरीम्० ६८। वैनायक्यै० वैनायकीम्० ६९। इत्यावाह्य । मनो जूति० । सूर्याद्यावाहितदेवताः सुप्रति० । इति प्रतिष्ठाप्य । सूर्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति सम्पूज्य । तत्तन्मन्त्रैः पायसबलिं दद्यात् ।

अथ वृक्षारोपणविधिः—अश्वत्थमेकं पिचुमन्दमेकं न्यग्रोधमेकं दश तिन्तिणीश्च । [1]कपित्थबिल्वामलकत्रयं च पञ्चाम्रवापी नरकं न पश्येत् ॥

१ बिल्वाश्वत्थौ यदा भिन्द्यात्तदा चान्द्रायणं चरेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्र मार्जनखननदहनादिना भूमिशुद्धिं विधाय। आचम्य। प्राणानायम्य। देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम कायिकाद्यशेषपापक्षयपूर्वकं दश पूर्वान् दशापरानात्मना सहैकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुकामो वृक्षारोपणमहं करिष्ये। तदङ्गभूतं वास्तुपूजनं ग्रहपूजनं क्षेत्रपालपूजनं दिक्पालपूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च कृत्वा सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य। वास्तुपूजनादि विधाय। भूमौ जानुमात्रमवटं खनित्वा। गन्धपुष्पादियुतं शुद्धोदकमासिच्य। तस्मिन् गर्ते पञ्चरत्नं प्रक्षिप्य। रोप्यमाणं वृक्षं गन्धपुष्पाक्षतैर्विभूषितं कृत्वा तस्मिन्नवटे रोपयेत्। ते मन्त्राः—नमो हिरण्यबाहवे० १। नमो रोहितायस्थ० २। ये वृक्षेषु० ३। वनस्पतिरवसृष्टोनपाशैस्मन्यसमञ्जञ्छमितानदेवः। इन्द्रस्यहव्यैर्जठरम्पृणानःस्वधाति यज्ञं मधुना घृतेन ४। वनस्पते वीड्वङ्गो० ५। इत्येतैर्मन्त्रैर्वृक्षारोपणं विधाय—आवाहयाम्यहं सर्वान्वृक्षान्वै देवरूपिणः। वनस्पतिरिति मन्त्रेण स्थापिताः प्रभवो मया॥ वनस्पते वीड्वङ्ग०। इति मन्त्रेण गन्धपुष्पाक्षतवासोभिः पूजयित्वा शुद्धमृदा गर्तं पूरयित्वा दुग्धोदकाभ्यामुपसेचनं च कृत्वा दशदिक्षु माषतण्डुलबलीन् दद्यात्। कर्मणः समृद्ध्यर्थं गां च दत्त्वा ब्राह्मणान् भोजयित्वा भूयसीं च दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। इति लघुदर्पणे वृक्षारोपणविधिः॥

अथ आरामप्रतिष्ठाप्रयोगः—आरामात्पश्चिमोदगैशानीप्रागन्यतमदिशि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षोडशहस्तं छायामण्डपं कृत्वा मण्डपमध्ये शुद्धासने उपविश्य। आचम्य। प्राणानायम्य। देशकालौ० मम सर्वपापक्षयपूर्वकमतीतानागतपितृकुलोत्तारणकामो भगवत्प्रीतिकामश्चारामप्रतिष्ठापनमहं करिष्ये। वृक्षप्रतिष्ठायां तु–देशकालौ० इन्द्रायुतत्रयकालव्यापिस्वर्गवासभूतभव्यस्वरोमसमसंख्यस्ववंश्यमनुष्यतारणापुनरावृत्तिदुर्लभपरमसिद्धिप्राप्तिकामोऽस्य वृक्षस्य (वृक्षयोर्वृक्षाणां वा) प्रतिष्ठां करिष्ये। इति संकल्प्य। गणपतिपूजनादिवरणान्तं कृत्वाऽऽचार्यः–यदत्र०। इति सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य। ततो यथोक्तां शङ्कुरोपणादिबल्यन्तवास्तुपूजां कुर्यात्। ततश्चतुरस्रपीठिकामध्ये कृतालवालान् वृक्षान् सर्वौषध्युदकैः सिक्त्वा हरिद्रायुक्ततण्डुलपिष्टोदकैः पुष्पमालाभिर्वासोभिश्चालङ्कृत्य। सुवर्णसूच्या प्रतिवृक्षं स्कन्धसमीपे पत्रादौ करौ प्रकल्प्य कर्णवेधं तदुपरि प्रदेशे रौप्यशलाकया वृक्षपत्रे नेत्राञ्जनं कज्जलेन कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्त्वा। ततो वृक्षमूलवद्धचतुरस्रपिण्डिकोपरि सप्तधान्यानि प्रक्षिप्य तेषु जलपूर्णान् सोपस्करान् अष्टौ ताम्रकलशान् वृक्षेषु प्रतिवृक्षमेकैकं मन्त्रतः स्थापयेत्। आगच्छन्तु महावृक्षा वाटिका स्थापिता मया। फलपुष्पैः समाकीर्णा भवन्तु मम सर्वदा॥ तत्र–वनस्पतये नमः, इति वनस्पतिमावाह्य सम्पूज्य ततोऽग्निस्थापनं ग्रहस्थापनं च यथोक्तं कुर्यात्। ततः सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च कृत्वा। तत्र मण्डलमध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य। तत्र ताम्रपात्र्यां प्रतिवृक्षं सप्ताष्टौ वा सुवर्णरौप्यान्यतरतत्तद्वृक्षफलाकाराणि फलानि वेद्यां कुर्मादिपात्रोस्थाने–वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धोऽ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

असिवीडयस्व स्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥ इति मन्त्रेणासादयेत् । ततो ब्रह्माणं शिवं विष्णुं गणपतिं श्रियमम्बिकां भूतग्रामं च संस्थाप्य सर्वान् पूजयेत् । ततः सर्वेभ्यो बलीन् दत्त्वा । ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कुर्यात् । ततो द्रव्यत्यागं कृत्वा ग्रहहोमवास्तुहोम-मण्डलदेवताहोम-प्रधानहोमाः कार्याः । ब्रह्मादिदेवताः समिदाज्यादिद्रव्यैर्यथासंख्यं जुहुयात्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने० १। ॐ सत्वन्नो अग्ने० २। ॐ इमंऽमे वरुण० ३। ॐ तत्वायामि० ४। ॐ ये ते शतम्० ५। ॐ अयाश्चाग्ने० ६। ॐ उदुत्तमम्० ७। ॐ उरुर्ँ हि राजा० ८। ॐ वरुणस्योत्तम्० ९। ॐ अग्नेरनीकं० १०। इति दशाज्याहुतीर्हुत्वा स्थालीपाकहोमः कार्यः—ॐ अग्नये स्वाहा १। ॐ सोमाय० २। ॐ वरुणाय० ३। ॐ यज्ञाय० ४। ॐ भीमाय० ५। ॐ उग्राय० ६। ॐ शतक्रतवे० ७। ॐ व्युष्ट्यै० ८। ॐ स्वर्गाय० ९। ततो—ॐ वनस्पते० । इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतसंख्यया पालाशसमित्-कृष्णतिलाज्याहुतीर्जुहुयात् । ततः सर्वे फलाहारं शुद्धोपोषणं वा कृत्वा रात्रौ जागरणं कुर्युः । ततः प्रभाते स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कुर्यात् । त्रिवृता सूत्रेणारामं वेष्टयेत् । दुग्धधारया च । ततः वृक्षसमीपे ध्वजारोपणं पेटिकारोपणं च कृत्वा । ततो यजमानो वनसमीपे उपविशेत् । आचार्यश्च वेद्यामधिवासितानि सर्वाणि फलानि वंशपात्रे कृत्वा प्राङ्मुखः सप्तभिरष्टभिर्वा फलैः सजलैः प्रत्येकं तान् वृक्षान् स्नापयेत् । याः फली, इति मन्त्रेण फलाकृतीस्तद्वृक्षे बद्ध्वा फलैर्वृक्षान् भूषयेत् । ततो यजमानः शुभलग्ने सोपस्करां गां वृक्षमध्यादुदङ्मुखीमुत्सृजेत् । तत्र मन्त्रः—"इममारामं पवित्रं कुरु० ते च" । एकवृक्षप्रतिष्ठायां वृक्षाधस्तादुत्सृजेत् । "इमं वृक्षम्" पवित्रं इत्यूहः । ईशान्यां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गत्वा गोपुच्छोदकेन देवपितॄन् संतर्प्याचार्याय पञ्चोपचारैः सम्पूज्य गां दद्यात् । "वनस्पतिभ्यो नमः" इति वृक्षेषु वनस्पतिं सम्पूज्य । एकं विप्रं यथेष्टं दुग्धं पाययेत् । आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य भूयसीं संकल्पयेत् । ततो यजमानायाभिषेकः स्थापितदेवतानामुत्तर-पूजनं च ।। ततस्ता "यान्तु देवगणाः" इति विसृज्य पीठान्याचार्याय दद्यात् । ततोऽग्निं विसृज्य "यस्य स्मृत्या" इति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे आशमादिप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ।।

अथ घट्टगोपुरसेतुबन्धमठधर्मशालाद्युद्यापनप्रयोगः—तत्र यथोक्ते प्रशस्ते काले प्राक्प्रवणे देशे मण्डपं विधाय मध्ये प्रधानवेदीम् उत्तरतः पश्चाद्वा कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय । तदीशान्यां ग्रहवेदीं नैर्ऋत्यां वास्तुवेदीं च विदध्यात् । अथ कृच्छ्रादिनाऽऽत्मानं पावयित्वा कृतमङ्गलस्नानोऽहते वाससी परिधाय यजमानः सपत्नीकः आसने उपविश्य आचम्य पवित्रपाणिः प्राणानायम्य । देशकालौ० मम सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानेककल्पावच्छिन्नस्वर्गलोकवासपरार्धद्वयावच्छिन्नस्वर्गलोकवासपरार्धद्वयावच्छिन्नवरुणलोकगमनपूर्वकविष्णुपद-प्राप्त्यर्थं कृतैतद्घट्टादीनां उक्तविधिना उत्सर्गमहं करिष्ये । (घट्टोत्सर्गं घट्टाद्युत्सर्गं) करिष्ये । अमुकतीर्थतीरसम्बन्धिधर्मशालादौ तु संकल्पे तत्तत्पदोल्लेखः कर्तव्यः । मम श्रीराधारमणवास्तु-पुरुषवरुणदेवताप्रीतिद्वारा राधारमणधर्मशालाकूपप्रतिष्ठाकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थं सग्रहमखराधारमण-योश्चरणप्रतिष्ठां धर्मशालाकूपयोरुत्सर्गं च तन्त्रेण करिष्ये । इति संकल्प्य । गणेशपूजनादिनान्दी-श्राद्धान्तं (अस्मिन् घट्ट-गोपुर-सेतुबन्ध-मठ-धर्मशालाद्युत्सर्गकर्मणि आचार्यं त्वामहं वृणे,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्याचार्यादिवरणान्तं कुर्यात् । ततः आचार्यः "यदत्र" इति सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य शङ्कुरोपणादिवास्तुपूजां सम्पाद्य मण्डपादेः पूजादिकं कुर्यात् । ततो मुख्यवेद्यां वारुण-मण्डलं निर्माय । तत्र कलशे हैमीं वरुणप्रतिमां संस्थाप्य सम्पूज्याग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहवेद्यां साङ्गग्रहान् कलशं च प्रतिष्ठाप्य ततः स्वगृह्योक्तविधिना चरुश्रपणपूर्वकमाज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमं कुर्यात्। ततोऽवदानधर्मेण समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यान्त्यनिविशमानाः। इन्द्रो या वज्री वृषभोरराद ताऽआपो देवीरिह मामवन्तु स्वाहा ॥१॥ याऽआपो दिव्या ऽउतवा स्रवन्ति खनित्रि माऽउत वयाः स्वयं जाः । समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ताऽआ० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृतेऽअवपश्यञ्जनानाम् । मधुश्च्युतः शुचयो यापावकास्ता० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यामूर्जंमदन्ति । वैश्वा-नरोयास्वग्निः प्रविष्टास्ता स्वाहा० ॥४॥ इति सूक्तेन प्रत्यृचमाज्याहुतीर्हुत्वा । तत्वा-यामि० स्वाहा ॥ १ ॥ तदिदन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुस्तदयं केतोर्हृदऽआविचष्टे । शुनः शेपो यमयमह्वादिगृभीतः सोऽअस्मान् राजा वरुणो मुमोक्तु स्वाहा ॥२॥ शुनः शेपोह्यह्णाद्गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः । अवैनं राजा वरुणः स सृज्याद्विद्वाँऽअदब्धो विमुमोक्तु पाशान् स्वाहा ॥ ३ ॥ अव ते हेडो वरुण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमोभिरवयज्ञेभिरोमहे हविर्भिः। क्षयन्नस्मभ्यमसुरप्रचेता राजन्नेनांसिशिश्रथः कृतानि स्वाहा ॥ ४ ॥ उदुत्तमं० स्वाहा ॥ ५ ॥ इति पञ्चभिः प्रत्यृचं चर्वाहुतीर्जुहुयात्। ततः--ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा १। ॐसत्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा २। इति द्वाभ्यां प्रत्यृचं चर्वाहुतोर्हुत्वा। इमं मे० स्वाहा १ इत्येकया चर्वाहुत्या हुत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषं समापयेत्। यतस्त्रिवृत्सूत्रवेष्टनं दुग्धधारां जलधारां वास्तुनिक्षेपं जलजन्तुनिक्षेपं च कृत्वा गामुदकमुत्सृजेत्। ततः यजमानो यव-कुशजलान्यादाय देशकालौ० मम सर्वपापक्षयपूर्वकरुद्रालयगमनानेककल्पावच्छिन्नस्वर्गलोकवासपरा-र्धावच्छिन्नवरुणलोकगमनपूर्वकविष्णुपदप्राप्त्यर्थममुं घट्टं गोपुरं मठधर्मशालादियुतं आत्मसहितं केवलं वा स्नानजलपानावतारणार्थं नित्यनैमित्तिककाम्यनानाविधक्रियार्थमुपवेशनार्थं च शिलादिना निर्मितं सर्वभूतेभ्योऽहमुत्सृजे न ममेति जलं त्यक्त्वा पठेत्--"सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टो -मयैषो घट्ट उत्तमः। रमन्तां सर्वभूतानि स्नानपानोपवेशनैः॥ भेदाग्रहेण भूतेभ्यो घट्ट-स्त्यक्तो मयाधुना। सोपानात्पतितः स्वापात् खाते चैव निमज्जनात् ॥ मरणे चास्थिभङ्गे च कर्ता दोषैर्न लिप्यते। पुष्करिण्यां मृतः कश्चिदस्थिभङ्गो यदा भवेत्॥ आत्मघातेन घट्टेऽस्मिन् कर्ता दोषैर्न लिप्यते॥" सर्वभूतान्तर्गतत्वेन आत्मी-यपुत्रदारादयुद्देशेनाप्युत्सर्गादपत्यभावाच्च स्वस्य पुत्रादेश्च तत्रोपवेशनादौ न दोषः, विक्रय तु दोषः स्मर्यतेऽन्यत्र। ग्रन्थगौरवभयेन नेह लिख्यते। अथ देशकालौ० मम श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा सकूप-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धर्मशालोत्सर्गकल्पोक्तफलप्राप्त्यर्थमिमां धर्मशालां सकलजनानां धर्मवासार्थमिमं कूपं च वरुणदेवताकं सर्वभूतेभ्यः अहमुत्सृजे न मम। "यथाज्ञानेन वित्तेन चोत्सर्गोऽत्र कृतो मया। प्रीणातु तेन भगवान् सर्वव्यापी जनार्दनः॥" ततो गङ्गायाः प्रधानपूजनं कृत्वा आचार्यादिभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात्। ततो यजमानायाभिषेकं कुर्यात्। ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजां विधाय आचार्याय वरुणप्रतिमां सोपस्करां ग्रहपीठं वास्तुपीठं मण्डपं च दद्यात्। ततोऽग्निं विसृज्य ब्राह्मणभोजनं संकल्प्य भूयसीं दत्त्वा—यस्य स्मृत्या०, इति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। इति लघुदर्पणे घट्टगोपुरसेतुबन्धमठधर्मशालाद्युद्यापनप्रयोगः समाप्तः॥

अथ प्रतिष्ठोद्यापनाधिकारिनिर्णयः--तत्र गौतमः--"होमं चैव वृषोत्सर्गं प्रतिष्ठां दैविकं तथा। मनसा मन्त्रमुच्चार्य कुर्वन् तत्र न दोषभाक्॥ वैदिकानि च कर्माणि सदा वर्णत्रयेण तु। तेषु कर्मसु शूद्रस्य नाधिकारो विधीयते॥ तूष्णीमेव हि शूद्रस्य स्त्रीणां च कुरुनन्दन॥ शूद्रादिषु च सोङ्कारं यो मन्त्रं मनसाऽपि च॥ उच्चरेत्स द्विजो रौद्रं नरकं प्रतिपद्यते। पत्न्यां रजस्वलायां वा सूतिकायामथापि वा॥ स्थापने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च। वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च॥ पुनः संस्कारकर्ता च लभते मौक्तिकं फलम्।" अथ द्विजातिस्त्रीणां प्रतिष्ठोद्यापनादौ साक्षादधिकारोऽस्ति न वा? उच्यते। "द्विजो वा द्विजनारी वा त्यक्त्वा शङ्करपूजनम्। यदि भुङ्क्ते तदा योनिं चाण्डालीं प्राप्यते ध्रुवम्॥" इति ब्रह्मवैवर्तवचनेन द्विजनार्याः साक्षात्पूजनादावधिकारस्य स्पष्टं बोधिततया "ब्रह्मा तु ब्राह्मणैः स्थाप्यः" इत्यादिदेवीपुरा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णादिघटकब्राह्मणादिपदबोध्यगतलिङ्गस्योद्देश्यविशेषणत्वेनाविवक्षिततया च स्त्रीणामप्यधिकारो निर्विवाद एव सिद्ध्यति । अत एव शिष्टाचारोऽपि मध्यदेशे एवमेव प्रचरति । किं च स्त्रीणां विवाहाग्निहोत्रादौ मन्त्रपाठाद्यधिकारस्य ग्रन्थकारैर्बहुशो निरूपितत्वेन वैदिककर्मण्यप्यधिकारः सिद्ध एवेति कृतं पल्लवितेन । गृह्यकारिकायाम्--लाजहोमे मन्त्रत्रयं सूर्यस्यावेक्षणे सकृत् । भगाय त्वेकमन्त्रश्च कन्या पठति पञ्चकम् ॥ स्कान्दे--यज्ञेषु मन्त्रवत्कर्म पत्नी कुर्याद्यथा नृप । तथौर्ध्वदैहिकं कर्म कुर्यात्सा धर्मसंस्कृता ॥

अथ वापीकूपतडागारामदेवतायतनादौ भूम्यादिपूजनविधिः

—आदौ याजको यज्ञस्थलं निश्चित्य तत्र दहनखननसम्प्लावनसमीकरणादिना भूमिं संशोध्य । तत्पश्चिमदेशे गोमयादिसंमार्जितभूमौ यजमानो ब्राह्मणैः सहोपविश्याऽऽचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० गोत्रः शर्मा अस्यां भूमौ करिष्यमाणगृहनिर्माणकरणे शुभत्वसिद्ध्यर्थं (प्रासादनिर्माण, वापीखनन, कूपनिर्माण, तडागनिर्माण, आरामनिर्माण, वृक्षारोपण) कर्मणि शुभत्वसिद्ध्यर्थं करिष्यमाणामुककर्माङ्गत्वेन कुण्डमण्डपादिनिर्माणं कर्तुमविघ्नतापरिसमाप्त्यर्थं भूमिकूर्मानन्तवराहविश्वकर्मणां पूजनं तेभ्यः सदीपदधिसक्तुलाजपायसबलिदानं विश्वकर्मण आयुधानां पूजनं च करिष्ये । तत्रादौ गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गणपतिं सम्पूज्य पुण्याहवाचनं कुर्यात् । अत्र भूम्यादिपूजनाख्यस्य कर्मणः पुण्याहमित्यादिविशेषः । ततः तण्डुलपुञ्जेषु देवताः आवाहयेत् । तत्रादौ कूर्मपृष्ठोपरिस्थितां शुक्लवर्णां चतुर्भुजां पद्मशङ्खचक्रशूल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धरां प्रसन्नाननां भूमिं ध्यात्वा—"आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथिवि ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाऽभिवन्दिता ॥ स्योना पृथि०। भूम्यै० भूमिमावा० ॥ १ ॥ कूर्माय० कूर्मम् ॥ २ ॥ अनन्ताय० अनन्तम्० ॥ ३ ॥ वराहाय० वराहम्० ॥४॥ विश्वकर्मणे० विश्वकर्माणम्० ॥ ५ ॥ एवं देवतापञ्चकमावाह्य। "भूम्यादिदेवताभ्यो नमः" इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा अर्घ्यं दद्यात्। जानुभ्यां धरणीं गत्वा तोयक्षीरकुशाग्रतिलतण्डुलयवसर्षपफलगन्धपुष्पाणि ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य। उद्धृताऽसि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं त्वं प्रतिष्ठिता॥ १ ॥ ब्रह्मणा निर्मिता देवि विष्णुना शङ्करेण च। पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च ॥ २ ॥ यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता ॥ ३ ॥ मण्डपं (गृहं तु, प्रसादं) कारयाम्यद्य तवोपरि सुलक्षणम्। वाप्यादौ तु–वापीं च (कूपं तु, तडागं, आरामं, वृक्षं तु) कारयाम्यद्य अन्तरे तव शोभने। इति विशेषः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव ॥४॥ "भूम्यै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि" इति अर्घ्यं दद्यात् ॥ ततः "स्योना पृथिवी" इति मन्त्रेण भूम्यै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिसक्तुलाजपायसबलिं समर्पयामि, इति दत्त्वा प्रार्थयेत—"सर्वबीजसमायुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते। पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते॥ इष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वामहं शरणं गतः। पुत्रदारधनायुष्यधर्मवृद्धिकरी भव॥ निर्विघ्नं कुरु मे देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।" ततः क्रमेण कूर्मानन्तवराहविश्वकर्मभ्यो बलिं दत्त्वा 'विश्वकर्मणे नमः' इति आयु-

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धपूजां कृत्वा तं प्रार्थयेत्—"अज्ञानात् ज्ञानतो वाऽपि दोषाः स्युश्चाऽनयोद्भवाः। नाशय त्वं हि तान् सर्वान् विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥" ततः खनित्रीपूजां कृत्वा प्रार्थयेत्—"त्वष्ट्रा विनिर्मितं पूर्वं लोकानां हितकाम्यया। पूजिताऽसि खनित्रि! त्वं सिद्धिदा भव नाऽधुना ॥" शङ्कुपूजनं रज्जुपूजनं च। ततः ब्राह्मणदैवज्ञशिल्पिनः सम्पूज्य। यथाशक्ति तेभ्यो दक्षिणां दत्वा भूयसीं च दत्वाऽऽशिषो गृहीत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। ततो भूमौ साष्टाङ्गं नमस्कृत्य दिक्साधनादि कुर्यात्।

इति लघुदर्पणे भूम्यादिपूजनविधिः समाप्तः ॥

अथ कुण्डमण्डपप्रकारः—ऊर्ध्वबाहो समभूगतस्य कर्तुः शरांशः प्रपदोच्छ्रितस्य। यो वा सहस्तोऽस्य जिनां २४ शकोऽपि स्यादङ्गुलं तत्तदिभां ८ शका ये ॥ १ ॥ यवो यूका च लिक्षा च बालाग्रं चैवमादयः। कृतमुष्टिकरोऽरत्निररत्निरकनिष्ठिकः ॥ २ ॥ रज्जुं द्विघ्नां मध्यचिह्नां सपाशां प्राच्यां शङ्कौ पश्चिमे चापि दत्त्वा। कर्षद्धिमान् दक्षिणे चोत्तरे च तच्चिह्नं स्याद्दक्षिणा चोत्तरा दिक् ॥ ३ ॥ उच्चां भूमिं मण्डपस्य प्रकुर्याद्धस्तोन्मानामर्धहस्तोन्मितां वा। दश १० सूर्य १२ करोन्मितोऽधमः स्यादिने १२ शक्र १४ प्रमितैः करैस्तु मध्यः। धृति १८ भूप १६ करोन्मितो वरीयान्नख २० हस्तोऽप्यथ मण्डपस्तुलायाम् ॥ ४ ॥ दिगन्तराले द्विकरं भवेद्वा चतुष्टयं वेद ४ गजा ८ ङ्गुलैस्तत्। विवर्द्धितं मध्यवरिष्ठयोः स्याद्वेदोत्रिभागेन समा करोच्चा ॥ ५ ॥ ईशानभागे ग्रहवेदिका तु हस्तोन्मितोच्छ्रायवती त्रिवप्रा। "द्विरङ्गुलोच्छ्रितो वप्रः प्रथमः समुदाहृतः। त्र्यङ्गुलोच्छ्रायसंयुक्तं वप्रद्वयमथोपरि ॥ द्वयङ्गुलस्तत्र विस्तारः सर्वेषां कथितो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बुधैः ।" "समत्रित्रिभागे च सूत्रं प्रदद्यादुदग्दक्षिणं चापि पूर्वापरं च । ततस्त्र्यंशपूर्तौ च कोणेषु दद्यात्समस्तम्भकान् द्वादशैवेषु ५ हस्तान् ॥ वेद्याः कोणे हस्तिहतोच्चवेदस्तम्भान् दद्याद्वह्निदिक्तः सचूडान् । प्रादक्षिण्यात्पञ्चमांशं तु भूमौ दद्यादेवं षोडशस्तम्भसंस्थाः ॥ स्तम्भेषु तिर्यग्वलिका निधेयाश्चूडासु कर्णेष्वथवा बहिस्थाः । पूर्वापरं दक्षिणसौम्यदिक्स्थं कोणान्तरे काष्ठचयं निदध्यात् ॥ मध्यभागशिखरं रचयित्वा छादयेदपि कटैर्ऋजुवंशैः । द्वारवर्जमिह मण्डपमेनं स्तम्भकानपि सुवस्त्रसमूहैः ॥ १० ॥ पूर्वादिदिक्षु रचयेदपि तोरणानि न्यग्रोधजन्तुफलपिप्पलप्लक्षराजैः । अश्वत्थजन्तुफलपर्कटिभूरिपद्भिर्वैषामभावत इमान्यथवैककेन । हस्ताद् बहिर्मण्डपतः शरा ५ ङ्ग ६ स्वरैः ७ करैस्तान्यधमादिकेषु । दीर्घाणि च प्राहुरथायतिः स्यात्तेषां द्विहस्ताचरणाग्रवृद्ध्या ॥ स्तम्भार्धमानं फलकं तु तिर्यक् भवे ६ श ११ विश्व १३ प्रमिताङ्गुलाश्च । तन्मूर्ध्नि कीलाः स्वतुरीयभागस्ततस्तु शूलाकृतयश्च ते स्युः ॥ तद्वेशनं द्वि २ त्रि ३ युगा ४ ङ्गुलानि शैवे तु विष्णोर्यजनेऽङ्गुलर्द्धिः । कीलेषु शङ्खारिगदाम्बुजाङ्केष्विष्वे ५ शरोपः किल तोरणेषु ॥ यद्दैवत्यः क्रतुः कार्यो वाहनान्यायुधानि वा । तत्र तत्र न्यसेद्धीमानङ्गुलैः षोडशाधिकैः ॥ दीर्घाणि कुर्वीत इत्यर्थः । पूर्वस्मिंस्तोरणे रक्तं याम्यां कृष्णं तु कारयेत् । पश्चिमे श्वेतवर्णं च पीतवर्णमथोत्तरे ॥ उद्यत्पत्रफलातिनम्रमिलसद्रम्भाभिरालिङ्गितस्तम्भोऽनेकदलैरसालविटपैः सर्वत्र संवेष्टितः । राजच्चामरसम्प्रवृद्धमुकुरोदञ्चद्वितानान्वितो युक्तः पुष्पफलैः फलाय भवतां भूयान्महामण्डपः ॥ ध्वजान् द्विहस्तायतिकांश्च पञ्च हस्तान् सुपीतारुणकृष्णनीलान् । श्वेताऽसितश्वेतसितान् दिगीशवाहान् वहेदिक् १० करवंशशीर्षे ॥ मातङ्गवस्तमहिषसिंहमत्स्यैणवाजिनः । वृषभं हंसगरुडौ ध्वजमध्ये क्रमाल्लिखेत् ॥ लोकेश-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्णास्त्रयुताः पताकाः शैले ७ न्दु १ दैर्घ्यायतिकाश्च मध्ये । चित्रं ध्वजं दि १०–करदैर्घ्यवंशं त्रि ३ दोस्ततः प्रान्तगकिङ्किणीकम् ॥ श्वेतां च नवमीं पूर्वेशानयोर्मध्यतो बुधः । विन्यसेत्तु पताकांश्च ध्वजांस्तानपि पूर्वतः ॥ वज्रं शक्ति दण्डं खड्गं पाशाङ्कुशगदा अपि । त्रिशूलं लोकपालानामायुधानि क्रमाल्लिखेत् ॥ आशेशकुण्डैरिह पञ्चकुण्डी चैकं यदा पश्चिमसोमशैवे । वेद्यां सपादेन करेण यद्वा पादान्तरेणाखिलकुण्डसंस्था ॥ शतार्धेऽरत्निः स्याच्छतपरिमितेऽरत्निवितत सहस्रे हस्तं स्यादयुतहवने हस्तयुगलम् २ । चतुर्हस्तं लक्षे प्रयुतहवने षट्करमितं ककुद्धि १० र्वा कोटौ नृप १६ करमपि प्राहुरपरे ॥ वेदा ४ क्षी २ णि युगा ४ ग्नयः ३ शशि १ युगा ४ न्यष्टा ८ ब्धय ४ स्त्री३ष५ चोऽ-ष्टा८क्षा५वह्नि ३ रसा६रसा६ङ्ग६कमिता नेत्र२ र्ष ७ योऽक्ष ५ स्वराः ७ । अङ्गुल्योऽथ यवाः ख० मभ्र० मिष५ वः खं० पञ्च५ षट्६ सागराः ४ सप्त ७ भ्रं० मुनय ७ स्त्वमी निगदिता वेदास्रके बाहवः ॥ सहस्रादिएकोनायुताहुतिपर्यन्तं द्विहस्तम् । द्विघ्नव्यासं तुर्य ४ चिह्नं सपाशं सूत्रं शङ्कौ पश्चिमे पूर्वगेऽपि । दत्वा कर्षेत्कोणयोः पाशतुर्ये ४ स्यादेवं वा वेद ४ कोणं समानम् ॥ खातं क्षेमं समं प्राहुरन्ये तु मेखलां विना । कण्ठो जिनां २४ शयानः स्यादर्का १२ श इति चापरे ॥ मेखला विरचयेदपि तिस्रः षड्गजा ८ र्क १२ लवविस्तृतपिण्डाः । चतुर्भिश्च त्रिभिर्द्वाभ्यामूर्ध्वा मध्या त्वधोगता । तिस्रः प्रोक्ताः क्रमादेवं विस्तारादुच्छ्रयादपि ॥ अथवैका युग ४ भागतुल्या कुण्डानुकारा अपि मेखला स्युरर्का १२ ङ्ग ६ भागोच्चा ततस्तु नाभिः । योनिर्व्यासार्ध ११ दीर्घा विततिगुण ३ लवादायताऽब्धि४ द्वि २ भागा तुङ्गा तावत्समन्तात्परिधिरुपरिगा तावदग्रेण रस्या ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निम्नं कुण्डं विशन्ती वलयदलयुगे ४ चान्विताऽधो विशाला मूलात्सच्छिद्रनालान्तरघटरुचिराश्वत्थपत्राकृतिः सा ॥ अथवापि मृदा सुवर्णभासाकरमानं चतुरङ्गुलोच्चमल्पे। हवने विदधीत वाङ्गुलोच्चं विबुधः स्थण्डिलमेव वेदिकोणम् ॥ स्थण्डिले मेखलाः कार्याः कुण्डोक्ता स्थण्डिलाकृतिः। योनिस्तत्र न कर्तव्या कुण्डवत्तत्र वेदिभिः॥ इति लघुदर्पणे मण्डपकुण्डादिनिर्माणप्रकारः समाप्तः ॥

अथ सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः—अब्दे त्रिंशत् ३० प्राजापत्यानि कुर्यात्। सार्धाब्दे पञ्चचत्वारिंशत् ४५, त्र्यब्दे नवतिः ९०, चतुरब्दे विंशत्युत्तरशतं १२०, षडब्दे अशीत्यधिकशतं १८०, द्वादशाब्दे षष्ट्युत्तरत्रिशतानि ३६०, इत्येवं योज्यानि। स्त्रीशूद्राणां होमवर्जितं प्रायश्चित्तं कार्यम्। प्राजापत्याभावे। तावत्संख्यकगवां दानं कार्यम्। तदशक्तौ तन्निष्क्रयद्रव्यदानम्। द्वात्रिंशत्पणिका गावः, इति कात्यायनः। "धेनुः पञ्चभिराढ्यानां मध्यानां त्रिपणात्मिका। कार्षापणैकमूल्या हि दरिद्राणां प्रकीर्तिता॥" षोडशपणः सैककार्षापणः। कर्ता सर्वां प्रायश्चित्तसामग्रीं सम्पाद्य रिक्तायां तिथावन्यस्मिन् वा पुण्येऽह्नि पवित्रधारणम् कुर्यात्। दिनान्ते अपराह्णे वा चतुरो विप्रानेकं वाऽध्यात्मविदं पार्षदत्वेनोपवेश्य समाहितमना आचम्य प्राणानायम्य। देशकालौ० प्रारिप्सितसर्व (अतीतबहुपुरुषावधिकव्रात्यता) प्रायश्चित्ताङ्गतया विहितं सचैलं स्नानमहं करिष्ये। ततः स्नानम्, अशक्तौ तु पादयोः पाण्योश्च प्रक्षालनं वा क्लिन्नवासा अभुञ्जानः–समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः। अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ १ ॥ आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पण-
कामधेनवः । समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥ २ ॥
विप्रौघदर्शनात्क्षिप्रं क्षीयन्ते पापराशयः । वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं
पदम् ॥ ३ ॥ आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम् । श्रीपुष्टिकीर्तिदं
वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम् ॥ ४ ॥ इति श्लोकैः पार्षदं प्रदक्षिणीकृत्य धरण्यां साष्टाङ्गनम-
स्कारं च कृत्वा तिष्ठेत् । द्विजास्तं पृच्छेयुः । किं ते कार्यं वदास्मभ्यं किं वा मृगयसे
द्विज । तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः ॥ अस्माकं चैव सर्वेषां
सत्यमेव परं बलम् । यदि चेद् द्रक्ष्यसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे शुभम् ॥ यथागतोऽ-
स्यसत्येन न त्वं शुध्यसि कर्हिचित् । विप्राग्रे प्राङ्मुख उपविशेत् । देशकालौ० करिष्यमा-
णसर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विहितमिदं यथाशक्ति गोवृषनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातु-
महमुत्सृजे । तेन श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयतां न मम । गवामङ्गेषु० । सभ्याश्च तद् द्रव्यं
विभज्य गृह्णीयुः । देशकालौ० अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः मम सपत्नीकस्य जन्मप्रभृत्यद्य दिनं
यावद् ज्ञाताऽज्ञातकामाकामसकृदसकृत्कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टाऽस्पृष्टभुक्ताऽभुक्त-
पीताऽपीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसङ्करीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासाथ तथा सप्रसादशिवादिप्रतिष्ठाकर्माधिकार-
सिद्ध्यर्थं चानुग्रहं कृत्वा प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः, इत्युक्त्वा प्रणमेत्। 'उपदिशामः' इति
ब्राह्मणा वदेयुः। तत्र प्रार्थनामन्त्राः—आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भवेद्दृश्यमिदं जगत्। यक्ष-
रक्षःपिशाचादि सदेवासुरमानुषम्॥ सर्वे धर्मविवक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः।
मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः॥ मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकि-
ल्बिषम्। प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ॥ पूज्यैः कृतपवित्रोऽहं
भवेयं द्विजसत्तमैः। मामनुगृह्णन्तु भवन्तः, इति प्रणमेत्। ब्राह्मणाः—अनुगृह्णीमः। देश-
कालौ० करिष्यमाणसर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन विहितं सरस्वतीपूजनं सभ्यानुवादकपूजनं च करिष्ये।
'पावकान०' इति मन्त्रेण 'सरस्वत्यै नमः' इति वा चन्दनादिना पुस्तकं सम्पूज्य। पुस्तकपूजनविधेः
साद्गुण्यार्थं यथाशक्ति दक्षिणां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। नमोऽस्त्वनन्ताय
सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र-
कोटियुगधारिणे नमः॥ इति सभ्यानां पूजनम्। 'अनुवादकाय नमः' इति चन्दनाक्षतपु-
ष्पैरर्चनम्। अनुवादकपूजनसाद्गुण्यार्थं इमां पापानुसारेण भूतिरूपां यथाशक्ति दक्षिणामनुवादकाय
तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति दद्यात्। ततोऽनुवादकः कथयेत्, कर्ता च स्वस्थचित्तः सन् शृणुयात्।
अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः तव जननप्रभृत्यद्यदिनं० निरासार्थं सभ्योपदिष्टेन सार्धार्द्धप्रायश्चित्तेन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितेनाचीर्णेन तव देहस्य शुद्धिर्भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि । कर्ता—'ॐ भवदनुग्रहः' इति वदेत् । एवं वारद्वयं कृत्वाऽनुवादकं विसृजेत् । ततः कर्ता गङ्गादौ तीर्थे गृहेवा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति० निरासार्थं सभ्योपदिष्टं सार्धाद्धप्रायश्चित्तेन गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा प्राच्योदीच्याङ्गसहितमिदानीमहमाचरिष्ये । अद्य पूर्वोच्चरितै वंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ प्रारिप्सितस्य प्रायश्चित्तस्य प्राच्याङ्गानि करिष्ये तदङ्गत्वेन वपनं करिष्ये ! **यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च । केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम् ।।** इति मन्त्रेण केशान् स्पृशेत् । ततो नापितेन शिखाकक्षोपस्थवर्जं सर्वान् केशान् वापयेत् । विधवादीनां सशिखं वपनम् । सुवासिनां तु—सर्वान् केशान् समुद्धृत्य छेदयेदङ्गुलत्रयम् । शीतोदकेन स्नात्वाऽऽचमनम् । औदुम्बरादीनां [1]दन्तकाष्ठं गृहीत्वा—**आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च । ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ।।** इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य—**मुखदुर्गन्धिनाशाय दन्तानां च विशुद्धये । ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम् ।।** अन्नाद्याय० इति मन्त्राभ्यां दन्तान् संशोध्य द्वादशगण्डूषान् कुर्यात् । ततो जला-

---

१ दशाङ्गुलं तु विप्राणां क्षत्रियाणां नवाङ्गुलम् । अष्टाङ्गुलं तु वैश्यानां शूद्राणां सप्तसम्मितम् ।। चतुरङ्गुलमात्रं तु नारीणां नात्र संशयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शयं गत्वा तूष्णीं स्नात्वाऽऽचामेत् । देशकालौ० करिष्यमाणसर्वप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन भस्मादिभिर्दश-स्नानानि करिष्ये । भस्म गृहीत्वा यथाऽग्निः कुरुते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम् । तथा मे दह्यातां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम् ॥ इत्यभिमन्त्रणं कृत्वा । ईशानाय नमः, इति शिरसि । ॐतत्पुरुषाय नमः, मुखे । ॐअघोराय नमः, हृदये । ॐवामदेवाय नमः, गुह्ये । सद्योजाताय नमः, पादयोः । प्रणवेन सर्वाङ्गे च विलिप्य स्नात्वा । गोमयं गृहीत्वा—अग्रमग्रे चरन्तीनामोषधीनां वने वने । तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ॥ तन्मे रोगांश्च शोकांश्च नुद गोमय सर्वदा ॥ इत्यभिमन्त्र्य । मानस्तोके० इति मन्त्रेण दक्षिणहस्तेन गृहीतेन गोमयेन शिरः प्रभृति नाभ्यन्तं, वामहस्तगृहीतेन नाभितः पादान्तं लेपयेत् । अत्र च देशभेदान्मन्त्रावृत्तिः कर्त्तव्या ॥

अथ मृत्तिकां गृहीत्वा—अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । शिरसा धारयिष्यामो रक्षस्व मां पदे पदे ॥ इत्यभिमन्त्र्य । उद्धृताऽसि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना । मृत्तिके ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ त्वया हतेन पापेन सर्वपापैः प्रमुच्यते । इत्युद्धृत्य । इदं विष्णु० सुरे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति सर्वाङ्गेषु गोमयवल्लेपयेत् । अत्रापि मन्त्रावृत्तिः । "आपो हि ष्ठा०" इति तिसृभिः सूर्याभिमुखेन स्नानं कृत्वा ततः पञ्चगव्येन स्नायात् । अन्ते शुद्धोदकं सर्वत्र । तत्रादौ 'गायत्र्या' गोमूत्रेण । "गन्धद्वारां" गोमयेन । "आप्यायस्व०" इति क्षीरेण । "दधिक्राव्ण०" इति दध्ना । "तेजोऽसि शुक्र०" इति घृतेन च सर्वाङ्गान्युपलिप्य स्नानं कृत्वा । "देवस्य त्वा० अभिषिञ्चामि ॥" इति कुशोदकेनान्ते स्नानं कुर्यात् । "**गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम् । सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥**" ततो जलेऽघमर्षणम्–"द्रुपदादिव०" इति मन्त्रेण–गृहस्नानेन कुर्वीत मार्जनं चाघमर्षणम् । स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात् पश्चादाचम्य शुध्यति ॥ त्रिहितं तथा स्नानाङ्गतर्पणं च कृत्वा नवीनवस्त्रपरिधानं यज्ञोपवीतपरिधानं भस्मधारणं माध्याह्निकं च कृत्वा गृहमागत्याऽऽचम्य प्राणानायम्य अद्येत्यादि० करिष्यमाणसर्वप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गत्वेन त्रिहितं विष्णुपूजनं विष्णुश्राद्धमाद्यगोदानं च करिष्ये । विष्णो० इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य । स्त्री चेदस्पर्शं विष्णुपूजनम् । अद्येत्यादि० विष्णुश्राद्धसिद्ध्यर्थमिदमामचतुष्टयनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे । तेन श्री० । ततो गोदानम्–अद्य पूर्वो० तिथौ प्रारिप्सितप्रायश्चित्तस्य पूर्वाङ्गतया विहितमिदमाद्यगोदाननिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । तेन श्री० । गवामङ्गेषु ० । ततः प्रादेशादिपरिमितं स्थण्डिलं कृत्वाङ्गीकृतसर्वप्रायश्चित्ताख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये । आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० प्रारिप्सितसर्वप्रायश्चित्तस्य पूर्वाङ्गतया विहितं महाव्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिं वा होमं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिष्ये। ब्रह्मवरणम्। अस्मिन् सर्वप्रायश्चित्ताख्ये कर्मणि अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततो ब्राह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा पञ्चगव्यं तत्र संस्थाप्याऽऽज्येनाष्टाविंशतिव्याहृतिहोमं कुर्यात्—ॐ भूः स्वाहा. इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम। ॐस्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारे कृतेऽष्टाविंशतिराहुतयः। अथवा सप्तविंशतिवारे कृतेऽष्टोत्तरशतम् १०८। ततः सप्तपत्रैर्हरितकुशैः पञ्चगव्यहोमं कुर्यात्—"इरावती धेनु० मयूखैः—" स्वाहा, इदं पृथिव्यै न मम ॥ १ ॥ इदं विष्णु० रे—स्वाहा। इदं विष्णवे न० ॥ २ ॥ मानस्तोके० स्वाहा। इदं रुद्राय न मम ॥३॥ उदकोपस्पर्शः। ब्रह्मयज्ञानं० विव्नः—स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम ॥ ४ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम ॥ ६ ॥ ॐतत्सवितु० यात्—स्वाहा, इदं सावित्रे न मम ॥ ७ ॥ ॐ स्वाहा, इदं परमात्मने न मम ॥ ८ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ अन्वारब्धेन—अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥ १० ॥ अद्य पु० तिथौ प्रक्रान्तप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन शरीरशुद्ध्यर्थं व्रतग्रहणं करिष्ये। विप्राः—कुरुष्व। पलाशपत्रपुटे हुतमेवं पञ्चगव्यं गृहीत्वा—**यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्** "ॐ" इति स्त्रीणां प्रणवरहितं प्राश्याऽऽचमनं कृत्वा मुख्यसङ्कल्पं कुर्यात्। ततः प्रायश्चित्तद्रव्यदेवताः सम्पूजयेत् 'गोभ्यो नमः गन्धं समर्पयामीत्यादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य द्रव्योपरि गन्धपुष्पतुलसीदर्भान्निधाय देशकालौ संकीर्त्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृत्य० निरासार्थं सम्भावितानां अतीतबहुपुरुषावधिकब्रात्यादिपातकानां निरसनपूर्वकोपनयनादियोग्यतासिद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वाराऽङ्गीकृतसार्द्धाब्दप्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थमिदं पञ्चचत्वारिंशद्गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं विभज्य दातुमहमुत्सृजे। तेन श्री०। अद्येत्यादि० प्रक्रान्तसर्वप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गाणि करिष्ये। आज्येन महाव्याहृतिभिर्होमः। अद्य० तिथौ प्रक्रान्तसर्वप्रायश्चित्तोत्तराङ्गत्वेन विष्णुपूजनं विष्णुश्राद्धमन्त्यगोदानं च करिष्ये। अद्येत्यादि० त्रिभ्योऽधिकान् ब्राह्मणान् यथाशक्ति आमचतुष्टयनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो पूर्ववद्विष्णुपूजकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे। ततोऽन्त्यगोदानम्—अद्येत्यादि० प्रारिप्सितप्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतया विहितमिदमन्त्यगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे। गवामङ्गेषु०। नात्र पञ्चगव्यहोमः। आज्येन नवाहुतिहोमं कृत्वा संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वाऽऽचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। अङ्गीकृतसर्वप्रायश्चित्तकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं द्वादशसंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। भूयसासङ्कल्पः। दशदानम्। देशकालौ० मया आचरितसर्वप्रायश्चित्तस्य साद्गुण्यकामः इमानि गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यगुडरौप्यलवणनिष्क्रयीभूतद्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे। एतानि दश दानानि सभ्येभ्य एव देयानि। तदसम्भवेऽन्येभ्योऽपि दद्यात्। यस्य स्मृत्या०। विष्णवे नमः ३॥

इति लघुदर्पणे सर्वप्रायश्चित्तप्रयोगः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सपत्नीककर्तृकप्रायश्चित्ते संकल्पादौ विशेषः—

पुनन्त्वावां ब्राह्मणपाद०। किंवा मृगयसे शुभे। अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणः सपत्नीकस्य आवयोः जन्मप्रभृति० आवां उपदिशन्तु० देहस्य०। आवाभ्यां कृत०। प्रसादः क्रियतामावाभ्यां० पूज्यैः कृतपवित्रः आवां भवतु द्विज०। जन्म० युवयोः शुद्धिर्भ० युवां कृतार्थौ भविष्यथ। तस्मात् केशान् वपाव आवाम्। त्वं धेह्यावयोः वनस्पते। कुर्वहे आवां दन्तधाव०। तथा नौ दद्य०। यदावयो रोगांश्च०। रक्षस्वावां पदे पदे मृतिके हरावयोः पापं। यदावाभ्यां दुष्कृतं कृतम्। मृतिके देह्या-वयोः पुष्टिं०। हतपापयोः०। गवामङ्गे०। शिवं नौ स्यादिह०। गाव आवयोरग्रतः सन्तु गाव आवयोः सन्तु पृष्ठतः। गाव आवयोर्हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाव आवाम्। इति वक्तव्यं इत्यलम्।

अथ लिङ्गप्रतिष्ठाविधिः—पर्वताग्रे नदीतीरे तडागाद्वारुणे दिशि। लिङ्गानां स्थापनं कुर्यादभावे कूपसन्निधौ। प्रासादोत्तरतः पूर्वतः पश्चिमतो वा षोडशहस्तमुक्तविध-लक्षणं मण्डपं कृत्वा मध्यकोष्ठे पञ्चहस्तां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितां महावेदिं कृत्वा। महावेद्याः पश्चाद्भागे चतुरस्रमेकहस्तप्रमाणकं त्रिमेखलं योनिकण्ठनाभिसहितं कुण्डं कृत्वा प्रसादान्तनैर्ऋत्यां हस्तमात्रोच्छ्रितां तावन्मात्रविस्तृतां वप्रद्वयोपेतां वास्तुवेदिं कुर्यात्। मण्डपोत्तरे यथावकाशं वा चतुर्हस्तविस्तृतं चतुरस्रं चतुर्द्वारं स्नानमण्डपं विधाय। महामण्डपस्य पश्चिमतश्चतुर्हस्तमेकद्वार-युतं जलाधिवसनमण्डपं कुर्यात्। स्थापनदिनात्पूर्वेद्युः कृतनित्यक्रियो यजमानो यथाशक्ति प्रायश्चित्तं कुर्यात्। ततः पूर्वाह्णे स्वभवने प्रासादसमीपे वा सपत्नीकः शुचिः प्राक् शुद्धासने उपविश्याचम्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं मम दीर्घायुरारोग्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजय सर्वपापनिरसनपूर्वकसकलसुखधर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिकामः श्रीसदाशिवप्रीतये सनवग्रहमखां सवास्तुशान्तिपूर्वकमचललिङ्गप्रतिष्ठां [सप्रासादसवृषशिवादिपञ्चायतनदेवानां स्थिरप्रतिष्ठां कूपोत्सर्गं च तन्त्रेण तृतीयेऽहन्यहं] करिष्ये इति संकल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वाऽऽचार्यं वृत्वा प्रार्थनां कुर्यात् । मन्त्रमूर्तिर्भवान् नाथ संसारोच्छेदकारकः । देवः पूजार्हो यथा स्यात् कुरु धर्मोद्गतिं च नः ॥ सांसारभयभीतेन अयं यज्ञः सुभक्तितः । प्रारब्धस्त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं मे भवत्विति ॥ ततो ब्राह्मणं सदस्यमृत्विजश्च (अस्मिन् सनवग्रहमखशिवलिंगस्थापनाख्ये कर्मणि ब्रह्मादीन् वो वृणे इति) वृणुयात् । ततः आचार्यः "यदत्र संस्थितम्" इत्यादिमन्त्रैः सर्षपान् विकीर्य । पञ्चगव्येन कुशैः सर्वत्र "आपो हि ष्ठा० ३" इति प्रोक्षणप्रासादे चतुष्षष्टिपादो वास्तुरुक्तः मण्डपस्यापि प्रासादसाम्यातिदेशान्मण्डपे एव भवतीति शिष्टाः प्रासादे शङ्कुरोपणादिशिख्यादीनां संस्थापनं पूजनं बलिदानं च कुर्युः । अत्र मण्डपपक्षे मण्डपपूजापि कर्तव्या । अथवा छायामण्डपाद्बहिर्दिशि कलशान् संस्थाप्य दिक्पालान् पूजयेत । तत आचार्यो निशायां जलाधिवासमण्डपमागत्य पाठोपरि प्रत्यङ्मुखं देवं निधाय पञ्चगव्येन हिरण्यदूर्वाङ्कुरयवाश्वत्थपलाशपर्णमिश्रोदकेन लिङ्गमभिषिञ्चेत् । मन्त्रो यथा– "आपो हिष्ठा०" इति तिसृभिः । हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः । अग्निर्या गर्भं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दधिरे विरुपास्तान आप शटं. स्योना भवन्तु ॥ १ ॥ यासाटं. राजा वरुणो
याति मध्ये सत्यानृतेऽअवपश्यं जनानाम् । मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता
नऽआपः शटं. स्योना भवन्तु ॥ २ ॥ यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या
अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति । या पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता नऽआपः शटं.
स्योना भवन्तु ॥ ३ ॥ शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवयाः तनुवोपस्पृशत
त्वचं मे । सर्वा ँ अग्नी ँ रप्सुषदो हुवेवो मयि वर्चो बलमोजा निधत्त ॥४॥
पवमानः सुवर्जनः पवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता स पुनातु मा ॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु
मनवो धिया । पुनन्तु विश्वऽआयवः । जातवेदः पवित्रवत् । पवित्रेण पुनीहि मा । शुक्रेण देव
दीद्यत् । अग्ने क्रत्वा क्रतू ँ रनुयत्ते पवित्रमर्चिषि । अग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीमहे ।
उभाभ्यां देव सवितः । पवित्रेण सवेन च । इदं ब्रह्म पुनीमहे वैश्वदेवो पुनती देव्यागात् यस्यै
उह्वीस्तनुवोवीतपृष्ठा । तया मदन्तः सधमाद्येषु । वय टं स्याम पतयो रयीणाम् । वैश्वानरो
रश्मिभिर्मा पुनातु । वातः प्राणे नेषिरो । मयोभूः । द्यावापृथिवी पयसा पयोभिः । ऋतावरी
यज्ञियेमा पुनीताम् । बृहद्भिः सवितस्तृभिः । वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः अग्ने दक्षैः पुनीहि मा । येन देवा
अपुनत । येनाऽऽपो दिव्यंकशः । तेन दिव्येन ब्रह्मणा । इदं ब्रह्म पुनीमहे । यः पावमानीरध्येति । ॥ ७७॥
ऋषिभिः सम्भृत टं- रसम् । सर्व टं- सपूतमश्नाति । स्वदितं मातरिश्वना । पावमानीयो अध्येति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋषिभिः सम्भृत ᳪ रसम् । तस्मै सरस्वती दुहे । क्षीर ᳪ सर्पिर्मधूदकम् पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि पयस्वतीः । ऋषिभिः सम्भृतो रसः । ब्राह्मणेष्वमृत ᳪ हितम् । पावमनीर्दिशन्तु नः । इमंल्लोकमथोऽमुम् । कामान् समर्धयन्तु नः । देवोदेवैः सभाभृताः । पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः । ऋषिभिः सम्भृतो रसः । ब्राह्मणेस्वमृत ᳪ हितम् । येन देवाः पवित्रेण आत्मानं पुनते सदा । तेन सहस्रधारेण । पावमान्यः पुनन्तु माम् । प्राजापत्यम् । शतोद्या ᳪ हिरण्मयम् । तेन ब्रह्मविदो वयम् । पूतं ब्रह्म पुनीमहे । इन्द्रः सुनीतिसह मा पुनातु । सोमः स्वस्त्या वरुणः समीच्या । यमो राजा प्रमृणाभिः पुनातु मा । जातवेदा मार्जयन्त्या पुनातु । भूर्भुवः स्वः ।" ततः पुष्पफलयवाक्षतदूर्वाङ्कुरान् गृहीत्वा पादलिङ्गमूले पीठे "नमस्ते रुद्र" इति मन्त्रेण निक्षिप्य तत्र लिगं स्थापयित्वा—रक्षोहणं वा जिनमाजिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुपयामि शर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः सनो दिवा सरिषः पातु नक्तम् ॥ इति प्रतिसरं बद्ध्वा सम्पूज्य वाससा कुशैश्चाच्छाद्य अव ते हेडो वरुण नमोभिरवयज्ञेभिरीमहे हविर्भिः । क्षयं नास्मभ्यमसुरप्रचेतो राजन्नेना ᳪ सि शिश्रयः कृतानि ॥ १ ॥ "उदुत्तमम्०" ॥ २ ॥ इति मन्त्राभ्यां जलेऽधिवासयेत् । अथ द्वितीयेऽह्नि लिगतोभद्रदेवताः स्थापयेत् । तद्यथा—ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि १ । सोमाय० २ । ईशानाय० ३। इन्द्राय० ४। अग्नये० ५। यमाय० ६। निर्ऋतये० ७। वरुणाय० ८। वायवे० ९।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टवसुभ्यो० १०। एकादशरुद्रेभ्यो० ११। द्वादशादित्येभ्यो० १२। अश्विभ्याम्० १३। सपैतृकविश्वेभ्यो० १४। सप्तयक्षेभ्यो० १५। भूतनागेभ्यो० १६। गन्धर्वाप्सरोभ्यो० १७। स्कन्दाय० १८। वृषभाय० १९। शूलाय० २०। महाकालाय० २१। दक्षादिसप्तगणेभ्यो० २२। दुर्गायै० २३। विष्णवे० २४। स्वधायै० २५। मृत्युरोगेभ्यो० २६। गणपतये० २७। अद्भ्यो० २८। मरुद्भ्यो० २९। भूम्यै० ३०। गङ्गादिनदीभ्यो० ३१। सप्तसागरेभ्यो० ३२। मेरवे० ३३। गदायै० ३४। त्रिशूलाय० ३५। वज्राय० ३६। शक्तये० ३७। दण्डाय० ०८। खड्गाय० ३९। पाशाय० ४० अङ्कुशाय० ४१। गौतमाय० ४२। भरद्वाजाय० ४३। विश्वामित्राय० ४४। कश्यपाय० ४५। जमदग्नये० ४६। वशिष्ठाय० ४७। अत्रये० ४८। अरुन्धत्यै० ४९। ऐन्द्र्यै० ५०। कौमार्यै० ५१। ब्राह्म्यै० ५२। वाराह्यै० ५३। चामुण्डायै० ५४। वैष्णव्यै० ५५। माहेश्वर्यै० ५६। वैनायक्यै० ५७। असिताङ्गभैरवाय० ५८। रुरुभै० ५९। चण्डभै० ६०। क्रोधभै० ६१। उन्मत्तभै० ६२। कपालभै० ६३। भीषणभै० ६४। संहारभै० ६५। पूर्वादिदिक्षु—भवाय० भवम् ६६। शर्वाय० शर्वम्० ६७। ईशानाय० ईशानम्०६८। पशुपतये० पशुपतिम्० ६९। रुद्राय० रुद्रम्० ७०। उग्राय० उग्रम्०७१। भीमाय० भीमम्० ७२। महते० महान्तम्० ७३। अनन्ताय० अनन्तम्० ७४। वासुकये० वासुकिम्० ७५। तक्षकाय० तक्षकम्० ७६। कुलिशाय० कुलिशम्० ७७। कर्कोटकाय० कर्कोटकम्० ७८। शङ्खपालाय० शङ्खपालम्० ७९। कम्बलाय० कम्बलम्० ८०। अश्वतराय० अश्वतरम्० ८१। शूलिने० शूलिनम्० ८२। चन्द्रमौलये० चन्द्रमौलिम्० ८३। चन्द्रमसे० चन्द्रमसम्० ८४। वृषभध्वजाय० वृषभध्वजम्० ८५। त्रिलोचनाय० त्रिलोचनम्० ८६। शक्तिधराय० शक्तिधरम्० ८७।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महेश्वराय० महेश्वरम्० ८८। शूलधारिणे० शूलधारिणम्० ८९। इत्यावाह्य। "ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः" इत्यनेन सम्पूज्य नैवेद्यशेषान्नेन सर्वेभ्यो बलिदानं कार्यम्–'ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः अमुं पायसबलिं समर्पयामि' ततो महावेद्यां पञ्चवर्णवितानं बध्नीयात्, इति मण्डलदेवता-पूजां कृत्वा मण्डलमध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य तस्योपरि अग्न्युत्तारणपूर्वकं सौवर्णीं देवप्रतिमां संस्थाप्य तत्तन्मन्त्रैरावाहनादिपुष्पाञ्जल्यन्तविधिना पूजयेत्। ततो लिङ्गतोभद्रस्य प्रति-द्वारं द्वौ द्वौ, इत्यष्टकलशान् संस्थाप्य तेषु कलशेषु वरुणमावाह्य सम्पूज्य ऋत्विजो लिङ्गमुत्थापयेयुः। "उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते" इति मन्त्रेणोत्थाप्य स्नानमण्डपे औदुम्बरीपीठान्तरे निवेश्य ततो देवस्याग्रे चतुरो ब्राह्मणानुपवेश्य पुण्याहं वाचयित्वा। भो ब्राह्मणाः! करिष्यमाणदेवस्नपनाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति त्रिर्वाचयेत्। विप्राः–पुण्याहम्। इति त्रिः प्रतिब्रूयुः। एवं स्वस्तिम् ऋद्धिमपि वाचयित्वा तेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा देवं प्रार्थयेत्–"**स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोऽस्तु ते। शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्व ताम्॥**" वल्मीकमृत्कषायैरनुलिप्य शुद्धोदकेन स्नापयेत्। पञ्चगव्यं सम्पाद्य ततः पञ्चगव्येन 'नमस्ते रुद्रमन्यव०' इत्यष्टभिर्ऋग्भिः स्नापयेत्।

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ २॥ ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु माहिंसीः पुरुषञ्जगत्॥ ३॥ ॐ शिवेन वचसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वा गिरिशाच्छावदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मर्ट॑- सुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥ ॐ अद्ध्यवोच-
दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव ॥५॥
असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः । येचैनर्ट॑- । रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः । सहस्रशो
वैषा ट॑- हेड ऽईमहे ॥ ६ ॥ ॐ असौ यो वसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनं गोपाऽअदृश्र-
न्नदृश्रनुदहार्य्यः सदृष्टो मृडयाति नः ॥ ७ ॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽअस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः ॥ ८ ॥ शमीपलाशखदिरबिल्वाश्वत्थवैकङ्कतन्यग्रो-
धपनसाम्रशिरीषोदुम्बरप्लक्षाणां त्वकषायकलशोदकेनाभिषिञ्चति—"अश्वत्थेवोनिषदनम्" इति मणि-
मुक्ताप्रवालसुवर्णयुक्तकलशोदकेनाभिषिञ्चति—"परिवाजपतिः" इति मन्त्रेण । 'हिरण्यवर्णाः' इति
कलशोदकेन चाभिषिच्य लिङ्गं पीठान्तरे निवेश्य अभिवस्त्रा सुवसनान्यर्षाभिधेनुः सुदुघा
ऽयमानः । अभिचन्द्राभर्तवेनो हिरण्याभ्यश्वात्रयिनो देवसोमम् ॥ इति वस्त्रयुग्मं
दत्त्वा गन्धादिभिः सम्पूजयेत् । तत आचार्यस्तैजसपात्रस्थं मधु सुवर्णशलाकया गृहीत्वा तेन लिङ्गं
त्रेधा विभज्य मध्यभागे मुखं कल्पयित्वा नेत्रोन्मीलनं कुर्यात् । तत्रादौ बलिं प्रदर्श्य सम्मुखे दर्पणं
च स्थापयित्वा । "हिरण्यगर्भ" इत्याद्यष्टभिर्ऋग्भिरष्टौ दीपान् प्रदर्शयेत् । "हिरण्यगर्भः स०" ॥१॥
यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्व ऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः । यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽइद्राजा जगतो बभूव । य
ऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै० ॥ ३ ॥ यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रर्ट॑. रसया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहाहुः ।। यस्येमाः प्रदिशोऽअस्य बाहू कस्मै० ।। ४ ।। येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः । योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै० ।। ५ ।। यं क्रन्दसी अवसातस्तभानेऽ-अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने । यत्राधिशूर ऽउदितो विभाति कस्मै० ।। ६ ।। आपो : यद्बृहतीर्विश्व-मायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् । ततो देवाना ट- समवर्ततासुरेकः कस्मै०।। ७।। यश्चिदापो महिमापर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम् । यो देवेष्वधिपो ऽएकऽआसीत् कस्मै० ।। ८ ।। पुरुषा-हारपर्याप्तमन्नबलिं स्थापयित्वाऽऽदर्शं प्रदर्श्य पश्चात्सुवर्णशलाकाग्र्येण "चित्रं देवानाम्" इति मन्त्रेण स्वयं पार्श्वे स्थित्वा सतूर्यघोषमेकैकं नेत्रं सम्मृज्योन्मीलयेत् । तदा न पुरतः कश्चित् तिष्ठेत् । ॐ नमो भगवते रुद्राय हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपायोमाप्रियाय नमः" इति संलिख्य अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन । यदूर्ध्वास्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद्यद्वाक्षयो मातुरस्याऽउपस्थे ।। इति मध्वञ्जनं कुर्यात् । न बाणलिङ्गे त्विति केचित् । आदर्शं दर्शयित्वा यजमानः सुवर्णशलाकां स्नानवस्त्रनैवेद्यादिकं च शिल्पिने दत्त्वाऽऽचा-र्याय धेनुं दद्यात् । कृतस्य नेत्रोन्मीलनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं साम्बसदाशिवस्य सौम्यदृष्टिसिद्ध्य-र्थमिदं यथाशक्ति गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ऋत्विग्भ्यश्च यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् । ततो देवमुत्थाप्य लिङ्गतोभद्रे पर्यङ्कोपरि कुशप्रस्तरे शुभवस्त्रेणाच्छाद्य प्राक्शिरसं देवं शाययेत् । 'प्राजापत्योऽयं मुहूर्तोऽस्तु' इत्युक्त्वा देवस्य शिरोदेशे भूमौ निद्रां कलशे प्रतिष्ठाप्य शय्यो-पकरणानि शय्यानिकटे निधाय वेद्याः समीपे उदङ्मुख उपविश्य करे पुष्पं गृहीत्वा संस्थाप्य देवभू-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लमन्त्रेण तदुपरि न्यसेत्।अथ शिवस्य मूलमन्त्रन्यासः।ॐ हृदि।नः शिरसि।मः शिखायाम्।शिः कवचे वा नेत्रयोः। यः अस्त्रे०॥अथ विष्णोः-ॐ नमः देवस्य पादयोर्न्यसामि।नं नमः देवस्य जानुनोर्न्यसामि।मो नमः देवस्य गुह्ये न्यसामि।नमः देवस्य नाभौ न्यसामि।गं नमः देवस्य हृदये न्यसामि। वं नमः देवस्य कण्ठे न्य०। तें नमः देवस्य मुखे न्य०। वां नमः देवस्य नेत्रयोर्न्य०। सुं नमः देवस्य भाले न्य०। दें नमः देवस्य मूर्ध्नि न्य०। वां नमः देवस्य दक्षिणपार्श्वे न्य०। यं नमः देवस्य वामपार्श्वे न्य०। अथ सूर्यस्याष्टाक्षरैर्न्यासः–घृं शिरसि। णिः मुखे। सूं० कण्ठे। रिं० हृदि। यं० उदरे। आं० नाभौ। दिं० शिखायाम्। त्यं पादयोः। अथ गणपतेः–चं० भ्रूमध्ये। क्रं० कण्ठे। तुं० हृदये। डां० नाभौ। यं० लिङ्गे। हुं० पादयोः। अथ देव्याः नवार्णन्यासः–ऐं नमः शिखायां न्य०। ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे न्य०। क्लीं नमः वामनेत्रे न्य०। चां नमः दक्षिणश्रोत्रे न्य०। मुं नमः वामश्रोत्रे न्य०। डां नमः दक्षिणनासापुटे न्य०। यैं नमः वामनासापुटे न्य०। विं नमः मुखे०। च्चें नमः गुह्ये०। एवं देवतान्तरेऽपि तत्तन्मूलमन्त्राक्षरैर्न्यासः कर्तव्यः। शय्याशिरोदेशस्थापितनिद्रां कलशे 'ॐ निद्रायै नमः' निद्रामावाह्य पञ्चोपचारैः पूजयेत्। ततो यजमानोऽग्न्यायतनाद्दक्षिणतः उपविशेत्। आचार्यस्तु कुण्डपश्चिमे उपविश्य आचम्य देशकालौ संकीर्त्यास्मिन् सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाख्ये कर्मणि अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। तदङ्गतया कुण्डसंमार्जनमेखलादेवतास्थापनपूजनादि करिष्ये। अग्न्यायतनं सम्मृज्य कुशोदकेन सम्प्रोक्ष्य उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायाम्—"इदं विष्णुः"। विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ मध्ये मेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम्—"ब्रह्मयज्ञानं०"। ब्रह्मणे० ब्रह्माणम्०॥ अधोमेखलायां कृष्ण-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वर्णालङ्कृतायाम्—"ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० ।" रुद्राय० रुद्रम्० ।। "विष्णवाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत" इति प्रतिष्ठाप्य । आवाहितविष्णवादिदेवताभ्यो नमः इति पूजयेत् । ततः पञ्चभूसंस्कारपूर्वकबलिवर्धननामानमग्निं प्रतिष्ठाप्य । मण्डपेशानभागे वेद्यां ग्रहानावाह्य सम्पूज्य तदीशान्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य तदुपरि रुद्रं पूजयेत् । तत आचार्योऽग्निसमीप-मागत्याग्नेः पश्चिमत उपविश्य ब्रह्मोपवेशनादाघारावाज्यभागान्तं कृत्वा यजमानहस्तेन द्रव्यत्यागं कारयेत् । तत आचार्यः ऋत्विक्सहितो ग्रहहोमं वास्तुहोमं च कुर्यात् । प्रासादे सूत्रवेष्टनं दुग्धधारां जलधारां च कृत्वा प्रासादोपरि दिक्षु विदिक्षु दिक्पालवर्णान् ध्वजान् दिकपालपूजनपूर्वकं निवेशयेत् । ततो महाध्वजारोपणं पेटिकारोपणं च कृत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् । "नमस्ते रुद्र मन्यव" इति षट्त्रिंशन्मन्त्रैः प्रतिमन्त्रमाज्येन जुहुयात् । ॐ नमस्ते रुद्र० स्वाहा ।। १ ।। ॐ या ते रुद्र० स्वाहा ।।२।। ॐ यामिषुं गिरि० स्वाहा ।।३।। ॐ शिवेन वचसा० स्वाहा ।। ४ ।। ॐ अध्यवोच० स्वाहा ।। ५ ।। ॐ असौ यस्ताम्रो० स्वाहा ।। ६ ।। ॐ असौ यो व सर्पति० स्वाहा ।। ७ ।। ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवा० स्वाहा० ।। ८ ।। ॐ प्रमुञ्च धन्वन० स्वाहा० ।। ९ ।। ॐ विज्यन्धनुः० स्वाहा ।। १० ।। ॐ या ते हेतिर्म्मी० स्वाहा ।। ११ ।। ॐ परिते धन्वनो० स्वाहा ।। १२ ।। ॐ अवतत्य० स्वाहा ।। १३ ।। ॐ नमस्तऽआयु० स्वाहा ।। १४ ।। ॐ मानो महान्त० स्वाहा ।। १५ ।। ॐ मानस्तोके० स्वाहा ।। १६ ।। ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते० स्वाहा ।। १७ ।। ॐ इमा रुद्राय तवसे० स्वाहा ।। १८ ।। ॐ याते रुद्र शिवा तनूः० स्वाहा ।। १९ ।। ॐ परिनो रुद्रस्य० स्वाहा ।। २० ।। ॐ मीढुष्टमः शिवतम० स्वाहा ।। २१ ।। ॐ विकिरिद्रविलोहित० स्वाहा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ २२ ॥ ॐ सहस्राणि सहस्रशो० स्वाहा ॥ २३ ॥ ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि० स्वाहा ॥२४॥ ॐ अस्मिन्न्महत्यर्णवे० स्वाहा ॥ २५ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ट० रुद्राऽउपरिश्रताः तेभ्यः स्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचरा० स्वाहा ॥ २७ ॥ ॐ ये वृक्षेषु सष्पिञ्जरा० स्वाहा ॥ २८ ॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः० स्वाहा ॥ २९ ॥ ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति० स्वाहा ॥ ३० ॥ ॐ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति० स्वाहा ॥३१॥ ॐ यऽएतावन्तश्च० स्वाहा ॥ ३२ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दि० स्वाहा० ॥ ३३ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात० ॥ ३४ ॥ ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां० स्वाहा ॥ ३५ ॥ ततः सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु । पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः ॥ विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत् । सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमोऽअस्तु ॥ इति लिङ्गस्य मूलदेशं स्पृशेत् । पूर्ववत्पुनस्ताभिर्हुत्वा। कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेम शन्तमꣳ हृदे ॥ इति मध्यदेशं स्पृशेत् । पूर्ववत्पुनस्ताभिर्हुत्वा । नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये अम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः । इत्यग्रं स्पृशेत्। पुनस्ताभिर्हुत्वा सम्पूर्णरुद्रेण सर्वाङ्गं स्पृशेत् । ततः शिवमन्त्रेणाष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिभिः प्रधानहोमं कुर्यात्। नन्दीस्थापनापक्षे समित्तिलाज्यैस्तत्तन्मन्त्रेणाष्टोत्तरशतं होमः कार्यः । तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा रात्रौ गीतावाद्यादिना जागरणं कुर्यात् । इति द्वितीयदिनकृत्यम् । तृतीयेऽह्नि प्रातः पुनर्देवं सम्पूज्य सतूर्यघोषेण "उदुत्यं जातवेद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्" इति देवमुत्थाप्य। विमाने याने वाऽऽरोप्य प्रासादं प्रदक्षिणीकृत्य। सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमः । भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ १ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः। कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो ॥ २ ॥ बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ ३ ॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ ४ ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ५ ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ६ ॥ इति षडनुवाकैः सतूर्यघोषेण देवालयं प्रविश्य मणिमुक्ताप्रवालसुवर्णरजतानि गर्तमध्ये स्थापयित्वा "नमस्ते रुद्रमन्यव" इति पिण्डिकायाम्—त्र्यक्षं सदशबाहुं च चन्द्रार्धकृतशेखरम्। उमेशं वृषभस्थं च स्थापयामि सदाशिवम्॥ इति च शुभे लग्ने लिङ्गं स्थापयेत्। पिण्डिकालिङ्गान्तरालं वालुकासोसकादिभिर्दृढं पूरयित्वा पुनर्न चालयेत् लिङ्गं दृढीकरणार्थं अष्टगन्धादि दद्यात्। अथ गन्धादीनञ्जलौ कृत्वाऽञ्जलिमाकाशोन्मुखो दर्शयित्वा शिवमाकाशादवतीर्णमञ्जलावागतमिति विभाव्य लिङ्गमावाहयेत्—ॐ भूः पुरुषमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषमावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषमावाहयामि। इति पठित्वा पश्चादञ्जलिस्थपुष्पादीनि देवस्य मस्तकोपरि क्षिप्त्वा ततो देवं स्पृष्ट्वा "इहैवैधि" इति चतस्र ऋचो जपेत्। इहैवैधि मा व्यधिष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठ। इह राष्ट्रमुधारय। अभितिष्ठ पृतन्यतः। अधरे सन्तु शत्रवः। इन्द्र इव वृत्रहा तिष्ठ। अपः क्षेत्राणि सञ्जयन् इन्द्र एणमदीधीरत्। ध्रुवं ध्रुवेण हविषा। तस्मै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवा अधिब्रुवन् । अयं च ब्रह्मणस्पतिः । इति । ततः प्रणवेनाङ्गन्यासं कुर्यात् । यथा—ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ तर्जनीभ्यां नमः । ॐ मध्यमाभ्यां नमः । ॐ अनामिकाभ्यां नमः । ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । ततः प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि । क्रियामयवपुः प्राणाख्यो देवता । आँ बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । महादेवस्य प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः । ॐ टं ठं डं ढं णं ऊं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः । ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ओं पं फं बं भं मं औं व्यक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ अं यं रं लं वं शं षं हं क्षं त्रं अः मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासः । अथ ध्यानम्—रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाभिरूढाकराब्जैः पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् । बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनविलसत्पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥" इति ध्यात्वा देवं मूर्ध्नि हृदये वा पुष्पेण स्पृष्ट्वा जपेत् । ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ ओं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य जीव इह स्थितः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । "अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मामहेति च कश्चन ॥" इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा यजमानो लिङ्गस्य दक्षिणकर्णे रुद्रगायत्रीं जपेत् । तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । सपरिवार-महादेवस्य पूजनमहं करिष्ये । स्वागतं देव देवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः । सान्निध्यं सर्वदा देव लिङ्गेऽस्मिन् परिकल्पय ॥ ततो रत्नाम्बुकलशेनाभिषिञ्चति । प्रणवेन कूर्चासनं सप्तकुशात्मकं उदगग्रं दत्त्वा दूर्वाविष्णुक्रान्ताश्यामाकपद्मपत्रकलशेन । इमा आपः शिवतमाः पूताः पूततमा मेध्या मेध्यतमा अमृता अमृतरसा पाद्यास्ता जुषन्तां प्रतिगृह्यन्ताम्। प्रतिगृह्णातु भगवान् महादेवो रुद्राय वै नमो नमः (शिवादिपञ्चायतनदेवेभ्यो नमः । शिवादिभ्यो नमः) इति पाद्यं दत्त्वा आपः क्षीरं कुशाग्राणि सयवाक्षततिलसर्षपदूर्वाणि प्रक्षिप्य "इमा आपः शि० अर्घ्यास्ता । जुषन्तां प्रतिगृह्य०" । इत्यर्घ्यं दद्यात् । एलालवङ्गकर्पूरकङ्कोलमिश्रितोदकेन— "इमा आपः शि० आचमनीयास्ता जुषन्तां०" । इत्याचमनीयम् । एवं स्नानेऽपि "इमा आपः शि० स्नानीयास्ता जुषन्तां०" । पञ्चामृतस्नानम् । ततः शुद्धोदकेन स्नानम् । "नमोऽस्तु नील-ग्रीवाय०" इति प्रतिसरं विस्रंसयति । देवं नमस्कृत्य । "युवा सुवासा" इति वस्त्रम् । "यज्ञो-पवीतम्" इति मन्त्रेण यज्ञोपवीतम् । सुजातो० इति उपवस्त्रम् । इमे गन्धाः शुभा दिव्याः सर्वगन्धैरलङ्कृताः । पूताः ब्रह्मपवित्रेण पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ प्रतिगृह्यतां० मः ।" इति गन्धम् । "नमस्तक्षद्भ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुला-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥ इत्यक्षताः । "नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च व्वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय च चाहन्याय च ॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिरायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् । इति बिल्वपत्रम् । "इमाः स्रजः शुभा दिव्याः सर्वमाल्यैरलङ्कृताः । पूता ब्रह्मपवित्रेण पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ प्रतिगृ० ॥" इति माल्यम् । "इमानि पुष्पाणि" इत्यादिना पुष्पाणि । "अहिरिव०" । सुगन्धिद्रव्यं नानापरिमलद्रव्यं च । "वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृ० ।" इति धूपम् । ज्योतिः शुक्रश्च तेजश्च देवानां सततं प्रियः । प्रभाकरो महातेजो दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृ० ।" दीपं समर्पयामि । परमात्मने नानाभक्षोपहारादिना—"पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः । आतप्त तनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्त श्रितसमासत ॥ नैवेद्यं स० । मध्ये स्वादूदकम् । उत्तरापोशनम् । हस्तप्रक्षालनम् । मुखप्रक्षालनम् । करोद्वर्तनम् । पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलालवङ्गसंमिश्रं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् । ताम्बूलं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"इदं फलं०" नारिकेलफलं स० । 'हिरण्यगर्भ०' दक्षि० । कर्पूरेण नीराजनम् पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा-ॐ भवाय देवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शर्वाय देवा० ॥ २ ॥ ईशानाय देवा० ॥ ३ ॥ ॐ पशुपतये देवा० ॥ ४ ॥ ॐ रुद्राय देवा० ॥ ५ ॥ ॐ उग्राय देवा० ॥ ६ ॥ ॐ भीमाय देवा० ॥ ७ ॥ ॐ महते देवा० ॥ ८ ॥ एभिर्नामभिः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा भवं देवं तर्पयामि ॥ १ ॥ शर्वं देवं ॥२॥ ईशानं देवं ॥ ३ ॥ पशुपतिं देवं ॥ ४ ॥ रुद्रं देवं ॥ ५ ॥ उग्रं देवं ॥ ६ ॥ भीमं देवं० ॥ ७ ॥ महान्तं देवं० ॥ ८ ॥ एवं तर्पयित्वा ततो यागमण्डपमागत्य ततस्तिलौदनेन गुडौदनेन हरिद्रौदनेन हवींषि यथाक्रमं जुहुयात् । अत्र लौकिकौदनम् । ॐभवाय देवाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ शर्वाय देवा० ॥२॥ ॐ ईशानाय देवा० ॥३॥ ॐ पशुपतये देवा० ॥४॥ ॐ रुद्राय देवा० ॥५॥ ॐ उग्रायदेवा० ॥६॥ ॐ भीमाय देवा० ॥७॥ॐ महते देवा० ॥८॥ इति तिलौदनम् ।ॐ भवस्य पत्न्यै स्वाहा॥१॥ ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै स्वाहा ॥२॥ ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै० ॥३॥ॐ पशुपतिदेवस्य पत्न्यै० ॥ ४ ॥ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै० ॥ ५ ॥ ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै० ॥ ६ ॥ ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै० ॥ ७ ॐ महतो देवस्य पत्न्यै० ॥८॥ इति गुडौदनम् ॥ ॐ भवस्य देवस्य सुताय स्वाहा ॥१॥ ॐ शर्वस्य देवस्य सुता० ॥२॥ॐ ईशानस्य देवस्य सुता० ॥३॥ॐ पशुपतेर्देवस्य सुता०।४। ॐ रुद्रस्य देवस्य सुता० ॥ ५ ॥ ॐ उग्रस्य देवस्य सुता० ॥ ६ ॥ ॐ भीमस्य देवस्य सुता० ॥ ७ ॥ ॐ महतो देवस्य सुता० ॥ ८ ॥ इति हरिद्रौदनेन हुत्वा त्रीणि हवींष्येकीकृत्य जुहुयात् ॥ ॐ त्र्यम्बकं० स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ मानो महान्त० स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ मानस्तोके० स्वाहा ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आराक्त्ते गोघ्न उतपूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मेतेऽअस्तु । रक्षा च नोऽअधि च ब्रूहि देवाथा च नः शर्म यच्छद्विवर्हाः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ विकिरिद्र० स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ सहस्राणि० स्वाहा ॥ ६ ॥ एताभिरेकैकामाहुतिं हुत्वा नाममन्त्रेण जुहुयात् । ॐ शिवाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ शङ्कराय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ सहमानाय० ॥ ३ ॥ ॐ शितिकण्ठाय० ॥ ४ ॥ ॐ कपर्दिने० ॥ ५ ॥ ॐ ताम्राय० ॥ ६ ॥ ॐ अरुणाय ॥ ७ ॥ ॐ अपगुरमाणाय० ॥ ८ ॥ ॐ हिरण्यबाहवे० ॥ ९ ॥ ॐ शष्पिञ्जराय० ॥ १० ॥ ॐ बभ्लुशाय० ॥ ११ ॥ ॐ हिरण्यवर्णाय० ॥ १२ ॥ ततः ब्रह्मादिमण्डलदेवताः प्रत्येकमेकैकयाज्याहुत्या हुत्वा—'अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये०' इति स्विष्टकृते हुत्वा नवाहुतीर्जुहुयात् । ततो यजमानः इन्द्रादिदिक्पालेभ्यो नवग्रहेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यश्च सदीपान् माषतण्डुलबलींस्तत्तन्मन्त्रैर्दत्त्वा ततः प्रक्षालितपादपाणिराचान्तः पूर्णाहुतिं जुहुयात् । अथ वसोर्धारां जुहुयात् । 'त्र्यायुषम्०' इति मन्त्रेण ललाटे भस्मधारणम् । संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा हविः शेषेणार्धेन देवस्याग्रे बलिं दद्यात् । तत्र मन्त्रः—

त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं रुद्रं शिवं विश्वसृजं यजामहे । त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमात्मनात्मन् प्रतिगृह्णीष्व हव्यम् ॥ अथाग्रेणाग्निमश्वत्थपर्णेषु अवशिष्टं हुतशेषं विदधाति । ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति त्रिरुक्त्वा बलिमुपहरेत् । तत आचम्य "अग्ने नय०" इत्यग्निं त्रिश्चतुर्वारं वा प्रदक्षिणीकृत्य । विश्वभुजे नमः । सर्वभुजे नमः । आत्मने नमः । परमात्मने नमः । इति नमस्कृत्य कृतस्य सनवग्रहमखशिवप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं द्वादशब्राह्मणान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भोजयिष्ये । इति सङ्कल्प्य देवं प्रणिपत्य प्रार्थयेत्–भगवन् देवदेवेश धर्मकामार्थमोक्षद । त्रिद्या-विद्येश्वरै रुद्रैर्गणेशैर्लोकपालकैः ॥ १ ॥ देवदानवगन्धर्वैर्यक्षैश्च किन्नरैः सह । अस्मिन् लिङ्गे महा-देव (प्रतिमायां महाभाग) सर्वदा वस वै प्रभो ॥ २ ॥ पुंसामनुग्रहार्थाय पृथिव्यां स्वेच्छया प्रभो । परावरेण भावेन स्थातव्यं सर्वदा त्वया ॥ ३ ॥ सर्वविघ्नहरः पुंसां सर्वदुःखहरः सदा । सर्वदा यजमानस्य इच्छासम्पत्करो भव ॥ ४ ॥ नमस्ते सर्वधर्माय सन्तोषविजितात्मने । मूर्ति-पानां स्थापकस्य शिल्पिनां च विभोः सदा ॥ ५ ॥ ग्रामदेशनृपाणां च शान्तिर्भवतु सर्वदा । याजकाराधकानाञ्च भक्तानां भक्तवत्सल ॥ ६ ॥ सर्वेषां च जगन्नाथ इच्छासिद्धिप्रदो भव । ज्ञान-विज्ञानतृप्ताय ब्रह्मतेजोऽभिशालिने ॥ ७ ॥ नमस्ते शुद्धदेहाय पुरुषाय महात्मने । ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं हि तत् ॥ ८ ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु प्रसादाद्भक्तवत्सल । चन्द्रार्कस्थिति-पर्यन्तं लिङ्गेऽस्मिन् (अर्चायां) परमेश्वर ॥ ९ ॥ स्थातव्यमुमया सार्धं सर्वलोकानुकम्पया । भग-वन् सर्वधर्मज्ञ शिवधर्मपरायण । सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ शिवशास्त्रविशारद ॥ १० ॥ अनादिजन्मसन्ताने अप्रमेये भवार्णवे । अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफलं धनम् ॥ ११ ॥ अद्य मे सफला कीर्तिरद्य मे परमं पदम् । मोचितोऽहं त्वया नाथ दुश्छेद्याद्भवबन्धनात् ॥ १२ ॥ सन्त्रातोऽहं त्वया ह्यस्मा-दीश्वरेण भवार्णवात् । उद्धृतो भवता नाथ क्लेशितस्त्वं क्षमस्व मे ॥ १३ ॥ यावच्चन्द्रावनीसूर्या-स्तिष्ठन्त्येते प्रतिष्ठिताः । तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थेयं भक्तानुकम्पया ॥ १४ ॥ उमापदस्थाने तच्छ-क्तिपदं योजनीयम् । इति प्रार्थयेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ कर्तृनामयुक्तं देवस्य नामकरणं कुर्यात् । अमुकेश्वरोऽसि एवं नाम कृत्वा ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्—अस्य लिङ्गस्यामुकेश्वर इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्राह्मणाः—अस्य लिङ्गस्य अमुकेश्वर इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु । 'अमुकेश्वराय नमः' इति तन्नाम्ना देवस्योत्तरपूजनं कृत्वा घण्टाबन्धनं कुर्यात् । ततोऽग्नेः पश्चिमभागे सकुटुम्बयजमानमुपवेश्य आचार्याय गां, ब्रह्मणे वृषभं, सदस्यायाश्वम्, ऋत्विग्भ्यो यथाशक्ति दक्षिणां च दद्यात् । ततः स्थापितकलशोदकेन यजमानं सकुटुम्बं सपरिवारमभिषिञ्चेत् । अभिषेकमन्त्राः—देवस्य त्वा० ३. सुरास्त्वा० इत्यादयश्च । ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजां विधाय "यान्तु देव०" इति सर्वपीठदेवता विसर्जयेत् । ततो ग्रहपीठं वास्तुपीठं चाचार्याय दद्यात् । कृतस्य सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं लिङ्गतोभद्रपीठं चाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ततः आचार्यो मण्डपदेवता अग्निं च विसर्जयेत् । भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा दीनानाथांश्च सम्भोज्येष्टजनैः सह भुञ्जीत । मण्डपकरणपक्षे तु मण्डपपूजनं मत्कृततडागोत्सर्गप्रयोगे द्रष्टव्यम् । इति लघुदर्पणे लिङ्गप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥

अथ विष्ण्वादिप्रतिष्ठा—यजमानः पूर्वोक्तकाले पूर्वेद्युरष्टहस्तादिप्रमाणं मण्डपं विधाय मध्ये हस्तमात्रं चतुरस्रं स्थण्डिलं कृत्वा नैर्ऋत्ये वास्तुमण्डलम्, ईशान्यां ग्रहवेदिं, पूर्वे हस्तोच्छ्रितां प्रधानवेदिं सर्वतोभद्रं च कृत्वा देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात् । आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम सपत्नीकस्य नानाजन्मार्जितसर्वपापक्षयपूर्वकं दशपूर्वान् दशापरानात्मना सहैकविंशति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरुषान् पितृतो मातृतश्चोद्धर्तुकामो निरतिशयानन्दब्रह्मपदप्राप्तिकामश्च अस्याममुकमूर्तौ देवकलासान्निध्यार्थं स्वकृते शैलप्रासादप्रतिष्ठासहितामुकमूर्तेः स्थिरप्रतिष्ठां श्वः करिष्ये। अनयोः श्रीराधाकृष्णमूर्त्योः देव० र्थं सप्रासादश्रीकृष्णराधिकामूर्त्योश्चरप्रतिष्ठां करिष्ये। आसु विष्णुसूर्यगणपतिदुर्गापार्वतीनन्दिमूर्तिषु देव० र्थं विष्ण्वादिप्रतिष्ठां तन्त्रेणाहं करिष्ये। आसु श्रीरामचन्द्रजानकीलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नमा[1]रुतिमूर्तिषु देव० र्थं श्रीरामचन्द्रादिमूर्तीनां चरप्रतिष्ठां यथासम्भवं स्वयमाचार्यद्वारा च तन्त्रेण तृतीयेऽहन्यहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। यथाचार्यः 'यदत्र संस्थितम्' ० इत्यादि सर्षपान् विकीर्य 'आपो हि ष्ठा०' इति पञ्चगव्येन भूमिं सम्प्रोक्ष्य प्रासादपक्षे शङ्कुरोपणं बलिदानं रेखाकरणं च कृत्वा शिख्यादीन् सम्पूज्य तेभ्यो बलिदानं कुर्यात्। ततो देवं पञ्चगव्यहिरण्यदूर्वाङ्कुरयवाश्वत्थपलाशपर्णैः 'आपो हि ष्ठा०" इति तिसृभिः 'हिरण्यवर्णा' इति चतसृभिः 'पवमानः, सुवर्चनः' इत्यनुवाकेनाभिषिञ्चेत्। "पञ्चगव्यं हिरण्यं तु पवित्रं शुद्धिकारणम्। अतस्त्वामभिषिञ्चामि देवाः शुध्यन्ति वै मुदा॥" ततः पुष्पफलयवाक्षतदूर्वाङ्कुरान् देवपादयोर्निक्षिपति। 'इदं विष्णुर्वि०' इति विष्णोः०। 'आकृष्णेन०' इति सूर्यस्य। 'गणानान्त्वा' इति गणपतेः। 'अम्बे अम्बिके०' इति देव्याः। 'आशुःशिशान०' इति नन्दिनः। इदं विष्णु०। श्रीश्चते०। विष्णो रराट०। **मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्मयोभूरभिमाब्वाहि स्वाहा वष्यूरसि दुवस्वाञ्शम्भूर्मयोभूरभिमावाहिस्वाहा। नमोऽस्तु**

---

१ ग्रामान्ते ग्रामसीमान्ते हनुमाँश्च महाबलः। पश्चिमाभिमुखः स्थाप्यो रक्षार्थं तु सुखार्थिना॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवदेवाय नमस्ते बलशालिने । दूर्वाफलयवांस्तुभ्यमर्पयामि सुरेश्वर ॥ इति मन्त्रैः प्रक्षिप्य तत्तन्मूर्तिस्थापनं कुर्यात् । ततो देवस्य दक्षिणकरे देव्याः वामकरे च रक्षोहणं० । "देवानां रक्षणार्थाय रक्तसूत्रं कुशैर्युतम् । तद्वै प्रतिसराख्यं च बध्नामि सुरहेतवे ॥" इति मन्त्रेण प्रतिसरं बद्ध्वा सम्पूज्य । वाससा कुशैश्चाच्छाद्य स्थण्डिलात्पश्चिमदेशे कटाहं जलभाण्डं वा तीर्थोदकपूर्णं संस्थाप्य तत्र 'अवते हेडो०' 'उदुत्तमं०' इति मन्त्राभ्यां जले प्रतिमां अधिवासयेत् । प्रतिमासु कलानां च सिद्ध्यर्थं रक्षणाय भो । जलेशैनां रक्ष देव मत्तोऽस्तु समधिष्ठिताम् ॥ एकरात्रं यामं सद्यो वा [सद्यः पक्षे यामार्द्धमात्रं गोदोहनमात्रं मुहूर्तमात्रं वा] अधिवासनमिष्यते । इति प्रथमदिनकृत्यम् ॥

अथ द्वितीये दिवसे आचार्यः—सर्वतोभद्रे ब्रह्मादिदेवानावाह्य सम्पूज्य तदुपरि कलशं संस्थाप्य कलशोपरि सौवर्णीं देवप्रतिमां तत्तन्मन्त्रेण संस्थाप्य पूजयेत् । सर्वतोभद्रस्य प्रतिद्वारं कलशद्वयं एवमष्टौ कलशान् संस्थाप्य तेषु वरुणमावाह्य सम्पूज्य 'उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते' । 'उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश ! त्यज निद्रां महाशय । जलाधिवासनविधिं त्यज, स्वीकुरु मण्डपम्' ॥ इति मन्त्राभ्यां मूर्तिमुत्थाप्य । उत्तरदेशे देवमानीय प्रत्यङ्मुखं पीठे संस्थाप्य । पुण्याहं वाचयित्वा देवं प्रार्थयेत्--स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोऽस्तु ते । [स्वागतं देविदेवेशि विश्वरूपे नमोऽस्तु ते] शुद्धेऽपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्व ताम् ॥ इति सम्प्रार्थ्य । वल्मीकमृत्कषायैरनुलिप्य शुद्धोदकेन स्नापयेत् । तत्संस्कारार्य देवानां मलस्य परिशुद्धये । मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवतातुष्टिहेतवे ॥ १ ॥ शुद्धेन वारिणा देवं सकलं वाञ्छितप्रदम् । स्नापयामि सुरेशानमैश्वर्यस्याभिवृद्धये ॥ २ ॥ मन्त्रवत् पञ्चगव्येन आघो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः । अग्निं पुरास्तनयित्नोरचिताद्धिरण्यरूपमनसे कृणुध्वम् ॥ १ ॥ आकृष्णेन० ॥ २ ॥ गणानान्त्वा० ॥ ३ ॥ अम्बे अम्बिके० ॥ ४ ॥ आशुः शिशान० ॥५॥ गोशरीरात् समुद्भूतैः पञ्चगव्यैः सुपावनैः । संस्नापयामि देवेशं देवसंस्कारसिद्धये ॥ इति स्नापयित्वा । शमीपलाशखदिरबिल्वाश्वत्थवैकङ्कतन्यग्रोधपनसाम्रशिरीषोदुम्बरप्लक्षाणां सर्वयाज्ञिकवृक्षाणां चर्मकषायकलशोदकेनाभिषिञ्चति––अश्वत्थेवोनिष० । यज्ञीयवृक्षत्वक्कषायैर्निर्मलैः परिशोधितैः । उष्णैर्मलहरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये ॥ पञ्चरत्नोदकेनाभिषिञ्चति—"परिवाजपति०" । सुवर्णं रजतं मुक्ता लाजवर्तप्रवालकम् । एतत्पञ्चकरत्नैस्तु सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥ तिलपिष्टैः पेषितैस्तैर्गन्धपुष्पसमन्वितैः । सुगन्धितैलैः सम्मार्ज्मि बहुप्रीतिकरं सुखम् ॥ सुगन्धितैलेनाभ्यज्य । हिरण्यवर्णाः० । गङ्गा सरस्वती चैव यमुनादिनदी तथा । तासामद्भिः स्नापयामि सर्वसौन्दर्यलब्धये ॥ इति शुद्धोदकेन संस्नाप्य अङ्गं संप्रोक्ष्य औदुम्बरपीठे उपवेश्य । "अभि वस्त्रा०" । श्वेतं सुनिर्मलं शान्तं तन्तुसन्तानसंयुतम् । देवेभ्योऽहं प्रदास्यामि सुरसन्तुष्टिकारकम् ॥ इति वाससी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दत्त्वा गन्धादिभिः सम्पूज्य । हिरण्यगर्भ० इत्येभिर्मन्त्रैरष्टौ दीपान् प्रज्वाल्य । "अष्टौ दीपान् प्रदास्यामि पायसं भक्ष्यमुत्तमम् । भोज्यं सुन्दरमादर्शं दर्शयामि शुभाप्तये ॥" इति बलिं स्थापयित्वा आदर्शं च प्रदर्श्य तैजसपात्रे मधु संगृह्य सुवर्णशलाकया—"चित्रंदेवानाम्०" इति मन्त्रेण दक्षिणसव्ये देवनेत्रे मन्त्रावृत्त्या लिखेत् । 'लिङ्गस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठुतेजोऽभिवृद्धये । चक्षुर्द्वयस्य निर्माणं करोमि स्वात्मसिद्धये ॥' ॐ नमो भगवते विष्णवे लक्ष्मीप्रियाय १ । ॐ ऋद्धिसिद्धिप्रियाय हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपाय ते नमः २ । एवं ॐ सूर्याय प्रभाप्रियाय गणपतये ३ । नमो भगवत्यै पार्वत्यै दुर्गायै हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै विश्वरूपिण्यै शिवप्रियायै नमः ४ । ॐ नन्दिने० ५ । ॐ नमो भगवत्यै श्रीकृष्णायै हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपाय राधाप्रियाय ते नमः ६ । ॐ नमो भगवत्यै राधायै हिरण्यरेतस्यै परायै परमात्मायै विश्वरूपायै कृष्णप्रियायै नमः ७ । ॐ श्रीरामाय० १ । ॐ सीतायै० २ । लक्ष्मणाय० ३ । ॐ भरताय० ४ । ॐ शत्रुघ्नाय ५ । ॐ हनुमते० ६ । इति संलिख्य अञ्जन्ति त्वा० इति मध्वञ्जनं कुर्यात् । दिव्याञ्जनं मधुघृतं रजतस्थशुभान्वितम् । दास्यामि सौम्यदृष्ट्यर्थं सुवर्णस्य शलाकया ॥ ततः आचार्याय गाम्, ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात् । कृतस्य नेत्रोन्मीलनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं विष्ण्वादिदेवानां सौम्यदृष्टिसिद्ध्यर्थमिदं यथाशक्ति [1] गोनिष्क्रयद्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

---

१ गोदानञ्च—ज्योतिष्टोमादिश्रतकर्मसु, लक्षादिहोमस्मार्तकर्मसु च अङ्गभूतं प्रधानं च ॥ एवमश्वादिदानस्थानेऽपि तन्मूल्यदानम् । अत आह गवामभावे दातव्यं तन्मूल्यन्तु न संशयः । इति शूलपाणिः । तत्र कस्य कियन्मूल्यमित्याशङ्कायां वाजपेयादौ दक्षिणात्वेन निर्दिष्टानां गवादीनां मूल्यानि निर्दिदेश—कात्यायनः—द्वात्रिंशत्पणिका गावश्चतुष्कार्षापणो वरः । वृषे

अग्नेरुत्तरतः शय्यामासादयेत् । "उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते० ।" उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां जगत्पते । त्वयि सुप्ते जगत् सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ॥ इति देवमुत्थाप्य कुशप्रस्तरे वस्त्रेण आच्छाद्य प्राक्शिरसं देवं शय्यायां शाययेत् । प्राजापत्यो मुहूर्तोऽस्तु इति मन्त्रेण । अथाचार्यः स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहवेद्यां ग्रहान् संस्थाप्य सम्पूज्य ब्रह्मोपवेशनादि आज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमं वास्तुमण्डलदेवताहोमं च कुर्यात् । ततः प्रासादे सूत्रवेष्टनं दुग्धधारामुदकधारां च दत्त्वा ध्वजारोपणं पेटिकारोपणं च कुर्यात् । अथ प्रधानहोमे सहस्रशीर्षा० इत्यादिषोडशर्चेन प्रतिमन्त्रमाज्यं हुत्वा । इदं विष्णुः० इति पादौ स्पृष्ट्वाऽयुतं तेनैव हुत्वा । विष्णोर्नुकम्० इति नाभिं संस्पृश्य पुनस्ता एव हुत्वा पुरुषसूक्तेन विष्णोः सर्वाङ्गमुपस्पृशेत् । इति विष्णुहोमः । अथादित्यहोमः "आकृष्णेन०" इति इति मन्त्रेणाष्टाविंशतिसंख्ययाज्येन हुत्वा मूलमन्त्रेण देवस्य पादौ स्पृशेत् । पुनस्तथैव हुत्वा तेनैव सर्वाङ्गं स्पृशेत् । एवं गणानान्त्वा० १०८ इति गणपतेः । 'अम्बे अम्बिके०' १०८ इति दुर्गायाः । आशुः शिशान० १०८ इति नन्दिनः । पूर्ववद् होमादि अङ्गस्पर्शनान्तं कृत्वा ॐ कृष्णाय स्वाहा १०८ । ॐ राधिकायै स्वाहा १०८ । ॐ इदं विष्णुः ॐ रामाय स्वाहा १०८ श्रीश्चते० सीतायै स्वाहा १०८ । विष्णोरराट० ॐ लक्ष्मणाय स्वाहा १०८ । ॐ भरताय स्वाहा १०८ । ॐ शत्रुघ्नाय

षट्कर्षापणकाः अष्टावनडुहि स्मृताः ॥ १ ॥ दशकार्षापणा धेनोरश्वे पञ्चदशैव तु । हिरण्ये कार्षापणकः पणा नव तथाविकः ॥ २ ॥ वस्त्रे कार्षापणाः छागेऽष्टौ पणा द्वादशाश्विकं । वृषल्यामथ पञ्चाशन्मूल्यं कार्षापणाः स्मृताः ॥ ३ ॥ निष्के पञ्चाशदेव स्युर्गजे पञ्चशतानि तु । पञ्चकार्षापणाः प्रोक्ताः दोलायां षड्रसे तथा ॥ ४ ॥ गृहेऽष्टौ कार्षापणकास्ताम्रकर्षे पणः स्मृतः । तत्र पणस्वरूपं पञ्चधा—वराटकमानेन, ताम्रमानेन, रौप्यमानेन, राजतमानेन, सुवर्णमानेनेति भेदात् ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा १०८। "मारुतोऽसि०" हनुमते स्वाहा १०८। देवस्य पादौ नाभिं हृदयं शिरश्चालभे सौम्य-देवस्य हृष्ट्यर्थं स्पृशामि हितकाम्यया ॥ ततो गन्धोदकपूरितानेककलशैः प्रासादं सशिखरं स्नापयेत्। इति द्वितीयदिनकृत्यम् ॥

ततस्तृतीयदिने "उदुत्यं जातवेदसम्० इति देवमुत्थाप्य—उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश! उत्तिष्ठ जगतां पते। उत्तिष्ठ जगदाधार त्रैलोक्ये मङ्गलं कुरु ॥ रथमारोप्य तूर्यघोषेण सह "शन्नः कनिक्रद०" इति सूक्तेन देवं देवालये प्रवेश्य मणिमुक्ताप्रवालसुवर्णरजतानि पादपीठे निधाय-अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या सप्तधामभिः ॥ अतसीपुष्पसंकाशं शंखचक्रगदाधरम्। संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जना-र्दनम् ॥ इति द्वाराभिमुखं विष्णुमूर्तिं स्थापयेत्। वाहनं चाग्रमण्डपे स्थाप्यम्। अथ सूर्यस्य—"आकृष्णेन०" सहस्रकिरणं शान्तमप्सरोगणसेवितम्। पद्महस्तं महाबाणं स्थाप-यामि दिवाकरम् ॥ अथ गणेशस्य—"गणानांत्वा०" लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं चारुवाहनम्। पाशाङ्कुशाद्यायुधाढ्यं स्थापयामि गजाननम् ॥ अथ देव्याः—"अम्बे अम्बिके०" चिद्रूपिणीं मुनिध्ये-यामभीप्सवरवाहनाम्। दिव्यायुधां महामायां स्थापयामि महेश्वरीम् ॥

अथ नन्दिनः—आशुः शिशान०। शिवद्वारगतस्त्वं वै शिववाहनमुत्तमम्। पार्वत्याः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रीतिकरञ्च नन्दिनं स्थापयाम्यहम् ॥ अथ श्रीकृष्णस्य–इदं विष्णु० । अतसोपुष्पसंकाशं पीतवासं जनार्दनम् । देवकीतनयं कृष्णं स्थापयामि सुरोत्तमम् ॥ अथ राधायाः– "श्रीश्चते०" कृष्णस्य महिषीं देवीं जगदुद्भवकारिणीम् । संस्थापयामि राधे त्वां वरदा भव शोभने ॥ अथ रामस्य–"इदं विष्णु०" अतसोपुष्पसंकाशं धनुर्बाणधरं विभुम् । कौसल्यातनयं विष्णुं स्थापयामि रघूत्तमम् ॥ अथ सीतायाः–"श्रीश्चते०" । रामस्य महिषीं देवीं जगदुद्भवकारिणीम् । संस्थापयामि सीते त्वां वरदा भव शोभने ॥ अथ लक्ष्मणस्य–विष्णोरराट० । रामस्य दयितो भ्राता लक्ष्मणः शुभलक्षणः । संस्थापयामि त्वां देवं सुमित्रानन्दवर्धन ? ॥ अथ भरतस्य–"तद्विष्णोः पर०"। द्विभुजं श्यामलं कान्तं रामसेवापरायणम् । कैकयीतनयं देवं भरतं स्थापयाम्यहम् ॥ अथ शत्रुघ्नस्य–विष्णोः कर्माणि पश्यन्त यतोऽव्रतानि पश्यसे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ द्विभुजं स्वर्णरुचिरं रामसेवापरायणम् । सुमित्रातनयं देवं शत्रुघ्नं स्थापयाम्यहम् ॥ अथ हनुमतः–मारुतोऽसि० रामदूत महाबाहो पिङ्गाक्ष कपिनायक । संस्थापयामि त्वां वीर अञ्जनीहर्षदायक ? ॥ गन्धादीन्याकाशान्मुखानि कृत्वा ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः पु० । स्वः पुरु० । भूर्भुवः स्वः पु० । 'अम्बे अम्बिके०'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मायां रौद्रीमावाहयामि । इत्यावाह्य 'इहैवैधि०' इति त्रिर्जपेत् । ध्रुवत्वं ध्रुवकर्तारं ध्रुवदेवं महाबलम् । अचलं कुरु कल्याणं ध्रुवागच्छ नमोऽस्तु ते ॥ प्रणवेन कृताङ्गन्यासः प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः विष्णोः प्राणा इह प्राणाः । आं ह्रीं० विष्णोः जीव इह स्थितः । ॐआं ह्रीं० विष्णोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वा-घ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा १ । एवं सूर्यस्य २ । गणपतेः ३ । देव्याः ४ । नन्दिनः ५ । श्रीकृष्णस्य । १ श्रीराधायाः २ । श्रीरामचन्द्रस्य १ । सीतायाः २ । लक्ष्मणस्य ३ । भरतस्य ४ । शत्रुघ्नस्य ५ । हनुमतः ६ । यजमानः देवस्य कर्णे गायत्रीं जपेत्—ॐनाराय-णाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐ भास्कराय विद्महे महद्-द्युतिकराय धीमहि । तन्न आदित्यः प्रचोदयात् ॥ २ ॥ ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ ॐकात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि । तन्नो दुर्गा प्रचोद-यात् ॥ ४ ॥ ॐतीक्ष्णशृङ्गाय विद्महे वेदपादाय धीमहि । तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ॥ ५ ॥ ॐदेव-कीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐवृषभानुजायै विद्महे कृष्णवल्लभायै धीमहि । तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥ २ ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥ १ ॥ ॐ विदेहात्मजायै विद्महे रामवल्लभायै धीमहि । तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥ २ ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिलाप्रियाय धीमहि । तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ ॐ दाशरथाय विद्महे माण्डवीवल्लभाय धीमहि । तन्नो भरतः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥ ॐ दाशरथाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्महे श्रुतिकीर्तिवल्लभाय धीमहि । तन्नः शत्रुघ्नः प्रचोदयात् ॥ ५ ॥ ॐ अञ्जनीगर्भाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहिं । तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥ ६ ॥ 'स्वागतं०' ततो रत्नाम्बुकलशेनाभिषिञ्चति । प्रणवेन मूलमन्त्रेण चासनं दत्त्वा । दूर्वाविष्णुक्रान्ताश्यामाकपद्मपत्रम् । इति पाद्यम् । 'इमा आपः शिवतमाः पूता पूततमा मेध्यतमा अमृता अमृतरसाः पाद्यास्ता जुषन्तां' प्रतिगृह्यन्ताम् प्रतिगृह्णातु भगवान् महाविष्णुर्विष्णवे नमो नमः ॥ १ ॥ महासूर्यः सूर्याय वो नमो नमः ॥ २ ॥ महागणपतये नमो नमः ॥ महादेवो देव्यै नमो नमः ॥ ४ ॥ वृषभाय नमः ॥ ५ ॥ ॐविष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । ॐश्रीकृष्णाय नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीराधायै नमः ॥ २ ॥ ॐश्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः । ॐ श्रीरामाय नमो नमः ॥ १ ॥ ॐ श्रीसीतायै नमो नमः ॥ २ ॥ ॐ श्रीलक्ष्मणाय नमो नमः ॥ ३ ॥ ॐ श्रीभरताय नमो नमः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीशत्रुघ्नाय नमो नमः ॥५॥ ॐ श्रीहनुमते नमो नमः ॥६॥ ॐ श्रीसीतारामाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । इत्येवं नाममन्त्रैः अद्भिः क्षीरकुशाग्रैरक्षतैर्यवैस्तिलैः सिद्धार्थकैः पुष्पैश्चैवार्घ्यम् । "इमा आपः०"–अर्घ्यास्ताजुषं० । इत्यर्घ्यं समर्पयेत् । एलालवङ्गकङ्कोलकर्पूरमिश्रमाचमनीयम् । 'इमा आपः० आचमनीयास्ताजुषं०' इत्याचमनीयं दत्त्वा अत्र पञ्चामृतस्नानादि यथासम्भवम् । ततः शुद्धोदकेन स्नानम् इमा० रसास्नानीयास्ताजु० । 'इदं विष्णुः०' इति विष्णोः प्रतिसरं बिस्रस्य । 'ॐआकृष्णेन' इति सूर्यस्य । 'ॐगणानान्त्वा०' इति गणपतेः । 'ॐ अम्बे अम्बिके०' । इति देव्याः । 'ॐआशुः शिशानः०' । इति नन्दिनः । 'ॐइदं विष्णुः०' । इति श्रीकृष्णस्य । 'ॐश्रीश्चते०' । इति राधायाः । 'ॐइदं विष्णुः० इति श्रीरामचन्द्रस्य । 'ॐश्रीश्चते०' इति सीतायाः । 'ॐविष्णो रराट०' इति लक्ष्मणस्य । 'ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्विष्णोः पर० । इति भस्तस्य । 'विष्णोः कर्म्मा०' इतिशत्रुघ्नस्य । "मारुतोऽसि०' । इति हनुमतश्च प्रतिसरं यथायोगं विसृस्य देवं नमस्कृत्य । वस्त्रं यज्ञोपवीतं च समर्प्य । " ॐ इमे गन्धाः । शुभा दिव्याः सर्वगन्धैरलङ्कृताः । पूता ब्रह्मपवित्रेण पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः । प्रतिगृ० इति गन्धं० । "इमास्रजः शुभा दिव्याः सर्वमाल्यैरलङ्कृताः । पूताः० इति माल्यानि । इमानि पुष्पा० । इति पुष्पाणि । वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृ० इति धूपम् । ज्योतिः शुक्रं च तेजश्च देवानां सततं प्रियः । प्रकाशः सर्वभूतानां दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । प्रतिगृ० इति दीपम् । ततः "पवित्रं ते विततम्०" इति कृसरं पायसं गुडौदनं हरिद्रौदनं निवेदयेत् । ततः फलताम्बूलदक्षिणाकर्पूरार्तिक्यान्तं कृत्वा ॐ सङ्कर्षणाय नमः १ । ॐवासुदेवाय नमः २ । ॐप्रद्युम्नाय नमः ३ । ॐ अनिरुद्धाय नमः ४ ।ॐपुरुषोत्तमाय नमः ५। अधोक्षजाय नमः ६। ॐ नृसिंहाय नमः ७। ॐ अच्युताय नमः ८। ॐजनार्दनाय नमः ९। ॐउपेन्द्राय नमः १०। ॐ हरये नमः ११। ॐ श्रीकृष्णाय नमः १२। इति द्वादशनामभिः पुष्पाणि समर्प्य तैरेव नामभिः जलेन तर्पणं कुर्यात् । सूर्यस्य प्रतिष्ठायां तु । ॐमित्राय० १। ॐरवये० २। ॐसूर्याय० ३। ॐभानवे० ४। ॐखगाय ५। ॐपूष्णे० ६। ॐ हिरण्यगर्भाय० ७। ॐ मरीचये० ८। ॐआदित्याय० ९। ॐसवित्रे० १०। ॐअर्काय० ११।ॐभास्कराय० १२। इति द्वादशनामभिः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा तैरेव नामभिस्तर्पयेत् । अथ गणपतेः—ॐसुमुखाय० १। ॐएकदन्ताय० २। ॐकपिलाय० ३। ॐगजकर्णकाय० ४। ॐलम्बोदराय० ५। ॐ विकटाय० ६। ॐविघ्ननाशाय० ७। ॐ गणाधिपाय० ८। ॐ धूम्रकेतवे० ९। ॐगणाध्यक्षाय० १०। ॐभालच-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्द्राय० ११। ॐ गजाननाय० १२। इति द्वादशनामभिः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा तैरेव नामभिस्तर्पयेत्। अथ दुर्गायाः–ॐभगवत्यै नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा। भगवतीं तर्पयामि इति द्वादशवारं तर्पयेत्। एवं श्रीकृष्णाय नमः, श्रीकृष्णं तर्पयामि। राधाय०, राधां तर्पयामि। श्रीरामचन्द्राय नमः, "श्रीरामचन्द्रं तर्पयामि। ॐसीतायै नमः, सीतां तर्पयामि। ॐ लक्ष्मणाय नमः, लक्ष्मणं तर्पयामि। ॐ भरताय नमः, भरतं तर्पयामि। ॐ शत्रुघ्नाय० शत्रुघ्नं तर्पयामि। इति तत्तन्नाममन्त्रैर्द्वादशवारं पुष्पाञ्जलितर्पणानि कार्याणि। हनुमतस्तु–ॐ हनुमते नमः १। ॐ अञ्जनीसूनवे० २। ॐ वायुपुत्राय० ३। ॐ महाबलाय० ४। ॐ रामेष्टाय० ५। ॐ फाल्गुनसखाय० ६। ॐ पिङ्गाक्षाय० ७। ॐअमितविक्रमाय० ८। ॐसमुद्रोल्लङ्घनाय० ९। ॐसीताशोकविनाशनाय० १०। ॐलक्ष्मणप्राणदात्रे० ११। ॐदशग्रीवदर्पहर्त्रे० १२। इति द्वादशनामभिःपुष्पाञ्जलितर्पणे कार्ये। ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य विष्णुप्रतिष्ठायां कृसरमाज्यमिश्रं जुहुयात्। तद्यथा-ॐवासुदेवाय स्वाहा १।ॐ सङ्कर्षणाय० २। ॐप्रद्युम्नाय० ३। ॐअनिरुद्धाय०४। ॐशान्त्यै० ५। ॐश्रियै० ६। ॐसरस्वत्यै७। ॐपुष्ट्यै०८।ॐततो विष्णोर्नुकं०९। ॐतदस्य प्रिय०१०। ॐप्रतद्विष्णु०११।ॐपरोमात्रया० १२।ॐ विचक्रमे पृथिवी०१३। ॐत्रिर्देवः०१४। तत पूर्वोक्तद्वादशनाममन्त्रैश्च जुहोति। अथ सूर्यस्य प्रतिष्ठयां तु ॐ "मित्राय स्वाहा०" इत्यादि द्वादशनामभिः 'उदुत्यं०' 'चित्रं देवानाम्०' इति च कृसरमाज्यमिश्रमेकैकाहुतीर्जुहोति। अथ गणपतेः–"सुमुखाय स्वाहा"। इत्यादिद्वादशनामभिः "गणानान्त्वा०" इति च कृसरमाज्यमिश्रं जुहुयात्। अथ दुर्गायाः–ॐ भगवत्यै स्वाहा १। ॐ दुर्गायै० २। ॐ मायायै० ३। ॐरौद्र्यै० ४। ॐ महाकाल्यै० ५। महायोगिन्यै० ६। ॐ सुवर्णपुष्ट्यै० ७।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ दवेसं० कीर्त्यै० ८। ॐ महायज्ञियायै ९। ॐ महावैष्णव्यै० १०। ॐ नमोऽनम्यायै० ११। ॐ शङ्खधारिण्यै ० १२। इति द्वादशनामभिः "अम्बे अम्बिके०" इति "जातवेदसे सुनवाम सोममराति यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः स्वाहा इति च कृसरमाज्यमिश्रं जुहुयात्। एवं पूर्वोक्तनाममन्त्रैर्द्वादशकृसरा-ज्याहुतिभिः वृषादीनां होमं कुर्यात्। ततः सर्वतोभद्रदेवताश्चैकैकयाऽऽज्याहुत्या हुत्वा। स्विष्ट-कृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा। ततः पूर्वोक्तसर्वहविर्विष्णवे सूर्यादिभ्यो वा। 'त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं नारायणं [सूर्यं शिवं गणपतिं] विश्वसृजं यजामहे। त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमात्मनात्मन् प्रतिगृह्णीष्व हव्यम् ॥ इति मन्त्रेण बलिं दद्यात्। गणानान्त्वेति मन्त्रेण हविश्शेषबलिदानं कुर्यात्। ततः स्थण्डिलात्पूर्वदेशेऽश्वत्थपर्णेषु हुतशेषं निद-धाति "ॐ भूर्भुवः स्वरोम्" इति अग्निसहितं देवं प्रदक्षिणीकृत्य—ॐ विश्वभुवे नमः। ॐ सर्वभुजे नमः। ॐ आत्मने नमः ॐ परमात्मने नमः। इति नत्वा द्वादशब्राह्मणभोजनं संकल्पयेत्। ततो यजमानः स्वनामयुतं देवस्य नाम कुर्यात्—अमुकनारायणोऽसि १। अमुकादित्योऽसि २। अमुकविना-यकोऽसि ३। अमुकी देव्यसि ४। अमुकवृषभोऽसि ५। अमुककृष्णोऽसि १। अमुकराधाऽसि २। अमुकरामोऽसि १। अमुकसीताऽसि २। अमुकलक्ष्मणोऽसि ३। अमुकभरतोऽसि ४। अमुकशत्रु-घ्नोऽसि ५। अमुकहनुमानसि ६। इति नामानि कल्पयित्वा ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्—अस्याः प्रतिमायाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुकनारायण (आदित्य, विनायक, देवी, वृषभ' कृष्ण, राधा, राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान्] इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्राह्मणाः—अस्याः प्रतिमायाः अमुकनारायण [आदित्य, विनायक, देवी, वृषभ, कृष्ण, राधा, राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न हनुमान्] इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु । अमुकनारायणाय [आदित्याय, विनायकाय, देव्यै, वृषभाय] नमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । विष्णोः—ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि भगवन् यत्कृतं मया । तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादादधोक्षज ! ॥ १ ॥ सूर्यस्य–मेरुं प्रदक्षिणं कुर्वन् जगत् सर्वं प्रकाशते ॥ सर्वभूतशरीराणि यस्मादावृत्य तिष्ठति ॥ तस्मादत्रापि सान्निध्यं रवे कुरु हितं सदा ॥ २ ॥ गणपतेः–लम्बोदर नमस्तेऽस्तु विघ्नौघस्य विनाशन । मम यज्ञं गृहाणेममीशपुत्र प्रियंवद ॥ ३ ॥ देव्याः–नमस्तेऽस्तु महामाये भक्तानुग्रहकारिणि । जगन्मातर्नमस्तेऽस्तु सेवकं रक्ष सर्वदा । नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ४ ॥ नन्दिनः—तीक्ष्णशृङ्गं चतुष्पादं शिववाहं महाबलम् । घोररावं महास्कन्धं वृषभं त्वां नमाम्यहम् ॥ ५ ॥ राधाकृष्णयोः—ध्यात्वा चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम् । पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम् ॥ लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम् । ध्यायामि पुण्डरीकाक्षं सदानन्दस्वरूपिणम् ॥ "श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः" ध्यानं स० । **केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् । राधिकासहितं देवं '[1]कृष्ण-**

---

१ कृष्णादिपूजाऽग्रे लिखितेति नात्र स्पष्टीकृता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मावाहयाम्यहम् ॥ इत्यावाहनादिमन्त्रपुष्पाञ्जल्यन्तं समर्प्य नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो। वासुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन ॥ गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते। राधापते नमस्तुभ्यं यशोदानन्दवर्द्धन। ब्राह्माण्डाधीश योगेश पूर्णब्रह्म नमोऽस्तु ते। कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥ दामोदराय देवाय राधायाः पतये नमः ॥ श्रीरामपञ्चायतनस्य—दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ कोमलाङ्गं विशालाक्षमिन्द्रनीलसमप्रभम्। दक्षिणाङ्गे दशरथं पुत्रावेक्षणतत्परम् ॥ पृष्ठतो लक्ष्मणं देवं सच्छत्रं कनकप्रभम्। पार्श्वे भरतशत्रुघ्नौ तालवृन्तकरावुभौ ॥ अग्रे व्यग्रं हनूमन्तं रामानुग्रहकाङ्क्षिणम् ॥ इति ध्यात्वा षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्—सहस्रशीर्षा०। आवाहयामि विश्वेशं जानकीवल्लभं विभुम्। कौसल्यातनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेः परम् ॥ श्रीरामचन्द्रादिभ्यो नमः। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः आवाहनं० श्रीरामागच्छ भगवन् रघुवीर नृपोत्तम। जानक्या सह राजेन्द्र सुस्थिरो भव सर्वदा ॥ रामचन्द्र महेष्वास रावणान्तक राघव। यावत् पूजां समाप्येऽहं तावत् त्वं सन्निधौ भव ॥ इति सन्निधापनं०। रघुनायक राजर्षे नमो राजीवलोचन। रघुनन्दन मे देव श्रीरामाभिमुखोभव ॥ इति सम्मुखीकरणं०। राजाधिराज राजेन्द्र रामचन्द्र महीपते। रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥ श्रीरामचन्द्रादिभ्यो नमः आसनार्थे तुलसीदलानि०। एतावान०। त्रैलोक्यपावनानन्त नमस्ते रघुनायक। पाद्यं गृहाणराजर्षे नमो राजीवलोचन ॥ श्री० पाद्यं०। त्रिपादूर्ध्वं०। परिपूर्णपरानन्द नमो रामाय वेधसे। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृष्ण विष्णो जनार्दन ॥ श्री० अर्घ्यं०। ततो विराड०। नमः सत्याय शुद्धाय दिव्याय ज्ञानरूपिणे। गृहाणाचमनं नाथ सर्वलोकैकनायक ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रिति मन्त्रेण सप्रासादमहामण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविशेत् । ततो यजमानो मध्यवेदी-शानभागे कुम्भं स्थापयेत्। ततो मण्डपप्रादक्षिण्येन वेद्याः दक्षिणत उदङ्मुखो यजमान उपविशेत्। तत आचार्योऽग्न्यायतनात्पश्चिमतः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य अस्मिन् ग्रहमखसहितसप्रासादे शिवादिप्रतिष्ठाख्ये कर्मणि यजमानेनवृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। गौरसर्षपान्मण्डपान्तः सर्वतो विकिरेत्——यदत्र संस्थितमित्यादिभिः। ततः आपोहिष्ठेति तृचेन कुशैस्तेन पञ्चगव्येन च यागभूमिं प्रासादस्नानशालां च प्रोक्षयेत्। ततः कृताञ्जलिः— 'स्वस्तिन इन्द्र०' इति मन्त्रद्वयं पठेत्। देवा आयान्तु स्वेति भूमौ प्रादेशं कुर्यात्। ततो गुरुः प्रासादान्तर्नैर्ऋत्यां हस्तमितवेदीं कृत्वा चतुःषष्टिपदे वास्तुपीठदेवता आवाह्य सम्पूज्य तेभ्यो बलिं दद्यात्। तद्यथा—अस्मिन् सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाख्ये कर्मणि वास्तुपीठदेवतास्थापनं पूजनञ्च करिष्ये। ततो वेद्या ईशानादिकोणेषु चतुरः शङ्कून् रोपयेत्। तत्र मन्त्रः—विशन्तु भूत०। प्रतिकोणे मन्त्रावृत्तिः। ततः शङ्कुपार्श्वेषु सदीपमाषतण्डुलबलीन्दद्यात्। तत्र मन्त्राः—अग्निभ्यो० १। नैर्ऋत्या० २। नमोस्तुवायु० ३। रुद्रेभ्यश्चैव० ४। ततो वास्तुवेद्यां वस्त्रे सुवर्णशलाकया रेखां कुर्यात्। ॐ लक्ष्म्यै नमः १। ॐ यशोवत्यै० २। ॐ कान्तायै० ३। ॐ सुप्रियायै० ४। ॐ विमलायै० ५। ॐ शिवायै० ६। ॐसुभगायै० ७। ॐसुमत्यै० ८। ॐइडायै० ९। इत्येतैर्न-वरेखाः प्रागायताः उदक्संस्थाः कृत्वा। ॐ धन्यायै० १। ॐ प्राणायै० २। ॐ विशालायै० ३। ॐ स्थिरायै० ४। ॐ भद्रायै० ५। ॐ जयायै० ६। ॐ निशायै० ७। ॐ विरजायै० ८। ॐ विभवायै० ९। ॐ इत्येतैर्नामभिरुदगग्राः प्राक्संस्था नवरेखाः कृत्वा मध्यकोष्ठचतुष्टयमेको-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृत्य तत्कोणचतुष्टयाद्बहिः कोणेषु रेखां दत्त्वा रेखादेवताः पूजयेत् । शिख्यादिमण्डलदेवानावाह्य सम्पूज्य, तदीशान्यां कलशं संस्थाप्य तत्र वरुणमावाह्य सम्पूज्य । ततः शिख्यादिमण्डलदेवताभ्यः पायसेन बलिं दत्त्वा आचामेत् । शिख्यादिप्रीतये काञ्चनं द्विजेभ्यः ब्रह्मप्रीतये धेनुं च दद्यात् । ततः प्राचीं वा ईशानीमारभ्य पवमानेन रक्षोघ्नेन च सूक्तेन मण्डपं त्रिसूत्र्या शनैः शनैर्वेष्टयेत् । ततस्तथैव जलदुग्धपूर्णाभ्यां कुम्भाभ्यां तेनैव सूक्तद्वयेन; सन्ततधाराद्वयं मण्डपं परितो भ्रामयेत् । इति वास्तुपूजनम् । अथ मण्डपपूजनमुक्तविधिना कृत्वा गुरुमहावेद्यां शैवयागे लिङ्गतोभद्रं विष्णवादियागे सर्वतोभद्रमण्डलं विलिख्य । [अस्मिन् कर्मणि महावेद्यां ब्रह्मादिमण्डलदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये] । तत्र ब्रह्मादिदेवता आवाह्य सम्पूज्य नाममन्त्रैः पायसबलिं दद्यात् । ब्रह्मणे नमः [ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यः] पायसबलिं स० इति सर्वत्र ज्ञेयम् । इति मण्डलदेवतापूजनम् । ततो मण्डलमध्येऽक्षतपुञ्जे महान्तं ताम्रमयं कलशं महीद्यौरित्यादिविधिना संस्थाप्य तदुपरि पूर्णपात्रे कुङ्कुमादिना अष्टदलं विलिख्य तत्कर्णिकायां अग्न्युत्तारणपूर्वकं सौवर्णीं देवप्रतिमां तन्मन्त्रेण संस्थाप्य सम्पूजयेत् । तदुपरि फलपुष्पोपशोभितं पञ्चवर्णवितानं बध्नीयात् । इति द्वितीयदिनकृत्यम् ॥

अथ तृतीयदिनकृत्यम् । ततो यजमानोऽग्न्यायतनाद्दक्षिणत उपविशेत् । आचार्यस्तु कुण्डपश्चिमे उपविश्य । अस्मिन् सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाख्ये कर्मणि अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये । तदङ्गतया कुण्डसम्मार्जनं मेखलायोनिदेवतास्थापनपूजनादि करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । अग्न्यायतनं संमृज्य कुशोदकेन प्रोक्ष्य कुण्डस्य उपरिमेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायां–विष्णुमावाह्य १ । मध्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां–ब्रह्माणमावाह्य २ । अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां–रुद्रमावाह्य ३ । योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां–गौरीमावाह्य ४ । सम्पूज्य । अथ गृह्योक्तविधिना कुण्डे पञ्चभूसंस्कारान्विधाय अग्निं स्थापयेत् । अग्निमावाह्य प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत् । रुद्रतेज० । बलिवर्धननामानमग्निमावाहयाम्यहम् । त्वं मुखं० । इत्यग्निस्थापनकृत्यम् । ततो गुरुर्मण्डपेशानभागे वेद्यां ग्रहानधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितान् विनायकादीन् दशदिक्पालानावाह्य सम्पूजयेत् । (अस्मिन् सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाख्ये कर्मणि आदित्यादिनवगृहदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये) ततो ग्रहवेदीशानभागे कलशस्थापनम् । तत्र वरुणं रुद्रं चावाह्य सम्पूजयेत् । तत इदं पुष्पमालाशोभितं पञ्चवर्णवितानं बृहस्पतिदैवतं सूर्यादिभ्यो न मम । इत्युत्सृज्य वेद्युपरि पञ्चवर्णवितानं बध्नीयात् । इति ग्रहयागः ॥ तत आग्नेय्यां योगिनीपीठ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीश्चतुष्षष्टियोगिनीः पूजयेत् । अथ वायव्यांक्षेत्रपालपीठे एकपञ्चाशत् क्षेत्रपालान् पूजयेत् । अथाचार्योऽग्निसमीपमागत्याग्नेः पश्चिमत उपविशेत् । ब्रह्मोपवेशनाद्याघारावाज्यभागान्तं कार्यम् । ततो यजमानः कुण्डदक्षिणतो ब्रह्मणः पश्चिमे उपविश्य द्रव्यत्यागं कुर्यात् । अथाग्निं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य । ततो द्वारपालान् सम्पूज्य । जापकाः जपध्वं पाठकाः पठध्वं होतारो यथाविहितं हवनकर्म कुरुध्वमित्युच्चैर्वदेत् । ततस्ते सर्वे यथाविहितं कर्म करिष्यामः, इति प्रतिवदेयुः । तत आचार्यः ऋत्विक्सहितो ग्रहहोमं वास्तुहोमं च कुर्यात् । ततः शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं अष्टाष्टसंख्याकाभिः समित्तिलाज्याहुतिभिर्हुत्वा तत्तन्नाममन्त्रैः । वास्तोष्पते इति चतसृभिः प्रत्यृचं सप्ताहुतिभिः पूर्वोक्तद्रव्यैर्हुत्वा । ततः पञ्चसंख्यया बिल्वैस्तद्बीजैर्वा वास्तोष्पते इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतसृभिर्वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणामिति च हुत्वा। **अघोरायाथ घोराय घोरघोरतराय च । सर्वाय शर्वशर्वाय रुद्ररूपाय ते नमः ॥** इति मन्त्रेणाज्येनाष्टोत्तरशतं वास्तुकर्मसंधानाय जुहुयात् । चरक्यादिदेवताः प्रधानन्यूनसंख्यया जुहुयात् । ततो रक्षोघ्नपावमानसूक्ताभ्यां त्रिसूत्र्या प्रासादं संवेष्ट्य परितो जलदुग्धयोः पृथगेवाविच्छिन्ने धारां दत्त्वा प्रासादोपरि दिक्षु विदिक्षु दिक्पालवर्णान् ध्वजान् दिक्पालपूजनपूर्वकं निवेशयेत् । ततः पीठे पूजितां हैमीं वास्तुप्रतिमां दधिदूर्वासप्तधान्यशैवालगन्धाक्षतपुष्पयुते अपक्वमृद्भाण्डे संस्थाप्य तत्पिधाय चतुःषष्टिधाविभाजितप्रासादाग्नेयकोणपदादुत्तरे आकाशपदे जानुमात्रं गर्तं कृत्वा जलेनापूर्य गन्धपुष्पादिकं प्रक्षिप्य मृद्भाण्डे तत्र निधाय गर्तं तथैव मृदा पूरयेत् । मृदाधिक्ये शुभम् । गर्तोपरि भूमिं गोमयेनोपलिप्य शुक्लपुष्पगन्धाक्षतैर्भूषयेत् । ततो योगिनीक्षेत्रपालेभ्यस्तत्तन्नाममन्त्रैः समिदादिद्रव्यैर्यथासंख्यं जुहुयात् । तदनन्तरं यजमान आचार्यब्रह्मऋत्विक्सहितः सपत्नीकः तूर्यवेदादिघोषेण याने देवमारोप्य आनोभद्राः० जनित्वमित्यादि शान्तिपाठं पठन्सुवासिनीरग्रतः कृत्वा प्रासादप्रादक्षिण्येन जलाधिवासं मण्डपमानीय शुद्धपीठे प्रत्यङ्मुखं देवं निधाय ततो धान्यराशौ जलद्रोणीं, कटाहं वा जलभाण्डं वा तीर्थोदकपूर्णं संस्थाप्य तत्पश्चिमतः प्राङ्मुखं उपविश्य । तिथ्यादि संकीर्त्य देवताधिष्ठानयोग्यतासिद्ध्यर्थं अमुकदेवस्य (अमुकमूर्तेः) जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये ॥ अथ साचार्यो यजमानः देवं हिरण्ययवदूर्वाश्वत्थपलाशपर्णैः आपो हि ष्ठेत्यादिमन्त्रैरभिषिच्य । ततः पादपीठे फलयवदूर्वाः समर्प्य, रक्षोहणमिति तृचेन दक्षिणहस्ते ऊर्णासूत्रं बद्ध्वा देव्या वामहस्ते बध्नीयात् । गन्धपुष्पाक्षतैः सम्पूज्य वाससाच्छाद्य उदुत्यमिति मन्त्रेण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री० आचमनं० । नमः श्रीवासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे । मधुपर्कं गृहाणेमं जानकीपतये नमः ।।
श्री० मधुपर्कं० । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । सशर्करं मया दत्तं राम हे प्रतिगृह्य-
ताम् ।। श्री० पञ्चामृतं० । तस्माद्यज्ञा० । ब्रह्माण्डोदरमध्यस्थैस्तीर्थैश्च रघुनन्दन । स्नापयिष्या-
म्यहं भक्त्या त्वं गृहाण जनार्दन ।। श्री० स्नानं० । सिन्दूरं सर्वसौभाग्यं सुगन्धतैलसंयुतम् ।
सिन्दूरेणार्चितो देवो मम शान्तिं प्रयच्छतु ।। तस्माद्यज्ञा० । तप्तकाञ्चनसंकाशं पीताम्बरमिदं हरे ।
त्वं गृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ।। श्री० वस्त्रं० । तस्मादश्वा० । श्रीरामाच्युत यज्ञेश
श्रीधरानन्त राघव । ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण रघुनन्दन ।। श्री० यज्ञोपवीतं० । किरीटहारकेयूररत्न-
कुण्डलमेखलाः । ग्रैवेयकौस्तुभो हारो रत्नकङ्कणनूपुरौ ।। एवमादीनि सर्वाणि भूषणानि नृपो-
त्तम । अहं दास्यामि सद्भक्त्या संगृहाण रघूत्तम ।। श्री० आभूषणानि० । तं यज्ञं० । कुङ्कुमागरुक-
स्तुरीकर्पूरयुतचन्दनम् । तुभ्यं दास्यामि राजेन्द्र श्रीराम स्वीकुरु प्रभो ।। श्री० चन्दनं० । यत्पु-
रुषं० । तुलसीकुन्दमन्दारजातीपुन्नागचम्पकैः । कदम्बकरवीरैश्च कुसुमैः शतपत्रकैः ।। नीलाम्बुजै-
र्बिल्वपत्रैः पुष्पमाल्यैश्च राघव । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाण रघूत्तम ।। श्री० पुष्पाणि० ।
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।। सुगन्धिद्रव्यं
नानापरिमलद्रव्यं० । अथाङ्गपूजा—ॐश्रीरामचन्द्राय नमः पादौ पूजयामि १ । ॐराजीवलोचनाय
नमः गुल्फौ० २ । ॐ रावणान्तकाय० जानुनी० ३ । ॐवाचस्पतये० ऊरू० ४ । ॐविश्वरूपाय
जङ्घे० ५ । ॐलक्ष्मणाग्रजाय० कटिं० ६ । ॐविश्वमूर्तये० मेढ्रं० ७ । ॐ विश्वामित्रप्रियाय०
नाभिं० ८ । ॐपरमात्मने० हृदयं० ९ ।ॐश्रीकण्ठाय० कण्ठं १० । ॐ सर्वास्त्रधारिणे० बाहू ११ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ रघूद्वहाय० मुखं० १२ । ॐ पद्मनाभाय० जिह्वां० १३ । ॐदामोदराय० दन्तान्० १४ । ॐ सीतापतये० ललाटं० ॥ १५ ॥ ॐ ज्ञानगम्याय० शिरः १६ । ॐ सर्वात्मने० सर्वाङ्गं० १७ । ॐ ब्राह्मणोस्य० वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्री० धूपं० । चन्द्रमामन० । ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे । गृहाण दीपकं चैव त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ श्री० दीपं० । नाभ्या आसी० । इदं दिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिः समन्वितम् । रामचन्द्रेश नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम् ॥ श्री० नैवेद्यं० । तदनन्तरमाचमनं० । यत्पुरुषेण० । नागवल्लीदलैर्युक्तं पूगीफलसमन्वितम् । ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरैलादिसंयुतम् ॥ श्रीफलं० ताम्बूलं० । सप्तास्या० हिरण्यगर्भ० । श्रीरा० दक्षिणां० । मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे । संगृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥ श्रीकर्पूरनीराजनं० । यज्ञेन यज्ञ० । सर्वलोकशरण्याय रामचन्द्राय वेधसे । ब्रह्मानन्दैकरूपाय सीतायाः पतये नमः ॥ श्री० मन्त्रपुष्पाञ्जलिं० । यानि कानि च० । श्रीरा० प्रदक्षिणां० । नमो देवाधिदेवाय रघुनाथाय शार्ङ्गिणे । चिन्मयानन्तरूपाय सीतायाः [1]पतये नमः ॥ नमस्ते जानकीनाथ रामचन्द्र महीपते ॥ पूर्णानन्दैकरूपाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ श्रीरा० विशेषार्घ्यं० । ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ १ ॥ त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् । मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ २ ॥ श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम

१ आर्षः प्रयोगः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रघुनायक राघवेश । राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि ॥ ३ ॥ यस्यामलं नृपसदस्सु यशोधनाय गायन्त्यजस्रमृषयो दिगिभेन्द्रपत्न्यः । तन्नाकपालवसुपालकिरीट-जुष्टं पादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ५ ॥ रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥ इन्दीवरनिभं श्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् । जानकीलक्ष्मणोपेतं नमामि रघुनन्दनम् ॥ ७ ॥ भरताय नमस्तस्मै सारज्ञाय महामुने । तापसायातिशान्ताय शत्रुघ्नसहिताय च ॥ ८ ॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥ अनेन श्रीरामचन्द्रादयः प्रीयन्ताम् ॥

ततो यागमण्डपमागत्य । सोपस्करां शय्यां गुरवे सङ्कल्पपूर्वकं दद्यात् । तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात्, ततो यजमानस्याभिषेकं कुर्यात् । ततो यजमानः दैवज्ञं पूजयेत् । स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनं विधाय पीठदेवता विसृज्य तत्पीठमाचार्याय दद्यात् । ततोऽग्निं विसृज्य । भूयसीं दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे विष्ण्वादिप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥

अथ सर्वदेवप्रतिष्ठाविधिः—मूर्तिप्रतिष्ठादिनात्प्राक् पञ्चमदिवसे प्रासादादुत्तरे पूर्वे पश्चिमे वा षोडशहस्तादिप्रमाणं चतुर्द्वारं यागमण्डपं कुर्यात् । मध्यकोष्ठे पञ्चहस्तां चतुरस्रां हस्तोच्छ्रितां महावेदीं कृत्वा तदीशान्यां ग्रहवेदीं हस्तायतां तथोच्छ्रितां वप्रत्रययुतां कृत्वा मण्डपान्तनैर्ऋत्यां वास्तुवेदीं निर्माय । आग्नेय्यां योगिनीपीठं वायव्यां क्षेत्रपालपीठं च कुर्यात् । वेद्याः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पश्चिमभागे यथोक्तलक्षणोपेतं कुण्डं अशक्तौ स्थण्डिलं कुर्यात् । मण्डपोत्तरे यथावकाशं वा तदर्धेन चतुर्थभागेन वा विस्तृतं चतुरस्रं चतुर्द्वारं स्नानमण्डपं छायामात्रं विधाय तन्मध्ये वेदिकात्रयं हस्तमात्रं चतुरस्रं चतुरङ्गुलोन्नतं स्थण्डिलवदाकारं कुर्यात् । ततो महामण्डपस्य पश्चिमतः चतुर्हस्तमितं षड्हस्तं वा एकद्वारयुतं जलाधिवासनमण्डपं कुर्यात् । एवं मण्डपादि सम्पाद्य प्रतिष्ठारम्भदिनात्पूर्वदिने अधिकारसिद्धये यजमानः यथासम्भवं षडब्दं चतुरब्दं त्र्यब्दं सार्धाब्दं वा पञ्चदशकृच्छ्राणामन्यतमं वा प्रायश्चित्तं कुर्यात् । इत्यारम्भदिनकृत्यम् । यजमानः स्थापनदिनात्पूर्वेद्युः नित्यकर्म निर्वर्त्य शिल्पिस्थानात् प्रासादप्रादक्षिण्येन देवं तत्राऽऽनीयाऽऽसने निधाय। शुभासने प्राङ्मुखमुपवेश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम आत्मनः सकलपापक्षयपूर्वकं दशपूर्वान् दशावरान् आत्मना सहैकविंशतिपुरुषान् पितृतो मातृतश्चोद्धर्तुकामो निरतिशयानन्दब्रह्मपदप्राप्तिकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अस्यां अमुकमुर्तौ लिङ्गे वा देवकलासान्निध्यार्थं ग्रहमखसहितां वास्तुसहितां सप्रासादशिवाद्यचलप्रतिष्ठां पञ्चमेऽहन्यहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं च कृत्वा, प्रतिष्ठायागसिद्ध्यर्थं श्राद्धमेतत् सुदुर्लभम् । यजमानायात्मनः शक्यं करिष्ये मातृपूर्वकम् ॥ इति मन्त्रं पठित्वा मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं च कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात् । मण्डपश्चेदष्टौ चतुरो वा द्वारपालान् वृणुयात् । कर्मणो निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं गणेशमन्त्रजपार्थमेकस्य ब्राह्मणस्यावश्यं वरणम् । स च यावत्कर्मसमाप्त्ययुतादियथासंख्यं गणेशमन्त्रजपं कुर्यात् । एवं ब्राह्मणान् वृत्वा मधुपर्कादिना सम्पूज्य प्रार्थयेच्च । साचार्यः सपत्नीको यजमानः सतूर्यघोषं सपरिकरः सम्पूर्णकुम्भो भद्रङ्कर्णेभि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राङ्मुखीं उदङ्मुखीं वा जले अधिवासयेत् । मुख्यकलशाभावे सौवर्णं रौप्यं ताम्रमयं वा तत्प्रतिमारूपं कृत्वा देवेन सह कलशं जलेऽधिवासयेत् । एवं जलाधिवासनं सम्पाद्य जलाधिवासः एकरात्रं यामं वा मुहूर्तं तत्क्षणं वा गोदोहनमात्रं वा कुर्यात् । इति तृतीयदिनकृत्यम् ॥

अथ चतुर्थदिनकृत्यम् ॥ ततो गुरुः प्रासादप्राग्दक्षिण्येन स्नानमण्डपं गत्वा विश्वकर्माणं ध्यायेत् ॥ विश्वकर्मा तु कर्तव्यः श्मश्रुलो मुसलाधरः । सदंशपाणिर्द्विभुजस्तेजोमूर्तिः प्रतापवान् ॥ विश्वकर्मन्हविषाव्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम् । तस्मै व्विशः शमनमन्तपूर्वीरयमुग्रयो व्विहव्या यथासत् ॥ भो विश्वकर्मन् भूतात्मन् शिल्पकर्मविशारद । आगच्छ भगवन्देव ह्यस्मिन् वै स्नानमण्डपे ॥ ॐ नमः शिवाय० । ॐ नमो नारायणाय ० । देवतान्तरे तत्तन्मूलमन्त्रेण च अष्टवारमभिमन्त्रितेन पञ्चगव्येन मण्डपभूमिं वेदिकात्रयं च सम्प्रोक्ष्य। आपो हि ष्ठा० ३। पञ्चगव्यं पूतकरं सर्वसंशुद्धिकारणम् । अतः सम्प्रोक्षिताऽस्माभिर्वेदिकाः शुभलक्षणाः ॥ तत्र दक्षिणवेदिकायामास्तृतवालुकायामक्षतैः स्वस्तिकं लिखित्वा श्रीपर्ण्यभद्रपीठलक्षणम् ॥ अष्टविंशाङ्गुलं पीठमुन्नतं स्यात् षडङ्गुलम् । चतुर्विंशश्च विस्तारं कुर्यादौदुम्बरादिना ॥ तत्र सप्तधान्यकृताधारं स्वस्तिकशान्वितं भद्रपीठं निधाय ततो दक्षिणवेदिकायाः पश्चाद्वारिपूर्णान् सपल्लवान् त्रिसूत्रीवेष्टितान् षट्कलशान् मृत्पूर्णं १ पञ्चपल्लववृक्षीयकषायपूर्णं २ गोमूत्रपूर्णं ३ गोमयपूर्णं ४ श्रौताग्निभस्मोदकपूर्णं ५ गन्धोदकपूर्णान् ६ अपरान् पञ्चकलशान् गन्धोदकपूर्णान्, तत्रान्त्यः स्थपतिकलश एकः,एवं द्वादशकलशान् उदक्संस्थान् पंक्तिरूपेण सप्तधान्यपुञ्जो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्यासादयेत् । भद्रपीठयुतमध्यवेदिपश्चिमेऽप्येवम् । स्थपतिकलशव्यतिरिक्ताः एकादश ११ एकत्र २३, ततः भद्रपीठयुतोत्तरवेदीन्तु परितः अष्टौ कलशान् समुद्रसंज्ञकान् पूर्वादिक्रमेणासादयेत् । क्षारोदकपूर्णं १ क्षीरपूर्णं २ दधिपूर्णं ३ घृतपूर्णं ४ सैन्धवमिश्रपयःपूर्णं ५ इक्षुरसपूर्णं ६ स्वादूदकपूर्णं ७ नारिकेलरसोदकपूर्णं ८ नामभिः कृतचिह्नान् हिरण्यगर्भाद्यैरष्टभिर्मन्त्रैर्विन्यसेत् । हिरण्यगर्भः स० १ । य आत्मदा० २ । यः प्राणतो० ३ । यस्येमे० ४ । येनद्यौ० ५ । यं क्रन्दसी० ६ । आपोहय० ७ । यश्चिदापो० ८ । क्षारैः क्षीरैर्दधियुतैः सर्पिरिक्षुरसैर्युतान् । सुरोददूर्वादर्भैश्च संयुक्तानब्धिसंज्ञकान् ॥ सुष्ठुकुम्भान् लक्ष्मयुतान् सप्तधान्योपरि स्थितान् । स्नानवेद्याः समन्ताद्वै स्नानार्थान् स्थापयाम्यहम् ॥ ततोऽन्ये च वेद्याः पश्चिमभागे मृत्तिकोदकपूर्णं १ गोमयपूर्णं २ गोमूत्रपूर्णं ३ भस्मोदकपूर्णं ४ मिलितपञ्चगव्यपूर्णं ५ क्षीरपूर्णं ६ दधिपूर्णं ७ घृतपूर्णं ८ शर्करापूर्णं ९ इति नव ॥ चतुर्दशशुद्धजलकलशाः सपल्लवाः ॥ अथान्यानष्टत्रिंशत् कलशानासादयेत् । द्वौ कलशौ—शुद्धोदकपूर्णं २ पृथक् पृथक्, पञ्चामृतपूर्णान्५ (प्रथमे क्षी० १द्वितीये दधि २ तृतीये घृतं ३ चतुर्थे मधु४ पञ्चमे शर्करा ५) पञ्चसु जलपूर्णेषु ५ पञ्चसु अश्वत्थौदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपञ्चवृक्षीयकषायपूर्णान् ५ दशक्रमात् सुगन्धिपुष्पोदकपूर्णं १ आम्रादिफलोदकपूर्णं २ सुवर्णोदकपूर्णं ३ गोश्रृङ्गोदकपूर्णं ४ (सप्त) धान्योदकपूर्णं ५ सहस्रच्छिद्रकलशं ६ सर्वौषधिपूर्णं ७ पञ्चपल्लवोदकपूर्णं ८ गङ्गादितीर्थोदकपूर्णं ९ नवरत्नोदकपूर्णान् १० (मुक्ताफलं हिरण्यं च वैडूर्यं पद्मरागकम् । पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मकं तथा ॥ प्रवालयुक्तानि महारत्नान्युक्तानि वै नव ।) अवशिष्टेषु दशसु शुद्धजलमापूर्य कदम्बादिप-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ल्लवैः शोभितान् कृत्वा लोकपालानावाहयेत् । सर्वेऽपि आजिघ्रकलशम्० । सर्वौषध्यादिसंयुक्तान् व्रतोदकसमन्वितान् । फलपुष्पोदकयुतान् कुम्भांल्लक्षणसंयुतान् ॥ सुवर्णरौप्यताम्रादिमृत्स्नया घटितान् शुभान् । आसादयामि देवानां स्नानार्थामिह मण्डपे ॥ इत्यनेन उत्तिष्ठ ब्रह्म०स्थाप्याः । सूक्ष्मतन्तुवस्त्रं ३ सुगन्धितैलं । यवशालिगोधूममसूरिकाबिल्वचूर्णमुद्वर्तनार्थं आमलकचूर्णं सुगन्धियक्षकर्दमजटामांसीं चासादयेत् । तत्र चतुरो मङ्गलकलशानेकं वा स्थापयेत् । तदन्ते गङ्गादितीर्थोदककलशं संस्थाप्य । सर्वे समुद्राः० इत्यादि तीर्थान्यावाहयेत् । अथाचार्यः सऋत्विग्यजमानतत्पत्नीसुवासिनीसहितः तूर्यादिघोषेण जलाधिवासप्रदेशं गत्वा, देवसम्मुखमुपविश्याचम्य जलान्तः स्थितं भगवन्तं संस्थाप्य देवं मूलमन्त्रेण पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश उत्तिष्ठ जगताम्पते । उत्तिष्ठ जगदाधार त्रैलोक्ये मङ्गलं कुरु ॥ इति मन्त्रेण जलात् देवं उत्थाप्य बहिः पीठादौ प्रतिमां प्राङ्मुखीं उदङ्मुखीं वा संस्थाप्य देवं प्रावृतवस्त्रं निष्कास्य शुद्धाद्भिः प्रक्षाल्य । वस्त्रादिभिरलङ्कृत्य रथादियानमारोप्य ब्राह्मणसुवासिनीपुरःसरं आनोभद्रेत्यनुवाकेन शङ्खनादमङ्गलतूर्यघोषैः सह प्रासादमहामण्डपप्रादक्षिण्येन स्नानमण्डपमानयेत् । तत्र गुरुः दक्षिणवेद्यां प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य तत्राहतं वस्त्रं प्रसार्य, प्रणवेन देवमुत्थाप्य, गीतवाद्यपुरःसरं भद्रं कर्णेभिः (इमान् कुशान् भद्रपीठे मूर्तीनां सुस्थिराय च । आसादयामि ब्रह्मदेवरचितान्यूनसंयुतान् ॥ सुकाष्ठे लक्षणयुते भद्रपीठे सुशोभने । दक्षिणस्यां वेदिकायां प्रतिमां स्थापयाम्यहम् ॥) इति मन्त्रेण प्रत्यङ्मुखं देवं भद्रासने निधाय पूर्वकल्पित-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षट्कलशोऽप्यन्त्यस्थपतिकलशं हिरण्यादिसहितं कलशं देवसमीपे निधाय (काशीकुशस्थलीमायावत्य-
योध्यामधोः पुरी। शालग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती ॥१॥तीर्थान्येतानि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्म-
शासनात् । झषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा ॥२॥ आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गा पापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥ ३ ॥ आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा । प्राची
सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥ ४ ॥ चर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा ।
जम्बुका च शतद्रुश्च कालिका सुप्रभा तथा ॥५॥ वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ।
गोदावरी महावर्त्ता शर्करावर्तमार्जनी ॥ ६ ॥ कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी । विटङ्का
प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता ॥ ७ ॥ करतोया वेत्रवती वेदिका वेणुका च या । आत्रेय-
गङ्गा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या ॥ ८ ॥ प्लावती च शतत्रासा कल्माषा शंसिनी तथा ।
वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा ॥ ९ ॥ ताम्रा चैव त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनी
परा । तैलकाह्वी च पारा च दुन्दुभी नकुली तथा ॥ १० ॥ नीलगन्धा च बोधा च पर्णचन्द्रा
शशिप्रभा । अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा ॥ ११ ॥ आषाढिं डिण्डिभारत्नं भारभूतं वला-
कुलम् । हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं गुह्यं मध्यमकेश्वरम् ॥ १२ ॥ श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम् ।
आम्रातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च ॥१३॥ केदारमुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च । गयां चैव कुरुक्षेत्रं
गुह्यं कनखलं तथा ॥ १४ ॥ विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीममष्टजम् । वस्त्रापदं रुद्रकोटिं अवि-
मुक्तं महालयम् ॥ १५ ॥ गोकर्णं भद्रकर्णं च माहेशं स्थानमुत्तमम् ।छागलाह्वं द्विरण्डं च कर्कोटं
मण्डलेश्वरम् ॥ १६ ॥ कालञ्जरवनं चैव देवदारुवनं तथा । शङ्कुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ १७ ॥ एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः। तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्म-शासनात् ॥ १८ ॥ इति मन्त्रेण तत्र तीर्थान्यावाह्य स्थपतिकलशेन देवं स्नापयेत्। यजमानश्च शिल्पिवर्गं यथाशक्त्या सन्तोषयेत् । क्षमध्वमिति तान्प्रति ब्रूयात् । ततो गुरुः दुन्दुभिशङ्खघण्टानि-नादैर्बहिर्निर्गत्य । त्र्यम्बकं० रुद्राय एष बलिर्न मम । भूताधिपेभ्यः सर्वेभ्यः प्रेतपेभ्यस्तथैव च । इमं हि पायसबलिं ददामि शुभहेतवे ॥ इति मन्त्रेण प्रागादिदिक्षु बलिं दत्त्वा । अथवा स्नान-मण्डपे । तिथ्यादि० करिष्यमाणदेवस्नपनाङ्गभूतं इन्द्रादिलोकपालेभ्यः सिद्धार्थघृतपायसद्रव्यैः बलिप्रदानमहं करिष्ये । पूर्वे इन्द्राय० इमं सिद्धार्थघृतपायसबलिं स० । एवं प्रकारेण नाममन्त्रैः अग्न्यादिभ्यो बलीन्दत्त्वा पाणिपादौ प्रक्षाल्याचम्य स्नानमण्डपमागत्य देवसमीपे उपविश्य । त्रातारमिन्द्रमित्यादिदशदिक्पालमन्त्रैः भो इन्द्र ! प्राचीं दिशं रक्षेत्यादिना स्नानमण्डपान्तरदिक्षु रक्षां कृत्वा [पूर्वे रक्षतु देवेन्द्र आग्नेय्यामग्निदेवता । अवाचीं तु यमो रक्षेन्नैर्ऋतीं निर्ऋति-स्तथा ॥ प्रतीचीं वरुणो रक्षेद् वायवीं वायुदेवता । सोमो रक्षेदुदीचीन्तु ईशानीमीशदेवता ॥] देव-स्याग्रे चतुरो ब्राह्मणानुपवेश्य स्वस्ति वाचयेत् । तान् चन्दनादिना पूजनपूर्वकं दक्षिणाभिः सन्तो-ष्य । तद्यथा—अस्मै अमुकदेवार्चाशुद्धिस्नपनाय स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु इति ब्राह्मणान् प्रतिवा-चयेत् । ते चास्मै अमुकार्चाशुद्धिस्नपनाय स्वस्ति इति वदेयुः । आशिषो गृहीत्वा गुरुर्देवं स्नाप-येत् । तिथ्यादि संकीर्त्य अस्यां मूर्तौ लिङ्गे वा अस्य अमुकदेवस्य वा देवताधिष्ठानयोग्यतासि-द्ध्यर्थं नानाद्रव्योदककलशैः अर्चाशुद्धिस्नपनं करिष्ये ॥ अग्निर्मूर्द्धा० सत्संस्काराय देवानां मलस्य परिशुद्धये । मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवतातुष्टिहेतवे ॥ इति मृत्कलशोदकेन ॥१॥ यज्ञायज्ञावो० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञियवृक्षत्वक्कषायैर्निर्मलैः परिशोधितैः । उष्णैर्मलहरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये ॥ इति कषायक० ॥ २ ॥ गायत्रीम्० ॥ गवां योनिसमुद्भूतैः पवित्रैः शुद्धिकारकैः । गोमयैः स्नापयाम्येव देवसंस्कारसिद्धये ॥ इति गोमूत्रक० ॥ ३ ॥ गन्धद्वारां० सुरभेर्गात्रसम्भूतैः पावनैः शुभकारकैः । गोमयैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मलशुद्धये ॥ इति गोमयकल० ॥ ४ ॥ मानस्तोके० । यथा वह्निस्तृणादीनां सुभस्म प्रकरोति यत् । तथा मूर्तिसमूहानां भस्मसु च विधास्यति ॥ इति भस्मक० ॥ ५ ॥ तत्सवितु० शुद्धैर्मनोहरैर्दिव्यैः गन्धादिसहितैर्जलैः । स्नापयामि प्रसन्नार्थमाशुसिद्धिकराय नः ॥ इति गन्धतोयक० ॥ ६ ॥ ततः पञ्चकलशैः पञ्चदैवत्यैः । नमः शम्भवा० । नमो देवाधिदेवाय पार्वतीवल्लभाय च । गन्धतोयैर्मार्जयामि शङ्करं दैत्यसूदनम् ॥ इति प्रथमेन ॥ हंसः शुचि० । नमस्ते भास्करेन्द्राय नमस्ते रश्मिमालिने । सर्वगन्धसमायुक्तैर्वारिभिः स्नापयाम्यहम् ॥ इति द्वितीयेन ॥ याते रुद्र० । नमस्ते शिवरूपाय पञ्चवक्त्राय शूलिने । गन्धसम्भारसंयुक्तं जलं दास्यामि यत्नतः ॥ इति तृतीयेन ॥ विष्णोरराट्० । लक्ष्मीकान्ताय देवाय दशरूपाय मालिने । जलैर्मृगमदैर्युक्तैः स्नापयामि स्वकाम्यया ॥ इति चतुर्थेन ॥ ब्रह्मयज्ञानं० । चतुर्वक्त्रस्वरूपाय कमण्डल्वक्षधारिणे । नमो ब्रह्मस्वरूपाय स्नापयामि शुभैर्जलैः ॥ इति पञ्चमेन संस्नाप्य ॥ ५ ॥ शतंवो अम्बुधामानि सहस्रमुत वो रुहः । अधाशतक्रत्वो यूयमिमम्मेऽअगदङ्कृत ॥ नमोऽस्तु वरदायाशु नमस्ते लिङ्गधारिणे । एभिर्दूर्वाक्षतैः पुष्पैरर्चामीह शुभाप्तये ॥ इति दूर्वाक्षतसितपुष्पैः सम्पूज्य । सुजातो० । श्वेतं सुनिर्मलं शान्तं तन्तुसन्तानसंयुतम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवेभ्योऽहं प्रदास्यामि सुरसन्तुष्टिकारकम् ॥ इति सितसूक्ष्मवस्त्रेण देवमाच्छादयेत् । ततो द्वितीय-वेद्यां भद्रं कर्णे० । इदं भद्रासनं दिव्यं यज्ञकाष्ठविनिर्मितम् । मध्यवेद्यां स्थापयामि देवानां स्थिर-हेतवे ॥ इति भद्रासनं निधाय । स्तीर्णबर्हिं० । इमान् कुशान् भद्रपीठे मूर्तीनां सुस्थिराय च । आसादयामि ब्रह्मदेव रचितान्यूनसंयुतान् ॥ इति प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य । तत्राहतं वस्त्रं प्रसार्य्य । तत्र प्रणवेन प्रत्यङ्मुखं देवं निधाय। देवदेव समागच्छ पीठेऽस्मिन् सुमनोहरे। प्रसीद पूजयिष्यामि यथा मम मतिस्तथा ॥ स्वयं उदङ्मुखो भूत्वा कुङ्कुमाक्तेन सूत्रेण द्वादशाधिकशताङ्गुलपरिमितेन लिङ्गमावेष्ट्य लिङ्गं त्रेधा विभज्य लिङ्गस्य मध्यमभागे मुखं कल्पयित्वा प्रतिमायां तु अक्षिणी लक्ष-यित्वा नेत्रोन्मीलनं कुर्यात् । रजतपात्रे मध्वाज्यं निधाय। सुवर्णशलाकया मध्वाज्याक्ताग्रां गृहीत्वा चित्रन्देवानाम्० । लिङ्गस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठु तेजोऽभिवृद्धये। द्विचक्षुपोश्च निर्माणं करोमि स्वात्म-सिद्धये ॥ लिङ्गे प्रतिमायां वा दक्षिणसव्ये नेत्रे उद्धरेत् ॥ मधुघृताक्ताग्रसुवर्णशलाकया नेत्रद्वयस्य ऊर्ध्वाधः पृथग्भूतं सूक्ष्मपक्ष्मपुटद्वयं च, आकृष्णेन० । सौम्यरूपस्य सिद्ध्यर्थमस्ति पक्ष्मपुटद्वयम् । ऊर्ध्वाधस्तु पृथग्भूतं कल्पयामि सुखाप्तये ॥ इति कल्पयेत् । ततो नेत्रमध्ये त्रिभागेनावृतां कनीनि-कामपि कल्पयेत् । ततो मुहूर्तं यावद्देवस्य पुरतो नावतिष्ठेत । पुरुषाहारपरिमितमन्नं देवस्य पुरतो निधाय देवस्याग्रे पायसं भक्ष्यभोज्यं आदर्शं च शीघ्रं प्रदर्शयेत् । ततः शिल्पिनः मधुघृताक्तशस्त्रेण नेत्रमध्ये रेखामुल्लिखेयुः । ततो गुरुर्मधुसर्पिर्भ्यां तां रेखामापूर्य । इमम्मे वरुण० । पुष्करादिसमी-चीनैस्तीर्थस्थैर्वारिभिस्तथा । स्नापयामि महाराजं सदा ह्यमरवल्लभम् ॥ इति मन्त्रेण शुद्धाम्बुना अभ्युक्ष्य । पुनर्मृदाद्येकादशकलशैः स्नापयेत ततो यजमानः सुवर्णशलाकां स्नानवस्त्रादिकं च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिल्पिने दत्त्वा सहिरण्यां गां अथवा तन्मूल्यं गुरवे दद्यात् । देवसौम्यदृष्टिसिद्ध्यर्थमिदं सहिरण्यं यथाशक्ति गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । अन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् । तत आचार्यः उत्तरस्यां वेद्यां भद्रासने प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य तत्राहतं वस्त्रं प्रसार्य तूर्यघोषैः सह मध्यवेदीत देवमुत्थाप्य उत्तरवेदीभद्रपीठे निधाय । भद्रं कर्णेभि० । आगच्छ वरदो देवो मम भक्तिः स्थिरा सदा । स्नानार्थं स्थापयामीह भद्रपीठे सुशोभने ॥ तीर्थकलशेन ।

समुद्रायत्वा व्वाताय स्वाहा शरीरायत्वा व्वाताय स्वाहा । अनाधृष्याय त्वा व्वाताय स्वाहा अवस्येव त्वा व्वाताय स्वाहा सिमिदायत्वावाताय स्वाहा ॥

गङ्गादिसलिलैर्दिव्यैस्तीर्थोदकसमन्वितैः । स्नापयामि सुरेशं तं महाशान्तिकरं परम् ॥ इति संस्नाप्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य शतं जीवेम शर० इति दूर्वाक्षतान् मूर्ध्नि दत्त्वा प्रार्थयेत् ॥ नमस्तेऽर्चे सुरेशानि प्रकृते विश्वकर्मणः । प्रभाविताशेषजगद्धात्रि तुभ्यं नमो नमः ॥ त्वयि संपूजयामीश सदाशिव-[नारायण] मनामयम् । रहिताऽशेषदोषैस्त्वं ऋद्धियुक्ता सदा भव ॥ इति पठित्वा । चतुर्दश शुद्ध-जलकलशान्तर्गतेन चतुर्भिः कलशैः स्नापयेत् । तत्र मन्त्राः—इदमापः प्रव० । देवदेवं परं शान्तं विश्वस्याघौघनाशकम् । शुद्धवारिस्थकुम्भेन स्नापयामि शुभाप्तये ॥ इत्याद्येन ॥ ॐ अपोदे-वीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः । तासामास्थ्यानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ॥ अनेन वारिणा युष्मान् सालङ्कृतविभूषितान् । स्नापयामि सुरेशांस्तान् सुगणादिसुशोभितान् ॥ इति द्वितीयेन ॥ इमम्मे वरुण० गङ्गा सरस्वती चैव यमुनादिनदीस्तथा । ताभिरद्भिः स्नापयामि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वसौन्दर्यलब्धये ।। इति तृतीयेन ।।३।। तत्त्वायामि० । पवित्रकारिभिः शुद्धैश्शीतलैः सुमनोहरैः । एवम्भूतैर्जलैर्देवं स्नापयामि सुरार्चितम् ।। इति चतुर्थेन ।। ४ ।। अग्निर्मूर्द्धा० । सुभूम्या मृत्स्नया देवं शुद्धकर्त्र्या च शुद्धया । स्नापयामि स्वायुधं तं कारुण्यं पूर्णकामदम् ।। इति मृत्तिकाकलशेन ।। १ ।। देवीरापोऽअपान्न० । शुद्धेनैव जलेन त्वां भूषणैः समलङ्कृतम् । स्नापयामि सुरेशं तं कल्याणहितकाम्यया ।। इति शुद्धजलसंज्ञकचतुर्दशकलशान्तर्गतपञ्चमकलशेन ।।५।। गन्धद्वाराम्० । सुरभेर्गात्रसम्भूतैः पावनैः शुभकारकैः । गोमयैः स्नापयाम्येव सज्योतिर्मलशुद्धये ।। इति गोमयद्वितीयकलशेन ।। २ ।। वरुणस्योत्तं० मन्दाकिन्यादिसम्भूतैर्जलैः शुद्धैः शुभावहैः । स्नापयामि महाराजं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।। इति शुद्धषष्ठकलशेन ।। ६ ।। तत्सवितु० । सुरभेर्योनिसम्भूतैः क्षारैर्मलविनाशकैः । गोमूत्रैः स्नापयाम्येष संसारभयनाशकम् ।। इति गोमूत्रतृतीयकलशेन ।। ३ ।। आपोहिष्ठा० । शुद्धेन वारिणा देवं सकलं वाञ्छितप्रदम् । स्नापयामि सुरेशानमैश्वर्यस्याभिवृद्धये ।। इति शुद्धोदकसप्तमकलशेन ।। ७ ।।

प्रसद्यभस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने । सर्ठ० सृज्य मातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान् पुनरासदः ।। विभूतिदेन शुद्धेन मन्त्रेणामन्त्रितेन च । भस्मना स्नापयामीह ह्यष्टैश्वर्याभिवृद्धये ।। इति भस्मचतुर्थकलशोदकेन ।। योवः शिव० । गङ्गादिसलिलैर्दिव्यैः पूतमन्त्राभिमन्त्रितैः । स्नापयामि महाराजं दीप्तिशोभाभिशालिनम् ।। इति शुद्धाऽष्टमकलशोदकेन ।। पयः पृथिव्याम्० ।। गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिःसमन्वितैः । पञ्चगव्यैः स्नापयामि देवं सर्वार्थसाधकम् ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति पञ्चगव्यसंज्ञकपञ्चमकलशेन० ॥ देवीरापो अपा० मन्दाकिन्यादिसलिलैः पावनैस्तु मलापहैः । भक्ताभीष्टप्रदं देवं स्नापयामि सुताप्तये ॥ इति शुद्धनवमकलशोदकेन ॥ आप्यायस्व० । गोस्तनेभ्यः समुत्पन्नैः पयोभिर्निर्मलैः शुभैः । स्नापयामि महाशान्तं करुणाकरशालिनम् ॥ इति क्षीरसंज्ञकषष्ठकलशेन ॥ तस्मा अरङ्ग० । मलराहित्यकरणैर्वारिभिस्तीर्थसेवितैः । स्नापयामि महान्तं तं कान्तिदं सर्वसौख्यदम् ॥ इति शुद्धदशमकलशोदकेन ॥ दधि क्राब्णो० । सुमङ्गलैर्मिष्टयुतैः दधिभिश्चन्द्रकान्तिभिः । विलेपयामि शुभदं देवं भयविनाशनम् ॥ इति दधिसंज्ञकसप्तमकलशेन ॥ ७ ॥

.युञ्जानः प्रथमम्मनस्तत्त्वाय सविता धियः । अग्नेर्ज्योतिर्न्निचाय्य पृथिव्याऽध्याभरत् ॥ देवदेव नमस्तुभ्यं पाहि मां वरदर्षभ । स्नानं शुद्धोदकेनैव कुरु त्वं वै निजेच्छया ॥ इति शुद्ध० ॥ एकादशकलशोदकेन ॥ घृतवती भुवनाना० । पयः सारं सुखं हृद्यं सर्वदेवप्रियं घृतम् ॥ स्नानार्थं ते प्रयच्छामि गृहाण परमेश्वर ॥ इति घृतसंज्ञकाष्टमकलशेन ॥ देवस्यत्त्वा० । गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः पावयन्ति जगत्त्रयम् । ताभिरद्भिः स्नापयामि वरदोऽस्तु सदा मम ॥ इति शुद्धद्वादशकलशेन ॥ मधुव्वाता० । फलपुष्परसोद्भूतं सर्वतेजोविवर्धनम् । सर्वपुष्टिकरं देवं मधुस्नानं मयार्पितम् ॥ इति मधुसंज्ञकनवमकलशेन ॥ आपो अस्मान्मा० । देवाः सर्वेऽभिषिञ्चन्तु तीर्थमन्त्राभिमन्त्रितैः । जलैः शुद्धैर्देवदेवं सुप्रसन्नाननं सदा ॥ इति शुद्ध० त्रयोदशकलशेन० ॥ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ ऐक्षवं सर्वभूतानां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वल्लभं करुणाकरम् । कषायं शुद्धमधुरं तेन स्नानं कुरु प्रभो ।। इति शर्करासंज्ञकदशमकलशेन ।। आपोहयद्बृहती० । शुद्धैर्जलैः स्नापयामि त्रिदशं सर्वनायकम् । सर्वविघ्नहरं शान्तं सर्वकल्मषनाशनम् ।। इति शुद्धचतुर्दशकलशोदकेन ।। ततो देवं प्रक्षाल्य । यज्ञा यज्ञावो० । तन्तुसन्तानसन्नद्धैः शुक्लैरक्तैस्तु पीतकैः । प्रतिमाजलबिन्दूंस्तान् शोषयामि सुवस्त्रकैः ।। इति सूक्ष्मतन्तुवस्त्रेण सम्मार्ज्य । अहिरिव० । तिलपिष्टैः प्रेषितैस्तैर्गन्धपुष्पसमन्वितैः । सुगन्धितैलैः सम्मार्ज्मि बहुप्रीतिकरं सुरम् ।। इति सुगन्धितैलेनाभ्यज्य । द्रुपदादिव० । शमिर्मसूरगोधूमयवचूर्णैस्तथा शुभैः । उद्वर्तनं करिष्यामि शालिभिर्बिल्वचूर्णकैः ।। इति यवशालिगोधूममसूरबिल्वचूर्णैर्मुखमुद्वर्त्य । यातेरुद्रः शिवातनू० । कस्तूरिकाभिः कुङ्कुमैश्च कर्पूरैश्चन्दनैः शुभैः । जटामांसीभिस्तु देवं ईदृशैर्यक्षकर्दमैः । अनुलिम्पामि सकलं परिवारादिभिर्युतम् ।। इति देवस्य शिरसि कर्पूरामलकचूर्णेन यक्षकर्दमेनानुलिम्पेत् । यक्षकर्दमस्तु । कस्तूरिकाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुङ्कुमस्य च । चन्दनस्य त्रयो भागा शशिनस्त्वेक एव हि ।। इत्युक्तेः ततो जटामांस्या देवशिरः अनुलिप्य । मानस्तोके० ।। १ ।। प्रतद्विष्णु० ।।२।। समुद्रगानदीनां च वारिभिः कुम्भसंस्थितैः । सुतेजस्कं कृपाभावं सर्वरश्मिभिराकुलम् ।। स्नापयामि शुभानन्दं भक्ताभीष्टाभयप्रदम् । कार्यकारणकर्तारं तं नमामि शुभाप्तये ।। इति शुद्धजलपूर्णकलशद्वयेन स्नापयित्वा । आप्यायस्व० । इति पञ्चामृतकलशान्तगर्तक्षारकलशेन ।। १ ।। उरुटं हिराजा० इति पञ्चशुद्धोदककलशमध्ये प्रथमशुद्धोदककलशेन ।। १ ।। दधिक्राव्णो० । इति पञ्चामृतान्तगर्तद्वितीयदधिकलशोदकेन ।। २ ।। वरुणस्योत्तम्० इति पञ्च० द्वितीयशुद्धो० ।। २ ।। घृतम्मिमिक्षे० । इति पञ्चामृतान्तर्गततृतीयघृतकलशेन ।। ३ ।।सन्ते पयांसि समुयन्तु वाजाः संवृष्ण्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्न्यभिमातिषाहः । आप्यायमानोऽअमृताय सोमदिविश्रवा ᳪ स्युत्तमानिधिष्व॥ इति पञ्च० तृतीयशुद्धो० ॥३॥ मधुव्वाता०। इति पञ्चामृतान्तर्गतचतुर्थमधुकुम्भेन ॥४॥ आप्यायस्वमन्दिन्तसोमव्विश्वेभिरᳪ शुभिः । भवानः सप्रथस्तमः सखाव्वृधे ॥इति पञ्च० चतुर्थशुद्धोदक० ॥४॥ अपाᳪ रस० । इति पञ्चामृतान्तगतपञ्चमशर्कराकलशेन ॥ ५ ॥ अश्वग्ने सधिष्ठव सौषधिरनुरुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः॥ सलक्षणैः शुद्धजलैः गन्धादिभिरलङ्कृतैः । स्नापयामि सुपर्वाणमहमात्मविशुद्धये ॥ इति पञ्च० पञ्चमशुद्धोदकक० ॥ ५ ॥ एवं दशकलशाः । गन्धद्वाराम्० सलक्षणैः शुद्ध० । इति गन्धोदकेनाभ्युक्ष्य । यज्ञा यज्ञावो० इति पञ्चकषायान्तर्गतप्रथमाश्वत्थपल्लवकषायकलशोदकेन ॥ १ ॥ यज्ञा यज्ञावो० इति पञ्च द्वितीयऔदुम्बरपल्लवक० ॥२॥ यज्ञायज्ञा० इति पञ्च० तृतीयप्लक्षपल्लवक० ॥ ३ ॥ यज्ञायज्ञा० इति पञ्च० चतुर्थचूतपल्लवक० ॥ यज्ञायज्ञा० इति पञ्च० पञ्चमन्यग्रोधपल्लवक० ॥ अश्वत्थोदुम्बरवटशमीपर्कटिनां रसैः । स्नापयामि महाराजमप्रमेयगुणान्वितम् ॥ या ओषधी० । वाचा ह्यौषधियुक्तेन वारिभिः सहितेन च । स्नापयामि कृपासिन्धुं प्रतिष्ठाशुभहेतवे ॥ इति सर्वौषधिकलशेन ॥ ओषधीः प्र० कुन्दादियूथिकापुष्पैः सहितेन जलेन च। कुम्भेन स्नापयामीह देवं सर्वार्थसाधकम् ॥ इति सुगन्धिसितपुष्पयुतकलशोदकेन ॥ द्यौः शान्ति० । ग्रहादियागसिद्धेन रुद्राद्यधिष्ठितेन च । तच्छान्तिकलशस्थेन जलेन स्नापयाम्यहम् ॥ इति शान्त्युदककलशेन ॥ याः फलिनीः० । पूगनारङ्गजम्बीरकदलीबीजपूरकैः । चूतजम्बूकदम्बैश्च सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति आम्रादियथाकालोद्भवफलाष्टककलशोदकेन ॥ हिरण्यगर्भ० । पोतैः सुवर्णखण्डैश्च जनितैर्भूमितः सदा । सुवारिकलशस्थैश्च तं देवं स्नापयाम्यहम् ॥ इति सुवर्णकलशोदकेन ॥ हविष्मती० । सुरभिर्लोकजननी जामदग्न्यभिरक्षिता । तस्याश्शृङ्गोदकेनैव स्नापयामि सुरेश्वरम् ॥ इति गोश्रृङ्गोदककलशेन गवयश्रृङ्गे जलं कृत्वा कलशे क्षेप्यम् ॥ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानायत्वाव्यानायत्वादीर्घामनुप्रसिति मायुषांयन्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृह्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वामहोनाम्पयोसि ॥ सुक्षेत्रोद्भवशुद्धैश्च प्राणिनां पालकैः सदा । धान्ययुक्तैर्जलैर्देवं स्नापयामि शुभाप्तये ॥ इति सप्तधान्यकलशोदकेन ॥ ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं व्वृणे सुमतिं व्विश्वऽजन्याम् । यामस्य कण्वोऽदुहत् प्रपीनाꣳ सहस्रधाराम्पयसाम्महोङ्गाम् ॥ सुवर्णताम्ररजत-मृन्निर्मितघटेन वै । सहस्रच्छिद्रयुक्तेन तं सुरं स्नापयाम्यहम् ॥ इति सहस्रधाराकलशोदकेन ॥ या ओषधीः पूर्वा० । हिमाचलादिजनितैर्मुराचम्पादिभिः शुभैः । ससर्वौषधियुतजलैः स्नापयामि सुरेश्वरम् ॥ इति सर्वौषधिकलशेन ॥ नमोस्तु सर्पे० । अश्वत्थोदुम्बरवटप्लक्षचूतैः शुभैः सदा । एतेषां पल्लवयुतैर्वारिभिः स्नापयाम्यहम् ॥ इति पञ्चपल्लवकलशोदकेन ॥ काण्डात् काण्डा० । दूर्वाङ्कुरैः सुहरितैः स्वच्छैर्गङ्गादिसम्भवैः । जलैः सुस्नापयामीह देवं यानादिकर्दमम् ॥ इति दूर्वोदककलशेन । "अष्टौव्यकुख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्वयोजना सप्तसिन्धून् । हिरण्याक्षः सविता देवऽआगात् दधद्रत्नानि दाशुषे व्वीर्य्याणि" ॥ सुवर्णं रजतं मुक्ता लाजावर्तं प्रवा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लकम् । एतत् पञ्चकरत्नैस्तु सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥ इति नवरत्नकलशोदकेन ॥ इमम्मे-
व्वरु० । गङ्गादिसलिलैर्दिव्यैस्तीर्थमन्त्राभिमन्त्रितैः । सगणं दीप्तिमन्तं तं देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥
इति तीर्थोदककलशेन ॥ पुनः अष्टभिः कलशैः पूर्वकल्पितैः समुद्रसंज्ञितैः स्नापयेत् । कया-
नश्चित्र० । क्षीरोदाब्धेः समानीतैः क्षारेण लवणेन वा । युतैर्जलैः स्नापयामि देवसन्तुष्टिकारकैः ॥
इति क्षारोदकेन ॥ कूपादिजं क्षारजलम् । आप्यायस्व० आपः सुरभिसम्भूतैः क्षीरैर्मिष्टैः सुर-
प्रियैः । सगणं तं स्नापयामीन्द्राणि मङ्गलदायकम् ॥ इति क्षीरकुम्भेन ॥ दधिक्राव्णो० ।
पयोविकारैर्मिष्टैश्च देवानां मङ्गलैः शुभैः । दधिभिः स्नापयामीह देवं पालनकारणम् ॥ इति दधिकु-
म्भेन ॥ घृतवतीभुव० । सुमिष्टैर्गोसमुद्भूतैः स्वच्छैः पुष्टिकरैर्वरैः । घृतैर्देवं स्नापयामि सुते-
जस्कं वराननम् ॥ इति घृतकुम्भेन ॥ पयः पृथिव्याम्० । सुक्षेत्रजैरिक्षुदण्डैः सुमिष्टैः पेषितै रसैः ।
सुतेजस्कं मूर्तिमयं देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥ इति इक्षुरसकुम्भेन ॥ देवम्बर्हिः सरस्वती
सुदेवमिन्द्रेऽअश्विना । तेजो तचक्षुरवद्योर्बर्हिषाद धुरीन्द्रियंव्वसुवनेव्वसुधेयस्य-
व्वन्तुय्यज ॥ खर्जूरनारिकेलाद्यैः मोदकैः सुष्ठुगन्धकैः । सुरोदकैरोदशैस्तैर्देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥
इति सैन्धवमिश्रपयःकलशे क्षीरोदकेन ॥ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥ यूथिकापाटलाद्यैश्च सम्भूतैः स्वादुवारिभिः । स्नापयामि महाराजं सर्व-
विश्वस्य कारणम् ॥ इति स्वादूदककुम्भेन । यत्किञ्चित् शुद्धस्वादु जलं ग्राह्यम्० ॥
सरस्वतीयोन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतम्बिभर्ति । अपांरसेन वरु- ॥२०३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णोत साम्नेन्द्र टँ श्रियैजनयन्नप्सु राजा.॥ गङ्गादिनद्या मध्यस्थादानीतैर्वारिभिः शुभैः। सुस्नापयामि देवेशं सर्वविघ्नविनाशकम् ॥ इति नारिकेलोदकेन ॥ पुनर्दशभिः कलशैर्लोकपालपल्लवैः स्नपयेत्। त्रातारमिन्द्र० । कदम्बपल्लवयुतैरिन्द्राधिष्ठितसंज्ञकैः । जलैः सुस्नापयामीह देवदेवं महासुरम् ॥ कदम्बपल्लवकुम्भेन ॥ त्वन्नोऽअग्नेतव० । वृक्षशाल्मलिसम्भूतैः पल्लवैर्हरितैः शुभैः । वारिभिः स्नापयामि त्वा सर्वकारणकारणम् ॥ इति शाल्मलीपल्लवकुम्भेन ॥ यमायत्वा० । जम्बूवृक्षसमुद्भूतैः पत्रयुक्तजलैः शुभैः। स्नापयामि सदा देवं तापत्रयविमोचनम् ॥ इति जम्बूपल्लवकुम्भेन ॥ अशुन्वंतम० । अशोकवृक्षजैर्दिव्यैर्दलैः स्वच्छैरखण्डितैः। जलयुक्तैः स्नापयामि देवं विश्वस्य कारणम् ॥ इत्यशोकपल्लवकुम्भेन ॥ तत्वायामि० । प्लक्षवृक्षसमुत्पन्नैश्चन्दनैर्जलसंयुतैः। स्नापयामि सुरेशं तं सर्वपापविनाशकम् ॥ इति प्लक्षपल्लवकुम्भेन ॥ आनोनियु० । सहकारोद्भवदलैः सरस्वत्यादिवारिभिः। सुस्नापयामि सगणं देवं नाकनिवासिनम् ॥ इति चूतपल्लवकुम्भेन ॥ व्वयटँ सोम० । पलाशवटजैः स्वच्छैः पत्रैः क्षीरप्रदायिभिः। सजोवनैः स्नापयामि सुरं तापापहं परम् ॥ इति वटपल्लवकुम्भेन ॥ तमीशानं० । नक्तमालोद्भवैरम्यैर्दलैः शङ्करवल्लभैः। स्नापयामि जलैर्दिव्यैर्देवं दैत्यविनाशनम् ॥ इति बिल्वपल्लवकुम्भेन । अस्मेरुद्रा० । सुक्षेत्रजैर्नागदलैः स्वर्गप्राप्यैः सुगन्धितैः। सुवारिभिः स्नापयामि भक्तानामीष्टदं सुरम् ॥ इति नागवल्लीदलकुम्भेन ॥ स्योनापृथिवी० । पलाशवृक्षसम्भूतैः देवानां वल्लभैः शुभैः। पत्रैः सुवारिभिः पूतैर्देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥ इति पलाशपल्लवकुम्भेन ॥ ततः सुमङ्गलघोषैश्चतुर्भिः कुम्भैरेकेन वा कुम्भेन । शन्नः कनिक्रद० । सुगन्धजलसंयुक्तैश्चतुर्भिः कलशैः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शुभैः । स्नापयामि विभुं देवं सर्वाभीष्टप्रदायकम् ॥ इति मन्त्रेण देवं स्नापयित्वा । इमम्मे वरु० । गङ्गासरस्वतीरेवायमुनाभ्यः समागतैः । देवान्सुगणसंयुक्तान् स्नापयामि वरप्रदान् ॥ इति तीर्थोदककलशेन । स्थाप्यदेवं सुगन्धिना सितवस्त्रेण परिमृज्य । ततः सकलीकरणम् । त्रिरश्वतश्च-तुरुत० । देवाः सर्वे सनायान्तु ह्येकत्र शुद्धपीठके । सायुधाः सगणश्चैव व्यापकास्सुसशक्तिकाः ॥ ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा । ॐ मों शिखायै वषट् । ॐ रुं कवचाय हुम् । ॐ द्रां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट् । देवतान्तरे ॐ नमो विष्णवे । ॐ नमः सूर्याय । ॐ नमो गणपतये । ॐ नमो दुर्गायै । ॐ नमो वृषभाय इत्याद्यूह्यः । इत्येवं पुष्पेण दर्भाङ्कुरेण वा स्पृशन् देवेषु उक्तन्यासान् कृत्वा भगवन् श्रीरुद्रदेव त्वं सकलीकृतो भवेति सकलीकृत्य देवमा-वाहयेत् । एह्येहि भगवञ्छम्भो लोकानुग्रहकारक । यज्ञभागं गृहाणेमं महेश्वर नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ एह्येहि भगवन्विष्णो लोकानुग्रहकाम्यया । यज्ञभागं गृहाणेमं वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ एह्येहि भगवन्भानो लोकानुग्रहकारक । यज्ञभागं गृहाण त्वमर्कदेव नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ एह्येहि भगवन्देव लोकानुग्रहकारक । यज्ञभागं गृहाणेमं स्थाप्यदेव नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥ एह्येहि जगतां मातः सर्व-कामप्रदे शुभे । यज्ञभागं गृहाण त्वं देवि दुर्गे नमोऽस्तु ते ॥५॥ अमुकदेवतायै नमः आवाहयामि । आकृष्णेन० । देव देव नमस्तुभ्यं पाहि मां वरदर्षभ । पाद्यं गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय ॥ इति पाद्यम् । हिरण्यगर्भ० व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय भक्ताभीष्टप्रदायिने । इदमर्घ्यं मया दत्तं गृह्णी-ष्वामरवल्लभ ॥ इत्यर्घ्यम् । विभ्राड्बृह० । मन्दाकिन्यादिसम्भूतैर्जलैः शुद्धैः शुभावहैः । सम्यगाच-म्यतां देव भक्ताभीष्टप्रदायक ॥ इत्याचमनीयम् । "अभिधाऽअसि भुवनमसि यन्तासि धर्ता । सत्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मग्निंव्वैश्वानर टं सप्रथसङ्गच्छ स्वाहाकृतः"।। वेदसूक्तसमायुक्ते यज्ञसामसमन्विते । सर्ववर्णप्रदे देव वाससी ते विनिर्मिते ।। इति वस्त्रम् । वेदाहमेतं० तन्तुसन्तानसन्नद्धं कलाकौशलसन्निभम् । उत्तरीयं गृहाणेदं देव विघ्नविनाशक ।। इति ।। ब्रह्मविष्णुमहेशेन निर्मितं ब्रह्मसूत्रकम् । यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां परमेश्वरः ।। इत्युपवीतम् । वेदाहमेतं० उत्तरीयश्च । त्र्यम्बकंय० । मलयाचलसम्भूतं नानापन्नगसंयुतम् ।। चन्दनं गृह्यतां देव सर्वकामप्रसाधकम् । इति चन्दनम्० ।। अक्षन्नमीमदन्त० । अक्षताश्च शुभाः शुक्लाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभनाः । अक्षतान् प्रतिगृह्णीयाः सङ्कटं मे निवारय ।। इत्यक्षतान् । इदं विष्णु० । माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।। इति पुष्पम् ।। धूरसिधूर्व० । वनस्पत्युद्भवो धूपो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। इति धूपम् । चन्द्रमामनसो० । आज्याक्तवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।। इति दीपम् ।। अन्नपते० । नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ।। इति नैवेद्यम् ।। आचमनम् । ततः स्थाप्यदेवमूलमन्त्रेण करोद्वर्तनफलताम्बूलदक्षिणामन्त्रपुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा प्रार्थनां च कृत्वा स्नानवस्त्रं नैवेद्यादिकं शिल्पिने दद्यादिति देवस्नपनविधिः । देवप्रतिष्ठाकलशप्रतिष्ठातन्त्रपक्षस्तत्र प्रयोगः । स्नानमण्डपे वेदिकोणेषु चतुरः कुम्भान् पञ्चरत्नपञ्चपल्लवाद्युपेतान् संस्थाप्य श्रीसूक्तेनाभिमन्त्र्य सम्पूज्य आचार्यः सऋत्विक् पञ्चकलशान् महीद्यौरित्यादिमन्त्रेण उदक्संस्थान् स्थापयेत् । प्रासादकलशं तैलेनाभ्यज्य । शन्नः कनि० इति मन्त्रेण गन्धाद्यैः सम्पूज्य । त्रिसूत्र्यावेष्ट्य । रथमारोप्य सतूर्यघोषेण स्नानमण्डपमानीय भद्रपीठे उपवेश्य कर्मणः पुण्याहं वाच-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यित्वा । घृतवती० इति घृतेनाभ्यज्य । द्रुपदादिव० इति यवमसूरिकाहरिद्रापिष्टेनोद्वर्त्य । उष्णोदकेन प्रक्षाल्य । पूर्वस्थापितपञ्चकलशेषु औषधीर्निक्षिप्य । क्रमेण एकैकमन्त्रेण स्नापयेत् । तत्र मन्त्राः। मूर्धानं दिव०—इति वल्मीकमृदा । "यदूवध्यमुदरस्यापवाति यऽआमस्यक्रविषो गन्धोऽअस्ति । सुकृतातच्छमितारः कृण्वन्तु तमेधर्ँ शृतपाकम्पवन्तु" ॥ इति गन्धोदकेन । हिरण्यगर्भ० इति पल्लवोदकेन । हर्ँ सः शुचि० इत्यक्षतोदकेन । याऽओषधीरिति सर्वौषध्युदकेन स्नापयेत् । मन्त्रक्रमः । मानस्तोके० ॥ १ ॥ विष्णोरराट ॥ २ । सोमर्ँ राजानमवसेग्निमन्वारभामहे । आदित्यान्विष्णुर्ँ सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिर्ँ स्वाहा ॥३॥ विश्वतश्चक्षु० ॥४॥ इति संस्नाप्य । "समुद्रेते हृदयमप्स्वन्तः सन्त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः । यज्ञस्यत्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमो वाकेविधेमयर्ँ" स्वाहा इति शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य । देवलिङ्गमन्त्रेणावाह्य सम्पूज्य। वस्त्रैराच्छाद्य । "अभित्वा शूरनोनुमो दुग्धा इव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वदृशमोशानमिन्द्रं तस्थुषः" ॥ इति मन्त्रेण स्तुत्वा मण्डपमानीय । वेद्युपरि शय्यायां कलशं संस्थाप्य गन्धाद्यैः सम्पूज्य । विश्वतश्चक्षु० इत्यभिमन्त्र्य । अथ मूर्तिपान्वितो गुरुः तूर्यनिनादैः सह स्थाप्यदेवसूक्तेन [पुरुषसूक्तेन] स्तुत्वा । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ विश्वेश त्यज निद्रां जगत्पते । त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ॥ इति तमुत्थाप्य रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः । अभिशूनाम्महिमानमायतमनः पश्चादनुयच्छन्तिरश्मयः ॥ चतुश्चक्रयुतं दिव्यं देवानां वल्लभं परम् । रथमारुह्य देवेश ह्यङ्गीकुरु सुमण्डपम् ॥ इति रथं नरयानं वा आरोप्य मङ्गलतूर्यघोषेण आनोभद्रा० इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूक्तेन च । घण्टाभेरीमृदङ्गाद्यैः सुशब्दैर्मङ्गलैः शुभैः । देवः स्वात्मस्वरूपेण समागच्छेतु मण्डपम् ॥ प्रासादप्रादक्षिण्येनानीय यागमण्डपं पश्चिमद्वारेण आकृष्णेन० । प्रविश्य देव देवेश मण्डपं सुमनोहरम् । अलङ्कुरु प्रयत्नेन ह्यर्चनं च गृहाण मे ॥ इति मन्त्रेण प्रविश्य । मध्यवेद्याः पश्चिमभागे भद्रपीठे प्रत्यङ्मुखं देवं निधाय देवाय मधुपर्कं कुर्यात् । अन्नपते० १ विष्टरो० २ प्रतिगृह्यताम् । प्रतिगृह्णातु भगवान् महादेवो रुद्राय नमः । एवं सर्वत्र । तूष्णीं विष्टरे देवमुपवेशयेत् । अन्नपते० । पाद्यं ३ प्रतिगृ० मः पाद्यं स० । अन्नपते० । अर्घो ३ प्रतिगृ० । अर्घ्यं स० । अन्नपते० आचमनीयमुदकं ३ प्रतिगृ० आचमनीयं स० । अन्नपते० । दधिमध्वाज्यसंयुक्तं दिव्यं मङ्गलदायकम् । मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कप ॥ मधुपर्को० ३ प्रतिगृ० मधुपर्कं स० । अन्नपते० इति मन्त्रेण वस्त्रयज्ञोपवीतगन्धमाल्यधूपदीपनैवेद्यफलताम्बूलदक्षिणादिभिः यथासम्भवं पूजयेत् । अथान्नाधिवासनम् । तच्च मण्डपस्य यथोक्तकोणे धान्यराशिषु सर्वेषां देवानां उपवेशक्रमात् शय्यायां देवमधिवासयेत् । ततो वेद्यां कुशानास्तीर्य तदुपरि शय्यामास्तीर्य । सितवस्त्रेणाच्छाद्य शय्यायां पञ्चवर्णैः स्वस्तिकमण्डलं कृत्वा । तस्याः पूर्वादिदिक्षु देवता आवाहयेत् । भवाय० भवम् ॥ १ ॥ शर्वाय० शर्वम्० ॥ २ ॥ ईशानाय० ईशानम्० ॥३॥ पशुपतये० पशुपतिम्० ॥४॥ रुद्राय० रुद्रम्० ॥ ५ ॥ उग्राय० उग्रम्० ॥ ६ ॥ भीमाय० भीमम्० ॥ ७ ॥ महते० महान्तम्० ॥ ८ ॥ भवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । इति पूजयेत् । विष्ण्वादिप्रतिष्ठायां तु । विष्णवे० विष्णुम्० ॥ १ ॥ मधुसूदनाय० मधुसूदनम्० ॥ २ ॥ त्रिविक्रमाय० त्रिविक्रमम्० ॥ ३ ॥ वामनाय० वामनम्० ॥ ४ ॥ आग्नेयादिकोणेषु । श्रीधराय० श्रीधरम्० ॥ १ ॥ हृषीकेशाय० हृषीकेशम्० ॥ २ ॥ पद्मनाभाय० पद्मना-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भम्० ॥ ३ ॥ दामोदराय० दामोदरम्० ॥ ४॥ विष्ण्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य च । ततो वेदतूर्यघोषेण धान्यराशेर्देवमुत्थाप्य । नमः शम्भवा० । नमोऽस्तु ते ॥ इति ब्रह्मरूप सर्वकार्यप्रसाधक । वेदिकोपरि शय्यायां स्थिरो भव नमोऽस्तु ते ॥ इति शिवम् । नमो नारायणायेति विष्णुम् । घृणिः सूर्य आदित्य इति सूर्यम् । वक्रतुण्डाय हुं, इति गणपतिम् । ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इति देवीम् । नमो वृषभाय० इति नन्दिम्० । रां रामाय नमः इति रामम् । श्री सीतायै नमः इति सीताम् । लं लक्ष्मणाय० नमः इति लक्ष्मणम् । नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा इति हनुमन्तम् । शय्यायां देवं प्राक्शिरसं शाययित्वा त्रिभिर्वस्त्रैर्देवमाच्छाद्य । चित्रविचित्रकार्पासोर्णानिर्मितवस्त्रकैः । सुसमाच्छाद्य तं देवं वितानं पुष्पमण्डितम् ॥ ददामि प्रीतये तुभ्यं देवदेव नमोऽस्तु ते ॥ देवस्य शिरोदेशे भूमौ धान्यस्थं वस्त्रवेष्टितं सपल्लवं निद्राकलशम् । अपो देवी रूप० । निद्रादेवि नमस्तुभ्यं सर्वदेहेषु सुस्थिरे । अस्मिन्कुम्भे सुप्रतिष्ठ ह्यहमावाहयामि वै ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य । आप्यायस्व० ५ सुदेव मधुसर्पिर्भ्यां सुखनिद्राहिताय च । अभ्यजामि सुखार्थे तु देवानां शांतिदायकम् । मधुसर्पिर्भ्यां देवमभ्यज्य । यातेरुद्र० । तिलसर्षपसम्भूतैस्तैलैः सर्षपजैः शुभैः । मयोपलिप्यते देवं तैलं कान्तिप्रदं शुभम् ॥ इति तिलसर्षपकल्कैरुपलिप्य देवमन्त्रेण गन्धादिना पञ्चोपचारैर्देवमभ्यर्च्य । ततो देवस्य पादनाभिवक्षःशिरःसु । विश्वतश्चक्षु० । पादौ नाभिं च हृदयं शिरो देवस्य चालभे । देवस्य सौम्यदृष्ट्यर्थं स्पृशामि हितकाम्यया ॥ इत्यालम्भनम् । ततस्तद्दक्षिणपार्श्वे छत्रधारणम् । छत्रस्य योनिरसि छत्रस्य

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाभिरसि । मात्वाहि र्ँ सीन्मामाहिर्ँ सीः ॥ वर्षातपत्राणकरं सुदण्डनिर्मितं शुभम् । छत्रं ददामि भो देव तव वल्लभकारकम् ॥ देववामपार्श्वे व्यजनधारणम् । वातोवा मनो वा गन्धर्व्वाः सप्तविर्ँ शतिः । ते अग्रे श्वमयुञ्जँस्ते अस्मिन्नवमादधुः ॥ स्वर्णादिनिर्मितं दिव्यं व्यजनं वायुकारकम् । ददामि तव सौख्यार्थं देवानां प्रीतिवर्द्धकम् ॥ चरण-देशे पादुके । त्रीणि पदा० । सर्वकण्टकनाशार्थे पादुके सुरपूजिते । समर्पयामि ते देव सुखसन्तान-वृद्धये ॥ देवदक्षिणपार्श्वयोः शान्तिकुम्भौ स्थाप्यौ । आजिघ्र कलशं० । इमौ द्वौ शान्तिकुम्भौ च सर्वशान्तिकरौ परौ । पार्श्वयोः स्थापयामीह स्यातां शान्तिकरौ मम ॥ अभित्वाशूरनोनुमो दुग्धा इव धेनवः । ईशानमस्य जगतः स्वदृशमीशानमिन्द्रस्तस्थुषः ॥ आसनं दर्पणं घण्टां भक्ष्यं भोज्यं घृतं दधि । षड्रसान् जलपात्रं च देवस्य पुरतो ददे ॥ [मधुराम्लौ च लवणः कषायस्तिक्त एव च । कटुकश्चेति राजेन्द्र रसषट्कमुदाहृतम् ॥] इति मन्त्रेण आसनं दर्पणं घण्टां भक्ष्यं भोज्यं जलपात्रादिकं च देवस्य देव्याः पुरतः स्थापयेत् । ततो भस्मदर्भतिलैर्देवस्य परितो रक्षार्थं प्राकारत्रयं कृत्वा देव्या वा भस्मदर्भतिलैर्देवं रक्षार्थं वेष्टनत्रयम् । करोमि राक्षसानां हि सुदूरीकरणाय च ॥ ततो मण्डपाद् बहिर्गत्वा प्रतिदिशं दिक्पालेभ्यः अक्षतपुञ्जोपरि गन्धादिपू-जनपूर्वकमाषतण्डुलबलीन् दद्यात् । तिथ्यादि सङ्कीर्त्य सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाङ्गभूतं इन्द्रादिदिक्-पालेभ्यः सर्वभूतेभ्यश्च बलिप्रदानमहं करिष्ये । ॐ नमः पूर्वदिग्वासिभ्यो दिक्पतिदि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्भूताधिपतिदिग्रुद्रदिङ्मातृदिक्क्षेत्रपालेभ्यो नमः। माषतण्डुलबलिरयमुपति-
ष्ठतु स्वाहा । न मम । समस्तभूतरक्षोभ्यो भूतनाथेभ्य एव च । माषभक्तबलिं दिव्यं युष्मत्स-
न्तुष्टिदायकम् ॥ सर्वभूतेभ्यश्च० त्र्यम्बकं० प्रतिदिशं मन्त्रान्ते सर्वभूतेभ्यो दधिमाषाक्षतबलिरयमु-
पतिष्ठतु । इति दद्यात् । इति प्राच्याम् । आग्नेयदिग्वासिभ्य इत्येवमेवाग्नेय्यादिदिक्षु बलीन्
दत्त्वा, हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य । अर्चासमीपमागत्य वेद्याः समीपे उदङ्मुखो देवसम्मुखो वोप-
विश्य अस्मिँल्लिङ्गे अस्यां मूर्तौ वा देवकलासान्निध्यार्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये । इति सङ्कल्प्य ।
करे पुष्पं गृहीत्वा देवे प्रणवादि न्यसेत् । अथ प्रणवन्यासः । अकाराय नमः अकारं देवस्य पादयो-
र्न्यसामि ॥ एवं सर्वत्र । उकाराय० उकारं देवस्य हृदये न्य० ॥ मकाराय० मकारं
देवस्य ललाटे न्यसामि । अथ व्याहृतिन्यासः । ओँभूः नमः देवस्य पादयोर्न्य० । भुवः नमः दे०
हृदये न्य० । स्वः नमः दे० ललाटे न्य० । अथ मातृकान्यासः ॥ अं नमः तालुके न्य० । आं ०
मुखे न्य० । इं० दक्षिणनेत्रे न्य० । ईं० वामनेत्रे न्य० । उं न० दक्षिणश्रोत्रे न्य० । ऊं न० वाम-
श्रोत्रे न्य० । ऋं न० दक्षिणगण्डे न्य० । ॠं न० वामगण्डे न्य० लृं न० दक्षिणनासापुटे न्य० ।
ॡं न० वामनासापुटे न्य० । एं न० ऊर्ध्वदशनेषु न्य० । ऐं न० अधोदशनेषु न्य० । ओं न०
ऊर्ध्वोष्ठे न्य० । औं न० अधरोष्ठे न्य० । अं न० ललाटे न्य० । अः नमः जिह्वायां न्य० । यं
न० त्वचि न्य० । रं न० चक्षुषोर्न्य० । लं न० नासिकायां न्य० । वं न० दशनेषु न्य० । शं
न० श्रोत्रयोर्न्य० । षं न० उदरे न्य० । सं न० कटिदेशे न्य० । हं न० हृदये न्य० । ळं न०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिङ्गे न्य० । क्षं न० नाभौ न्य० । पं न० फं न० बं न० भं न० मं न० दक्षिणबाहौ न्य० । तं न० थं न० दं न० धं न० नं न० वामबाहौ न्य । टं न० ठं न० डं न० ढं न० णं न० दक्षिणजंघायां न्य० । चं न० छं न० जं न० झं न० ञं न० वामजंघायां न्य० । कं न० खं न० गं न० घं न० ङं न० । सर्वाङ्गुलिषु न्य० । इति मातृकान्यासः । रविचन्द्राभ्यां न० नेत्रयोर्न्य० । भौमाय न० हृदये न्य० । बुधाय न० स्कन्धे न्य० बृहस्पतये न० जिह्वायां न्य० । शुक्राय न० लिङ्गे न्य० । शक्तिप्रतिष्ठायां योनौ न्य० । शनैश्चराय० ललाटे न्य० । राहवे न० पादयोर्न्य० । केतवे न० केशेषु न्य० । इति ग्रहन्यासः । रोहिणीभ्यो न० हृदये न्य० । मृगशीर्षाय न० शिरसि न्य० । आर्द्रायै न० केशेषु न्य० । पुनर्वसवे० ललाटे न्य० । पुष्याय० मुखे न्य० । आश्लेषाभ्यो न० नासायां न्य० । मघाभ्यो न० दन्तेषु न्य० । पूर्वाफल्गुनीभ्यो न० दक्षिणश्रवणे न्य० । उत्तराफल्गुनीभ्यो न० वामश्रवणे न्य० । हस्ताय न० हस्तयोर्न्य० चित्रायै न० दक्षिणभुजे न्य० । स्वात्यै न० वामभुजे न्य० । विशाखाभ्यो न० अनुराधाभ्यो न० दक्षिणवामस्तनयोर्न्य० । ज्येष्ठाभ्यो न० दक्षिणकुक्षौ न्य० । मूलाय न० वामकुक्षौ न्य० । पूर्वाषाढाभ्यो न० कटिपार्श्वयोर्न्य० । उत्तराषाढाभ्यो न० लिङ्गे न्य०[योनौ न्य० ।] श्रवणाय न० धनिष्ठाभ्यो न० वृषणयोर्न्य० । शतभिषग्भ्यो न० नेत्रे न्य० । पूर्वाभाद्रपदाभ्यो न० उत्तराभाद्रपदाभ्यो न० ऊर्वोर्न्य० । रेवतीभ्यो न० अश्विनीभ्यो न० जंघयोर्न्य० । भरणीभ्यो न० कृत्तिकाभ्यो न० पादयोर्न्य० । ध्रुवाय न० नाभौ न्य० । सप्तऋषिभ्यो न० कण्ठे न्य० । मातृमण्डलाय न० कटिदेशे न्य० । विष्णुपदेभ्यो न० पादयोर्न्य० । नागवीथ्यै न० अजवीथ्यै न० वनमालायां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्य० । ताराभ्यो न० रोमकूपेषु न्य० । अगस्त्याय न० कौस्तुभे न्य० । इति ग्रहादिन्यासः ।
चैत्राय न० शिरसि न्य० । वैशाखाय न० मुखे न्य० । ज्येष्ठाय न० हृदये न्य० । आषाढाय न०
श्रावणाय न० स्तनयोर्न्य० भाद्रपदाय न० उदरे न्य० । आश्विनाय न० कट्यां न्य० । कार्तिकाय
न० मार्गशीर्षाय न० ऊर्वोर्न्य० । पौषाय न० माघाय न० जंघयोर्न्य० । फाल्गुनाय न० पादयोर्न्य०
संवत्सराय न० परिवत्सराय न० इडुवत्सराय न० अनुवत्सराय न० दक्षिणोर्ध्वात् प्रादक्षिण्येन चतुर्बा-
हुषु न्य० । पर्वभ्यो न० सन्धिषु न्य० । ऋतुभ्यो न० लिङ्गे [योनौ] न्य० । अहोरात्रेभ्यो न०
अस्थिषु न्य० । क्षणाय० लवाय० कलायै० काष्ठायै० रोमसु न्य० । कृतयुगाय न० मुखे न्य० ।
त्रेतायुगाय न० हृदये न्य० । द्वापरयुगाय न० नितम्बे न्य० । कलियुगाय न० पादयोर्न्य० । चतु-
र्दशमन्वन्तरेभ्यो० न० बाह्वोर्न्य० । पराय० परार्धाय० जंघयोर्न्य० । महाकल्पाय० शरीरे न्य० । उदग-
यनाय० दक्षिणायनाय० पादयोर्न्य० । विषुवते० सर्वाङ्गुलीषु न्य० । इति कलान्यासः । ब्राह्मणाय०
मुखे न्य० । क्षत्रियाय० बाह्वोर्न्य० । वैश्याय० ऊर्वोर्न्य० । शूद्राय० पादयोर्न्य० । संकरजेभ्यो० पादाग्रे
न्य० । अनुलोमजेभ्यो० सर्वाङ्गसन्धिषु न्य० । गोभ्यो० मुखे न्य० । अजाभ्यो० अविकाभ्यो० हस्तयोर्न्य०
आरण्यपशुभ्यो० ऊर्वोर्न्य० । इति वर्णन्यासः । मेघेभ्यो० केशेषु न्य० । अभ्रेभ्यो०
रोमसु न्य० । नदीभ्यो० सर्वगात्रेषु न्य० । समुद्रेभ्यो० कुक्षिदेशे न्य० । इति तोयन्यासः । ऋग्वे-
दाय० शिरसि न्य० । यजुर्वेदाय० दक्षिणभुजे न्य० । सामवेदाय० वामभुजे न्य० । सर्वोपनिषद्भ्यो०
हृदये न्य० । इतिहासपुराणेभ्यो० जंघयोर्न्य० । अथर्वाङ्गिरसेभ्यो० नाभौ न्य० । कल्पसूत्रेभ्यो०
पादयोर्न्य० । व्याकरणेभ्यो वक्त्रे न्य० । तर्केभ्यो० कण्ठे न्य० । मीमांसायै० निरुक्ताय०

॥२०८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदये न्य० । छन्दश्शास्त्रेभ्यो० ज्योतिश्शास्त्रेभ्यो० नेत्रयोर्न्य० । गीतशास्त्रेभ्यो० भूतशास्त्रेभ्यो० श्रोत्रयोर्न्य० । आयुर्वेदाय० दक्षिणभुजे न्य० । धनुर्वेदाय० वामभुजे न्य० । योगशास्त्रेभ्यो० हृदये न्य० । नीतिशास्त्रेभ्यो पादयोर्न्यसामि । वश्यतन्त्राय० ओष्ठयोर्न्य० । इति विद्यान्यासः । दिवे० मूर्ध्नि न्य० । सूर्यलोकाय० चन्द्रलोकाय० नेत्रयोर्न्य० । अनिललोकाय० घ्राणयोर्न्य० व्योम्ने० नाभौ न्य० । समुद्रेभ्यो० बस्तिदेशे न्य० । पृथिव्यै० पादयोर्न्य० । इति वैराजन्यासः । हिरण्यगर्भाय० शिरसि न्य० । कृष्णाय० केशेषु न्य० । रुद्राय० ललाटे न्य० । यमाय० भ्रुकुट्यां न्य० वैश्वानराय० मुखे न्य० । मरुद्भ्यो० घ्राणयोर्न्य० । वसुभ्यो० कण्ठे न्य० । रुद्रेभ्यो० दन्तेषु न्य० । सरस्वत्यै० जिह्वायां न्य० । इन्द्राय० दक्षिणभुजे न्य० बलये० वामभुजे न्य० । प्रह्लादाय० दक्षिणस्तने न्य० । विश्वकर्मणे० वामस्तने० न्य० । नारदाय० दक्षिणकुक्षौ न्य० । अनन्ताय० वामकुक्षौ न्य० । वरुणाय० हस्तयोर्न्य० । मित्राय० पादयोर्न्य० । विश्वेभ्यो देवेभ्यो० ऊरुमध्ये न्य० । पितृभ्यो० जानुमध्ये न्य० । यक्षेभ्यो० जङ्घयोर्न्य० । राक्षसेभ्यो० गुल्फयोर्न्य० पिशाचेभ्यो० पादयोर्न्य० । असुरेभ्यो० पादाङ्गुलीषु न्य० । विद्याधरेभ्यो० पार्ष्ण्योर्न्य० । ग्रहेभ्यो० पादतलयोर्न्य० । गुह्यकेभ्यो० गुदे न्य० । पूतनादिभ्यो० नखेषु न्य० । गन्धर्वेभ्यो० ओष्ठयोर्न्य० । कार्तिकेयाय० गणेशाय० कटिपार्श्वयोर्न्य० । इति देवयोनिन्यासः । मत्स्याय० मूर्ध्नि न्य० । कूर्माय० पादयोर्न्य० । नृसिंहाय० ललाटे न्य० । वराहाय० जंघयोर्न्य० । वामनाय० मुखे न्य० । परशुरामाय० हृदये न्य० । रामाय० बाहुषु न्य० । कृष्णाय० नाभौ न्य० । बौद्धाय० बुद्धौ न्य० । कल्किने० जानुनि न्य० । केशवाय० शिरसि न्य० । नारायणाय० मुखे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्य० । माधवाय० ग्रीवायां न्य० । गोविन्दाय० बाह्वोर्न्य । विष्णवे० हृदये न्य० । मधुसूदनाय० पृष्ठे न्य० । त्रिविक्रमाय० कट्यां न्य० । वामनाय० जठरे न्य० । श्रीधराय० हृषीकेशाय० जङ्घयोर्न्य । पद्मनाभाय० गुल्फयोर्न्य० । दामोदराय० पादयोर्न्य० । इति मूर्तिन्यासः । अश्वमेधाय० मूर्ध्नि न्य० । नरमेधाय ललाटे न्य० । राजसूयाय० मुखे न्य० । गोसवाय० कण्ठे न्य० । द्वादशाहाय० हृदि न्य० । अहीनेभ्यो० नाभौ न्य० । सर्वजितेभ्यो० दक्षिणकट्यां न्य० । सर्वमेधाय० वामकट्यां न्य० । अग्निष्टोमाय० लिङ्गे न्य० । अतिरात्राय० वृषणयोर्न्य० । आप्तोर्यामाय० ऊर्वोर्न्य० । षोडशिने० जान्वोर्न्य० । उक्थ्याय० दक्षिणजङ्घायां न्य० । वाजपेयाय० वामजङ्घायां न्य० । अत्यग्निष्टोमाय० दक्षिणबाहौ न्य० । चतुर्मासेभ्यो० वामबाहौ न्य० । सौत्रामणये० हस्तेषु न्य० । पशिवष्टिभ्यो० अङ्गुलीषु न्य० दर्शपौर्णमासाभ्यां० नेत्रयोर्न्य० । सर्वेष्टिभ्यो० रोमकूपेषु न्य० । स्वाहाकाराय० वषट्काराय० स्तनयोर्न्य० । पञ्चमहायज्ञेभ्यो० पादाङ्गुलीषु न्य० । आहवनीयाय० मुखे न्य० । दक्षिणाग्नये० । हृदये न्य० । गार्हपत्याय० नाभौ न्य० । वेद्यै० उदरे न्य० । प्रवर्ग्याय० भूषणेषु न्य० । सवनेभ्यो० पादयोर्न्य० । इध्मेभ्यो० बाहुषु न्य० । दर्भेभ्यो० केशेषु न्य० । क्रतुन्यासः । साधारणः सर्वत्र ।

अथ मूलमन्त्रन्यासः—ॐ हृदि न्य० । नं० शिरसि न्य० । मं० शिखायां न्य० । शिं० कवचे न्य० । वां नेत्रयोर्न्य० । यं० अस्त्रे न्य० । अथ विष्णोः । ॐ नमः पादयोर्न्य० । नं० जानुनोर्न्य० । मों० गुह्ये न्य० । भं० नाभौ न्य० । गं हृदये न्य० । वं० कण्ठे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्य० । तें मुखे न्य० । वां० नेत्रयोर्न्य० । सुं भाले० न्य० । दें मूर्ध्नि न्य० । वां० दक्षिणपार्श्वे न्य० । यं० वामपार्श्वे० ॥ २ ॥ अथ सूर्यस्य । घृं० शिरसि न्य० । णिं० मुखे न्य० । सूं० कण्ठे न्य० । रिं० हृदि न्य० । यं० उदरे न्य० । आं० नाभौ न्य० । दिं शिखायां न्य० । त्यः० पादयोर्न्य० । अथ गणपतेः । वं भ्रूमध्ये न्य० । क्रं० कण्ठे न्य० । तुं हृदये न्य० । डां० नाभौ न्य० । यं० लिङ्गे न्य० । हुं पादयोर्न्य० । अथ देव्याः । ऐं० शिखायां न्य० । ह्रीं० दक्षिणनेत्रे न्य० । क्लीं० वामनेत्रे न्य० । चां० दक्षिणश्रोत्रे न्य० । मुं० वामश्रोत्रे न्य० । डां० दक्षिण-नासापुटे न्य० । यैं० वामनासापुटे न्य० । विं मुखे० न्य० । च्चें० गुह्ये न्य० । एवं देवतान्तरेऽपि तत्तन्मूलमन्त्राक्षरैर्न्यासः [1]कार्यः । शय्याशिरोदेशस्थापितकलशे निद्रामावाहयेत् । तद्यथा– परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहम् । मोहिनीं सर्वभूतानां मनोविभ्रमकारिणीम् ॥१॥ विरूपाक्षे शिवे शान्ते आगच्छ त्वं तु मोहिनी । वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बरविभूषिते ॥ २ ॥ आगच्छ सहसाजस्र-सुप्तसंहारमोहिनी । सुषुप्तं संहरे देवि कुमार्येकान्तमानसे ॥ ३ ॥ श्रमनिश्वासबाह्ये तु आगच्छ भुवनेश्वरि । तमःसत्त्वरजोपेते आगच्छ त्वरचारिणी ॥ ४ ॥ मनोबुद्धिरहङ्कारसंहारस्त्वं सरस्वती । शब्दस्पर्शं च रूपश्च रसो गन्धश्च पञ्चमः ॥ ५ ॥ आगच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाशनिब-न्धिनी । भवस्योत्पत्तिहेतुस्त्वं यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ६ ॥ भुवः कल्पान्तसन्ध्यायां वससे त्वं चरा-चरे । भोगिशय्याप्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शासने ॥ ७ ॥ त्वं प्रतिष्ठासि वै देवि मुनियोनिसमुत्थिते ।

१ ॐ रां रामाय नमः । ॐ श्री सीतायै न० । ॐ लं लक्ष्मणाय न० । ॐ हं हनुमते न० । एवं मन्त्रयोजनां कृत्वा न्यासः कार्यः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितृदेवमनुष्याणां सयक्षोरगरक्षसाम् ॥ ८ ॥ पशुपक्षिमृगाणां च योगमायाविवर्धिनी । वससे सर्व-सत्त्वेषु मातेव हितकारिणी ॥ ९ ॥ एहि सावित्रिमूर्तिस्त्वं चक्षुर्भ्यां स्थानगोचरे । विश नासापुटे देवि कण्ठे चोत्कण्ठिता विश ॥ १० ॥ प्रतिभात्वय मां सर्वं मातृवद्देवि सुन्दरि । इदमर्घ्यं मया दत्तं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ११॥ इति मन्त्रैर्निद्रामावाह्य । उपप्रागात्परमं यत्सधस्थमर्व्वाऽ-अच्छपितरम्मातरञ्च । अद्यादेवाञ्जुष्टतमोहिगम्या अथाशास्तेदाशुषेणवार्य्याणि ॥ ॐ निद्रायै नमः, इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥

अथ प्रधानहोमः—अथ स्थाप्यदेवं शिवं विष्ण्वादिकं वा तत्प्रकाशकमन्त्रेण पलाशस-मित्तिलतण्डुलयवाज्यद्रव्यैः प्रतिद्रव्यं अष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिर्जुहुयात् । अथ स्थाप्यदेवतानां होममन्त्राः । तत्र शिवस्य—नमः शम्भवाय० स्वाहा ॥ १ ॥ अथ विष्णोः—इदं विष्णु० स्वाहा ॥ २ ॥ अथ सूर्यस्य-आकृष्णेन० स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ गणपतेः—गणानां त्वा० स्वाहा ॥ ४ ॥ अथ देव्याः—अम्बे अम्बिके० स्वाहा ॥ ५ ॥ अथ नन्दिनः—आशुः शिशान० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति होम-मन्त्राः । ततो लिङ्गतोभद्रस्थदेवतानां नाममन्त्रैः प्रत्येकं दशदशतिलाज्याहुतिभिर्होमयेत् । होमस-मये द्वारपाला जपं कुर्युः ।

अथ कलशहोमः—स्थाप्यदेवमन्त्रेण दधिमध्वाज्यमिश्राष्टोत्तरशतसंख्यया अष्टाविं-शति वा हुत्वा पादनाभिहृद्वक्षशिरांसि स्पृशेत् सकृत् । ततः पुरुषसूक्तेन कलशमभिमन्त्र्यते । देव-मन्त्रेण सम्पूज्य । प्रासादं गन्धोदकेन प्रक्षाल्य । सतूर्यघोषेण सुमुहूर्ते प्रासादे कलशमारोप्य देव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्त्रेण आजिघ्रकलशमिति च संस्थाप्य ॐ अस्त्राय फट् इत्यभिमन्त्र्य त्रिशूलं–चक्रं देवायुधं वा विन्यसेत् । ततः शिल्पिनं स्थिरीकृत्य फलोदकेन तूष्णीमभिषिच्य गन्धाद्यैः सम्पूज्य । ततः प्रासादादुत्तीर्य भूमौ साष्टाङ्गं प्रणमेत् ॥

अथ प्रासादाधिवासनम्—ततो गुरुः तिथ्यादि संकीर्त्य । अस्मिन् प्रासादे देवताधिष्ठानयोग्यतासिद्ध्यर्थं च नानाद्रव्योदककलशस्नपनपूर्वकं प्रासादाधिवासनं करिष्ये । तत्र प्रासादाग्रं पञ्चगव्यादिप्रोक्षितशुद्धभूमौ दशदशरेखाभिः पूर्वोक्तं चाग्राभिरेकाशीति पदं मण्डलं अक्षतैः कृत्वा । तेषु पदेषु सप्तधान्यपुञ्जान् कृत्वा । जलपूर्णान् त्रिसूत्रीवेष्टितान् एकाशीतिकलशानाहृत्य । तत्र नवनवकानां मध्यमध्यनवकोष्ठं ज्ञात्वा तेषु नवकुम्भान् मध्यपूर्वादिक्रमेण विन्यसेत् । तत्र मध्यनवकमध्यकुम्भे शम्युदुम्बराश्वत्थचम्पकाशोकपलाशप्लक्षन्यग्रोधकदम्बाम्रबिल्वार्जुनवृक्षसंभवपल्लवद्वादशकम् । ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः, इति मन्त्रेण निक्षिपेत्, ततः पञ्चकगोरोचनदुर्वाङ्कुरदर्भपिञ्जुलश्वेतसर्षपसितरक्तचन्दनजातीकुसुमकुन्दनद्यावर्तमिति दशकं पूर्वमध्यकुम्भे क्षिपेत् । सोमायेति मन्त्रेण सर्वकुम्भेषु वस्तुनिक्षेपणे एवमेव मन्त्र आवर्तनोयः । ततो यवव्रीहितिलसुवर्णरजतसमुद्रगामिनदीकूलमृत्तिका भूम्यसंस्पृष्टगोमयमिति सप्तकमाग्नेयमध्यकुम्भे । ततः सहदेवी विष्णुक्रान्ता भृङ्गराज-महौषधी-शमी-शतावरी-गुडूची-श्यामाकमित्यष्टकं याम्यमध्यकुम्भे । ततः कदली-पूगीफल-नारिकेल-बिल्व-[1]नारङ्ग-मातुलिङ्ग-बदरी-आमलक मिति फलाष्टकं नैऋत्यम-

---

[1] ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका । इत्यमरः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यकुम्भे। ततः मन्त्रसाधितं पञ्चगव्यं वारुणे शम्युदुम्बराश्वत्थन्यग्रोधपलाशत्वक्कषायपञ्चकं वायव्ये। शंखपुष्पी-सहदेवी-बला-शतावरी-कुमारी-गुडूची-वचा-व्याघ्रीति मूलाष्टकम् उत्तरमध्यकुम्भे। वल्मीकादिसप्तमृत्तिकां ईशानमध्यकुम्भे निधाय। हिरण्यवर्णां हरिणीमिति (कलशस्य) मुखे० सर्वान् मध्यकुम्भानभिमन्त्र्याशेषान् गन्धोदकपूरितान् मध्यमादिकलशानां समन्तात् पूर्वादिक्रमेणाष्टावष्टौ विन्यस्य। स्थाप्यदेवमूलमन्त्रेण सर्वानभिमन्त्र्य सूत्रेणावेष्ट्य। अन्तर्बहिरधस्तादूर्ध्वं प्रासादं पञ्चगव्येन सम्प्रोक्ष्यमूर्द्धानं दिवो०। गजाश्वरथ्यावल्मीकसङ्गमाद्ध्रदगोकुलात्। मृदं प्रक्षिप्य कुम्भेषु स्नपयेच्च यथाविधि॥ इति वल्मीकादिसप्तमृद्भिर्विलिप्य। समुदायत्वा०। मृत्तिका सर्वपापघ्नी मृत्तिका कायशोधिनी। पवित्रं कुरु मां नित्यं सर्वपापात्समुद्धरेत्॥ इतीशानदिक्स्थेन मृत्तिकामध्यकुम्भेन स्नपयेत्॥१॥ यज्ञायज्ञावो०। अश्वत्थौदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः।एते पञ्च समाख्याताः प्रासादस्याभिषेचने॥इति वायव्यस्थमध्यकषायकुम्भेन ॥ २ ॥ पयः पृथिव्यां० पञ्चगव्यं महद्दिव्यं गोमूत्रं गोमयं पयः। स्नानार्थं च गृहाणेश दधिसर्पिःकुशोदकैः॥ इति वारुणेन पञ्चगव्यमध्यकुम्भेन ॥ ३ ॥ याः फलिनीः०। फलपुष्पोद्भवं रम्यं प्रशस्तं सर्वकर्मसु। पवित्रं मङ्गलं चैव दुरितक्षयकारकम्॥ इति नैर्ऋत्येन मध्यफलकुम्भेन ॥ ४ ॥ हꣳसः शुचि०। पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि प्रासादस्याभिषेचने॥ इति सौम्यस्थमध्यमूलकुम्भेन ॥५॥ विष्णो रराट०। दक्षिणे तु गदा पद्मं नीलजीमूतसन्निभम्। नारायणश्चतुर्बाहुश्शङ्खचक्रं तथोत्तरे॥ इति पूर्वस्थमध्यकुम्भेन ॥ ६ ॥ सोमꣳ० गौरो यस्तु पुमान् सौम्यः सर्वौषधिसमन्वितः॥ नक्षत्राधिपतिः सोमः तस्मै नित्यं नमो नमः॥ राजानमवसेऽग्निमन्न्वारभामहे। आदित्यान्विष्णुꣳ सूर्यं॰ ॥२११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

म्ब्रह्माणञ्च बृहस्पति टँ स्वाहा ।। इति वह्निस्थमध्यकुम्भेन ।। ७ ।। विश्वतश्चक्षु० । गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः । स्नापिताऽसि मया देव अतः शान्ति कुरुष्व मे ।। इति याम्यस्थमध्यकुम्भेन ।। ८ ।। नमोऽस्तु सर्पेभ्य० । अक्षसूत्रधराः सर्पाः कुण्डिकापुच्छभूषणाः । एकभागास्त्रिभागा वा सर्वे कार्य्याश्च भीषणाः ।। इति मध्यस्थमध्यकुम्भेन ।। ९ ।। इदमापः प्रव० । मलयाचलसम्भूतं चन्दनं सुखवर्धनम् । काश्मीरघनसाराढ्यं नित्यं पुष्टिकरं स्मृतम् । इति अष्टाभिः प्रतिकोष्ठ कलशैः पूर्वादिक्रमेण प्रासादं सशिखरं स्नापयेत् । प्रतिकुम्भं मन्त्रावृत्तिः । ततो गुरुर्बहिर्निर्गत्य प्रासादाभिमुखो भूत्वा तं देवरूपं ध्यायेत् । तथाहि—प्रासादपादशिलासु प्रासादपादौ ध्यायामि । एवमेवाग्रे ज्ञेयम् । पादोर्ध्वशिलासु जंघे ध्या० । तदूर्ध्वशिलासु ऊरू ध्यायामि । तदूर्ध्वं कटिमेखलां ध्या ० । स्तम्भान्पादस्थाने ध्या० । घण्टां जिह्वास्थाने ध्या० । दीपान्प्राणस्थाने ध्या० । जलनिर्गममपानस्थाने ध्या ० । नाभिं ब्रह्मस्थाने ध्या० । पिण्डिकां हृत्पद्मस्थाने ध्या० । प्रतिमां पुरुषस्थाने ध्या० । पादचारानहङ्कारस्थाने ध्या० । ज्योतिः चक्षुःस्थाने ध्या० । तदूर्ध्वं प्रकृतिस्थाने ध्या० । तदूर्ध्वं प्रतिमा अपि आत्मस्थाने ध्या० । तलकुम्भादधोद्वारं प्रजननस्थाने ध्या० । शुकनासां नासास्थाने ध्या० । गवाक्षाणि कर्णस्थाने ध्या० । कायपालीं स्कन्धस्थाने ध्या० । अमलसारिकाः ग्रीवास्थाने ध्या० । मज्जादिप्राणसहितं कलशं शिरः स्थाने ध्या० । मृदं सुधास्थाने ध्या० । तत्प्रलेपे मांसस्थाने ध्या० । सर्वशिलाः अस्थिस्थाने ध्या० । कीलादयः स्नायुस्थाने ध्या० । शिखराणि चक्षुः स्थाने ध्या० । ध्वजाः केशस्थाने ध्या० । एवं पुरुषरूपं प्रासादं मनसा ध्यात्वा । माल्यादिभिर्भूषयित्वा अमुकप्रासादाय नमः, इति मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य । तस्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धस्तात् सर्वदेवमयं सर्वाधारं वास्तुपुरुषं प्रासादं सञ्चिन्त्य मन्त्रेण प्रासादमधिवासयेत् । तद्यथा— स०
ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्ज्वलीकृत । यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव ॥ इत्यधि- प्र०
॥२१२॥ वास्य । ततः यागमण्डपमागत्य । आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा । ब्राह्मणान्सदन्नेन संभोज्याशिषो गृहीत्वा । वेदपाठपुराणगीतादिभिर्निशामतिवाहयेत् । आचार्येण कुण्डाग्निर्यावत्कर्मसमाप्तिर्विशेषतो रक्षणीयः । इति चतुर्थदिनकृत्यम् ।

अथ देवप्रतिष्ठादिविधानम् । प्रातः आचार्यादिसहितो यजमानः स्नानादिनित्यकर्म निर्वर्त्य । यागमण्डपमागत्य । मुहूर्तविज्ञानार्थं घटिकादिकं संस्थाप्य । ब्राह्मणैः सह शान्तिपाठं कृत्वा । मण्डपादिदेवतानिर्माल्यमपसार्य तासां देवतानां पूर्ववत्पूजां कुर्यात् । तद्यथा—देशकालौ० सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाकर्माङ्गभूताधिवासनकर्मणि आवाहितदेवतानां यथामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये । इति संकल्प्य । मण्डपादिदेवताभ्यो नमः इति मन्त्रेण स्नानवर्जितैरर्घाद्युपचारैः संपूज्य । ऋत्विग्यजमानान्विताचार्यः शय्यास्थितदेवं प्राप्य घण्टादिनादेन प्रार्थयेत् । प्रबुध्यस्व महाभाग देवदेव जगत्पते । नीलग्रीव सुराधीश प्रबुद्ध शशिशेखर । प्रबुद्ध पार्वतीकान्त पञ्चवक्त्र नमोऽस्तु ते ॥१॥ प्रबुध्य० । मेघश्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षण । प्रबुद्ध भूधरानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ प्रबुध्यस्व महामाये देवि दुर्गे शुभप्रदे । स्थापनं ते करिष्यामि प्रसन्ना भव मे सदा ॥३॥
ततः जलक्षीरकुशाग्रतिलतण्डुलयवसिद्धार्थकपुष्पाणि अर्घ्यपात्रे कृत्वा । देवायार्घ्यं दत्वा । उत्तिष्ठ ॥२१२
ब्रह्मणस्पते० इति देवमुत्थाप्य । रथे तिष्ठन्निति० रथे नरयाने शिबिकादियाने वा आरोप्य । देवस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुरतो गुरुः पृष्ठतः कलत्रपुत्रबन्धुमित्रादियुतो यजमानः पार्श्वयोः ऋत्विजः एवं तूर्यादिघोषेण आनो भद्रा इत्यनुवाकेन मङ्गलगीतपाठेन च ग्रामस्य पुरस्य वा प्रासादप्रादक्षिण्येन प्रासादद्वारसम्मुखमानीय आचार्यः रथाद्देवमवतार्य भद्रासने द्वारसम्मुखे संस्थाप्य । पूर्वोक्ताष्टार्घ्यं दत्त्वा स्थाप्यदेवमन्त्रेण प्रासादं देवं प्रवेशयेदिति । ततः सयजमानो देशिको देवं पिण्डिकायां स्थापयेत् । तद्यथा–पिण्डिकासमीपे भद्रपीठे द्वारसंमुखं देवं निधाय । ततः पिण्डिकायां श्वभ्रतोयेन प्रक्षाल्य । पुनः फलपुष्पसर्वौषध्युदकैस्तीर्थवारिणा च संस्नाप्य । वाससा परिमार्ज्य सुवर्णखण्डं श्वभ्रोपरि निधाय । दैवज्ञोक्ते शुभे लग्ने भद्रासनात् उत्तिष्ठब्रह्मणस्पत इति देवमुत्थाप्य । खड्गतूर्यनिनादेन वेदघोषेण च ईश्वरं भावयन् प्रतिष्ठितः परमेश्वर इत्युक्त्वा । प्रधानपुरुषो यावद्यावच्चन्द्रदिवाकरौ । तावत्त्वमनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरो भव । इत्युक्त्वा । **ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजयापशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्यच्छाया ॥** इति मन्त्रं पठित्वा अवक्रं अदिङ्मुखं यवं यवार्द्धं वोत्तराश्रितमीशानाश्रितं वा देवं पिण्डिकायां श्वभ्रे निधाय । स्थिरो भव शाश्वतोभवेत्युक्त्वा पिण्डिकालिङ्गान्तरालं वालुकासीसकादिभिर्दृढं पूरयित्वा पुनर्न चालयेत् । देवस्य पुरस्तात् तद्वाहनं संस्थाप्य । पाषाणादिकृतवाहनस्यैव स्थापनमुक्तम् । तत्र महादेवस्य वृषभः १ । विष्णोर्गरुडः २ । सूर्यस्याश्वरथः ३ । गणपतेः मूषकः ४ । देव्याः सिंहः ५ । भैरवस्य कुक्कुरः ६ । एवमन्येषां वाहनानि तत्तद्देवतापरत्वेन योज्यानीति । ततो दैवमूर्ध्नि हृदये वा स्पृष्ट्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुरुद्रा ऋषयः। ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि। क्रियामयवपुः प्राणाख्यो देवता। देवस्य प्राण-प्रतिष्ठायां विनियोगः। ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः। पुनः आं ह्रीं क्रीं० देवस्य जीव इह स्थितः। पुनः आं ह्रीं० देवस्य सर्वेन्द्रियाणि। पुनः आं ह्रीं क्रीं० देवस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ध्रुवासि ध्रुवोयं०। आत्वाहार्षमन्तरभूध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वासर्व्वावा-ञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ इति जप्त्वा देवं जीवं ध्यात्वा। ततः त्रिश्वतश्चक्षु० इत्युक्त्वा देवमूर्ध्नि हस्तं निधाय परं देवं ध्यत्वा रुद्राध्यायं पुरुषसूक्तं वा जपेत्। यस्मिन्नृचः सामयजूँषि यस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तँ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ इति जप्त्वा पुराणोक्तान् प्राणप्रतिष्ठापकान्मन्त्रान् जपेत्। अथ रुद्रस्य–नमस्ते रुद्र०। त्र्यक्षं च दश०॥ १॥ अथ विष्णोः–तद्विष्णोः। अतसीपुष्प०॥ २॥ अथ सूर्यस्य–आकृष्णेन०। सहस्रकिर०॥ ३॥ अथ गणेशस्य–गणानांत्वा०। लम्बोदरं चतु०॥ ४॥ अथ देव्याः–अम्बे अम्बिके०। हिमालयसुतां रम्यां शिववामाङ्कसंस्थिताम्। जगद्धात्रीम-न्नपूर्णां गिरिजां स्थापयाम्यहम्॥ ५॥ अथ नन्दिनः–आशुः शिशा०। शिवद्वार०। ततो देवस्य हृदयं स्पृशन् जपेत्। तद्यथा–रुद्रस्य रौद्रं। विष्णोः–पुरुषसूक्तम्। रवेः–विभ्राड्बृह०। गणेशस्य–अथर्वशीर्षम्। देव्याः–देवीसूक्तम्। अन्येषां तत्तत्प्रकाशकान्मन्त्रान् जप्त्वा। देवस्य दक्षिणे कर्णे वामे च प्रणवव्याहृतिशिरः सहितां गायत्रीं प्राणसूक्तं च जपेत्। प्राणदा अपानदा०। ततो देवं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थयेत् । नमस्ते त्यक्तसङ्गाय सन्तोषपरमात्मने । ज्ञानविज्ञानरूपाय ब्रह्मतेजोनुशालिने ॥ १ ॥ गुणातिक्रान्तवेगाय पुरुषाय महात्मने। अव्यक्ताय पुराणाय शिव [विष्णो] सन्निहितो भव ॥२॥ भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् । त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥३॥ त्वमिन्द्रः पावकश्चैव यमो निर्ऋतिरेव च । वरुणो मातरः सोम ईशानः प्रभुरव्ययः ॥४ ॥ येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् । तेन रूपेण देवेश लिङ्गेऽस्मिन् [अर्चायां] सन्निधौ भव ॥ ५ ॥ सर्वमन्त्रादिसंयुक्तो लोकानुग्रहकाम्यया । अस्मिल्लिङ्गे महादेव भव सन्निहितः सदा । अत्रार्चायां वासुदेव सन्निधौ भव सर्वदा ॥ ६ ॥ सूर्याचन्द्रमसौ यावद्यावत्तिष्ठति मदिनी । तावत्त्वयात्र देवेश स्थातव्यं स्वेच्छया प्रभो ॥ ७ ॥ लोकानुग्रहहेत्वर्थं स्थिरो भव सुखासन । सान्निध्यं हि सदा देव प्रत्यहं परिवर्तय ॥ ८ ॥ मा भूत्पूजा विरामोऽस्मिन्यजमानः समृध्यताम् । संपालय सतां राष्ट्रं सर्वोपद्रववर्जितम् ॥ ९ ॥ क्षेमेण वृद्धिममलां सुखमक्षय्यमश्नुताम् । इति संप्रार्थ्य विधिना देवं समर्चयेत् । देशकालौ० मम चतुर्विधपुरुषार्थकामनासिध्यर्थं ध्यानादियथामिलितोपचारैः अमुकदेवस्य महापूजां करिष्ये । अथ स्थाप्यदेवध्यानानि । ध्यायेन्नित्यं० ॥ १ ॥ शान्ताकारं० ॥ २ ॥ ध्येयं सदा० ॥ ३ ॥ श्वेताङ्ग० ॥ ४ ॥ या माया० ॥ ५ ॥ शिवादिपञ्चायतनदेवेभ्यो नमः आसनं समर्पयामि । संसारभारसंत्रस्तं त्राहि मां परमेश्वर । मन्त्रेणानेन पाद्यं त्वं गृहाण मम वल्लभ ॥ इति पाद्यम् । देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक । अर्घ्यं गृहाण देवेश गौरीप्रिय नमोऽस्तु ते ॥ इत्यर्घ्यम् । गङ्गादिनानातीर्थेभ्य आहृतं विमलं जलम् । ममोपरि कृपां कृत्वा गृहाण परमेश्वर ॥ इत्याचमनीयम् । प्रतिसरसूत्रं विसृज्य । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करादिस-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति पञ्चामृतेन । शुद्धोदकेन च स्नानम् । मृदुसूक्ष्माणि वस्त्राणि दुकूलानि मया प्रभो । आनीतानि त्वदर्थं तु गृह्णीष्व सुरसत्तम ॥ इति वस्त्रम् । कार्पासकृततन्तूभिर्वेदोक्तविधिना ततः । भक्त्या कृत्वा मयाऽऽनीतं गृहाण सुरवल्लभ ॥ इति यज्ञोपवीतम् । रत्नहेमसमायुक्तं मुक्तामणिविभूषितम् । अनर्घ्याभरणं दिव्यं गृहाण परमेश्वर॥ आभरणम् । श्रीगन्धागरुकर्पूरकुङ्कुमेन समन्वितम् । कस्तूरीचन्दनाद्यैश्च अर्पितं तव शङ्कर ॥ शिवादि० गन्धं स० । अक्षतान्धवलान्दव शालितण्डुलसम्भवान् । गृहाण पार्वतीनाथ कृपया परया मुदा ॥ शि० अक्षतान्स० । माल्यादीनि० इति पुष्पमालाम् । दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं कालागरुसमन्वितम् । धूपं गृहाण देवेश मनश्शोकं विनाशय ॥ इति धूपम् । साज्यं० इति दीपं० । सघृतं परमान्नं तु गुडोदनसमन्वितम् । नैवेद्यं ते मया दत्तं गृहाणाम्बिकया सह ॥ इति नैवेद्यम् । आचमनीयं० ३ । नागवल्लीदलैर्युक्तं कर्पूरैलासमन्वितम् । ताम्बूलं गृह्यतां देव सर्वपापौघनाशनम् ॥ इति ताम्बूलं० । हिरण्यगर्भ० इति दक्षिणाम् । नानारत्नसमायुक्तं नानाचित्रोपशोभितम् । अर्पितं परया भक्त्या आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ एवं प्रधानदेवपूजनं कृत्वा अङ्गदेवतानां वृषभादिवाहनस्य च तत्तन्मूलमन्त्रेण पूजनं कार्यम् । ततः प्रार्थयेत् । भगवन्देवदेवेश धर्मकामार्थमोक्षद । विद्याविद्येश्वरै रुद्रैर्गणेशैर्लोकपालकैः ॥ १ ॥ देवदानवगन्धर्वैर्यक्षैश्च किन्नरैः सह । अस्मिन् लिङ्गे महादेव (प्रतिमायां महाभाग) सर्वदा वस वै प्रभो ॥ २ ॥ पुंसामनुग्रहार्थाय पृथिव्यां स्वेच्छया प्रभो । परावरेण भावेन स्थातव्यं सर्वदा त्वया ॥ ३ ॥ सर्वविघ्नहरः पुंसां सर्वदुःखहरः सदा । सर्वदा यजमानस्य इच्छासम्पत्करो भव ॥ ४ ॥ नमस्ते सर्वधर्माय सन्तोषविजितात्मने । स्थापकानां मूर्तिपानां शिल्पिनां च विभो सदा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ६ ॥ ग्रामदेशनृपाणां च शान्तिर्भवतु सर्वदा । पूजकाराधकानां च भक्तानां भक्तवत्सल ॥ ७ ॥ सर्वेषां च जगन्नाथ इच्छासिद्धिप्रदो भव । चन्द्रार्कावनिपर्यन्तं लिङ्गेऽस्मिन् [अर्चायां] परमेश्वर ॥ ८ ॥ स्थातव्यमुमया सार्द्धं सर्वलोकानुकम्पया । यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी । तावत्त्वयात्र देवेश स्थातव्यं स्वेच्छया विभो ॥ ९ ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भगवन्यत्कृतं मया । तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ १० ॥ उमापदस्थाने तत्तच्छक्तिपदं योजनीयम्–इति शिवस्य । अथ विष्णोः ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं हि तत् । तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादादधोक्षज ॥ एवं सम्प्रार्थ्य । देशिकान्वितो यजमानः सर्वदा व्यवहारार्थं स्थाप्यदेवस्य नामकरणं कुर्यात् । तत्तु कर्तृनामयुक्तम् । अथवा स्वाभीष्टदेवतानामयुतं देवस्य नाम कुर्यात् । तत्र शिवस्यामुकेश्वरः ॥१ ॥ विष्णोरमुकनारायणः ॥ २ ॥ भानोरमुकादित्यः ॥ ३ ॥ गणपतेरमुकवि-नायकः ॥ ४ ॥ देव्याः अमुकेश्वरी ॥ ५ ॥ नन्दिनः अमुकवृषभः ॥ ६ ॥ एवं नाम कृत्वा ब्राह्म-णान्प्रार्थयेत् । तत्रास्य लिंङ्गस्य अमुकेश्वर–(अस्याः प्रतिमायाः अमुकनाम) इति नाम सुप्रतिष्ठि-तमस्तु–इति भवन्तो ब्रुवन्तु । ततस्ते ब्राह्मणाः तूर्यघोषेण सह प्रतिवदेयुः–अस्य लिङ्गस्यामुके-श्वर इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु । ततः पुण्याहं वाचयेत् । विप्रहस्ते अक्षतान् दत्त्वा सपत्नीको यज-मानः कृताञ्जलिः सन् । अस्य अमुकदेवस्य नामकरणकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । इति यज-मानो वदेत् । पुण्याहमिति विप्राः वदेयुः । एवं कल्याणं ऋद्धिः–स्वस्ति–श्रीरस्तु । इति ब्रूयुः । पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु । मनोजूतिरिति मन्त्रेण विप्राः यजमानशिरसि अक्षतान्प्रक्षिपेयुः । अनेन नामकरणाङ्गकर्मणः पुण्याहवाचनेन श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् । ततः कर्मसाद्गुण्यार्थं ब्राह्मणेभ्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दक्षिणां दद्यात् । एवं देवतान्तरेऽपि सर्वत्र योज्यम् । ततो यजमानः देवस्य प्रत्यहं उपभोगार्थं वस्त्रच्छत्रचामरदर्पणपादुकामुकुटग्रैवेयककरचरणभूषणादिकं सम्पाद्य नित्यपूजायात्रोत्सवादिसिद्ध्यर्थं विभवानुसारेण ग्रामक्षेत्रद्रव्यादिकं संकल्पपूर्वकं प्रतिपादयेत् । तिथ्यादि संकीर्त्य शिवादिपञ्चायतनदेवानां नित्यपूजोपकरणानि पात्रादीनि देवोद्देशेनोत्सृजेत् । वस्त्रमुकुटभूषणादिकं निवेदयामि ।

अथ ग्रामदानम् । तिथ्यादि संकीर्त्य सर्वपापक्षयपूर्वकदेयग्रामदयाभरणयोग्यपुरुषसंख्यकदशकल्पावच्छिन्नस्वर्गवासप्राप्त्यैहिकधनधान्यप्राप्तिकामः शिवादिपञ्चायतनदेवानां नित्यपूजायात्रोत्सवादिसिद्ध्यर्थं अमुकनामकं ग्रामं सस्योत्पत्तिजलाशयस्थानेकवृक्षलतागुल्मादिमनोहरं विष्णुदैवतं निवेदयामि । ततो यजमानः प्रासादाभिमुखो भूत्वा प्रासादोत्सर्गं कुर्यात् । तद्यथा । तिथ्यादि संकीर्त्य पक्वेष्टकपाषाणकाष्ठचूर्णादिनिर्मितं अमुं प्रासादं शिवं विष्णुं वोद्दिश्याहमुत्सृजे । इति प्रासादं पश्यन् जलमुत्सृजेत् । सर्वभूतेभ्य उत्सृष्टः प्रासादोऽयं मयार्जितः । रमन्तां सर्वभूतानि छायासंश्रयणादिभिः ॥ इति मन्त्रं पठेत् । अथ प्रासादे महाध्वजारोपः । स च प्रासादसमस्तादर्धं तदर्धं वा दैर्घ्यं, दैर्घ्यं षोडशभागेन तदर्धेन वा विस्तृतो मूले । ध्वजदण्डस्तु चतुर्दशहस्तो नवहस्तो वा देवेन सहैवाधिवासनीयः । गन्धाद्यैः पूजयित्वा । प्रासादसमीपमानीय विन्यसेत् । एभिर्मन्त्रैः—सूर्यकोटिसहस्राभं प्रलयाम्बुदनिःस्वनम् । प्रदीप्तदशनप्रान्तं प्रकाशमुखकन्दरम् ॥१॥ त्र्यक्षं तडिल्लताजिह्वं प्रदीप्तश्मश्रुमूर्द्धजम् । सर्पोपवीतं शूलासिशक्तिमुद्गरधारिणम् ॥२॥ चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं स्फुरच्चन्द्रार्द्धशेखरम् । देवदानवदैत्यानां दर्पितानां विनाशनम् ॥३॥ ततो ध्वजाग्रे देवतालिङ्गसूचनाय शिवध्वजे वृषभम् । विष्णोर्ध्वजे गरुडम् । सूर्यस्य हयम् । गणेशस्य मूषकम् । दुर्गायाः सिंहम् । यस्य देवस्य यद्वाहनं तत्तत्सौवर्णं राजतं वा तस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्वजे पूजनपूर्वकं बन्धनीयम् । अथ तं ध्वजं प्रासादपृष्ठांशे नैर्ऋते भागे मारुते वैशान्ये वा शिखरस्य प्रासादपश्चमांशेन चतुर्थेन तृतीयेन वा ध्वजस्तम्भाधारावटं कृत्वा । तत्राऽऽरोप्यानुमन्त्रयेदेतैर्मन्त्रैः । शान्तिरस्तु शिवं चास्तु स्थानस्यास्य शुभं तथा । प्राणिनःसुखिनः सन्तु राजा च विजयी भवेत् ॥ १ ॥ यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव । दुरितं यत्समस्तानां सत्क्रियाय धुनोतु सा ॥ २ ॥ प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं मा भूज्जगति सर्वदा । त्वत्प्रसादात्तु तत्सर्वं शुभमेव नमो नमः ॥ ३ ॥ ततो यागमण्डपमागत्य यजमानः सपत्नीकः कुण्डपश्चिमतः उपविश्य । अग्निं पूजयेत् । अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति स्विष्टकृतं हुत्वा । नवाहुतीर्जुहुयात् । इन्द्रादिदिक्पालेभ्यो नवग्रहेभ्यो क्षेत्रपालाय च यथोक्तविधिना बलिदानं कुर्यात् । पाणिपादौ प्रक्षाल्याचम्य अग्नेः पश्चादुपविश्य पूर्णाहुतिं जुहुयात् । ततो वसोर्द्धारां जुहुयात् । अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य । अग्नेः पश्चात्प्राङ्मुखो भूत्वा यजमान उपविश्य विभूतिं धृत्वा-त्र्यायुषं-इति मन्त्रेण ललाटे भस्मधारणं संस्रवप्राशनादि च कर्मशेषं समापयेत् । ततः सपत्नीकस्य यजमानस्याभिषेकः । ततो यजमानो महाजलाशये अवभृथबुद्ध्या स्नानं कृत्वा शुक्लाम्बरधरः प्रसन्नचित्तो यजमानः देवसमीपे आगत्य प्रार्थयेत् । जितं ते पुण्डरीकाक्ष जितं ते विश्वभावन । सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुषपूर्वज ॥ इतिपुष्पाञ्जलिं दत्वा । विच्छिद्रं तु यत्किञ्चित्तदच्छिद्रं प्रजायताम् । राज्ञः कर्तुः प्रजानां च शान्तिर्भवतुसर्वदा ॥ इति नमस्कुर्यात् । ततो यागमण्डपमागच्छेत् । ततो आचार्यादयः वरणक्रमेणोदङ्मुखाः प्राङ्मुखयजमानहस्ते श्रेयःसम्पादनं कुर्युः ।[मया भव०मूर्तिपैः सह कृतं यत्पूजनहवनप्रभृति आचार्यादिकर्म तदु०दे] अथ सपत्नीको यजमानोऽग्नेः पश्चिमतः प्राङ्मुख उपविश्य आचार्यं सम्पूज्य [सोपस्करां शय्यां गुरवे संकल्प-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वकंदत्त्वा] दक्षिणां दद्यात् । कृतस्य सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं अमुक-
शर्मणे आचार्याय इमांद० तुभ्यमहंसम्प्रददे, न ममेति कुशाक्षतयुतां द्विजहस्ते, दद्यात् । आचार्यस्तु
स्वस्तीति ब्रूयात् । ततो यजमानः आचार्यं प्रार्थयेत् । भगवन्सर्वधर्मज्ञ शिवधर्मपरायण । सर्वशा-
स्त्रार्थतत्त्वज्ञ शिव [विष्णु] शास्त्रविशारद ॥ १ ॥ अनादिजन्मसन्ताने ह्यप्रमेये भवार्णवे । अद्य मे
ह्युत्तमं जन्म अद्य मे सफलं धनम् ॥२॥ अद्य मे जननोच्छित्तिरद्य मे परमं पदम् । मोहितोऽहं त्वया नाथ
दुश्छेद्याद्भवबन्धनात् ॥३॥ ईश त्रातस्त्वया यस्मात्प्रवेशेन भवार्णवात् । मुक्तोऽहं सर्वसंसारात्प्रपन्नोऽहं
तवान्तिकम् ॥४॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनं यत्कृतं मया । तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादात्क्ष-
मस्व मे ॥ ५ ॥ गुरुरपि फलाक्षतानादाय । समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकः । शिवः [विष्णुः]
सानुचरस्तावत् सर्वकामफलप्रदः ॥ १ ॥ द्रव्यहीनं तु यत्किञ्चिद्विधिहीनं तु यद्भवेत् । तत्सर्वं
पूर्णमेवास्तु प्रसादात्कारणस्य तु ॥ २ ॥ स्थापकस्य मूर्तिपानां वर्णिनां शिल्पिनां तथा । सराष्ट्र-
पार्थिवानां च शान्तिर्भवतु सर्वदा ॥ ३ ॥ भृत्यपुत्रकलत्रैश्च स्वमित्रबलवाहनैः । कारणस्य प्रसादेन
सर्वलोकेश्वरो भव ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वा यजमानायाशिषं दद्यात् । ततो ब्रह्मसदस्यगाणपत्योपद्रष्टॄणां
पूजां विधाय मुख्याचार्यसमां तदर्द्धमितां वा दक्षिणां दद्यात् । ततो ऋत्विग्भ्य आचार्यार्धं
द्वारपालजापकेभ्यस्तदर्धं दक्षिणां दद्यात् । ततो दैवज्ञं सम्पूज्य तस्मै शक्तितो दक्षिणां दद्यात् ।
ततः स्थपत्यादीन् वस्त्रादिभिरर्चयेत् । ततः वेदीसमीपे गत्वा स्थापितदेवतानां उत्तरपूजां विधाय ।
यान्तु—देवगणाः इति विसृज्य । पीठानि आचार्याय दद्यात् । ततोऽग्निं विसृज्य । सर्वाः मण्ड-
पदेवताः द्वारदेवताश्च सम्पूज्य । विसृज्य यागमण्डपादि- सामग्रीं आचार्याय प्रतिपादयेत् । यज्ञपात्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञशेषसम्भारान् आचार्याय दद्यात्। स्नानमण्डपादिसामाग्रीं शिल्पिने दद्यात्। ततो यजमानः सहस्रं १००० शतं १०० पञ्चाशत् ५० पञ्चविंशतिं २५ वा ब्राह्मणान्भोजयेत्। ततो दीनान्धकृपणेभ्यः यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा यस्य स्मृत्येति पठित्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा स्वगृहं गत्वा अनाथादीन्भोजयेत्। स्वपञ्चसुहृद्युक्तो भुञ्जीतेति। इति श्रीलघुदर्पणे शिवादिप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः॥

अथ विधवास्त्रीकर्तृकारामजलाशयलिङ्गप्रतिष्ठाविधिः—कर्ता देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रा अमुकदेवी सर्वकामावाप्त्युत्तरकालं स्वरोमसंख्यकस्वर्गवासभूतभविष्यत्स्ववंशतारणपुनरावृत्तिरहितपरमसिद्धिप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमारामप्रतिष्ठां, तथा ऽहमनेकयुगावच्छिन्नस्वर्गवासैतज्जलस्थिततोयबिन्दुतुल्यशतसहस्रसंख्यवर्षावच्छिन्नेन्द्रलोककामा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कूपोत्सर्गं तथा मम प्रतिष्ठापयिष्यमाणतत्तद्देवता-श्रीलक्ष्मीनारायणादिप्रतिमाद्यधिष्ठात्रीदेवताप्रीतिद्वारा नानाजन्मार्जितसर्वपापक्षयपूर्वकायुरारोग्यलक्ष्मीपुष्टिकामा दशपूर्वान्दशापरानात्मना सहैकविंशतिपुरुषान् भर्तृतः पितृतश्चोद्धर्तुकामा निरतिशयानन्दब्रह्मपदप्राप्तिकामा च आसु लक्ष्मीनारायणादिमूर्तिषु अस्मिञ्शिवलिङ्गे च देवकलासान्निध्यार्थं प्रतिष्ठायागकल्पोक्तविधिना ग्रहयज्ञवास्तुयागपूर्वकं स्वकृतशैलप्रासादप्रतिष्ठासहितनारायणमूर्तेश्च प्रतिष्ठां तथा सप्रासादहनुमन्मूर्तेः स्थिरप्रतिष्ठां तथा सप्रासादनन्दीश्वरसहितशिवादिपञ्चायतनदेवानां स्थिरप्रतिष्ठां च यथासम्भवं स्वयमाचार्यपुरोहितद्वारा च तन्त्रेण षष्ठेऽहनि पञ्चमेऽहनि तृतीयेऽहनि वा अहं करिष्ये। वास्तुया-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गग्रहयज्ञस्वयङ्कारितप्रासादजलाशयादि [चतुष्टय] प्रतिष्ठापूर्विकां राधाकृष्णादिमूर्तीनां चरप्रतिष्ठां शिवलिङ्गस्य च स्थिरप्रतिष्ठां [शिवाद्यचलप्रतिष्ठां कूपोत्सर्गं च] रामचन्द्रादिप्रतिष्ठां वापीकूपतडागारामोत्सर्गांश्च तन्त्रेण षष्ठेऽह्नि चतुर्थेऽह्नि श्वः सद्यो वा करिष्ये । गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तम्। आचार्यादिवरणम् । सर्षपविकिरणम् । पञ्चगव्यप्रोक्षणम् । आग्नेय्यादिषु अग्न्यादिबलिदानम् । रेखाकरणं पूजनं च । शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतास्थापनम् । पूजनम् । शिख्यादिभ्यो पायसबलिदानम् । हिरण्यदक्षिणा शिख्यादिभ्यो देया । चरक्यादिभ्यो माषतण्डुलबलिदानं च कृत्वा । वृक्षादीन् सर्वौषध्यादिनाऽलङ्कृत्य कर्णवेधादिकलशस्थापनान्तं कृत्वा कूपस्य चतुर्दिक्षु कलशचतुष्टयस्थापनं च कुर्यात् । ततो देवं पञ्चगव्यादिनाऽभिषिच्य प्रतिसरं बद्ध्वा जलेऽधिवासयेत् ।

इति प्रथमदिनकृत्यम् ।

अथ द्वितीयेऽह्नि लिङ्गतोभद्रदेवतापूजनं मध्ये कलशस्थापनं प्रधानदेवताप्रतिमापूजनं जलाद्देवस्य बहिर्निष्कासनं, पुण्याहवाचनादिनेत्रोन्मीलनान्तं शिवप्रतिष्ठाप्रयोगं कृत्वा अन्नधिवासं शय्याधिवासनं च कृत्वा अग्निस्थापनम् । ग्रहस्थापनम् । पूजनम् । सर्वतोभद्रदेवतापूजनम् । कलशस्थापनं च कृत्वा कलशाग्रे रजतफलानि स्थापयेत् । ततो ब्रह्मादिभूतग्रामान्तानां स्थापनं पूजनं बलिदानं च कुर्यात् । ततो वारुणमण्डलदेवतास्थापनम् । मध्ये कलशस्थापनं कलशाग्रे कूर्मादिजलचरस्थापनं च कुर्यात् । वरुणादिदेवतानां पूजनं,बलिदानं,कुशकण्डिकाविधिं,ग्रहहोमं,वास्तुहोमं,बिल्वहोमं,चरक्यादिहोमं, सर्वतोभद्रदेवताहोमं, वारुणमण्डलदेवताहोमं, ब्रह्मादीनां होमं, वनस्पति–आज्यपलाशसमित्ति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लहोमं, वरुणमन्त्रैः अष्टोत्तरशतमाज्योदुम्बरीत्यादिसमिद्धोमं, दशर्चहोमं, स्थालीपाकहोमं च कृत्वा ततो वास्तुमण्डले धरां सम्पूज्य सम्प्रार्थ्य आरामं, कूपं, प्रासादं च सूत्रेण वेष्टयेत् । जलदुग्धधारया आरामादिकं त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य पताकारोपणं, ध्वजारोपणं, पेटिकारोपणं च कुर्यात् । अथ रुद्रप्रधान-होमं कृत्वा सप्तभिरष्टभिर्वा फलैः सजलैः प्रत्येकं वृक्षान् स्नापयेत् । ततो धातुमयानां कूर्मादिजल-जन्तूनां कूपादौ प्रक्षेपं कृत्वा गां वृक्षमध्ये उत्सृजेत् । "इममारामं०" जलाशये तु "इदं सलिलं०" वनजलाशयैँशान्यां निर्गमयेत् । गोपुच्छेन तर्पणं विप्राय तद्गोदानं च कृत्वा तदनन्तरमुत्सर्गं कुर्यात् । गङ्गादितीर्थजलानि क्षिपेत् । ततो वृक्षेषु वनस्पतिपूजनं कुर्यात् । महानदीजलप्रक्षेपणं जलमातृकापूजनं च कृत्वा दुग्धं ब्राह्मणाय पाययेत् । ततः प्रासादाधिवासनम् । इति द्वितीयदिनकृत्यम् ।

अथ तृतीयेऽह्नि देवमुत्थाप्य सुमुहूर्ते मन्दिरे शिवं संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत् । भवादिनामभिः तिलौदनादिहोमं विधाय लिङ्गतोभद्रदेवताहोमं स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा हविःशेषेण बलिं दद्यात् । ततो देवस्य नामकरणम्, आचार्यादिभ्यो दक्षिणादानं ब्राह्मणभोज-नसङ्कल्पं च कुर्यात् । अभिषेकम्, उत्तरपूजनं, विसर्जनं, पीठदानम्, अग्निविसर्जनम्, भूयसीसङ्कल्पं च कृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे विधवास्त्री० आरामजलाशयलिङ्गप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

अथ पुनः प्रतिष्ठा—चाण्डालमद्यसंस्पर्शदूषिता वह्निनाऽथवा । अपुण्यजनसंस्पृष्टा विप्रक्षत्रजदूषिता ॥ चौरचाण्डालपतितश्वोदक्याः स्पर्शने सति । [1]शस्त्राद्युपहतौ चैव प्रतिष्ठां पुनरा-

[1] अङ्गादङ्गादिसन्धाने इत्यपि योजनीयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चरेत् ॥ जलाधिवासविहितां नेत्रोन्मीलनवर्जिताम्। देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य क्षेमायुरभिवृद्धिपूर्वकं मया पूर्वप्रतिष्ठापितामुकप्रतिमायाः भङ्गजन्यदोषनिबर्हणद्वारा प्रतिमायां पुनर्देवतासान्निद्ध्यार्थं पुनः प्रतिष्ठां करिष्ये। अस्य चलितस्थानादुच्छ्रितस्य लिङ्गस्य वा अस्याः चलितामुकमूर्तेः देवतासान्निद्ध्यर्थं पुनः प्रतिष्ठां करिष्ये--इति संकल्प्य प्रयोगरीत्या कुर्यात्।

अथ जीर्णोद्धारविधिः। यजमानः शुभदिने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० प्रतिष्ठाफलेच्छितगुणफलकामः ईश्वरप्रीतिकामश्च जीर्णत्वादिदोषदुष्टस्य लिङ्गस्य वृषस्य गरुडस्य प्रासादस्य कलशस्य वा जीर्णत्वादिदोषदुष्टायाः अमुकप्रतिमायाः पिण्डिकायाः वा जीर्णोद्धारपूर्विकां प्रतिष्ठां करिष्ये। जीर्णत्वादिदोषदुष्टानां देवपिण्डिकावाहनप्रासादध्वजकलशादीनां जीर्णोद्धारं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजननान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा। आचार्यादीन् वृणुयात्। अथाचार्यः सर्षपान्विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य पीठादौ प्रणवेनासनं दत्त्वा लिङ्गे-ॐ व्यापकेश्वर हृदयाय नमः। ॐ व्यापकेश्वर शिरसे स्वाहा। ॐव्यापकेश्वर शिखायै वषट्। ॐव्यापकेश्वर कवचाय हुम्। ॐव्यापकेश्वर नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ व्यापकेश्वर अस्त्राय फट्। इति मन्त्रैः शिवं पूजयेत्। जीर्णप्रतिमादीनां मूलमन्त्रेण एह्येहि नमः। मूलमन्त्रान्ते हृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा पूजयेत्। ततोऽग्निस्थापनं ब्रह्मोपवेशनादि-आज्यभागान्तं कुर्यात्। लिङ्गं मूर्तिं वा चालनार्थं मूलमन्त्रेण तिलाहुतिशतं हुत्वा स्विष्टकृदादि कृत्वा जीर्णदेवं प्रणवेन सम्पूज्य प्रार्थयेत्। जीर्णभग्नमिमं देवं सर्वदोषावहन्नृणाम्। अस्योद्धारे कृते शान्तिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शास्त्रेऽस्मिन् कथिता त्वया ॥ जीर्णोद्धारविधानं च नृपराष्ट्रहितावहम् । तत्राप्यधिष्ठितां देव प्रोत्थानं च तवाज्ञया ॥ इति स्तुत्वा विसृज्य यजमानस्य हस्ते कङ्कणं बद्ध्वा लोहखनित्रेण ईशानादिसमन्तात् संभ्रमन् खनित्वा लिङ्गमादाय याने आरोप्य वृक्षमूले अगाधनदीह्रदे वा वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः, इत्युच्चार्य क्षिपेत् । मूर्तिं प्रणवेन क्षिपेत् । ततः स्नात्वा वस्त्रं परिधाय शान्तिसूक्तं जप्त्वा दश पञ्च वा गोदानं कुर्यात् । ततो देवं पञ्चगव्येनाभिषिञ्चति—आपोहिष्ठा० ३ हिरण्यवर्णा० ४, पवमानः सु० पीठे संस्थाप्य त्रिसूत्रं बद्ध्वा सम्पूज्य वाससा कुशैश्चाच्छाद्य मन्त्रेण जलेऽधिवासयति । ततः सर्वतोभद्रदेवतापूजनं प्रतिद्वारं कलशद्वयस्थापनं च कृत्वा देवमुत्थाप्य सप्तमृत्पञ्चगव्यपञ्चकषायपञ्चरत्नोदककलशैरभिषिञ्चति । वस्त्राद्यैः सम्पूज्य नेत्रोन्मीलनं कुर्यात् । शय्यायां देवं शाययेत् । ततोऽग्निस्थापनं ग्रहपूजनं च कृत्वा कुशकण्डिकां कुर्यात् । ग्रहहोमः । प्रधानहोमः । देवमुत्थाप्य गर्ते पञ्चरत्नं स्थापयित्वा नवं लिङ्गं नवां मूर्तिं वा तत्प्रमाणं स्थापयेत् । यथोक्तां प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । ततो देवं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि । तत्सर्वम्पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ १ ॥ कर्तू राज्ञः प्रजानां च शान्तिर्भवतु सर्वदा । अस्माकं शिल्पिनाञ्चैव सुप्रीतो भव सर्वदा ॥ २ ॥ तर्पणं, तिलौदनगुडौदनहरिद्रौदनहोमं, मण्डलदेवताहोमं च कृत्वा स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कुर्यात् । तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पं कुर्यात् ततोऽभिषेकं कृत्वा स्थापितदेवान् विसृज्य भूयसीं दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे जीर्णोद्धारविधिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[1]अथ ग्रहजपसंकल्पविधिः—आचम्य प्राणानायम्य । अपवित्रः प० देशकालौ० गोत्रः शर्माऽहममुकराशिस्थितामुकग्रहसूचितारिष्टनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यफलावाप्तिकामो वेदोक्तस्य तन्त्रोक्तस्य वा अमुकग्रहमन्त्रस्य अमुकसङ्ख्याकजपमद्यारभ्य यथाकालपर्यन्तं ब्राह्मणद्वारा करिष्ये । विप्रं सम्पूज्य वृणुयात् । अमुकग्रहमन्त्रजपार्थमेभिर्गन्धाक्षतपुष्पपूगीफलद्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि । यथाविहितं जपं कुरु । यथाज्ञानं करवाणि । अथ नवग्रहजपः । आच० प्राणा० सुमुख० देशकालौ० गोत्रः शर्मा यजमानसङ्कल्पितस्य अमुकग्रहमन्त्रस्य अमुकसंख्याकस्य संख्यापूरणार्थममुकसंख्याकं जपमहं करिष्यामि । तद्दशांशहवनम् । देशकालौ० ब्राह्मणद्वारा कृतस्य ग्रहजपस्य दशांशेन तिलाज्यद्रव्येण यथाशक्ति ब्राह्मणद्वारा होममहं कारयिष्ये । तद्दशांशतर्पणम् । तद्दशांशमार्जनम् । अथ श्रेयःसम्पादनम् । मया भवन्नियोगेन जपहोमादिकं कृतम् । तज्जन्यं यच्छ्रेयस्तेन त्वं पुण्यवान्भव ॥ तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च । ब्राह्मणद्वारा कृतस्य अमुकसङ्ख्याकामुकग्रहमन्त्रजपकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥

अथ प्रार्थना—जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १ ॥ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् । कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥ प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् । सौम्यं सर्वगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥ देवा-

१ जपाद् ग्रहाः स्युः प्रीताः सदा कलियुगोक्तचतुर्गुणाद्वा, इत्येतत्संख्याकजपः कार्या ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाञ्च ऋषीणाञ्च गुरुं काञ्चनसन्निभम् । वन्द्यभूतं त्रिलोकेशं तन्नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥ हेमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥ पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

अथ नवग्रहदानानि—आचम्य । प्राणानायम्य । ततो ब्राह्मणपूजनम् । देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम जन्मराशेः सकाशाद् गोचरे महादशायां अन्तर्दशादौ च यथास्थानस्थितामुकग्रहजन्यदोषनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुरारोग्यबलपुष्टिसिद्ध्यर्थम् [अस्य कुमारस्य उपनयनलग्नात् षष्ठस्थानस्थितगुरुजन्य० । मम कन्यायाः विवाहलग्नात् अमुकस्थानस्थितगुरु०] इदं अमुकग्रहदानं सर्वोपस्करसहितं सदक्षिणाकं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । प्रमादात्कु० । विष्णवे० ३ । देशकालौ० अमुकग्रहप्रीत्यर्थं इदममुकग्रहदाननिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथा० ॥ अथ प्रार्थना—ब्रह्मा मुरारिस्त्रि० ।

अथ तुलादानप्रयोगः—यजमानः व्यतीपातग्रहणसङ्क्रमादिपुण्यकाले शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य । देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा मम अस्य शिशोर्वा जन्मराशितः गोचरे विंशोत्तरीमहादशायां अन्तर्दशायां वानिष्टस्थानस्थितसूर्यादिग्रहजन्यसूचयिष्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

माणसकलारिष्टनिरसनपूर्वकदीर्घायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सूर्यादिग्रहाधिष्ठितश्रीमहामृत्युञ्जयदेवताप्रीत्यर्थं मकरसङ्क्रमणमहापर्वनिमित्तमन्नादिनानाद्रव्येण अमुकद्रव्येण वा तुलापुरुषदानमहं करिष्ये। तदङ्गतया गणपतिपूजनं संक्षिप्तपुण्याहवाचनमाचार्यवरणमङ्गदेवतापूजनञ्च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिं सम्पूज्य पुण्याहं–कल्याणम्–ऋद्धिं–स्वस्ति—श्रीः, इति ब्राह्मणांस्त्रिस्त्रिर्वाचयित्वा आचार्यं वृणुयात्। तत आचार्यः सर्षपविकिरणं पञ्चगव्यप्रोक्षणं कृत्वा तुलां बध्नीयात्। कर्पूरकृतगौरीपूजनम्। प्राणप्रतिष्ठापूर्वकं धर्मराजसूर्यविष्णुप्रतिमापूजनम्। इष्टदेवताश्च सम्पूज्य विष्णुप्रतिमां तुलामध्ये बद्ध्वा तोलनीयद्रव्याधिदेवतां सम्पूज्य 'तुलायै नमः इति तुलाञ्च। तुलाप्रान्तकूटयोः विष्णवे नमः विष्णुम्०। अनन्ताय नमः अनन्तं०। मध्यकूटे–वासुकये नमः वासुकिं०। फलकद्वये भूम्यै नमः भूमिं० इति सम्पूज्य। रक्तवस्त्रेण तुलां संवेष्ट्य ततः तुलादण्डे २४ चतुर्विंशतिप्रतिमासु सूत्रबद्धासु उदक्संस्थान्देवानावाहयेत्। ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि ॥ १ ॥ शशिने० शशिनम्० ॥२॥ मारुताय० मारुतम्० ॥३॥ रुद्राय० रुद्रम्० ॥४॥ सूर्याय० सूर्यम्० ॥५॥ विश्वकर्मणे० विश्वकर्माणम्० ॥ ६ ॥ गुरवे० गुरुम्० ॥ ७ ॥ अङ्गिरोग्निभ्याम्० अङ्गिरोग्नी० ॥८॥ प्रजापतये० प्रजापतिम्० ॥ ९ ॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो० विश्वान् देवान् ॥ १० ॥ धात्रे० धातारम्० ॥ ११ ॥ पर्जन्यशम्भुभ्याम्० पर्जन्यशम्भू० ॥१२॥ पितृभ्यो० पितॄन्० ॥१३॥ सौम्याय० सौम्यम्० ॥ १४ ॥ धर्माय० धर्मम्० ॥ १५ ॥ अमरराजाय० अमरराजम्० ॥ १६ ॥ अश्विभ्याम्० अश्विनौ० ॥ १७ ॥ जलेशाय० जलेशम्० ॥१८॥ मित्रावरुणाभ्याम्० मित्रावरुणौ० ॥ १९ ॥ मरुद्गणेभ्यो० मरुद्गणान्० ॥२०॥ धनेशाय० धनेशम्० ॥ २१ ॥ गन्धर्वाय०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गन्धर्व्वम्० ॥ २२ ॥ जलाधिपाय० जलाधिपम्० ॥ २३ ॥ विष्णवे० विष्णुम्० ॥ २४ ॥ इत्यावाह्य मनोजूति० ईशानादिदेवता वरदा भवत इति प्रतिष्ठाप्य ईशानादितुलास्थदेवताभ्यो नमः इति तत्पश्चिमे आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य ततो यजमानः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा । तुलां त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य तत्पश्चिमतः प्राङ्मुख उपविश्य प्रार्थयेत्—

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिस्त्वं सत्यमाश्रिता । साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥ १ ॥ एकतः सर्वदेवानां तथानृतशतानि च । धर्माधर्मकृतां मध्ये स्थापितासि जगद्धिते ॥ २ ॥ त्वं तुले सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता । मां तोलयन्ती संसारादुद्धरस्व नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ योऽसौ तत्त्वाधिपो देवः पुरुषः पञ्चविंशकः । स एषोऽधिष्ठितो देवि त्वयि तस्मान्नमो नमः ॥ ४ ॥ नमो नमस्ते गोविन्द तुलापुरुषसंज्ञक । त्वं हरे तारयस्वास्मान् तस्मात् संसारसागरात् ॥५। इति पठित्वा तुलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् । पुनः तुलां त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य । वामहस्ते धर्मराजं दक्षिणे सूर्यं हृदि स्वेष्टदेवतां निधाय तुलायां उत्तरफलके आरोहयेत् । ततः आचार्यो दक्षिणफलके तोलनार्थद्रव्यमारोपयेत् । ततो यजमानः तुलामध्यदण्डस्थितहरिं पश्यन् मन्त्री पठेत्—

नमस्ते सर्वभूतानां साक्षिभूते सनातनि । पितामहेन देवि त्वं निर्मिता परमेष्ठिना ॥ १ ॥ त्वया धृतं जगत्सर्वं सहस्थावरजङ्गमम् । सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्ते विश्वधारिणि ॥ २ ॥ इति पठित्वा गोदोहनकालं तत्र स्थित्वा अवतीर्य प्राङ्मुख उपविश्य तोलितद्रव्ये तुलसीपत्रं निधाय सङ्कल्पं कुर्यात् । देशकालौ सङ्कीर्त्य० अमुककामः इदममुकद्रव्यात्मसमतोलितमाचार्यादन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो [दीनानाथेभ्यः स्त्रीभ्यश्च] विभज्य दातुमहमुत्सृजे न मम । दक्षिणादानसङ्कल्पः—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृतस्य तुलापुरुषदानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इदं सुवर्णनिष्क्रयद्रव्यं दक्षिणात्वेन आचार्यादिन्यतमेभ्यो युष्मभ्यमहं सम्प्रददे न मम। भूयसीसङ्कल्पः। ब्राह्मणत्रयभोजनम्। कृतस्य तुला० र्थं—यथाशक्तिब्राह्मणान् यथाकालं यथोत्पन्नेनान्नेन भोजयिष्ये॥ विसर्जनम्॥ आचार्याय तुलार्धं पादं वा प्रतिमावस्त्राभरणादिसर्वं दत्त्वा तुलाशेषं च सद्य एव यथोद्देशं दत्त्वा "यस्य स्मृत्या०" इत्यादि पठित्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। इति लघुदर्पणे तुलादानविधिः॥

अथ मोदकदानविधिः—अपवित्रः० आचम्य प्राणानायम्य। सुमुखश्चैक० देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा मम श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं सोपस्करषष्ट्युत्तरशतत्रयमोदकदानकर्माहं करिष्ये। तत्रादौ विष्णुपूजां करिष्ये। दानद्रव्यपूजनम्। देशकालौ० मम श्रीविष्णुप्रीत्यर्थमिमं मोदकं सोपस्करं दक्षिणासहितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे॥१॥ एवं यमराजचित्रगुप्ताभ्यां दद्यात्। देशकालौ० ममेह जन्मनि मुक्तिप्रदश्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा परलोके क्षुधाजन्यपीडापरिहारपूर्वकं अहरहः अक्षय्यतृप्तिकामः पाथेयत्वेन विहितान् इमान् प्रस्थ–अर्धसेटक–कुडव–परिमितान् षष्ट्युत्तरशतत्रयचणकघृतसितामयान् मोदकान् प्रस्थ–अर्धसेटक–कुडव-परिमितचणकान् यत्किञ्चिल्लवणयुतान् दक्षिणासहितान् नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥३६०॥ त्रिलोकी०॥१॥ इदं दानम्०॥२॥ भूयसीसङ्कल्पः। प्रमादात्०॥ विष्णवे०॥३॥ इति लघुदर्पणे मोदकदानविधिः॥

१ अत्र यथाशक्तिदानम्–प्रस्थपरिमितान् वा अर्धसेटकं० वा कुडवपरिमितान।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथान्नदानम् । देशकालौ० गोत्रः शर्माऽहमानेकजन्मोपार्जितसमस्तपापक्षयपूर्वकपरमविष्णुपद-प्राप्तिकामः इदमन्नं यथाशक्ति सोपस्करं सर्वदैवत्यं सदक्षिणं दास्यमानमामान्नं तन्निष्क्रयद्रव्यं वा यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे—अन्नमेव यतो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः । अन्नं ब्रह्मा-खिलत्राणमस्तु मे जन्मजन्मनि ॥ इत्यन्नदानम् ॥

अथ गोदानविधिः—कर्ता पुण्यकाले शुभासने उपविश्य आचम्य । स्वपुरतः सवत्सां गां प्राङ्मुखीमत्रस्थाप्य प्राणानायम्य देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम समस्तपापक्षयपूर्वकं आयुरारोग्य-धनधान्यद्विपदचतुष्पदसन्ततिप्राप्तिपूर्वकं सवत्सगोरोमसमसङ्ख्याकवर्षस्वर्गप्राप्तिकामः यथाश-क्त्यलङ्कृतसवत्सगोदानमहं करिष्ये । कृतस्य सप्रासादशिवादिप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं आचा-र्याय दक्षिणात्वेन गोप्रदानं करिष्ये । तदङ्गत्वेन ब्राह्मणवरणं सवत्सगोपूजनञ्च करिष्ये । इति सङ्क-ल्प्य गणपतिं सम्पूज्य । ब्राह्मणवरणं कुर्यात् । अस्मिन् सवत्सगोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोदानप्रतिग्रहीतारं त्वां वृणे । वृतोऽस्मि । गाश्च सम्प्रोक्ष्य पूजयेत् । **आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥** इति मन्त्रेण ॥ तद्देहे अक्षतैर्देवानावाहयेत् । शृङ्गमूलयोः—ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः, ब्रह्मविष्णू आवाहयामि ॥१॥ शृङ्गाग्रे-सर्वतीर्थेभ्यो० सर्वतीर्थान्० ॥ २ ॥ शिरोमध्ये महादेवाय० महादेवम् ॥ ३ ॥ ललाटाग्रे—गौर्यै० गौरीम् ॥ ४ ॥ नासाग्रे—षण्मुखाय० षण्मुखं० ॥ ५ ॥ नासापुटयोः—कम्बलाश्वतराभ्यां० कम्बला-श्वतरौ० ॥ ६ ॥ कर्णयोः—अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ ७ ॥ नेत्रयोः—शशिभास्कराभ्याम्०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शशिभास्करौ० ॥ ८ ॥ दन्तेषु–वायवे० वायुम्० ॥ ९ ॥ जिह्वायाम्–वरुणाय० वरुणम्० ॥१०॥ हुङ्कारे–सरस्वत्यै० सरस्वतीम्० ॥ ११ ॥ गण्डयोः–मासपक्षाभ्याम्० मासपक्षौ० ॥१२॥ ओष्ठयोः–सन्ध्याद्वयाय० सन्ध्याद्वयम्० ॥ १३ ॥ ग्रीवायाम्–इन्द्राय० इन्द्रम्० ॥१४॥ वक्षसि–रक्षोभ्यो० रक्षांस्यावा० ॥ १५ ॥ उरसि–साध्येभ्यो० साध्यान्० ॥ १६ ॥ जङ्घयोः–धर्माय० धर्मम्० ॥ १७ ॥ खुरमध्ये–गन्धर्वेभ्यो० गन्धर्वान्० ॥ १८ ॥ खुराग्रेषु–पन्नगेभ्यो० पन्नगान्० ॥ १९ ॥ खुरपश्चिमे–अप्सरोगणेभ्यो० अप्सरोगणान्० ॥२०॥ पृष्ठे–एकादशरुद्रेभ्यो० एकादश-रुद्रान्० ॥ २१ ॥ सर्वसन्धिषु–वसुभ्यो० वसून्० ॥ २२ ॥ श्रोणितटे–पितृभ्यो० पितॄन्० ॥२३॥ पुच्छे–सोमाय० सोमम्० ॥ २४ ॥ अधोगात्रेषु–द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्यान्० ॥ २५ ॥ तत्केशेषु–सूर्यरश्मिभ्यो० सूर्यरश्मीन्० ॥ २६ ॥ गोमूत्रे–गङ्गायै० गङ्गाम्० ॥ २७ ॥ गोमये–यमुनायै० यमुनाम्० ॥२८॥ क्षीरे–सरस्वत्यै० सरस्वतीम्० ॥ २९ ॥ दध्नि–नर्मदायै० नर्मदाम्० ॥ ३० ॥ घृते–वह्नये० वह्निम्० ॥ ३१ ॥ रोमसु–अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यो० अष्टाविंशतिदेवकोटीः आ० ॥ ३२ ॥ उदरे–पृथिव्यै० पृथिवीम्० ॥ ३३ ॥ स्तनेषु–चतुर्भ्यः सागरेभ्यो० चतुरः साग-रान्० ॥ ३४ ॥ सर्वशरीरे–कामधेनवे० कामधेनुम्० ॥ ३५ ॥ इत्यावाह्य सवत्सायै गवे नमः इति सम्पूज्य ॥ सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता । गोग्रासं तु मया दत्तं सुरभे प्रति-गृह्यताम् ॥ इति यवगुडमिश्रितमन्नं निवेद्य मन्त्रपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा । गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः । गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः षडङ्गम्पादशक्रमाः ॥ ततो गोपुच्छोदकेन तर्पणं कुर्यात् । अद्य तिथौ गोदानाङ्गभूतं देवर्षिपितृप्रीत्यर्थं गोपुच्छोदकेन तर्पणं करिष्ये । श्लोकरूपतर्पणं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सव्येन कुर्यात् । तद्यथा–गोपुच्छे नित्यतर्पणवद्देवर्षिमनुष्यपितॄन् सन्तर्प्य–पितृवंशे च ये जाता जाता मातृकुले मम । ते पिबन्तु मया दत्तं गोपुच्छस्थ तिलोकदम् ॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृ-मानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्र-ह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ अथ दानम्–सवत्सां गां प्राङ्मुखीं स्थापयेत् । पात्रभूतो विप्रस्तत्रैव उदङ्मुखस्तिष्ठेत् । ततो दाता घृतसुवर्णयुक्तकांस्यपात्रे गोपुच्छं निक्षिप्य घृताक्तं कृत्वा । ततो गोपुच्छं हस्ते गृहीत्वा कुशाक्षततुलसीपत्रजलान्यादाय । देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सम० इमां गां सवत्सां रुद्रदैवत्यां सुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्तालाङ्गूलां कांस्यदोहां रक्तवस्त्रा-वृतां घण्टालङ्कृतकण्ठीं गन्धाक्षतपुष्पमालाशोभितां यथाशक्त्यलङ्कृताम् पूर्वोक्तालङ्का-राभावे तन्निष्क्रयद्रव्ययुताममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न मम–इति प्रागग्रं पुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् । ॐ स्वस्ति इति विप्रः । ततः "कोऽदात्" इति मन्त्रं पठेत् । ततो दाता सुवर्णदक्षिणां दद्यात् कृतस्य सवत्सगोदानस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं सुवर्ण-निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे० । ॐस्वस्तीति प्रतिवच-नम् ॥ अथ प्रार्थना–नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता । सुरभे हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ २ ॥ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ ३ ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्य-हम् ॥ ४ ॥ ततो विष्णुप्रीतये वर्षमात्रं गोभक्षणार्थं तृणपिण्याकप्रत्याम्नायभूतं इदं यथाशक्ति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्रव्यं तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति दत्त्वा धेनुं द्विजश्च त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणभोजनं सङ्कल्पयेत् । ततो भूयसीं दक्षिणां दत्त्वाऽऽशिषो गृह्णीयात् । इति लघुदर्पणे गोदानप्रयोगः ॥

अथ पापधेनुदानम् । देशकालौ० मम जन्मप्रभृत्यद्यपर्यन्तं ज्ञाताज्ञातकामाकामसकृदसकृन्मनोवाक्कायजनितसकलपापक्षयार्थं इदं पापधेनुमूल्योपकल्पितं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्कायकर्मभिः । तत्सर्वं नाशमायातु पापधेनुप्रदानतः ॥ अथ ऋणधेनुदानम् । देशकालौ० अहं आजन्मोपार्जितैहिकामुष्मिकदेवर्षिपितृमनुष्याणां समस्तऋणपातकच्छेदनकामः इदं ऋणधेनुमूल्योपकल्पितं रजतं चन्द्रदैवतं यथा० जे । ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं ऋणम् । तत्सर्वं क्षम्यतां यातु ऋणधेनुप्रदानतः ॥ २ ॥ अथ प्रायश्चित्तधेनुदानम् । देशकालौ० मया जन्मप्रभृति अद्य यावत् आचरितसमस्तपातकस्याकृतप्रायश्चित्तस्यामरणान्तपापापनोदकामः प्रायश्चित्तत्वेन इदं प्रायश्चित्तधेनुमूल्योपकल्पितं रजतं चन्द्रदैवतं यथा० । प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने निष्कृतिर्न कृता क्वचित् । तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं धेनुमेतां ददामि ते ॥ ३ ॥ अथ वैतरणीधेनुदानम् । देशकालौ० मम यमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्याः सुखेनोत्तारणार्थं इदं वैतरणीसंज्ञकधेनुमूल्योपकल्पितं रजतं चन्द्रदैवतं यथा० । यमद्वारे महाघोरे घोरा वैतरणी नदी । तां च तर्तुं प्रदास्यामि कृष्णां वैतरणीं च गाम् ॥ ४ ॥ अथ उत्क्रान्तधेनुदानम् । देशकालौ० मम सुखेन प्राणोत्क्रमणं प्रति बन्धकोक्तनिष्कृत्यनुक्तनिष्कृतिजनितसकलपापक्षयद्वारा सुखेन प्राणोत्क्रमणसिद्ध्यर्थं इदं उत्क्रान्तिधेनुमूल्योपकल्पितं रजतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रदैवतं यथा० जे । अत्युत्क्रान्तौ प्रवृत्तस्य सुखोत्क्रमणसिद्धये । तुभ्यमेनां सम्प्रददे धेनुमुत्क्रान्तिसंज्ञिकाम् ॥ ५ ॥ इति पञ्चधेनुदानम् । **अथ पञ्चधेनुदानम्** । ग्रहणोद्वाहसंक्रान्तियात्रातिप्रसवेषु च । दानं नैमित्तिकं ज्ञेयं रात्रावपि तदिष्यते ॥ आचम्य । देशकालौ० गोत्रः शर्म्मा मम सर्वपापक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमिमानि पाप-ऋण-प्रायश्चित्त-वैतरणी-उत्क्रान्तिधेनुमूल्योपकल्पितद्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥ अद्येत्यादि० । यमद्वारे स्थितायाः वैतरण्या नद्याः सुखेनोत्तरणार्थमिमां वैतरणीं गां सवत्सां सोपस्करां विष्णुदैवत्यां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । या लक्ष्मीः सर्वभूतानां यावद्देवेषु च स्थिता । धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥

अथ अष्टमहादानानि ॥ तिला लोहं हिरण्यं च कार्पासं लवणं तथा । सप्तधान्यं क्षितिर्गावः एकैकं पावनं स्मृतम् ॥ देशकालौ० अन्यकर्तृके अस्य पापं व्यपोहतु । अन्यस्त्रीकर्तृके अस्याः पापं व्यपोहतु । इति निर्देशः । अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणः अस्य [अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः अस्याः०] इमानि तिलादीन्यष्टौ महादानानि नानादैवतानि सदक्षिणानि तत्तद्दानकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थं श्रीविष्णुप्रीतये च नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥**अथ तिलपात्रदानम्**। देशकालौ० गोत्रः शर्मा मम जन्मप्रभृतिमरणान्तं कृतनानाविधपापप्रशमनार्थमिदं तिलपूरितं ताम्रपात्रं सुवर्णदक्षिणासहितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ महर्षेः गोत्रसम्भूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः । तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ अन्यकर्तृके अस्य पापं व्यपोहतु । अन्यस्त्रीकर्तृके अस्याः पापं व्य०--इति निर्देशः । दानसङ्कल्पः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ घृतपात्रदानम्। कांस्यपात्रे घृतमासिच्य किञ्चित्सुवर्णन्निधाय। "रूपेण वो"० अनेनाज्यं अवेक्ष्य दानसङ्कल्पः—देशकालौ० मम समस्तपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमिदं कांस्यपात्रं तिलपूरितं सदक्षिणं यथानाम० जे। आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यपापहरं स्मृतम्। आज्यं सुराणामाहारमाज्ये देवाः प्रतिष्ठिताः॥ इति घृतपात्रदानम्॥

अथ शुद्धिनिर्णयः—सपिण्डाः सप्तपुरुषावधयः स्ववंश्याः। सप्तमपुरुषादनन्तरं दशमपुरुषपर्य्यन्तं सकुल्याः। ज्ञायमानजन्मनामानः कुलजाः। दशमपुरुषादनन्तरं जन्मनाम्नोरविज्ञाने अस्मत्कुलजा इत्येवमाकारकज्ञानमात्रगोचराः गोत्रजाः। ब्राह्मणस्य सपिण्डे ब्राह्मणे मृते ब्राह्मणो दशरात्रेण शुद्ध्यति। सकुल्ये मृते त्रिरात्रेण शुद्धिः तदूर्ध्वं ज्ञायमानजन्मनामके कुलजे मृते [1]पक्षिण्या शुद्धिः। गोत्रजे स्नानमात्रेण शुद्धिः। यदा रात्रौ सन्ध्ययोश्च मरणजन्मनी भवतस्तदातीतदिनेनैव सहाहोरात्रो ग्राह्यः। अथ जननाशौचम्॥ जन्मन्यपि एवमेव मरणवदशौचं दशाहादिव्यापकं भवति। अथ जननमरणाशौचयोर्नियमः। अशौचे सन्ध्यादीनां विहितकर्मणां त्यागः। शालिग्रामपूजनन्तु परद्वारा कारयितव्यम्। दानप्रतिग्रहयोर्विशेषमाह—पुत्रजन्मनि नालच्छेदात् पूर्वं हिरण्यधान्यादि दद्यात्, दातुः प्रतिग्रहीतुश्च दोषो न भवति। प्रेतपिण्डदानादिवर्जं सर्वं दानादिकमशौचे सति निवर्तते। अथाशौचसङ्करः। दशाहाशौचे पञ्चमदिनपर्यन्तं यदि द्वितीयं सजातीयं दशाहाशौचमापतति तदा पूर्वाशौचव्यपगमेन शुद्धिः। पञ्चमदिनानन्तरन्नवमदिनपर्यन्तं द्वितीयाशौचे सति द्वितीयाशौचव्यप-

१ "आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी" इत्यमरः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गमेन शुद्धिः । दशमदिने सम्पूर्णाशौचान्तरे सति तद्दिनानन्तरं दिनद्वयेन शुद्धिः । दशमदिनरात्रिशेषे अरुणोदयवेलायां सम्पूर्णशौचान्तरोपनिपाते सति सूर्योदयादनन्तरं त्रिरात्रेण शुद्धिः । अत्र रात्रिशब्दोऽहोरात्रपरो ज्ञातव्यः । जननाशौचे मरणाशौचमापतति तदा मरणाशौचेन शुद्धिः । मरणाशौचे जननाशौचमापतति तदा मरणाशौचव्यपगमेनैव शुद्धिः । स्त्रीणां स्वप्रसवनिमित्तमशौचं तत्प्रातिस्विकं तदन्येन न बाध्यते । तेन स्त्रीणां पतिमरणेऽपि पुत्रजन्मनि विंशतिदिनेभ्य ऊर्ध्वं कन्याजन्मनि मासादूर्ध्वं श्राद्धाद्यदृष्टार्थकर्मणि चाधिकारः ।

अथ विदेशस्थाशौचम् । यद्देशमरणे[१] तद्दिने एव वार्ता न प्राप्यते स विदेशः । अनतीताशौचकाले यदि विदेशस्थसपिण्डमरणं श्रूयते तदा यावदवशिष्टमशौचकालस्य तावदशौचं चतुर्वर्णैः कर्तव्यम् । यदि तु सम्पूर्णाशौचस्य कालेऽतीते षण्मासाभ्यन्तरसपिण्डमरणं श्रूयते तदा त्रिरात्रम् । तदूर्ध्वं नवममासपर्यन्ते पक्षिणी । पक्षिणी च आगामिवर्तमानदिनद्वयसहिता रात्रिः । तुल्यतया पूर्वापररात्रिसहितं दिनं वा । तदूर्ध्वं यावद्वर्षमेकमहोरात्रमशौचम् । वर्षानन्तरं स्नानमुदकदानञ्च । त्र्यहाशौचादावतीते सर्वत्र स्नानोदकदानमात्रम् । जननाशौचकाले त्वतीते जननश्रवणे सर्वदा अशौचाभावः । षष्टियोजनानन्तरो देशो देशान्तरम् । षष्टियोजनाभ्यन्तरेऽपि यत्र भाषाभेदगिरिमहानद्यव्यवधानानि भवन्ति तदपि देशान्तरम्, तस्मिन् देशान्तरे मृतस्य सद्यः शौचम् ॥

अथ बालाद्यशौचम् ॥ ब्राह्मणानां सप्तममासात्प्राक् बालके मृते सद्यः शौचम् । सप्तममासा-

१ अत्र दूतमुखेन इति योजनायम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दारभ्य द्वितीयवर्षसमाप्तिं यावत् एकमहोरात्रमशौचम् । तृतीयवर्षादारभ्य षड्वर्षान्तं यावत् त्रिरात्रम् । तदुपरि दशाहमशौचं भवति । प्रसूतिकानान्तु सर्वासामेव दशाहाभ्यन्तरे बालमरणे यावद्दशाहः पूर्य्यते तावदशौचं भवति । अत्र सर्ववर्णानामसम्पूर्णद्विवर्षो बालो मृतो गङ्गायां क्षेपणीयः । अग्निदाहस्तस्य न कर्तव्यः । यदि तु प्रमादादिना तस्य अग्निदाहः क्रियते तदा ब्राह्मणानां त्रिरात्रमशौचं भवति । शीतलारोगयुक्तस्य न दाहो नृपसत्तम । कृते दाहे कुलानिष्टं जायते वत्सराद् ध्रुवम् ॥ अथ स्त्र्यशौचम् ॥ सर्ववर्णानां द्वितीयवर्षान्तं यावत्कन्यामरणं सद्यः शौचम् । तदनन्तरं विवाहपर्यन्तमेकाहोरात्रमशौचम् । विवाहानन्तरं पितृकुले अशौचं न भवति । स्वामिकुले सम्पूर्णाशौचं भवति । यत्र तु मया तुभ्यमेषा दातव्येति वाग्दानं क्रियते तत्र चूडानन्तरं मृतायां तस्यां विवाहपर्यन्तं पितृपतिपक्षयोरपि त्रिरात्रमशौचम् । ऊढायाः कन्यायाः पतिगृहे मरणे मातापित्रोस्त्रिरात्रेण शुद्धिः । मातापित्रोर्मरणे ऊढायाः पुत्र्यास्त्रिरात्रं सार्द्धभोजने दशाहान्तम् । दशाहोर्ध्वं कालान्तरे वत्सरान्तेऽपि पक्षिणी । अत्रैवातिक्रान्ताशौचं ब्राह्मणवचनाद्भवति नान्यत्र । विवाहिता स्त्री यदि पितृगृहे प्रसूयते म्रियते वा तदा मातापित्रोस्त्रिरात्रमशौचम् । पितुरभावे मातृगृहे दुहितुर्मरणे प्रसवे वा मातुस्त्रिरात्रमेव । मातुरभावे भ्रातृगृहे भगिन्याः प्रसवे मरणे वा भ्रात्रादीनामेकरात्रमेवाशौचं भवति । विवाहिता स्त्री पाणिग्राहकादन्यं यं पुरुषमाश्रयति तस्यैव पुरुषस्य तस्यां मृतायां वा त्रिरात्रमशौचं भवति । स्वयं ग्राहककुलजातानामशौचं तत्र न भवति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ गर्भस्रावाशौचम्—गर्भस्रावे मासत्रयाभ्यन्तरे ब्राह्मण्यास्त्रिरात्रम्। मासत्रयोपरि षण्मासं यावत् यावत्सु मासेष्वतीतेषु गर्भस्रावो भवति तदा तावन्त्येव दिनान्यशौचम्। षण्मासोपरि गर्भपाते दशाहमशौचं भवति। पतिपुत्रादिसपिण्डानां सद्यः शौचं भवति।

अथ मृत्युविशेषाशौचम्—शौचाचमनाद्यसमर्थस्य वृद्धस्य असाध्यव्याधिगृहीतस्य च पुरुषस्य मरणेच्छायामग्निजलप्रवेशेन मरणे सपिण्डानां त्रिरात्रमशौचम्। तत्काले अग्न्यादिप्रवेशेऽपि अमृतानां पश्चान्मृतानां त्रिरात्रमशौचम्। रोषादिना ये जलादिष्वात्मानं घातयन्ति तेषामग्निदाहादि न कर्तव्यम्। तन्मरणनिमित्तकमशौचमपि न कर्तव्यम्। प्रमादेन अग्न्युदकवज्रादिना मरणे सम्पूर्णमशौचमग्निसंस्कारादिकाश्च क्रियाः कर्तव्याः। संमर्दमृतानां शस्त्रशून्यकलहमृतानां राजहतानां गोब्राह्मणार्थे जलपङ्कादिमग्नानां संग्रामे शस्त्रसम्मुखहतानां शस्त्रजलाग्निश्वापदादिभिर्मृतानां च सद्यः शौचम्। ब्राह्मणार्थे गवार्थे सङ्ग्रामे च दण्डेन विपन्नानां वन्दीकृतानां मृतानामेकाहोरात्रमशौचम्। लगुडादिना सङ्ग्रामे पराङ्मुखहतस्य त्रिरात्रमशौचम्। उपसर्गमरणे सम्पूर्णाशौचस्य प्रामाणिकव्यवहारः। अत्यन्तदुर्भिक्षे औपसर्गिकात्यन्तमकरादिपीडायां च नाशौचम्।

अथ सपिण्डाद्यशौचम्—मातामहे मृते दौहित्रस्य त्रिरात्रम्। मातामह्यां मृतायां पक्षिणी। मातुले मातृष्वस्रीये पितृष्वस्रीये मातुलपुत्रे दौहित्रे भागिनेये च मृते पक्षिणी। भगिन्यां मातुलान्यां मातृष्वसरि पितृष्वसरि च मृतायां पक्षिणी। श्यालके मृते एकरात्रम्। जामातुः श्वश्रूश्वशुरयोर्मरणे पक्षिणी। स्वगृहे मृते मातुले श्वशुरे च स्वगृहमृतायां मातृष्वसरि पितृष्वसरि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्वश्वा च त्रिरात्रम् । शर्जान मृते प्रजानामेकाहोरात्रमशौचम्, परपूर्वासु अन्यगतासु भार्यासु मृतासु प्रसूतासु च त्रिरात्रम् । एकमातृकयोर्भिन्नपितृकयोर्भ्रात्रोः परस्परं जननमरणयोः सम्पूर्णाशौचम् । तयोर्मरणे प्रसवे च पितुस्त्रिरात्रम् । तत्सपिण्डानां तयोर्मरणे एकरात्रमशौचं भवति ।

अथ निर्हाराद्यशौचम्—ब्राह्मणस्य धर्मबुद्ध्याऽनाथमृतब्राह्मणोद्वहने तथाविधब्राह्मणस्य दाहे च स्नानमात्रेण शुद्धिः । तथाविधमृतब्राह्मणानुगमने स्नानानन्तरमग्निस्पर्शनघृतप्राशने कृत्वा शुद्धिः । मातुलमातृष्वस्रेयमातुलपुत्रमातुलानीमातृष्वसृपितृष्वसृभगिनीभागिनेयमातामहमातामहीदौहित्रभगिनीपतिजामातृश्वशुरश्यालकानां दाहादौ कृते त्रिरात्रमशौचम् । मृतसम्बन्धिगृहे यो वसति तत्सिद्धान्नं च भुङ्क्ते तस्य पूर्णाशौचम् । मृतसम्बन्धिगृहे केवलं वसति तदन्नं न भुङ्क्ते यो वा तदन्नं भुङ्क्ते तद्गृहे न वसति तस्य त्रिरात्रमशौचम् । दुर्भिक्षे बुद्धिपूर्वकं यस्याशौचे अन्नमश्नाति तस्य तदशौचं प्रमादतोऽशौचान्नभोजने दोषाभावः । अशौचानन्तरं त्रिरात्रं दुग्धपानरूपं प्रायश्चित्तम् । मूल्येन प्रेतदहनवहनयोः कृतयोर्दाह्यजात्युक्ताशौचम् । अशौचिभिः सह शयनाङ्गसंवाहनादिकरणे तत्तज्जात्युक्ताशौचम् । शवस्पर्शे दिवा चेन्नक्षत्रदर्शनाच्छुद्धिः रात्रौ चेत् सूर्यदर्शनात् शवानुगमने स्नानाग्निस्पर्शघृतप्राशनैः शुद्धिः । असपिण्डे मृते ब्राह्मणो तद्गृहे गत्वा तद्बन्धुभिः सहाश्रुपातं कृत्वा सचैलस्नानेन शुद्ध्येत् ।

अथाधिकारिणः—तत्र दाहमारभ्य त्रयोदशाहपर्यन्तं क्रियायां योग्यस्य ज्येष्ठस्यैवाधिकारः ज्येष्ठस्य क्षतादिना कनिष्ठस्याप्यधिकारः । पुत्राभावे पौत्रोऽधिकारी । तदभावे प्रपौत्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदभावे पत्नी। तदभावे सहोदरः कनीयान्। तदभावे ज्येष्ठः। तदभावे भ्रातृपुत्रः। तदभावे सपिण्डोऽधिकारी, तदभावे दुहिताऽधिकारिणी। तदभावे दौहित्रः। तदभावे मातृसपिण्डाः। कुलद्वयाभावे मातरः तदभावे यथाकथञ्चित् परिगृहीताः स्त्रियः। असमाप्तषड्वर्षस्य मृतस्य दाहमारभ्याशौचान्तं यावत् पिण्डदानादि क्रियामात्रम्। असमाप्तद्विवर्षस्य पूर्वक्रियाऽपि नास्ति। किन्तु गङ्गाप्रवाहः, स्त्रिया अपि द्विवर्षाभ्यन्तरे गङ्गाप्रवाहः, तदूर्ध्वं विवाहात्पूर्वं दशगात्रक्रियामात्रम्। ऊढायाः पुत्रोऽधिकारी। तदभावे पतिः तदभावे स्नुषा। तदभावे सपिण्डाः। तदभावे पितृसपिण्डाः। इति लघुदर्पणे शुद्धिनिर्णयः॥

अथ अन्त्येष्टिपद्धतिः—ततो दुर्बलावस्थासम्भावितसन्निकृष्टमरणं ज्ञात्वा पुत्रादयः शालिग्रामसमीपे तुलसीसमीपे वा गृहे वा गोमयेनोपलिप्तायां भूमौ दक्षिणाग्रान्कुशानास्तीर्य बहुलांस्तिलान्विकीर्य तत्र दक्षिणोदग्वा शिरसं कृत्वा शायितमुखे शालिग्रामशिलोदकं सुवर्णखण्डं च प्रक्षिपेयुः। गोपीचन्दनेनानुलेपनम्। सर्वत्र तिलकानि च कुर्युः। कण्ठे शिरसि सर्वेषु उपरितनेषु छिद्रेषु निर्माल्यरूपां तुलसीं निक्षिपेयुः। ततः उच्चैः पुरुषसूक्तगीतास्तोत्रविष्णुसहस्रनामानि च पठेयुः, अन्यो वा श्रावयेत्। देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः झटिति दीर्घायुरारोग्यमनःप्रसादसिद्ध्यर्थं श्रीमहाभारतान्तर्गत 'विश्वं विष्णुः' इत्यारभ्य "प्रभुर्विष्णुः" इति यहिः इत्यन्तस्य विष्णोर्दिव्यसहस्रनाम्नः स्तोत्रस्य द्वादशसंख्याकान्पाठान्ब्राह्मणद्वारा करिष्ये। इति सङ्कल्पं कृत्वा श्रीरामादिस्मरणं च कुर्यात्। ततो गतप्राणशवं ज्ञात्वा कर्ता कक्षोपस्थवर्जं नखलोमानि वापयेत्। ततः स्नात्वाऽहते वाससी परिधाय। मृतस्य शरीरस्य प्रक्षालनम्, अहत-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्रपरिधापनम्, उत्तरीयस्य च। सुगन्धिद्रव्यैर्पुष्पमाल्यैः परिमलद्रव्यैरलङ्करणं च कृत्वा मृतस्य दुर्मरणं चेत्तर्हि अमुकगोत्रस्यामुकमृतस्यामुकदुर्मरणजनितपापक्षयार्थममुकस्पर्शजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं और्ध्वदैहिककर्मयोग्यताप्राप्त्यर्थं च अमुकसं० गानि० द्रव्यं सूतकान्तेऽहमाचरिष्ये। इति सङ्कल्प्य ततः पिण्डदानं कुर्यात्। कर्ता आचम्य पवित्रधारणं शवसमीपे मृतस्य दक्षिणपार्श्वे दक्षिणाभिमुख उपविश्य। अपसव्यम्। भूमौ दक्षिणाग्रकुशास्तरणम्। अवनेजनम्। मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशव! (अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकि शवे!) उत्क्रान्तिस्थाने पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। तिलघृतमधुयुक्तयवपिष्टपिण्डमादाय। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशव! एष उत्क्रान्तिस्थानपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। प्रत्यवनेजनम्। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशव! उत्क्रान्तिस्थानपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। पिण्डोद्धरणम्। प्रेताङ्गे स्थापयेत्। अथानन्तरं चानुजा, सजातीया ब्राह्मणादयः शवं प्रच्छादितमुखं प्राक्शिरसमूर्ध्वमुखं दाहदेशं प्रतिनयेयुः। आसन्दीभञ्जने प्राजापत्यगोदानम्। शवपतने प्राजापत्यद्वयं चरेत्। ततो ग्रामश्मशानयोर्मध्यपथे पिण्डं दद्यात्। भूमौ निधाय पिण्डस्थाने उपलेपनमवनेजनम्। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकभूत! विश्रामस्थानपिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। पिण्डदानम्। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकभूत! एष विश्रामस्थानपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। प्रत्यवनेजनं पूर्ववत्। अथ सर्वे बान्धवाः प्रेतं श्मशाने नयेयुः। ततः श्मशानभूमौ शवस्य स्थापनं स्नापनं च कृत्वा दाहदेशं प्रोक्षयेत्। ततः पुत्रादिभिः रचितायां काष्ठचितायामुत्तानस्यैव निधानम्। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकसाधक!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चितास्थानपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तत्रोपतिष्ठताम् । पिण्डदानम् । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकसाधक ! एष चितास्थानपिण्डस्ते मया दीयते तत्रोपतिष्ठताम् । प्रत्यवनेजनं पूर्ववत् । पञ्चके मृतश्चेत् पञ्चकविधानं कार्यम् । अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादिपञ्चकमरण-सूचितवंशारिष्टविनाशार्थं पञ्चकमरणविधिं करिष्ये । दर्भमयान् पञ्च पुत्तलान् कृत्वा यवपिष्टैरनु-लिप्य ऊर्णासूत्रेण वेष्टयित्वा प्रेतोपरि न्यसेत् । प्रथमं शिरसि । द्वितीयं दक्षिणाकुक्षौ ॥ तृतीयं वामकुक्षौ । चतुर्थं नाभौ । पञ्चमं पादयोर्मध्ये न्यसेत् । तदुपरि नाममन्त्रैर्घृताहुतीर्दद्यात् । प्रेतवा-हाय स्वाहा ॥ १ ॥ प्रेतसखाय स्वाहा ॥ २ ॥ प्रेतपाय स्वाहा ॥ ३ ॥ प्रेतभूमिपाय स्वाहा ॥४॥ प्रेतहर्त्रे स्वाहा ॥ ५ ॥ ततः प्रेतमुखे सुवर्णं घृतं वा दत्त्वा पुत्तलैः सह प्रेतं दहेत् । देवाग्निमुखाः सर्वे कृतशयनमेनं गतायुषं प्रदहन्तु । इति मनसा स्मरेत् । ततो दक्षिणाभिमुखो भूत्वाऽग्निं गृहीत्वा—कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाऽप्यजानता । मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम् ॥ १ ॥ धर्मा-धर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् । दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु ॥ २ ॥ एवमु-क्त्वा शीघ्रं प्रदक्षिणां कृत्वा शिरोदेशे दद्यात् । तस्मिन्नग्नौ घृतेनैकाहुतिहोमः—अस्मात्त्वमधिजातोऽसि त्वदयञ्जायतां पुनः । अमुकप्रेत स्वर्गाय लोकाय स्वाहा । ज्वलति पावके अस्य मन्त्रस्य स्त्रियाम-प्यूहः । इत्याज्याहुतिं दत्त्वा सर्वपिण्डैः सह दग्ध्वा किञ्चिच्छेषयेत् । क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्०, इति सप्तकाष्ठप्रक्षेपः । अर्द्धदग्धे तुलसीचन्दनादिप्रक्षेपरूपां कपालक्रियां कृत्वा जलैः सिञ्चेत् । ततः स्कन्धे उदकपूर्णं कुम्भं कृत्वा चिताभूमिप्रदक्षिणां कृत्वा तूर्ष्णीं घटस्फोटनं कृत्वा पृष्ठतः अनव-लोकयन्तः कनिष्ठपूर्वाः स्नानार्थं नद्यादौ गच्छेयुः । ततः उदकसमीपे गत्वा पुत्रादयः—चाण्डाला-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्निरमेध्याग्निः सूतिकाग्निश्च कर्हिचित् । पतिताग्निश्चिताग्निश्च न शिष्टग्रहणोचितः ॥ इति दक्षिणाभिमुखाः निमज्जेयुः । ततस्तीरमागत्य सतिलमुदकं पाणिभ्यामादाय दक्षिणाभिमुखाः पितृतीर्थेन एकैकमञ्जलिं त्रींस्त्रीन्वा भूमौ पाषाणे वा निषिञ्चेयुः । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकप्रेत ! दाहजनितपीडोपशमनार्थमेष सतिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । सव्यम् । पुनः स्नानम् । उदकादुत्तीर्य्य स्नानवस्त्रं निष्पीड्य तदेव परिधाय तत उत्थाय पश्चादनवलोकयन्तोऽधोमुखाः कनिष्ठानग्रे कृत्वा गृहं प्रत्यायान्ति । रात्रौ मृतानां रात्रावेव दाहः । ततो गृहद्वारसमीपे आगत्य सर्वे निम्बपत्राणि दन्तैर्विदश्य पादेन पाषाणमाक्रम्य गृहं प्रविशेयुः । गाढं रोदनं च कुर्युः । तस्मिन्दिने गृहे पाको न विधेयः । अथ पुत्रादीनां नियमाः—ब्रह्मचारिणः, अधःशायिनः, पृथगुपवेशनाः, परस्परमसंस्पृष्टाः, दानाध्ययनविवर्जिताः, मलिनाः, दीनाः, अधोमुखाः, सर्वभोगविवर्जिताः, खड्गादिपाणयः, एकान्तमेकवारं क्रीत्वा दिवैवाल्पमश्नीयुः, न रात्रौ । भोजनकाले भोज्यान्नमुष्टिमादाय अपसव्यम्—अद्यामुकगोत्र पितः अमुकप्रेत ! इदं सघृतमन्नं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । इति गवे दद्यात् । दशदिनपर्यन्तं सपिण्डानामेते नियमा भवन्ति । दशदिनपर्य्यन्तं ज्ञातिभिः सह भोजनम् । पुत्रास्तु प्रतिदिनमुदकाञ्जलिदानं कुर्युः । इति लघुदर्पणे दाहविधिः ॥

अथ सूतिकामरणे दाहविधिः—अमुकगोत्रायाः अमुकदेव्याः सूतिकावस्थायां मरणजनितदोषपरिहारार्थमौर्ध्वदैहिकक्रियायोग्यतासिद्ध्यर्थं पञ्चदश प्राजापत्यानि कृत्वा सर्वौषधिलेप-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वकं पुण्यर्गिभरभिषेकं कुर्यात् । कुम्भे उदकं कृत्वा तत्र पञ्चगव्यं प्रक्षिप्य "आपो हि ष्ठा" "इद-मापः" इत्यादिपुण्यर्गिभरभिमन्त्र्य शूर्पेणाष्टोत्तरशतवारं स्नापयित्वा अन्यवस्त्रेणाच्छाद्य विधिना दहेत् । दशदिनाभ्यन्तरे एष नियमः, ऊर्ध्वं तु—सूतिका तु यदा नारी प्राणांश्चैव परित्यजेत् । मास-मेकोवधिं यावत् त्रिभिः कृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति ॥ इति सूतिकामरणे दाहविधिः ॥

अथ रजस्वलामरणे दाहविधिः—अमुकगोत्रायाः अमुकदेव्याः रजस्वलावस्थायां मरणजनितदोषपरिहारार्थमौर्ध्वदेहिकक्रियायोग्यतासिद्ध्यर्थं पञ्चदशप्राजापत्यपूर्वकं शूर्पेणाष्टोत्तरशत-वारं स्नानानि कारयिष्ये—इति सङ्कल्प्य यवपिष्टेन प्रेतमनुलिप्य शूर्पोदकेन अष्टोत्तरशतवारं स्नापयेत् । प्रेतं प्रक्षाल्य भस्मगोमयमृत्तिकाकुशोदकपञ्चगव्यशुद्धोदकैः स्नापयेत् । पवमानमन्त्रैः आपोहिष्ठेति तिसृभिः संस्नाप्य । पूर्ववस्त्रं परित्यज्य अन्यशुद्धवस्त्रं परिधाप्य विधिना दहेत् । चाण्डालसूतिको-दक्या स्पृष्टे प्रेते तथैव च । तस्य पापविशुद्ध्यर्थं कृच्छ्रान्पञ्चदशाचरेत् ॥ इति रजस्वलामरणे दाहविधिः ॥

अथ दुर्मरणनिमित्तप्रायश्चित्तमुच्यते—शस्त्रघातजन्यमरणम् १, सर्पदंश० २, जलमज्जन० ३, विषभक्षण० ४, अग्निदग्ध० ५, आत्मघात० ६, चाण्डालहस्तमरणम् ७, विप्र-मारितम् ८, चौरमारितम् ९, शत्रुमारितम् १०, म्लेच्छमारितम् ११, वृक्षपात० १२, बन्दिगृहम-रणम् १३, पाशमरणम् १४, भूतादिमारितम् १५, शकटादिहतम् १६, गजादिहतम् १७, पर्वता-दिपतनम् १८, विद्युत्पात० १९, पाषाणहतम् २०, क्षयापस्मारादिव्याधिमरणम् २१, आशौच-मरणम् २२, इत्यादिमरणे पञ्चदश प्राजापत्यानि कृत्वा शुद्धिं सम्पाद्य दाहादिकं कुर्यात् । तत्रैवं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रयोगः—अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकमृतस्य अमुकमरणजनितपापक्षयार्थं दाहाद्यौर्ध्वदैहिककर्माधिकारार्थं पञ्चदशानां द्वादशानां षण्णां त्रयाणां वा प्राजापत्याम्नायेन प्रतिप्राजापत्यमेकैकगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं सूतकान्ते दातुमहमुत्सृजे। इति मनस्युद्दिश्य जलमध्ये जलं क्षिपेत्। इति लघुदर्पणे दुर्मरणनिमित्तप्रायश्चित्तविधिः॥

अथ कुष्ठिमरणे दाहविधिः—देशकालौ० अमुकस्य कुष्ठरोगावस्थायां मरणजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थं दाहाद्यौर्ध्वदैहिकाधिकारार्थञ्च षडब्दं प्रायश्चित्तं तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयं द्रव्यं सूतकान्ते ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे, इति सङ्कल्प्योक्तविधिना दाहादिकं कुर्यात्। इति कुष्ठिमरणे दाहविधिः॥

अथ पालाशपुत्तलदाहविधिः—तत्र देशान्तरमरणे अष्टौ कृच्छ्रान्कृत्वाऽस्थीनि दहेत्। यद्यस्थीनि चाण्डालश्वादिभिः स्पृष्टानि स्युस्तदा पञ्चगव्यगङ्गोदकाभ्यां प्रक्षाल्य विधिना दहेत्। अथ यस्यास्थीनि सर्वथा न लभ्यन्ते तस्य पर्णशरदाहः। स चैवम्—कर्ता तीर्थं गत्वा यथाविधि स्नानादिनित्यकर्म विधाय आचम्य कुशोपग्रहपूर्वकं प्राणानायम्य देशकालौ० अपसव्यम्। अमुकगोत्रस्य अमुकमृतस्य दुर्मरणं तज्जनितदोषनिवृत्त्यर्थं पुत्तलकदाहकर्मादिकरणे अधिकारसिद्ध्यर्थं "सव्यं" तथा चात्मदेहशुद्ध्यर्थञ्च अष्टकृच्छ्रप्रायश्चित्तंगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं सूतकान्ते ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे। ततः शुचिभूमौ कृष्णाजिनमास्तीर्य्य तदुपरि शरसंयुक्तं पालाशदण्डसंयुक्तं चोदक्शिरसं कुशमयं पुरुषाकृतिं पुत्तलकं विधाय सर्वाङ्गं प्रकल्पयेत्। ततः षष्ट्यधिकशतत्रयपालाशवृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्तानि सर्वाङ्गे विन्यसेत् शिरसि चत्वारिंशत् ४० । ग्रीवायां दश १० । बाह्वोः प्रत्येकं पञ्चाशत् ५० । इति १०० । सर्वासु कराङ्गुलिषु १० । उरसि त्रिंशत् ३० । जठरे विंशतिः २० । शिश्ने चत्वारिंशत् ४० । अण्डयोः प्रत्येकं त्रयमिति ६ । ऊर्वोः प्रत्येकं पञ्चाशत् इति १०० । जङ्घातः पादतलान्तं यावत्पादयोः प्रत्येकम्पञ्चदशेति ३० । सर्वासु पादाङ्गुलिषु दश १० । एवं षष्ट्यधिकशतत्रयमितैः पर्णशरैः शरीरं निर्माय ऊर्णासूत्रेण शरीरेण सह बद्ध्वा जलालोडितयवपिष्टेनाङ्गान्यनुलिम्पेत् । घृतेनाभ्यज्य शुद्धोदकेन स्नापयित्वा श्वेतवस्त्रेण वेष्टयित्वा चन्दनेनानुलिप्य तुलसीपुष्पमालयाऽलङ्कृत्य 'अयं स देवदत्तः' इति तमभिस्पृश्य वैतरण्यादिदानं कुर्यात् । ततो नाभौ स्वल्पमात्रदीपस्थापनम् । सीतारामस्मरणम् । दीपस्य नाशे तस्य प्राणोत्क्रान्तिः । अत्र पुत्रःकर्ता चेद्वपनं कुर्यात् । स्नानं वस्त्रपरिधानं कुशास्तरणम् । अवनेजनं च कृत्वा क्रमेण उत्क्रान्तिविश्रामस्थानयोः पिण्डं दद्यात् । ततः प्रत्यवनेजनं च । ततः कर्ता मृतकस्य शरीरम् उदक्शिरसं चितायां संस्थाप्य तदुपरि काष्ठानि रचयेत् । पिण्डदानम् । अप्रदक्षिणम्परीत्य मुखे अग्निदानम् । घृतं क्षिप्त्वा दहेत् । दाहानन्तरमुदकेनाग्निशमनम् । स्नानम् । ततः तिलाञ्जलिदानं सूतकञ्च दिनत्रयम् । त्र्यहाशौचप्रकारेण पिण्डदानं समाप्य च चतुर्थे दिने शय्याकाञ्चनपुरुषदानद्विजदम्पतीपूजाकपिलादानाऽऽद्यश्राद्धानि परिसमाप्य पञ्चमेऽह्नि मासिकादिश्राद्धसपिण्डीकरणश्राद्धान्तानि पूर्ववत्कुर्यात् । षष्ठे त्रयोदशाहकर्म कुर्यात् । विदेशस्थे मृते यावद्विधिना न संस्कारस्तावत् पुत्रादीनां नाशौचं न च सन्ध्यादिकर्मलोपः । इति लघुदर्पणे पालाशपुत्तलदाहविधिः समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दिवामृते—सूर्यास्तमयादूर्ध्वं रात्रौ मृतके सूर्योदयानन्तरं अश्वत्थे घटबन्धनम्। अपसव्यम्। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकप्रेत! दाहजनिततापोपशमनार्थं महापथगमनजनिताध्वश्रमशान्त्यर्थञ्च दशरात्रव्यापकाकाशाधिकरणकाश्वत्थमूले श्रवदुदकुम्भस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। सर्वतापोपशमनमध्वश्रमविनाशनम्। प्रेततृप्तिकरं वारि पिब प्रेत सुखी भव॥ इति जलं क्षिपेत्। सव्यम्। ततः सायङ्काले दीपदानम्। अद्या० प्रेतमहापथान्धकारोपशमनार्थं दशरात्रव्यापकाकाशाधिकरणक एष दीपस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्। अन्धकारं महाघोरं रविर्यत्र न दृश्यते। तस्योपकरणार्थाय दीपोऽयं दीयते मया॥ सव्यम्। गृहमागच्छेत्।

अथ [1]दशगात्रविधिः—तृतीयेऽहनि त्रयः सप्तमेऽहनि चत्वारः दशमेऽहनि त्रयः पिण्डाः दातव्याः। कर्ता ग्रामाद् बहिर्देवतायतने नदीतीरे वृक्षमूले वा गत्वा पाकं निर्माय आचम्य पवित्रधारणम्। अपसव्यम् दक्षिणाभिमुखः। पातितवामजानुः। वेदिकानिर्माणम्। कुशास्तरणम्। पुटकादौ जलतिलगन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य मोटकादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत! अतीतप्रथमाहनिमित्तं शिरःपूरकप्रथमपिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपष्ठताम्॥ १॥ [माता चेत् अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकप्रेते! इत्यूहः] अद्या० अतीतद्वितीयाहानिमित्तं कर्णाक्षिनासिकापूरको द्वितीयपिण्ड०॥ २॥ अद्या० अतीततृतीयाहनिमित्तं गलांसभुजवक्षःपूरकस्तृतीयपिण्ड०॥ ३॥ इति कुशोपरि दद्यात्॥ तिलघृतशर्करामधुयुक्तं दुग्धसिक्तं तप्तमेव पिण्डमादाय—अद्या०

१ असगोत्रः सगोत्रो वा स्त्री वा यदि वा पुमान्। यश्चाग्निदाता प्रेतस्य पिण्डं दद्यात् स एव हि॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथमदिवसनिमित्त एष शिरःपूरकः प्रथमः पिण्डस्ते मया० ॥ १ ॥ अद्या० द्वितीयदिवसनिमित्तः कर्णाक्षिनासिकापूरको द्वितीयपिण्ड० ॥ २ ॥ अद्या० गलांसभुजवक्षःपूरकस्तृतीयपिण्ड० ॥३॥ इति दद्यात् । प्रत्यवनेजनम् । अद्या० शिरःपूरकप्रथमपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया० ॥ १ ॥ अद्या० कर्णाक्षिनासिकापूरकद्वितीयपिण्डेऽत्रा० ॥२॥ अद्या० गलांसभुजवक्षःपूरकतृतीयपिण्डेऽत्रा० ॥ ३ ॥ इति पिंडोपरि दद्यात्, ततः तूष्णीमेव गन्धसिन्दूर-ऊर्णासूत्र-उशीरभृङ्गराजपत्रपुष्पराधूपदीपताम्बूलपूगीफलानि पिण्डेषु दद्यात् । ततः अद्या० एष सतिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ अद्या० एतौ द्वौ सतिलतोयाञ्जली ते मया दीयते तवोपतिष्ठेताम् ॥ २ ॥ अद्या० एते सतिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ ३ ॥ इति पिण्डोपरि दद्यात् । एवं क्रमेण प्रतिदिनं एकैकाञ्जलिवृद्धिः दशपिण्डपर्यन्तं कार्या । ततः पिण्डसमीपे एव अद्यामुक० इदं सतिलतोयपूर्णपात्रं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ अद्या० इमे द्वे तिलतोयपूर्णपात्रे ते मया दीयेते तवोपतिष्ठेताम् ॥ २ ॥ अद्या० इमानि तिलतोयपूर्णपात्राणि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ ३ ॥ एवं क्रमेण प्रतिदिनं एकैकपात्रवृद्धिर्दशरात्रपर्यन्तं कार्या । श्मशानानलदग्धोऽसि परित्यक्तोऽसि बान्धवैः । इदं नीरमिदं क्षीरं स्नात्वा पीत्वा सुखी भव ॥ स्त्रीविषये सुखिनी भव । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य कृतैतच्छिरःपूरकप्रथमपिण्डदानसाङ्गतासिद्ध्यर्थं दास्यमानां लोहनिष्क्रयदक्षिणां यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । पश्चाज्जले सर्वं क्षिपेत् । उपलिप्तायां भूमौ माल्यं पानीयं दीपश्च निधाय—अद्या० इदं पानीयं ते० ॥ २ ॥ अद्या० एष दीपस्ते मया० ॥ ३ ॥ अथवा अद्या० इमानि माल्यानि ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ १ ॥ अद्या० इमानि पानीयानि ते० ॥ २ ॥ अद्या० एते दीपास्ते० ॥ ३ ॥ सव्यम् । अनादिनिधानो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यपुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णवे नमः ३। ततः सायङ्काले गृहद्वारे दीपं दद्यात् । गोमयोपलिप्तायां भूमौ त्रिकाष्ठिकासमारोपितमृन्मयपात्रद्वये जलं क्षीरञ्च निधाय तत्समीपे माल्यं दीपं च धृत्वा अपसव्यम् । प्रथमदिनगतरात्रिसम्बन्धि० अमुकगोत्र पितः अमुकप्रेत ! अत्र स्नाहि, इदं दुग्धं पिब, इदं माल्यं परिधेहि, अनेन दीपेन पश्य, एतत् सर्वं मद्दत्तं तवोपतिष्ठताम् ॥१॥ द्वितीयदिनगतरात्रिसम्बन्धिअमुक० ॥२॥ अस्यां रात्रौ अमुकगोत्र० ॥३॥ सव्यं कृत्वा गृहं व्रजेत् । इति तृतीयदिनकृत्यम् । अथ सप्तमदिनकृत्यम्—नाभिलिङ्गगुदपूरकश्चतुर्थः ॥ ४ ॥ [स्त्रीविषये लिङ्गपदस्थाने योनिपदं देयम्] जानुजङ्घापादपूरकः पञ्चमः० ॥ सर्वमर्मपूरकः षष्ठः ॥६॥ सर्वनाडीपूरकः सप्तमः० ॥७॥ अथ दशमदिनकृत्यम्–गृहे सर्वाणि वस्त्राणि खट्वादीनि च क्षालनीयानि । मृन्मयानां भाण्डानां सूतकिस्पृष्टानां परित्यागः । गृहस्य सम्मार्जनं लेपनञ्च कर्तव्यम् । दाशाहिकाः पिण्डा एकेनैव कर्त्रा एकस्मिन्नेव देशे एकेनैव द्रव्येण देयाः । दन्तनखलोमादिपूरकोऽष्टमः ॥ ८ ॥ वीर्य [रजः] पूरको नवमः० ॥९॥ पूर्णत्वं–तृप्तता [क्षुद्विपर्य्यय] पूरको दशमः० ॥१०॥ ततः सूतकनिवृत्त्यर्थं सर्वे वपनं कारयेयुः, ततः प्रेतसम्बन्धिकर्मकाले परिहितानि च वस्त्राणि नापिताय दत्त्वा स्नानं कृत्वा शुद्धे वाससी परिधाय यज्ञोपवीतधारणं कृत्वा गृहमागच्छेत् । दशाहमध्ये दर्शदिनपाते सर्वदशाहसम्बन्धिपिण्डोदकदानं दर्शे समापनीयम् । न त्रिरात्रादर्वागिति केचित् [1]पित्रोस्तु यावदाशौचं दद्यादेवेति–इति [2]दशाहसम्बन्धिकर्म ॥

१ पितामहादीनामुपलक्षणम् । २ पत्न्याः कर्तृत्वे रजोदर्शने च तदन्ते कुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पञ्चकशान्तिप्रयोगः—बालानां युववृद्धानां मृतानां पञ्चकेषु च। विधानं यो न कुर्वीत तस्य विघ्नः पदे पदे ॥ कर्ता तीर्थं गत्वा स्नात्वा शुद्धवस्त्रं परिधाय सन्ध्यावन्दनञ्च कृत्वा आचम्य प्राणानायम्य। देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः शर्मा अपसव्यम्। अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य धनिष्ठादिकजनितदुर्मरणदोषोपशान्त्यर्थम् [सव्यम्] मम गृहे सपरिवारस्य आयुरारोग्यसुखश्रीप्राप्त्यर्थं पञ्चकशान्तिं करिष्ये। विष्णोः षोडशोपचारैः पूजनम्। आचार्यब्रह्मवरणादि कृत्वा स्थण्डिलेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य तदीशान्ये पूर्वादिचतुर्दिक्षु मध्ये च पञ्च कलशान् संस्थाप्य कलशोपरि कृष्णवस्त्रं निधाय तदुपरि अग्न्युत्तारणपूर्वकं स्वर्णमयीं पञ्च मूर्तीः स्थापयेत्। वसोः पवित्र०। वसुभ्यो० वसून्० ॥ १ ॥ वरुणस्योत्तं०। वरुणाय० वरुणम्० ॥ २ ॥ "शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि ँ सीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥" अजैकपदे० अजैकपदम् ॥ ३ ॥ "उत नोऽहिर्बुध्न्यः। शृणोत्वजऽएकपात् पृथिवीसमुद्रः। विश्वे देवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता-मन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु।" अहिर्बुध्न्याय० अहिर्बुध्न्यं० ॥ ४ ॥ "पूषं तव व्रते वयन्नरिष्येमकदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि।" पूष्णे० पूषणम्० ॥ ५ ॥ तत्पार्श्वे यमादिचतुर्दशदेवताः स्थापयेत्—यमाय० यमम्० ॥ १ ॥ धर्मराजाय० धर्मराजम्० ॥ २ ॥ मृत्यवे० मृत्युम्० ॥ ३ ॥ अन्तकाय० अन्तकम्० ॥ ४ ॥ वैवस्वताय वैवस्वतम्० । ५ ॥ कालाय० कालम्० ॥ ६ ॥ सर्वभूतक्षयाय० सर्वभूतक्षयम्० ॥ ७ ॥ औदुम्बराय० औदुम्बरम्० ॥ ८ ॥ दध्नाय० दध्नम्० ॥ ९ ॥ नीलाय०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नीलम्० ॥ १० ॥ परमेष्ठिने० परमेष्ठिनम्० ॥११॥ वृकोदराय० वृकोदरम्० ॥१२॥ चित्राय० चित्रम्० ॥१३॥ चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तम् ॥१४॥ ईशान्ये--अघोरमृत्युञ्जयाय० अघोरमृत्युञ्जयम्० मनोज्जूति० । वस्वाद्यावाहितदेवताः सु० । इति प्रतिष्ठाप्य । वस्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य । प्रथमकलशे–"कृणुष्वपाज० ॥ ५ ॥" द्वितीये--"विभ्राट्० १७" तृतीये–"आशुः शिशान० १७" चतुर्थे—"नमस्ते रुद्र० ६६" पञ्चमे--ऋचंवाचम्० ॥ २४ ॥ इति सम्पूर्णोऽध्यायः पठनीयः ।

ऋचंवाचम्प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये सामम्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये । व्वागोजः सहौजो मयि प्प्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मे छिद्रञ्चक्षुषा हृदयस्य मनसो व्वातितृणम्बृहस्पतिर्मे तद्दधातु ॥ शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥ २ ॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु० ॥ ३ ॥ कयानश्चित्र० ॥ ४ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानाम्म ᳪं० हिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढाचिदारुजे व्वसुः ॥ ५ ॥ अभीषुणः सखीनामविता जरित्तॄणाम् । शतम्भवा स्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कया त्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषम् । कयास्तोतृब्भ्यऽआभरः ॥७॥ इन्द्रो व्विश्वस्य राजति शन्नोऽअस्तु द्विपदे शंचतुष्पदे ॥८॥ शन्नो मित्रः शंव० ॥ ९ ॥ शन्नो व्वातः प० ॥ १० ॥ अहानिशम्भ० ॥ ११ ॥ शन्नो देवी० ॥ १२ ॥ स्योना पृथिवी० ॥ १३ ॥ आपो हिष्ठा० ॥ १४ ॥ यो वः शिवत० ॥ १५ ॥ तस्माऽअर० ॥ १६ ॥ द्यौः शान्ति० ॥ १७ ॥ दृतेदृᳪं हमामित्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृते दृᳪं, हमा ज्योक्ते सन्दृशिजीव्व्यासञ्ज्योक्तेजीव्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्चिषे । अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः । पावको अस्मभ्य ᳪं. शिवो भव ॥ २० ॥ नमस्ते अस्तु व्विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे । नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥ यतो यतः स० ॥ २२ ॥ सुमित्रिया० । दुर्मित्रिया० ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्देव० ॥ २४ ॥ ततो दक्षिणतो ब्रह्मासनादिचरुश्रपणपूर्वकं आघारान्तं कृत्वा वस्वादिदेवतानां प्रत्येकमाज्यचरुतिलसमिद्द्रव्यैरेकैकयाज्याहुत्या जुहुयात् । ततः स्थापितदेवतानामुत्तरपूजनम् । स्विष्टकृद्धोमः आज्येन भूरादिनवाहुतयः । इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिदानम् । स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाऽग्नये स्वाहाऽन्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा ॥ १ ॥ दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाऽद्भ्यः स्वाहा व्वरुणाय स्वाहा नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥ २ ॥ इति मन्त्रद्वयेन पूर्णाहुतिहोमः । संस्रवप्राशनादिप्रणीताविमोकान्तं समाप्य । षड्ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः । पञ्चकलशोदकेन यजमानस्य सपरिवारस्याभिषेकः । मन्त्राः—शन्नो मित्रः शंवरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा । शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥ शंनो व्वातः पवता ᳪं शन्नस्तपतु सूर्य्यः । शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽभिव्वर्षतु ॥ १ ॥ अहर्निशम्भवन्नुनः श ᳪं० रात्रीः प्रतिधीयताम् ॥ २ ॥ शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रा वरुणा रातहव्या ॥ ३ ॥ शन्न इन्द्रा पूषणा व्वाजसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शँय्योः ॥ ४ ॥ शन्नो देवी० ॥ ५ ॥ अथ पञ्च-दानानि—आचर्य्यं सम्पूज्य—कृतस्य पञ्चकशान्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं पयस्विनीगोनिष्क्रय-भूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ १ ॥ कृतस्य० साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदम्महि-षीनिष्क्रयभूतं द्रव्यं य० जे ॥ २ ॥ कृतस्य सिद्ध्यर्थमिमानि सप्तधान्यानि य० जे ॥ ३ ॥ कृत-स्य० सिद्ध्यर्थमिदं तिलसहितं कृष्णवस्त्रं सदक्षिणं यथा० जे ॥ ४ ॥ कृतस्य० सिद्ध्यर्थमिदं घृत-पूरितं कांस्यपात्रं तिलतैलपूरितच्छायापात्रं वा ससुवर्णं सदक्षिणाकं यथा० जे ॥ ५ ॥ भूयसी-दक्षिणादानम् । पुनः स्नानम् । वस्त्रत्यागः । पञ्चामृतेन शिवपूजनम् । अष्टोत्तरशतं मृत्युञ्जयमन्त्र-जपः—देशकालौ मम सकलवंशस्यापमृत्युनिवारणार्थं यथाशक्ति मृत्युञ्जयमन्त्रजपं ब्राह्मणद्वारा करिष्ये । अद्य पूर्वा० पञ्चकशान्तिसम्पूर्णताऽस्तु । विप्राः—अस्तु परिपूर्णता । अनेन पञ्चकशान्ति-कृतेन (अपसव्यम्) गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य पञ्चकजनितदुर्मरणदोषनिवृत्तिरस्तु । अस्तु निवृत्तिः । (सव्यम्] मम गृहे सकलदुरितोपशान्तिरस्तु । अस्तु दुरितोपशान्तिः । स्थापितदेवतानामग्नेश्च विसर्जनम् । यस्य स्मृत्येति कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति लघुदर्पणे पञ्चकशान्तिप्रयोगः ॥

अथैकादशाहविधिः—पाकं शय्यां दक्षिणोत्तरां निधाय । उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेश्य । कर्ता आचम्य । पवित्रधारणम् । प्राणायामः । ॐ सोपकरणशय्यायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ब्राह्मणाय नमः । इति गन्धपुष्पैः त्रिः सम्पूज्य ॐ इमां सोपकरणां शय्यां ते ददानीति द्विजकरे जलदानम् । ददस्व इति ब्राह्मणो वदेत् । वारिणा शय्याभिषेचनम् । ततो ब्राह्मणवरणम् । अस्मिन् शय्यादानादि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्यादिप्रतिग्रहीतारं त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ततः शय्योपरि अमुकगोत्रामुकनाम्नः प्रेतस्य प्रतिमामावाहयामि । अमुकप्रेताय नमः, इति संस्थाप्य पूजयेत् । ततस्त्रिकुशतिलजलान्यादाय । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य [अमुकगोत्राया: मातुः अमुकप्रेतायाः] स्वर्गलोकप्राप्तिकामः इमां सोपकरणां शय्यां विष्णुदैवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । स्वस्ति इति प्रतिवचनम् । दक्षिणादानम् । अद्य कृतैतत्सोपकरणशय्यादानप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यममुकगोत्राय० दे । ॐ स्वस्ति इति विप्रः । ततः शय्यां स्पृशेत् । इति शय्यादानम् ॥

अथ काञ्चनपुरुषदानम्—आच० फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषाय नमः ॥ ३ ॥ ब्राह्मणाय नमः । इति गन्धपुष्पैः त्रिः सम्पूज्य । इमं फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषं ते ददानि । ददस्वेति विप्रः । द्रव्यसेचनम् । त्रीणि कुशादीन्यादाय । अद्याशौचान्त० कामः इमं फलवस्त्रसमन्वितं काञ्चनपुरुषं विष्णुदैवतममुकगोत्राय० दे । स्वस्ति । अद्य कृतैतत्फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषदानप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यनिष्क्र० दे । स्वस्तीत्युक्त्वा काञ्चनपुरुषं स्पृशेत् इति काञ्चनपुरुषदानम् । अथ द्विजदम्पतीपूजनम् । ततः आचम्य० प्राणा० । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगो० कामो द्विजदम्पती अहं पूजयिष्ये । एषोऽर्घः द्विजदम्पतीभ्यां नमः । इदमनुलेपनं द्विजदम्पतो० । पुष्पाणि धूपदीपनैवेद्यताम्बूलसिन्दूरभूषणवासांसि द्विजदम्पतीभ्यां नमः इति दद्यात् । एतानि गन्धादीनि द्विज० मः । तौ नमस्कुर्यात् । अथ कपिलागोदानम् । अस्यै सोपकरणायै सवत्साकपिलागवे नमः३।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणाय नमः ३, इति त्रिः सम्पूज्य इमां सोपकरणां सवत्सां कपिलां गां ते ददानि। इति त्रिः सम्पूज्य द्विजकरे जलदानम् । ददस्वेति विप्रः । कुशादीन्यादाय अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुक० स्य स्वर्गप्राप्तिकामः इमां सवत्सां कपिलां गां यथोपस्करयुतां रुद्रदैवतामममुकगो० दे। स्वस्तीति विप्रः । अद्य कृतैतत्कपिलागोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं य० दे। अथवा इदं कपिलागोनिष्क्रयभूतं द्रव्यममु० दे । कपिले सर्ववर्णानां पूजनोयासि रोहिणी। तीर्थधेनुमयी यस्मात्प्रेतपापं व्यपोहय ॥

अथ श्राद्धम्—रक्षादीपं निधाय आचम्य प्राणायामः। सर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते०। श्राद्धभूम्यै० ३। प्रोक्षणम् । अपवित्रः०। त्रिकुशतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य प्रेतत्वविमुक्तिकामः अद्यापि यथाकालं षोडशश्राद्धान्यहं करिष्ये। पुनरपि अद्यामुकगोत्र० विमुक्तिहेतुषोडशश्राद्धान्तर्गतमाद्य-श्राद्धमहं करिष्ये। (अधिकमासपाते सप्तदशपदं प्रयोज्यम्) गायत्रीम् ३। देवताभ्य० इति त्रिर्जपेत् । अपसव्यम्। दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः मोटकादीन्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेतः आद्यश्राद्धे इदमासनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । अपहतेति भोजनपात्रे तिलान् त्रिःकीर्य 'आयन्तु०' इति जपः । पुटके दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा। 'शन्नोदेवी०' इति जलम् । 'तिलोऽसि' इति तिलान् गन्धपुष्पे च तूष्णीं क्षिपेत् । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा भोजनपात्रे पवित्रं उत्तराग्रं कृत्वा । उद-कान्तरं दत्त्वा । आच्छाद्य । 'यादिव्या०' इति पठित्वा । मोट० । अद्य० श्राद्धे एष हस्तार्घस्ते म० ताम् । न्युब्जीकरणम् । पित्रे स्थानमसि । (मात्रे स्थान०)। इह लोकं परित्यज्य गतो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऽसि परमां गतिम्० । गन्धादिदानम् । अद्या० श्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीत-वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् । मण्डलकरणम् । भूस्वामिनेऽन्नदानम् । इदमन्नं । परिवेषणम् । अन्नजलघृतफलपक्वान्नशाकादिकानाञ्च परिवेषणम् । ततो मध्वभिघारणम् । मधुव्वाता० ३ इति । मधु, मधु, मधु । पात्रालम्भः । 'पृथिवी ते पात्रम्०' । 'इदंविष्णु०' । 'कृष्ण-कव्य०' । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं हविः, अपहतेत्यन्नोपरि तिलान् प्रक्षिप्य मोट० । अद्यामुक० श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया० । अन्नहीनं० । कुशेषूपविश्य । (गायत्रीम् ३, मधुव्वाता ३, मधु ३) कृष्णुष्वपाजः० ५ इति भूमौ तिलान् विकीर्य्य । उदीरता० १३, सहस्रशीर्षा० १६, आशुः शिशान० १७, नमस्तुभ्यं वि० विकिरेऽन्नदानम् । अनग्निदग्धा० । पवित्रत्यागः—हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य सव्यम् । आचम्य पवित्रधारणम् । हरिस्मरणम् ३ । अपसव्यम् । वेदीनिर्माणम् । 'अपहता' इति रेखाकरणम् । 'ये रूपाणि०' इत्यङ्गारभ्रामणम् । कुशास्तरणम् । सव्यम् । देवताभ्यः० ३ । अपसव्यम् । पुटके जलतिलगन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य अद्या-मुक० श्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते मया० ताम् । पिण्डदानम् । अद्यामुक० श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया० ताम् । दर्भमूले करम्प्रोक्ष्य सव्यं कृत्वाऽऽचम्य हरिं स्मृत्वा अपसव्यम् । वामा-वर्तेन श्वासं नियम्य । 'अत्र पित०' दक्षिणाभिमुखं त्यजेत् । 'अमीमदन्त०' ॥ प्रत्यवनेजनम् । अद्यामुकश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया० ताम् । नीवीं विस्रस्य सव्येनाचम्य हरिं स्मृत्वा अपसव्यम् । सूत्रदानम् । एतत्ते पितर्वासः । अद्यामुक० श्राद्धपिण्डे एतद्वासस्ते मया० ताम् । पिण्डे गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलपूगीफलानि दद्यात् । पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् । भोजन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पात्रे—शिवा आपः सन्तु, इति जलम् । 'सौमनस्यमस्तु' इति पुष्पम् ॥ अक्षतश्चारिष्टमस्तु, इति तण्डुलान् प्रक्षिपेत् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य आद्यश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् । सव्यम् । प्राङ्मुखः "अघोरः पिताऽस्तु । (अघोरा माताऽऽस्तु") इति पिण्डोपरिपूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । पूर्वाभिमुखः–गोत्रन्नो वर्धताम्० । अपसव्यम् । पिण्डोपरि सपवित्रकुशानास्तीर्य 'ऊर्ज्जं वहन्ती०' इति पिण्डे दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् । कुशानुल्मुकञ्च वह्नौ क्षिपेत् । अर्घपात्रोत्तानीकरणम् । दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतदाद्यश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । ब्राह्मणभोजनम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य परलोके अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थमेकं ब्राह्मणं भोजयिष्ये दक्षिणाञ्च दास्ये । अभिरम्यताम् । इति विसर्जनम् । आमावाजस्य० सव्यम् । देवताभ्यः ३ । अपसव्यम् । रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्यम् । आचम्य । "यस्य स्मृत्या०" विष्णवे० ३ । श्राद्धीयवस्तूनि जले क्षिपेत् । महापात्रब्राह्मणं भोजयित्वा शय्यायामुपवेश्य वस्त्रादिकं धारयित्वा सुगन्धिद्रव्यं ताम्बूलविशेषं दक्षिणां च दत्त्वा प्रणम्य विसर्जयेत् । घटस्फोटनं कार्यं महापात्रेण । स्नानम् । शुष्कवस्त्रपरिधानम्, गृहं व्रजेत् ॥ इति लघुदर्पणे एकादशाहश्राद्धविधिः ॥

अथ मासिकश्राद्धम्—द्वादशप्रतिमास्यानि आद्यं षाण्मासिकं तथा । सपिण्डीकरणं चैव हीत्येतच्छ्राद्धषोडशम् ॥ अर्घ्येऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानावनेजने । तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्या-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्स्वधावाचनमेव च ॥ पाकं निर्माय चतुर्दशचटाः प्राक्संस्थाः स्थापनीयाः । प्राङ्मुखमुपविश्य आचम्य पवित्रधारणम् । प्राणायामः । रक्षादीपं निधाय गौरसर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते०, प्राच्यै०, अवाच्यै०, प्रतीच्यै०, उदीच्यै० । यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै० ३ प्रोक्षणम्, अपवित्रः प० । त्रिकुशतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुषोडशश्राद्धान्तर्गत-प्रथममासिक, त्रैपाक्षिक, द्वितीयमासिक, तृतीयमासिक, चतुर्थमासिक, पञ्चममासिक, ऊनषाण्मासिक, षाण्मासिक, सप्तममासिक, अष्टममासिक, नवममासिक, दशममासिक, एकादशमासिक, ऊनवार्षिक, द्वादशमासिकश्राद्धानि एकतन्त्रेणाहं करिष्ये । अधिकमासपाते षोडशपदस्थाने सप्तदश० । द्वादशमासिक, ऊनवार्षिक, त्रयोदशमासिकश्राद्धानि अहं करिष्ये । गायत्रीं० ३ ॥ देवताभ्यः० ३ ॥ अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः मोटकतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! प्रथम० द्वादशमासिकश्राद्धेषु इमानि आसनानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥ १५ ॥ "अपहता"० इति भोजनपात्रेषु तिलान् विकीर्य्य । आयन्तुनः० इति जपः । अर्घकरणम् ॥ १५ ॥ पुटकेषु पवित्राणि निधाय । "शन्नोदेवी०" इति जलम् ॥ १५ ॥ "तिलोसि०" इति तिलान् ॥ १५ ॥ गन्धपुष्पे च तूष्णीं क्षिपेत् ॥ १५ ॥ पुटकम् ॥ १५ ॥ वामहस्ते गृहीत्वा । भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वा । उदकान्तरं दत्वा । आच्छाद्य । "या दिव्या०" इति पठित्वा । अद्यामुकप्रेत ! प्रथममासिकश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया० ताम्० ॥ १५ ॥ एवं न्युब्जीकरणम् । पित्रे स्थानमसि० ॥ १५ ॥ गन्धादिदानम् ॥ १५ ॥ अद्यामुक० प्रेत ! प्रथ० श्राद्धेषु एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्ताम् ॥ १५ ॥ मण्डलकरणम् ॥ १५ ॥ भूस्वामिनेऽन्नदानम् । इदमन्नमेत० । परिवेषणम् । अन्नजलघृतफलपक्वान्नशाकादिकानाञ्च ॥१५॥ मध्वभिघारणम् ॥ १५ ॥ मधुव्वाता० ३ । मधु मधु मधु । पात्रालम्भः––पृथिवी ते० । इदंविष्णु०, कृष्णकव्य० । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं हविः । "अपहता०" इत्यन्नोपरि तिलान् विकीर्य्य । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकप्रेत ! प्रथममासिकश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते मया० ताम् ॥ १५ ॥ ततो गायत्रीम् ३ । मधुव्वाता०३ । अन्नहीनम्० । कुशेषूपविश्य । पुनर्गायत्रीम् ३ । मधुव्वाता० ३ । कृणुष्वपाजः० ५ । भूमौ तिलान् विकीर्य्य । उदीरता० ॥ १३ ॥ सहस्र शीर्षा० ॥ १६ ॥ आशुः शिशानः० ॥ १७ ॥ नमस्तुभ्यम्० । विकिरेऽन्नदानम्––"अनग्निदग्धा०" । पवित्रत्यागः । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्यम् । आचम्य, पवित्रधारणम् । हरिस्मरणम् । अपसव्यम् ॥ १५ ॥ अपहता । इति रेखाकरणम् ॥१५॥ "ये रूपाणि" इत्यङ्गारभ्रामणम् ॥ १५ ॥ सव्यम् । कुशास्तरणम् ॥ १५ ॥ सव्यम् । देवताभ्यः ३ ॥ अपसव्यम् ॥ १५ पुटकेषु जलतिलगन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य । अद्यामुक० प्रेत ! प्रथममासिकश्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते मया० ताम् ॥ १५ ॥ पिण्डदानम् । अद्यामुक० प्रेत ! प्रथममासिकश्राद्धे एष पिण्डस्ते मया० ताम् ॥ १५ ॥ दर्भमूले करं प्रोक्ष्य सव्यम् । आचम्य । हरये नमः । अपसव्यम् । वामावर्तेन श्वासन्नियम्य, अत्र पितर्मा० । दक्षिणाभिमुखः त्यजेत् । 'अमीमदन्त' प्रत्यवनेजनम् । अद्यामुक० प्रेत ! प्रथममासिकश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया० ताम् ॥ १४ ॥ नीवीं विस्रंस्य । सव्येनाचम्य । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । सूत्रदानम् । एतत्ते पितर्वासः । अद्यामुक० प्रेत ! प्रथममासिक–त्रैपाक्षिक–द्वितीय० श्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मया दीयन्ते तत्रोपतिष्ठन्ताम् ॥ १५ ॥ पिण्डेषु गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलपूगीफलानि दद्यात् ॥ ॥ १५ ॥ पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् ॥ १५ ॥ भोजनपात्रेषु—शिवा आपः सन्तु इति जलम् ॥ ५१ ॥ अक्षतं चारिष्टमस्तु इति तण्डुलान् क्षिपेत् ॥ १५ ॥ अपसव्यम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रथममासिकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ॥ १५ ॥ सव्यम् । 'अघोरः पिताऽस्तु' इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ १५ ॥ पूर्वाभिमुखः—गोत्रन्नो वर्द्धताम्० । पिण्डोपरि सपवित्रकुशानास्तीर्य्य । 'ऊर्ज्जं वहन्ती०' इति पिण्डोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ १५ ॥ पिण्डाधारकुशानुल्मुकञ्च वह्नौ क्षिपेत् ॥ १५ ॥ अर्घपात्रोत्तानीकरणम् ॥ १५ ॥ दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्प्रथममासिकत्रैपाक्षिकद्वितो० श्राद्धानां प्रतिष्ठार्थमिमानि यत्किञ्चित्रजतनिष्क्रयीभूतानि द्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ॥ १५ ॥ अभिरम्यताम्० इति विसर्जनम् । आमावाजस्य० । सव्यम् । देवताभ्यः० ३ । अपसव्यम् । रक्षादीपन्निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्यम् ।आचम्य । प्रमादा० । विष्णवे० ३ । श्राद्धीयवस्तूनि जले क्षिपेत् । इति लघुदर्पणे मासिकश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ वृषोत्सर्गविधिः ।

आदौ शय्यादानं फलवस्त्रसमन्वितकाञ्चनपुरुषदानं द्विजदम्पतिपूजनं च कृत्वा उत्सर्गं कुर्यात् । कर्ता शुभासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य मोक्षकामः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहितवृषोत्सर्गमहं करिष्ये । (अद्यामुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणां एकोत्तरशतकुलोद्धरणार्थं सम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तपूर्वजानां मोक्षपदफलप्राप्त्यर्थं वृषोत्सर्गं करिष्ये ।) गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यब्रह्मऋत्विग्वरणानि कुर्यात् । ब्रह्मवरणम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य कर्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतहोमकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं एभिर्वरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । पुनः अद्या० होमकर्म कर्तुं अमु०णं होतृत्वेन त्वामहं वृणे । ततो होता आचम्य अग्निं स्थापयेत् । पञ्चभूसंस्कारान् कृत्वा अग्नेः ईशान्यामेकमेव कलशं संस्थाप्य तत्र वरुणं सम्पूज्य । तत्रैव सौवर्णीं रुद्रप्रतिमां संस्थाप्य षोडशोपचारैः सम्पूज्य ततो ब्रह्मोपवेशनादि-पर्युक्षणान्तं कृत्वा । तत्र विशेषः । सान्तरालमृत्पात्रस्थमुदकक्षीरस्थापनम् । आज्यस्थाली ताम्रमयी । पायसचर्वर्थं मृन्मयी । पौष्णं सिद्धमेव पिष्टमयं चरुम् । आज्यमुत्तरतः पायसचरुश्रपणं युगपत् । ब्रह्मणान्वारब्धेन संस्रवं विनैवाज्येन जुहुयात् । इह रतिः स्वाहा १ । इह रमध्वं स्वाहा २ । इह धृतिः स्वाहा ३ । इह स्वधृतिः स्वाहा ४ । उपसृजं धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्स्वाहा ५ । रायस्पोषमस्मासु दीधरत्स्वाहा ६ । इदमग्नये न ममेति सर्वत्र त्यागः । ततः संस्रव० । प्रजापतये स्वाहा १ । इन्द्राय स्वाहा २ । अग्नये स्वाहा ३ । सोमाय स्वाहा ४ । अनन्वारब्धः । संस्रवं विनैव पायसेन जुहुयात् । अग्नये स्वाहा १ । रुद्राय स्वाहा २। शर्वाय स्वाहा ३। पशुपतये स्वाहा ४। उग्राय स्वाहा ५ अशनये स्वाहा ६। भवाय स्वाहा ७। महादेवाय स्वाहा ८। ईशानाय स्वाहा ९। यथादैवतं त्यागाः । पिष्टकेन होमः । पूषागाऽअन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्व्वतः । पूषावाजान्सनोतु नः ॥ स्वाहा ॥ इदं पूष्णे० । पायस-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिष्टकाभ्यां होमः । अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये० । आज्येन नवाहुतिहोमः । संस्रवप्राशनम् । आचमनम् ।। पवित्राभ्यां मार्जनम् । सुमित्रियान० प्रणीतोदकमैशान्यां निनयेत् । दुर्मित्रिया० । पूर्णाहुतिहोमः । मूर्द्धानं दि० । बर्हिर्होमः । देवा गातु० स्वाहा । पूर्णपात्रदानम् । अद्य कर्तव्यवृषोत्सर्गाङ्गभूतकृतैतद्धोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ स्वस्ति । ततो वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यान्युपनीय । अद्य कृतवृषोत्सर्गाङ्गभूतकृतैतद्धोमप्रतिष्ठार्थं एतानि वस्त्रयुग्मसुवर्णकांस्यानि बृहस्पत्यग्निचन्द्रदैवतानि अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय होत्रे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः कलशं स्पृशन् रुद्राध्यायं जपित्वा चर्मकारमाहूय वृषमङ्कयेति ब्रूयात् । ततोऽग्नेरुत्तरतः वृषस्याग्रिमपाददक्षिणपार्श्वे त्रिशूलेन पश्चिमपादवामपार्श्वे [1] चक्रेण वृषभ मङ्कयेत् । ततो वत्सतरीचतुष्टयसहितं वृषभं कुशजलेन स्नापयेत् । तत्र मन्त्राः । "हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाया सुजातः कश्यपोयास्विन्द्रः । याऽअग्निर्गर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽ-आपः संस्योनाभवन्तु"।।१।। यासांराजावरुणोयातिमध्ये सत्यानृते यादभूषणशिरो अवपश्यं जनानाम् । या अग्निगर्भं दधिरे सुवर्णास्तानऽआपः संस्योना भवन्तु।।२।। यासां देवा दिविकृण्वन्तिभक्षंया ऽअन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति । या अग्निं० वन्तु ।३। शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवयातन्वोपस्पृशतत्वचं मे । घृतश्चुत शुचया याः

१ अष्टाङ्गुलं भवेच्चक्रं शूलं च द्वादशाङ्गुलम् । तर्जन्यास्तु प्रमाणेन दाहयित्वा ततः क्षिपेत् ।। तप्तलोहेन अङ्कयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पावकास्तानऽआपः संस्योना भवन्तु ॥ ४ ॥ शन्नोदेवी० ॥ ५ ॥ इति पठन् सिञ्चेत् । ततः लोहघण्टिकानूपुरकनकपट्टिकावस्त्रादिभिः पञ्चाप्यलङ्कृत्य । तत्सवितु० । १ । ऋतं च सत्यं० । १ नमस्ते रुद्रमन्यवेत्यध्यायं प्रथमानुवाकं वा ६६ । सहस्रशीर्षा० । १६ । यद्देवादेव हेडनं देवासश्च कृमा वयम् । अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुञ्च त्व ꣳ हसः ॥ १ ॥ यदि दिवा यदिनक्तमेना ꣳ- सि चकृमाऽवयम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्च त्वꣳ- हसः ॥२॥ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एना ꣳ- सिचकृमावयम् । सूर्यो मा तस्मादेनसोविश्वान्मुञ्च त्वꣳ- हसः ॥ ३ ॥ इति जपेत् । ततो वृषभस्य दक्षिणकर्णे जपेत् । पिता वत्सानां पतिरघ्न्यानामथो पिता महतां गर्गराणां वत्सो जरायुः प्रतिधुकपीयूषआमिक्षाघृतं तद्वस्य रेतः । वृषोहि भगवान्धर्मश्चतुष्पादः प्रकीर्तितः । वृणोमि त्वामहं भक्त्या स मां रक्षतु सर्वतः ॥ इति कुशत्रयतिलजलान्यादाय । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य मोक्षकामो रुद्रदैवतं वृषभमेनं युवानं पतिं वो ददानि तेन क्रीडन्तीश्चरथप्रियेण । मानः साप्तजनुषासुभगाणयस्पोषेण समिषामदेमेत्युत्सृज्यैशान्यां दिशि पञ्चापि चालयेत्पूजयेच्च । एषोऽर्घः सोपकरणवत्सतरीचतुष्टयसहिताय वृषभाय नमः । इदमनुलेपनं सोपकर० मः । पुष्पैः पूजयेत् । एतानि धूपदीपताम्बूलनैवेद्यानि सोप० मः । ततो वत्सतरीचतुष्टयमध्यगतं वृषभमभिमन्त्रयेत् । तत्र मन्त्राः—मयोभूरभिमावाहि स्वाहा । मारुतोसि ॥२३४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मरुतां गणः शम्भूर्मयो भूरभिवामहि स्वाहा । वस्यूरसि दुवस्वान् शम्भूर्मयो भूरमावाहि स्वाहा । यास्ते अग्ने सूर्यो रुचो दिवमातन्वन्तिर-श्मिभिः । ताभिर्नो अद्यसर्वाभीरुचे जनायनस्कृधि ॥ २ ॥ यावो देवाः सूर्ये रुचोगोष्वश्वेषुयारुचः । इन्द्राग्नीताभिः सर्वाभिरुचन्नोधत्तबृहस्पते ॥ ३ ॥ रुचन्नोधेहि ब्राह्मणेषु रुच ँ राजसु नस्कृधि । रुचं विश्वेषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचारुचम् ॥ ४ ॥ तत्त्वायामि० ॥ ५ ॥ स्वर्णधर्मः स्वाहा । स्वर्णवर्णः स्वाहा । स्वर्णशुक्रः स्वाहा । स्वर्णज्योतिः स्वाहा । स्वर्णसूर्यः स्वाहा ॥ ६ ॥ मयो भूरभिमा० ॥ १ ॥ यास्ते अग्ने० । यावो देवा० । ३ । रुचन्नो० । ३ । स्वर्णधर्मः स्वा० । ५ । ततोऽपसव्यं दक्षिणा-भिमुखः पातितवामजानुः यवतिलजलमोटकवृषपुच्छं चादाय ताम्रपात्रादिना मन्त्रस्थं फलमुद्दिश्या-ञ्जलित्रयेण तर्पयेदनेन मन्त्रेण । स्वधा पितृभ्यो मातृभ्यो बन्धुभ्यश्चापि तृप्तये । मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये चान्ये पितृपक्षजाः ॥ १ ॥ गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः । ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः । वृषोत्सर्गेण ते सर्वे लभन्तां प्रीतिमुत्तमामिति । सव्यम् । ततः कर्मकारमाहू-याभिप्रेतं वेतनं तस्मै दद्यात् । यथेष्टं यूथे पर्यटेति प्रेरयेत् । मया उत्सृष्टा इति ब्राह्मणान् श्रावयेत् । यत्किञ्चिद्द्विजने मयोत्सृष्टं तदन्यो न नयेत् । न वाह्यं न चैतत्क्षीरं पातव्यं केनचित् क्वचित् । ततो रुद्राग्रे बहुसर्पिष्कं पायसं एकादश ब्राह्मणान् भोजयेत् । स्थापितदेवताग्निश्च विसृज्य कर्मेश्व-रार्पणं कुर्यात् । पतिपुत्रवत्याः सुवासिन्यास्तु न वृषोत्सर्गः । तत्स्थाने एका पयस्विनी गौर्देया ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्र सङ्कल्पः अद्यामुकगोत्रायाः मातुः अमुकप्रेतायाः एकादशे वृषोत्सर्गस्थाने पयस्विनीगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये इति वृषोत्सर्गविधिः ॥

अथ वैतरणीदानम्। नैर्ऋत्यकोणे भूमौ हस्तमात्रपरिमितगर्तं सजलं कृत्वा। तस्मिन्निक्षुमयीं नावं पट्टसूत्रवेष्टितां पृथिव्या प्राक्पश्चिमायते सजले गर्ते संस्थाप्य। तस्या उपरि द्रोणपरिमितकार्पासं धृत्वा। कार्पासोपरि ताम्रपात्रं वस्त्रेणाच्छाद्य। तत्र हैमं यमं लोहदण्डयुक्तं धृत्वा। तस्योपरि सर्वोपकरणालङ्कारादियुक्तां गां कृत्वा। आचम्य। ॐ सोपकरणायै वैतरण्यै गवे नमः ३। ॐ ब्राह्मणाय नमः ३। इति त्रिः सम्पूज्य। ॐ इमां वैतरणीं गां ते ददानीति द्विजकरे जलदानम्। ॐ ददस्वेति प्रतिवचनम्।

अथ यमपूजनम्। यममूर्त्तेः अग्न्युत्तारणप्राणप्रतिष्ठां कृत्वा। ॐ यमाय नमः इति मन्त्रेण पूजयेत्। अथ नौकापूजनम्। इक्षुमय्यै नौकायै नमः इति सम्पूज्य। गोपूजनं पूर्ववत्। जलतिलकुशाक्षतान् सुवर्णं आज्यपात्रं च गृहीत्वा पुच्छं घृताक्तं कृत्वा। ॐ अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य यमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युत्तारणार्थममुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजिताय इमां कृष्णां गां सवत्सां यमप्रतिमायुक्तां कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां सप्तधान्यसंयुतां रक्तमाल्याद्यलङ्कृतां स्वर्णशृङ्गाद्युपस्करोपेतां कार्पासद्रोणशिखरासीनां इक्षुदण्डमयनौकायां सजलगर्ते स्थापितायामुपरिस्थितां रुद्रदैवत्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति तिलजलयुतं गोपुच्छं द्विजहस्ते दद्यात्। मन्त्रस्तु—यमद्वारपथे घोरे घोरा वैतरणी नदी। तां तर्तुञ्चैव वाञ्छामि कृष्णां वैतरणीं तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गाम् ।। ॐ स्वस्ति इत्युक्त्वा प्रतिगृह्णीयात् । ततः दानप्रतिष्ठां दद्यात् । अथ पुत्रः गर्तदक्षिणे स्थित्वा ब्राह्मणं नावमारोह्य दक्षिणाशां आकर्षेत् । गर्तोल्लङ्घनावधौ । पुच्छं संगृह्य धेनोस्तु नावमाश्रित्य पादतः । पुरस्कृत्य ततो विप्र इमं मन्त्रमुदीरयेत् ।। विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ भूदेव गतिपावन । ततुं वैतरणीमस्य कृष्णां गां प्रददाम्यहम् ।। ततः पुच्छं स्वकरे धृत्वाऽनुव्रजेत्सप्तपदानि । धेनुप्रर्थनामन्त्रस्तु—धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महापथे । उत्तितीर्षुरयं देवि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते ।। इति प्रणमेत् ।।

अथ महिषीदानम् । स्वयं प्राङ्मुखः महिषीं प्राङ्मुखीमवस्थाप्य महिष्यै नमः ३। ब्राह्मणाय नमः ३ । इति त्रिः सम्पूज्य । इमां महिषीं ते ददानीति द्विजकरे जलदानम् । ददस्वेति विप्रः । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्निअमुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य तृषाजन्यश्रमपीड़ानिवृत्तिपूर्वकसुखमहाराज्यादिकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थं अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय इमां महिषीं सालङ्कारां रक्तमाल्यवस्त्रावृतां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रदोहां हैमतिलकां सप्तधान्ययुतां घण्टाभरणां यमदैवत्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति सकुशतिलजलं तद्धस्ते दद्यात् । विप्रो देवस्य त्वेति पठन् पृष्ठदेशं स्पृष्ट्वा स्वस्तीति प्रतिगृह्य कामस्तुतिं पठेत् । दाता तु इन्द्रादिलोकपालानां या राज्यमहिषी शुभा । महिषीदानमहात्म्यात्साऽस्तु मे सर्वकामदा ।।१।। धर्मराजस्य सहाय्ये यस्याः पुत्रः प्रतिष्ठितः । महिषासुरस्य जननी या साऽस्तु वरदा मम ।। ततः दानप्रतिष्ठां दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य नमेत् ।।

अथ शिबिकादानम् । शिबिकायै नमः ३ । ब्राह्मणाय नमः ३ । इति त्रिः सम्पूज्य इमां शिबिकां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ते ददानीति द्विजकरे जलदानम् । ददस्वेति विप्रः । अभिषेचनम् । अद्याशौचान्तद्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य देवलोके विपुलभोगानन्तरमन्ते विष्णुसायुज्यावाप्तिकामः इमां शिबिकां सारदारुमयीं दृढ़ां उक्तोपस्करां अङ्गिरोदैवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति सकुशतिलजलं क्षिपेत् । द्विजप्रार्थनामन्त्रस्तु--शिबिका ते मया दत्ता यथाशक्त्या विभूषिता । द्विज त्वं प्रतिगृह्णीष्व वाञ्छितं तेन मे भवेत् ॥ ततः कृतैतच्छिबिकादानसाद्गुण्यार्थं दानप्रतिष्ठां दद्यात् । इति एकादशाहविहितदानविधिः समाप्तः ॥

अथ सपिण्डीकरणश्राद्धविधिः—मातुः सपिण्डीकरणं कथं कार्यं भवेत्सुतैः । पितामह्यादिभिः सार्धं सपिण्डीकरणं स्मृतम् ॥ अपुत्रायां मृतायान्तु पतिः कुर्यात्सपिण्डनम् । श्वश्र्वादिभिः सहैवास्याः सपिण्डीकरणं भवेत् । पुत्राभावे पतिश्राद्धं पत्नी कुर्यात्समन्त्रकम् । (अनुपनीतोऽपि कुर्वीत मन्त्रव (कर्म) दौर्ध्वदेहिकम् ।) पितृव्यसपिण्डनं पितामहादिभिः समं कार्यम् । भ्रातृसपिण्डनं पित्रादिना कार्यम् । सपिण्डीकरणश्राद्धार्थे चरुपाकद्वयं कार्यम् । प्रेतार्थमेकः । देवपितॄणामर्थे द्वितीयः । आचम्य । पवित्रधारणम् । प्राणायामः । रक्षादीपं निधाय । सर्षपविकिरणम् । श्राद्धभूम्यै नमः, यवपुष्पैः त्रिः सम्पूज्य प्रोक्षणम् । अपवित्रः प० । त्रिकुशतिलजलान्यादाय—अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तिहेतुषोडशश्राद्धान्तर्गतसपिण्डीकरणश्राद्धमहं करिष्ये । अधिकमासपाते सप्तदश० । गायत्रीं ३। देवताभ्यः० ३। इति जपेत् । उदङ्मुखः। त्रिकुशयवजलान्यादाय— अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तक - अमुकगो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्राणां पितामहप्रपितामहवृद्धप्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः। विश्वान्देवानहमावाहयिष्ये। विश्वेदेवासऽआगत शृणुतामऽइमं हवम्। इदम्बर्हिर्निषीदत ॥ १॥ यवोसि यवयास्मद्द्वेषोयवया रातिः। इति भोजनपात्रे यवान्विकीर्य्य। "विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवम्मेयेऽअन्तरिक्षे यऽउपद्ययविष्ठ। येऽअग्निजिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्-द्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्॥" आगच्छन्तु महाभागाः विश्वेदेवा महाबलाः। ये यत्र विहिताः श्राद्धे सोवधाना भवन्तु ते॥ अर्घकरणम्। पुटके पूर्वाग्रं पवित्रं निधाय। शन्नोदेवीति जलम्। यवोसीति यवान्। गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्। पुटकं वामहस्ते कृत्वा। भोजनपात्रे पूर्वाग्रं पवित्रं धृत्वा। उद्-कान्तरं दत्त्वा। आच्छाद्य। या दिव्या आ०। इति पठित्वा क्षिपेत्। अद्यामुक० देवा एष वो हस्तार्घो नमः। आसनदक्षिणपार्श्वे उत्तानं निधाय। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि। गन्धादिदा-नम्। अद्यामुक० देवा एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः। मण्डलकर-णम्। अपसव्यम्। भूस्वामिनेऽन्नदानम्। इदमन्नमेत०। सव्यं पितृपाकाद्विश्वेदेवभोजनपात्रे परि-वेषणम्। मध्वभिघारणं० मधुव्वाता० ३। मधु ३। पात्रालम्भः। पृथिवीते०। इदंविष्णु०। कृष्ण-कव्य०। इदमन्नम्। इमा आपः। इदमाज्यम्। इदं हविः। यवोऽसीत्यन्नोपरि यवान्विकीर्य अन्नं जलं घृतं वा अद्या० देवा एतद्वोऽन्नं सोपकरणं नमः। एवं देवकार्य्यं निर्वर्त्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या-चम्य। प्रेतश्राद्धदेशमागत्योपविश्य अपसव्यम्। दक्षिणाभिमुखः। पातितवामजानुः। मोटकतिल-जलान्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत! सपिण्डीकरणश्राद्धे इदमासनं ते मया० ताम्॥ १॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् ! इदमासनं ते स्वधा ॥ २ ॥ अद्या० प्रपितामह अमु० धा० ॥ ३ ॥ अद्या० वृद्धप्रपितामह अमु० धा० ॥ ४ ॥ पितॄनहमावाहयिष्ये । उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशत ऽआवह पितॄन्हविषे ऽअत्तवे ॥ अपहता० इति भोजनपात्रेषु तिलान्विकीर्य आयन्तु नः–इति जपः । सपवित्रं पात्रचतुष्टये अर्घकरणम् । ॐ शन्नोदेवी० इति जलम् । तिलोऽसि सोम–इति तिलान् । गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ ४ ॥ प्रेतार्घपात्रं वामहस्ते गृहीत्वा भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किञ्चिदुदकान्तरं दत्त्वा आच्छाद्य । या दिव्या० इति पठित्वा । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते मया० ताम् ॥ १ ॥ ततः पितामहार्घपात्रग्रहणादि पूर्ववत्समानम् । अद्यामुकगोत्र० पितामह अमुकशर्मन् ! एष ते हस्तार्घः स्वधा ॥२॥ एवं प्रपितामह ३ वृद्धप्रपितामहयोः ॥ ४ ॥ अवशिष्टजलयुतार्घपात्राणि तत्तदग्रे स्थापयेत् । सव्येनाचम्य । अपसव्यम् । पुटकत्रयं पितामहाद्यग्रे धृत्वा । प्रेतार्घपात्रं गृहीत्वा । ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये । तेषाँल्लोकः स्वधानमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥ ये समानाः समनसो जीवाजीवेषु मामकाः । तेषां श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शतँ समाः ॥ इति द्वाभ्यां मन्त्रद्वयावृत्त्या प्रतिपुटके धृत्वा ये समाना इति मन्त्रद्वयेन प्रेतार्घपात्रस्थजलतृतीयभागं पितामहाद्यर्घपात्रे मेलयेत् । प्रत्येकमेलने मन्त्रद्वयं पठेत् । प्रेतार्घपात्रं पितामहासनवामपार्श्वे पितृभ्यः स्थानमसि [पित्रे स्थानमसीति] न्युब्जीकुर्यात् । गन्धादिदानम् ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धे एतानि गन्ध० ष्ठताम् ॥ अद्यामुकगोत्र० पितामहामुकशर्मन् एतानि गन्ध० स्वधा ॥ २ ॥ एवं प्रपितामह ३ वृद्धप्रपितामहयोः ॥ ४ ॥ मण्डलकरणम् । सव्यम् । प्राङ्मुखः । अग्नौकरणम् । पुटकान्तरे अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ॥१॥ सोमाय पितृमते स्वाहा ॥ २ ॥ अपसव्यम् । किञ्चित् किञ्चित् परिवेषणम् । पिण्डार्थं धारणम् । परिवेषणम् ॥ ४ ॥ सघृतजलव्यञ्जनानि मध्वभिघारणम् ॥ ४ ॥ मधुव्वातेति मधु ३ । प्रेतान्नपात्रालम्भः । पृथिवीते पात्रम्० । इदं विष्णुः० । कृष्णकव्य० । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं कविः । अपहतेति अन्नोपरि तिलान्विकीर्य । अद्यामुकगोत्र पितः० श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणन्ते मया० ताम् ॥ १ ॥ पितामहपात्रालम्भः । पृथिवीते० । इदंविष्णु० । कृष्णकव्य० । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं कविः । अपहतेति तिलान्० । अद्यामुकगोत्र० पितामह अमुकशर्मन् एतत्तेऽन्नं सोपकरणं स्वधा ॥ १ ॥ एवं प्रपितामह २ वृद्धप्रपितामहयोरन्नं दद्यात् । अन्नहीनं० इति पठित्वा कुशेषूपविश्य । पुनः गायत्रीं० ३ । मधुव्वाता ३ । मधु ३ । कृणुष्वपाजः० ॥ ५ ॥ भूमौ तिलान् विकीर्य्यं । उदीरतामवर० । १३ । सहस्रशीर्षा० ॥ १६ ॥ आशुः शिशान० १७ ॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष० । (पितामहपात्रसन्निधौ) विकिरेऽन्नदानम् । अनग्निदग्धा० । पवित्रत्यागः । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्येनाचम्य । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । वेदिद्वयं निर्माय २ । अपहतेति मन्त्रेण सर्षपविकिरणम् । २ । ये रूपाणीत्यङ्गारं भ्रामयित्वा कुशान् स्तृणुयात् । २ । सव्यम् । देवताभ्यः० ३ । अपसव्यम् । पुटकेषु जलतिलगन्धपुष्पाणि कृत्वा ॥ ४ ॥ मोदकादीन्यादाय–अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते म० । १ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः अद्यामुकगोत्रस्य० करणश्राद्धे पिण्डस्थाने अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् ! अत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा ॥ २ ॥ एवं द्वयोरपि ॥ ४ ॥ ततः पिण्डदानम् । प्रेतपिण्डमादाय । मोटकादोन्यादाय । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धे एष पिण्डस्ते० ताम् ॥ १ ॥ अद्यामुकगोत्र० पितामह अमुकशर्मन् ! एष ते पिण्डः स्वधा ॥ २ ॥ एवं प्रपितामह३वृद्धप्रपितामहयोः पिण्डदानम् ॥ ४॥ लेपभागभुजस्तृप्यन्तु इति करं प्रोक्ष्य । सव्यं कृत्वाऽऽचम्य । श्वासं नियम्य । अत्र पितर्मा० 'दक्षिणाभिमुखं' त्यजेत् ॥ अमीमदन्त० । ततः पितामहादोनुद्दिश्य वामावर्तेन श्वासन्नियम्य । अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् । दक्षिणाभिमुखं त्यजेत् । **अमीमदन्त पितरो यथा-भागमावृषायिषत्** । प्रत्यवनेजनम् । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया० ताम् ॥ १ ॥ पितामहस्य । अद्यामुकगोत्रस्य० श्राद्धे पिण्डे अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् ! अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा । २ । एवं प्रपितामहवृद्धप्रपितामहयोः । नीवीं विस्रस्य । सव्येनाचम्य हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । सूत्रदानम् । एतत्ते पितर्वासः । पुनरपि । नमोवः पितरो रसाय० एतद्वः पितरो वासः । इति सर्वेभ्यो दद्यात् । अद्यामुकगोत्र पितरमुकप्रेत ! सपिण्डीकरणश्राद्धे पिण्डे एतद्वासस्ते मया० ताम् ॥१॥ अद्यामुक०श्राद्धे पिण्डे अमुकगोत्र पितामह अमुकशर्मन् ! एतत्ते वासः स्वधा ॥ २ ॥ एवं प्रपितामह ३ वृद्धप्रपितामहयोः ४ प्रत्येकं पिण्डेषु गन्धादिदानम् । पिण्डशेषान्नं पिण्डसमीपे विकिरेत् । पिण्डेषु सूत्रादिकमपनीय । सौवर्णं राजतं सूत्रं कुशं वादाय, ये समाना इति द्वाभ्यां प्रेतपिण्डं त्रिधा विभजेत् । प्रतिच्छेदने मन्त्रावृत्तिः । प्रथम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिण्डभागमादाय । ये समाना इति प्रथमं भागं पितामहपिण्डे नियोजयेत् । एवं द्वितीयभागं प्रपितामहपिण्डे नियोजयेत् । एवं तृतीयभागं वृद्धप्रपितामहपिण्डे पूर्वोक्तमन्त्रद्वयेन नियोजयेत् । समं वर्तुलं कृत्वा स्वस्थाने स्थापयेत् । ततः प्रेतपूर्वकपितामहादीनुद्दिश्य पिण्डत्रये गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्य-ताम्बूलपूगीफलानि दद्यात् । सव्येन देवपात्रे—शिवा आपः सन्तु । सौम० । अक्षतं चा० । अपसव्येन प्रेतपात्रयोश्च । शिवा० ४ । सौम० ॥ ४ ॥ अक्षतञ्चा० ॥ ४ ॥ मोटकादीन्यादाय । अद्यामुक-गोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमुपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ अद्यामुक० श्राद्धे अमुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ॥ २ ॥ एवं प्रपितामह ३ वृद्धप्रपितामहयोः ॥ ४ ॥ सव्यम् । अघोराः पितरः सन्तु । इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । प्राङ्मुखः कृताञ्जलिः—गोत्रन्नो वर्धतामिति पठित्वा । अपसव्यम् । सपवित्रकुशं पिण्डोपरि निधाय । ऊर्जं वहन्ती० इति दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । ततो नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् । पिण्डाधारकुशानुल्मुकञ्च वह्नौ क्षिपेत् । सव्येन देवार्घपात्रं सञ्चाल्य । अपसव्येन पितृपात्राण्युत्तानो-कृत्य दक्षिणां दद्यात् । सव्येन कुशयवजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्राणां० श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषान्देवानां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय० जे । अपसव्यम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकप्रेतस्य कृतैतत्सपिण्डीकरणश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथा नाम०जे ॥ १ ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकप्रेतस्य सपिण्डीकरणनिमित्तकश्राद्धे कृतैतत्-सपिण्डीकरण० जे ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्रस्य पितामहस्यामुकशर्मणः श्राद्धप्रति० जे ॥ ३ ॥ एवं प्रपितामहस्य ॥४॥ वृद्धप्रपितामहस्य ॥ ५ ॥ सव्यम् । विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इति विसर्जनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपसव्यम् । अभिरम्यताम् । आमावाजस्य०इति पठेत् । सव्यम् देवताभ्यः । ३ । अपसव्यम् । रक्षादीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्यमाचम्य । प्रमादा० । विष्णवे० ३ ॥

अथ मोक्षधेनुदानम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः परलोके मोक्षप्राप्त्यर्थमिदं धेनुनिष्क्रयं द्रव्यं कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । मोक्षं देहि हृषीकेश मोक्षं देहि जनार्दन । मोक्षधेनुप्रदानेन अस्य मोक्षस्तु वेगतः ॥ ततः वर्तिकाप्रज्वालनम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः अद्यदिनमारभ्याब्दपर्यन्तं परलोके महान्धकारनिवृत्त्यर्थं इमा षष्ट्यधिकशतत्रयघृताक्ततूलवर्तिका अहं प्रज्वालयिष्ये । पिण्डान् जले प्रक्षिप्य स्नायात् । गृहे यथाचारं गणेशपूजनं कर्तव्यम् । देशकालौ० मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सकलारिष्टोपशान्तये क्षेमायुःसिद्ध्यर्थञ्च गणेशपूजनपूर्वकं स्वस्तिवाचनञ्च करिष्ये इति सङ्कल्प्य । गणपतिपूजनादि कुर्यात् । १ । भो ब्राह्मणाः ! करिष्यमाणाशुभफलनिवृत्तिपूर्वकशुभप्राप्तिकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । ३ । पुण्याहं० । इति ब्रा० ब्रू० । इति लघुदर्पणे द्वादशदिनकृत्यविधिः ॥

अथ त्रयोदशाहे शय्यादानादिविधिः—यजमानः अष्टदले तिलप्रस्थं निक्षिप्य । तस्मिन् शय्यामास्तीर्य्य तस्याः समन्तात् ईशानादिकोणचतुष्टये शिरोभागे च पञ्च कुम्भान् क्रमात् घृतकुङ्कुमगोधूमजलपूर्णकुम्भमुच्छीर्षे घृतपूर्णं कलशं सप्तधान्यानि च संस्थाप्य तस्याः सन्निधौ उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेश्य । सव्यम् । स्वयं प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य पवित्रधारणम् । प्राणायामः । अपवित्रः प० इति शय्यां सम्प्रोक्ष्य कुशत्रयजलान्यादाय देशकालौ स्मृत्वा गोत्रः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः अक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्तिकामः शय्यादानमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन ब्राह्मणपूजनं शय्यास्थप्रतिमायां लक्ष्मीनारायणपूजनं च करिष्ये इति सङ्कल्प्य। द्विजं सम्पूज्य वृणुयात्। अस्मिन् शय्यादानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं शय्याप्रतिगृहीतारं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम्। ततः शय्योपरि लक्ष्मीनारायणप्रतिमां सुवर्णमयीं संस्थाप्य। शान्ताकारम्० इति ध्यानम्। इदंविष्णु०। लक्ष्मीनारायणाभ्याम्० लक्ष्मीनारायणौ० इत्यावाह्य मनोजूति०। लक्ष्मीनारायणौ सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवतम् इति प्रतिष्ठाप्य। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य। अनया पूजया लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम्। विप्रेण सह शय्यां प्रदक्षिणीकृत्य। नमः प्रमाण्यै देव्यै इति चतुर्दिक्षु क्रमेण प्रणम्य तिथ्यादि सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः अक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिमां ईशानादिकोणचतुष्टयस्थापनक्रमेण घृतकुङ्कुमगोधूमजलघृतपूर्णकुम्भसमेतां कार्पासतूलीप्रच्छन्नां शुभ्रगण्डोपधानिकां प्रच्छादनपटास्तृतां सप्तधान्ययुतां ताम्बूलायतनादर्शैलालवङ्गकर्पूरयुतां सुगन्धपरिमलभोग्यवस्तुचन्दनागरुदीपिकोपानच्छत्रचामरासनयुतां भोजनभाजनजलपात्रश्वेतवर्णवितानां केशप्रसाधन्यञ्जनशलाकापुष्पमालादियुतां लक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितां युक्तोपस्कराम् उत्तानाङ्गिरोदैवतां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजिताय सालङ्कृताय सपत्नीकाय तुभ्यमहं सम्प्रददे न ममेति शय्योपवेशितविप्रहस्ते साक्षतकुशोदकं क्षिपेत्। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया। शय्या पितु (मातुश्चेत् शय्या अस्याप्यशून्याऽस्तु तथा जन्मनि जन्मनि) रशून्याऽस्तु तथा जन्मनि जन्म॥इति श्लोकं पठेत्। ततो दक्षिणां दद्यात्। अद्य कृतै-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्शय्यादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे इति पात्रहस्ते दद्यात् । प्रतिगृहीता स्वस्तीत्युक्त्वा कोऽदादिति प्रतिगृह्णीयात् । अथवा इदं शय्यादाननिष्क्रयभूतं मनसोद्दिष्टं द्रव्यं यथा० जे० । इति लघुदर्पणे शय्यादानविधिः ॥

अथ आमान्नसङ्कल्पः । देशकालौ० गोत्रः शर्मा अपसव्यम् । अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः परलोके अद्यारभ्य वर्षान्तं अक्षय्यतृप्तिहेतवे इदमामान्नं यथोपस्करसहितं सदक्षिणाकममुकगोत्राय० दे । स्वस्ति । अन्नमेव यतो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः । अन्नं ब्रह्माखिलत्राणं पितरं त्रातु सर्वदा ॥ सव्यम् ।

अथ गोदानम् । देशकालौ अपसव्यम् । अद्य० अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः सोपस्करगोदानकल्पोक्तफलप्राप्तिद्वारा अक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय० दे । स्वस्ति । सव्यम् । इति गोदानम् ।

अथ पददानम् । आसनोपानहौ छत्रं मुद्रिकाश्च कमण्डलुम् । भोजनं भोजनाधारं वस्त्राण्यष्टविधं पदम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य प्रोक्षणम् । अपवित्रः स० । देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः त्रयोदशपददानकल्पोक्तफलप्राप्तिद्वारा अक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्त्यर्थं यथा स्वशक्त्या त्रयोदशपददानानि करिष्ये । आसनादिदेयद्रव्येभ्यो नमः—इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः मोटकादीन्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः अक्षय्यस्वर्गलोकप्राप्त्यर्थमिमानि दास्यमानानि वा त्रयोदश [षट् त्रीणि] पदानि तत्तत्पदेषु आस्तरणार्थमासनं, ॥२४०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तप्तवालुकासिकण्टकितभूदुर्गसन्तरणकामः उपानहौ, आतपनिवारणार्थं छत्रं, आभरणार्थमङ्गुलीयकं, तृषोपशमनार्थञ्जलपात्रं सजलम्, पथि सुखेन भोजनार्थम्भाजनं, आधारसहितं आसनाद्यष्टपदार्थयुक्तमेकं पदम्। एवं त्रयोदशपदानि। अशक्तश्चेत् षट् त्रीण्येकं वा दद्यात्। परिधानार्थं वस्त्रोपवस्त्रं सदक्षिणं नित्यानुष्ठानफलप्राप्तिपूर्वकं द्विजत्वसिद्ध्यर्थं यज्ञोपवीतं सर्वपापक्षयपूर्वकं शिवविष्ण्वादिसकलदेवपूजाद्यधिकारसिद्धिद्वारा सकलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थममुकमालां साधारां वरवृषभसंयुक्तशकटदानजन्यफलसमफलप्राप्तिकामः काष्ठपादुके सर्वतः रक्षार्थं यष्टिं तत्तद्दैवतं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथासंख्याकपदं यथाकाले विभज्य दातुमहमुत्सृजे। इदमासनाद्युपकरणसमुदायात्मकं पदं विष्णुदैवतं वा दास्यमानं पदनिष्क्रयद्रव्यं वा यथा० जे। अथ प्रार्थना। आसनं सर्वदेवानां पितॄणाञ्च सुखावहम्। तस्मादेतत्प्रदानेन मह्यं शान्तिं प्रयच्छतु ॥ १ ॥ उपानहौ प्रदत्ते मे कण्टकादिनिवारणे। सर्वमार्गेषु सुखदे अतः शान्तिं प्रयच्छतु ॥ २ ॥ इहामुत्रातपत्राणं कुरुते केशव प्रभो। छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तम्ब्राह्मणाय सुलक्षणम् ॥ ३ ॥ हिरण्यगर्भसम्भूतं सुवर्णं चाङ्गुलीयकम्। धर्मपदे प्रयच्छामि प्रीयतां कमलापतिः ॥ ४ ॥ कमण्डलुजलैः पूर्णः स्वर्णगर्भः सुलक्षणः। दापितस्ते महासेन अतः शान्तिं प्रयच्छतु ॥ ५ ॥ यानि पापान्यनेकानि मया कामकृतानि च। जलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ॥ जन्मान्तरसहस्रेषु यत्कृतं दुरितं मया। तस्मादेषां प्रदानेन भाजनाधारसंयुतम् ॥६॥ सितं सूक्ष्मं सुखस्पर्शमीशानादेः प्रियं सदा। देहालङ्करणे यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छतु ॥ ७ ॥ हिरण्यगर्भ० ॥ ८ ॥ ब्रह्मसूत्रं महादिव्यं मया यत्नेन निर्मितम्। ब्राह्मं तन्मेऽस्तु मे देव ब्रह्मसूत्रप्रदानतः ॥ ९ ॥ अष्टोत्तरशतसंख्याकं रुद्राक्ष [तुलसीभि] र्योजिता मया। अर्पिता तव हस्ते च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गृहाण सुरसैन्यक ॥ १० ॥ कण्ठकोच्छिष्टपाषाण-वृश्चिकादिनिवारणे । पादुके सम्प्रदास्यामि विप्र प्रीत्या प्रगृह्यताम् ॥ ११ ॥ यद्गोश्वरणकार्याणि यष्टिः प्रकुरुते सदा । गोसर्पादिनिवृत्तिश्च जायते यष्टिधारणात् ॥ १२ ॥ इति पददानम् ॥

अथ घटदानम् । कुम्भान् पुष्पैः सम्पूज्य । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः परलोके क्षुत्पिपासानिवृत्त्यर्थं इमान् सपक्वान्नत्रयोदशमृन्मयोदकपित्तलकुम्भान् सोपस्करान् दक्षिणासहितान् नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले विभज्य दातुमहमुत्सृजे । ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः—अद्यामुकगोत्रस्यामुकशर्म्मणः परलोके अहरहः अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं यथोपस्करसहितेन यथासंख्यान् ब्राह्मणान् अहं भोजयिष्ये । भोजनान्ते तेभ्यः ताम्बूलं दक्षिणाञ्च दास्ये । सव्यम् । गत्रादिबलिदानं कार्यम् । आचार्यदक्षिणासङ्कल्पः । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः कृतायाः अन्त्यक्रियायाः मन्त्रपाठसाङ्गतासिद्ध्यर्थं मन्त्रपाठकाय ब्राह्मणाय आचार्याय यथाशक्ति दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । भूयसीसङ्कल्पः । प्रमादात्० । विष्णवे० ३ । अथ उष्णीषबन्धनम् । आचम्य । प्राणा० सुमुखश्चेत्यादि पठित्वा देशकालौ० ममैतदुष्णीषबन्धनकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं मम गृहे अशुभनिवृत्त्यर्थं अहरहः शुभफलप्राप्त्यर्थं च गणपतिपूजनं करिष्ये । ब्राह्मणं गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य । गोत्रजैः सह शिरोवेष्टनम् । ततः सर्वमङ्गलार्थावाहितदेवतादर्शनं कृत्वा हट्टात् फलशाकादिकं गृहीत्वा गृहमागच्छेत् । इति लघुदर्पणे त्रयोदशदिनकृत्यविधिः ॥

अथ पिण्डविचारः—मार्जारमूषकस्पर्शे पिण्डे च द्विदलीकृते । पुनः पिण्डः प्रदातव्यस्तेन

॥२४१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाकेन तत्क्षणात् ॥ श्वचाण्डालादिभिः स्पृष्टः पिण्डो यद्युपहन्यते । प्राजापत्यं चरित्वाथ पुनः पिण्डं समाचरेत् ॥ श्वश्रृगालखरैः पिण्डः स्पृष्टो भिन्नः प्रमादतः । तद्दोषपरिहारार्थं प्राजापत्यं प्रकल्पयेत् ॥ पुनः स्नात्वा तदा कर्ता पिण्डं कुर्य्याद्यथाविधि । उपवासदिने श्राद्धप्राप्तौ श्राद्धमन्नेनैव कार्य्यम् ॥ ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टे ह्यन्तरिक्षे मृतेऽपि वा । कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीत अशौचे मरणेऽपि च ॥ अस्पृश्यस्पर्शने चैव खट्वादिमरणेऽपि वा । श्वानक्रव्यादसंस्पर्शे क्रिमिकीटोद्भवेऽपि च ॥ श्राद्धीयाहनि सम्प्राप्ते यस्य भार्या रजस्वला । श्राद्धं तदा न कर्तव्यं कर्तव्यं पञ्चमेऽहनि ॥ देये पितॄणां श्राद्धे तु आशौचं जायते यदा । आशौचे तु व्यतिक्रान्ते तेभ्यः श्राद्धं प्रदीयते ॥ महालये गयाश्राद्धे मातापित्रोः क्षयेऽहनि । कृतोद्वाहोऽपि कुर्वीत पिण्डनिर्वापणं सुतः ॥

अथैकोद्दिष्टश्राद्धविधिः—कर्ता पाकं निर्माय । आचम्य । प्रणानायम्य । देशकालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः एकोद्दिष्टश्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं श्रीमहाविष्णोः षोडशोपचारैः पूजनमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य विष्णुं सम्पूज्य । अनेन श्रीमहाविष्णुपूजनेन श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम् । ततः रक्षादीपं निधाय । प्राङ्मुखः । आचम्य । पवित्रधारणम् । प्राणायामः । श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । स्वपितरं (पितॄन्) मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥ १ ॥ सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ । चक्रवाकाः सरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥ २ ॥ तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥३॥ सर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशः ॥ प्राच्यै नमः । अवाच्यै नमः । प्रतीच्यै नमः । उदीच्यै नमः । यवपुष्पैः—श्राद्धभूम्यै नमः । त्रिः सम्पूज्य प्रोक्षणम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपवित्रः प० । कुशतिलजलान्यादाय । देशकालौ० गोत्रः शर्मा अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः [अतिक्रान्तम्] सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धचातुर्वार्षिकैकोद्दिष्टश्राद्धयुद्धश्राद्धक्षयाहश्राद्धमहं करिष्ये । प्रतिबन्धकाशौचव्यपगमे अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः सांव० ष्ये । गायत्रीम् ० ३ ॥ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिः । अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा । अपहता असुरा रक्षाᳪसि वेदिषदः । इति भोजनपात्रे तिलान् विकीर्य्य । आयन्तु नः० इति पठेत् । पलाशादियज्ञियवृक्षपात्राणि । मृत्स्नाभवं तथा कांस्यं आरकूटादिसंभवम् । त्रपुशीशकलोहानामर्घपात्रं विवर्जयेत् ॥ अर्घकरणम् । पुटके दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा । शन्नोदेवीति जलम् । तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नवद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄन् लोकान् प्रिणीहि नः स्वाहा ॥ इति तिलान् । गन्धपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् । अर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वा । उदकान्तरं दत्वा । आच्छाद्य । या दिव्याऽआपः पयसा सम्बभूवुर्याऽअन्तरिक्षाऽउतपार्थिवीर्य्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानऽआपः शिवाः सᳪ स्योना सुहवा भवन्तु ॥ इति पठित्वा । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते हस्तार्घः स्वधा ॥ न्युब्जीकरणम् । पित्रे स्थानमसि 'पितृणामर्प्पयेद् गन्धं तर्जन्या च सदैव हि ।' गन्धादिदानम् । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते स्वधा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मण्डलकरणम् । भूस्वामिनेऽन्नदानम् । इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः । परिवेषणम् । अन्नं जलं घृतं फलं पक्वान्नं शाकादिकञ्च । मध्वभिधारणम् । मधुव्वाता० ३ मधु ३ । पात्रालम्भः । सव्येन हस्तेन पात्रं पश्चिमभागे स्पृशन् । तदुपरि दक्षिणं हस्तं दत्त्वा । पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानम्ब्राह्मणस्य मुखेऽअमृतेऽअमृतं जुहोमि स्वाहा । इदं विष्णु० । कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम् । अङ्गुष्ठमावेश्य इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम्, इदं हविः । अपहता०इत्यन्नोपरि तिलान्विकीर्य । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतत्तेऽन्नं सोपकरणं स्वधा । अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनञ्च यद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु ॥ गायत्रीम् ३ । कुशेषूपविश्य । मधुव्वाता० । कृणुष्वपाजः० ।५। भूमौ तिलान्विकीर्य । उदीरता० ।१३। सहस्रशीर्षा० ।१६। आशुः शिशान० ।।१७।। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेकचक्षुषे । नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ।। विकिरेऽन्नदानम् । अनग्निदग्धा ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ।। पवित्रत्यागः । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्यम् । आचम्य । पवित्रधारणम् । हरिं स्मृत्वा । गायत्रीम् ।३। मधुव्वाता० ३। मधु ३।। अपसव्यम् । वेदीनिर्माणम् । अपहतेति रेखाकरणम् । ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परापुरोनिपुरो येभरन्त्यग्निष्टांल्लोकान् प्रणुदात्यस्मात् ॥ इत्यङ्गारभ्रामणम् । अङ्गारं दक्षिणे निधाय । कुशास्तरणम् । सव्यम् । देवताभ्यः० ।३। अपसव्यम् । पुटके जलतिलगन्धपुष्पाणि कृत्वा । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधा । पिण्डदानम् । अद्यामुकगोत्र अमुकशर्मन् ! सांव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा । करं प्रोक्ष्य । सव्यम् । आचम्य । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । उत्तराभिमुखं श्वासं नियम्य । अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्व । दक्षिणाभिमुखं त्यजेत् । **अमीमदन्तपिता यथाभागमावृषायिष्ट** । प्रत्यवनेजनम् । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते स्वधा । नीवीं विस्रस्य । सव्येनाऽऽचम्य । अपसव्यम् । सूत्रदानम् । **नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवाय नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्देहि नमस्ते पितर्देष्म** । एतत्ते पितर्वासः । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा । पिण्डे गन्धपुष्पधूपनैवेद्यताम्बूलपूगीफलानि दद्यात् । दक्षिणां सर्वभोगांश्च प्रतिपिण्डं प्रदापयेत् । भोजनपात्रे शिवा आपः सन्तु । इति जलम् । सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् । अक्षतं चारिष्टमस्तु इति तण्डुलान् क्षिपेत् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् । सव्यम् । अघोरः पितास्तु इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । पूर्वाभिमुखः । गोत्रन्नो वर्धताम्० । अपसव्यम् । पिण्डोपरि सपवित्रकुशानास्तीर्य । ऊर्ज्जं वहन्ती० इति दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत् । अर्घपात्रोत्तानीकरणम् । दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः कृतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ वस्त्रादिदानम्—अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्म्मणः लज्जाशीतदोषनिवारणार्थं दास्यमानमिदं वस्त्रं, वस्त्राणि वा असिकण्टकासिक्तादिदोषपरिहारार्थं इमे उपानहौ, आवरणकामः इदं छत्रं, भोजनार्थं वेणुकांस्यपित्तलनिर्मितानि भाजनानि जलपानार्थं जलपात्रं च इदं वेणुव्यजनमिदं हैमाभरणञ्च तत्तद्दैवतममुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। स्वस्ति। दक्षिणा च। अद्यकृतैतद्दानसाङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां अमुकगोत्राय० दा० जे। स्वस्ति इति प्रतिवचनम्। ततो गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ब्राह्मणाय दद्यात्। ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः। अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्म्मणः परलोके अहरहः अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् एकां सुवासिनीं च पक्वान्नादिनानाविधसामग्रीभिरहं भोजयिष्ये। भोजनान्ते० स्ये। अभिरम्यतामिति विसर्जनम्। सव्यम्। देवताभ्यः०३ अपसव्यम्। रक्षादीपन्निर्वाप्य। हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य। सव्यं कृत्वाचम्य। गवादिबलिदानम्। कृतस्य सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धकर्म्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मन्त्रपाठकाय ब्राह्मणाय आचार्याय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। प्रमादात्कुर्व० विष्णवे० ॥३॥ श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय दद्यात् जले वा क्षिपेत्। इति लघुदर्पणे-एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ साङ्कल्पिकैकोद्दिष्टश्राद्धम्। त्यजेदावाहनं चार्घमग्नौकरणमेव च। पिण्डाश्च विकिराक्षय्ये श्राद्धे सङ्कल्पसंज्ञके। आचम्य। पवित्रधारणम्। प्राणायामः ॥ श्राद्धारम्भे० ॥ ३ ॥ तिलविकिरणम्। नमो नमस्ते०। प्राच्यै०। अवाच्यै०। प्रतीच्यै०। उदीच्यै०। अन्तरिक्षाय नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अधस्तलाय नमः । यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै० ॥३॥ प्रोक्षणम् । अपवित्रः प० । कुशत्रयतिलजलान्यादाय । देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं पात्रे भोज्यस्यान्नस्य त्यागरूपसङ्कल्पविधिना सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्ध[1]महं करिष्ये । गायत्रीं० ॥ ३ ॥ देवताभ्यः ॥३॥ अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः । ब्राह्मणपूजनम् । अन्नपरिवेषणम् । मोटकादीन्यादाय । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! साङ्कल्पिकसांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थमिदं पक्वान्नं सोपस्करं परिविष्टं परिवेष्यमाणं एक[2]-ब्राह्मणतृप्तिपर्यन्तममृतरूपेण ते स्वधा । इति जलमुत्सृजेत् । अन्नहीनम्० इति पठेत् । दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः कृतैतत्साङ्कल्पिकसांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे । सव्यम् । सुरभे० [3]एष बलिः गवे नमः ॥ १ ॥ [4]श्वानौ द्वौ० एष बलिः शुने नमः ।ऐन्द्रावारु० । [5]एष बलिः वायसेभ्यो नमः ॥३॥ अतिथिर्विष्णुरूपेण सोऽतिथिः पापनाशनः । तस्मै चान्नं प्रदास्यामि स्वस्य चाभ्युदयाय वै ॥ अतिथिविष्णवे नमः एष बलिः अतिथये नमः ॥ ४ ॥प्रमादात् कुर्व० । विष्णवे० ॥ ३ ॥ इति सां० कोद्दिष्टश्राद्धविधिः ॥ १ ॥

१ उपवासो यदा नित्यः श्राद्धं नैमित्तिकं भवेत् । उपवासं तदा कुर्य्यादाघ्राय पितृसेवितम् ॥ मातापित्रोः क्षये प्राप्ते भवेदेकादशी यदि । अभ्यर्च्य पितृदेवांश्च जिघ्रेत पितृसेवितम् ॥

२ 'द्वौ दैवे पितृकार्ये त्रीन् एकैकमुभयत्र वा' इति मनुवचनाद्यथासंख्यकस्यापि ग्रहणम् ॥

३ सुरभे त्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता । गोग्रासश्च मया दत्तः सुरभे प्रतिगृह्यताम् ॥ १॥

४ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥ २ ॥

५ काकोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबलः । सप्तजन्मार्जितं पापं बलिं भक्षन्तु वायसाः ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मातृश्राद्धप्रयोगः । [1]अन्वष्टकासु वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि । मातृश्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह ॥ रक्षादीपं निधाय प्राङ्मुखः आचम्य पवित्रधारणम् । प्राणायामः, श्राद्धारम्भे० स्वमातरं मन०३ सर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते० प्राच्यै० अवाच्यै० प्रतीच्यै० उदीच्यै० यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै०३ । प्रोक्षणम् । अपवित्रः प० । कुशादीन्यादाय देशकालौ० गोत्रः शर्मा अद्यामुकगोत्रायाः मातुः अमुकदेव्याः साङ्कल्पेन विधिना सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये । गायत्रीं ३ । देवताभ्यः०३ । अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः । पतितवामजानुः मोटकतिलजलान्यादाय । अमुकगोत्रे मातः अमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा । अपहता० इति भोजनपात्रे तिलान्विकीर्य । आयन्तु नः० इति जपेत् । ततो गन्धादिदानम् । अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलसिन्दूर (यज्ञोपवीत) वासांसि ते स्वधा । मण्डलकरणम् । भूस्वामिनेऽन्नदानम् । इदमन्नमेत० । परिवेषणं अन्नं जलं घृतं फलं पक्वान्नं शाकादिकं च मध्वभिघारणम् । मधुव्वाता० ॥ मधु ॥ ३॥ पात्रालम्भः । पृथिवी ते पात्रं० । इदं विष्णु० । कृष्ण कव्य० । इदमन्नं । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं हविः । अपहता० । इत्यन्नोपरि तिलान्विकीर्य मोटकादीन्यादाय । अद्यामुकगोत्रे मातः अमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदं पक्वान्नं यथोपस्करयुतं परिविष्टं परिवेष्यमाणं एकब्राह्मणतृप्तिपर्यन्तं अमृतरूपेण ते स्वधा । अन्नहानं० । गायत्रीं ३ । कुशेषु पविश्य । मधुव्वाता० मधु० ३। कृष्णुष्वपाजः ५। भूमौ तिलान्विकीर्य । उदीरता० १३ । सहस्रशीर्षा० १६।

---

[1] आन्वष्टक्यं गयाप्राप्तौ सत्यां यच्च मृतेऽहनि । मातुः श्राद्धं सुतः कुर्यात् पितर्य्यपि च जीवति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आशुः शिशान० १७। नमस्तुभ्यं० सव्यं। गोत्रन्नो वर्द्धतां०। अपसव्यम्। दक्षिणादानम्। अद्या-मुकगोत्रायाः मातुः अमुकदेव्याः कृतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थं इदं रजतं चन्द्रदैवतं यथा-नामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः। अद्यामुकगोत्रायाः मातुः अमुकदेव्याः अक्षय्यतृप्तिहेतवे यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् सुवासिनीं च सदन्नेन अहं भोज-यिष्ये। भोजनान्ते तेभ्यः ताम्बूलं दक्षिणां च दास्ये। सव्यम्। देवताभ्यः० ३। अपसव्यम्। रक्षादीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य। सव्येनाचम्य। सौरभेयः० १। श्वानौ द्वौ० २। ऐन्द्र-वारु० ३। अतिथिवि० ४। प्रमादात्कु०। विष्णवे० ३। इति लघुदर्पणे मातृश्राद्धप्रयोगः समाप्तः॥

अथ स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोगः—आसने प्राङ्मुखी उपविशेत्। आचम्य। प्रोक्षणम्। अपवित्रः प०। कुशत्रयतिलजलान्यादाय। तत्सदद्ये० गोत्रस्य पत्युरमुकशर्मणः साङ्कल्पेन विधिना सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये। देवताभ्यः ३। (अपसव्यं कथं स्त्रीणां श्राद्धे कार्यं भवेत्तदा। अञ्जलस्यैव निक्षेपो वामदक्षिणयोर्भवेत्॥) ततो दक्षिणाभिमुखं पातितवामजानुः मोटकतिलजलान्या-दाय। अद्यामुकगोत्र पतेऽमुकशर्मन्! सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं एकं ब्राह्मणं पक्वान्नादिनानाविधसामग्रीभिरहं भोजयिष्ये। भोजनान्ते तस्मै ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये। सव्यम्। गोग्राससङ्कल्पः। प्रमादात्कुर्व०। विष्णवे० ३। इति लघुदर्पणे स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोगः समाप्तः॥

अथ श्रद्धोपयोगिविभक्तिर्लिख्यते। अथ षष्ठीविभक्तिः—पितुः, पितामहस्य, मातुः, पितामह्याः, मातामहस्य, मातामह्याः, पत्न्याः, तनयस्य, दुहितुः, पौत्रस्य, जामातुः, दौहित्रस्य,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भागिनेयस्य, श्यालकस्य, पितृव्यस्य, पितृव्यपत्न्याः, मातुलान्याः, भ्रातुः, भ्रातृपत्न्याः, ज्येष्ठकनिष्ठभ्रातुः, ज्येष्ठकनिष्ठभातृपुत्रस्य, आत्मभगिन्याः श्वशुरस्य, श्वश्र्वाः, ॥ अथ सम्बोधनविभक्तिः- पितः, पितामह, मातः पितामहि, मातामह, मातामहि, पत्नि, तनय, दुहितः, पितृव्य, मातुल, भ्रातः, आत्मभगिनि, श्वशुर, श्वश्रु, ॥ अथ चतुर्थीविभक्तिः—पित्रे, पितामहाय, मात्रे, पितामह्यै, मातामहाय, मातामह्यै, पत्न्यै, तनयाय, दुहित्रे, पितृव्याय, मातुलाय, भ्रात्रे, आत्मभगिन्यै, श्वशुराय, श्वश्र्वै, इति चतुर्थी ॥ एतत्ते पितर्वासः,एतत्ते मातर्वासः । एतत्ते मातामह ! वासः । एतत्ते मातामहि ! वासः । एतत्ते पत्नि ! वासः । एतत्ते तनय ! वासः । एतत्ते दुहितर्वासः । एतत्त पितृव्य ! वासः । एतत्ते मातुल ! वासः । एतत्ते भ्रातर्वासः । एतत्ते आत्मभगिनि ! वासः । एतत्ते श्वशुर वासः । एतत्ते श्वश्रु ! वासः । अघोरः पिताऽस्तु, अघोरः पितामहोऽस्तु । अघोरा माताऽस्तु । अघोरा पितामह्यस्तु । अघोरः मातामहोऽस्तु । अघोरा मातामह्यस्तु । अघोरा पत्न्यस्तु । अघोरः तनयोऽस्तु । अघोरा दुहिताऽस्तु । अघोरः पितृव्योऽस्तु । अघोरः मातुलोऽस्तु । अघोरो भ्राताऽस्तु । अघोरा आत्मभगिन्यस्तु । अघोरः श्वशुरोऽस्तु । अघोरा श्वश्र्वस्तु ।

अथ द्वितीयाविभक्तिः--पितरं । पितामहं । मातरं । पितामहीं । मातामहीं । पत्नीं । तनयं । दुहितरम् । पितृव्यम् । मातुलं । भ्रातरं । आत्मभगिनीम् । श्वशुरम् । श्वश्रूम् ॥ इति श्राद्धोपयोगिन्यो विभक्तयः ।

ऐकाहिके समुत्पन्ने पार्वणे च क्षयाह्निके । प्राक्क्षयाहं प्रकुर्वीत पश्चात्पाकेन पार्वणम् ॥ दर्शश्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपाक्षिकम् । प्रथमेऽब्दे प्रकुर्वीत यदि स्याद्भक्तिमान्सुतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पार्वणश्राद्धं—करणे केवलब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः। आचम्य। पवित्रधारणम्। प्राणायामः। श्राद्धारम्भः० ॥ ३ ॥ नमो नमस्ते०। प्राच्यै०। अवाच्यै०। प्रतीच्यै०। उदीच्यै०। श्राद्धभूम्यै० ३॥ प्रोक्षणम्। अपवित्रः प०। त्रिकुशतिलजलान्यादाय। देशकालौ० गोत्रः शर्मा अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां अमुकगोत्राणां पितृव्याद्याप्तानां समस्ताश्रितपितॄणामक्षय्यतृप्तिहेतवे पात्रे भोज्यस्य सोपकरणस्य पक्वान्नस्य त्यागरूपं सङ्कल्पविधिना कन्यागते सवितरि महालयापरपक्षनिमित्तं पार्वणश्राद्धमहं करिष्ये। गायत्रीं० ॥ ३ ॥ देवताभ्य० ॥ ३ ॥ विश्वेदेवब्राह्मणपूजनम्। अपसव्येन पितृब्राह्मणपूजनम्। सव्यम्। उत्तराभिमुखः। भोजनपात्रे चतुर्दिशं मण्डलं कृत्वा परिवेषयेत्। दक्षिणं जान्वाच्य। कुशयवजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्राणां पितृ० नाम् महालयनैमित्तिकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदं पक्वान्नममृतरूपेण वो नमः। अपसव्यम्। दक्षिणाभिमुखः। पातितवामजानुः मोटकतिलजलान्यादाय। अद्यामुकगोत्राः पितृ० तृप्तिप्राप्त्यर्थमिदं पक्वान्नं० रूपेण यथाविभागं वः स्वधा ॥ १ ॥ अद्यामुकगोत्रा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः पार्वणश्राद्धे अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थमिदं पक्वा० रूपेण यथाविभागं वः स्वधा ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्राः पितृव्याद्याप्तजनाः समस्ताश्रितपितरः महालयापरपक्षश्राद्धे अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थमिदं पक्वा० यथाविभागं वः स्वधा ॥ ३ ॥ इति जलमुत्सृजेत्। अन्नहीनं० पठित्वा। सव्यम्। अद्यामुकगोत्राणां पितृ० पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं दास्यमानां सुवर्णनिष्क्रयिणीं दक्षिणां यथानामगोत्राय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ १ ॥ अपसव्यम् । अद्यामुकगोत्राणां पि० नां कृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दास्यमानां रजतनिष्क्रयिणीं दक्षिणां यथा० जे ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां कृतै० जे ॥ २ ॥ अद्यामुकादि गो० णाम् कृतैतन्महालयश्राद्धप्रतिष्ठार्थं दास्यमानां रजतनिष्क्रयिणीं दक्षिणां यथा जे ॥ ४ ॥ सव्यम् । गोग्रासादिदानम् । प्रमादात् कु० । विष्णवे० ३ ॥ इति पार्वणश्राद्धविधिः ॥

अथ दर्शश्राद्धविधिः—दर्शे क्षयाहे सम्प्राप्ते कथं कुर्वन्ति याज्ञिकाः । आदौ क्षयाहं निर्वर्त्य पश्चाद्दर्शो विधीयते ॥ दर्शश्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपाक्षिकम् । न जीवत्पितृकः कुर्यात्तिलैस्तर्पणमेव च ॥ रक्षादीपं निधाय प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य । पवित्रधारणम् । प्राणायामः । श्राद्धारम्भे० ॥ ३ ॥ गौरसर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते० प्राच्यै० । अवाच्यै । प्रतीच्यै० । उदीच्यै० यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः । त्रिः सम्पूज्य । प्रोक्षणम् । अपवित्रः प० । देशकालौ० अमुकगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां तथा च समस्तपितॄणां अक्षय्यतृप्तिप्राप्त्यर्थं कन्यागतमहालयापरपक्षनिमित्तं दर्शश्राद्धमहं करिष्ये [संक्रमणव्यतीपातवैधृतिपर्वनिमित्तं युगादिनिमित्तं श्राद्धं सङ्कल्पविधिना करिष्ये] गायत्रीं ॥ ३ ॥ देवताभ्यः० इति त्रिवारं पठेत् ॥३॥ ततः उत्तराभिमुखो भूत्वा । अद्यामुकगोत्राणां पितृ० णां द्वितीयगोत्राणां० दर्शश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः । ततः अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः पतितवामजानुः । मोटकतिलजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः तथा समस्तपितरः दर्शश्राद्धे इदमासनं वः स्वधा । ततः—अपहता असुराः० इत्यादिना तिलान् विकीर्य । आयन्तु न०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति जप्त्वा । सव्यम् । गन्धादिना पूजनम् । अद्यामुकगोत्राणां पितृ० णां दर्शश्राद्धसम्बन्धिनो
विश्वेदेवा एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि वो नमः । अपसव्यम् । गन्धादिकं
दत्त्वा । अद्यामुकगोत्राः पितरः ! दर्शश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि वः
स्वधा । सव्यम् । मण्डलकरणम् । अपसव्यम् । मण्डलकरणम् । भूस्वामिनेऽन्नदानम् । इदमन्नमेत० ।
सव्येन देवपात्रे परिवेषणम् । अपसव्येन पित्रादिपात्रे परिवेषणम् । सव्यम् मध्वभिघारणम् । मधु-
व्वाता० ३ । मधु० ३ अपसव्यम् । मध्वभिघारणम् । मधुव्वाता० । ३ । मधु ३ । सव्यम् ।
पात्रालम्भः । पृथिवी ते० । इदं विष्णु० । कृष्णकव्य० । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् ।
इदं हविः । यवोऽसि० अन्नोपरि यवान्विकीर्य । अद्यामुकगोत्राणां पितृ० णां दर्शश्राद्धसम्बन्धिनो
विश्वेदेवाः एतद्वोऽन्नं सोपकरणं नमः । अपसव्यम् । पात्रालम्भः । पृथिवीते० । इदं विष्णु० । कृष्ण-
कव्य० । इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं कविः । अपहता० । इत्यन्नोपरि तिलान्विकीर्य ।
अद्यामुकगोत्राः पितरः दर्शश्राद्धे एतद्वोऽन्नं सोपकरणं वः स्वधा । अन्नहीनम्० गायत्रीम् । ३ ।
कुशेषूपविश्य मधुव्वाता० । ३ । मधु ॥ ३ ॥ कृणुष्वपाजः प्र० ॥ ५ ॥ भूमौ तिलान् विकीर्य ।
उदीरता० ॥ १ ॥ अङ्गिरसो० ॥ २ ॥ ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं व्वसिष्ठाः ।
तेभिर्य्यमः सꣳ० रराणोहवीꣳषि उशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ॥ ३ ॥ त्वꣳ सोम प्रचिकित्तौमनीवात्पꣳ
रजिष्ठमनुनेषिपन्थानम् । तवप्रणन्ति पितरो न इन्द्रोदेवेषु रत्नमभजन्तधीराः ॥ ४ ॥ त्वयाहिनः
पितरः सोमपूर्व्वे कर्माणि चक्रुः पवमानधीराः । व्वन्न्वन्नव्वातः परिधीऽऽरपोर्णुव्वीरेभिरश्वैर्मघवाभवानः
॥५॥ त्वꣳ सोमपितृभिः सम्विदानो नुद्यावा पृथिवीऽआततन्थ । तस्मैतऽइन्द्रो हविषा विधेम व्वयꣳ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥ बर्हिषदः पितर उत्त्यर्व्वाग्निमायो हव्याच क्रमाजुषध्वम् । तऽआगता
व्वसाशन्तमे नाथानः संय्योररपोदधात ॥७॥ आहम्पितॄनत्सुविदत्रा २ वित्सिन पाहञ्च व्विक्रमणञ्च
विष्णोः । बर्हिषदो येस्वधया सुतस्य भजन्तपित्वस्तऽइहागमिष्ठाः ॥८॥ उपहूताः पितरः सोम्यासो
बर्हिष्येषु निधिषु प्प्रियेषु । तऽआगमन्तुतऽइहश्रुवन्त्वधिब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान् ॥ ९ ॥ आयन्तुनः
पि० ॥१०॥ अग्निष्वात्ताः पितर इहागच्छत सदः सदत्तसुप्रणीतयः । अत्ताहवी र्ठं हविषि प्प्रयतानि
ब्बर्हिष्ष्यथारयिर्ठं सर्व्ववान्दधातन ॥११॥ ये अग्निष्वात्ता मध्येदिवः स्वधयामादयन्ते तेभ्यः स्वण्डसु
नीतिमेतां य्यथा वशन्तन्वङ्कल्पयाति ॥१२॥ अग्निष्वात्तानृतुमतोहवामहे नाराशर्ठं सोमपीथंय्यऽआशुः ।
तेना व्विप्रासः सुहवा भवन्तु वयर्ठं स्याम पतयो रयीणाम् ॥१३॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
सभूमिर्ठं सर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेदर्ठं सर्वय्यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृत-
त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्यव्विश्वा-
भूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः । ततो व्विष्वङ्-
व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः । सजातोऽअत्यरिच्यत
पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या
नारण्या ग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दार्ठंसि जज्ञिरे
तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः । गावोहजज्ञिरे तस्मा-
त्तस्माज्जाताऽअजाव्वयः ॥ ८ ॥ तं यज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्नपुरुषञ्जातमग्रतः । तेनदेवाऽअयजन्त साद्-
ध्याऽऋषयश्च ये ॥ ९ ॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरू-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादाऽउच्येते ।। १० ।। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्या
ँ शूद्रोऽअजायत ।। ११ ।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्च
मुखादग्निरजायत ।। १२ ।। नाभ्या आसीदन्तरिक्ष टँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत । पद्भ्याम्भूमि-

र्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँऽअकल्पयन् ।। १३ ।। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तो-
ऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ।। १४ ।। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः । देवा-
यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषम्पशुम् ।। १५ ।। यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्या-
सन् । तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। १६ ।। आशुः शिशानो वृषभो
नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।। सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत टँ सेनाऽअजयत्सा-
कमिन्द्रः ।। १ ।। संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेणदुश्च्यवनेन धृष्णुना । तदिन्द्रेण जयतत-
त्सहध्वं युधोनरऽइषुहस्तेन वृष्णा ।। २ ।। सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशीस टँ स्रष्टा सयुध इन्द्रो
गणेन । सटँ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्द्ध्युग्रधन्वा प्प्रतिहिताभिरस्ता ।। २ ।। बृहस्पते परिदीयारथेन
रक्षोहा मित्राँऽअपबाधमानः ।। प्प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ।।४।।
बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽउग्रः ।। अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र
रथमातिष्ठ गोवित् ।। ५ ।। गोत्रभिदङ्गोविदंवज्रबाहुञ्जयन्तमज्म प्प्रमृणन्तमोजसा ।। इमटँ सजा-
ताऽ अनुवीरयध्वमिन्द्रटँ सखायो अनुसटँ रभध्वम् ।। ६ ।। अभिगोत्राणि सहसा गाहमानो दयो
वीरः शतमन्युरिन्द्रः । दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योस्माकटँ सेनाऽअवतु प्प्रयुत्सु ।। ७ ।। इन्द्रऽआ-

सान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ।। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रम् ॥ ८ ॥ इन्द्रस्य व्वृष्णो व्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुता ᳬ शर्द्धऽउग्रम् । महामनसाम्भु-
वनच्यवानांघोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ ९ ॥ उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वानाम्मामकानाम्मना-
ᳬ सि । उद्वृत्रहन्व्वाजिनां व्वाजिनान्युद्रथानाञ्जयताँ यन्तुघोषाः ॥ १० ॥ अस्माकमिन्द्रः समृ-
तेषुद्ध्वजेष्वस्माकंय्याऽइषवस्ता जयन्तु । अस्माकं व्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्माँ२ऽउदेवाअवता हवेषु
॥ ११ ॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्प्वेपरेहि । अभिप्प्रेहिनिर्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामि-
त्रास्तमसासचन्ताम् ॥ १२ ॥ अवसृष्टापरापत शरव्येब्रह्मसᳬशिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वमामीषाङ्क-
ञ्चनोच्छिषः ॥ १३ ॥ प्रेताजयतानरऽइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु । उग्रावः सन्तुबाहवोनाधृष्या यथासथ
॥ १४ ॥ असौय्या सेनामरुतः परेषामभ्यैतिनऽओजसास्पर्धमाना । ताङ्गूहततमसापव्रतेन यथामीऽ-
अन्योऽअन्यन्न जानन् ॥ १५ ॥ यत्रबाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखाऽइव । तन्नऽइन्द्रो ब्बृहस्प-
तिरदितिः शर्म यच्छतु व्विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ १६ ॥ मर्माणि ते व्वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा
राजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्व्वरीयोर्व्वरुणस्ते कृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु ॥ १७ ॥ नमस्तु-
भ्यम्० ॥ सव्यम् ॥ दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्राणाम्पितृ० णां दर्शश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषा-
न्देवानां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं यत्किञ्चित् हिरण्यंनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथा० जे ॥ अपसव्यम् ॥
अद्य मुकगोत्राणाम्पितृ० णां कृतैतद्दर्शश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं यत्किञ्चिद्रजतनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथा-
नामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणान्दातुमहमुत्सृजे ॥ व्वाजे० इति विसर्जनम् । सव्यम् । विश्वेदेवाः
प्रीयन्ताम् । अपसव्यम् । रक्षादीपन्निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य । सव्यमाचम्य । देवताभ्यः०
॥ ३ ॥ गवादिबलिदानम् । सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ एष बलिः गोभ्यो नमः ॥ १ ॥ श्वानौ द्वौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥ एष बलिः श्वभ्यां नमः ॥ २ ॥ ऐन्द्रवारुणवायव्या सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ॥ एष बलिः काकेभ्यो नमः ॥ ३ ॥ अतिथिर्वि० एष बलिः अतिथये नमः ॥ ४ ॥ प्रमादात् कु० । विष्णवे नमः ३ ॥ श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् जले वा क्षिपेत् । शुक्लपक्षे एकादश्यां पञ्चम्यामष्टम्यां त्रयोदश्यामुभयोः कार्यम् । दोषबाहुल्ये सति न कालाऽपेक्षा । नद्यां पुण्यतीर्थे तदभावे शिवायतने तुलसीसन्निधावश्वत्थसन्निधौ कार्यम् । इति लघुदर्पणे दर्शश्राद्धविधिः समाप्तः ॥

अथ त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोगः—पिशाचाद्युपद्रवनाशके विशिष्टे तीर्थे गत्वा शुचिः स्नात्वा तर्पणं विधाय । स्थलप्रक्षालनम् । गोमयेनोपलिप्य रक्षादीपन्निधाय प्राङ्मुखउपविश्य आचम्य पवित्रधारणम् । प्राणायामः । अद्येत्यादि० त्रिपिण्डीश्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं श्रीमहाविष्णोः षोडशोपचारैः पूजनमहं करिष्ये । आवाहनादिपुष्पाञ्जल्यन्तं पूजयेत् । सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् ॥ १ ॥ पुरुषएवेत्यासनम् ॥ २ ॥ एतावानस्येति पाद्यम् ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वेत्यर्घम् ॥ ४ ॥ ततोविराडित्याचमनम् ॥ ५ ॥ वेदोक्तोमन्त्रैः पञ्चामृतस्नानम् । तस्माद्यज्ञादिति स्नानम् ॥ ६ ॥ तस्माद्यज्ञादिति वस्त्रम् ॥ ७ ॥ तस्मादश्वेति यज्ञोपवीतम् ॥ ८ ॥ तंयज्ञमिति गन्धम् ॥ ९ ॥ यत्पुरुषेति पुष्पम् ॥ १० ॥ ब्राह्मणोस्येति धूपम् ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसेति दीपम् ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदिति नैवेद्यम् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेति ताम्बूलम् ॥ १४ ॥ सप्तास्यासन्निति दक्षिणा ॥ १५ ॥ यज्ञेनयज्ञ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मितिं मन्त्रपुष्पाञ्जलिः । नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ इति नमस्कारः । अथ प्रार्थना । अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ इति प्रार्थना ॥ अनेन पूजनेन महाविष्णुः प्रीयताम् । पुनः आचम्य प्राणानायम्य श्राद्धारम्भे गौरसर्षपैरवकीर्य । नमो नमस्ते० । श्राद्धभूम्यै० ३ । प्रोक्षणम् । अपवित्रः प० । देशकालौ० गोत्रः शर्म्मा । अपसव्यम् । मम कुले विविधपीडाकारिणां, सन्ततिवृद्धिप्रतिबन्धकारिणां, अपत्यादिहिंसकानां, अस्मत्कुलप्रभवाणां, मातामहकुलप्रभवाणां, बन्धुवर्गकुलप्रभवाणां, ज्ञाताज्ञातगोत्रशर्मणां, वर्मणां, गुप्तानां, दासानां, विप्राणां, क्षत्रियाणां, वैश्यानां, शूद्राणां, अनुलोमजातीयानां, विलोमजातीयानां, निषादजातीयानां, पुंसां, स्त्रीणां, भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षससत्त्वादिपापयोनिगतानां द्वेषवैपरीत्यादिग्रहधनादिसम्बन्धेन अस्मत्कुले पीडाकारिणां नागादीनां पिशाचत्वादिदिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां वायुरूपाणां सात्त्विकराजसतामसानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां प्रेतानां प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकं देवदत्तस्य मुक्तिद्वारा उत्तमलोकप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृध्द्यर्थं सकलपीडापरिहारार्थं सकलमनोरथावाप्त्यर्थं पिशाचमोचनतीर्थे त्रिपिण्डीश्राद्धमहं करिष्ये--इति सङ्कल्प्य । सव्यं कृत्वा गायत्रीं ३ जप्त्वा सात्त्विकेभ्यो राजसेभ्यो तामसेभ्यस्तथैव च । विष्णुब्रह्मरुद्रेभ्यश्च नित्यमेव नमो नमः ॥ पश्चिमतः प्राग्गतान् त्रीन् कलशान् संस्थाप्य । तत्पार्श्वे ध्वजाः श्वेता रक्ताः कृष्णाश्च शोभनाः । तत्त्वायामीति मन्त्रेण वरुणं आवाहनादिभिः पूजयेत् । कलशोपरि अग्न्युत्तारणपूर्वकं सौवर्णरौप्यताम्रप्रतिमात्रयस्थापनम् ॥ प्रथमकलशे--इदं विष्णु० अज्ञातनामगोत्रं सात्त्विकप्रेतं विष्णुमयं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यवाक्षतेन आवाहयामि ॥ द्वितीयकलशे—ब्रह्म यज्ञानं० अज्ञातनामगोत्रं राजसप्रेतं ब्रह्ममयं तण्डुलाक्षतेन आवाहयामि ॥ तृतीयकलशे—नमस्ते रुद्र० अज्ञातनामगोत्रं तामसप्रेतं रुद्रमयं तिलाक्षतेन आवाहयामि ॥ विष्णुब्रह्मरुद्रेभ्यो नमः इति आसनादिभिः पूजयेत् ॥ अथ प्रार्थना ॥ अनादिनिध० ॥ अतसी० ॥ कृष्ण कृष्ण० ॥ इति प्रार्थना, ब्राह्मणत्रयवरणम् । तद्यथा-- विष्णुकलशे पुरुषसूक्तजपार्थं त्वामहं वृणे । एवमग्रे कलशद्वयेऽपि बोद्धव्यम् । प्रथमकलशे- इदंविष्णुर्विच० । सहस्रशीर्षेति पुरुषसूक्तेनाभिमन्त्रणम् ॥ द्वितीयकलशे--ब्रह्मयज्ञानम्० इत्यभिमन्त्रणम् । तेजोसि अध्यायः ॥ तृतीयकलशे--नमस्ते रुद्रमन्यव० इत्यध्यायं० प्रथमा-नुवाकं वा । इत्यभिमन्त्रणम् ॥ तदग्रे चटत्रयं स्थापयेत् । अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः । पातित-वामजानुः मोटकादीन्यादाय अज्ञातनामगोत्राः दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठाः सात्त्विकराजसतामसप्रेताः विष्णुब्रह्मरुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एकतन्त्रेण इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥ अपहतेति भोजनपात्रे यवतण्डुलतिलान्विकीर्य । आयन्तु नः पि० इति जपः । ततोऽर्घकरणम् । पवित्रेस्थो० इति मन्त्रेण पुटकेषु पवित्राणि निधाय । शन्नोदेवीति जलं त्रिः । यवोसीति यवान् ॥ अक्षन्नमीमदन्त० इति तण्डुलान् ॥ २ ॥ तिलोसीति तिलान् ॥ ३ ॥ गन्धपुष्पे तूष्णीं प्रक्षिपेत् । यथाक्रममर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा । भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वा । तदुपरि किञ्चिदुद-कान्तरं दत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य । या दिव्या० इत्यादि पठित्वा । अज्ञातनामगोत्राः दिविस्थाः सात्त्विकप्रेताः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥१॥ एवं राजसतामसयोरर्घं दद्यात् । अज्ञातनामगोत्राः अन्तरिक्षस्थाः राजसप्रेताः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताम् ॥ २ ॥ अज्ञातनामगोत्राः भूमिष्ठाः तामसप्रेता रुद्रमयाः त्रिपिण्डी० ताम् ॥ ३ ॥ पात्राणां न्युब्जीकरणन्नास्ति । उत्तानपात्रं निधाय । अज्ञातनामगोत्रेभ्यो विष्णुमयेभ्यः स्थानमसि ॥ १ ॥ अज्ञातनामगोत्रेभ्यो राजसप्रेतेभ्यो ब्रह्ममयेभ्यः स्थानमसि ॥ २ ॥ अज्ञातनामगोत्रेभ्यस्तामसप्रेतेभ्यो रुद्रमयेभ्यः स्थानमसि ॥ ३ ॥ एकतन्त्रेण गन्धादि दद्यात् । अज्ञातनामगोत्राः सात्विकराजसताम-सप्रेताः दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः विष्णुब्रह्मरुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एतानि पुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञो-पवीतवासांसि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् ॥३॥ जलेन मण्डलानि कुर्यात्, भूस्वामिने अन्नं दद्यात् । ततः परिवेषणं यवतण्डुलतिलपिष्टानां क्रमेण कुर्यात् ॥ पुरुषाहारक्षममन्नं जलं घृतञ्च उपकल्पनीयम् । पदार्थं परिवेष्य ॥ ३ ॥ पात्राणि स्पृशन् । पृथिवीते० । इदंविष्णु० । कृष्णकृण्य० । अङ्गुष्ठेन एकतन्त्रेण त्रिषु स्थानेषु–इदमन्नम् । इमा आपः । इदमाज्यम् । इदं हविः । अपहता० भोजनपात्रेषु यवतण्डुलतिलान् विकीर्य्य । अज्ञातनामगोत्राः दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः सात्त्विकराजस-तामसप्रेताः विष्णुब्रह्मरुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठ-ताम् । ततः अन्नहीनं० । गायत्रीम्० ॥ ३ ॥ मधुव्वाता० ३ मधु ३ । कृणुष्वपाजः० ५ । भूमौ तिलान्विकीर्य्य । उदीरता० १३ । सहस्रशीर्षा० १६ । आशुः शिशान० १७ । नमस्तुभ्यम्० । अपसव्येन दक्षिणाग्रं कुशत्रयमास्तीर्य्य । किञ्चिदन्नं गृहीत्वा । अनग्निदग्धा० । पवित्रत्यागः । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्यं आचम्य । हरिं स्मृत्वा । गायत्रीम्० ॥ ३ ॥ मधुव्वाता० इत्यादि जपेत् । अपसव्यम् । वेदीत्रयं निर्माय ॥ ३ ॥ अपहतेति रेखाकरणम् ॥ ३ ॥ ये रूपाणि० । इत्यङ्गारं भ्रामयित्वा ॥ ३ ॥ कुशास्तरणम् ॥ ३ ॥ सव्यम् । देवताभ्यः० ३ । अपसव्यम् । जलयवगन्धपु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ष्पाणि पुटके कृत्वा । अज्ञातनामगोत्राः दिविस्थाः सात्त्विकप्रेताः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्ड-स्थानेऽत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ पुनः जलतण्डुलगन्धपुष्पाणि पुटके कृत्वा । पुटकं गृहीत्वा । अज्ञातनामगोत्राः अन्तरिक्षस्था राजसप्रेताः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डी-श्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया० ताम् ॥२॥ पुनः जलतिलगन्धपुष्पाणि पुटके कृत्वा । अज्ञातनामगोत्राः भूमिस्थाः तामसप्रेता रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया० ताम् ॥ ३ ॥ ततः मध्वादियुक्तयवपिष्टमयपिण्डमादाय । पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च । गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवादयः ॥ १ ॥ ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविव-र्जिताः । क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥२॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । तेषां पिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ ३ ॥ इमं यवमयपिण्डं मधुसर्पिःसमन्वितम् । ददामि तेभ्यः प्रेतेभ्यो ये पीडां कुर्वते मम ॥ ४ ॥ ये केचिद्दिवि तिष्ठन्ति प्रेताः सात्त्विकरूपिणः। यवपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु तेऽक्षयाम् ॥ ६ ॥ ये मे प्रजां नाशयन्ति जीवन्नश्यति वा स्वयम् । तस्य प्रेतस्य दत्तोऽयं पिण्डस्तस्योपतिष्ठताम् ॥ ७ ॥ अज्ञातनामगोत्राः दिविस्थाः सात्त्विकप्रेताः विष्णुमयाः एष यवमयपिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । इति प्रथमरेखोपरि यवपिण्डं दत्वा । ततो तण्डुलपिष्टमयपिण्डमादाय । पितृवंशे० इमं व्रीहिमयं पिण्डं मधुसर्पिःसमन्वितम् । तन्मुक्तये प्रदास्यामि ये पीडां कुर्वते मम ॥ ४ ॥ ये केचिद्वायुरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । तण्डुलैः पिण्डदानेन व्रजन्तु गतिमुत्तमाम् ॥ ५ ॥ अन्तरिक्षे च ये केचिद्राजसा वायुरूपिणः । व्रीहिपिण्ड-प्रदानेन ते तृप्यन्तु क्षुधार्दिताः ॥ ६ ॥ अज्ञातनामगोत्राः अन्तरिक्षस्थाः राजसप्रेताः ब्रह्ममयाः एष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रीहिमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । इति द्वितीयरेखोपरि व्रीहिपिण्डं दद्यात् । ततस्तिलपिष्टमयपिण्डमादाय । पितृवंशे मृता ये च० ३ । इमं तिलमयं पिडं मधुसर्पिःसमन्वितम् । तेभ्यो ददामि ये पीडां मत्कुले कुर्वते सदा ॥ १ ॥ ये केचित्तामसाः प्रेताः भूमौ तिष्ठन्ति सर्वदा । तिलपिण्डप्रदानेन गतिं गच्छन्तु ते ध्रुवाम् ॥ २ ॥ तमोरूपाश्च ये केचित्ते तृप्यन्तु क्षुधार्दिताः ॥ ३ ॥ अज्ञातनामगोत्राः भूमिष्ठाः तामसप्रेताः रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे एष तिलमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् । इति तृतीयरेखोपरि तिलपिण्डं दद्यात् । सव्यं कृत्वा द्विराचामेत् । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यं कृत्वा श्वासं नियम्य । अत्र पितरो० । दक्षिणाभिमुखं त्यजेत् । अमीमदन्त० । प्रत्यवनेजनम् । अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ अज्ञातनागोत्राः राजसप्रेताः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥३॥ नीवीं विस्रस्य । सव्येनाचम्य । नमोवः पितरो० एतद्वः प्रेत ! वासः, इति मन्त्रेण सूत्रदानम् । सङ्कल्पः । अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकराजसतामसप्रेताः दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः विष्णुब्रह्मरुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् ॥ ततो गन्धादिना पिण्डार्चनं कृत्वा । शिवा आपः सन्तु ॥ ३ ॥ सौमनस्यमस्तु ॥ ३ ॥ अक्षतं चारिष्टमस्तु भोजनपात्रेषु क्षिपेत् । अज्ञातनागोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम् । ततः ताम्रपात्रे गन्धोदकयवाक्षतपुष्पमातुलुङ्गकफलानि स्थापयित्वा अर्घ्यं दद्यात् । अज्ञातनामगोत्राः दिविस्थाः सात्त्विकप्रेताः विष्णु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मयाः त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डे मातुलुङ्गकफलरयमर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥ १ ॥ पुनः ताम्रपात्रे गन्धोदकपुष्पतण्डुलाक्षतजम्बीरफलानि प्रक्षिप्य । अज्ञातनामगोत्रा राजसप्रेता अन्तरिक्षस्था ब्रह्ममया स्त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डे जम्बीरफलैरयमर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ पुनः ताम्रपात्रे गन्धोदकतिलाक्षतपुष्पखर्जूरफलानि प्रक्षिप्य । अज्ञातनामगोत्रास्तामसप्रेता भूमिस्था रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धपिण्डे खर्जूरफलैरयमर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् ॥३॥ सव्यम् । अघोराः प्रेताः सन्तु इति पिण्डोपरि जलधारां दद्यात् ॥४॥ पूर्वाभिमुखो भूत्वा । गोत्रन्नो वर्द्धताम्० । अपसव्यम् । ऊर्जंवहन्तीरित्यादिभिः जलधारा दद्यात् । ततः सव्येन विष्णुतर्पणम् । ताम्रपात्रे जलदुग्धतिलसर्वौषधीतुलसीचन्दनप्रक्षेपः । शालिग्रामशिलायां शङ्खोदकेन तर्पणम् । सहस्रशीर्षा० । विष्णुं तर्पयामि ।१ । पुरुषएवे० । विष्णुं त० ।२। एतावान० । विष्णुं त० ।३। त्रिपादूर्ध्व० विष्णुं त० ।४। ततो व्विराड० विष्णुं त० ।५। तस्माद्यज्ञा० । विष्णुं त० । ६ । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत० । विष्णुं त० ।७। तस्मादश्वा० विष्णुं त० ।८। तं यज्ञं० विष्णुं० ।९। यत्पुरुषम्० । विष्णुं त० । १० । ब्राह्मणोऽस्य० विष्णुं तर्प० ।११। चन्द्रमामन० । विष्णुं त० ।१२। नाभ्याऽआसी० । विष्णुं त० ।१३। यत्पुरुषेण० विष्णुं त० । १४ । सप्तास्यासन्प० । विष्णुं त० ।१५। यज्ञेनयज्ञ० । विष्णुं त० ।१६। विष्णुसूक्तेन विष्णुतर्पणम् । इदंविष्णुर्वि० । विष्णुं त० । १ ।

इरावती धेनुमतीहिभूतर्ठं- सूयवसिनो मनवेदशस्या । व्यस्कभ्ना रोदसी व्रिष्णवे तेदाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ॥ विष्णुं त० । २ । **देवश्रुतौ देवष्पाघोषतम्प्राचो**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेतमध्वरङ्कल्पयन्तीऽऊर्ध्वं यज्ञन्तयतम्म। जिह्वरतम् । स्वङ्गोष्ठमावदतन्देवी दूर्वेऽ-
आयुर्म्मानिर्व्वादिष्टम्प्रजाम्मांनिर्व्वादिष्टमन्त्ररमेक्षौम्वर्षमन्न्पृथिव्याः ॥ विष्णुं त० ३
विष्णोर्नुकं व्वीर्य्याणि प्रवोचंय्यः पार्थिवानि व्विममे रजा ᳪ- सि । योऽअ-
स्कभायदुत्तरᳪ- सधत्स्थम्विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवेत्वा । विष्णुं त० । ४ ।
दिवोवा विष्णुऽउतवा पृथिव्व्यामहोवा व्विष्णऽउरोरन्तरिक्षात् । उभाहि हस्ता
व्वसुना पृणस्वाप्रयच्छ दक्षिणादोतसव्याद्विष्णवेत्वा ॥ विष्णुं त० ।५। प्रतद्विष्णु-
स्तवते व्वीर्येण मृगोन भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषुव्विक्रमणेष्व-
धिक्षियन्ति भुवनानि व्विश्वा ॥ विष्णुं त० ।६। विष्णोरराट० । विष्णुं० । ७ । नामम-
न्त्रेण तर्पयेत् । विष्णुस्तृप्यतु । १ । गोविन्दस्तृप्यतु । २ । केशवस्तृप्यतु । ३ । माधवस्तृप्यतु
। ४ । श्रीधरस्तृप्यतु । ५ । हृषीकेशस्तृप्यतु । ६ । पद्मनाभस्तृप्यतु । ७ । पुरुषोत्तमस्तृप्यतु । ८ ।
अनिरुद्धस्तृप्यतु । ९ । संकर्षणस्तृप्यतु । १० । चतुर्भुजस्तृप्यतु । ११ । पुण्डरीकस्तृप्यतु ।१२।
मधुसूदनस्तृप्यतु । १३ । अच्युतस्तृप्यतु । १४ । जनार्दनस्तृप्यतु । १५ । अनन्तस्तृप्यतु ।१६।
वैकुण्ठस्तृप्यतु । १७ । उपेन्द्रस्तृप्यतु । १८ । त्रिविक्रमस्तृप्यतु । १९ । गदापाणिस्तृप्यतु
। २० । श्रीवत्सस्तृप्यतु । २१ । श्रीकान्तस्तृप्यतु ।२२। दामोदरस्तृप्यतु ।२३। वनमालिनस्तृप्यन्तु
। २४ । नरोत्तमस्तृप्यतु । २५ । नृसिंहस्तृप्यतु । २६ । अथ पौराणिकमन्त्रेण ॥ अनादिनिध० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुस्तृ० । १ । अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् । ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥ विष्णुस्तृ० ॥२॥ कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतोनां गतिप्रद । संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥ विष्णुस्तृ० ॥ ३ ॥ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णुस्तृ० । अपसव्यम् । तिलादियुक्तशङ्खेन पिण्डत्रयोपरि एकतन्त्रेण तर्पयेत् । घनलोभमृता ये च गतिर्येषां न विद्यते । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यो दुग्धं तिलोदकम् ।१। कपिलाक्षीरपानेन अगम्यागमनेन च । स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम् ॥ २ । अपात्रे चैव दानेन प्रेतरूपो व्यवस्थितः । स मे प्रेत० । ३ स्वबन्धुपितृबन्धुर्वा प्रेतरूव्यवस्थितः ।स मे प्रेत० । । ४ । पुत्रो वा भ्रातृवर्गो वा प्रेतरूपी व्यवस्थितः । स मे प्रेत० । ५। मातृपितृव्यकादिश्च प्रेतभावेन संस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् । ६ ।मातुलानी स्वपत्नी च गोत्राणि स्वयमेव च । ते सर्वे० । ७ । पितृवंशे च ये जाता मातृवंशे तथैव च । ते सर्वे० । ८ । नानायोनिगता ये च महास्थलनिवासिनः । ते सर्वे तृ० । ९ । ये केचित्प्रेतरूपेण यमेन परिपीडिताः । ते सर्वे तृ० । १० । ये केचित्प्रतरूपेण तृषार्ताश्रमपीडिताः । ते सर्वे० । ११ । महाप्रेता महाभागा प्रपूर्याश्च समाश्रिताः। ते सर्वे० । १२ । असंख्याताः महाघोरा प्रेतरूपैर्व्यवस्थिताः । ते सर्वे० । १३ । असंख्याता महाप्रेताः शाखान्यग्रोधसंस्थिताः । ते सर्वे० । १४ । प्रेतलोके च ये जाता मुद्गरैर्बहुखण्डिताः । ते सर्वे० । १५ । ब्राह्मणा वृत्तिहरणात्प्रेतरूपव्यवस्थिताः । ते सर्वे० । १६ । वृत्तिभङ्गकरा ये वै प्रेतरूपा व्यवस्थिताः । ते सर्वे० । १७ । क्रियालोपगता ये च सर्पव्याघ्रहताश्च ये । ते सर्वे० । १८ । जलाग्निभिर्मृता ये च विद्युत्पातादिभिस्तथा । ते सर्वे० । १९ । अपुत्रिणो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मृता ये च कुलधर्मविवर्जिताः । ते सर्वे०।२०। तप्ततैले च निक्षिप्ता यमलोके महाभये। ते सर्वे०।२१। किङ्करैः पीडिता ये च सुदृढैः खण्डशः कृताः। ते सर्वे०।२२। पापेन पीडिताः कण्ठे यमदूतैर्महाबलैः। ते सर्वे० ।२३। संदंशैर्घनपातैश्च खण्डिता यमकिङ्करैः । २४ ।बध्यन्ते बहुभिःपाशैर्यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे० । २५ । यन्त्रमध्ये प्रपीड्यन्ते यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे० । २६ । मस्तके मुद्‌गरैर्घोरैः पीडिता यमकिङ्करैः । ते सर्वे० । २७ । कुम्भीपाके च निक्षिप्ता रौरवे च तथैव च । ते सर्वे०।२८। असीपत्रे खिद्यमाना वृषभीत्या पलायिताः । ते सर्वे० २९ । गुर्वग्निब्राह्मणानां च पादेनैव च ताडिताः । ते सर्वे ० ।३०। ब्रह्मस्वहारिणो ये वै देवद्रव्यविलुम्पकाः । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्ते-भ्यो दुग्धं तिलोदकम् ॥३१ ॥ यः कश्चिद्धनलोभेन मृत्युं प्राप्तो नराधमः । स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम् ॥ ३२ ॥ धनलोभमृता ये च सर्पयोनिव्यवस्थिताः । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यो दुग्धं तिलोदकम् ॥ ३३ ॥ ये केचित्प्रेतरूपेण तृषार्ताः परिपोडिताः । ते मे प्रेताः सुखं० ॥ ३४ ॥ ये प्रेता ये महाप्रेताः प्रेतपूर्वे च संस्थिताः । ते मे प्रेताः सु० ॥ ३५ ॥ येष्वधो-नुगताः प्रेताः मरुस्थलनिवासिनः । ते मे प्रेताः सुखं० ॥ ३६ ॥ अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराज-सतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां परलोके महातृषोपशमनार्थञ्जलधाराः पयोधारा वा मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् । अथ स्थापितकलशोदकेन पिण्डोपरि अभिषेचनम् । प्रथमं कुम्भं गृहीत्वा । विष्णुकुम्भस्थितं तोयं विष्णुसूक्तेन मन्त्रितम् । अभिषिञ्चामि तत्तोयं प्रेतत्वस्य निवृत्तये ॥ ३ ॥ पिण्डान् स्पृष्ट्वा मन्त्रान्पठेत् । अनादिनिध० ॥ १ ॥ अतसीपुष्प० ॥ २ ॥ कृष्ण कृष्ण कृपा० ॥ ३ ॥ ततो नम्रीभूय पिण्डमुत्थाप्य । पिण्डाधारकुशानुल्मुकञ्च वह्नौ क्षिपेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्घपात्राणि सञ्चालयेत् । दक्षिणासङ्कल्पः । कृतैतत्त्रिपिण्डीश्राद्धप्रतिष्ठार्थं नग्नप्रच्छादनार्थमिमे वाससी,तृषोपशमनार्थमिष्टवारिपूर्णमिदं कमण्डलुं,कण्टकनिवारणार्थं उपानद्युगलं,आतपनिवारणार्थं छत्रं, दक्षिणां, तन्निष्क्रयभूतं द्रव्यं वा अज्ञातनामगोत्रेभ्यः सात्त्विकराजसतामसप्रेतेभ्यो विष्णुब्रह्म-रुद्रमयेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे । पायसान्नं माषान्नं कृशरान्नञ्च क्रमेण विष्णुब्रह्म-रुद्रेभ्यो भोजनं दातव्यम् । कृतैतत्त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मधुरपायसमाषा-न्नकृशरान्नादिनानाविधसामग्रीभिस्त्रीन् ब्राह्मणानहं तर्पयिष्ये । वाजेवाजे० । उत्तिष्ठन्तु सात्त्विकरा-जसतामसाः । ब्राह्मणत्रयं ॥ ३ ॥ आमावाजस्य० विसर्जनम् ।

अथ प्रार्थना—दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः सात्त्विकराजसतामसाः । प्रेताश्चैते समाज्ञेया शांतिं गच्छन्तु तर्पिताः ॥ सव्यम् । विष्णोरुत्तरपूजां कृत्वा । तिलपात्रदानम् । अद्येत्यादि० मम जन्मप्रभृतिसमस्तपापनिरसनद्वारा पापापहश्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थमिदं तिलपूरितताम्रपात्रं सहिरण्यं दक्षिणासहितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे ।

महर्षेर्गोत्रसम्भूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः । तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ आज्यावलोकनम् । रूपेण वो० । आज्यपात्रदानम् । मम कायिकादिसमस्तपापक्षयार्थं श्रीपापह-र्तृमहाविष्णुप्रीत्यर्थं इदं घृतपूरितकांस्यपात्रे सहिरण्यं दक्षिणासहितं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्र-ददे । गोदानम् । कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थमिदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे । ततः भूयसीसङ्कल्पः । तीर्थाधिपतिं सम्पूज्य । रक्षादीपं निर्वाप्य हस्तौ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादौ प्रक्षाल्य सव्यमाचम्य गवादिबलिदानम् । यस्य स्मृत्या० ३ । श्राद्धीयवस्तूनि जले प्रतिपादयेत् । ततो यजमानः अश्वत्थं पूजयेत् । कृच्छ्रान्नं समर्प्य अश्वत्थमूले जलधारां दद्यात् । वृक्षराज नमस्तुभ्यं सर्वदेव मम प्रभो । मम देहस्य सन्तापं हरस्व वारिधारया ॥ अपसव्यं आचमनं प्राणायामस्ततो यजमानः सचैलं स्नायात् । परिधानवस्त्रत्यागः । भोजनस्थानमागत्य । देशकालौ० त्रिपिण्डीश्राद्धस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं गणपतिस्मरणं पुण्याहवाचनञ्च करिष्ये । गणपतिस्मरणं विधाय । ब्रह्मपुण्यं० । इति पञ्च श्लोकान् पठेत् । ब्राह्मणान् भोजयित्वा इष्टजनैः सह भुञ्जीत ॥ इति लघुदर्पणे त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ तीर्थश्राद्धविधिः—अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम् । विकिरं तृप्तिप्रश्नं च तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत् ॥ कर्ता तीर्थे गत्वा । स्नानादि नित्यकर्म विधाय । रक्षादीपं प्रज्वाल्य । प्राङ्मुख उपविश्य । आचम्य । पवित्रधारणम् । प्राणायामः । श्राद्धारम्भे० ॥ १ ॥ सर्षपविकिरणम् । नमो नमस्ते० ॥ २ ॥ प्राच्यं० । अवाच्यै० । प्रतीच्यै० । उदीच्यै० । यवपुष्पैः श्राद्धभूम्यै नमः ३ प्रोक्षणम् । अपवित्रः पवित्रो० । देशकालौ० । अमुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणां एतेषां (आसां) मोक्षार्थं तृप्त्यर्थं पुनरावृत्तिरहितं शाश्वतमक्षयविष्णुलोकावाप्त्यर्थं मम आत्मसहितक्रोत्तरशतकुलोद्धारणार्थं सोमवत्यमावस्यामहापर्वनिमित्तं कपिलधाराशिवगयातीर्थे श्राद्धमहं करिष्ये । काश्यां पञ्चक्रोशीयात्राङ्गभूतं वृषभध्वजेश्वरसन्निधौ कपिलधारा० ॥ १ ॥ गयातीर्थयात्राङ्गभूतं मणिकर्णिकातीर्थे० इति सङ्कल्प्य । गायत्रीं ॥ ३ ॥ देवताभ्यः पि० ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः वेदीं निर्माय अपहतेति रेखाकरणम् । ये रूपाणीति अङ्गारभ्रामणम् । छिन्नमूलकुशास्तरणम् ॥ सव्यम् । देवताभ्यः ३ । अपसव्यम् । पुटकेषु जलतिलगन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य मोटकतिलजलान्यादाय । अद्यामुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः अमुकामुकशर्माणः अमुकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थानेषु अत्रावनेनिग्ध्वं वः स्वधा ॥१॥ अद्यामुकगोत्रा मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकशर्माणः तीर्थश्राद्धे० स्वधा० ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्राः पितृव्यादिसमस्ताश्रितपितरः तीर्थश्रा० स्वधा ॥ ३ ॥ ततः पिण्डान् निर्माय । पिण्डमादाय । अद्यामुकगोत्र पितः अमुकशर्मन् ! अमुकतीर्थश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधा । एवमेव पितामहादिभ्योऽपि तिलाज्यमध्वादियुक्तपायसाद्यन्यतमद्रव्यनिर्मितपिण्डान् दद्यात् । अद्यामुकगोत्र पितामह अमुक० ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्र प्रपितामह अमु० ॥ ३ ॥ अद्यामुकगोत्रे मातः अ० ॥ ४ ॥ अद्यामुकगोत्रे पितामहि अमुक० ॥ ५ ॥ अद्यामुकगोत्रे प्रपितामहि अमुक० ॥ ६ ॥ अद्यामुकगोत्र मातामह अमुक० ॥ ७ ॥ अद्यामुकगोत्र प्रमातामह अमुक० ॥ ८ ॥ अद्यामुकगोत्र वृद्धप्रमातामह अमुक० ॥ ९ ॥ अद्यामुकगोत्रे मातामहि अमुक० ॥ १० ॥ अद्यामुकगोत्रे प्रमातामहि अमुक० ॥ ११ ॥ अद्यामुकगोत्रे वृद्धप्रमातामहि अमुक० ॥ १२ ॥ अद्यामुकगोत्र ममामुकमित्र ! अमुक० ॥ १३ ॥ अद्यामुकगोत्रे पत्नि अमुकदेवि० ॥ १४ ॥ अद्यामुकगोत्र तनय अमुक० ॥ १५ ॥ अद्यामुकगोत्रे दुहितः अमुक० ॥ १६ ॥ अद्यामुकगोत्र पितृव्य अमुक० ॥ १७ ॥ अद्यामुकगोत्र मातुल अमुक० ॥ १८ ॥ अद्यामुकगोत्र भ्रातः अमुक० ॥ १९ ॥ अद्यामुकगोत्रे पितृभगिनि अमुक० ॥ २० ॥ अद्यामुकगोत्रे मातृभगिनि अमुक० ॥ २१ ॥ अद्यामुकगोत्रे आत्मभगिनि अमुक० ॥ २२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अद्यामुकगोत्र श्वशुर अमुक० ॥ २३ ॥ अद्यामुकगोत्रे श्वश्रु अमुक० ॥ २४ ॥ अद्यामुकगोत्र गुरो अमुक० ॥ २५ ॥ अद्यामुकगोत्र शिष्य अमुक० ॥ २६ ॥ अद्यामुकगोत्र आप्त अमुक० ॥ २७ ॥ अज्ञातनामगोत्राः समस्ताश्रितपितरः तीर्थश्राद्धे एष पिण्डः स्वधा ।

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च । गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवादयः ॥*॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥*॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम । तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥*॥

इति मन्त्रेण सामान्यपिण्डं दद्यात् ।

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः । वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥ १ ॥ मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः । जन्मान्तरे ये मम संगताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥ २ ॥ इति मन्त्रेण एकं पिडं दद्यात् । कुशमूले करं प्रोक्ष्य । सव्येनाचम्य हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । अत्र पितरो० इति जप्त्वा वामावर्तेनोदङ्मुखीभूय श्वासं नियम्य अमीमदन्त० इति दक्षिणाभिमुखन्त्यजेत् ॥ प्रत्यवनेजनम् । अद्यामुकगोत्राः पितृ० तीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वः स्वधा ॥ १ ॥ अद्यामुकगोत्राः माता० तीर्थश्राद्धे० स्वधा० ॥ २ ॥ अद्यामुकगोत्राः समस्ताश्रितपितरः तीर्थश्राद्धे वः० । नीवीं विस्रस्य । सव्येनाचम्य । हरिं स्मृत्वा । अपसव्यम् । सूत्रमादाय । नमो वः पितरो० । एतद्वः पितरो वासः । इति मन्त्रेण प्रत्येकपिण्डेषु सूत्रं दद्यात् । अद्यामुकगोत्राः पितृ० तीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि वः स्वधा ॥ १ ॥ अद्यामुकगोत्राः माता० तीर्थश्राद्धे० स्वधा ॥ २ ॥ अद्यामुक-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोत्राः समस्ताश्रितपितरः तीर्थश्राद्धे० स्वधा० ।। ३ ।। पिण्डेषु गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूल-पूगीफलानि दद्यात् ।। सव्यम् । अघोराः पितरः सन्तु । इति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् । पूर्वाभिमुखः कृताञ्जलिः ।। गोत्रन्नो वर्द्धताम्० । आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखादि च । प्रयच्छन्तु तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः ।। इति पठेत् । अपसव्यम् । पिण्डोपरि सपवित्रकुशाना-स्तीर्य ऊर्जं वहन्ती० इति दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् । नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् । पिण्डा-धारकुशानुल्मुकं चाग्नौ क्षिपेत् । दक्षिणादानम् । अद्यामुकगोत्राणां पित्रादिसमस्तपितॄणां कृतैतत्–अमुकतीथश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं रजतनिष्क्रयभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातु-महमुत्सृजे ।। आमान्नसङ्कल्पः । कृतस्य तीर्थश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दास्यमानं आमान्नं सोपस्करं दक्षिणासहितं यथा० जे ।। एकं ब्राह्मणं भोजयिष्ये वा । तीर्थब्राह्मणपूजनम् ।। रक्षादीपं निर्वाप्य । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ।। सव्यम् । आचम्य । देवताभ्यः पि० ।। ३ ।। गवादिबलिदानम् । अनेन पिण्डदानाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयताम् । प्रमादा० । विष्णवे ।। ३ ।। पिण्डान् तीर्थजले क्षिपेत् । इति लघुदर्पणे तीर्थश्राद्धविधिः समाप्तः ।।

अथ कपिलधाराषोडशी । येषां गर्भे भवेत्स्रावो ये जाताः जननान्मृताः। तेषां तृप्तिर्भवेन्नूनं तीर्थे कापिलधारिके ।। १ ।। अदत्तमौञ्जीदाना ये ये वा दारपरिग्रहाः । तेभ्यो निर्वापितं पिण्डमिद-मक्षय्यतां व्रजेत् ।। २ ।। अग्निदाहे मृता ये वै नाग्निदाहश्च येषु वै । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तीर्थे कापिलधारिके ।। ३ ।। और्ध्वदैहिकहीना ये षोडशश्राद्धवर्जिताः । ते तृप्तिमधिगच्छन्तु घृतकुल्यानि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वा यतः ॥४॥ अपुत्राश्च मृता ये वै येषां नास्त्युदकप्रदः । तेऽपि तृप्तिं परां यान्ति मधुस्त्रवसि तर्पिताः ॥ ५ ॥ अपमृत्युमृता ये वै चौरविद्युज्जलादिभिः । तेषामिह कृतं श्राद्धं जायते सद्गतिप्रदम् ॥ ६ ॥ आत्मघातेन निधनं येषामिह विकर्मणाम् । तेऽपि तृप्तिं लभन्तेऽत्र पिण्डैः शिवगयाकृतैः ॥ ७ ॥ पितृगोत्रे मृता ये वै मातृपक्षे च ये मृताः । तेषामत्र कृतः पिण्डो भवेदक्षय्यतृप्तिदः ॥ ८ ॥ पत्नीवर्गे मृता ये वै मित्रवर्गे च ये मृताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्ति तर्पिता वृषभध्वजे ॥९॥ ब्रह्मक्षत्रविशां वंशे शूद्रवंशेऽन्त्यजेषु च । तेषान्नाम गृहीत्वा च दीयते ते समुद्धृताः ॥ १० ॥ तिर्यग्योनिगता ये वै ये पिशाचत्वमागताः । तेऽप्यूर्ध्वगतिमायान्ति तृप्ताः कापिलधारिके ॥ ११ ॥ ये तु मानुषलोकेऽस्मिन् पितरो मर्त्ययोनयः । ते दिव्ययोनयः सर्वे मधुस्त्रवसि तर्पिताः ॥ १२ ॥ ये दिव्यलोके पितरो पुण्यैर्देवत्वमागताः । ते ब्रह्मलोके गच्छन्ति तृप्तास्तीर्थे वृषध्वजे ॥ १३ ॥ ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन शाश्वतीम् ॥ १४ ॥ असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः । तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥ १५ ॥ उच्छिन्नकुलवंशानां येषां दाता कुले न हि । धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ १६ ॥ इति कपिलधाराश्राद्धविषयकषोडशश्राद्धं समाप्तम् ॥

अथ गयाश्राद्धविधिः—नत्वा गणपतिं देवं श्रीगङ्गाञ्च महेश्वरम् । गयाश्राद्धं प्रकुर्वेऽहं जगन्नाथाभिधानकः ॥ पितृमुक्तिकामो यस्मिन् कस्मिंश्चिद्दिने एकभुक्तादिनियमं कृत्वा यात्रापूर्वदिने गयाश्राद्धं चिकीर्षमाणः करिष्यमाणगयाश्राद्धस्य पूर्वाङ्गभूतौ वपनोपवासौ करिष्ये । इति सङ्कल्पः । तत्र मन्त्रः—आत्मनः शुद्धिकामो वा पितॄणां मुक्तिहेतवे । वपनं कारयाम्यद्य तीरेऽहं तव

॥२५७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाह्नवि ॥ यानि कानि च पापानि स्थूलसूक्ष्माणि यानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात् केशान्वपाम्यहम् ॥ एवं मुण्डनोपवासौ कृत्वा। यात्रादिने प्रातः कृतनित्यक्रिय आसने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सं० करिष्यमाणगयाश्राद्धं कर्तुमद्य गयायात्रानिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशनवग्रहेष्टदेवताश्च पूजयिष्ये--इति सङ्कल्प्य। पञ्चोपचारैस्तत्पूजनं विधाय। देशकालौ० अमुक-गोत्राणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां मातामह-प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां पितृव्यादीनां चाक्षय्यतृप्त्यर्थं करिष्य-माणगयातीर्थयात्रापूर्वाङ्गभूतं घृतप्रधानद्रव्यरूपपार्वणश्राद्धमहं करिष्ये–इति सङ्कल्प्य पार्वणं कुर्यात्। इदं घृतमन्नाद्युपस्करसहितमित्यन्नोत्सर्गवाक्ये विशेषः। त्र्यवरान् विशिष्टब्राह्मणान् यथाविभवं गन्ध-पुष्पादिभिः सम्पूज्य। देशकालौ० अस्मत्पित्रादिसमस्तपितॄणां प्रतिपदमश्वमेधयज्ञजन्यफलसमफल-प्राप्तिकामः करिष्यमाणगयाश्राद्धोद्देश्यकगयातीर्थयात्रामहं करिष्ये–इति सङ्कल्पः। काषायवस्त्रपरि-धानादिरूपकार्पटीवेषं कृत्वा पित्रादीनां स्मरणपूर्वकं श्राद्धशेषं घृतमादाय सुमुहूर्तसमये गृहान्निर्गत्य स्वग्रामे अशक्तौ स्वगृहं वा दुग्धधारया प्रदक्षिणीकृत्य क्रोशाभ्यन्तरवर्तिग्रामान्तरं गत्वा वेषोत्तारणं कृत्वा पवित्रस्थाने निधाय श्राद्धावशेषेण घृतोपस्कृतान्नेन पारणं कुर्यात्। ततो गृहीतकार्पटीवेषो यावत्तीर्थप्राप्तिदिनं नित्यं क्रियोत्तरं गच्छेत्। पुनःपुनायाः प्रार्थना॥ पुनःपुनेति विख्याता पितॄणां तीर्थमुत्तमम्। अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनःपुनाम् ॥१॥ एष वोऽर्घ्यः। पुनःपुनेति यन्नाम्ना पूर्वजैर्विहिता पुनः। पितॄणां तु हितार्थाय गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥ पुनातु वरदा देवी भूतानां हितकारिणी। त्रैलोक्यवन्दिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥३॥ पुनःपुनाजलस्पर्शात् सुतैः पानेऽ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

थवा पुनः । श्राद्धेनैवार्घदानेन मुक्तिर्भवति नान्यथा ॥४॥ पुनःपुनायां स्नानतर्पणश्राद्धानि कुर्यात् । देशकालौ० समस्तपितॄणां अक्षयब्रह्मलोकावाप्त्यर्थे आत्मसहितैकोत्तरशतकुलोद्धारणार्थं पुनःपुनातीर्थे पिण्डदानमहं करिष्ये । ततो गयां दृष्ट्वा साष्टाङ्गं धूलिमध्ये प्रणम्य तीर्थं गच्छेत् । ततः फल्गुसमीपं गत्वा नारिकेलफलाक्षतरजतमञ्जलिना गृहीत्वा । देवदेव जगन्नाथ शङ्खचक्रगदाधर । देहि विष्णो अनुज्ञां मे तत्र तीर्थावगाहने ॥ १ ॥ फल्गुतीर्थ नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम । गृहाणेदं नारिकेलं रजतेन समन्वितम् ॥ २ ॥ फल्गुतीर्थाय नमः । एतत्सर्वप्रदानाय ब्राह्मणाय नमो नमः। इति दद्यात् । ततस्तीर्थोदकेन पादौ पाणी च प्रक्षाल्य सपवित्रः कुशोपग्रहं आचामेत् । देशकालौ० मम समस्तपितॄणां विष्णुलोकावाप्त्यै आत्मनश्च भुक्तिमुक्तिसिद्ध्ये तीर्थप्राप्तिनिमित्तं फल्ग्वां स्नानमहं करिष्ये । फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमादृतः । पितॄणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिसुसिद्धये ॥ इति मन्त्रं पठित्वा स्नायात् । ततः सन्ध्यां नित्यतर्पणञ्च कार्यम् । तत्र विशेषः अमुकगोत्रोऽस्मत्पिताऽमुकशर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा पितरं प्रीणयामीति । एवं पितामहादौ चैवमेव प्रयोज्यम् । ततस्तत्रैव गयाख्यमहातीर्थप्राप्तिनिमित्तकमर्घ्यावाहनादिवर्जितपार्वणश्राद्धं कृत्वा असम्भवे पिण्डदानमात्रं कृत्वा इष्टैः सह भुञ्जीत । नात्र मुण्डनोपवासौ न तूपविशेत् गयायां निषेधात् ॥ इति प्रथमदिनकृत्यम् ॥

अथ द्वितीयदिनकृत्यम् ॥ प्रेतपर्वतं गत्वा तन्मूलभागस्थे ब्रह्मकुण्डे स्नानमहं करिष्ये । तर्पणं कृत्वा पिण्डदानं कुर्यात् । अस्मत्पित्रादीनां स्वर्गकामनया ब्रह्मकुण्डे पिण्डदानमहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिष्ये । ततो गृहीतजलः प्रेतपर्वतमारुह्य पादशौचाचमनादिना शुचिर्भूत्वा । देशकालौ० पित्रादीनां सम्भावितप्रेतभावनाप्रेतत्वविमुक्तिकामः पुनरावृत्तिरहितब्रह्मलोकावाप्तिकामश्च प्रेतशिलायां पिण्डदानमहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य । स्वर्णरेखाङ्किितायां शिलाब्रह्मवेद्यां पिण्डदानं कुर्यात् । ततः नूतनजलपूर्णभाण्डस्फोटनं कार्यम् । अनादिनिधनो देवो भाण्डे तिष्ठति सर्वदा । तस्य तु स्फोटनं कार्यं पित्रादीनां च मे मतम् ॥ ततः पितृगतप्रेतत्वविमुक्तस्वगतप्रेतत्वाभावकामः प्रेतपर्वते मुष्टिमात्रं तिलमिश्रसक्तुनिक्षेपणं तिलमिश्रजलाञ्जलिदानं च करिष्ये—इति सङ्कल्प्य । ये केचित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु सक्तुभिस्तिलमिश्रितैः ॥ इति मन्त्रेण तिलमिश्रान् सक्तून् दक्षिणाभिमुखः प्रेतपर्वते क्षिपेत् । ततः—आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं यत्किञ्चित् सचराचरम् । मया दत्तेन तोयेन तृप्तिमायातु सर्वदा ॥ इति मन्त्रेण तिलयुक्तजलाञ्जलिं दद्यात् । ततस्तीर्थे ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् । ततः प्रेतपर्वतादवरुह्य तत्रैव रामतीर्थे गत्वा देशकालौ० अद्य साम्प्रतजन्मान्तरकृतदुष्कृतविलयप्राप्तिकामो रामतीर्थे स्नानमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । जन्मान्तरशतं साग्रं यत्कृतं दुष्कृतं मया । तत्सर्वं विलयं यातु रामतीर्थाभिषेचनात् ॥ इति मन्त्रं पठित्वा स्नायात् । ततस्तर्पणं कृत्वा देशकालौ० पितॄणां विष्णुलोकगमनकामो रामतीर्थे पिण्डदानमात्रं करिष्ये । ततो महानदीपश्चिमकुलसंलग्नां गयोत्तरस्थां प्रेतशिलां गत्वा देशकालौ० प्रेतत्वविमुक्तिकामः प्रेतशिलायां पिण्डदानमहं करिष्ये । कुम्भस्फोटनम् । इति सङ्कल्प्य पिण्डदानं कुर्यात् । ततः रामशिलायां गत्वा तामारुह्य प्रभासेश्वरसमीपे पित्रादीनां प्रेतत्वविमुक्तिपूर्वकं पितृतृप्तिप्राप्तिकामो रामशिलायां पिण्डदानमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य पिण्डदानं कुर्यात् । ततो राम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राम महाबाहो देवानामभयङ्कर । त्वां नमामीह देवेश मम नश्यतु पातकम् ॥ इति मन्त्रेण रामं नत्वा प्रभासेश्वरं च नत्वा । ततः अन्नादिना काकबलिदानम् । सव्येन । आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च । पापं नाशय देवेश मनोवाक्कायकर्मजम् ॥ इति मन्त्रेण यमायैष बलिर्नमः इति कुशत्रये जलेन भक्तादिना बलिं दद्यात् ॥ ततः प्रभासपर्वतदक्षिणदिगवस्थितनगाख्ये पर्वते । श्वानौ द्वौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यां बलिं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥ यमराजधर्मराजाभ्यामेष बलिर्नमः, इति तयोर्मिलितयोरेकमेवौदनादिना बलिं दद्यात् । ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा । ते काकाः प्रतिगृह्णन्तु भूम्यां पिण्डं मयार्पितम् ॥ काकेभ्यः एष बलिर्नमः इति काकबलिं दद्यात् । इति द्वितीयदिनकृत्यम् ॥

अथ तृतीयदिनकृत्यम्॥ उत्तरमानसं गत्वा दर्भपाणिः सुतीर्थोदकेनाचम्य शिरश्चाभ्युक्ष्य देशकालौ० आत्मविशुद्धिसूर्यलोकादिप्राप्तिपितृमुक्तिकामः उत्तरमानसे स्नानमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य-उत्तरमानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये । सूर्यलोकादिसंसिद्ध्यै सिद्धये पितृमुक्तये ॥ इति पठित्वा स्नानतर्पणं विधाय । देशकालौ० पितॄणामक्षय्यतृप्तिकामनया उत्तरमानसे पिण्डदानमात्रं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य पिण्डदानविधिना कृत्वा उत्तरार्कं गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमो नमो भानवे भर्त्रे सोमभौमज्ञरूपिणे । जीवभार्गवसौरेयराहुकेतुस्वरूपिणे ॥१॥ ततो मौनेन दक्षिणमानसे गत्वा । तदनन्तरगतोत्तरभागस्थे *उदीचीतीर्थे । देशकालौ० पितॄणां विमुक्तिकामः उदीचीतीर्थे स्नानमहं

* स्नातः कनकवद्भासः नरो याति पवित्रताम् । अतः कनखलं लोके ख्यातं तीर्थमनुत्तमम् ॥१॥ मध्ये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करिष्ये इति सङ्कल्प्य स्नायात् । तर्पणश्राद्धेऽपि पितृमुक्तिकामनया पूर्ववत् कुर्यात् ॥२॥ ततो दक्षिणमानसे दक्षिणभागस्थे देशकालौ० आत्मना विशुद्धिसूर्यलोकादिप्राप्तिब्रह्महत्यादिपापसमूहनाशविमुक्तिकामः पितृमुक्तिकामश्च दक्षिणमानसे स्नानमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । दक्षिणमानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये । सूर्यलोकादिसंसिद्ध्यै सिद्धये पितृमुक्तये ॥ १ ॥ ब्रह्महत्यादिपापौघघातनाय विमुक्तये । दिवाकर करोमीह स्नानं दक्षिणमानसे ॥२॥ इति पठित्वा स्नायात् । ततः पितृविमुक्तये तर्पणश्राद्धे पूर्ववत् कार्ये । ततो मौनेनैव दक्षिणार्कस्य पूजां कृत्वा मौनं विसृज्य प्रार्थयेत् । नमामि सूर्यतृप्त्यर्थं पितॄणां तारणाय च । पुत्रपौत्रधनैश्वर्य-स्वायुरारोग्यवृद्धये ॥ ४ ॥ ततोजिह्वालोलतीर्थे गच्छेत् । अद्येह दशलक्षाश्वमेधयज्ञजन्यफलप्राप्त्यर्थं जिह्वालोलातीर्थे स्नानमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य मज्जेत् । ततः पितॄणां विमुक्तिकामनया तर्पणश्राद्धे कुर्यात् । ततः मधुश्रवोदक्षिणे पितामहं सम्पूज्य प्रणमेत् । नमः शिवाय देवाय ईशानपुरुषाय च । अघोरवामदेवाय सद्योजाताय शम्भवे ॥ पुनः तीर्थं गत्वा ततः पित्रादिसमस्तपितॄणां वैष्णवपदनयनकामनया फल्गुतीर्थस्नानं गदाधरस्य दर्शनं पञ्चामृतस्नानं वस्त्रादिभिः पूजनं च कुर्यात् । नमोऽस्तु वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च । प्रद्युम्नायानिरुद्धाय श्रीधराय च विष्णवे ॥ इति प्रार्थयेत् ॥ इति तृतीयदिनकृत्यम् ॥

अथ चतुर्थदिनकृत्यम् ॥ धर्मारण्यं गत्वा कुलसर्वज्ञत्वकामनया सरस्वत्यां स्नानतर्पणश्राद्धानि कार्याणि । सरस्वत्याः पूजनं कृत्वा । तत्र मतङ्गवाप्यां देशकालौ० सर्वपापविमुक्तिकामो मतङ्ग-

---

कनखलं तीर्थं पितॄणां मुक्तिदायकम् । स्नातः कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते ॥२॥ उदीचीतीर्थमित्युक्तं तत्रोदीच्यां विमुक्तिदम् । उदीच्यां मुण्डपृष्ठस्य देवर्षिपितृसेवितम् ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाप्यां स्नानमहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य स्नायात्। ततः पितॄणां अक्षय्यतृप्तिनिष्कृतिकामनया तर्पणश्राद्धे कार्ये। ततो मतङ्गवाप्युत्तरदिगवस्थितमतङ्गेशं गत्वा सम्पूज्य नत्वा। देवताः देवताः सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः। मयाऽऽगत्य मतङ्गेऽस्मिन् पितॄणां निष्कृतिः कृता ॥ इति पठेत्। ततः पितॄणां तारणकामनया कूपयूपयोर्मध्ये श्राद्धं कृत्वा। चलद्दलाय वृक्षाय सर्वदाचलविष्णवे। बोधितत्त्वाय यज्ञाय अश्वत्थाय नमो नमः ॥१॥ एकोदशोऽसि रुद्राणां वसूनामष्टमस्तथा। नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल ॥२॥ अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकालम्। अतः शुभस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि ॥ ३ ॥ अस्वत्थरूपिणं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्। नमामि पुण्डरीकाक्षं शाखारूपधरं हरिम् ॥ ४ ॥ इति श्लोकचतुष्टयेनाश्वत्थं नमेत्। कूपश्चायं मतङ्गवाप्यां आग्नेयकोणेऽवटरूपोऽस्ति। इति चतुर्थदिनकृत्यम् ॥

अथ पञ्चमदिनकृत्यम् ॥ ब्रह्मसरोवरं गत्वा ऋणत्रयविमुक्तिकामः करिष्यमाणतर्पणश्राद्धे पिण्डदानोपयोगिशुद्धिकामश्च ब्रह्मसरोवरस्नानमहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य। स्नानं करोमि तीर्थेऽस्मिन् ऋणत्रयविमुक्तये। श्राद्धं च पिण्डदानाय तर्पणायात्मशुद्धये ॥ इति मन्त्रेण स्नात्वा तर्पणं च कृत्वा पितॄणां तारणकामनया ब्रह्मकूपयूपयोर्मध्ये पूर्ववत् श्राद्धं कुर्यात्। ततः पितॄणां मोक्षप्राप्तये ब्रह्मप्रकल्पिततताम्रवृक्षसेचनमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य। आम्रं ब्रह्मरसोद्भूतं सर्वदेवमयं तरुम्। विष्णुरूपं प्रसिञ्चामि पितॄणां च विमुक्तये ॥ इति मन्त्रेण कुशयुतेन ब्रह्मसरःसमानीताम्रुष्ठितकुम्भोदकेन गोप्रचारसमीपस्थमाम्रं प्रसिञ्चेत्। ततो वाजपेयफलप्राप्तिकामनया ब्रह्मयूपप्रदक्षिणा कार्या। ततः

।।२६३।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मसरोवायव्यकोणे स्थितं ब्रह्माणं सम्पूज्य नमेत्। नमो ब्रह्मणे ज्ञानाय जगज्जन्मादिकारिणे। भक्तानां च पितॄणां च तारणाय नमो नमः ॥ ततः सव्येन पितृमुक्तये यमराजधर्मराजौ निश्चलार्थं स्थिरीकृतौ। ताभ्यां बलिं प्रदास्यामि पितॄणां मुक्तिहेतवे ॥ इत्युक्त्वा यमायैष बलिर्नमः इति सकुशोदकं देववत् यमबलिं दद्यात्। ततः। द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यां बलिं प्रयच्छामि रक्षकौ पथि सर्वदा ॥ इति पठित्वा श्वभ्यामेष बलिर्नमः इतिपूर्ववद् बलिर्देयः। ऐन्द्रवारुणवायव्याः याम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूम्यां पिण्डं मयार्पितम् ॥ इति मन्त्रेण वायसेभ्य एष बलिर्नमः तथैव दद्यात्। ततः काकबलिदाननिमित्ताशुद्धिपरिहारार्थं ब्रह्मसरस्येव स्नानं कुर्यात्। इति पञ्चमदिनकृत्यम् ॥

अथ षष्ठदिनकृत्यम् ॥ फल्ग्वां च प्रातःस्नानादिनित्यकृत्यं विधाय विष्णुपदे श्राद्धं कार्यम्। तत्रात्मनः पापनाशार्थं विष्णुपदं दृष्ट्वा पितृविमुक्तिकामनया स्पृष्ट्वा वैष्णवमन्त्रेण सम्पूज्य। अत्र विष्णुपदं दिव्यं दर्शनात्पापनाशनम्। स्पर्शनात् पूजनाच्चैव पितॄणां मोक्षकारणम् ॥ देशकालौ० पित्रादिसमस्तपितॄणां कुलसहस्रस्य च नरकादिसमुद्धरणपूर्वकं विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं विष्णुपदे पिण्डदानमहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य पिण्डदानं कुर्यात्। एवमेव सर्वपदेषु ज्ञेयम्। तत्र रुद्रपूजा। आत्मसहितपितृशतकुलस्य शिवपुरनयनकामः रुद्रपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ब्रह्मणः पूजा। आत्मसहितकुलशतनरकोद्धरणपूर्वकं ब्रह्मपदप्राप्त्यर्थं ब्रह्मपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ २ ॥ कार्तिकेयस्य पूजा। पितॄणां शिवलोकनयनकामः कार्तिकेयपदे पिण्डदानमहं करिष्ये। इति षष्ठदिनकृत्यम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सप्तमदिनकृत्यम् । दक्षिणाग्नेः पूजा । अद्य वाजपेययज्ञजन्यफलसमफलप्राप्तिकामो दक्षिणाग्निपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ५ ॥ गार्हपत्यस्य पूजा । अद्य राजसूययज्ञजन्यफलप्राप्तिकामो गार्हपत्यपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ६ ॥ आहवनीयस्य पूजा । अद्याश्वमेधयज्ञजन्यफलप्राप्तिकामः आहवनीयपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ७ ॥ सभ्याग्नेः पूजा । अद्य ज्योतिष्टोमयज्ञफलप्राप्तिकामः पि० सभ्यपुरनयनकामः सभ्यपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥८॥ इति सप्तमदिनकृत्यम् ॥

अथ अष्टमदिनकृत्यम् । अद्य पितॄणां सोमलोकप्राप्तिकामः आवसथ्यपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ९ ॥ कश्यपपूजा । अद्य पितॄणां ब्रह्मलोकप्राप्त्यर्थं कश्यपपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ १० ॥ सूर्यपूजा । अद्य पितॄणां सूर्यपुरनयनकामः सूर्यपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ ११ ॥ अगस्त्यपूजा । पितॄणां ब्रह्मपुरनयनकामः अगस्त्यपदे पिण्ड० ॥ १२ ॥ चन्द्रपूजा । अद्य पितॄणां चन्द्रलोकनयनकामः चन्द्रपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ १३ ॥ गणेशपूजा । अद्य पितॄणां ब्रह्मलोकगमनकामो गणेशपदे पिण्डदानमहं क० ॥ १४ ॥ दधीचपूजा । अद्य पितॄणां ब्रह्मलोकनयनकामो दधीचपदे पिण्डदानमहं करिष्ये ॥ कण्वपूजा । पितॄणां ब्रह्मपुरनयनकामः कण्वपदे पिण्ड० ॥ १५ ॥ इति अष्टमदिनकृत्यम् ॥

अथ नवमदिनकृत्यम् । क्रौञ्च० ॥१६॥ मतङ्गपूजा ॥ पितॄणां ब्रह्मलोकनयनकामो मतङ्गपदे पिण्डदानं करिष्ये ॥ १७ ॥ पितॄणां ब्रह्मलोकनयनकामः क्रौञ्चपदे पिण्डदानं करिष्ये ॥ १८ ॥ इति नवमदिनकृत्यम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दशमदिनकृत्यम् । अद्य पितॄणां ब्रह्मलोकनयनकामो इन्द्रपदे पिण्डदानं करिष्ये ॥१६॥ गयायां विष्ण्वादिपदेषु रेखाकरणं अङ्गारभ्रामणं नास्ति । ततः गजकर्णिकायां पितॄणां स्वर्गनयनकामनया शुद्धोदकेन पितृतर्पणं तद्विधिना कार्यम् । तथा सर्वेषां पितॄणां तारणार्थं पदशिलोत्तरभागस्थरथमार्गसमीपस्थानां कनकेश्वरकेदारेश्वरनारसिंहवामनानां पञ्चोपचारैः पूजनं कर्तव्यम् । इति दशमदिनकृत्यम् ॥

अथ एकादशदिनकृत्यम् । महानदीपारस्थे भारताश्रमसन्निधौ सीताकुण्डे स्नात्वा तर्पणं कृत्वा वालुकापिण्डं दद्यात् । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहाः । माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही ॥ १ ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः । तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ २ ॥ इति पुराणमन्त्रमुच्चार्य्य वालुकानिर्मितमेकं पिण्डं दद्यात् । एतानि गन्धादीनि पित्रादिभ्यो नमः ॥ स्त्रीणां सर्वसौभाग्यप्राप्तिकामः रामेश्वरसीतासहितं रामं च नमेत् । राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर । त्वां नमामीह देवेश मम नश्यतु पातकम् ॥ ततो रामेश्वरसन्निधौ पितृकुलशतसहितविष्णुपुरगमनकामनया रामपदे पिण्डदानमात्रं कुर्यात् । तत आचारप्राप्तौ सौभाग्यद्रव्यदानम् । ब्रह्मप्रकल्पितब्राह्मणं संपूज्य । ततो अष्टमतीर्थकृत्यम् । गयाशिरसि गत्वा । आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ १ ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ २ ॥ ततो गयायां संक्षिप्ततर्पणम् । एकवारं तिलाञ्जलिदानम् । अद्य पितॄणां स्वर्गप्राप्तिकामो गयाशिरसि पिण्डदानं करिष्ये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ द्वादशदिनकृत्यम् । ततो गयाकूपं गत्वा । असद्‌गतीनां सद्‌गतिप्राप्त्यर्थं गयाकूपे पिण्डदानं करिष्ये । ततो मुण्डपृष्ठे देविसमीपे गत्वा कुलशतब्रह्मलोकनयनकामो मुण्डपृष्ठे पिण्डदानं करिष्ये । अक्षयब्रह्मलोकप्राप्त्यर्थं देव्याः पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत् । मुण्डपृष्ठे नमस्तुभ्यं प्रेतशिले नमोऽस्तु ते । पितॄणां तारणार्थाय आत्मनो मुक्तिहेतवे ॥ ३ ॥ तत आदिगदाधरं सम्पूज्य प्रार्थयेत् । पञ्चकुष्टं तथा स्पृष्ट्वा पूजयित्वा गदाधरम् । अव्यक्तं ज्ञानरूपं तं नमस्यामि गदाधरम् ॥ ४ ॥ ततो धौतपादं गत्वा पित्रादीनां ब्रह्मलोकनयनकामनया धौतपादे पिण्डदानं करिष्ये । ततः पुण्डरीकाक्षपूजनम् ॥ अथ प्रार्थना । नमस्ते पुण्डरीकाक्ष ऋणत्रयविमोचन । लक्ष्मीकान्त नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृमोक्षद ॥ ततो भस्मकूपस्थितं जनार्दनं सम्पूज्य । जनार्दन नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृरूपिणे । पितृपात्र नमस्तुभ्यं नमस्ते मुक्तिहेतवे ॥ गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः । लक्ष्मीकान्त नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृमोक्षद ॥ इति मन्त्राभ्यां नमस्कुर्यात् । ततो मङ्गलागौरीं गत्वा पूजयेत् । इति द्वादशदिनकृत्यम् ॥

अथ त्रयोदशदिनकृत्यम् । भीमगयां गत्वा अद्य पित्रादिसहितात्मनो विष्णुलोकप्राप्त्यर्थं भीमगयायां पिण्डदानं करिष्ये । ततो गोप्रचारं गत्वा पितॄणां स्वर्गलोकनयनकामो गोप्रचारे पिण्डदानं करिष्ये । ततो गदालोलतीर्थे गत्वा आत्मनः शुद्ध्यर्थमक्षय्यस्वर्गप्राप्तये गदालोले स्नानमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य । गदालोले महातीर्थे गदाप्रक्षालने वरे । स्नानं करोमि शुद्ध्यर्थमक्षय्यस्वर्गप्राप्तये ॥ इति मन्त्रेण स्नायात् । ततः पितॄणां ब्रह्मलोकनयनकामनया तत्र तर्पणं कृत्वा तत्तत्फलकामः तथैव पिण्डदानमात्रं कुर्यात् । इति त्रयोदशदिनकृत्यम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ चतुर्दशदिनकृत्यम् ॥ ततः कृतनित्यक्रियः विष्ण्वादिपदे वेदीं गत्वा आब्रह्मस्तम्ब० इति मन्त्रेण दुग्धतिलमधुमिश्रिततर्पणम् । ततो वैतरण्यां गत्वा । एकविंशतिकुलोद्धरणार्थं पितृणां विष्णुसायुज्यावाप्त्यर्थं स्नानं तर्पणं श्राद्धं गोदानं च कार्यम् । या सा वैतरणी नाम नदी त्रैलोक्यविश्रुता । साऽवतीर्णा गयाक्षेत्रे पितृणां तारणाय वै ॥ इति मन्त्रेण सन्तरणमपि कार्यम् । इति चतुर्दशदिनकृत्यम् ॥

अथ पञ्चदशदिनकृत्यम् । ततो रुक्मिणीकुण्डे एकोत्तरशतकुलोद्धारपूर्वकोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं स्नानं तर्पणं च कुर्यात् । ततः अक्षयवटं च गत्वा । तत्र वटच्छायायामाचारात् वटोत्तरदिग्भागे पाकेनैव श्राद्धं कुर्यात् । कृतापसव्यो दक्षिणाभिमुखः पितॄन् ध्यात्वा । कव्यवाडोऽनलः सोमो यमश्चैवार्यमा तथा । अग्निष्वात्ता बर्हिषदः सोमपाः पितृदेवताः ॥१॥ आगच्छन्तु महाभागा युष्माभी रक्षितास्त्विह । मदीयाः पितरो ये च कुले जाताः सनाभयः ॥२॥ तेषां पिण्डप्रदानार्थमागतोऽस्मि गयामिमाम् । तेसर्वे तृप्तिमायान्तु श्राद्धेनानेन शाश्वतीम् ॥३॥ इति पितॄन् ध्यात्वा तिलान् प्रक्षिपेत् । सव्यं कृत्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य । पुण्डरीकाक्षाय नमः । इति श्राद्धीयद्रव्याणि कुशोदकेन सम्प्रोक्ष्य देशकालौ स्मृत्वा । अद्य पितृणामक्षय्यतृप्त्यर्थं स्वस्य सर्वपितृणां शाश्वतब्रह्मलोकार्थं मोक्षार्थं च अक्षयवटे श्राद्धमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य तीर्थश्राद्धविधिना कुशास्तरणादि आप्त-बन्धु-बान्धववर्गाणां पिण्डदानपर्यन्तं कृत्वा । मुष्टिमात्रप्रमाणेन आर्द्रामलकमात्रतः । शमीपत्रप्रमाणाद्वा गयापिण्डो विधीयते ॥ ततस्तद्दक्षिणतः कुशानास्तीर्य । तिलजलान्यादाय । अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषां न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विद्यते । आवाहयिष्ये तान् सर्वान् कुशपृष्ठे तिलोदकैः ॥ मातामहवंशे गति० । एवं बन्धुवर्गे ग० । इत्यावा० पिण्डं दद्यात् । अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते । तेषामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥ १॥ कृतापसव्यो दक्षिणाभिमुखः पितॄन् ध्यात्वा । देशकालौ स्मृत्वा । मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते । तेषामु० ॥२॥ बन्धुवर्गकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते । तेषामु० ॥ ३ ॥ अजातदन्ता ये केचिद्ये च गर्भे प्रपीडिताः । तेषामु० ॥४॥ अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे । विद्युच्चौरहता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥५॥ दवदाहमृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये । दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिर्वापि तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥६॥ उद्बन्धनमृता ये च विषशस्त्रहताश्च ये । आत्मनो घातिनो ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥७॥ अरण्ये वर्त्मनि वने क्षुधया तृषया हताः । भूतप्रेताः पिशाचाश्च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ८ ॥ रौरवे चान्धतामिस्रे कालसूत्रे च ये गताः । तेषामु० ॥ ९ ॥ असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः । तेषामु० ॥ १०॥ अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोकं च ये गताः । तेषामु० ॥११॥ असंख्ययातनासंस्था ये नीता यमशासनैः । तेषामु० ॥१२॥ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः । तेषामु० ॥ १३ ॥ पशुयोनिगता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः । अथवा वृक्षयोनिः स्यात्तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ १४ ॥ जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा । मानुष्यं दुर्लभं तेषां तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥१५॥ दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः पितरो बान्धवादयः । हता असंस्कृता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥१६॥ ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा ॥१७॥ येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः । तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१८॥ पितृवंशे मृता ये च मातृ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवादयः॥ ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१९॥ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः। कुलद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥ मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः। जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥ २० ॥ उच्छिन्नकुलवंशानां येषां दाता कुले न हि। धर्मपिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ २१ ॥ तत्पिण्डदक्षिणतः कुशानास्तीर्य्य। अस्मत्कुले मृता याश्च गतिर्यासां न विद्यते। आवाहयिष्ये ताः सर्वाः दर्भपृष्ठे तिलोदकैः ।।२।। मातामहकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। आवा० ॥२॥ बन्धुवर्गकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। आवा० ॥३॥ पूर्ववत्तिलाद्येकाञ्जलिदानरूपस्त्रीणामावाहनं कृत्वा मात्रादिभ्यो नमः। इति गन्धपुष्पैः सम्पूज्य आस्तृतकुशेषु यथासम्भवम्–अज्ञातनाम्नीभ्यः पूर्ववत् पिण्डं दद्यात्। अस्मत्कुले मृता याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥१॥ मातामहकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामु० ॥२॥ बन्धुवर्गकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामु० ॥३॥ अजातदन्ता या काश्चिद्याश्च गर्भे प्रपीडिताः। तासामु० ॥४॥ अनग्निदग्धाश्च या काश्चिन्नग्निदग्धास्तथा पराः। विद्युच्चौरहता याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ५ ॥ दवदाहे मृता याश्च सिंहव्याघ्रहताश्च याः। दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिर्वापि ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ६ ॥ उद्बन्धनमृता याश्च विषशस्त्रहताश्च याः। आत्मघाते मृता याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ७ ॥ अरण्ये वर्त्मनि वने क्षुधया तृषया हताः। भूतप्रेतपिशाचाश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ८ ॥ रौरवे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चान्धतामिस्रे कालसूत्रे च या गताः। तासामुद्धरणार्थाय इमं पिण्डं ददाम्यहम् ॥ ९ ॥ असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च या गताः । तासामु० ॥१०॥ अनेकयातनासंस्थाः या नीता यमशासनैः। तासा० ॥ ११ ॥ असंख्ययातनासंस्था या नीता यमशासनैः। तासा० ॥ १२ ॥ नरकेषु समस्तेषु यातनायां च संस्थिताः। तासा० ॥१३॥ पशुयोनिगता याश्च पक्षिकीटसरीसृपाः। अथवा वृक्षयोनिस्थास्ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ १४ ॥ जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा। मानुष्यं दुर्लभं यासां ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥१५॥ दिव्यन्तरिक्षभूमिस्था मातरो बान्धवादयः। मृता असंस्कृता याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम् ॥ १६ ॥ याः काश्चित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते मातरो मम। ताः सर्वास्तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा॥१७॥ या बान्धव्यो ह्यबान्धव्यो वा बान्धव्योऽन्यजन्मनि। तासां पिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥१८॥ पितृवंशे मृता याश्च मातृवंशे च या मृताः। गुरुश्वशुरबन्धूनां बान्धव्योऽन्या मृताश्च याः॥१९॥ या मे कुले लुप्तपिण्डाः पतिपुत्रविवर्जिताः। क्रियालोपगता याश्च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तासां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः। कुलद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥२०॥ मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षाः स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः। जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च ताभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥२१॥ उच्छिन्नकुलवंशानां यासां जाता कुले न हि। धर्मपिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥ २२ ॥

अथ मातृषोडशी ॥ आगर्भज्ञानपर्यन्तं पालितो यत्त्वया ह्यहम् । आवाहयामि ता मातर्दर्भपृष्ठे तिलोदकैः ॥ १ ॥ गर्भे दुर्गमने दुःखं विषमे भूमिवर्त्मनि । तस्या निष्क्रमणार्थाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥२॥ यावत्पुत्रो न भवति तावन्माताथ शोचते । तस्या० ॥२॥ मासि मासि कृतं कष्टं वेदना प्रसवेषु च । तस्या० ॥३॥ यत् पूर्णे दशमे मासि चात्यन्तं मातृपीडनम् । तस्या० ॥४॥ पद्भ्यां प्रजायते पुत्रो जनन्याः परिवेदनम् ॥ तस्या० ॥ ५ ॥ शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते माता विन्दति दुष्कृतम् । तस्या० ॥ ६ ॥ पिबन्ती कटुद्रव्याणि क्वाथानि विविधानि च । तस्या० ॥७॥ अग्निना शुष्कदेहा वै त्रिरात्रोपोषणेन च । तस्या० ॥८॥ रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां भिद्यन्ते मातृकर्मठाः । तस्या० ॥ ९ ॥ दिवारात्रौ च या माता ददाति निर्भरस्तनम् । तस्या० ॥१०॥ माघे मासि निदाघे च शिशिरेऽत्यन्तदुःखिता । तस्या० ॥ ११ ॥ क्षुधया विह्वले पुत्रे ह्यन्ने माता प्रयच्छति । तस्या० ॥१२॥ पुत्रो व्याधिसमायुक्तो माता हाऽक्रन्दकारिणी । तस्या० ॥ १३ ॥ यमद्वारे महाघोरे पथि माता च शोचति । तस्य० ॥ १४ ॥ अल्पाहारस्य करिणी यावत्पुत्रश्च बालकः । तस्या० ॥१५॥ गात्रभङ्गो भवेन्मातुः मृत्युरेव न संशयः । तस्या० ॥ १६ ॥ इत्थं पिण्डदानं कृत्वा श्वासं नियम्येत्यादि दक्षिणादानान्तं कृत्वा (यस्याः पुत्रो गयां गत्वा निष्कृतिः स्यात् सुखानि च । तारयेत् सर्वगोत्राणां त्रिषु लोकेषु पूजितः ॥) ततो यथासम्भवं दानानि कुर्यात् । (स्वर्णं रौप्यं तथा ताम्रं कांस्यं गावो गजो हयाः । गृहं भूमिर्वृषो वस्त्रं शय्या छत्रमुपानहौ ॥ दास्यन्नं पितृयज्ञेषु दानं षोडशकं स्मृतम् ॥) अन्यानि रथशिबिकादीनि च दद्यात् । पितृविमुक्तिकामः इदं शय्यानिष्क्रयद्रव्यं ब्रह्मकल्पितविप्राय तुभ्यमहं सम्प्रददे । स्वस्तीति विप्रः । ततो गोनिष्क्रयद्रव्यं ब्राह्मणाय दद्यात् । ततः अद्य पितृतृप्तिकामः अक्षयवटे ब्रह्मकल्पितान् ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये । ततः सर्वेषु पिण्डेषु तिलयुतजलपूर्णपात्रेण प्रदक्षिणं वारत्रयं परिषेचनं च कार्यम् । तत्र मन्त्राः । ये च वो ये चास्मान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वासंशंते च वहन्तां ताश्च वहन्तां तृप्यन्तु भवन्तस्तृप्यन्तु तृप्यत २ "पुत्रान्पौत्रा-नाभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः। स्वधा पितृभ्यो अमृतं दुहानां आपोदेव्यः रुभयांस्तर्पयन्तु ॥" पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत्। ततः प्रणिपत्य पित्रादयो न्यूनातिरिक्तं क्षमध्वमिति तान् विसृजेत्। ततः सव्येनाचम्य साक्षिणः सन्तु मे देवाः ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितृणां निष्कृतिः कृता ॥ आगतोऽस्मि गयादेव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात् ॥ इति प्राङ्मुखः पठेत्। श्राद्धान्ते तीर्थसाफल्यं ब्राह्मणो मम वाचयेत्। ततः पितृलोकब्रह्मलोकनयनकाम-नया प्रतिमारूपं वटेशदर्शनं पूजां च कुर्यात्। एकार्णवे वटस्याग्रे यः शेते योगनिद्रया। बालरूपधर-स्तस्मै नमस्ते योगशायिने ॥ ततः संसारवृक्षशस्त्राय सर्वपापक्षयाय च। अक्षय्यब्रह्मदात्रे च नमोऽ-क्षयवटाय च ॥ इति मन्त्रेण वटं नमेत्। ततः प्रपितामहं सम्पूज्य प्रणमेत्। कलौ माहेश्वरा लोका येन त्वस्माद् गदाधरः। लिङ्गरूपो भवेत्तं च वन्दे श्रीप्रपितामहम् ॥ ततो गायत्रीतीर्थं गत्वा। स्वकुले ब्राह्मण्याविच्छेदकामो गायत्रीतीर्थे स्नानसन्ध्यावन्दनतर्पणश्राद्धानि करिष्ये—इति सङ्कल्प्य तानि क्रमेण कुर्यात्। कार्पटीवेषत्यागः। एवं गयायात्रां सम्पाद्य निर्गमनसमये गदाधरं सम्पू-ज्य प्रार्थयेत्। गदाधरं गयावासं पित्रादीनां गतिप्रदम्। धर्मार्थकाममोक्षार्थं योगदं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ देहेन्द्रियमनोबुद्धिप्राणाहङ्कारवर्जितम्। नित्यशुद्धं बुद्धिमुक्तं सत्यं ब्रह्म नमाम्यहम् ॥ २ ॥ आनन्दमव्ययं देवं देवदानववन्दितम्। देवदेवं सर्वपूज्यं सर्वदा प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥ कलिकल्म-षकालार्तिदलनं वनमालिनम्। पातालाखिललोकेशं कुलोद्धारणकारणम् ॥ ४ ॥ व्यक्ताव्यक्तविभ-क्त्यादि-विभक्तात्मानमात्मना। स्थितं परतरं सारं वन्दे साराद्यमर्दनम् ॥ ५ ॥ आगतोऽस्मि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गयां देव० । साक्षिणः सन्तु मे देव० इत्यादि श्लोकद्वयं पठेत् । इति प्रार्थना । इति पञ्चदशदिनात्मकं कृत्यम् ॥ यदा कदाचिद्वा क्रमेण नित्यक्रमेण वा यथाशक्ति कार्याणि ॥ ततो गयाया आगत्य ग्रामसमीपे ग्रामान्तरे स्थित्वा प्रातः कृतनित्यक्रियो गणेशादिदेवताः सम्पूज्य अद्य कृतगयातीर्थे यात्रोत्तराङ्गभूतं पार्वणश्राद्धं कृत्वा ब्राह्मणान् सम्पूज्य ग्रामं प्राप्य पूर्ववत्तं ग्रामं प्रदक्षिणीकृत्य स्वगृहसमीपमागत्य पितरं ध्यायन् गृहं प्रविश्य श्राद्धशेषघृतं प्राशयेत् ॥ इति लघुदर्पणे गयाश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ संक्षिप्तगयाश्राद्धविधिः । चैत्रवैशाखाश्विनपौषमाघफाल्गुनान्यतममासे यात्रा कार्या। यात्रामध्ये आशौचे रजसि वा शुद्धिपर्यन्तं स्थित्वा तदनन्तरं गच्छेत् । विवाहदुर्गयज्ञेषु यात्रायां तीर्थकर्मणि । न तत्र सूतकं तद्वत्कर्म यज्ञादि कारयेत् ॥ पूर्वदिने मुण्डनं विधाय । मुण्डयेत्सर्वगात्राणि कक्षोपस्थशिखां विना । आत्मनः शुद्धिकामो वा पितॄणां मुक्तिहेतवे ॥ वपनं कारयाम्यद्य तीरेऽहं तव जाह्नवि ॥ यानि कानि च पापानि स्थूलसूक्ष्माणि यानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम् ॥ मणिकर्णिकातीर्थे श्राद्धं कृत्वा पिशाचमोचनतीर्थे श्राद्धपूर्वकोपवासश्च । द्वितीयदिने देशकालौ० अद्य करिष्यमाणगयायात्रानिर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं गणेशनवग्रहेष्टदेवतानां च यथाशक्ति पूजनमहं करिष्ये । देशकालौ० पित्रादिसमस्तपितॄणां करिष्यमाणगयातीर्थयात्रापूर्वाङ्गभूतं घृतप्रधानद्रव्यकं पार्वणश्राद्धमहं करिष्ये । इदं घृतमन्नाद्युपस्करसहितमित्यन्नोत्सर्गवाक्ये विशेषः । ३ ब्राह्मणान् सम्पूज्य । देशकालौ० अस्मत्पित्रादिसमस्तपितॄणां प्रतिपदमश्वमेधयज्ञजन्यफलसम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फलप्राप्तिकामोऽद्य गयातीर्थयात्रामहं करिष्ये। मुहूर्तसमये काषायवस्त्रपरिधानादिरूपकार्पटीवेषं कृत्वा। पित्रादीनां स्मरणपूर्वकं स्वग्रामं अशक्तौ स्वगृहं वा दुग्धधारया प्रदक्षिणां विधाय क्रोशाभ्यन्तरे श्राद्धशेषघृतोपस्कृतान्नेन पारणं कुर्यात्। पुनःपुनायाः प्रार्थना––पुनःपुनेति विख्यातं पितॄणां तीर्थमुत्तमम्। अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनःपुनाम्॥ पुनःपुनायां स्नानतर्पणश्राद्धानि कुर्यात्। मम पित्रादिसमस्तपितॄणामक्षय्यब्रह्मलोकप्राप्त्यर्थं आत्मसहितैकोत्तरशतकुलोद्धारणार्थं पुनः-पुनातीर्थे पिण्डदानं करिष्ये। ततो गयां दृष्ट्वा साष्टाङ्गं प्रणम्य प्रवेशयेत्। ततो नारिकेलं गृहीत्वा। देवदेव जगन्नाथ शङ्खचक्रगदाधर। देहि विष्णो अनुज्ञां मे त्वत्तीर्थस्यावगाहने॥ फल्गुतीर्थ नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम। गृहाणेदं नारिकेलं सुवर्णेन समन्वितम्॥ एतत्सर्वं प्रदानीयं ब्राह्मणाय नमो नमः। ततस्तीर्थोदकेन पादौ पाणी च प्रक्षाल्य। सपवित्रकुशोपग्रहं आचामेत्। गयातीर्थाय नमः इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा। अद्येत्यादि० अश्वमेधसहस्रयज्ञफलसमफलप्राप्तिकामो फल्गुतीर्थस्नानमहं करिष्ये। फल्गुतीर्थे पुण्यजले करोमि स्नानमादृतः। पितॄणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥ इति मन्त्रं पठित्वा स्नायात्। ततो सन्ध्यानित्यतर्पणं च कार्यम्। तर्पणेन पितरं प्रीणयामि इति विशेषः। गयातीर्थप्राप्तिनिमित्तकपिण्डदानं कुर्यात्। पिण्डांस्तु तीर्थजले एव क्षिपेत्। इति प्रथम-दिनकृत्यम्। ततः फल्गुतीर्थे प्रातःस्नादिकृतनित्यक्रियः विष्णुपदसमीपं गत्वा विष्णुदर्शनं स्पर्शनं पूजनं च कुर्यात्। अत्र विष्णुपदं दिव्यं दर्शनात्पापनाशनम्। स्पर्शनात्पूजनाच्चापि पितॄणां च विमु-क्तिदम्॥ तत आत्मसहितसहस्रकुलोद्धरणपूर्वकविष्णुलोकनयनकामो विष्णुपदे पिण्डदानमहं करिष्ये– इति सङ्कल्प्य पिण्डदानं कुर्यात्। अक्षयवटं गत्वा। अद्य पितॄणां अक्षय्यतृप्तिकामोऽक्षयवटतले

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पिण्डदानमहं करिष्ये । यथासम्भवं दानानि दत्वा पित्रादीनां अक्षय्यतृप्तिकामनया ब्राह्मणान् भोजयेत् । कोटिब्राह्मणभोजनजन्यफलसमफलप्राप्तिकामोऽक्षयवटतले एकं ब्राह्मणं भोजयिष्ये । गदाधराय नमः । निर्गमनसमये गदाधरं सम्पूज्य प्रार्थयेत् । साक्षिणः सं० । ततो गयाया आगत्य स्वग्रामसमीपे ग्रामान्तरे स्थित्वा कृतनित्यक्रियो कृताया गयायात्रायाः परिपूर्णकामो गणेशादिदेवताः सम्पूज्य अद्य पित्रादीनां कृतगयायात्रोत्तराङ्गभूतं पार्वणं कृत्वा ब्राह्मणान् सम्पूज्य स्वग्रामं प्राप्य तं प्रदक्षिणीकृत्य स्वगृहं प्रविश्य श्राद्धशेषघृतं प्राशयेत् । आचार्याय प्रदातव्यं वस्त्रग्रामसुवर्णकम् । श्राद्धं सम्पूर्णतां यातु प्रसादाद्भवतां मम ॥ इति लघुदर्पणे संक्षिप्तगयाश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ पुराणोक्तसपिण्डीकरणश्राद्धश्लोकाः ।

ये समाना० । पितरो यमराज्ये ये तेषां स्थानं भवत्वतः । सपिण्डनात्तु प्रेतस्य नमो यज्ञः प्रकल्पताम् १
तेषां पितॄणां कृपया लक्ष्मीर्भवतु नः शतम् । जीवेषु मामका ये च कर्म भोक्तुं व्यवस्थिताः २

अथैकोद्दिष्टश्राद्धश्लोकाः ।

गायत्री० । वरेण्यं सवितुर्विष्णोर्महादेवस्य धीमहि । गायन्तं त्रायते यस्माद् बुद्धिर्यो नः प्रचोदयात् १
अपह० । असुरा राक्षसाश्चात्र ये पितॄणामरातयः । स्थानादस्माद् व्रजन्त्वस्मात्तिलप्रक्षेपगान्मम २
आयन्तु० । आयन्तु नः पितरोऽत्र अग्निष्वात्तापितृकृतौ । पथिभिर्देवयानैस्तुष्टाश्चान्नेन नस्तथा ३
अधिब्रुवन्तु तेऽवन्तु पुत्रपौत्रादिसंयुतान् । शन्नो देवी सन्तु शन्न अपो देव्यः पितॄणामिष्टसिद्धये ॥ कल्याणाय च पानाय स्रवन्त्वभिमुखं सदा ॥ ४ ॥ तिलोसि० ॥ तिलस्थाः सोमदैवत्याः

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोसवादेव निर्मिताः । अद्भिः पृक्तान्पितॄन् लोकान् प्रीणितान् वो नमो नमः ॥ या दिव्या० । आपः शिवाय नः सन्तु पयसा संयुताः सदा । दिव्याश्चैवान्तरिक्षायाः यज्ञिया रजतप्रभाः ॥ ६ ॥ ताहूता ब्राह्मणकरे सुखदा नो भवन्तु ह । पार्थिवा मधुराः स्निग्धाः पितॄणां सुखवर्धनाः ॥७ मधुव्राता० । वातामधुवहन्तु ते क्षरन्तु मधुसिन्धवः । मधुमत्यो नऽओषध्यो मधुनक्तं मधूषसः ॥ पार्थिवं नोस्तु मधुमद्रजो द्यौरस्तु नो मधुः । मधुमान् पिता स्यात्सम्यक् मधुमान्नो वनस्पतिः ॥ ८ ॥ मधुमान्नः सूर्यश्चास्तु कर्मसिद्धिफलप्रदः । गावः सन्तु मधुमत्यः पितॄणां कव्यसाधिकाः ॥ ९ ॥ पृथिवीते० । पृथीवीते पात्रं द्यौपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृते । हुतशेषं जुहोमि त्वाममृतं पितृतुष्टये ॥१०॥ इदं विष्णु० । विश्वं विचक्रमे विष्णुरिदं त्रेधा पदं दधे । पदान्तरमूढमस्यपांसुलेक्षरसंज्ञितम् ॥११॥ अप-हता० । असुराश्चैव रक्षांसि श्राद्धवेद्यां समाश्रिताः । स्थानादस्माद् व्रजन्त्वाशु रेखां दृष्ट्वापसारिताः ॥१२॥ ये रूपाणि० । असुरा देवकव्यार्थं चरन्ति श्राद्धभूमिगाः । निषेधयतु तानग्निरुन्मुकभ्राम-णेन मे ॥१३॥ अत्र पितृ० । पितरत्र मादयस्व पिण्डे स्वं भागमेत्य तु । वृषण्वसुवाय्योसि करोतु मयि शोभनम् ॥१४॥ अमीमदन्त० । हृष्टो प्रदत्तपिण्डेन यथाभागमवाप्य च । पिण्डमभ्यर्थना-मद्य शृणुष्व सेविधस्व मे ॥१५॥ उर्ज्जं वहं० । आप ऊर्ज्जं पितॄणां स्थ अन्नदा अमृतं घृतम् । पयः कीलालं च तथा परिश्रुतमितीरितम् ॥ १६ ॥

अथ पार्वणश्राद्धश्लोकाः ।

विश्वेदेवासः० । विश्वेदेवा ममाह्वानं शृणुतास्मिंस्तु बर्हिषि । अन्तरिक्षे दिवि भूमौ स्थिताश्चा-सन्हविर्भुजः ॥१॥ यवोसि० । यवशत्रून् भिन्नमतीन् स्वसंघेभ्यः कुरुष्व वै । सहजाः शत्रवो ये च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृत्रिमा यान्तु नाशनम् ॥२॥ विश्वेदेवा शृ०। आसाद्यास्मिन् मादयध्वं हृष्टा भवन्ति नित्यशः। प्रयच्छत ममाभीष्टं दिव्यरूपाः समर्चिषः॥ उशन्तस्त्वा०। श्राद्धीयहविरिद्धन्तः पितरो ये व्यवस्थिताः। तान्पितृनाह्वयाम्यद्य हविपस्त्वदनाय वै॥ अग्नये कव्यवाहनाय नमः। सोमाय पितृमते नमः। अत्र पितरो०। मादयध्वं वै पितरः पिण्डे स्वे भागमेत्यात्तु। वृषा इव सुवीर्याः स्थ मयि कुर्वन्तु शोभनम्॥ अमीमदन्त०। दृष्ट्वा मद्दत्तपिण्डेन यथाभागमवाप्य च। पिण्डमभ्यर्थनामद्य शृणुध्वं शं विधत्त मे॥ नमो वः पित०। रसाय वोऽस्तु पितरः शोषाय च नमो नमः। नमो जीवाय पितरो ह्यन्नरूपाय वो नमः॥ घोराय वोऽस्तु पितरो नमोऽस्त्वथ च मन्यवे। नमः पितरः पितरोऽथो नोदत्त गृहान् वरान्॥ पितरः सत्तो गृहे च द्रव्याणि दास्यामहे हविः॥ वाजे वाजे०। श्राद्धवन्तः पितरो वाजे वाजेऽवतामृताः। धनेषु नश्च सत्यज्ञा विप्राः पिबत तन्मधु॥ यूयं पीत्वा मादयध्वं तृप्ता यात सुवर्त्मभिः। देवयानैः स्वर्गपदं सुखार्थं पददायकाः॥ आमा वाज०। फलं श्राद्धान्नदानस्य ममाऽऽयातु पुनः पुनः। पृथिवी स्वर्गकल्याणं चाप्यागच्छतु मामथ॥ पितर्मातश्च श्राद्धाहे आगच्छेथां युवां तथा। राजा सोमः पितॄणाञ्चामृतत्वामृतप्रदः॥ इति लघुदर्पणे पार्वणश्राद्धश्लोकाः॥

॥ अथ गयाहवनविधिः ॥

कर्ता आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ० मम पित्रादिसकलपितॄणां एकविंशतिकुलोद्धरणार्थं कृतस्य गयाश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थञ्च श्रीगदाधरदेवताप्रीत्यर्थं गयाहवनकर्माहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपतिपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा आचार्यादीन् वृणुयात्। आचार्यः सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य। सर्वतोभद्रे मण्डलदेवानावाह्य सम्पूज्य च। तदुपरि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलशं संस्थाप्य । तत्र सौवर्णगयागदाधरप्रतिमां संस्थाप्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यपुण्डरीकाक्षः पितृमुक्तिप्रदो भव ॥ ततोऽग्निं प्रतिष्ठाप्य । ग्रहानावाह्य सम्पूज्य । ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा ग्रहहोमः कार्यः । प्रधानहोमः ॥ इदंविष्णु० गयागदाधराय स्वाहा ॥ १०८ ॥ मण्डलदेवताहोमः । स्विष्टकृदादिप्रणीताविमोकान्तं कृत्वा आचार्यादिभ्यो दक्षिणां दद्यात् । ततो ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः । ततोऽभिषेकः । स्थापितदेवतानां उत्तरपूजां कृत्वा पीठमाचार्याय दद्यात् । ततोऽग्निं विसृज्य । भूयसीं दत्त्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात् । इति श्रीकाशीपुरनिवासिमालवीयजातिकालीचरणसूनु-जगन्नाथद्विवेदिसंगृहीते लघुदर्पणे गयाहवनविधिः ।

अथ विधवाकर्तृकगयाहवनविधिः ।

पवित्रेस्थोहि यो विष्णुः सवितुः प्रसवेश्च यः । स पुनातु पवित्रेण छिद्रेणेष्वथ रश्मिभिः ॥१॥ यत्त्वगस्थिगतं० । गवामङ्गे० । सुमुखश्चैक० । देशकालौ० अमुकगोत्रा अमुकदेवी स्वभर्तृश्वशुरादीनां मम पित्रादिसकलपितृणां च उद्धरणार्थं गयाश्राद्धकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं श्रीगयागदाधरदेवताप्रीत्यर्थं गयाहवनकर्माहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन तत्रादौ गणेशाम्बिकयोः पू० । हेरम्ब० । अस्यै प्राणाः० । पञ्चामृत० । श्रीखण्डम्० । अक्षताः० माल्यादी० । नानापरिमल० । वनस्पति० । साज्यं च० । नैवेद्यम्० । चन्दनम्० । पूगीफलं० । हिरण्यगर्भ० । विघ्नेश्वराय० । इति गणपतिपूजनम् ।

अथ कलशस्थापनम् । पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । कलशाधारभूतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥ यवोसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः । प्राणिनां जीवनोपायः कलशाधः क्षिपाम्यहम् ॥ २ ॥ कला कला हि देवानां दानवानां कला कला । संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन उच्यते ॥ ३ ॥ आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरव्ययः । प्राणिनां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम् ॥ ४ ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥५॥ सर्वौषध्यः सुगन्धाढ्याः दिव्यवृष्टिसमुद्भवाः । कलशाप्यायनकरा मङ्गलाय क्षिपाम्यहम् ॥ ६ ॥ दूर्वे अमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे । शतम्मे हर पापानि शतमायुर्विवर्द्धिनो ॥ ७ ॥ यज्ञीयवृक्षसम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुभान् । अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥ ८ ॥ अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् वल्मीकात् संगमाद् ह्रदात् । राजद्वाराद् गोकुलाच्च मृत्स्नां वै कलशे क्षिपे ॥ ९ ॥ इदं फलं मया सम्यक् संक्षिप्तं कलशे यतः । तेनायं कलशः सम्यक् फलवा-नस्तु सर्वदा ॥ १० ॥ रत्नगर्भाभवद् भूमी रत्नगर्भाढ्यभूधराः । कलशो रत्नगर्भः स्यात् तस्माद्र-त्नान्यहं क्षिपे ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपा-म्यहम् ॥ १२ ॥ शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् । सुवेषधारि वस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम् ॥१३॥ धान्यपूर्णमिदं पात्रं स्थापितं कलशे यतः । तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः॥१४॥ श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम् । लक्ष्मीदं फलदं नित्यं कलशे स्थापयाम्यहम् ॥१५॥ अस्मिन् कल० । देवदानव० । अवनी ० । दीर्घा० । त्रिपदा त्रीणि लोकान्वै व्याप्य तिष्ठतु यो विभुः । तेन सत्येन भो विप्राः सर्वधर्माणि धारयन् ॥ तेनायु० । शिवा० । दीर्घायु० । यं कृत्वा० । वर्तते तमहं नत्वा भवद्भि० ष्ये । व्रतजप० । समाप्रसी० । प्रस० । शान्तिरस्तु अहोरात्रे० । शुक्राङ्गार० । पुरोनु० । ब्रह्मा पुण्यं० । भो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बायाः सपरिवारायाः गृहे अद्य करिष्यमाणगयायात्राहवनकर्मणः पु०। सागरस्य० । स्वस्तिर्या० । आयुष्मत्यै स्वस्ति । मृकण्ड० । शिवगौरी० । प्रजापति० । इति पुण्याहवाचनम् । अभिषेकः । देवस्य जनवर्गस्य प्रसूता अघहारिणः । इन्द्रियेणाभिषिञ्चामि बलायुःश्रीविवृद्धये ॥ तोरणमातृभ्यो नमः । गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु मातरः। अथ वसोर्द्धारा । नमोऽस्तु वसुमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च । गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थप्रसाधिकाः ॥ २ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती । माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥ ३ ॥ आयुष्यमन्त्रजपः—यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु । ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥ दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः । अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ २ ॥ सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च । अविनाश्यायुषा तद्वद् जीवेम शरदः शतम् ॥ ३ अथ विधवायाः नान्दीश्राद्धक्रमः । चत्वारः पार्वणाः प्रोक्ता विधवायाः सदैव हि । स्वभर्तृश्वशुरादीनां मातापित्रोस्तथैव च ॥ ततो मातामहानां च श्राद्धदानमुपक्रमेत् ॥ अथ प्रकारान्तरम् । स्वभर्तृप्रभृतिभ्यस्त्रिभ्यः स्वपितृभ्यस्तथैव च । विधवा कारयेच्छ्राद्धं यथाकालमतन्द्रिता ॥ सत्यवसुसंज्ञ० । गोत्राः स्वभर्तृश्वशुरप्रश्वशुराः [स्वभर्तृततपितृपितामहाः] नान्दी० ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः नान्दी० ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दी० ॥ ४ ॥ वरणम् । आचार्यस्तु० । यथा चतुर्मुखो० ॥ २ ॥ अस्य यागस्य ॥ ३ ॥ अस्मिन् गयाहवनकर्मणि यजमान्या वृतोऽहं आचार्यकर्म करिष्ये । यदत्र सं० ॥ अपसर्प०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ २ ॥ अपक्रा० ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचा० । गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् । सर्व-
स्थलविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं करोम्यहम् ॥ वं इत्यालोड्य । गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिःकुशोदकैः । एकीकृ-
तैरहं शुद्धये प्रोक्ष्यामि वसुधामिमाम् ॥ सर्वतोभद्रस्थकलशे गदाधरं सम्पूज्य । अग्निस्थापनादि
कृत्वा नाममन्त्रेण ग्रहप्रधानमण्डलदेवताहोमः । अग्नये स्विष्ट० । नवाहुतिः । अग्नये स्वाहा ।
इदमग्नये न मम ॥ १ ॥ वायवे स्वाहा । इदं वायवे न० ॥ २ ॥ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय न०
॥ ३ ॥ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न० ॥ ४ ॥ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्यां
न मम ॥५॥ अग्नये अयसे स्वाहा । इदमग्नये अयसे न० ॥६॥ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो
देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादितये स्वाहा । इदं वरुणायादित्यायादितये न० ॥८॥
प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न० ॥ ९ ॥ बलिदानम् । इन्द्रादि० । भो भो इन्द्र ! मम सकु-
टुम्बायाः सपरिवारायाः आयुः० । पूर्णाहुतिः ॥ रुद्रतेजःसमुद्भूतो वरदो हव्यवाहनः । अग्निर्वैश्वा-
नरः साक्षात्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ कल्याणदात्रीं कल्याणीं सर्वकर्मप्रपूरणीम् । हवनस्य फलप्रा-
प्त्यै पूर्णाहुत्यै नमो नमः ॥ २ ॥ वैश्वानरोऽग्निर्वसवोऽथ रुद्रा आदित्यसंज्ञाश्च शतक्रतुश्च । ससप्त-
वानग्निरथोपयाते तृप्यन्तु रक्षन्तु च मामजस्रं स्वाहा ॥ ३ ॥ इदमग्नये० । अथ वसोर्द्धाराहोमः ।
दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा नानालङ्कारभूषिताः । वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥ शुद्धस्फटि-
कसङ्काशा दिव्यायुधकरावृता । एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम् ॥ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च
द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः—स्वाहा ॥ इदं वाजा० । भस्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धारणम् । श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं धनम् । तेजमायुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ अपवित्रः प० । इमा आपः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तथा । भवन्तु भेषजं तास्ते शिवदाः सुखदाः सदा ॥ अभिषेकः । सुरास्त्वा० । यान्तु देव० । गच्छ गच्छ० । यस्य स्मृत्या० । मन्त्रार्थाः० । इति गयाहवनक्रमः ॥

अथ पुराणोक्तहनुमत्प्रतिष्ठाविधिः—गणाधिपं नमस्कृत्य देवीं वाग्देवतां गुरुम् । कालीचरणपुत्रेण श्रीजगन्नाथशर्म्मणा ॥ हनुमत्प्रतिष्ठायाः पद्धतिर्लिख्यते स्फुटा ॥ अथ मूर्तिलक्षणम् । ग्रामान्ते ग्रामसीमान्ते हनुमांश्च महाबलः । पश्चिमाभिमुखः स्थाप्यो रक्षार्थं तु सुखार्थिना ॥ षड्ढस्तां पञ्चहस्तां वा हस्तमात्रामथापि वा । यावत्पुरुषमानेन कुर्यान् मूर्तिं द्विहस्तिकाम् ॥ वेदहस्तप्रमाणेन पुच्छं कुर्याच्च पृष्ठतः । तालद्वयप्रमाणेन मुखं दन्तसमन्वितम् ॥ अथ कालः । मातृभैरववाराहहनुमन्तं महाबलम् । विष्णुं स्कान्दं प्रतिष्ठाप्य शिवं वा दक्षिणायने ॥ असिते कार्तिके मासि चतुर्दश्यां नराधिप । स्थापनं विधिवत् कुर्यात् पूर्वाह्णे तु विचक्षणः ॥ श्रावणे स्थापयेल्लिङ्गमाश्विने जगदम्बिकाम् । मार्गशीर्षे हरिं चैव सर्वान् पौषेऽपि केचन ॥ श्रेष्ठोत्तरे प्रतिष्ठा स्यादयने मुक्तिमिच्छताम् । दक्षिणे तु मुमुक्षूणां मलमासे न सा द्वयोः ॥ यतीनां सर्वकालेषु लिङ्गस्यारोपणं मतम् । मुक्तिकामस्य दक्षिणायनेऽपि शिवादिप्रतिष्ठा भवतीति । पुण्यतीर्थे कुरुक्षेत्रे देवीपीठचतुष्टये । प्रयागे नैमिषे काश्यां कालाकालं न शोधयेत् ॥ अस्तादिदोषौ गुरुशुक्रयोश्च काश्यां गयायां च भवेत्तु नैव । अथाधिकारिनिर्णयः । देवीपुराणे—चतुर्वर्णैस्तथा विष्णुः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः। स्कान्दे–सर्ववर्णैस्तु संस्थाप्याः सम्पूज्याः सर्वदेवताः। लिङ्गान्यपि च पूज्यानि स्थापनीयानि भूमिप॥ कौर्मे–ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैव द्विजोत्तमाः। अर्चयन्ति महादेवं यज्ञदानसमाधिभिः॥ वाराहे–पूर्ते तु सर्ववर्णानामधिकारोऽस्ति सुव्रते। शूद्रकमलाकरे–अधिकारी भवेच्छूद्रः पूर्तधर्मे न वैदिके। पूर्तमाह–वापीकूपतडागादिदेवतायतनानि च। अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते॥ जलशयोत्सर्गप्रतिष्ठादिषु शुद्रस्याधिकारः। शूद्रधर्मेषु सर्वत्र विप्रेण मन्त्रः पठनीयः सोऽपि नाममन्त्र एव। नाममन्त्रेण शूद्रस्य कुर्याद्धोमादिकं बुधः। एवं स्त्रीणामप्यधिकारः। अभर्तृकस्त्रीणामपि व्रतादिष्वधिकारः। स्कान्दे–भर्तृहीना तु या नारी संयता विजितेन्द्रिया। व्रतादीनां तु सङ्कल्पं दानं च स्वयमाहरेत्॥ वैदिकं तान्त्रिकं कर्म आचार्यद्वारतश्चरेत्। वायवीये–स्वयं कर्तुमशक्तश्चेत्कारयेत्तत्पुरोधसा। पराशरः–उपवासो व्रतं होमस्तीर्थस्नानजपादिकम्। विप्रैः सम्पादितं यस्य सम्पन्नं तस्य तत्फलम्॥ इत्यधिकारिनिर्णयः॥

अथ पुराणोक्तहनुमत्प्रतिष्ठाविधिः–प्रासादात्पूर्वे पश्चिमे उत्तरे वा अष्टहस्तं मण्डपं छायामात्रं वा विधाय मध्ये प्रधानवेदीं निर्माय तदुत्तरतः स्थण्डिलं विधाय तदीशान्यां ग्रहवेदीं नैर्ऋत्यां वास्तुवेदीं च विदध्यात्। यजमानः शिखाकक्षोपस्थवर्जं केशश्मश्रुनखरोमाणि वापयेत्। यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च। केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम्॥ ततः शीतोदकेन स्नानम्। अथ दन्तधावनम्। मुखदुर्गन्धनाशाय दन्तानां च विशुद्धये। ष्ठीवनाय च गात्राणां कुर्वेऽहं दन्तधावनम्॥ अभावे द्वादशगण्डूषाः। अथ भस्मस्नानम्। यथाग्निर्दहते भस्म

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तृणकाष्ठादिसञ्चयम् । तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचि ॥ अथ मृत्तिकास्नानम् । अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिवन्दिता । त्वया हतेन पापेन गच्छामि परमां गतिम् ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ अथ पञ्चगव्यस्नानम् । गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिःसमन्वितम् । सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम् ॥ ततः कूपाद्युदकेन स्नानं कुर्यात् । अथ नवीनवस्त्रधारणम् । परिधास्याम्यहं वस्त्रं कौशेयमहतं दृढम् । सुन्दरं च महादिव्यं पवित्रं परिधानकम् ॥ उत्तरीयं दृढं वस्त्रं कौशेयं सुमनोहरम् । नूतनं विपुलं वौर्णं कार्पासं धारयाम्यहम् ॥ तिलकधारणं कृत्वा यजमानः स्वभवने प्रासादसमीपे वा शुभे पीठासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीमुपवेश्य—यं ब्रह्म वेदान्तविदो विदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये । विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥ अथ दम्पत्योरुत्तरीयवस्त्रद्वयान्ते ग्रन्थिबन्धनम् । गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम् । दम्पत्यो रक्षणार्थाय पटग्रन्थिं करोम्यहम् ॥ अथ केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः । इति आचम्य पवित्रधारणम् । पवित्रस्थो हि यो विष्णुः सवितुः प्रसवश्च यः । स पुनातु पवित्रेणाच्छिद्रेण स्वरश्मिभिः ॥ अथ प्रोक्षणम् । अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ पुण्डरीकाक्षः पुनातु । अथ पञ्चगव्यप्राशनम् । यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥ आचम्य देहशुद्ध्यै गन्धपुष्पतुलसीदर्भजलान्यादाय प्रायश्चित्तं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुर्यात् । तत्र सङ्कल्पः—तत्सदद्येह स्थाने श्रीमद्विष्णुप्रजापतिक्षेत्रे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे काश्यपगोत्रस्य अमुकदासस्य सपत्नीकस्य जन्मप्रभृत्यद्यदिनं यावत् ज्ञाताऽज्ञातकामाऽकामसकृदसकृत् कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकस्पृष्टाऽस्पृष्टभुक्ताऽभुक्तपीताऽपीतसकलपातकातिपातकोपपातकलघुपातकसंकरीकरणमलिनीकरणाऽपात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं तथा सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्माधिकारसिद्ध्यर्थं आत्मशरीरशुद्ध्यर्थं च इमानि पञ्चदश अष्टौ त्रीणि वा गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथाकाले दातुमहमुत्सृज्ये । तेन श्रीपापापहा विष्णुः प्रीयतां न मम । अथ प्रार्थना—गवाङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ १ ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥२॥ पुनराचम्य यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा—देवाः स्वस्ति प्रकुर्वन्तु सगणाः सायुधास्तथा । किन्नरा देवगन्धर्वाः साप्सराः सविनायकाः ॥१॥ कल्याणञ्च प्रकुर्वन्तु पातालस्थाः सुराः शुभाः । रसातले तु ये देवास्तलातलनिवासिनः ॥२॥ सुतले वितले देवा ह्यतले च तलेऽमराः । तान् सर्वान् प्रणमाम्यद्य स्वक्रतोः पालनाय वै ॥३॥ भूर्लोके ये स्थिता देवा भुवर्लोके स्थिराः सदा । भावुकं ते प्रकुर्वन्तु स्वगणाः सारसंयुताः ॥४॥ स्वर्लोकवासिनः सर्वे पुरन्दरमुखाश्चलाः । कुशलञ्च सुवाञ्छामि कर्मारम्भे विशेषतः॥५॥ महर्जनतपोलोके निवसन्ति सवाहनाः । निर्जरास्ते प्रकुर्वन्तु क्षेमं सुष्ठु प्रकाशकाः ॥ ६ ॥ सत्यलोके प्रसीदन्ति ब्रह्माद्याः शिखिवाहनाः । त्रिदशास्ते सुखासीना भव्यं कुर्वन्तु सर्वथा ॥ ७ ॥ रुद्रादिदेवताः सर्वास्तथा वैकुण्ठवासिनः । सगणाः परिवारास्ते भद्रं कुर्वन्तु नित्यशः ॥ ८ ॥ शिवयागे विष्णु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यागे वास्तुकर्मणि सर्वदा । इष्टापूर्ते महादाने तान् देवान् संस्मरेच्चिरम् ॥ ९ ॥ ततस्तु कर्मारम्भः स्यान्निर्विघ्नेन सदा भवेत् । ये वै नैव स्मरन्त्येनान् तेषान्नैव फलं भवेत् ॥ १० ॥ सुशान्तिर्भवतु । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिञ्च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ १ ॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥२॥ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ३ ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ ४ ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ५ ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ ६ ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ७ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥ ९ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ १० लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ ११ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ १२ ॥ अन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥१३॥ स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ १४ ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १५ ॥ इति श्लोकान् पठित्वा क्षिपेत् । कुशपुष्पाक्षतजलं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात् । विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भरतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहं (अमुकगोत्रा अमुकनाम्नी) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य दीर्घायुरारोग्यधनधान्यपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयसर्वपापनिरसनपूर्वकसकलसुखधर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिकामः श्रीहनुमत्प्रीतये अस्यां हनुमन्मूर्त्तौ देवकलासान्निध्यार्थं सनवग्रहमखां सवास्तुशान्तिपूर्विकां अचलहनुमन्मूर्तिप्रतिष्ठां यथासम्भवं स्वयमाचार्यद्वारा च तन्त्रेण तृतीयेऽहन्यहं करिष्ये । तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये । तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये । इति सङ्कल्पः । अक्षतपुञ्जयोः पूगीफलयोर्वा गौरीगणपत्योरावाहनम् । हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज । सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभ-

॥२७६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितुः पितः ।। नागास्य नागहारस्त्वं गणराज चतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ।। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहागत्य गृहाण त्वं पूजाकार्यं च रक्ष मे ।। गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।।१।। हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् । आवाहयेऽम्बिकामत्र कर्मनिर्विघ्नसिद्धये ।। अम्बिकायै नमः, अम्बिकामावाहयामि स्थापयामि ।। २ ।। अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।। गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवतम् । गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि । गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती । नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। गणे० शुद्धोदकस्नानं स० । शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।। गणे० वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं स० । आचमनं स० । श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।। गणे० गन्धं स० । अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्तान् सुशोभितान् । मया निवेदितान् भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।। गणे० अक्षतान् स० । माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयार्पितानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।। गणे० पुष्पमालां पुष्पाणि वा स० । दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तत्र पूजार्थं गृहाण गणनायक ।। गणे० दूर्वाङ्कुरान् स० । सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्द्धनम् । सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।। गणे०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिन्दूरं स० । नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् । अबीरनामकं चूर्णं गन्धचारु प्रगृह्यताम् ॥ गणे० नानापरिमलद्रव्याणि स० । वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० धूपं स० । साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीप-ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ गणे० दीपं स० । हस्तप्रक्षालनम् । नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥ शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारं भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ प्राणाय स्वाहा । अपानाय स्वहा । समानाय स्वाहा । उदानाय स्वाहा । व्यानाय स्वाहा । गणे० नैवेद्यं स० । आचमनीयं स० । मध्ये पानीयं स० । उत्तरापोशनं स० । चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् । करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥ गणे० करोद्वर्तनार्थे चन्दनं स० । पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ गणे० मुखशुद्ध्यर्थे पूगीफलताम्बूलं स० । इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ गणे० नारिकेलफलं स० । हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ गणे० कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणां स० । कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरञ्च प्रदीपितम् । आरार्त्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ गणे० कर्पूरारार्त्तिक्यं स० । नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥ गणे० मन्त्रपुष्पाञ्जलिं स० । यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ गणे० प्रदक्षिणां स० । अथ विशेषार्घ्यः । जलगन्धाक्ष-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तफलपुष्पदूर्वादक्षिणाः ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य अवनीकृतजानुमण्डलः । रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य-रक्षक । भक्तानामभयङ्कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।। द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।। अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम ।। गणे० विशेषार्घ्यं समर्पयामि । अथ नमस्कारः । विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।। १ ।। भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय । विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।। २ ।। नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः । नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।। ३ ।। विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ।। ४ ।। लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।। ५ ।। अथ प्रार्थना । त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।। विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ।। १ ।।अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतान्न मम । इति गणेशपूजनम् ।

अथ कलशस्थापनम् । पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । कलशाधारभूतं हि पवित्रं कुरु चासनम् ।। इति भूमिं स्पृष्ट्वा । यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः । प्राणिनां जीवनोपायः कलशाधः क्षिपाम्यहम् ।। इति धान्यं विकिरेत् । कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः । संगृह्य निर्मितो यस्मात्कलशस्तेन उच्यते ।।इति धान्योपरि कलशं संस्थाप्य । आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरव्ययः । प्राणिनां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्म्यहम् ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति कलशे जलं पूरयित्वा । श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम् ।। इति गन्धं क्षिपेत् । सर्वौषध्यः सुगन्धाढ्या दिव्यदृष्टिसमुद्भवाः । कलशाप्यायनकरा मङ्गलाय क्षिपाम्यहम् । इति सर्वौषधीः प्रक्षिप्य । दूर्वे अमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे । शतं मे हर पापानि शतमायुर्विवर्द्धिनी ।। इति दूर्वाः । यज्ञियवृक्षसम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुभान् । अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम् ।। इति पञ्चपल्लवान् । अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् वल्मीकात् सङ्गमाद्ध्रदात् । राजद्वाराद् गोकुलाच्च मृत्स्नां वै कलशे क्षिपे ।। इति सप्तमृदः । इदं फलं मया सम्यक् संक्षिप्तं कलशे यतः । तेनायं कलशः सम्यक् फलवानस्तु सर्वदा ।। इति पूगीफलम् । रत्नगर्भाऽभवद् भूमी रत्नगर्भाढ्यभूधराः । कलशो रत्नगर्भः स्यात्तस्माद्रत्नान्यहं क्षिपे ।। इति पञ्चरत्नानि ताम्रखण्डं वा । हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम् ।। इति हिरण्यं ताम्रखण्डं वा । शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् । सुवेषधारि वस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम् ।। इति रक्तसूत्रेण कलशं वेष्टयेत् । धान्यपूर्णमिदं पात्रं स्थापितं कलशं यतः । तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।। इति धान्यपूर्णपात्रमुपरि न्यसेत् । श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम् । लक्ष्मीदं फलदं नित्यं कलशे स्थापयाम्यहम् ।। इति कलशोपरि यजमानसम्मुखं नारिकेलफलं संस्थाप्य । मकरस्थं पाशहस्तमर्णसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।। अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि । ततः कलशाभिमन्त्रणम् । कला कला हि देवानां दानवानां कला कलाः । संगृह्य निर्मितो येन कलशस्तेन कथ्यते ।। कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ।। कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी । तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।। नदाश्च विविधाज्जाता नद्यः सर्वास्तथा पराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ।। सर्वे समुद्राः सरितस्तार्थानि जलदा नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ।। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः । अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ।। अस्यै प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहे तु न कश्चन ।। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य–वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति पूजनम् । अथ प्रार्थना । देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदः । त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव । सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।। इति कलशप्रार्थना । अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तान्न मम । ततो यजमानः अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना कलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत् । दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । विष्णोः पद्भ्यां प्रक्रमेण रक्षा भवति निश्चला ।। अतस्ताभ्यो रक्षणाभ्यो धर्मान् संधारयेत् पुमान् । तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।। विप्राः–अस्तु दीर्घमायुः । यजमानः एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निनयेत् । उदङ्मुखान् ब्राह्मणान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

युग्मकान् उपवेशयेत् । त्रिपदा त्रीणि लोकान् वै व्याप्य तिष्ठति यो विभुः । तेन सत्येन भो विप्राः सर्वधर्माणि धारयन् ॥ यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते–शिवा आपः सन्तु । विप्राः–सन्तु शिवा आपः । यजमानः–सौमनस्यमस्तु । विप्राः–अस्तु सौमनस्यम् । यजमानः–अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु । विप्राः–अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च । यजमानः–गन्धाः पान्तु । विप्राः–सुमङ्गल्यञ्चास्तु । यजमानः–अक्षताः पान्तु । विप्राः–आयुष्यमस्तु । यजमानः–पुष्पाणि पान्तु । विप्राः–सौश्रेयसमस्तु । यजमानः–सफलताम्बूलानि पान्तु । विप्राः–ऐश्वर्यमस्तु । यजमानः–दक्षिणाः पान्तु । विप्राः–बहुदेयञ्चास्तु । ततो यजमानः प्रार्थयेत् । दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु । विप्राः–तथास्तु । यजमानः– यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्म्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहं नत्वा भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । विप्राः–वाच्यताम् । करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चापि द्विजातयः । सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः । तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः ॥ स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च । स्वस्त्यस्त्वपादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा ॥ स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा । करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे । लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ । असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः ॥ वसिष्ठः काश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा । धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः ॥ स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च षण्मुखः । विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा ॥ दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनग्रहाः । अधस्ताद्धरणीं चासौ नागो धारयते हि सः ॥ शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु । यजमानः–व्रतजपनियम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तपःस्वाध्यायक्रतुशमदयादानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् । विप्राः—समाहितमनसः स्मः । यजमानः—प्रसीदन्तु भवन्तः । विप्राः—प्रसन्नाः स्मः । ततः कलशोपर्य्यक्षतान् प्रददत्—शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । शिवमस्तु । शिवङ्कर्माऽस्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । धर्मसमृद्धिरस्तु । वेदसमृद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । धनधान्यसमृद्धिरस्तु । पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु । इष्टसम्पदस्तु । बहिः—अनिष्टनिरसनमस्तु । यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु । अतः—यच्छ्रेयस्तदस्तु । उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु । उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम् । दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । बहिः—हताश्च ब्रह्मद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हता अस्य कर्मणो विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । अन्तः—शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवा ओषधयः सन्तु । शिवा वनस्पतयः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् । दुष्टान् भावान् परित्यज्य धर्मसन्तानवृद्धये । यज्ञस्य कर्मणोऽर्थाय पुण्याहं कुरु भो द्विजाः ॥ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् । भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान् नारायणः प्रीयताम् । भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् । पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु । एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । विप्राः-वाच्यताम् । यजमानः-ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥१॥ भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे परश्वः करिष्यमाणसप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः-पुण्याहम् ३ । दीयन्ते यत्र दानानि पूज्यन्ते च द्विजातयः । दृश्यते यत्र माङ्गल्यं तत्पुण्याहं सदाऽस्तु ते ॥ यजमानः-पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् । ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥ २ ॥ भो ब्राह्मणाः! मम० कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः–कल्याणम् ३ । कलत्रपुत्रपौत्रादिद्विपदाश्च चतुष्पदाः । तिष्ठन्ति यत्र भृत्याद्यास्तत्कल्याणं सदास्तु ते ॥ यजमानः–सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता । सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥३॥ भो ब्राह्मणाः! मम० ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः-ऋध्यताम् ३ । धनधान्यधराधर्मनिधिकोशगृहाणि च । ध्रुवाणि यत्र तिष्ठन्ति सा ऋद्धिः सर्वदाऽस्तु ते ॥ यजमानः–स्वस्तिरस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ॥ ४ ॥ भो ब्राह्मणाः! मम० कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः–आयुष्मते-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वस्ति ३ । दीर्घायुष्ट्वं वसत्यत्र माङ्गल्यं यत्र तिष्ठति । भूदेवभक्तितस्त्वस्ति सर्वदाऽस्तु गृहे तव ।। यजमानः–समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका । हरिप्रिया च माङ्गल्या श्रियं तां च ब्रुवन्तु नः ।। ५ ।। भो ब्राह्मणाः ! मम० श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः– अस्तु श्रीः ३ । स्वस्तिरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । स्वस्तिरस्तु श्रियारम्भे वृद्धिरस्तु धनागमे । पुष्टिरस्तु शरीरे च तुष्टिरस्तु तव गृहे ।। यजमानः–मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा । आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ।। ६ ।। विप्राः–जीवन्तु भवन्तः । मार्कण्डेयप्रसादेन सुष्ठ्वष्टचिरजीविनः । तथा त्वं भव दीर्घायुः पुत्रपौत्रगणैः सह ।। यजमानः–शिवगौरीविवाहे या या श्री रामे नृपात्मजे । धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।७।। भो ब्राह्मणाः! मम० गृहे श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु ३। विप्राः–अस्तु श्रीः३। यजमानः–देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति पुरो गृहे । एकलिङ्गस्य या स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ।। प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् । भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः ।। भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् । योऽसौ प्रजापतिः पूर्वे पुष्करे विष्णुनाभिजे । स्रष्टा वै सर्वकार्येषु प्रीयताम् नः प्रजापतिः ।। या स्वस्ति ब्रह्मणो भूता ब्राह्मणानां प्रियङ्करा । धर्मस्य दयिता पत्नी स्वस्ति नोऽस्तु च भो द्विजाः ।। आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे । श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ।। विप्राः–आयुष्मते स्वस्ति ३ । यजमानः–यस्य कुक्षौ जगत्सर्वं स्थावरं जङ्गमश्च च यत् । दुःखच्छिदे नमस्तस्मै ब्रह्मविष्णुशिवात्मने ।। स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु । कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथापरिमितामिमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये । ततो यजमानस्य वामभागे पत्न्यादीनुपवेश्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चपल्लवैः कलशोदकैः अभिषेकं कुर्यात् । देवस्य जनवर्गस्य प्रसूता अघहारिणः। इन्द्रियेणाभिषिञ्चामि बलायुःश्रीविवृद्धये ॥ अभिषेककर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहदक्षिणां दास्ये । **अथ तोरणपूजनम् ।** तोरणमातृभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । **अथ मातृकापूजनम् ।** समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा । त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम् ॥ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥ गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि० ॥ २ ॥ पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरसि स्थिताम् । जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ॥ पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि० ॥ ३ ॥ दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिकुण्डलधारिणीम् । रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ॥ शच्यै नमः शचीमावाहयामि० ॥ ४ ॥ विश्वस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् । बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥ मेधायै नमः मेधामावाहयामि० ॥ ५ ॥ जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् । वेदगर्भां ज्ञानमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ॥ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि० ॥ ६ ॥ सर्वास्त्रधारणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् । सर्वदेवनुतां ध्यातां विजयां स्थापयाम्यहम् ॥ विजयायै नमः विजयामावाहयामि० ॥ ७ ॥ सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम् । त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥ जयायै नमः जयामावाहयामि० ॥ ८ ॥ मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम् । आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥ देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि० ॥ ९ ॥ कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति । पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाह-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

याम्यहम् ॥ स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि० ॥ १० ॥ हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति। तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ॥ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि० ॥ ११ ॥ आवाहयाम्यहं मातः सकला लोकपूजिताः । सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषिताः ॥ मातृभ्यो नमः मातॄः आवाहयामि० ॥१२॥ अवाहयेल्लोकमातॄर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः । नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः ॥ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातॄः-आवाहयामि० ॥१३॥ सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् । हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ॥ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि० ॥ १४ ॥ पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः । शाकैः फलजलै रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥ पुष्टयै नमः पुष्टिमावाहयामि० ॥ १५ ॥ आवाहयामि संतुष्टिं सूक्ष्मवस्त्रान्वितां शुभाम् । सन्तोषो भविता चात्र रक्षणीयाऽध्वरे शुभे ॥ तुष्टयै नमः तुष्टिमावाहयामि० ॥ १६ ॥ आत्मनो देवतां देवीमैश्वर्यसुखदायिनीम् । वंशवृद्धिकरीं नित्यां धनदेवीं कुलाम्बिकाम् ॥ आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि० ॥ १७ ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु–'। आवाहितगणपत्यादिकुलदेवतान्तमातरः सुप्रतिष्ठता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । गणेशपूर्वकगौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । गणेशपूर्विकादेव्यो गौर्यादिप्रमुखाः स्मृताः । प्रसीदत च कल्याण्यो निर्विघ्नश्चास्तु नोऽध्वरे ॥ अनया पूजया गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातरः प्रीयन्ताम् ॥ **अथ वसोर्द्धारापूजनम् ॥** भित्तौ अष्टविंशतिबिन्दुरूपां वसोर्द्धारां लिखित्वा–नमोऽस्तु वसुमातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च । स्वयज्ञकार्यसिद्ध्यर्थं धारां दास्यामि मातरः ॥ इति घृतधारां दद्यात् । श्रियादिसप्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मातृभ्यो घृतमातृभ्य एव च । गुडेन मेलयिष्यामि ताः सर्वार्थप्रसाधिकाः ॥ इत्यनेन मिष्टान्नेन मेलयेत् । सुवर्णपद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम् । त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम् ॥ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि० ॥ १ ॥ शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसम्भवाम् । चन्द्रस्य भगिनीं-सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि० ॥ २ ॥ संसारधारणपरां धैर्यलक्षणसंयुताम् । सर्वसिद्धिकरीं देवीं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि० ॥ ३ ॥ सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम् । मम कार्ये शुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम् ॥ मेधायै नमः मेधामावाहयामि० ॥ ४ ॥ सोमरूपां सुवर्णाभां विद्युज्ज्वालातिकुण्डलाम् । जननीं पुष्टिकरिणीं पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि० ॥ ५ ॥ भूतग्राममिदं सर्वं अजेन श्रद्धया कृतम् । श्रद्धया प्राप्यते सत्यं श्रद्धामावाहयाम्यहम् ॥ श्रद्धायै नमः श्रद्धामावाहयामि० ॥ ६ ॥ प्रणवस्यैव जननीं रसनाग्रस्थितां सदा । प्रगल्भदात्रीं चपलां वाणीमावाहयाम्यहम् ॥ वाण्यै नमः वाणीमावाहयामि० ॥ ७ ॥ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु—'। आवाहितवसोर्द्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । श्रियादिघृतमातृभ्यो नमो वाग्भ्यः सदा मम । कल्याणं तु प्रयच्छन्तु श्रियादिघृतमातरः ॥ यदङ्ग-त्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः । कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥ अनया पूजया वसोर्द्धारादेवताः प्रीयन्ताम् । इति वसोर्द्धारापूजनम् ।

अथ आयुष्यमन्त्रजपः । यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु । ददुस्तेनायुषा सम्यग्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जीवेम शरदः शतम् ॥ १ ॥ दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः । अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥ २ ॥ सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च । अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥ ३ ॥ इति आयुष्यमन्त्रजपः ॥ **अथ नान्दीश्राद्धम्** । सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ! इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ ४ ॥ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः इमे आसने वो नमो नमः ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः इमे आसने वो नमो नमः ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः इमे आसने वो नमो नमः ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इमे आसने वो नमो नमः ॥ ४ ॥ विश्वेदेवादिभ्यो गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलपूगीफलवस्त्रयज्ञोपवीतानि दद्यात् । अत्रापः पान्तु ४ । गन्धाः पान्तु ४ । अक्षताः पान्तु ४ । पुष्पाणि पान्तु ४ । सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥३॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहोप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः इदं दास्यमानं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ॥ ४ ॥ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहोप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ॥ ४ ॥ आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गमोक्षसुखानि च । प्रयच्छन्तु तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः ॥ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ॥ १ ॥ गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यौ नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ॥ २ ॥ गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ॥ ३ ॥ द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ ४ ॥ माता पितामही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चैव तथैव प्रपितामही । पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः ॥ मातामहस्तत्पिता च प्रमातामह-कादयः । एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥ अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् । विप्राः-सुसम्पन्नम् । तेन श्रीकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्तां वृद्धिः । विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । श्राद्धवन्तः पितरो वै वाजेवाजेवताऽमृताः । धनेषु नश्च सत्यज्ञां विप्राः पिबत तन्मधु ॥ यूयं पीत्वा मादयध्वं तृप्ता यात सुवर्त्मभिः । देवयानैः स्वर्णपदं सुखार्थपददायकाः ॥ उत्तिष्ठन्तु मातृपितामहीप्रपितामह्यः । उत्तिष्ठन्तु पितृपितामहप्रपितामहाः । उत्तिष्ठन्तु मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः । इति विसृज्य । फलं श्राद्धान्नदानस्य मामायातु पुनः पुनः । पृथिवीस्वर्गकल्याणं चाऽप्यागच्छतु मामथ ॥ पितर्मातश्च श्राद्धाहे आगच्छेथां युवां तथा । राजा सोमः पितॄणां चामृतत्वायामृतप्रदः ॥ इति पठेत् ॥ इति नान्दीश्राद्धम् ॥ **अथ आचार्यादिवरणम्** । उदङ्मुखमाचार्यमुपवेश्य गन्धादिभिः सम्पूज्य अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्म्माणं ब्राह्मणं आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम् । व्रतैर्दीक्षां समाप्नोति दीक्षाभिर्दक्षिणास्तथा । दक्षिणाभिस्तथा श्रद्धा श्रद्धाभिर्ऋतमाप्यते ॥ इति रक्षाबन्धनम् । अथ प्रार्थना । आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ॥ १ ॥ अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम् । यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ २ ॥ अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम्। त्वन्नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणम्। आपद्विमोक्षणर्थाय सदस्यो भव मे मखे ॥ ३ ॥ अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं (चतुरो ब्राह्मणान्) ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम्। भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर। वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ ४ ॥ ततः करसम्पुटं कृत्वा सर्वान् प्रार्थयेत्। अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥ ततः साचार्यो यजमानः–भद्रं कुर्वन्तु देवास्ते भद्रं कुर्वन्तु मातरः। भद्रं कुर्वन्तु ऋषयो यज्ञेऽस्मिन् वितते शुभे ॥ मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्य स्थण्डिलात्पश्चिमतः उपविश्य आचार्यः आचम्य प्राणानायम्य सङ्कल्पं कुर्यात्। अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि यजमानेन वृतोऽहं आचार्यकर्म करिष्ये, इति सङ्कल्प्य हस्ते पीतसर्षपान् गृहीत्वा--यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥ १ ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ २ ॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन शान्तिकर्म समारभेत् ॥ ३ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ॥ ४ ॥ इति सर्षपान् विकिरेत्।

अथ पञ्चगव्यकरणम्। एकस्मिन् पात्रे--गवामङ्गसमुद्भूतं गङ्गादिसलिलाश्रयम्। गोमूत्रं परमं शुद्धं सर्वशुद्धिकरं महत् ॥ इति गोमूत्रम् ॥१॥ अग्रमग्र चरन्तीनामोषधीनां रसं वने। तासामृषभपत्नीनां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्रं कायशोधनम् ॥ इति गोमयम् ॥ २ ॥ अलक्ष्मीहरणं नित्यं सौभाग्यस्य विवर्धनम् । क्षीरं मङ्गलमायुष्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ इति पयः ॥ ३ ॥ धेनुदुग्धसमुद्भूतं शुद्धं सर्वजनप्रियम् । दधि मङ्गलमायुष्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ इति दधि ॥ ४ ॥ या लक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वगात्रेष्ववस्थितम् । तत्सर्वं शमयत्वाज्यं लक्ष्मीपुष्टिश्च वर्द्धतु ॥ इति आज्यम् ॥ ५ ॥ विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठीनिसर्गज । नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव ॥ इति कुशोदकम् ॥ ६ ॥ 'वं' इति आलोड्य अभिमन्त्र्य च मण्डपप्रासादयोः भूमिप्रोक्षणं कार्यम् । तत्र मन्त्रः—अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ गोः शरीरात् समुद्भूतं पञ्चगव्यं सुपावनम् । प्रोक्षणं मण्डपस्यैव करिष्यामि सुरार्थकम् ॥ मण्डपाभ्यन्तरे देवाः सदेव्यः सगणाधिपाः । तस्मात्संप्रोक्षणार्थेन सन्तुष्टा वरदाः सदा ॥ ततः कृताञ्जलिः—कल्याणं कुरु भो विष्णो स्वस्ति नित्यं करोतु नः । इन्द्रादिदेवताः सर्वाः स्वस्ति कुर्वन्तु सर्वदा ॥ इति पठेत् । भूमौ प्रादेशं कृत्वा—देवाः आयान्तु । यातुधानाः अपयान्तु । विष्णो देवयजनं रक्षस्व । इति स्थण्डिलोपरि पुष्पाक्षतानि निक्षिपेत् । **अथ वास्तुदेवतारङ्गकारिका ।**

शिखिने रक्तवर्णं स्यात् पीतं पर्जन्य एव च । पीतं जयन्ते कुलिशे पीते रक्तदिवाकरे ॥ १ ॥ श्वेतं सत्ये भृशे कृष्णमन्तरिक्षे च कृष्णकम् । वायौ धूम्रं पूष्णि रक्तं वितथे शुक्ल एव च ॥ २ ॥ गृहे पीतं यमे कृष्णं गन्धर्वे रक्त एव च । कृष्णं भृङ्गे मृगे पीतं पितृरक्तं लिखेत्तथा ॥ ३ ॥ दौवारिके रक्तवर्णं सुग्रीवे शुक्लवर्णकम् । पुष्पदन्ते च रक्ताभं वरुणं श्वेतमालिखेत् ॥ ४ ॥ असुरे पीतरक्तश्च शेषे च कृष्णवर्णकम् । पापयक्ष्मणे पीतवर्णं रोगे रक्तं तथैव च ॥ ५ ॥ रक्तमहो मुख्यरक्तं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

भल्लाटे कृष्णवर्णकम् । श्वेतं सोमे कृष्णसर्पं अदितेः पीतवर्णकम् ॥ ६ ॥ दितेर्वर्णं तु पीताभं वास्तु-रङ्गं समालिखेत् । अपः शुक्लं शुक्लवर्णं सावित्रे तु प्रपूरयेत् ॥ ७ ॥ जये तु श्वेतवर्णं स्याद्रुद्रे रक्तं तथैव च । अर्यम्णे कृष्णवर्णं स्यात् सवित्रे रक्तवर्णकम् ॥ ८ ॥ विवस्वते शुक्लवर्णं स्याद्रक्तं विबुधाधिपे । मित्रे श्वेतं रक्तवर्णं राजयक्ष्मं लिखेत्ततः ॥ ९ ॥ पृथ्वीधरे रक्तवर्णं आपवत्सस्तु श्वेतकम् । मध्ये तु पीतश्वेतं स्याल्लिखेद् ब्रह्मा चतुर्मुखम् ॥ १० ॥ इति वास्तुदेवतारङ्गकारिकाः ॥ ततः प्रासादस्य ईशानादिकोणेषु शङ्कुरोपणम् । विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । प्रासादेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥ आग्नेयनैर्ऋत्यवायव्येशानकोणेषु सदीपदधिमाषतण्डु-लबलीन् दद्यात् । तत्र मन्त्राः—अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः । तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ १ ॥ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि सर्वे गृह्णन्तु मन्त्रितम् ॥ २ ॥ नमोऽस्तु वायुरक्षेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः । तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥३॥ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः । बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुकाः ॥ ४ ॥ वेद्युपरि वस्त्रे कुङ्कुमादिना सुवर्णादिशलाकया रेखां कुर्यात् । लक्ष्म्यै नमः १ । यशोवत्यै नमः २ । कान्तायै नमः ३ । सुप्रियायै नमः ४ । विमलायै नमः ५। शिवायै नमः ६। सुभगायै नमः ७। सुमत्यै नमः ८। इडायै नमः ९। इत्येतैर्नव-रेखाः प्रागायताः उदक्संस्थाः कृत्वा-धन्यायै नमः १ । प्राणायै नमः २ । विशालायै नमः ३ । स्थिरायै नमः ४ । भद्रायै नमः ५ । जयायै नमः ६ । निशायै नमः ७ । विरजायै नमः ८। विभवायै नमः ९ । इति नामभिरुदगग्राः प्राक्संस्थाः नवरेखाः कृत्वा मध्यमपद-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुष्टयमेकीकृत्य तत्कोणचतुष्टयाद्बहिः कोणेषु रेखां दद्यात्। अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु-'इति रेखादेवताः सुप्रतिष्ठता वरदा भवत। इति प्रतिष्ठाप्य। रेखादेवताभ्यो नमः, इति सम्पूज्य। अनया पूजया रेखादेवताः प्रीयन्ताम्। वास्तुमण्डले तण्डुलपुञ्जेषु पूगीफलेषु देवताः आवाहयेत्। ईशानपददक्षिणार्द्धे–आवाहयामि देवेशं शङ्करं शिखिरूपिणम्। स्रुक्स्रुवौ डमरुं शूलं चतुर्हस्ते वरप्रदम्॥ शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ तद्दक्षिणासार्द्धपदे–आवाहयामि पर्जन्यं यादसां मुख्यनायकम्। कुम्भीरथसमारूढं पाशहस्तं वरप्रदम्॥ पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावाहयामि०॥ २॥ तद्दक्षिणपदद्वये–आवाहयामि तं देवं जयन्तं भुवनेश्वरम्। रूक्षवर्णं महान्तं च खड्गखेटकधारिणम्॥ जयन्ताय नमः जयन्तमावाहयामि०॥ ३॥ तद्दक्षिणपदद्वये–आवाहयाम्यहं देवं महेन्द्रं च महाप्रभुम्। पीतवर्णं महाघोरं वज्रपाणिं सुरेश्वरम्॥ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधमावाहयामि०॥ ४॥ तद्दक्षिणपदद्वये–आवाहयामि देवेशं भास्करं तिग्मतेजसम्। कलिङ्गं काश्यपं रक्तं सप्ताश्वं सप्तरज्जुकम्॥ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि०॥ ५॥ तद्दक्षिणपदद्वये–आवाहयामि तं सत्यं पुण्ययुक्तमकल्मषम्। पद्महस्तं महाबाहुं वरदं निर्मलं शुभम्॥ सत्याय नमः सत्यमावाहयामि०॥ ६॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे–आवाहयाम्यहं देवं भृशं च परमेश्वरम्। भस्माङ्गं नीलकण्ठश्च चतुर्बाहुं सुरेश्वरम्॥ भृशाय नमः भृशमावाहयामि०॥ ७॥ तद्दक्षिणाग्नेयपदार्धे–आवाहये तमाकाशं विष्णोः पदमनन्तकम्। यत्र देवास्तथा यक्षा ग्रहाः सर्वे प्रतिष्ठिताः॥ आकाशाय नमः आकाशमावाहयामि०॥ ८॥ तत्पश्चिमार्द्धे–आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणाम्। आगच्छ भगवन् वायो क्षेत्रेऽस्मिन् सन्निधो भव॥ वायवे नमः वायुमावाहयामि०॥ ९॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे–आवाहयाम्यहं देवं पूषाणं महसां पतिम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगच्चक्षुर्महान्तं च स्थितिसंहारकारकम् ॥ पूष्णे नमः पूषाणमावाहयामि० ॥ १० ॥ तत्पश्चिमपदद्वये—आवाहयाम्यहं देवं वितथं दिव्यतेजसम् । ब्रह्मरूपं जगन्नाथं चतुर्वक्त्रं प्रजापतिम् ॥ वितथाय नमः वितथमावाहयामि० ॥ ११ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये—आवाहयामि त्वां देव गृहक्षतसमाख्यक । पूजां गृहाण देवेश मम स्वस्तिकरो भव ॥ गृहक्षताय नमः गृहक्षतमावाहयामि० ॥ १२ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये—अहमावाहयिष्यामि यमं महिषवाहनम् । ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् ॥ यमाय नमः यममावाहयामि० ॥ १३ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये--अहमावाहयिष्यामि गन्धर्वगणशोभितम् । नृत्यगीतसमायुक्तं सुगन्धकुसुमैर्युतम् ॥ गन्धर्वाय नमः गन्धर्वमावाहयामि० ॥ १४ ॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे—आवाहयामि तं देवं भृङ्गराजं महाबलम् । षट्पदैः सेव्यमानश्च कुसुमामोदसंयुतम् ॥ भृङ्गराजाय नमः भृङ्गराजमावाहयामि० ॥१५॥ तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपरार्द्धे—मृगमावाहयिष्यामि शशाङ्ककृतचिह्नकम् । कृष्णवर्णं चतुष्पादं श्वेतोदरविषाणकम् ॥ मृगाय नमः मृगमावाहयामि० ॥ १६ ॥ तदुत्तरार्द्धे पादयोः—अहमावाहयिष्यामि पितरश्च सुधाकृतिम् । उद्दीप्य लोके तिष्ठन्तं चन्द्रार्कसदृशद्युतिम् ॥ पितृभ्यो नमः पितॄन् आवाहयामि० ॥ १७ ॥ तदुत्तरसार्द्धपदे—आवाहयाम्यहं देवं विभुं दौवारिकं प्रभुम् । जीवरूपं त्वयैकेन यदिदं धार्यते जगत् ॥ दौवारिकाय नमः दौवारिकमावाहयामि० ॥१८॥ तदुत्तरपदद्वये—अहमावाहयिष्यामि सुग्रीवं शुक्लवर्णकम् । पिङ्गनेत्रं महास्थूलं भैरवं तीक्ष्णदंष्ट्रकम् ॥ सुग्रीवाय नमः सुग्रीवमावाहयामि० ॥ १९ ॥ तदुत्तरपदद्वये—आवाहयामि देवेशं पुष्पदन्तं विनायकम् । लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ॥ पुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तमावाहयामि० ॥२०॥ तदुत्तरपदद्वये—आवाहयामि देवेशं वरुणं जलनायकम् । कुम्भीरथसमायुक्तं श्वेताद्रिशिखिरोपमम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि० ॥ २१ ॥ तदुत्तरपदद्वये–असुर त्वमिहागच्छ रक्षोगणसमन्वित । शक्तिशूलधरो नित्यं रक्ताक्षश्च महाबलः ॥ असुराय नमः असुरमावाहयामि० ॥ २२ ॥ तदुत्तरसार्द्ध-पदे--अहमावाहयिष्यामि शोषञ्च कृष्णवर्णकम् । रक्ताम्बरं विशालाक्षं यज्ञमूर्तिं सुरेश्वरम् ॥ शोषाय नमः शोषमावाहयामि० ॥ २३ ॥ तदुत्तरवायव्यपदार्द्धे–आवाहयाम्यहं भीमं पापमुग्रभयप्रदम् । अधोमुखं क्षमाहीनं दण्डमुद्गरधारिणम् ॥ पापाय नमः पापमावाहयामि० ॥ २४ ॥ तत्प्राक्पदार्द्धे--आवाहयामि तं रोगं वातादित्रिगुणात्मकम् । त्रिपादं त्रिशिखं रक्तनेत्रं भस्मविभूषितम् ॥ रोगाय नमः रोगमावाहयामि० ॥ २५ ॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे–अहिमावाहयिष्यामि त्रैलोक्यान्तरचारिणम् । शेषे कुले समुद्भूतं लसत्कर्णमहीश्वरम् ॥ अहये नमः अहिमावाहयामि० ॥ २६ ॥ तत्प्राक्पदद्वये–आवाहयामि तं शैवं गणानां मुख्यनायकम् । जटाजूटधरं सौम्यं शूलपट्टिशधारिणम् ॥ मुख्याय नमः मुख्यमावाहयामि० ॥ २७ ॥ तत्प्राक्पदद्वये–आवाहयामि देवेशं भल्लाटं विश्वरूपिणम् । भिल्लवेषधरं कृष्णं धनुर्बाणासिधारिणम् ॥ भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि० ॥ २८ ॥ तत्प्राक्-पदद्वये–आवाहयामि देवेशं शशाङ्कं रजनीपतिम् । क्षीरोदधिसमुद्भूतं हरमौलिविराजितम् ॥ सोमाय नमः सोममावाहयामि० ॥ २९ ॥ तत्प्राक्पदद्वये–आवाहयेच्च तं नागं फणा-सप्तकसंयुतम् । आगच्छोरगराज त्वं क्षेत्रेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥ सर्पेभ्यो नमः सर्पान् आवा-हयामि० ॥३०॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे–आवाहयामि तां देवीमदितिं देवमातरम् । द्विभुजां पद्महस्तां च सर्वाभरणभूषिताम् ॥ अदित्यै नमः अदितिमावाहयामि० ॥ ३१ ॥ तत्प्रागर्द्धपदे–दितिमावाहयि-ष्यामि दैत्यानां चैव मातरम् । शुक्लाङ्गीं द्विभुजां चैव शूलपट्टिशधारिणीम् ॥ दित्यै नमः दिति-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

मावाहयामि० ॥ ३२ ॥ मध्यपदेषु ईशानपदोत्तरार्द्धे–अप आवाहयिष्यामि सर्वदा वरदाः शिवाः । आपस्त्वायान्तु सततं पवित्रा मङ्गलावहाः ॥ अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि० ॥ ३३ ॥ मध्यपदेष्वाग्नेयपदोत्तरार्द्धे–सावित्र त्वमिहागच्छ सर्वध्वान्तनिवारक । पूजां गृहाण देवेश मया भक्त्या प्रकल्पिताम् ॥ सावित्राय नमः सावित्रमावाहयामि ॥ ३४ ॥ मध्यपदेषु नैर्ऋत्यपदोत्तरार्द्धे–आवाहयामि तं देवं जयं यष्टिविधारकम् । जय त्वं हि समागच्छ क्षेत्रेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥ जयाय नमः जयमावाहयामि० ॥३५॥ वायव्यपदोत्तरार्द्धे—आवाहयामि तं रुद्रं सर्वदा शङ्करं विभुम् । उमाधिष्ठितवामाङ्गं वरदाभयहस्तकम् ॥ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि० ॥ ३६ ॥ मध्ये प्राक्पदद्वये–आवाहयाम्यहं देवमर्यमाणं सुरेश्वरम् । नीलाम्बुजसमाभासं तेजोराशिं जगत्पतिम् ॥ अर्यम्णे नमः अर्यमाणमावाहयामि० ॥ ३७ ॥ मध्यपदेष्वाग्नेयपददक्षिणार्द्धे–आवाहयाम्यहं देवं सवितारं दिवाकरम् । सप्ताश्वरथसंयुक्तं तमोवृन्दनिवारणम् ॥ सवित्रे नमः सवितारमावाहयामि० ॥ ३८ ॥ पश्चिमपदद्वये–रक्ताम्बरं पद्महस्तं विवस्वन्तं प्रभाकरम् । सर्वपापहरं देव पीठेऽत्रावाहयाम्यहम् ॥ विवस्वते नमः विवस्वन्तमावाहयामि० ॥ ३९ ॥ मध्यपदेषु नैर्ऋत्यपददक्षिणार्द्धे–आवाहयाम्यहं देवं विबुधाधिपतिं प्रभुम् । चतुर्दन्तगजारूढं हिमाद्रिशिखरोपमम् ॥ विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिपमावाहयामि० ॥ ४० ॥ तदुत्तरपदद्वये–अहमावाहयिष्यामि मित्रश्चारुणसन्निभम् । वज्रहस्तं सुरश्रेष्ठं यज्ञकर्मवरप्रदम् ॥ मित्राय नमः मित्रमावाहयामि० ॥ ४१ ॥ वायव्यपदपश्चिमार्द्धे–आवाहयामि तं देवं यक्ष्माणं राजसंज्ञकम् । नानाव्याधिसमाकीर्णं रोगैश्च परिशोभितम् ॥ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्माणमावाहयामि० ॥ ४२ ॥ तत्प्राक्पदद्वये–आवाहयाम्यहं देवं पृथ्वीधरमतीन्द्रियम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शङ्खचक्रगदापद्मैरलङ्कृतचतुर्भुजम् ॥ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरमावाहयामि० ॥ ४३ ईशानपदद-क्षिणार्द्धे–आवाहयाम्यहं देवमापवत्सं महाबलम् । मयूरवाहनं रौद्रं नानाभूषणभूषितम् ॥ आपवत्साय नमः आपवत्समावाहयामि० ॥४४॥ मध्यपदचतुष्टये–आवाहयामि देवेशमूर्ध्वभागे व्यवस्थितम् । हंस-युक्तरथारूढं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि० ॥४५॥ तदुत्तरे कलशस्थापनं कृत्वा वास्तुप्रतिमयोर्घृतेनाभ्यज्य उपरि जलधारां कुर्यात् । एतद्वै पावनं स्नानं सहस्राक्षमृषिस्मृतम् । तेन त्वां शतधारेण पावमान्यः पुनन्त्विमाः ॥ १ ॥ शक्रादिदशदिक्पाला ब्रह्मेशाः केशवादयः । आपस्ते घ्नन्तु दौर्भाग्यं शान्ति ददतु सर्वदा ॥ २ ॥ समुद्रा गिरयो नद्यो मुनयश्च पतिव्रताः । दौर्भाग्यं घ्नन्तु ते सर्वे शान्ति यच्छन्तु सर्वदा ॥ ३ ॥ अस्यां मूर्त्तौ देवकलाः प्राणा आयान्तु शासनात् । सर्वेन्द्रियाणि जीवस्य वास्तोर्देवस्य सन्तु वै ॥ ४ ॥ आपः पवित्रीकुर्वन्तु सततं पापनाशनम् । मूर्त्तिं संस्नापयाम्येवं निर्विघ्नं कुरु मण्डपम् ॥ ५ ॥ प्रतिमां पुष्पेण संस्पृश्य प्रतिष्ठामन्त्रं जपेत् । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः वास्तुपुरुषस्य जीव इह स्थितः । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः वास्तुपुरुषस्य सर्वेन्द्रियाणि । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः वास्तुपुरुषस्य वाङ्म-नस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । अस्यै प्राणाः प्रति-ष्ठन्तु–[1] । कलशोपरि प्रतिमाद्वयं स्थापयेत् । आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित । भगवन् कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥ आवाहयिष्ये पुरुष वास्तुरूपं महोज्ज्वलम् । आगच्छ कलशे देव मण्डपं रक्ष वै मुदा ॥ वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि० ॥ १ ॥ आवाहयामि देवशं वास्तुदेवं महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम् ॥ वृषवास्तवे नमः वृषवास्तुमा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाहयामि० ॥२॥ मण्डलाद्बहिरीशानादिदिक्षु—अहमावाहयिष्यामि चरकीं नाम राक्षसीम् । अङ्कुशं डमरुं शङ्खं कुण्डलं चापि बिभ्रतीम् ॥ चरक्यै नमः चरकीमावाहयामि० ॥ १ ॥ आवाहयामि तां दैत्यां बिडालीसदृशाननाम् । विशालरोममांसाढ्यां पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ विदार्यै नमः विदारीमावाहयामि० ॥ २ ॥ पूतने त्वमिहागच्छ राक्षसीगणसंयुते । मया निवेदितां पूजां गृहाण वरदा भव ॥ पूतनायै नमः पूतनामावाहयामि० ॥ ३ ॥ अहमावाहयिष्यामि राक्षसीं पापपूर्विकाम् । रक्ताननां धूम्रवस्त्रां राक्षसीगणसंयुताम् ॥ राक्षसि त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् । पापराक्षस्य नमः पापराक्षसीमावाहयामि० ॥४॥ पूर्वादिदिक्षु—आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम् । रुद्रतेजःसमुद्भूतं देवसेनासमन्वितम् ॥ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि० ॥१॥ आवाहयामि देवेशमर्यम्णां पितृनायकम् । महिषं दिव्यमारूढं दण्डपाणिं शुभेक्षणम् ॥अर्यम्णे नमः अर्यमाणमावाहयामि०॥२॥ आवाहये तं प्रहरञ्च मुख्यं जृम्भायमाणं वरखड्गहस्तकम् । प्रत्यग्दिशायां च सुरक्षणीयमत्रैव वासं कुरु जृम्भक त्वम् ॥ जृम्भकाय नमः जृम्भकमावाहयामि० ॥३॥ आवाहये तं पिलिपिच्छकञ्च मयूरपुच्छानि विधारयन्तम् । वामे तु हस्ते धनुरादधानं बाणं दधानं त्वितरे तु हस्ते ॥ पिलिपिच्छाय नमः पिलिपिच्छमावाहयामि० ॥ ४ ॥ पुनः—आवाहयाम्युग्रसेनं शिवसेनानुधारिणम् । आगच्छ उग्रसेन त्वं पूर्वभागे स्थिरो भव ॥ उग्रसेनाय नमः उग्रसेनमावाहयामि० ॥ १ ॥ कृष्णरूपं करालाक्षं डामरं पाशधारिणम् । पीठस्य दक्षिणदिशि समागच्छतु डामर ॥ डामराय नमः डामरमावाहयामि० ॥ २ ॥ महाकाल समागच्छ कालानां कालमुत्तम । आगच्छ भगवन् काल पीठप्रत्यक् स्थिरो भव ॥ महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि० ॥ ३ ॥ एकपात् त्वं समागच्छ पदा चैकेन रक्षक । सुमदा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धारि भगवन्नुदग्दिशि समाश्रय ।। एकपदे नमः एकपदमावाहयामि० ।। ४ ।। पुरन्दरं गजारूढं पीतं वज्रायुधं प्रभुम् । देवानामधिपं श्रेष्ठमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ।। इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि० ।।१।। गन्धर्वास्यं छागयानं धृतशक्तिकमण्डलुम् । श्वेतांशुकं शीतवर्णमग्निमावाहयाम्यहम् ।। अग्नये नमः अग्निमावाहयामि० ।। २ ।। रक्ताक्षं महिषारूढं दण्डपाशधरं प्रभुम् । धर्माध्यक्षं मेघकाभं यममावाहयाम्यहम् ।। यमाय नमः यममावाहयामि० ।। ३ ।। निर्ऋतिं खड्गहस्तञ्च महोग्रं नीलविग्रहम् । नरयुक्तविमानस्थं निर्ऋतिं स्थापयाम्यहम् ।। निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि० ।। ४ ।। शङ्खपाशधरं देवं वरुणं नक्रवाहनम् । शुद्धस्फटिकसङ्काशमप्पतिं तं समाह्वये ।। वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि० ।। ५ ।। अङ्कुशं ध्वजहस्तञ्च च युवानमृगवाहनम् । मेघवर्णतनुं वायुं प्राणाधीशं समाह्वये ।। वायवे नमः वायुमावाहयामि० ।। ६ ।। धनप्रदं हयारूढं वरमुद्रागदाधरम् । गौरं महोदरं देवं सोममावाहयाम्यहम् ।। सोमाय नमः सोममावाहयामि० ।। ७ ।। ईशानं वृषभारूढं कर्पूरधवलं हरम् । वरत्रिशूलहस्तञ्च ईशानं समुपाह्वये ।। ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि० ।। ८ ।। श्वेतहस्तं समारूढं पद्मयोनिं जगद्गुरुम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।। ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि० ।। ९ ।। अशेषजगदाधारं शेषं सुरगणार्चितम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।। अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि० ।।१०।। इत्यावाह्य । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु—" आवाहितशिख्यादिवास्तुमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत । इति प्रतिष्ठाप्य । आवाहितवास्तुपीठदेवताभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्नहरो भव । शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ।। अनया पूजया वास्तुपीठदेवताः प्रीयन्ताम् । वास्तुमण्ड-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लादीशान्यां कलशं संस्थाप्य वरुणं पूजयेत्।ततो वास्तुपीठदेशे उपविश्य वास्तुमण्डलदेवताभ्यःपायसेन बलीन् दद्यात्। शिखिने एष पायसबलिर्नमः॥४४॥सर्वेभ्यः काञ्चनं दद्यात्।इदं हिरण्यं शिखिने नमः॥४५॥ ब्रह्मणे पयस्विनीं गां तन्निष्क्रयं वा दद्यात्। इदं पयस्विनीगोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ब्रह्मणे नमः। चरक्यादिभ्यो बलीन् दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमनम्। इति वास्तुदेवपूजनम्। **अथ मण्डपपूजा।** मण्डपाद् बहिः प्राच्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य। तत्र—एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश। संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते॥ भो इन्द्र! इहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि भो इन्द्र! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इन्द्राय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्। इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ इति नत्वा। इमं माषबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥ इन्द्राय साङ्गाय० इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि। इति साक्षतजलं भूमौ प्रक्षिपेत्। तत आचम्य आग्नेयीं गत्वा तत्र पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि सर्वामर हव्यवाह मुनिप्रवर्यैरभितोऽभिजुष्ट। तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते॥ भो अग्ने! इहागच्छेह तिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि भो अग्ने! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। अग्नये नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्। आग्नेयः पुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः। धूमकेतू रजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ इति प्रणम्य। इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥ अग्नये साङ्गाय०—इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि। इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्। तत आचम्य दक्षिणां दिशं गत्वा तत्र पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि वैवस्वत धर्मराज

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वामरैरर्चितधर्ममूर्त्ते । शुभाशुभानन्द शुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥ भोयम ! इहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि । भो यम सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । यमाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । महामहिषमारूढो दण्डहस्तो महाबलः । धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम । यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ यमाय साङ्गाय०—इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य नैर्ऋतीं दिशं गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशालवेतालपिशाचसंघैः । ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन् नमस्ते ॥ भो निर्ऋते ! इहागच्छेह तिष्ठ निर्ऋतये नमः निर्ऋति-मावाहयामि स्थापयामि भो निर्ऋते ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । निर्ऋतये नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः । खड्गहस्तो नरारूढस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं रक्षोगणेश त्वं गृहाण भो । यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ निर्ऋतये साङ्गाय०—इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आच-म्य प्रतीच्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशं-एह्येहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्यमहाप्सरोभिः । विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन् नमस्ते ॥ भो वरुण ! इहागच्छेह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि भो वरुण ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । वरुणाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । मकरस्थ नमस्तेऽस्तु जलेशाय नमोऽस्तु ते । शमं नयाशु विघ्नानि पाशहस्ताय ते नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं देव वरुण त्वं गृहाण भो । यज्ञसंर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ वरुणाय साङ्गाय०—इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । वायव्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसंघैः । प्राणाधिपः कालकवेः सहाया गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥ भो वायो ! इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि । भो वायो ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । वायवे नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । अनाकारो महौजाश्च यश्चादृष्टिगते दिवि । तस्मै पूज्याय जगतो वायवे प्रणमाम्यहम् ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो । यज्ञं संरक्ष मे नित्यं प्रसन्नो वरदो भव ॥ वायवे साङ्गाय०—, इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । उत्तरे गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम् । सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥ भो सोम ! इहागच्छेह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि भो । सोम ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । सोमाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । सर्वनक्षत्रमध्ये तु सोमो राजा व्यवस्थितः । तस्मै सोमाय देवाय नक्षत्रपतये नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद । यज्ञं संरक्ष मे सोम सन्तुष्टो वरदो भव ॥ सोमाय साङ्गाय०—इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । ईशान्यां गत्वा पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे—एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्द्धम् । लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥ भो ईशान ! इहागच्छेह तिष्ठ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि भो ईशान ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ईशानाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः । शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रणम्य इमं माषबलिं देव गृहाणेशान शङ्कर । सन्तुष्टो वरदो भूत्वा यज्ञं संरक्ष मेऽनघ ॥ ईशानाय साङ्गाय०' इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । ईशान्यपूर्वयोर्मध्ये कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे-एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धं पितृदेवतादिभिः । सर्वस्य धाताऽस्यमितप्रभावो विशाध्वरं नः सततं शिवाय ॥ भो ब्रह्मन् ! इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि । भो ब्रह्मन् ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । ब्रह्मणे नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदवासाः पितामहः । यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन । प्रसन्नो वरदो भूत्वा यज्ञं मे रक्ष सुव्रत ॥ ब्रह्मणे साङ्गाय०इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये पूर्ववत् कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कलशे-एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान । रक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ भो अनन्त ! इहागच्छेह तिष्ठ अनन्ताय नमः अनन्तमावाहयामि स्थापयामि । भो अनन्त ! सुप्रतिष्ठितो वरदो भव । अनन्ताय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । योऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् । पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति प्रणम्य । इमं माषबलिं देव गृहाणानन्त पन्नग । यज्ञसंरक्षणं कृत्वा संतुष्टो वरदो भव ॥ अनन्ताय साङ्गाय०-इत्यादि माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत् । तत आचम्य । यजमानः साचार्यः सऋत्विक् प्रक्षालितपादपाणिराचान्तः प्रागद्वारेण मण्डपं प्रविशेत् । इति कृत्रिममण्डपपूजा ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ द्वितीयदिने सर्वतोभद्रदेवतास्थापनक्रमः । मध्ये कमलकर्णिकायां अक्षतपुञ्जेषु--त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थसिद्धये ॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि॥१॥उत्तरे वाप्याम्--क्षीरोदार्णवसम्भूत लक्ष्मीबन्धो निशाकर। मण्डले स्थापयाम्यत्र सोमं सर्वार्थसिद्धये ॥ सोमाय नमः सोममावाहयामि ॥ २ ॥ ईशान्यां खण्डेन्दौ–ईशानममरं श्रेष्ठं सर्वलोकभयङ्करम् । मण्डले स्थापयामीह ईशानं सर्वसिद्धये ॥ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि ॥ ३ ॥ पूर्वे वाप्याम्–सर्वलोकाधिकं श्रेष्ठं देवर्षीणाञ्च पालकम् । पूर्वे दिक्पालकं देवराजं संस्थापयाम्यहम् ॥ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि ॥ ४ ॥ आग्नेय्यां खण्डेन्दौ–त्रिपादं मेषवाहं च द्विशीर्षं च त्रिलोचनम् । आग्नेयं स्थापयाम्यत्र अग्निं पूरुषमुत्तमम् ॥ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि ॥ ५ ॥ दक्षिणे वाप्याम्–आतङ्कः सर्वलोकानां धर्मराज इति श्रुतः । अतस्त्वां स्थापयाम्यत्र दक्षिणस्यां स्थिरो भव ॥ यमाय नमः यममावाहयामि ॥६॥ नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ–नैर्ऋत्यां वसतिर्यस्य घोररूपी सदा हि यः । निर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैर्ऋत्यां मण्डले शुभे ॥ निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि ॥ ७ ॥ पश्चिमे वाप्याम्–अपां पतिं पाशधरमनीकं यादसां पतिम् । वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मण्डले शुभे ॥ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि ॥ ८ ॥ वायव्यां खण्डेन्दौ–आशुगं स्पर्शबोधं च गन्धवाहं सुशीतलम् । मण्डले स्थापयामीह वायव्यां वायुमुत्तमम् ॥ वायवे नमः वायुमावाहयामि ॥ ९ ॥ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे–ध्रुवोऽध्वरश्च सोमश्च ह्याशुगश्चानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वस्वष्टक स्थिरो भव॥ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसून् आवाहयामि॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोमेशानयोर्मध्ये भद्र—त्रिनेत्राय त्रिरूपाय त्रिजटाय महात्मने । नमस्कृत्य स्थापयामि मण्ड-लोपरि मध्यतः ॥ एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रान् आवाहयामि ॥ ११ ॥ ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे—धाता मित्रो यमो रुद्रो वरुणः सूर्य एव च । भर्गो विवस्वान् पूषा च सविता ह्यष्टदेवताः ॥ विष्णुर्द्वादशसंख्याकानादित्यान् स्थापयाम्यहम् । द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् आवाह-यामि ॥ १२ ॥ इन्द्राग्न्योर्मध्ये भद्रे—एह्येहि चाश्विनौ देवौ द्विभुजौ देवशुभ्रुचिः । देववैद्यौ स्थाप-यामि मण्डले पूजयामि वै ॥ अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि ॥१३॥ अग्नियमयोर्मध्ये भद्रे—दैवे कर्मणि पित्र्ये च यौ मुख्यौ सर्वदा शुभौ । मण्डले स्थापयामीह सुखानुष्ठानसिद्धये ॥ सपैतृ-कविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सपैतृकविश्वान् देवान् आवाहयामि ॥ १४ ॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे—ये स्वेच्छया पर्यटन्ति यक्षराजा महीतले । सुमण्डले स्थापयामि आगच्छन्तु ममाध्वरे ॥ सप्तयक्षान् आवाहयामि ॥ १५ ॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे—अनन्तो वासुकिश्चैव कालीयो मणिभद्रकः । शङ्खश्च शङ्खपालश्च कर्कोटकधनञ्जयौ ॥ धृतराष्ट्रश्च नागेशाः समायान्तु सुमण्डले । भूतनागेभ्यो नमः भूतनागान् आवाहयामि ॥ १६ ॥ वरुणवायुमध्ये भद्रे—उर्वशीप्रमुखाः सर्वाः शक्राद्यैर्लालितैः सदा । गन्धर्वैः सह आयान्तु मण्डलेऽस्मिन् सुशोभने ॥ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः गन्धर्वाप्सरसः आवाह-यामि ॥ १७ ॥ ब्रह्मसोममध्ये वाप्याम्—षडाननं चतुर्बाहुं स्कन्दं पार्वतिसम्भवम् । मण्डले स्था-पयामीह सुखानुष्ठानसिद्धये ॥ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि ॥ १८ ॥ तदुत्तरे—शिवद्वारगत-स्त्वं च शिववाहनमुत्तमम् । पार्वत्याः प्रीतिकृन्नित्यं नन्दिन्नागच्छ मण्डले ॥ ऋषभाय नमः ऋष-भमावाहयामि ॥ १९ ॥ तदुत्तरे—सर्वेषु विश्वभूतेषु शूल सर्वामर प्रभो । आगच्छ मण्डले चास्मिन्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दयां कुरु कृपानिधे ॥ शूलाय नमः शूलमावाहयामि ॥ २० ॥ तत्रैव—ब्रह्मणा निर्मितः सद्यो महा-
कालो जटाधरः। अतस्त्वावाहये देव महाकाल नमोऽस्तु ते ॥ महाकालाय नमः महाकालमावाह-
यामि ॥ २१ ॥ ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्—दक्षाः सप्तगणा युक्ताः सत्यास्तु पितरः शुभाः। आग-
च्छन्तु स्थापयामि सर्वतोभद्रमण्डले ॥ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिसप्तगणान् आवाहयामि॥२२॥
ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्—तामग्निवर्णतपसां ज्वलन्तीं सर्वदा शुभाम्। भक्तानां वरदां नित्यं
दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥ दुर्गायै नमः दुर्गामावाहयामि ॥ २३ ॥ तत्पूर्वे—कृष्णाय गोपिनाथाय
चक्रिणे मुरवैरिणे। नमस्तुभ्यं जगत्स्वामिन् मण्डलेऽस्मिन् स्थिरो भव ॥ विष्णवे नमः विष्णुमा-
वाहयामि ॥ २४ ॥ ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्—स्वधा च पितृदानेन पितॄणां प्रीतिवर्द्धिनी। आगच्छ
भो स्वधे देवि सर्वतोभद्रमण्डले ॥ स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि ॥ २५ ॥ ब्रह्मयममध्ये वाप्या-
म्—मृत्युरोगानन्तकस्य प्रेष्यान् प्राणहरान् गुणान्। मण्डले स्थापयामीह कृपां कुरु ममोपरि ॥
मृत्युरोगेभ्यो नमः मृत्युरोगान् आवाहयामि ॥ २६ ॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्—गजाननं
सदानन्दं सर्वसङ्कष्टनाशनम्। चतुर्बाहुं सुत्रिनेत्रं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥ गणपतये नमः गणपति-
मावाहयामि ॥ २७ ॥ ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्याम्—पावनाः सर्वलोकानां शुद्धाः सर्वोत्तमाः शुभाः। सर्व-
पापहरा दिव्या अप आवाहयाम्यहम् ॥ अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि ॥ २८ ॥ ब्रह्मणः वायु-
मध्ये शृङ्खलायाम्—सुगन्धिनश्च शैलाद्याः मन्दं मन्दवहाः सदा। तानहं स्थापयामीह मरुतो
मण्डले शुभे ॥ मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवाहयामि ॥ २९ ॥ तत्रैव—ब्रह्मणः पादमूले कर्णि- ॥२६३॥
काधो मध्य एव हि। पृथिवी धार्यते विश्वं पृथिवी धार्यतेऽखिलम् ॥ अत आवाहयिष्यामि ब्रह्मणः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पादसन्निधौ ॥ भूम्यै नमः भूमिमावाहयामि ॥ ३० ॥ तत्रैव--गङ्गां च यमुनां चैव सुष्ठु गोदावरीं तथा । कावेरीं स्थापयामीह मण्डले भद्रसंज्ञके ॥ गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीः आवाहयामि ॥ ३१ ॥ तत्रैव–सर्वे समुद्रास्तु शुभा दधिप्रभृतयः सुराः । आगच्छतास्मिन् वरदा मण्डले सुस्थिराः सदा ॥ सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आवाहयामि ॥ ३२ ॥ कर्णिकापरिधौ–सुमेरुं सुन्दराकारं प्रकाशं सूर्यसन्निभम् । पर्वतानां च मुख्यस्त्वं पूजा मे प्रतिगृह्यताम् ॥ मेरवे नमः मेरुमावाहयामि ॥ ३३ ॥ बाह्यपरिधौ सोमसमीपे--निषिक्ता कुमुदाक्षस्य नाम्ना कौमोदकी गदा । शान्तिदा स्मरणादेव तस्यै तुभ्यं नमो नमः ॥ गदायै नमः गदामावाहयामि ॥ ३४ ॥ ईशानान्तिके--महायोगीन्द्रहस्तस्थ शङ्करस्य प्रियङ्कर । त्रिशूल त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलमावाहयामि ॥ ३५ ॥ इन्द्रान्तिके--तप्तकाञ्चनवर्णाभं वज्र वै शस्त्रनायकम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् गृहाणेमं नमोऽस्तु ते ॥ वज्राय नमः वज्रमावाहयामि ॥ ३६ ॥ अग्निसमीपे--सर्वदैत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे । सर्वसत्त्वहिते शक्ते शान्तिं यच्छ नमोऽस्तुते ॥ शक्तये नमः शक्तिमावाहयामि ॥३७॥ यमान्तिके--धर्मराजस्य हस्तस्थ यमस्य च सदाप्रिय । दण्डायुध नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धिप्रदो भव ॥ दण्डाय नमः दण्डमावाहयामि ॥३८॥ निर्ऋतिसमीपे--नीलजीमूतवर्ण त्वं तीक्ष्णदंष्ट्रकृशोदर । खड्गराज नमस्तुभ्यं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि ॥ ३९॥ वरुणान्तिके--देवोऽसि वरुणास्त्र त्वं दैत्यवंशविदारण । पाश मां समरे रक्ष रज्जुराज नमोऽस्तु ते ॥ पाशाय नमः पाशमावाहयामि ॥ ४० ॥ वायुसमीपे--गजघ्नं परवीरघ्नं परसैन्यापहारकम् । गणेशस्य प्रियं तस्मै ह्यङ्कुशाय नमो नमः ॥ अङ्कुशाय नमः अङ्कुशमावाहयामि ॥ ४१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्बाह्ये उत्तरे–गौतमः सर्वभूतानां ऋषीणाञ्च महाप्रियः। श्रौतानां कर्मणां चैव सम्प्रदायप्रवर्तकः॥ गौतमाय नमः गौतममावाहयामि ॥ ४२ ॥ ऐशान्ये–भरद्वाज नमस्तुभ्यं सदा ध्यानपरायणः। महाजटिलधर्मात्मा पापं हरतु मे सदा ॥ भरद्वाजाय नमः भरद्वाजमावाहयामि ॥४३॥ पूर्वे- विश्वा-मित्र नमस्तुभ्यं बलिं मखमहाव्रतम्। अध्यक्षीकृत्यगायत्रीं तपोरूपेण संस्थितः॥ विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रमावाहयामि ॥ ४४ ॥ आग्नेय्याम्–काश्यपः सर्वलोकेश सर्वलोकेषु संस्थितः । नराणां पापनाशाय ऋषिरूपेण तिष्ठति ॥ कश्यपाय नमः कश्यपमावाहयामि ॥ ४५ ॥ दक्षिणे–जमद-ग्निर्महातेजाः तपसा ज्वलितप्रभः। लोकेषु सर्वसिद्ध्यर्थं सर्वपापनिवर्तकः॥ जमदग्नये नमः जमद-ग्निमावाहयामि ॥ ४६ ॥ नैर्ऋत्ये--नमस्तुभ्यं वसिष्ठाय लोकानां वरदाय च । सर्वपापप्रणाशाय सूर्यान्वयहितैषिणे ॥ वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि ॥४७॥ पश्चिमे--अत्रये च नमस्तुभ्यं सर्वभूत-हितैषिणे। तमोरूपाय सत्याय ब्रह्मणेऽमिततेजसे ॥ अत्रये नमः अत्रिमावाहयामि ॥४८॥ वायव्ये–अरुन्धती नमस्तुभ्यं महापापप्रणाशिनी। पतिव्रतानां सर्वासां धर्मशीलप्रवर्तिके॥ अरुन्धत्यै० ॥४९॥ तद्बाह्ये पूर्वे--वज्रहस्तां विशालाक्षीं वृत्रासुरहतां शुभाम्। ऐरावतसमारूढामैन्द्रीमावाहया-म्यहम् ॥ ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमावाहयामि ॥ ५० ॥ आग्नेय्याम्--मयूरवाहनां देवीं षण्मुखां शक्ति-संयुताम्। तारकासुरसंहन्त्रीं कौमारीं पूजयाम्यहम् ॥ कौमार्यै नमः कौमारीमावाहयामि ॥ ५१ ॥ दक्षिणे--हंसारूढां प्रसन्नास्यां सायुधां वेदपारगाम्। सत्यलोकस्थितां देवीं ब्राह्मीमावाहयाम्यहम् ॥ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमावाहयामि ॥ ५२ ॥ नैर्ऋत्याम्--हिरण्याक्षहतां क्रुद्धां दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धराम्। अचिन्त्यकायां दुर्द्धर्षां वाराहीं पूजयाम्यहम् ॥ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि ॥ ५३ ॥ पश्चिमे--चण्डमुण्डहतां देवीं खड्गखट्वाङ्गभूषिताम्। रक्तबीजवधासक्तां चामुण्डां पूजयाम्यहम् ॥ चामु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ण्डायै नमः चामुण्डामावाहयामि ॥ ५४ ॥ वायव्याम्--शङ्खचक्रगदापद्मैः शोभितां गरुडासनाम् । अतसीपुष्पसङ्काशां वैष्णवीं पूजयाम्यहम् ॥ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीमावाहयामि ॥ ५५ ॥ उत्तरे--वृषारूढां पञ्चवक्त्रां त्रिशूलवरधारिणीम् । कैलाससंस्थितां देवीं पूजयामि महेश्वरीम् ॥ माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीमावाहयामि ॥ ५६ ॥ ऐशान्याम्--चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वाभरणभूषिताम् । आवाहयामि देवेशीं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि ॥ ५७ ॥ इत्यावाह्य । अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु--' । ब्रह्माद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य । ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । सुपूजिता मया देवाः कुर्वन्तु मम मङ्गलम् । मम यज्ञस्य संसिद्ध्यै क्षमध्वमनयार्चया ॥ अनया ब्रह्मादिमण्डलदेवताः प्रीयन्तान्न मम । इति सर्वतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनं पूजनञ्च । सर्वतोभद्रे कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य कलशोपरि सौवर्णीं हनुमत्प्रतिमां संस्थाप्य सम्पूज्य प्रार्थयेत् । अञ्जनीगर्भसम्भूत कपीन्द्र सचिवोत्तम । रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष सर्वदा ॥ तदुपरि पञ्चवर्णं वितानं बध्नीयात् । ततः स्थण्डिले अग्निस्थापनम् । अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाख्ये कर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये । तदङ्गतया कुण्डसम्मार्जनमेखलादेवतास्थापनपूजनादि करिष्ये । अग्न्यायतनं सम्मृज्य । कुशोदकेन प्रोक्ष्य । उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायाम्--पद्मनाभं हृषीकेशं कंसचाणूरमर्दनम् । आगच्छ भगवन् विष्णो मेखलायां स्थितो भव ॥ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ॥ १ ॥ मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायाम्--विश्वरूप निराधार निरालम्ब निरामय । पितामह समागच्छ मेखलायां स्थिरो भव ॥ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि ॥ २ ॥ अधो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायाम्—गङ्गाधर महादेव पार्वतीप्राणवल्लभ । आगच्छ भगवन्नीश मेखलायां स्थिरो भव ॥ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि ॥ ३ ॥ अस्यै प्राणाः० । विष्ण्वाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत । इति प्रतिष्ठाप्य । आवाहितविष्ण्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् । विष्ण्वादिदेवताः सर्वा मेखलादौ स्थिराः सदा । प्रसीदन्तु सुगृह्णन्तु ममार्चाः सन्तु वै शुभाः ॥ अनया पूजया विष्ण्वाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तान्न मम । दर्भैः परिसमुह्य । गोमयोदकेनोपलिप्य । स्रुवेण त्रिरुल्लिख्य । अनामिकाङ्गुष्ठेनोद्धृत्य । उदकेनाभ्युक्ष्य । अग्निमुपसमाधाय । अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इति सम्प्रार्थयेत् ।

अथ सूर्यादिग्रहस्थापनक्रमः । वृत्तमण्डलमादित्यं चतुरस्रं निशाकरम् । त्रिकोणं मङ्गलं चैव बुधे वै बाणसन्निभम् ॥ गुरवे पट्टिशाकारं पञ्चकोणं भृगुस्तथा । मन्दे च धनुषाकारं शूर्पाकारं तु राहवे ॥ केतवे च ध्वजाकारं मण्डलानि क्रमेण तु । शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ । प्रत्यङ्मुखौ शनिसोमौ शेषा दक्षिणतो मुखाः ॥ अरुणौ सूर्यभौमौ च श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ । हरिद्वर्णो बुधश्चैव पीतवर्णो गुरुस्तथा । कृष्णवर्णौ शनिराहू केतवस्तु तथैव च ॥ मध्ये—जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र भो सूर्य ! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ आग्ने—दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसन्निभम् । ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम् ॥ सोमाय नमः सोममावाहयामि ॥ २ ॥ दक्षिणे—धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम् । कुमारं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥ अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्र भौम ! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय भौमं० ॥३॥ ईशान्ये–प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं विभुम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥ मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध ! इहागच्छ इह तिष्ठ बुधाय० बुध० ॥ ४ ॥ ॥ उत्तरे–देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् । वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् । सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र बृहस्पते ! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये० बृहस्पतिं० ॥ ५ ॥ पूर्वे–हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् । सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥ भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्र ! इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय० शुक्रं० ॥ ६ ॥ पश्चिमे–नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् । छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् । सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र शनैश्चर ! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय० शनैश्चरं०॥ ७ ॥ नैर्ऋत्ये--अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥ राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र राहो ! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे०राहुं०॥८॥ पालाशधूम्रसंकाशान् तारकाग्रहमस्तकान् । रौद्रात्मकान् महाघोरान् केतूनावाहयाम्यहम् ॥ अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनसगोत्र केतो ! इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे०केतु० ॥ ९ ॥ अथाधिदेवतास्थापनम् ॥ सूर्यदक्षिणपार्श्वे--पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम् । आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम् ॥ ईश्वरं० ॥ १ ॥ सोमदक्षिणपार्श्वे--हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥ उमायै० उमां० ॥२॥ भौमदक्षिणपार्श्वे–रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनासमन्वितम् । षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥ स्कन्दाय० स्कन्दं० ॥ ३ ॥ बुधदक्षिणपार्श्वे–देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् । चतुर्भुजं रमानाथं विष्णु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मावाहयाम्यहम् ॥ विष्णवे० विष्णुं० ॥ ४ ॥ गुरुदक्षिणपार्श्वे–कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतु-
र्मुखम् । वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥ ५ ॥ शुक्रदक्षिणपार्श्वे–
देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् । वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् । इन्द्राय०इन्द्रं ॥६॥
शनिदक्षिणपार्श्वे० धर्मराजं महाबाहुं दक्षिणाशापतिं प्रभुम् । रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ॥
यमाय० यमं ॥ ७ ॥ राहुदक्षिणपार्श्वे–अलङ्कारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने । कलाकाष्ठादिरूपेण
कालमावाहयाम्यहम् ॥ कालाय० कालं० ॥८॥ केतुदक्षिणपार्श्वे–धर्मराजसमीपस्थं कृताकृतविवेकि-
नम् । आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥ चित्रगुप्ताय० चित्रगुप्तं० ॥९॥ इत्यधिदेवतास्थाप-
नम् । अथ प्रत्यधिदेवतास्थापनम् ॥ सूर्यवामपार्श्वे–रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् । वरदं
वह्निनामानमग्निमावाहयाम्यहम् ॥ अग्नये० अग्निं० ॥१॥ सोमवामपार्श्वे–चन्द्रबिम्बसमुद्भूता जग-
च्छुद्धिकराः शुभाः । औषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम् ॥ अद्भ्यो० अपः आ०॥२॥भौमवाम-
पार्श्वे–शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरि स्थिताम् । सर्वसस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्॥धरायै०
धरां०॥३॥ बुधवामपार्श्वे–शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम् । किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥
विष्णवे० विष्णुं० ॥ ४ ॥ गुरुवामपार्श्वे–ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् । वज्रहस्तं सुराधी-
शमिन्द्रमावाहयाम्यहम् । इन्द्राय० इन्द्रं० ॥ ५ ॥ शुक्रवामपार्श्वे–प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य
वल्लभाम् । नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् । इन्द्राण्यै० इन्द्राणीं० ॥ ६ ॥ शनिवामपार्श्वे–
आवाहयाम्यहं देवं देवेशं च प्रजापतिम् । अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥ प्रजापतये०
प्रजापतिं० ॥ ७ ॥ राहुवामपार्श्वे–अनन्ताद्यान्महाकायान्नानामणिविराजितान् । आवाहयाम्यहं सर्पा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्फणासप्तकमण्डितान् ॥ सर्पेभ्यो सर्पान्० ॥ ८ ॥ केतुवामपार्श्वे--हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् । आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥ ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥ ९ ॥ इति प्रत्यधिदेवताः । अथ पञ्चलोकपालस्थापनम् । लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् । आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ॥ गणपतये० गणपतिं० ॥ १ ॥ पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे । नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥ दुर्गायै० दुर्गां० ॥ २ ॥ आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारि-णम् । सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥ वायवे० वायुं० ॥ ३ ॥ अनाकारं शब्दगुणं द्यावा-भूम्यन्तरस्थितम् । आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥ आकाशाय० आकाशं० ॥४॥ देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ । आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्धनौ ॥ अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ ५ ॥ वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम् । आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥ वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिं० ॥ ६ ॥ भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् । आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः ॥ क्षेत्रपालाय० क्षेत्रपालं० ॥ ७ ॥ अथ दशदिक्पालस्थापनम् ॥ इन्द्रं सुर-पतिं श्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् । आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ॥ इन्द्राय० इन्द्रं० ॥१॥ त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम् । षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ॥ अग्नये० अग्निं० ॥ २ ॥ महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् । यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम् ॥ यमाय० यमं० ॥३॥ सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् । आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम् ॥ निर्ऋतये० निर्ऋतिं० ॥ ४ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥ वरुणाय० वरुणं ॥ ५ ॥ मनोजवं महातेजं सर्वान्तश्चा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ह० पु०

ह०

रिणं शुभम् । यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यम् ।। वायवे० वायु० ।।६।।आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपू-
जितम् । महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ।। सोमाय० सोमं० ।।७।। सर्वाधिपं महादेवं भूतानां
पतिमव्ययम् । आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ।। ईशानाय० ईशानं ।।८।। पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं
 वेदगर्भं पितामहम् । आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ।। ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ।। ९ ।। अनन्तं
सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् । जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ।।१०।। इत्यावाह्य ।
अस्यै प्राणाः० । आदित्यादिग्रहमण्डलदेवताभ्यो नमः, इति आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।
यत्कृतं पूजनं देवाः भक्तिश्रद्धाविवर्जितम् । परिगृह्णन्तु तत्सर्वं सूर्याद्या ग्रहनायकाः ।। आदित्याद्या
ग्रहाः सर्वे नानावर्णाः पृथक्ग्विधाः । सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु सौभाग्यं मम सर्वदा ।। ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपु-
रान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ।।
अनया पूजया आदित्यादिग्रहमण्डलदेवताः प्रीयन्ताम् । ततः ग्रहस्यैशानदिग्भागे भूमौ कलशस्था-
पनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं रुद्रं चावाहयेत् । उमाप्रियं त्रिनेत्रं च सुजटाधारिणं
विभुम् । आवाहये रुद्रदेवं ग्रहयागस्य सिद्धये ।। असंख्यातरुद्रेभ्यो० असंख्यातरुद्रान्० इत्यावाह्य
सम्पूज्य प्रार्थयेत् । नमस्ते देवदेवाय नमस्ते रुद्ररूपिणे । त्रिशूलधारिणे तुभ्यमीशानाय नमो नमः ।।
ततो मण्डलोपरि पञ्चवर्णं वितानं बध्नीयात् । तत आचार्योऽग्निसमीप आगत्याग्नेः पश्चादुपविश्य
ततः कुशकण्डिकाकरणम् । अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतार्थमासनद्वयं निधाय
ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव । भवामीति प्रतिवचनम् । ब्रह्मानु-
ज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् । प्रणय । ईशानादिपूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम् । आग्नेयादीशानान्तम् । ब्रह्म-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णोऽग्निपर्यन्तम् । नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् । अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् । अथ पात्रासादनम् । पश्चादुत्तरतो वा स्यात् । त्रीणि । पवित्रे द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । सम्मार्जनकुशाः पञ्च । उपयमनकुशाः सप्त । समिधस्तिस्रः । स्रुवः । आज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । वृषनिष्क्रयदक्षिणा । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय । पवित्रच्छेदनानि । द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य । त्रिभिश्छिद्य । द्वौ ग्राह्यौ त्रिस्त्याज्यः । प्रोक्षण्याः प्रणीतोदकमासिच्य । त्रिः पूरणम् । पवित्राभ्यामुत्पवनम् पवित्रयोः प्रोक्षणीषु निधानम् । प्रोक्षणीनां सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणेनोद्ङ्गिनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीनां प्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेनोत्तानेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । संमार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्रुवस्य असञ्चरे प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् । उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम् । निधानम् । प्रणीताग्नयोर्मध्ये असञ्चरस्थानम् । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । ब्रह्मदक्षिणत आज्याधिश्रयणम् । ज्वलदुल्मुकेन ईशानमारभ्येशानपर्यन्तं प्रदक्षिणं पर्यग्निकरणम् । इतरथावृत्तिः । प्रणीतोदकस्पर्शः । अर्द्धश्रिते अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम् । संमार्जनकुशैः स्रुवस्य संमार्जनम् । समार्गकुशानामग्रैर्मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं समृज्य । मूलैरग्रादारभ्य मूलपर्यन्तं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । पुनः प्रतपनम् । दक्षिणदेशे निधानम् । आज्योद्वासनम् । अग्नेरुत्तरतो निधाय । आज्योत्पवनम् । आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । प्रोक्षण्युत्पवनम् । अग्नेः पश्चिमतो निधाय । उपयमनकुशग्रहणम् । उत्तिष्ठन्समिधोऽभ्याधाय । प्रोक्षणीशेषोदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम् । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणं जान्वाच्य । ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः । स्रुवे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णाज्यहोमः। अग्नेरुत्तरभागे–प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥ १ ॥ एवं प्रोक्षणीपात्रे संस्रवधारणं सर्वत्र। अग्नेर्दक्षिणभागे–इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम ॥ २ ॥ समिद्धतमे–अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ ३ ॥ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम ॥ ४ ॥ ततो यजमानोऽग्नेर्दक्षिणत उपविश्य द्रव्यत्यागं कुर्यात्। अस्मिन् सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणि इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम। यथादैवतमस्तु। ततः सूर्यादिग्रहाणां अधिदेवतापञ्चलोकपालदेवता–इन्द्रादिदशदिक्पालदेवतानां प्रत्येकं समित्तिलयवतण्डुलाज्यद्रव्यैः अष्टोत्तरशतमष्टाविंतिमष्टौ वा जुहुयात्। लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रिय। गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराज प्रसीद मे॥ गणपतये स्वाहा॥१॥जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्॥ सूर्याय स्वाहा॥१॥ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसन्निभम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥ स्वाहा॥२॥ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥ भौमाय स्वाहा॥३॥ प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥ बुधाय स्वाहा॥४॥ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥ बृहस्पतये स्वाहा॥ ५॥ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥ शुक्राय स्वाहा॥ ६॥ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ शनैश्चराय स्वाहा॥ ७॥ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं

१ अर्कः पलाशः खदिरो अपामार्गोऽथ पिप्पलः औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः स्मृताः॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणमाम्यहम् ॥ राहवे स्वाहा ॥ ८ ॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ केतवे स्वाहा ॥ ९ ॥ ईश्वराय स्वाहा ॥ १० ॥ उमायै स्वाहा ॥ ११ ॥ स्कन्दाय स्वाहा ॥ १२ ॥ विष्णवे स्वाहा ॥ १३ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ १४ ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥१५॥ यमाय स्वाहा ॥ १६ ॥ कालाय स्वाहा ॥ १७ ॥ चित्रगुप्ताय स्वाहा ॥ १८ ॥ अग्नये स्वाहा ॥ १९ ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ २० ॥ धरायै स्वाहा ॥ २१ ॥ विष्णवे स्वाहा ॥ २२ ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ २३ ॥ इन्द्राण्यै स्वाहा ॥ २४ ॥ प्रजापतये स्वाहा ॥ २५ ॥ सर्पेभ्यः स्वाहा ॥ २६ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ २७ ॥ गणपतये स्वाहा ॥ २८ ॥ दुर्गायै स्वाहा ॥ २९ ॥ वायवे स्वाहा ॥३०॥ आकाशाय स्वाहा ॥ ३१ ॥ अश्विभ्यां स्वाहा ॥ ३२ ॥ वास्तोष्पतये स्वाहा ॥ ३३ ॥ क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥ ३४ ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ ३५ ॥ अग्नये स्वाहा ॥ ३६ ॥ यमाय स्वाहा ॥ ३७ ॥ निर्ऋतये स्वाहा ॥ ३८ ॥ वरुणाय स्वाहा ॥ ३९ ॥ वायवे स्वाहा ॥ ४० ॥ सोमाय स्वाहा ॥ ४१ ॥ ईशानाय स्वाहा ॥ ४२ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ४३ ॥ अनन्ताय स्वाहा ॥ ४४ ॥ ततः शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवताभ्यो नाममन्त्रैः प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं औदुम्बरसमित्तिलयवपायसाज्यद्रव्यैरष्टाविंशतिभिरष्टभिर्वा होमः कार्यः । शिखिने स्वाहा ॥ १ ॥ पर्जन्याय स्वाहा ॥ २ ॥ जयन्ताय स्वाहा ॥ ३ ॥ कुलिशायुधाय स्वाहा ॥ ४ ॥ सूर्याय स्वाहा ॥ ५ ॥ सत्याय स्वाहा ॥ ६ ॥ भृशाय स्वाहा ॥ ७ ॥ आकाशाय स्वाहा ॥ ८ ॥ वायवे स्वाहा ॥ ९ ॥ पूष्णे स्वाहा ॥ १० ॥ वितथाय स्वाहा ॥ ११ ॥ गृहक्षताय स्वाहा ॥१२॥ यमाय स्वाहा ॥१३॥ गन्धर्वाय स्वाहा ॥१४॥ भृङ्गराजाय स्वाहा ॥१५॥ मृगाय स्वाहा ॥१६॥ पितृभ्यः स्वाहा ॥१७॥ दौवारिकाय स्वाहा ॥१८॥ सुग्रीवाय स्वाहा ॥१९॥ पुष्प-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दन्ताय स्वाहा ॥२०॥ वरुणाय स्वाहा ॥२१॥ असुराय स्वाहा ॥२२॥ शोषाय स्वाहा ॥२३॥ पापाय स्वाहा ॥२४॥ रोगाय स्वाहा ॥२५॥ अहये स्वाहा ॥२६॥ मुख्याय स्वाहा ॥२७॥ भल्लाटाय स्वाहा ॥ २८ ॥ सोमाय स्वाहा ॥ २९ ॥ सर्पेभ्यः स्वाहा ॥ ३० ॥ अदितये स्वाहा ॥ ३१ ॥ दितये स्वाहा ॥ ३२ ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ ३३ ॥ सावित्राय स्वाहा ॥ ३४ ॥ जयाय स्वाहा ॥ ३५ ॥ रुद्राय स्वाहा ॥ ३६ ॥ अर्यम्णे स्वाहा ॥ ३७ ॥ सवित्रे स्वाहा ॥ ३८ ॥ विवस्वते स्वाहा ॥३९॥ विबुधाधिपाय स्वाहा ॥ ४० ॥ मित्राय स्वाहा ॥ ४१ ॥ राजयक्ष्मणे स्वाहा ॥ ४२ ॥ पृथ्वीधराय स्वाहा ॥ ४३ ॥ आपवत्साय स्वाहा ॥ ४४ ॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पते इति चतुर्भिः श्लोकैः प्रतिश्लोकं सप्तविंशत्याहुतिभिः औदुम्बरसमित्तिलपायसाज्याहुतीर्जुहुयात् । तत्र श्लोकाः । वास्तोष्पते भूमिपते पाहि त्वं लोकपालकः । सुखं कुरु सदाऽस्मभ्यं श्रीवास्तोष्पतये नमः ॥ वास्तुपुरुषाय स्वाहा ॥ १ ॥ वास्तोष्पते प्रतिज्ञां त्वं कुर्वस्मात्रक्षितुं सदा । सुष्ठु प्रवेशश्चास्माकं भवत्येव जगत्पते ॥ वास्तुपुरुषाय स्वाहा ॥ २ ॥ वास्तोष्पते त्वमस्माकं आपन्निस्तारको भव । गोभिरश्वादिभिः प्राणवर्द्धकश्चैधि वासव ॥ वास्तुपुरुषाय स्वाहा ॥ ३ ॥ अक्षीणसम्पदाः स्याम तव सख्ये वयं सति । वर्तमानपितेव त्वं पुत्रान् प्रति जुषस्व वै ॥ वास्तुपुरुषाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ततो घृताक्तबिल्वाहुतिहोमः ॥ ४ ॥ नमस्करोमि तं देवं वास्तुदेवं गणैर्युतम् । सर्वार्थदं त्रिरूपाक्षं सुनीलेस्वितमच्युतम् ॥ वास्तुपुरुषाय स्वाहा ॥ ५ ॥ इति पञ्चभिः प्रत्येकं पञ्च पञ्च बिल्वैरेकैकं वा हुत्वा । ततश्चरक्यादिदेवतानां प्रत्येकं प्रतिद्रव्यं चतुश्चतुःसंख्याकाभिः समित्तिलपायसाज्याहुतीर्जुहुयात् । चरक्यै स्वाहा ॥ १ ॥ विदार्यै स्वाहा ॥ २ ॥ पूतनायै स्वाहा ॥ ३ ॥ पापराक्षस्यै स्वाहा ॥४॥ स्कन्दाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा ॥ ५ ॥ अर्यम्णे स्वाहा ॥ ६ ॥ जृम्भकाय स्वाहा ॥ पिलिपिच्छाय स्वाहा ॥८॥ उग्रसेनाय स्वाहा ॥ ९ ॥ डामराय स्वाहा ॥ १० ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ ११ ॥ एकपदे स्वाहा ॥ १२ ॥ इन्द्राय स्वाहा ॥ १३ ॥ अग्नये स्वाहा ॥ १४ ॥ यमाय स्वाहा ॥ १५ ॥ निर्ऋतये स्वाहा ॥१६॥ वरुणाय स्वाहा ॥ १७ ॥ वायवे स्वाहा ॥ १८ ॥ सोमाय स्वाहा ॥१९॥ ईशानाय स्वाहा ॥२०॥ ब्रह्मणे स्वाहा ॥ २१ ॥ अनन्ताय स्वाहा ॥ २२ ॥ ब्रह्मस्थाने पृथ्वीं ध्यात्वा 'धरायै नमः' इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्। सर्वबीजसमायुक्त सर्वरत्नौषधीवृते। प्रासादार्थञ्च संसिद्धयै पृथ्वि देवि नमोऽस्तुते॥ प्रासादं प्रागादितस्त्रिसूत्र्या वेष्टयेत् । प्राचीमैरावतो रक्षेच्छेषश्चापि तथाऽवतु । आग्नेय्यां पुण्डरीकाक्षो रक्षेन्नागश्च वासुकिः ॥ १ ॥ दक्षिणां वामनः पातु तथा नागश्च तक्षकः । कुमुदो नैर्ऋतीं रक्षेत्तथा कर्कोटको बली ॥ २ ॥ प्रतीचीमञ्जनाख्यश्च शङ्खपालस्तथाऽवतु । पुष्पदन्तोऽथ वायव्यां दिग्गजः कुलिशः फणिः ॥ ३ ॥ उदीचीं सार्वभौमाख्यस्तथा नागश्च कम्बलः । ऐशान्यां सुप्रतीकाख्यो रक्षेदश्वतरस्तथा ॥ ४ ॥ इन्द्रादिदशदिक्पालाः सायुधाश्च सवाहनाः । ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्धं रक्षां कुर्वन्तु सर्वतः ॥ ५ ॥ ततो दुग्धपूर्णजलपूर्णकुम्भाभ्यां च धाराद्वयमविच्छिन्नं कुर्यात् । लवणः क्षीरतोयश्च घृतमण्डोदकस्तथा । दधिमण्डः सुरोदश्च इक्षुस्वादूदकस्तथा ॥ १ ॥ पुष्करश्च प्रयागश्च प्रभासं नैमिषं तथा । गयाशिरो ब्रह्मशिरस्तथैवोत्तरमानसम् ॥२॥ गङ्गाद्वारं कुशावर्तं बिल्वकं नीलपर्वतम् । वाराहं भृगुतुङ्गं च शालग्रामं सरस्तथा ॥ ३ ॥ शूर्पारकं पौण्डरीकं गङ्गासागरसङ्गमः। धर्मारण्यं फल्गुतीर्थमविमुक्तं तु मोक्षदम् ॥४॥ गङ्गा सरस्वती पुण्या सरयू गण्डकी तथा । कौशिकी यमुना क्षिप्रा चन्द्रभागा च गोमती ॥५॥ मन्दाकिनी दशार्णा च तामसी च कुमुद्वती । वेणी वैतरणी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भीमा कृष्णा वेण्या च वञ्जुरा ॥६॥ गोदावरी भीमरथी गौतमी चाश्वनद्यपि । तुङ्गभद्रा ताम्रपर्णी कावेरी वेत्रवत्यपि ॥७॥ नन्दा चालकनन्दा च करतोया च पिप्पला । सर्वपापशमन्यश्च सर्वलोकस्य मातरः ॥७॥ स्वतोयधारया वास्तुभूमिं सिञ्चन्तु सर्वतः । दुग्धधाराप्रदानेन विलयं यान्तु राक्षसाः ॥६॥ अथ प्रासादोपरि दिक्षु दिक्पालवर्णान्ध्वजान् दिक्पालपूजनपूर्वकान् निवेशयेत् । पूर्वादि क्रमयोगेन इन्द्रादीनां यथाक्रमम् । पीतं रक्तं कृष्णनीले श्वेतं धूम्रं हरित्तथा । शोणं सितं तथा रक्तं ध्वजवर्णाः प्रकीर्तिताः ॥ महाध्वजारोपणं पूजनं च । महाध्वजाय नमः । ततो यजमानः चतुःषष्टिधा विभाजितप्रासादाग्नेयकोणपदादुत्तरे आकाशपदे जानुमात्रं खनित्वा गोमयेनोपलिप्य शुक्लचन्दनपुष्पादिभिः अलंकृत्य । यवगोधूमधान्यानि तिलाः काङ्गस्तथैव च । श्यामाकाश्चणकाश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ इति सप्तधान्यानि ॥ दधितण्डुलफलपुष्पाणि प्रक्षिप्य । नवकुम्भं जलपूर्णं शुक्लैकपुष्पयुतं गन्धादिभिरर्चितं हस्तद्वयेनादाय जानुभ्यामवनिं गत्वा 'नमो वरुणाय' इति तज्जलेन गर्तं पूरयेत् । तत्रावर्ते दक्षिणेन पुष्पे चोर्ध्वमुखे शुभम् । वैपरीत्ये त्वशुभम् ॥ ततो मृन्निर्मितपेटिकायां सप्तधान्यदधितण्डुलशैवालफलपुष्पाणि च प्रक्षिप्य । वृषवास्तुं तुर्यमङ्गलघोषेण अवटस्थाने आनीय तं स्थाने संस्थाप्य वृषवास्तुं गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः । प्रसीद पाहि विश्वेश देहि प्रासादजं सुखम् ॥ वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो ! प्रासादं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा ॥ ततः–शालाधिपतिं प्रार्थयेद्दोषोपशमनाय च । प्रार्थयामीत्यहं देव प्रासादस्याधिपस्तु यः ॥ प्रायश्चित्तप्रसङ्गेन प्रासादार्थे तु यत् कृतम् । मूलच्छेदं तृणच्छेदं कृमिकीटनिपातनम् ॥ हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम् ॥ अनृतं भाषितं यच्च किञ्चिद्वृक्षस्य पातनम् । एतत्सर्वं क्षमस्वैव यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रासादार्थे कृतं पापमज्ञानेनापि चेतसा । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रासादस्य शुभं कुरु ॥ ततः पेटिकामाच्छाद्य तस्मिन् गर्ते शनैर्निक्षिपेत् । अनेन मन्त्रेण -सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्धनि । तथेमं वह कल्याणं प्रासादं सह दैवतैः ॥ गर्त्ते च तथैव मृदा पूरिते मृदाधिक्ये उत्तमं साम्ये मध्यमं न्यूने अधमं फलं विजानीयात् । गर्त्तोपरि भूमिं गोमयेनोपलिप्य शुक्लगन्धाक्षतपुष्पैः भूमिं सम्पूज्य तत्र जलपूर्णकुम्भं संस्थाप्य तदुपरि घृतदीपं प्रज्वालयेत् । विश्वकर्मणे नमः, इत्यायुधपूजां कृत्वा प्रार्थयेत् । अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्चानयोद्भवाः । नाशय त्वं हि तान् सर्वान् विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते ॥ शिल्पिनोऽपि वस्त्रादिना सन्तोष्याः । ततः आचार्यः पञ्चगव्येन हिरण्यदूर्वाङ्कुरयवाश्वत्थपलाशपर्णमिश्रोदकेन मूर्तिमभिषिञ्चेत् । त्रिधा भूदेवकार्यार्थं यः पराभक्तिभावनः । स विष्णुः सर्वपापघ्नः पुनातु कृपयाऽत्र वै ॥ विष्णोराज्ञामनुप्राप्य त्वां पुनन्तु सवासवाः । वेदमन्त्राः सबीजास्तु सरहस्याः सपल्लवाः ॥ कश्यपाद्याश्च मुनयो त्वां पुनन्तु सदेवताः । गङ्गाद्याः सरितः सर्वास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ ससर्वसागराः सर्वे त्वां पुनन्तु जलाशयाः । पतिव्रतास्त्वदित्याद्या यक्षाः सिद्धाः सपन्नगाः ॥ ओषध्यः पर्वतश्चापि त्वां पुनन्तु त्रिलोकजाः । पञ्चगव्यं हिरण्यं तु पवित्रं शुद्धिकारणम् ॥ अतस्त्वामभिषिञ्चामि देवाः शुध्यन्ति वै मुदा । ततः पुष्पफलयवाक्षतदूर्वाङ्कूरान् गृहीत्वा पादपीठे निक्षिप्य नमोऽस्तु देवदेवाय नमस्ते तेजशालिने । दूर्वाफलयवांस्तुभ्यमर्पयामि सुरेश्वर ॥ तत्र मूर्तिं स्थापयित्वा देवदक्षिणहस्ते प्रतिसरं बध्नीयात् । देवानां रक्षणार्थाय रक्तसूत्रकुशैर्युतम् । तद्वै प्रतिसराख्यं च बध्नामि सुरहेतवे ॥ सम्पूज्य वाससा कुशैश्चाच्छाद्य जले अधिवासयेत् । प्रतिमासु कलानां च सिद्ध्यर्थं रक्षणाय भो । जलेशैनं रक्ष देवमतोऽप्सु समधिष्ठितः ॥ एकरात्रं गोदोहनमात्रं मुहूर्तमात्रं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्क्षणं वा । मारुतप्रियसूनो त्वां नमामि शुभहेतवे । प्रतिष्ठास्थानमाश्रित्य सफलोऽस्तु सदा मम। ऋत्विजो मूर्तिमुत्थापयेयुः । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवश त्यज निद्रां महाशय । जलाधिवासनविधिं त्यज स्वीकुरु मण्डपम् ॥ उत्थाय औदुम्बरपीठान्तरे निवेश्य पुण्याहं वाचयित्वा । भो ब्राह्मणाः ! करिष्यमाणदेवस्नपनाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । विप्राः—पुण्याहम् ३ ॥ एवं स्वस्ति ऋद्धिमपि वाचयित्वा ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा देवं प्रार्थयेत् । स्वागतं देव देवेश हनुमत्पवनात्मज । सर्वत्र त्वदधिष्ठानं रक्षाहेतुकरं नृणाम् ॥ वल्मीकमृत्तिकयाऽनुलिप्य । सत्संस्काराय देवानां मलस्य परिशुद्धये । मृत्स्नया स्नापयाम्येव देवतातुष्टिहेतवे ॥ शुद्धोदकेन स्नापयेत् । पुष्करादिसमीचीनतीर्थस्थैर्वारिभिस्तथा । स्नापयामि महाराजं सदा ह्यभरवल्लभम् ॥ ततः पञ्चगव्येन स्नापयेत् । गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिःसमन्वितैः । पञ्चगव्यैः स्नापयामि देवं सर्वार्थसाधकम् ॥ शमीपलाशखदिरबिल्वाश्वत्थवैकङ्कतन्यग्रोधपनसाम्रशिरीषोदुम्बरप्लक्षाणां त्वक्कषायकलशोदकेनाभिषिञ्चति । पञ्चकषायोदकेन वा । यज्ञियवृक्षत्वक्कषायैर्निर्मलैः परिशोधितैः । उष्णैर्मलहरैः सम्यक् स्नापयामि सुखाप्तये॥ मणिमुक्ताप्रवालसुवर्णयुक्तकलशोदकेनाभिषिञ्चति । सुवर्णं रजतं मुक्तालाजावर्तप्रवालकम् । एतत्पञ्चकरत्नैस्तु सजलैः स्नापयाम्यहम् ॥ यवगोधूमतिलकङ्गुश्यामाकचणकव्रीहिपिष्टेन मूर्तिं संल्लिप्य । सुगन्धितैलेनाभ्यज्य । तिलपिष्टैः पेषितैस्तैर्गन्धपुष्पसमन्वितैः । सुगन्धितैलैः सम्मार्जिम बहुप्रीतिकरं शुभम् ॥ शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य । गङ्गादिसलिलैर्दिव्यैस्तीर्थमंत्राभिमन्त्रितैः । सगणं दीप्तिमन्तं तं देवं सुस्नापयाम्यहम् ॥ ततः मूर्तिं पीठे संस्थाप्य । पीतवस्त्रेणाच्छाद्य । श्वेतं सुनिर्मलं शान्तं तन्तुसन्तानसंयुतम् । देवेभ्योऽहं प्रदास्यामि सुरसन्तुष्टिकारकम् ॥ पञ्चोपचारैः सम्पूज्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लेह्यपेयचूष्यखाद्यचतुर्विधमन्नमग्रे संस्थाप्य दीपं प्रदर्श्य । अष्टौ दीपान् प्रदास्यामि पायसं भक्ष्यमुत्तमम् । भोज्यं सुन्दरमादर्शं दर्शयामि शुभाप्तये ।। आचार्यो मुर्तेः पश्चाद् तिष्ठेत्; अग्रतः कोऽपि न पश्येत् । तैजसपात्रे मधु संगृह्य सुवर्णशलाकया दक्षिणवामनेत्रे उन्मीलयेत् । लिङ्गस्य प्रतिमायाश्च सुष्ठु तेजोऽभिवृद्धये । द्वे चक्षुषी च निर्माणं करोमि स्वात्मसिद्धये।।नमो भगवते हनुमते हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपाय ते नमः। मध्वञ्जनं कुर्यात् । दिव्याञ्जनं मधु घृतं रजतस्थं शुभान्वितम् । दास्यामि सौम्यदृष्ट्यर्थं सुवर्णेन शलाकया ।। आदर्शं दर्शयित्वा आचार्याय गां दद्यात् । कृतस्य नेत्रोन्मीलनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं देवस्य सौम्यदृष्टिसिद्ध्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्त्वा सुवर्णशलाकां स्नानवस्त्रादिकं च शिल्पिने दद्यात् । ततो देवमुत्थाप्य सर्वतोभद्रस्थशय्यायां देवं शाययेत् । नमोऽस्तु ते ब्रह्मरूप सर्वकार्यप्रसाधक । वेदिकोपरि शय्यायां स्थिरो भव नमोऽस्तुते ।। प्राजापत्योऽयं मुहूर्तोऽस्तु । ततः प्रधानहोमः कार्यः । हनुमते स्वाहा ।। १ ।। अञ्जनीसूनवे स्वाहा ।। २ ।। वायुपुत्राय स्वाहा ।। ३ ।। महाबलाय स्वाहा ।। ४ ।। रामेष्टाय स्वाहा ।। ५ ।। फाल्गुनसखाय स्वाहा ।। ६ ।। पिङ्गाक्षाय स्वाहा ।। ७ ।। अमितविक्रमाय स्वाहा ।। ८ ।। समुद्रोल्लङ्घनाय स्वाहा ।। ९ ।। सीताशोकविनाशनाय स्वाहा ।। १० ।। लक्ष्मणप्राणदात्रे स्वाहा ।। ११ ।। दशग्रीवदर्पहन्त्रे स्वाहा ।। १२ ।। एताः प्रधानदेवताः प्रतिनाम्ना द्वात्रिंशतिसंख्याकाहुतिभिस्तिलगुडमिश्रव्रीहिघृताक्ताहुतिभिर्हुत्वा सर्वतोभद्रदेवताश्च एकैकया आज्याहुत्या जुहुयात् । ब्रह्मणे स्वाहा ।।१।। सोमाय स्वाहा ।। २ ।। ईशानाय स्वाहा ।। ३ ।। इन्द्राय स्वाहा ।। ४ ।। अग्नये स्वाहा ।। ५ ।। यमाय स्वाहा ।। ६ ।। निर्ऋतये स्वाहा ।। ७ ।। वरुणाय स्वाहा ।। ८ ।। वायवे स्वाहा ।। ९ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टवसुभ्यः स्वाहा ॥ १० ॥ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा ॥ ११ ॥ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा ॥ १२ ॥ अश्विभ्यां स्वाहा ॥ १३ ॥ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥ १४ ॥ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा ॥१५॥ भूतनागेभ्यः स्वाहा ॥ १६ ॥ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा ॥ १७ ॥ स्कन्दाय स्वाहा ॥ १८ ॥ वृष-भाय स्वाहा ॥ १९ ॥ शूलाय स्वाहा ॥ २० ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ २१ ॥ दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा ॥ २२ ॥ दुर्गायै स्वाहा ॥ २३ ॥ विष्णवे स्वाहा ॥ २४ ॥ स्वधायै स्वहा ॥२५॥ मृत्यु-रोगेभ्यः स्वाहा ॥ २६ ॥ गणपतये स्वाहा ॥ २७ ॥ अद्भ्यः स्वाहा ॥ २८ ॥ मरुद्भ्यः स्वाहा ॥ २९ ॥ भूम्यै स्वाहा ॥ ३० ॥ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा ॥ ३१ ॥ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा ॥३२॥ मेरवे स्वाहा ॥ ३३ ॥ गदायै स्वाहा ॥ ३४ ॥ त्रिशूलाय स्वाहा ॥ ३५ ॥ वज्राय स्वाहा ॥३६॥ शक्तये स्वाहा ॥ ३७ ॥ दण्डाय स्वाहा ॥ ३८॥ खड्गाय स्वाहा ॥ ३९ ॥ पाशाय स्वाहा ॥४०॥ अङ्कुशाय स्वाहा ॥ ४१ ॥ गौतमाय स्वाहा ॥ ४२ ॥ भरद्वाजाय स्वाहा ॥ ४३ विश्वामित्राय स्वाहा ॥४४॥ कश्यपाय स्वाहा ॥४५॥ जमदग्नये स्वाहा ॥४६॥ वशिष्ठाय स्वाहा ॥४७॥ अत्रये स्वाहा ॥ ४८ ॥अरुन्धत्यै स्वाहा ॥ ४९ ॥ ऐन्द्र्यै स्वाहा ॥ ५० ॥ कौमार्यै स्वाहा ॥ ५१ ॥ ब्रह्माण्यै स्वाहा ॥ ५२ ॥ वाराह्यै स्वाहा ॥ ५३ ॥ चामुण्डायै स्वाहा ॥ ५४ ॥ वैष्णव्यै स्वाहा ॥ ५५ ॥ माहेश्वर्यै स्वाहा ॥ ५६ ॥ वैनायक्यै स्वाहा ॥ ५७ ॥ इष्टदेवताभ्यः स्वाहा । कुलदेवताभ्यः स्वाहा । ग्रामदेवताभ्यः स्वाहा । स्थानदेवताभ्यः स्वाहा । वास्तुदेवताभ्यः स्वाहा । सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।ततः गन्धोदकपूरितेनैककलशेन प्रासादं सशिखरं स्नापयेत्।पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु पवित्राणि प्रासादस्याभिषेचने ॥ ततः मङ्गलगीतनृत्यादिना

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रात्रिं निनयेत् । इत्यधिवासनम् । प्रातः नित्यकर्म निर्वर्त्य ब्राह्मणैः सह शान्तिपाठं कृत्वा मण्डले देवतानिर्माल्यमपसार्य । स्थापितदेवताः सम्पूज्य । सतूर्यघोषेण–उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश त्यज निद्रां जगत्पते । त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत् ॥ इति देवमुत्थाप्य रथमारोप्य ऋत्विग्भिर्देवेन तूर्यघोषेण सह प्रासादं प्रदक्षिणीकृत्य देवालयं प्रविशेत् । शुभे लग्ने गर्ते माणिक्यमौक्तिकप्रवालेन्द्रनीलकवैडूर्यं च (सुवर्णखण्डं वा) प्रक्षिप्य मूर्तिं स्थापयेत् । रामदूत महाबाहो पिङ्गाक्ष कपिनायक । संस्थापयामि त्वां वीर अञ्जनीहर्षदायक ॥ ध्रुव त्वं ध्रुवकर्तारं ध्रुवदेवं महाबलम् । अचलं कुरु कल्याणं ध्रुवागच्छ नमोऽस्तु ते ॥ वालुकादिभिर्दृढं पूरयित्वा पुनर्न चालयेत् । ततो देवं मूर्ध्नि पुष्पेण स्पृष्ट्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः हनुमतः प्राणा इह प्राणाः । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः हनुमतः जीव इह स्थितः । आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः हनुमतः सर्वेन्द्रियाणि । वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । अस्यै प्राणाः० । यजमानो हनुमतः दक्षिणकर्णे गायत्रीं जपेत् । अञ्जनीगर्भाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥ अथ ध्यानम् । आञ्जनेयं वायुपुत्रं रामकार्यविचक्षणम् । लङ्घिताब्धिं राक्षसान्तं कपिं ध्यायामि मानसे ॥ श्रीहनुमते नमः ध्यानं समर्पयामि ॥ १ ॥ श्रीरामचरणाम्भोजयुगलस्थिरमानसम् । आवाहयामि वरदं हनुमन्तमभीष्टदम् ॥ आवाहनं स० ॥२॥ काञ्चनप्रोतमणिभिर्भासमानं मनोहरम् । वायुपुत्र महाबाहो गृहाणासनमुत्तमम् ॥ आसनार्थे पुष्पं स० ॥ ३ ॥ तीर्थराशेः समानीतं वासितं च सुगन्धिभिः । पादप्रक्षालनार्थाय गृह्ण पाद्यं सुरार्चित ॥ पाद्यं स० ॥ ४ ॥ गङ्गाजलं सुगन्धाढ्यं पुष्पादिभिः समन्वितम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सीताशो-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कनिवारण ॥ अर्घ्यं स० ॥ ५ ॥ आचमनं गृह्य देवेश नमस्ते सुरपूजित । कृपां कुरु कपिश्रेष्ठ लक्ष्मणप्राणजीवन ॥ आचमनं स० ॥ ६ ॥ दिव्यौषधिसमायुक्तं स्नापनं वारिसम्भवम् । मया दत्तं गृहाण त्वं अञ्जनीसूनवे नमः ॥ स्नानं स० ॥ ७ ॥ पयो दधि घृतं गव्यं माक्षिकं शर्करान्वितम् । पञ्चामृतेन स्नपनं कुरु लङ्काप्रभञ्जन ॥ पञ्चामृतस्नानं स० ॥८॥ शुद्धोदकेन संस्नाहि मया दत्तेन वायुज । स्नानेनानेन देवेश प्रीतो भव निरन्तरम् ॥ शुद्धोदकस्नानं० ॥९॥ प्रतिसरं विस्रंसयति। हनुमतः प्रतिसरं विस्रंस्य । सिन्दूरं सर्वसौभाग्यं सुगन्धतैलसंयुतम् । सिन्दूरेणार्चितो देव मम शान्ति प्रयच्छतु ॥१०॥ ग्रथितां नवभीरत्नैर्मेखलां त्रिगुणीकृताम् । मौञ्जं मौञ्जीमयीं पीतां गृहाण पवनात्मज ॥ कटिसूत्रं गृहाणेदं कौपीनं ब्रह्मचारिणः । कौशेयं कपिशार्दूल हरिद्रक्तं सुमङ्गलम् । ११ ॥ दिव्यौषधिप्रदानेन कपिकोटीरनेकशः । हनुमते जीवाय ते नमस्तस्मै परात्मने ॥ वनवासिने अजिनमेखलामौञ्जीदण्डानि दत्त्वा—पीताम्बरसुवर्णाभमुत्तरीयार्थमेव च । दास्यामि जानकीप्राण प्राणकारण गृह्यताम् ॥ वस्त्रं स० ॥ १२ ॥ कार्पासतन्तुभिः सम्यक् कृतं यज्ञोपवीतकम् । गृहाणाक्षकुमारारे दत्तं भक्त्या मया तव ॥ यज्ञोपवीतं स० ॥ १३ ॥ आभरणानि दिव्यानि काञ्चिनूपुरकङ्कणम् । मुद्रिकां मुकुटं चारु मया दत्तं गृहाण भो ॥ आभरणानि स० ॥ १४ ॥ चन्दनं सुभगं चारु मलयाद्रिसमुद्भवम् । मया दत्तं गृहाण त्वं रामदूत नमोस्तु ते ॥ चन्दनं स० ॥ १५ ॥ अतिशुभ्राक्षतान् वातसूनो रावणदर्पहन् । गृहाण भक्तितो दत्तान्मया त्वं भक्तवत्सल ॥ अक्षतान् स० ॥ १६ ॥ करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैस्तथा । शतपत्रैश्च कल्हारैरर्चयेद्रामसेवकम् ॥ पुष्पाणि स० ॥ १७ ॥ सुगन्धिद्रव्यं नानापरिमलद्रव्यं च । दिव्यं सगुग्गलं साज्यं दशाङ्गं च सवह्निकम् । गृहाण मारुते धूपं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुप्रियं घ्राणतर्पणम् । धूपं स० ॥ १८ ॥ आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं परम् । दीपं गृह्ण मया दत्तं नमस्ते रामवल्लभ ॥ दीपं स० ॥ १९ । नैवेद्यं च मया दत्तं गोधूमान्नं घृतैर्युतम् । इक्षुरसेन संयुक्तं गृहाण पवनात्मज ॥ नैवेद्यं स० ॥ २० ॥ नागवल्लीदलैः पूगीलवङ्गैलाखदीरकैः । युतं गृहाण ताम्बूलं वारिधेः सेतुबन्धन ॥ एलालवङ्गताम्बूलं स० ॥२१॥ दक्षिणा च मया दत्ता गृहाण धनदो भव । कामान्पूरय सर्वान्मे नमस्ते रक्षदर्पहन् ॥ श्रीफलं दक्षिणां स० ॥ २२ ॥ शतकोटिमहारत्नदिव्यमद्रत्नपात्रके । नीराजनमिदं दृष्टं अतिथीकुरु मारुते ॥ नीराजनं० ॥ २३ ॥ बिल्वप्रवालतुलसीवकुलैः शतपत्रकैः । करवीरैर्जातिकुसुमैर्गृहाण पुष्पमञ्जलिम् ॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं० ॥ २४ ॥ पूर्वजन्मनि पापानि कृतानि इह जन्मनि । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणप्रदानतः ॥ प्रदक्षिणां० ॥ २५ ॥ नमोऽस्तु ते महावीर नमस्ते वायुनन्दन । विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल ॥ नमस्ते वायुपुत्राय ध्वंसितामरवैरिणे । सुजनाम्बुधिचन्द्राय कपिराजाय ते नमः ॥ अञ्जनीगर्भसम्भूतो वायुपुत्रो महाबलः । कुमारो ब्रह्मचारी च हनुमन् ते नमोऽस्तु वै ॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ नमो नमस्ते भयनाशवक्त्रे नमोऽस्तु तुभ्यं हरिमूर्तिकाय । नमो नमस्ते सुरवन्दिताय नमो नमस्तेऽस्तु करालवक्त्रे ॥ इति क्षमाप्य । ततो यजमानः स्वनामयुतं देवस्य नामकरणं कुर्यात् । अमुकहनुमानसि । इति नाम कल्पयित्वा ब्राह्मणान् प्रार्थयेत् । अस्याः प्रतिमाया अमुकहनुमान्, इति नाम सुप्रतिष्ठितमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्राह्मणाः ! अस्याः प्रतिमायाः अमुकहनुमान् नाम सुप्रतिष्ठितमस्तु । तन्नाम्ना देवस्योत्तरपूजां कृत्वा [अमुकहनुमते नमः] प्रासादोत्सर्गं कुर्यात् । पक्वेष्टकापाषाण-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काष्ठचूर्णादिनिर्मितं अमुं प्रासादं हनुमन्तं उद्दिश्याहमुत्सृज्ये । अत्रैव नित्यपूजोपकरणानि पात्राणि देवोद्देशेनोत्सृजेत् । पूजास्विष्टं नवाहुत्या बलिं पूर्णाहुतिं तथा । श्रेयः सम्पाद्य दानं च अभिषेको विसर्जनम् ॥ ततोऽग्निपूजनम् । स्वाहास्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः, इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य। अनया पूजया स्वाहास्वधायुताग्निः प्रीयताम् । ततः स्विष्टकृतं समिधां परित्यज्य हवनद्रव्याणि जुहुयात् । ब्रह्मणान्वारब्धः । अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । तत आज्येन नवाहुतयः । अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम । वायवे स्वाहा, इदं वायवे न मम । सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम । अग्नेऽस्मान्वरुण क्रोधं प्रतिजातं विनाशय । विदितं हि यजिष्टस्त्वां प्रार्थये दुरितं दह ॥ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥ भव नोऽग्नेवत्पतृतमउत्पात्रा-न्तिममोषसि ।आगत्य यं त्वं वरुण हव्यं भक्षय सौख्यदम् ॥ अग्नीवरुणाभ्यां स्वाहा, इदमग्नी-वरुणाभ्यां न मम ॥ ५ ॥ अनभिशस्तिपा अयाग्ने त्वमस्माकं यज्ञियं हविः । देवेभ्य औषधं देहि सुखं चास्तु सदा मम ॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥६॥ शतं सहस्रं यज्ञियाः पाशा वरुण ये ततः । तेर्नोऽद्य मरुतः स्वर्काः मुञ्चन्तु सविता हरिः ॥ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ७ ॥ उत्पाशं चाप्यधःपाशं मध्यमं पाशमेव च । उन्नयावनयास्मत्तः श्लथयाशु व्रते तव ॥अनागसो वयं स्याम अदीना वरुण प्रभो । वरुणायादित्यायादितये स्वाहा । इदं वरुणा-यादित्यायादितये न मम ॥ ८ ॥ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ॥ ९ ॥ ततः इन्द्रा-दिदशदिक्पालेभ्यो बलिदानम् । इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र्पयामि । इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान्सदीपान् दधिमाषतण्डुलबलीन् समर्पयामि । भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः ! दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । एभिर्बलिदानैः इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् । अथ सूर्यादिग्रहबलिदानम् । आदित्यादिग्रहबलिद्रव्याय नमः सर्वो० मि । सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहिताभ्यः एतं सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं समर्पयामि । भो भो सूर्यादिग्रहाः ! साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतागणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिसहिताः मम सकुटुम्बस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् । ततः क्षेत्रपालबलिदानम् । करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती । क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ क्षेत्रपालाय नमः ध्यानं समर्पयामि । क्षेत्रपालाय नमः जलं स० । गन्धं स० । अक्षतान् स० । पुष्पं स० । धूपं स० । दीपं स० । नैवेद्यं स० । ताम्बूलं स० । दक्षिणां स० । नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह । पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥ आयुरारोग्यं मे देवि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा । क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगणभैरवराक्षसकूष्माण्डवेतालभूतप्रेतपिशाचडाकिनीशाकिनीगणसहिताय एतं सदीपदधिमाषतण्डुलबलिं समर्पयामि । भो क्षेत्रपाल ! स्वं क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् । शूद्रेण बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृत् भ्राम-
यित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत् । हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य । ततः नारिकेलादिफलैः सरक्तवस्त्रवेष्टितं
द्वादश षट् चतुःस्रुवेण गृहीतघृतस्रुच्यां कृत्वा—पूर्णाहुत्यै नमः, पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पूर्णाहुतिं
जुहुयात् । चतुःशृङ्गस्त्रिधा बद्धो द्विमूर्द्धा नासिकाद्वयः । षण्णेत्रश्च चतुःश्रोत्रस्त्रिपादः सप्तहस्तकः ॥
याम्यभागे चतुर्हस्तः सव्यभागे त्रिहस्तकः । स्रुवं स्रुचं तथा शक्तिमक्षमालां च दक्षिणे ॥ २ ॥
तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके । नियुक्तः सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखः सप्तजिह्वकः ॥ ३ ॥ दक्षिणे च
चतुर्जिह्वस्त्रिजिह्वश्चोत्तरे मुखे । द्वादशकोटिमूर्त्याख्यो द्विपञ्चाशत्कलायुतः ॥ ४ ॥ स्वाहास्वधाव-
षट्कारैरङ्कितो मेषवाहनः । रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तपद्मासनस्थितः ॥ ५ ॥ पिङ्गाक्षो लोहितग्रीवः
कृष्णवर्त्मा हुताशनः । ज्वालामालावृततनुः सप्तार्चिरमितद्युतिः ॥ ६ ॥ रुद्रतेजःसमुद्भूतो वरदो
हव्यवाहनः । अग्निर्वैश्वानरः साक्षात्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ७ ॥ कल्याणदात्रीं कल्याणीं सर्वक-
र्मप्रपूरणीम् । हवनस्य फलप्राप्त्यै पूर्णाहुत्यै नमो नमः । स्वाहा ॥ ८ ॥ इदमग्नये वैश्वानराय
वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम ॥ ततः घृतधारां दद्यात् । दिव्यवस्त्रा
दिव्यदेहा नानालङ्कारभूषिताः । वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥ १ ॥ शुद्धस्फटिक-
संकाशा दिव्यायुधकरावृताः । एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम् ॥ २ ॥ चतुर्भिश्च
चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥ स्वाहा । इदं वसुभ्यो
न मम । अथ त्र्यायुषकरणम् । श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् । तेज आयुष्यमा-
रोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ संस्रवप्राशनम् । आचमनम् । नाभित आरभ्य मुखपर्यन्तं प्रदक्षिणं

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् । कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रति-ष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । ब्रह्मा स्वस्तीति पठेत्। अग्नेः पश्चात्प्रणीताविमोकः । इमा आपः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तथा । भवन्तु भेषजं तास्तु शिवदाः सुखदास्तथा ॥ उपयमनकुशैर्मार्जयेत् । उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । ततः श्रेयो मया भवन्नियोगेन एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतो होमस्तदुत्पन्नं श्रेयस्तत्तुभ्यमहं संप्रददे । यजमानस्य फलं दद्यात् । ततः आचार्यादिपूजनम् ॥ आचार्याय गां ब्रह्मणे वृषभं सदस्यायाश्वं ऋत्विग्भ्यो सुवर्णं दद्यात् । कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । स्वस्तीति ब्राह्मणो वदेत् ॥ १ ॥ ततः कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं वृषनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ २ ॥ ततः कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं अश्वनिष्क्रयभूतं द्रव्यं सदस्याय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ३ ॥ ततः कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यं ऋत्विजे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ १ ॥ ऋत्विग्भ्यां युवाभ्यां अहं संप्रददे ॥ २ ॥ ऋत्विग्भ्यः युष्मभ्यं अहं संप्रददे ॥ ३ ॥ अथवा दास्यमानां मनसोद्दिष्टां दक्षिणां आचार्यादिभ्यो वृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽहं संप्रददे । अत्र दैवज्ञपूजा । ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः । कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासि-द्ध्यर्थं तत्संपूर्णफलप्राप्त्यर्थं यथासंख्याकान्ब्राह्मणान् यथाकाले यथोत्पन्नेनान्नेनाहं भोजयिष्ये दक्षिणां च दास्ये । ततोऽभिषेकः । अग्नेः पश्चिमभागे सकुटुम्बं यजमानं उपवेश्य कुशाग्रेण कल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शोदेकनाभिषिञ्चेत् । यजमानस्य वामाङ्गे पत्नी उपविशति । सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते । आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ॥ २ ॥ वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः । ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः सन्तु ते सदा ॥ ३ ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः । बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ॥ ४ ॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः ॥ ५ ॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः । देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ६ ॥ ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च । देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च । औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः । एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ९ ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु । ततः स्थापितदेवतानां गन्धाद्युपचारैः उत्तरपूजां कृत्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा प्रार्थयेत् । मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ इति विसृज्य । ग्रहपीठमाचार्याय दद्यात् । कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमानि वास्तुप्रधानग्रहपीठानि सोपस्कराणि (इदं ग्रहपीठं सोपस्करं काष्ठनिर्मितपीठरहितं वा) आचार्याय तुभ्यमहं संप्रददे । दानसाङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां दक्षिणां आचार्याय० । अथ अग्निविसर्ज्जनम् । गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥ मण्डपादियज्ञोपकरणानि आचार्याय दद्यात् । कृतस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नानाशर्मभ्यो यथोत्साहां भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ विष्णवे नमः, ३ इति स्मृत्वा। ततः तिलकाशीर्वादः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥ लक्ष्मीनारायणौ देवौ सावित्रीकमलासनौ। पार्वतीशंकरौ देवौ मङ्गलं तिलकं ददुः ॥ येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥ ग्रन्थिनिरूपणं दीनानाथांश्च संभोज्य इष्टजनैः सह भुञ्जीत। इति श्रीमालवीयकालीचरणात्मजमालवीयजगन्नाथसंगृहीतपुराणोक्तहनुमत्प्रतिष्ठापद्धतिः। संवत् १६६० ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गुरौ जगन्नाथापरनाम 'बचऊ' पण्डितेन लिखितं स्वार्थं परार्थं च ॥

अथ गोदानम्—कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं यथाशक्त्यलङ्कृतसवत्सगोदानं करिष्ये। तदङ्गं ब्राह्मणवरणं तत्पूजनं सवत्सगोपूजनं च करिष्ये। इति सङ्कल्प्य। अस्मिन् सवत्सगोदानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं सवत्सगोप्रतिगृहीतारं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम्। गां प्रोक्ष्य। तद्देहे अक्षतैर्देवानावाहयेत्। शृङ्गमूलयोः–ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः, ब्रह्मविष्णू आवाहयामि ॥१॥ शृङ्गाग्रे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वतीर्थेभ्यो० सर्वतीर्थान्० ॥ २ ॥ शिरोमध्ये–महादेवाय० महादेवं० ॥ ३ ॥ ललाटाग्रे–गौर्यै० गौरीं० ॥ ४ ॥ नासावंशे–षण्मुखाय०षण्मुखं० ॥ ५ ॥ नासापुटयोः–कम्बलाश्वतराभ्यां० कम्ब-लाश्वतरौ० ॥ ६ ॥ कर्णयोः–अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥ ७ ॥ नेत्रयोः–शशिभास्कराभ्यां० शशिभास्करौ० ॥ ८ ॥ दन्तेषु–वायवे० वायुं० ॥ ९ ॥ जिह्वायाम्–वरुणाय० वरुणं० ॥ १० ॥ हुङ्कारे–सरस्वत्यै० सरस्वतीं० ॥११॥ गण्डयोः–मासपक्षाभ्यां० मासपक्षौ० ॥ १२ ॥ ओष्ठयोः–सन्ध्याद्वयाय० सन्ध्याद्वयं० ॥ १३ ॥ ग्रीवायाम्–इन्द्राय० इन्द्रं० ॥ १४ ॥ वक्षसि–रक्षोभ्यो० रक्षांस्या० ॥ १५ ॥ उरसि–साध्येभ्यो० साध्यान्० ॥ १६ ॥ जङ्घयोः–धर्माय० धर्मं०॥१७॥ खुरमध्ये–गन्धर्वेभ्यो० । गन्धर्वान्० ॥ १८ ॥ खुराग्रेषु–पन्नगेभ्यो० पन्नगान्० ॥ १९ ॥ खुर-पश्चिमे–अप्सरोगणेभ्यो० अप्सरोगणान्० ॥ २० ॥ पृष्ठे–एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्रान्० ॥ २१ ॥ सर्वसन्धिषु–वसुभ्यो० वसून्० ॥ २२ ॥ श्रोणितटे–पितृभ्यो० पितॄन्० ॥ २३ ॥ पुच्छे–सोमाय० सोमं० ॥ २४ ॥ अधोगात्रेषु–द्वादशादित्येभ्यो० द्वादशादित्यान्० ॥ २५ ॥ तत्केशेषु–सूर्यरश्मिभ्यो० सूर्यरश्मीन्० ॥ २६ ॥ गोमूत्रे–गङ्गायै० गङ्गां० ॥ २७ ॥ गोमये–यमु-नायै० यमुनां० ॥२८॥ क्षीरे–सरस्वत्यै० सरस्वतीं० ॥२९॥ दध्नि–नर्मदायै० नर्मदां० ॥३०॥ घृते–वह्नये० वह्निं० ॥३१॥ रोमसु–अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यो० अष्टाविंशतिदेवकोटीः आ० ॥३२॥ उदरे-पृथिव्यै० पृथिवीं० ॥३३॥ स्तनेषु-चतुर्भ्यः सागरेभ्यो० चतुर्भ्यः सागरान्० ॥३४॥ सर्वशरीरे-कामधेनवे० कामधेनुं०॥३५॥ इत्यावाह्य। सवत्सायै गवे नमः। इति सम्पूज्य । सुरभी वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता। गोग्रासं तु मया दत्तं सुरभे प्रतिगृह्यताम्॥पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा।गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते ॥३०६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः षडङ्गं पादशक्रमाः॥ततो गोपुच्छोदकेन तर्पणं कुर्यात्। पितृवंशे च ये जाता जाता मातृकुले मम । ते पिबन्तु मया दत्तं गोपुच्छस्य तिलोदकम् ॥ आब्रह्म-स्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्त-द्वीपनिवासिनाम् । आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥ अथ दानम् । सवत्सां गां प्राङ्मुखी-मवस्थाप्य । पात्रभूतो विप्रस्तत्रैव उदङ्मुखस्तिष्ठेत् । ततो दाता घृतसुवर्णयुक्तकांस्यपात्रे गोपुच्छं निक्षिप्य घृताक्तं कृत्वा ततो गोपुच्छं हस्ते गृहीत्वा । कुशाक्षततुलसीयवजलान्यादाय देशकालौ० मम समस्तपापक्षयद्वारा सवत्सगोरोमसमसंख्याकवर्षसहस्रावच्छिन्नविष्णुलोकनिवासकामः कृतस्य सप्रासादहनुमत्प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं इमां सवत्सां रुद्रदैवत्यां सुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठीं मुक्तालाङ्गूलां कांस्यदोहां रक्तवस्त्रावृतां घण्टालंकृतकण्ठां गन्धाक्षतपुष्पमालाशोभितां यथाशक्त्यलंकृतां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे न मम । इति प्रागग्रं पुच्छं विप्रहस्ते दद्यात् । 'स्वस्ति' इति विप्रः । ततः कृतस्य सवत्सगोदानस्य साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं इदं सुवर्णनिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय सम्प्रददे । स्वस्तीति ब्राह्मणः ।

अथ प्रार्थना । नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ पूजितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता । सुरभे हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ २ ॥ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥ ३ ॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसाम्यहम् ॥४॥ ततो विष्णुप्रीतये वर्षमात्रं गोभक्षणार्थं तृणपिण्याकप्रत्याम्नायभूतं इदं यथाशक्ति-द्रव्यं तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति दत्त्वा धेनुं द्विजं च त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य गोदक्षिणकर्णे कथयेत् । या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता । धेनुरूपेण सा देवी मम [आवयोः] पापं व्यपोहतु ॥ इति गोदानम् ॥

इति श्रीगोघट्टनिवासिमालवीयकालीचरणसूनुजगन्नाथद्विवेदिसंगृहीतः काशीस्थकाशीनाथसंस्कृतपाठशालायाः प्रधानाध्यापकेन पं० जगन्नाथव्याससूनुव्याकरणाचार्य 'विचाररत्न' पं० माधवप्रसादव्यासेन टिप्पण्यादिसमलंकृतः संशोधितश्च कर्मकाण्डीयलघुदर्पणः समाप्तः । जगन्नाथेन लिखितः काश्यां गोघट्टसन्निधौ । संवत् १९७९ वर्षे मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां विरचितस्तथा ॥ लिखितोऽयं ग्रन्थो द्विवेद्युपनामककालीचरणात्मजजगन्नाथेन स्वार्थं परार्थं च लेखकपाठकयोः शुभं भवतु ॥

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट,

(ब्रांच—कचौड़ीगली बनारस ।)

मुद्रक—पंडित बैकुण्ठनाथ भार्गव, आनन्द सागर प्रेस, गायघाट, बनारस ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुलसीविवाहपद्धतिः

लेखक—व्याकरणाचार्य 'विद्यारत्न' पं० माधवप्रसाद व्यास

सम्मति लेखक—काशी के सुप्रसिद्ध धुरन्धर कर्मकाण्डी श्री पं० विद्याधर जी गौड़

(प्रिन्सिपल हिन्दू यूनिवर्सिटी, काशी)

तुलसी माहात्म्य-पूजा-व्रतविधान-लक्षप्रदक्षिणा-उद्यापन-नाम-गुण-प्रणाममन्त्र स्पर्शमन्त्र-स्थानमार्जनमन्त्र-ग्रहणमन्त्र-विष्णुपूजा तथा विष्णुसहस्रनामसहिता

आजकल तुलसीविवाहपद्धति कहीं भी नहीं छपी है। वैष्णवों को तथा स्त्रियों को इसकी जरूरत बराबर रहा करती है। जरूरत पड़ने पर पुरोहितवर्ग बड़े २ पण्डितों के यहाँ पद्धति समझने के लिये दौड़ मारा करते हैं। इस कठिनाई को दूर करने के लिये पद्धति का बनाना आवश्यक हो गया। अतः यह पद्धति बड़े परिश्रम के साथ तैयार की गई है। इसके साथ और भी बहुत से विषय दे दिये गये हैं जिनकी प्रतिदिन जरूरत पड़ा करती है। जिनमें तुलसी-माहात्म्य, पूजनविधान, व्रतविधान, लक्षप्रदक्षिणा, उद्यापन, नाम, गुण, प्रणाममन्त्र, स्पर्शमन्त्र, स्थानमार्जनमन्त्र, ग्रहणमन्त्र, विष्णुपूजनविधान और तुलसी चढ़ाने के लिये विष्णुसहस्रनामावलि तथा तुलसी आरती, विष्णु आरती आदि विषय हैं। विशेष परिचय पुस्तक देखने से होगा। मूल्य १।)

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट बनारस।

ब्रांच—कचौड़ीगली, बनारस।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति लघुदर्पणपद्धतिः समाप्ता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

सचित्र जन्मपत्र

ये जन्मपत्र सर्वसाधारण के उपयोग के विचार से पाँच तरहके छापे गये हैं और उनमें शास्त्रोक्त विधिसे उचित-उचित स्थानों में सैकड़ों चक्र ग्रहों के चित्र राशियों के चित्र तथा पचरंगे नव ग्रहों से सम्भव नौ अवतारों के चित्र किताबनामा, डबल क्राउन ८ पेजी आर्ट पेपर तथा आइवरी पर छप कर तैयार है। शीघ्र मँगाइये। अपनी कुण्डली तैयार कराइये।

(१)	जिसे पण्डित लोग	५)	में बनावेंगे मूल्य	२॥)
(२)	,,	१०)	,,	३)
(३)	,,	१५)	,,	३॥)
(४)	,,	२०)	,,	५)
(५)	,,	२५)	,,	६।)

पुस्तक मिलने का पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस। ❀ (ब्रान्च—कचौड़ीगली, बनारस।)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति

लघुदर्पणपद्धतिः

समाप्ता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection